बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में 'स्त्री-विमर्श'

(हैदरा ाद विश्वविद्यालय की पी-ए ा.डी.(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्र ंध)

2011

प्रस्तुतकर्त्री

स्नेहलता

निर्देशकः

प्रो.वी.कृष्ण, पी-ए ा.डी.,

हिंदी विभाग,

मानविकी संकाय,

हैदरा ाद विश्वविद्यालय,

हैदरा ाद - 500 046

विभागाध्यक्षः

प्रो.रविरं ान, पी-ए ा.डी.

हिंदी विभाग,

मानविकी संकाय,

हैदरा ाद विश्वविद्यालय,

हैदरा ाद - 500 046

<u>DECLARATION</u>

I **SNEHALATHA** hereby declare that this thesis entitled ***"BEESVIN SADI KE ANTIM DASHAK KE HINDI UPANYASON MEIN STRI VIMARSH"*** submitted by me under the guidance and supervision of **Prof.V.KRISHNA** is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or in full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Date :

Name : **SNEHALATHA**

Signature of the Student

Regd.No. **06HHPH06**

C E R T I F I C A T E

This is to certify that the thesis entitled ***"BEESVIN SADI KE ANTIM DASHAK KE HINDI UPANYASON MEIN STRI VIMARSH"*** submitted by **SNEHALATHA** bearing Reg. No.**06HHPH06** in partial fulfillment of the requirements for the award of Doctor of Philosophy in **Hindi** is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance.

The thesis has not been submitted periously in part or in full to this or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of the Supervisor

// Countersigned //

Head of the Department

Dean of the School

अनुक्रमणिका

<u>*अनुक्रमणिका*</u>

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में ‘स्त्री-विमर्श’

<u>पृ.सं.</u>

भूमिका **I-VII**

प्रथम अध्याय **1-74**

स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

1.1 विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

1.2 स्त्री-विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

1.3 विमर्श और स्त्री-विर्मश में अंतर

1.4 स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

1.5 स्त्री-परंपरा व इतिहास : पाश ाात्य

1.5.1 स्त्री-विमर्श : पाश ाात्य दृष्टिकोण

1.5.1.1 बु ुआ : दृष्टिकोण

1.5.1.2 समा ावादी : दृष्टिकोण

1.5.1.3 उदारवादी : दृष्टिकोण

1.5.1.4 उग्रवादी : दृष्टिकोण

1.5.1.5 विद्रोही : दृष्टिकोण

1.5.1.6 ब्लॉक : दृष्टिकोण

1.5.1.7 तीसरी दुनिया और स्त्री-विमर्श

1.6 स्त्री विमर्श की परंपरा व इतिहास : भारतीय

1.6.1 प्रा ीनकाल

1.6.2 मध्यकाल

1.6.3 आधुनिक काल

1.6.4 स्त्री-मुक्ति आंदोलन

द्वितीय अध्याय **75-135**

'स्त्री-विमर्श' का साहित्यिक परिदृश्य

2.1 स्त्री-विमर्श : विविध ारण

2.1.1 प्रा ीनकाल

2.1.2 मध्यकाल

2.1.3 आधुनिक काल

2.2 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु : पुरुष लेखन के संदर्भ में

2.2.1 प्रेम ंदपूर्व हिंदी उपन्यास

2.2.2 प्रेम ंदकालीन हिंदी उपन्यास

2.2.3 प्रेम ंदोत्तर हिंदी उपन्यास

1. मनोविश्लेषणवाद
2. प्रगति या मार्क्सवाद
3. आधुनिक बोध
4. आं लिकता

2.3 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु : स्त्री-लेखन के संदर्भ में

2.3.1 स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास

2.3.2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

2.3.3 साठोत्तर हिंदी उपन्यास

2.3.4 सातवें दशक के हिंदी उपन्यास

2.3.5 आठवें, नवें दशक के हिंदी उपन्यास

तृतीय अध्याय **136-191**

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श : सृ ान के नये संदर्भ

3.1 अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास : सृ ान के नये तेवर

3.2 लेखिकाओं के ि ांतन के परिवर्तन कामी आयाम

3.2.1 स्त्री लेखन के सार्थक हस्ताक्षर : कृष्णा सोबती

3.2.1.1 कटु अनुभवों का दस्तावे ा : ऐ लड़की

3.2.1.2 सामंती मूल्यों का खोखलापन : दिलोदानिश

3.2.2 स्त्री संघर्ष की नयी ामीन : मैत्रेयी पुष्पा

3.2.2.1 स्त्री नियति की गहरी छटपटाहट:बेतवा बहती रही

3.2.2.2 अस्तित्व की तलाश : इदन्नमम

3.2.2.3 सामा ािक यथार्थ का दर्पण : ााक

3.2.2.4 मानसिक उद्वेग : ाूला नट

3.2.2.5 'क ाा और कबूतरों' की मुठभेड:अल्मा कबूतरी

3.2.3 ोतना की संवाहिका : ि ात्रा मुद्गल

3.2.3.1 ाड़ों की खो ा : एक ामीन अपनी

3.2.3.2 रिश्तों का खुलासा : आवां

3.2.4 सर्वांग शोषण की सशक्त वाणी : मृदुला गर्ग

3.2.4.1 संघर्ष का नया संदेश : कठगुलाब

3.2.5 संवेदनशीलता की ितेरी : ंद्रकांता

3.2.5.1 अंतरंग सपनों की तलाश : अपने-अपने कोणार्क

3.2.6 अद्‌भुत ीवट स्त्री : प्रभा खेतान

3.2.6.1 विश्वव्याप्त त्रासदी का मार्मिक ित्रण : आओ पेपे घर ले!

3.2.6.2 नैतिक मूल्यों का संवाहक : छिन्नमस्ता

3.2.6.3 रिश्तों का द्वंद्व : अपने-अपने ेहरे

3.2.6.4 पी ़ियों का संघर्ष तथा स्त्री पीड़ा : पीली आंधी

3.2.7 युवा पी ़ी की सार्थक प्रतिनिधि: अलका सारावगी

3.2.7.1 आत्मकेंद्रित समा की पराधीन प्रवृत्ति :

कलिकथा:वाया बाईपास

3.2.8 अंतिम दशक की खो : गीतां ली श्री

3.2.8.1 मोहभंग का तीव्र एहसास : माई

3.2.8.2 सांप्रदायिक वैमनस्य : हमारा शहर उस बरस

3.2.9 हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका : सूर्यबाला

3.2.9.1 दाम्पत्य ीवन का विघटन : यामिनी कथा

3.2.10 संवेदनशील लेखिका : नमिता सिंह

3.2.10.1 मन के अंतद्वंद्व : अपनी सलीबें

3.2.11 आधुनिक स्त्री की प्रतिनिधि : मीना शर्मा

3.2.11.1 सात्विक प्रसंग : अनाम प्रसंग

ातुर्थ अध्याय **192-304**

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(पितृसत्तात्मक व्यवस्था,स्त्री घुटन:विविध संदर्भ और पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में)

4.1 पितृसत्तात्मक व्यवस्था

- 4.1.1 स्त्री की वास्तविक लड़ाई
- 4.1.2 पितृसत्ता व्यवस्था में सामाि क ीवन
- 4.1.3 स्त्री का वैवाहिक ीवन

4.2 स्त्री घुटन : विविध संदर्भ

- 4.2.1 अनमेल विवाह
- 4.2.2 अकेलापन
- 4.2.3 दहे ा
- 4.2.4 बलात्कार
- 4.2.5 रखैल-प्रताड़ित, उपेक्षित
- 4.2.6 ाति
- 4.2.7 प्रेम
- 4.2.8 पुनर्विवाह
- 4.2.9 आडंबर, अंधविश्वास

4.3 पुनरुत्पत्ति

- 4.3.1 स्त्री की ैविक प्रक्रिया
- 4.3.2 लिंग में भेदभाव
  - 4.3.2.1 लिंग और सेक्स में अंतर

4.3.3 यौनिकता

4.3.4 मासिक धर्म : एक अभिशाप

4.3.5 मातृत्व भावनाः विवाह का खण्डन

4.3.5.1 सेगोरेट मदर, खरीदी गई कोख

4.3.6 प्र ानन क्रिया से बिगड़ा स्त्री स्वास्थ्य

4.3.6.1 प्र ानन क्रिया से

4.3.6.2 गर्भपात के कारण

4.3.7 विवाहेतर, विवाहपूर्व काम संबंध

4.3.7.1 विवाहेतर संबंध

4.3.7.2 विवाह पूर्व संबंध

पं ाम अध्याय **305-399**

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श
(आत्मनिर्भरता,स्वावलंबन, मानवीय संवेदना और स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में)

5.1 आत्मनिर्भरता

5.1.1 अस्तित्व एवं आत्मसम्मान

5.2 स्वावलंबन

5.2.1 प्रगतिशील स्त्री

5.2.2 समान अधिकार

5.2.3 स्वतंत्र ेतना

5.3 मानवीय संवेदना

5.3.1 पारिवारिक ीवन

5.3.2 ीवन घुटन भरा

5.3.3 तलाक : एक अभिशाप

5.3.4 विधवा की स्थिति

5.4 स्त्री सशक्तीकरण

5.4.1 स्त्री सशक्तीकरण में ोतित स्त्री

षष्ठ अध्याय **400-485**

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास : अभिव्यक्ति के विविध रूप स्त्री-विमर्श के संदर्भ में

6.1 भाषा

6.1.1 बोल ाल की भाषा

6.1.2 प्रतीक, बिंब, संकेत

6.1.3 ि त्रात्मक भाषा

6.1.4 स्त्री ोतनात्मक भाषा

6.1.5 ि ंतन परक भाषा

उपसंहार **486-502**

संदर्भ ग्रंथ सू ी **503-510**

पत्र-पत्रिकाएँ

भूमिका

भूमिका

हिंदी में पी-ए ा.डी. करना मेरा सपना था। आ ा मैं अपने सपने को साकार करने ाा रही हूँ। मैं कृत्यज्ञ एवं आभारी हूँ अपने सर प्रोफेसर वी.कृष्ण ाी की ि ान्होंने मु ो पी-ए ा.डी. में प्रवेश दिलवाया। ि ासे मु ो मेरा सपना साकार करने का मौका मिला। सर के दिशानुसार एवं निर्देशानुसार शोधकार्य करने का सहयोग प्राप्त हुआ। सर के निर्देशानुसार मैंने "बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में 'स्त्री-विमर्श'" विषय को ाुना।

मेरी माँ किताब कौर हमेशा से मेरा आदर्श मेरी प्रेरणा रही है। उन्होंने ाीवन के हर मोड़ को संघर्षपूर्ण ाीया है। पर कभी, स्त्री होने का दुःख नहीं माना। स्त्री ाीवन को सार्थक बनाया है। 'स्व' की पह ाान बनाई है। आत्मनिर्भर हो 'स्व' के मूल्यों पर ाली। परिस्थिति परिवेश में साहस के साथ आगे ही आगे दृ ़ता के साथ ब ़ती रही। अपने ब ाों का भविष्य बनाने में अड़िग रही, सफल बनाने में सार्थक भी रही। यही रूप मैंने मेरी सास, बहनों में भी देखा। शायद स्त्री का 'कथा सत्य' यही स्त्री-विमर्श है।

स्त्री-विमर्श स्त्री ाीवन की व्यथा-कथा के रूप में ि ात्रित हुआ है। स्त्री-विमर्श ऐसी ाि ाति संकल्पना रही है ाो स्त्री ाीवन एवं उसके अस्तित्व को लेकर कई प्रश्न खड़े करती है। मैं स्त्री-विमर्श के इन प्रश्नों को पाश ाात्य, भारतीय, साहित्यिक एवं हिंदी उपन्यासों के दृष्टिकोणों में तलाशने की कोशिश की है। स्त्री-विमर्श के हर प्रश्न, तथ्य, वि ाार हर देश में एक ौसे दृष्टिगत होते हैं। थोड़ा-हेर-फेर ारूर दिखाई देता है पर केंद्रित एक ही बिंदु पर होते हैं 'स्त्री'। स्त्री तथ्यों की ाटिलता तोड़ने के लिए कई वाद-विवाद सिद्धांतों का ान्म हुआ। ि ानमें समय-समय पर स्त्री व्यथा-कथा का निरीक्षण भी किया। पर स्त्री समस्या तो समयानुसार परिवर्तित होने

वाली लहर है ो बहती ही ाती है। नये प्रश्नों नये दृष्टिकोणों को लेकर। स्त्री प्रश्नों, तथ्यों, दृष्टिकोणों को लेकर लेखिकाओं ने प्रारंभिक काल से आ ा तक अपनी र ानाओं में स्त्री के कई संदर्भों में वि ार-विमर्श किया है ो समय, युगों के साथ बदलते भी गये, परिवर्तित भी होते गये। लेखिकाओं ने समयानुसार, संदर्भानुसार स्त्री परिस्थिति, व्यथा-कथा को ाना और नये दृष्टिकोण से नयी प्रयोगधर्मिता में स्त्री-विमर्श का विवे न अपने उपन्यासों में करती रही।

अंतिम दशक के उपन्यासों में हम देख सकते हैं कि स्त्री-लेखन में लेखिकाओं ने अपनी अनुभूति और अभिव्यक्ति के प्रस्तुतीकरण में नये प्रयोग एवं विविधता को दर्शाया है। स्त्री के प्रश्नों में, व्यथा-कथा में, स्थिति-व्यवस्था में कई परिवर्तन, सो ा में विस्तार, प्रगतिशीलता, ेतनात्मक दृष्टिकोण, िंतनपरक सो ा-वि ार और भाषा के नवीनीकरण का उद्घाटन किया है। लेखिकाओं ने स्त्री संबंधित ीवन संघर्ष की विकृतियों एवं विद्रूपताओं का ित्रण कर संभावनाओं का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के विषय को मैंने अपने निर्देशक के दिशानुसार छः अध्यायों में विभक्त किया है। ये छः अध्याय निम्नलिखित हैं-

प्रथम अध्याय में "स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य" को पाँ ा भागों में यथा-विमर्शःअर्थ एवं परिभाषा, स्त्री-विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा, स्त्री-विमर्श का सैद्धांति परिदृश्य, स्त्री-विमर्श की परंपरा व इतिहासःपाश ात्य, स्त्री-विमर्श की परंपरा व इतिहासःभारतीय दृष्टिकोण में विभा ित कर उसका विवे ाना किया है।

द्वितीय अध्याय में "'स्त्री-विमर्श' का साहित्यिक परिदृश्य" के अंतर्गत स्त्री-विमर्शःविविध ारण, हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदुःपुरुष लेखन के संदर्भ में तथा आधार बिंदु स्त्री-लेखन के संदर्भ में विवे न करने का प्रयास है।

तृतीय अध्याय में "अंतिमक दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्शःसृ न के नये संदर्भ" के अंतर्गत अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासःसृ न के नये तेवर, लेखिकाओं के िंतन के परिवर्तनकामी आयाम पर वि ार किया गया है। अंतिम दशक की लेखिकाओं में िन्होंने इस अवधि में स्त्री-विमर्श पर अपनी र ाना की है वे

हैं-कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, ि त्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, ंद्रकांता, प्रभा खेतान, अलका सारावगी, गीतां ालि श्री, मीना शर्मा, नमिता सिंह, सूर्यबाला कृत उपन्यासों की ा ार् की है। साथ ही स्त्री-विमर्श के सभी तथ्यों का विवे ान की ा ार् करूँगी साथ ही स्त्री-विमर्श के सभी तथ्यों का विवे ान करने का प्रयास है ि ानमें स्त्री ीवन के विविध आयाम ैसे स्त्री का पारिवारिक, सामाि ाक, वैवाहिक ीवन को लेखिकाओं ने उभारा है।

ातुर्थ अध्याय में "अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श (पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री घुटनःविविध संदर्भ और पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में)" पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अंतर्गत स्त्री की वास्तविक लड़ाई, पितृसत्ता व्यवस्था में सामाि ाक ीवन, स्त्री घुटनःविविध संदर्भ के अंतर्गत अनमेल विवाह, अकेलापन, दहे ा, बलात्कार, रखैल-प्रताड़ित, उपेक्षित, ााति, प्रेम, पुनर्विवाह, आडंबर, अंधविश्वास तथा पुनरुत्पत्ति के अंतर्गत स्त्री की ैविक प्रक्रिया, लिंग में भेदभाव, स्त्री अधिकार, मातृत्व भावना, प्र ानन क्रिया के संदर्भ में ा ार् की गई है।

पं ाम अध्याय "अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श (आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना और स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में)" है। इसके अंतर्गत आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, प्रगतिशील स्त्री, समान अधिाकर, स्वतंत्र ोतना, मानवीय संवेदना, पारिवारिक ीवन, ीवन घुटन भरा, तलाकःएक अभिशाप, विवाह का पुनर्निर्माण, स्त्री सशक्तीकरण में ोतित स्त्री आदि संदर्भों का विवे ान किया गया है।

षष्ठ अध्याय में "अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासःअभिव्यक्ति के विविध रूप स्त्री-विमर्श के संदर्भ में" भाषा के अंतर्गत बोल ाल की भाषा, प्रतीक, बिंब, सांकेतिक भाषा, ि त्रात्मक भाषा, स्त्री ोतनात्मक भाषा तथा ि ंतन परक भाषा पर वि ाार करते हुए लेखिकाओं की भाषा में नये प्रयोग तथा भाषा की अभिव्यक्ति को सटीक रूप से दर्शाया गया है उनकी ा ार् करने का प्रयास किया गया है।

उपसंहार में शोध-प्रबंध की उपलब्ध संभावनाओं को प्रस्तुत किया है। अंत में आधार-ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक सू ी दी गई है।

शोध-प्रबंध की मौलिकता

- प्रस्तुत शोध प्रबंध स्त्री लेखिकाओं द्वारा लिखे गये उपन्यासों में केंद्रित स्त्री-विमर्श है।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्त्री लेखिकाओं की औपन्यासिक कृतियों को वह भी स्त्री-विमर्श संबंधी विषयों का ही अध्ययन के केंद्र में रखा ाने का कारण स्त्री दृष्टि की प्रामाणिकता और स्त्री लेखन की सार्थकता को स्त्री-विमर्श में स्थान देना है।
- बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों को अध्ययन का विषय बनाकर सन् 1990 से 2000 तक के स्त्री-विमर्श संबंधी स्त्री लेखिकाओं द्वारा लिखे गये महत्वपूर्ण उपन्यासों पर यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में यह शोधकर्य प्रथम बार संपन्न हुआ है।
- यह अध्ययन विशेष कालखंड अंतिम दशक के प्रतिनिधि स्त्री लेखिकाओं के उपन्यासों को लेकर संपन्न हुआ। इसमें हिंदी की ग्यारह लेखिकाओं की औपन्यासिक कृतियों का स्त्री-विमर्श की दृष्टि से अध्ययन किया गया है।
- बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में ि ात्रित स्त्री सशक्तीकरण, आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना के संदर्भ में इस प्रबंध में अत्यन्त सह ाता से प्रथम बार विवे ाित एवं विश्लेषित कर अनुसंधान क्षेत्र में मौलिक योगदान देने का प्रयास है।
- अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री घुटनःविविध संदर्भ, पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में वि ार-विमर्श किया गया है। यह भी अनुसंधान के क्षेत्र में मौलिक योगदान देने का प्रयास किया गया है।

- अंतिम दशक के उपन्यासों में भाषा की अभिव्यक्ति का प्रयोग कर लेखिकाओं की भाषा दृष्टि का सूक्ष्मता से विवे ान एवं विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को संपन्न बनाने में ि ान लेखकों, विद्वानों तथा ग्रंथालयों ने मेरी सहायता की है उन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करना ाहूँगी।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीय सर प्रो.वी.कृष्ण ाी, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के प्रति हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करना ाहूँगी ि ान्होंने मु ो इस विषय पर शोध कार्य करने का सुअवसर प्रदान किया। ि ानके सहयोग, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन के बिना ये शोध-कार्य सफल होना असंभव था। ि ान्होंने हमेशा मु ो अपना अमूल्य समय और सु ााव देकर मेरा मार्गदर्शन किया और मेरे शोध प्रबंध को सफल बनाया।

आदरणीय प्रो.शशि मुदिरा ा ाी, प्रो.नूर ाहाँ बेगम ाी तथा डॉ.गरिमा श्रीवास्तव ाी केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना ाहूँगी। ि ान्होंने समय-समय पर मु ो अपना समय और सु ााव देकर मु ो सम ााया। मैं प्रो.रविरं ान ाी, अध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के प्रति भी आभारी हूँ।

अगर किसी भी लड़की को शादी के बाद अ छी मानसिकता वाला पति, उससे प्यार, प्रोत्साहन, सहयोग मिल ााए तो वह अपने सपनों को साकार कर सकती है। सफलता की ऊँ ााइयों तक पहुँ ा सकती है। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मु ो शादी के बाद अ छी मानसिकता वाला पति मिला ि ासे प्यार, प्रोत्साहन, सहयोग मिला। ि ासे मैं बी.काम. अंतिम वर्ष से पी-ए ा.डी. शोध प्रबंध कार्य संपन्न करने तक का सफर पूरा कर सकी। मैं आभारी हूँ मेरे पति श्री रा ाू डिंग्या की ि ानकी प्रेरणा, सहयोग हमेशा मेरे साथ रहा। ि ानके साथ एवं प्रोत्साहन से आ ा मैं अपना सपना साकार करने ाा रही हूँ। इनके प्रति मैं हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करती

हूँ। साथ ही मेरे माता-पिता, सास-ससुर का ि नका आशीर्वाद और सहयोग हमेशा बना रहा।

मेरी प्यारी ननंद र ानी, रा ोश्वरी और मेरी प्यारी बहन उपासना के प्रति मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ ि न्होंने शोध कार्य करते समय मेरे दोनों ब ों की देखभाल की और उन्हें बड़े लाड़-प्यार से संभाला। साथ ही मेरी बड़ी बहन सं ू श्री के प्रति ि सने इस शोध कार्य की आवश्यक सामग्री संकलन में मेरी सहायता की।

मैं अपने नन्हें ब ों की आभारी हूँ, ि नको मैं शोधकार्य के कारण सही समय न दे पायी। ि नकी नन्हीं मुस्कान मु े काम करने की प्रेरणा देते हैं। उनकी छोटी-छोटी बातें मन को प्रफुल्लित करती हैं-वैभव कहता है-"मम्मी ल्दी काम कम्प्लीट कर लो मेरे बड्डे तक।" श्रीनिधि मेरे ही स्टडी पैड पर बैठ कर कहती है-"आप लिखो, मैं प ूंगा"। सु ाल कहता है-"मम्मी तुम हमेशा प ़ती रहती हो... आपके एक ाम कब हैं।" अतः अत्यधिक अनमोल प्यार के साथ मन से आभार व्यक्त करती हूँ।

और मेरी राधा दीदी ि नकी व ाह से इस शोध-प्रबंध के संगणक-टंकण का अत्यन्त महत्वपूर्ण काम संपन्न हुआ। इतनी व्यस्तता एवं समस्याओं के बाव ूद अत्यन्त तत्परता के साथ कार्य करके शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उ ि ात योगदान दिया। अतः मैं उनका विशेष आभार व्यक्त करती हूँ।

इस शोध-कार्य के दौरान शोध सामग्री और संदर्भ-ग्रंथ सही समय में ुटा देने में मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद के प्रबंधक को मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही रा ाकमल प्रकाशन, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली के प्रबंधकों को अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद की लाइब्रेरी को अपना विशेष आभार व्यक्त करती हूँ ाहाँ से मैंने संपूर्ण शोध-कार्य की सामग्री संकलित की है। साथ ही उस्मानिया विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी ाहाँ से भी कुछ आवश्यक सामग्री संकलित की है।

अंत में विवे य कालखंड की लेखिकाओं के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ ि ानकी र ानाओं से मैं अपना शोध-प्रबंध का कार्य संपन्न कर पायी। इस शोध कार्य को प्रस्तुत करने के लिए ि ान ग्रंथों की सहायता मिली उन सभी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

और उन सबको ि ान्होंने इस शोधकार्य को संपन्न बनाने के लिए हर संभावित मेरी सहायता की उन सबके प्रति में हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ओर इस शोध प्रबंध को विद्वत ानों के समक्ष विनम्रतापूर्वक परीक्षण के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

स्नेहलता

प्रथम अध्याय

स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

प्रथम अध्याय

स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

1.1 विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

1.2 स्त्री-विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

1.3 विमर्श और स्त्री-विर्मश में अंतर

1.4 स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

1.5 स्त्री-परंपरा व इतिहास : पाश ।ात्य

- 1.5.1 स्त्री-विमर्श : पाश ।ात्य दृष्टिकोण
  - 1.5.1.1 बु ुआ : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.2 समा ।वादी : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.3 उदारवादी : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.4 उग्रवादी : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.5 विद्रोही : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.6 ब्लॉक : दृष्टिकोण
  - 1.5.1.7 तीसरी दुनिया और स्त्री-विमर्श

1.6 स्त्री विमर्श की परंपरा व इतिहास : भारतीय

- 1.6.1 प्रा ीनकाल
- 1.6.2 मध्यकाल
- 1.6.3 आधुनिक काल
- 1.6.4 स्त्री-मुक्ति आंदोलन

प्रथम अध्याय

स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श स्त्री के सर्वांग ि ंतन का विषय है ि ासमें स्त्री ीवन की समस्याओं, उसके संघर्षों का ि ात्रण हुआ है। स्त्री-विमर्श का मूल उद्देश्य स्त्री दलन के अनुभवों की अभिव्यक्ति ही है। ि ासमें ‘स्त्री-विमर्श’ के छुए-अनछुए खुले-अनखुले प्रसंगों पर विषय-विशेषज्ञों के व्याख्यानों से उभरने वाले निष्कर्षों तथा उपन्यासकारों की र ानाओं में किया गया विवे ान है। स्त्री-विमर्श पारंपरिक ज्ञान और दर्शन को ुनौती देता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा ाए ाो हम पुरुष प्रधान समा ा में रहते आये हैं ाहाँ स्त्री ज्ञाता नहीं बल्कि ज्ञान की विषय-वस्तु है। हर युग में स्त्री प्रसंगों को लेकर समा ा ि ांतकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से इस विषय पर समय सापेक्ष ि ांतन किया है। स्त्री संबंधित ि ांतन का वि ाार-विनिमय स्त्री आलो ाकों के स्त्री प्रसंगों पर केंद्रित विमर्श श्रृंखला है। स्त्री-विमर्श यानी सह अस्तित्व की भावना, स्त्री-संदर्भ या स्त्री मुक्ति। स्त्री मुक्ति यानी स्त्री को समानता का, बराबरी का द ाा दिया ाए। दो शताब्दियों से भी कुछ अधिक समय के दौरान पूरी दुनिया में स्त्री की सामाि ाक स्थिति और पुरुष व र्स्ववाद के दर्शन, अर्थशास्त्र, रा ानीति एवं संस्कृति, सिद्धांत पर स्त्री प्रसंगों को विविध आयामों पर तथा स्त्रीमुक्ति परियो ाना के विभिन्न प्रारूपों-प्रकल्पों पर ाो कुछ महत्वपूर्ण लिखा गया हे उसे स्त्री-विमर्श के परिदृश्य में देखने से पहले विमर्श पर थोड़ा सा ध्यन केंद्रित करना ााहूँगी।

1.1 विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

विमर्श का शाब्दिक अर्थ है "वि ार-विवे ना, आलो ना, परीक्षा ाँ ा, परामर्श आदि। संस्कृत हिंदी कोश के अनुसार 'वमर्श' वि+मृश+धञ' के योग से बना है ि ासका अर्थ वि ार-विनिमय, सो ा वि ार, परीक्षण, ा र्ा, तर्कना, विपरीत निर्णय, संको ा, संदेह आदि।"[1]

बृहद् संस्कृत-हिंदी कोश के अनुसार-"विमर्श-वि+मृश+घञ के योग से बना है ि ासका अर्थ वि ार, वि ार-विनिमय है।"[2]

अंग्रेज़ी में विमर्श को Deliberation, Consultation कहते हैं। ि ासका अर्थ वि ार-विवे ान या परामर्श होता है। 'Deliberation means discussion or thinking about something in details' यानी विस्तृत वि ार विमर्श।"[3] या 'The quality of being very slow and careful in what you say and do' यानी सावधानी, सतर्कता, धैर्यपूर्वक सो ा-वि ार करना।"[4]

'Consultation'-'A discussion between people before a decision is taken' यानी निर्णय लेने से पहले वि ार-विमर्श। 'Meeting somebody to get information or advice or looking for it in a book' यानी ाानकारी लेने या परामर्श करने की क्रिया को अंग्रेज़ी में consultation कहेंगे।"[5]

---

[1] संस्कृत हिंदी कोश-वामन शिवराम आप्टे, मौतिलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, 1986 आवृत्ति

[2] बहृद संस्कृत-हिंदी शब्द कोश, उदय ंद ैन, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, प्र.सं.2006

[3] Oxford English English-Hindi dictionary, Dr.Suresh Kumar, Dr.Ramanath Sahai-p.312

[4] Oxford English English-Hindi dictionary, Dr.Suresh Kumar, Dr.Ramanath Sahai-p.252

[5] Oxford English English-Hindi dictionary, Dr.Suresh Kumar, Dr.Ramanath Sahai-p.252

किसी भी तथ्य की खो ा के लिए उससे संबंधित ाानकारी पर निर्णय लेने से पहले सावधानी, सतर्कता से उस तथ्य का विस्तृत अध्ययन कर वि ाार-विवे ान करना ही विमर्श है। सुधीश प ाौरी के वि ाार में "ये दिन आलो ाना के 'विमर्श' में बदल ााने के दिन हैं। विमर्श ाो 'अर्थ' का 'उत्पादन' ही नहीं करते उन्हें संगठित भी करते हैं और अनिवार्यतः सत्रात्मक होते हैं। 'विमर्श' वस्तुतः आलो ाना का विखंडन है, इसीलिए आलो ाना से आगे है।"[6] यानी किसी भी आलो ाना की पुनःआलो ाना हो सकती है। नया वि ाार-विमर्श पुरानी आधुनिक शक्ति संतुलन को अपने ंग से बदलने का उद्यत है। विमर्श में किसी भी तथ्य के अतीत को पुनर्व्याख्या कर उसे अपने अनुकूल बना सकने की सामर्थता होती है। तथा वि ाारों की समग्रता की ागह आंशिकता संभव करता है, र ाना को विज्ञापन बनाता है, समीक्षा को प्रायोि ात बनाता है। समू ो ां ो पर पुनर्वि ाार मांगता है। साथ ही हमारे अव ोतन और प्रकृति को भी नियंत्रित करने में संलग्न है। स्पष्ट है कि यहाँ विमर्श समाप्त नहीं हो ााता बल्कि नए ंग से भविष्य में ााता है। "नए ंग को पूं ाीवाद का विकल्प पुराने ंग का समा ावाद नहीं हो सकता। वह नए ंग का ही हो सकता है।"[7] कहने का तात्पर्य यह है कि विमर्श किसी भी तथ्य की पुनर्व्याख्या है। विमर्श में वि ाारित तथ्य अपनी संपूर्ण व्याख्या खुद बनाता है। किसी भी नये की पुनर्व्याख्यान को आलो ाक ज्ञान के माध्यम से तथ्य का वि ाार-विमर्श करते हैं। 'आलो ाक' स्वयंभू हे स्वयंज्ञानी है। वह आत्मनियंत्रित है। बाहर की किसी भी शक्ति पर निर्भर नहीं है, वह ज्ञान पर निर्भर है, ज्ञानी और स्वयंभू आधुनिक मनुष्य की ये दो ारित्रगत विशेषताएँ हैं।"[8]

विमर्श अध्ययन का अर्थ है-"किसी विशिष्ट सामाि ाक, सांस्कृतिक दृश्यफलक पर संप्रेषण विश्लेषण कार्य। साहित्यिकार, आलो ाक, लेखक,

---

[6] आलो ाना से आगे, सुधीश प ाौरी, फ्लैप पे ा से उद्धृत

[7] आलो ाना से आगे, सुधीश प ाौरी-पृ.8

[8] आलो ाना से आगे, सुधीश प ाौरी-पृ.14

सिद्धांतकार किसी भी तथ्य की खो ा के लिए विमर्शगत अध्ययन करते हैं। वि ारक ाब तथ्यों का विमर्शगत अध्ययन करता है। मूल तथ्य को ही केंद्रित कर उससे संबंधित वस्तुओं, संदर्भित ीज़ों को नए सिरे से नये ंग से पुर्नव्याख्या करता है। विमर्श से संबंधित तथ्यों को देखने-परखने के साथ-साथ वि ारक केवल उन संदर्भों को ही नहीं ाँ ाते-परखते ि ानमें वह विमर्श उत्पन्न हुआ है। परंतु उन सांस्कृतिक, रा ानैतिक, सामा ािक, परिवेश ान्य, परिस्थिति ान्य, आर्थिक, संवाद की एवं बुद्धिगम्य प्रक्रिया की भी ां ा करता है ाो तथ्य विषय में अवगत कराते हैं। विमर्श में केवल भाषा, वाणी, बोली और लेखक ही नहीं आते, बल्कि इसके क्षेत्र में अवाक् दृश्यमान विद्युत संप्रेषण तथा मिथक प्रयो ान एवं विधि-विधानों का भी समावेश हो सकता है।

वर्तमान समय विमर्शों का युग है। साहित्यिक विमर्श, सामा ािक विमर्श, रा ानीतिक विमर्श, धार्मिक विमर्श, दलित विमर्श, सांस्कृतिक विमर्श, ऐतिहासिक विमर्श और स्त्री-विमर्श। सब विमर्श एक दूसरे में घुल-मिलकर एक नये विमर्श का गठन करते हैं। ये विमर्श पुनः अनेक उपविमर्शों में विभा ाित हो ााते हैं। विमर्श से संबंधित तथ्य की छोटी से छोटी ीज़ की परीक्षा करना, वि ार करना, नया विमर्श बन ााता है। ौसे किसी कृति में स्त्री-विमर्श न हो पर स्त्री उपस्थिति हो तो स्त्री-विमर्श का प्रसंग बन सकता है। और उसकी अनुपस्थिति भी स्त्री-विमर्श का केंद्र बन सकती है। इन विमर्शों ने दृष्टि परिमा ाित की है। विमर्शों के इस दौर में अगर र ानाकार हैं या परंपरावादी या फिर व्यक्तिवादी या तो मार्क्सवादी, रूपवादी या फिर आधुनिकतावादी विमर्शों के घेरे में स्त्री र ानाकार को खड़ा कर दिया ााता है। साहित्य के विमर्श की इन्हीं काल्पनिक सीमाओं को तोड़ डालने से साहित्य का अब तक का विमर्श उलट ााता है यही नहीं वह हमारे प ़ने के ंग को भी बदल देता है।

विमर्श में किसी भी तथ्य की खो ा उस तथ्य की पुनर्व्याख्या है। पुराने वि ार-विनिमय को नये वि ार-विनिमय में परिवर्तित करना ही विमर्श है। यानी

तथ्य को पुनर्व्याख्यायित करना है। विमर्श में मूल तथ्य से संबंधित संदर्भों को ाँ ाते-परखते हैं ि ानसे वह विमर्श उत्पन्न हुआ है। आ ा का युग विमर्श का युग है ि ासमें एक विमर्श, नया विमर्श बन ाता है और पुनः अनेक उपविमर्शों में विभा ित हो ाता है।

1.2 स्त्री-विमर्श : अर्थ एवं परिभाषा

स्त्री-विमर्श एक ऐसी ा ित संकल्पना रही है ो स्त्री- ीवन एवं उसके अस्तित्व, उसकी पह ान को लेकर कई प्रश्न खड़े करती है। स्त्री विश्व की ानसंख्या का आधा भाग है। पर विडंबना यह है कि आ ा भी स्त्री दमित, शोषित, प्रताड़ित है। पुरुष का हर प्रकार से सहयोग करने से भी, उसके कंधे से कंधा मिलाकर ालने पर भी उसे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं है। स्त्री ाति क्षुब्ध है उसे हर समय, कदम-कदम पर प्रताड़ित, अपमानित किया ाता है। आ ा भी उसे कुछ पुरुष हीन दृष्टि से देखते हैं। उसे दूसरी दुनिया की सदस्य ही मानते हैं।

स्त्री-विमर्श स्त्री ीवन की व्यथा-कथा के रूप में ि ात्रित हुआ है। इस ि ात्रण में स्त्री ीवन से ुड़ी समस्याएँ, संघर्ष, स्वतंत्रता, अधिकार, ेतना, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता, अस्मिता, स्त्री उत्थान आदि स्त्री-विमर्श के कई तथ्य सामने आते हैं।

स्त्री-विमर्श शब्द स्त्री और विमर्श दोनों के ोड़ से बना है। 'स्त्री' शब्द नारी का पर्यायवा ी शब्द है। 'स्त्री-विमर्श' का शाब्दिक अर्थ हुआ स्त्री से संबंधित वि ार या विवे ान, परामर्श, ा ा। स्त्री-विमर्श यानी स्त्री के ीवन संघर्ष एवं अस्तित्व की ा ा करना। आधुनिक संदर्भ में 'स्त्री-विमर्श' का अर्थ हुआ-वर्तमान निश्ि ात सामा ािक संदर्भों में स्त्री ीवन के विषय को लेकर घूमने वाला वि ार विनिमय ि ासके द्वारा कोई मान्यता, व्याख्या या तथ्य को भाषा के माध्यम से साहित्य में प्रतिबिंबित करे।

"समा ा में स्त्रियों की स्थिति समा ा की प्रगति का सू ाक होती है। स्त्रियों को समा ा में सामा ाक व्यवस्था का निर्माता माना ााता है। भारत में स्त्रियों को प्रेम बलिदान तथा विनम्रता के प्रतीक के रूप में सराहा गया है। इसके बाव ाूद यह एक विडंबना है कि स्त्रियों को, ि ान्होंने अपने परिवार तथा समा ा के विकास के लिए स्वयं को मिटा दिया। उन्हें सामा ाक व्यवस्था में सही-सही स्थान नहीं मिला। समानता के लिए स्त्रियों के संघर्ष का इतिहास अतीत में स्त्रियों की स्थिति का प्रमाण है वह सर्वाधिक उपेक्षित है उसे अपने वास्तविक रूप में आने और अपनी पूर्ण क्षमता दिखाने का मौका नहीं दिया गया। सामा ाक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामा ाक-मूल्य समा ा में स्त्रियों की भूमिका तथा स्थिति का निर्धारण करते हैं। पुरुष-प्रधान समा ा ने काफी हद तक अपनी घिसी-पिटी मान्यताओं को म ाबूत कर स्त्रियों की मानसिकता को नियंत्रित किया है। स्त्रियों के समक्ष आ रही अनेकानेक समस्याओं को सम ाने तथा ाुनौतियों का मुकाबला करने के लिए स्त्रियों की स्थिति संबंधी ऐतिहासिक परिदृश्य की समीक्षा करना अत्यधिक आवश्यक और अनिवार्य है।

स्त्री का मुक्त होना मानव भविष्य के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है। स्त्री-विमर्श का साहित्य स्त्री को व्यवस्था की गुलामी से मुक्त कर उसे व्यक्ति रूप में स्थापित करना ााहता है। स्त्री को मानवीय बनाना ही स्त्री-विमर्श साहित्य का महत्वपूर्ण उद्देश्य है 'स्त्री-विमर्श' लेखन का भविष्य उ वल है। नयी संवेदना और क्रांति की भावना से युक्त स्त्री का साहित्य, विश्वसाहित्य में नया मोड़ लायेगा। ऐसा विश्वासपूर्वक कहा ाा सकता है।

'स्त्री-विमर्श' को सम ाने के लिए कुछ परिभाषाओं को केंद्रित करना ााहूँगी। 'स्त्री-विमर्श' का आधार वह विद्रोह है ाो परंपरागत तरीकों से होते आये शोषण का विरोध करने के लिए स्त्री के मन ान्म लेता है।"[9]

---

[9] सूर ा पालीवाला-स्त्री विमर्श ः सब कुछ ठीक है मगर? 98-वागर्थ, ानवरी 05

"स्त्रीवादी वमर्श न मज़ाक है न अपवाद। वह एक ही समय हमारे देशकाल और पूरी दुनिया से ुड़ा है। वह हमारे समय की ारूरत तथा समग्र आर्थिक, रा ानीतिक, सामा ाक, भाषिक और सांस्कृतिक विमर्श है।"[10]

प्रेम की दुनिया पवित्र पापों पर ही टिकी हुई है। दरअसल, स्त्री विमर्श का मुद्दा मानव के सह ा सामान्य प्रवृत्ति और प्रकृति पर है ाहे वह स्त्री हो या पुरुष। पर पता नहीं क्यों? कुछ व्यक्ति इसे प्रेम और सेक्स से ोड़ने की कोशिश करते हैं।

"मेरी वॉल्सटनक्राफ्ट (Mary waltstnone craft) के शब्दों में-पुरुष के ही समान नारी को भी नागरिक अधिकार तथा शैक्षिक सुविधा रहनी ाहिए।"[11]

कैरोलीन रामा ोग्लु ने अपनी पुस्तक में कहा है कि "परिभाषा का स्थिर रूप कहीं भी देखने को नहीं मिलता क्योंकि स्त्री की आज़ादी का अर्थ हज़ारों वर्षों से विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता रहा है।"

कैरोलिन ने अपनी पुस्तक 'फेमेनि म एण्ड द कांट्राडिक्शन आफ आपरेशन' में स्त्री-विमर्श के संबंध में कहा है कि-मेरा मानना हे कि स्त्री अपने लिंग के कारण असमानता ोलती है। "अतः नारियों ने स्वास्थ्य सुधार, समान शिक्षाधिकार, समान नागरिक अधिकार, समान तन्ख्वाह तथा लोकतांत्रिक रा ानीति में बराबर के हक के लिए आंदोलन किए।"[12]

बार्बरा रयान ने अपनी पुस्तक 'फेमिनि म एंड द विमेन्स मूवमेंट' में 1980 के दशक के शुरुआत में प्र ालित स्त्री-विमर्श पर ार्लेट बं ा के वि ाार को उद्धृत किया है-"नारीवाद स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए ालाया गया आंदोलन है क्योंकि स्त्री हर ागह शोषित है। अतः पूरे समा ा के रूपांतरण के लिए यह आंदोलन आवश्यक है।

---

[10] क्षमा शर्मा, स्त्रीवाद विमर्शःसमा ा और साहित्य, दस्तावेज़ 104/ ुलाई, 2004

[11] A Vindication of the rights of women

[12] Feminism and the contradition of oppression carline Ramozonglo-p.11

एन स्निटोव के वि ार में-"नारीवाद एक ऐसा पहलू है ि से स्त्री के साथ उसकी परिस्थिति, उसका संघर्ष, उसकी शक्ति ि समें वो ीती है, इनको ोड़ कर देख सकते हैं कि हम उसी तरह शोषित हैं ि स तरह कोई और शोषित समूह।"

इन परिभाषाओं में स्त्री-विमर्श स्त्री ीवन की व्यथा-कथा के रूप में ि त्रित हुआ है। इस ि त्रण में स्त्री ीवन से ुड़ी समस्याओं, संघर्ष, अधिकार ेतना, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता, अस्मिता, स्त्री उत्थान आदि स्त्री विमर्श के तथ्य हैं। उनके शोषण, अधिकार, आज़ादी, सुविधा, विरोध को उभारा गया है।

"'यत्र नार्यस्तु पू यंते, रमंते तत्र देवता'-भले ही आ ा भी प्रासंगिक हो किंतु आ ा नारी न 'देवी' बनना ाहती है न 'दासी' रहना ाहती हे, उसे बराबरी का मानवाधिकार ाहिए ो संविधान प्रदत्त है किंतु समा ा उसे देना स्वीकार नहीं करता।"[13]

1.3 विमर्श और स्त्री-विमर्श में अंतर

प्रस्तुत अर्थ एवं परिभाषाओं के आधार पर विमर्श और स्त्री-विमर्श के अंतर को केंद्रित करना ाहूँगी-

विमर्श	**स्त्री-विमर्श**
1. विमर्श का अर्थ वि ार-विनिमय, परामर्श, आलो ना। यानी तथ्यों की पुनर्व्याख्या	1. स्त्री-विमर्श का अर्थ स्त्री से संबंधित वि ार, विवे ना, परामर्श, ा ा है। स्त्री विमर्श यानी स्त्री के ीवन संघर्ष एवं अस्तित्व की ा ा करना।

[13] सुमन कृष्णकांत, इक्कीसवीं सदी की ओर-पृ.34

2. विमर्श किसी भी तथ्य की खो ा के लिए उससे संबंधित ाानकारी पर निर्णय लेने से पहले सावधानी, सतर्कता से उस तथ्य का विस्तृत अध्ययन कर वि ाार विवे ाना करना है।	2. स्त्री-विमर्श में केवल स्त्री संबंधित तथ्यों पर वि ाार-विमर्श कर स्त्री संबंधित स्थिति, मुद्दों, प्रसंगों का अध्ययन करना है।
3. विमर्श में किसी भी प्राकृतिक, सामाि ाक, अप्राकृतिक, असामाि ाक, यानी किसी भी तथ्य का विस्तृत अध्ययन कर वि ाार-विमर्श करना है।	3. स्त्री-विमर्श में स्त्र संबंधित प्राकृतिक, सामाि ाक, अप्राकृतिक, असामाि ाक तथ्यों की खो ा करना है।
4. अंग्रेज़ी में विमर्श को Deliberation consultation कहते हैं।	4. अंग्रेज़ी में स्त्री-विमर्श को women discourse कहते हैं।
5. विमर्श वस्तुतः आलो ाना का खंडन हे, इसीलिए आलो ाना से आगे है।	5. स्त्री-विमर्श आलो ाना का प्रसंग है ि ानकी व्याख्या, पुनर्व्याख्या स्त्री-प्रसंगों में की ााती है।
6. विमर्श=वि+मृश+घञ, के योग से बना है।	6. स्त्री-विमर्श=स्त्री+विमर्श के योग से बना है।

स्पष्ट है कि विमर्श में तथ्यों की पुनर्व्याख्या की ााती है और स्त्री-विमर्श में स्त्री संबंधी तथ्यों की पुनर्व्याख्या होती है।

1.4 स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक परिदृश्य

स्त्री-विमर्श में स्त्री की समस्याएँ, उन पर ाल रही ाि ति बहस, स्त्री शोषण, दासता, उत्पीडन, विसंगतिपूर्ण वातावरण, प्रताड़ना की टीस, परंपरागत

ालता समा ा, इतिहास, भेद-भाव, ाकड़बंधी की दासता इन सब तथ्यों पर लड़ी ाा रही लड़ाई को स्त्री-विमर्श के केंद्र का बिंदु मानते हैं। समय-समय पर लड़ी ाा रही लड़ाइयों ने वाद-विवाद, सिद्धांत का रूप ग्रहण किया है। इन सिद्धांतों ने समय-समय पर विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया है। ि ातना प्रयास किया ााता है उतना ही गहरे गर्त में समस्याओं को उल ाा पाया ााता है क्योंकि पुरानी सभ्यता, संस्कृति, सड़ी-गली मान्यताएँ, पुरुष प्रधान रू ़ि बद्धता, पितृसत्तात्मक बाधाएँ सामने आ खड़ी हो ााती हैं। ि ान पर आंदोलन तो किये ााते हैं पर समस्या का समाधान होने के लिए सदियाँ बदल ााती हैं। समय के साथ ही स्त्री-विमर्श बदलता है। स्त्री-विमर्श के साथ परिभाषा को, संदर्भ को, सो ा-वि ाार को, विमर्श को और कार्यक्षेत्र को भी परिस्थिति के अनुकूल ालना पड़ता है। ये विषय ऐतिहासिक संदर्भ और सांस्कृतिक तथ्यों की वास्तविकता पर आधारित होते हैं।

स्त्री-विमर्श पर वि ाार करने पर कई सवाल अनायास ही खडे हो ााते हैं- क्या? स्त्री पैदा होते ही दमित, शोषित, उत्पीड़ित और प्रताड़नाओं के अधिकार अपने साथ लेकर आती है। या समा ा ने, परंपरागत ालते नियमों ने, पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने, संस्कृति भाषा, सभ्यता, सामा ाक व्यवस्था, ने उसे अपनी संपत्ति और हक सम ा कर ये सारी विडंबनाएँ, विसंगतिपूर्ण तथ्यों को उसे पूर्व ाों की संपत्ति, धरोहर के रूप में प्रदान किये हैं। ि ासे वह शताब्दी-दर-शताब्दी, दशक-दर-दशक निभाती आयी है।

पाश ाात्य और भारतीय स्त्रियों की स्थितियों में काफी अंतर नज़र आता है। उनके रहन-सहन, रीति-रिवा ा, परिवेश, संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, सामा ाकता में अत्यधिक भिन्नता नज़र आती है। ि ास प्रकार पाश ाात्य देशों की स्त्रियों ने समय-समय पर होते आए शोषण के खिलाफ आंदोलन किये हैं। भारत में इस प्रकार की स्थिति कम न ार आती है या यूँ कहें कि प्र ाार-प्रसार के माध्यम से प्रेरित होकर ही इस प्रकार के आंदोलन किये हैं। ाहाँ पाश ाात्य स्त्रियों ने

समानता के लिए सदियों से आंदोलन किये वहाँ पर भारतीय स्त्री को मात्र आज़ादी के 5 वर्षों में समानता का अधिकार प्राप्त हो गया। भारतीय स्त्रियों ने कभी पुरुषों के विरुद्ध अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ी, भारतीय मनीषियों ने ही स्त्री-मुक्ति संघर्ष में सहयोगी और मार्गदर्शक की भूमिका निभाई है, सार्व ानिक, रा ानैतिक, सामा ाक क्षेत्रों में स्त्रियों को पुरुष वर्ग ने ही प्रेरित व प्रोत्साहित किया है राष्ट्रवादियों ने स्त्री की प्रेरणा दी की वे भी राष्ट्र के दायित्वों को सम ों और स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले।स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों का योगदान प्रशंसनीय रहा है। स्त्रियों ने समय-समय पर दासता के छुटकारे के लिए, स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में ब . - ा . कर सहयोग दिया है।

स्त्री-विमर्श के सैद्धांतिक परिदृश्य में समय के अनुसार स्त्री के प्रति होनेवाले शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई है। साथ ही समा ा में व्याप्त विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया गया है। समय-समय पर कई सिद्धांतों का प्रादुभाव हुआ है ि ासने पुरुष प्रधान रू ि.बद्धता को तोड़ने के लिए कई आंदोलन किए हैं। इन आंदोलनों ने स्त्री के मानवीय पख को उभारने का प्रयास किया है।

1.5 स्त्री-विमर्श की परंपरा व इतिहास : पाश ात्य

पाश ात्य देशों में स्त्री की परिस्थिति प्रा ीनकाल से कुछ अधिक सुदृ . नहीं थी ि ातना अनुमान लगाया ाता है। पाश ात्य देशों में आरंभ में प्रा ीन काल में स्त्रियाँ समानता और स्वतंत्रता के अधिकारों से वं ित थी।

प्रा ीन यूनानी और रोमन साम्रा य में स्त्रियों को पुरुष की संपत्ति, उसकी धरोहर ही सम ा ाता था। सुकरात ने 'स्त्री के प्यार को पुरुष की घृणा से अधिक भयावह माना है' और अरस्तु के वि ार में 'स्त्री की तुलना में पुरुष श्रेष्ठ सम ा ाता है' और त्रिवन के वि ार में "स्त्री अनुसरण और आज्ञा पालन के लिए आ ीवन अभिशप्त थी। स्त्री में बुद्धि और विवेक की कोई अपेक्षा नहीं की ाती थी। यूनान का अभि ात्य वर्ग का वि ार था कि वेश्याएँ उनका मनोरं ान करती

हैं, उपपत्नियाँ दैनंदिन स्वास्थ्य रक्षण करती हैं और पत्नियाँ उनके वैध संतानों को ान्म देने के साथ ही स्वामिभक्त गृहस्वामिनी होती थीं।"[14]

"प्रा ीन ापान में स्त्रियाँ प्रार्थनाओं तथा अन्य धार्मिक अधिकारों से पूर्णतः वं ित थीं। प्रा ीन ीन में भी उन्हें देवालय में प्रवेश का अधिकार नहीं था। स्पेन के लोग संकल्प लेते थे कि वे दुष्ट स्त्रियों से ब ेंगे, और सुंदर स्त्रियों के मोहपाश में नहीं बंधेंगे। इटली के प्रा ीन निवासी कहा करते थे कि ैसे घोड़े को काबू में करने के लिए ऐंड लगना ारूरी है वैसे ही स्त्री ाहे अ छी हो या बुरी उसकी ताड़ना आवश्यक होती है। स्त्रियों के प्रति प्रा ीन अरबवासियों का दृष्टिकोण और भी क्रूरतापूर्ण था। अरब समा ा में पुत्री का ान्म अशुभ माना ााता था और वहाँ के लोग प्रायः पुत्रियों को ीवित दफन कर देते थे।"[15]

पाश ाात्य दृष्टिकोण से देखा ाए तो स्त्री को उनके पैरों की ूती ही सम ा ााता था। उनके अनुसार स्त्री कोई मानव न होकर एक वस्तु है िसका ैसा ाहे इस्तेमाल करें ाो ाहे संदर्भ उन पर लागू किए ाएं, मन ाहे वाक्यों में पिरोया ाए। स्त्रियों को किसी भी तरह के मानवीय अधिकार, स्वतंत्र अधिकार प्राप्त न थे। वह एक कटपुतली मात्र थी ाब ाहा, ैसा ाहा न ााना शुरू कर दिया, ाहाँ ाहा, वहाँ व्याख्यायित करना शुरू कर दिया। पारंपरिक नैतिक मूल्यों को उन पर थोपा ााता था। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नैतिक मूल्यों एवं रू़ि गत परंपराओं के ालते स्त्री की मानसिकता भी पुरुष सत्ता के अनुकूल थी। इस अनुकूलता के ालते स्त्री घर की ाारदीवारी में अपने आपको पूर्ण एवं संतुष्ट मानती थी। स्त्री को विवाह और संतान उत्पत्ति के सिवाए दूसरे कोई अधिकार प्राप्त न थे। सामाा िक नियमों के अनुसार स्त्रियों को वे किसी भी सार्व ानिक कार्यों में अपना हिस्सेदार न बनाते थे और न ही इसमें हस्तक्षेप करने का उनको अधिकार ही होता था। स्त्री अपनी मानसिकता से, अपने आ ार-व्यवहार से,

[14] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.52

[15] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.53

पारंपरिक नैतिक मूल्यों की ाकड़बंधी से, निकलने में असमर्थ थी। सामाि ाक दृष्टिकोण से स्त्री पूर्ण रूपेण दासी मात्र थी ि ासका कार्य घर का काम करना, ब ाों को संभालना, सारी प्रताड़नाओं को मुह बंद करके सहना, अपने उत्पीड़न, समस्याओं को बिना शिकायत करे सहते रहना उनका नैतिक नियम बन ाुका था। उसने प्रा ाीन काल से ही पुरुष के अधीन रहना सीखा था, पुरुष ही उसके लिए सर्वहारा था, पुरुष प्रधान समा ा में और स्त्री के दिलोदिमाग में ये बातें घर कर गई थीं कि स्त्री पुरुष के वश में रहने के लिए बाध्य है। स्त्री को ब ापन से ये ही संस्कार दिये ाते थे कि उनको पुरुष के वश में रहना है। अमेरिका, फ्रांस, यूरोप, ार्मन, रोमन, ईसाई अन्य पाश ाात्य देशों में अनेक कारणों से स्त्री ने अपनी इस ाकड़बंधी और अधीनस्थता की परिस्थिति को समान रूप से अपनाया है। ये परिस्थितियाँ यह बतलाती हैं कि पुरुष से स्त्री को हीन और पुरुष को स्त्री से श्रेष्ठ घोषित किया गया था।

पुरुष की सामंती संर ाना पर स्त्री उपेक्षिता में सीमोन द बोउवार मुस्लिम समा ा के कुरान शरीफ की घोषणा को उद्धृत करती हैं कि-"पुरुष औरत से उन गुणों के कारण श्रेष्ठ है, ाो अल्लाह ने उसे उत्कृष्ठ रूप से दिए और अपनी इस श्रेष्ठता के कारण पुरुष औरत के लिए दहे ा ाुटा पाता है।"[16] यानी किसी भी तरह देखा ाए तो स्त्री को पुरुष के गुणों, व्यवहार से कम बताया गया है।

स्त्री की दासता हमेशा सामंती समा ा में ही अधिक नज़र आती है ाहाँ उसकी स्वयं की संपत्ति नहीं थी। वहाँ उसे पुरुषों ैसा समानाधिकार भी प्राप्त नहीं था। "मिश्र के प्रा ाीन समा ा में स्त्री देवी, माँ, पत्नी होकर भी अपनी पूर्ण गरिमा रख नहीं पाती थी क्योंकि ामीन का स्वामी केवल रा ाा हुआ करता था, ऐसी विशिष्ट स्थिति में भी स्त्री पुरुष के बराबर नहीं थी। फराह, धर्मगुरु तथा योद्धा पुरुष ही थे। व्यक्तिगत ाीवन में स्त्री से यह अपेक्षा रखी ाती थी कि वह

[16] स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, The second sex का हिंदी रूपांतरण, प्रभा खेतान-पृ.60

निष्ठावान बनी रहे। विधवा हो ाने तथा किसी पुरुष वारिस के न रहने पर बहुधा स्त्री का पुनर्विवाह कुल के वरिष्ठ पुरुष के साथ कर दिया ाता था, ाहे वह कितना ही बू. ा क्यों न हो।"[17] मिश्र में पूरी तरह से पुरुष व र्स्व स्थापित था।

प्रा ीन ग्रीक में ऐसी स्त्रियों का अंकन हुआ है ो बुद्धिमती, सुसंस्कृत एवं कलात्मक रु ि संपन्न होती थी। पुरुष उन्हें व्यक्ति में ही देखते थे। उनकी संपत्ति स्त्री थी। इस दृष्टिकोण से देखा ाए तो स्त्री गुलाम मात्र थी। उसकी अपनी कोई पह ान न के बराबर थी।

एथेंस तथा स्पार्टी के समा में स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त थे। ब ों का पालन सामूहिक था। स्त्री को अनेक पुरुषों से संपर्क करने की आज़ादी थी। उनकी न कोई नि ी संपत्ति थी और न विशिष्ट वंश परंपरा इसलिए स्त्री का काम ब े पैदा करना था और पुरुष का युद्ध करना था। मध्यकालीन कैथोलिक स्त्री को अशुद्ध व अपवित्र मानते रहे हैं। यह अपवित्रता का भाव वितृष्णा को न्म देता है। पुरुष पौरूषीय के साथ बड़ा होता है बकि स्त्री अपने में संकु ित रहती है। अपने दायित्वों का भाव ोती हुई आगे ब. ती है।

स्त्री विमर्श के प्रारंभिक दृष्टिकोण में स्त्रियों के लिए समानता का समर्थन करने के बाव ूद हमेशा की तरह यह धारणा ड़ें पकड़े हुए थी कि कई प्राकृतिक कारणों से स्त्रियाँ पुरुषों से अलग और कम ोर शक्ति और वि ारों की है उनकी बुद्धि पुरुष से कम है। वह बुद्धि से कम होने के कारण पुरुष के समान काम नहीं कर सकती। ऐसे वि ारों और नियमों ने स्त्रियों को ब पन से उसके स्वभाव और मानसिकता से अपने प्रतिकूल बनाने की कोशिश की है। िससे वह हमेशा दासत्व, सेवा, त्याग, कर्तव्य और संयम ैसे गुणों को बरकरार रखती है और उसने अपने ीने के ंग को समा के अनुकूल स्थापित कर दिया है। हर देश में

[17] स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, The second sex का हिंदी रूपांतरण, प्रभा खेतान-पृ.60

स्त्री की मानसिकता उसके आ ारण, व्यवहार, सो ा-वि ार के विकास की स ाई सभी देशों में एक ही ैसी है िससे बाहर निकलने के लिए वह छटपटाती रहती है। यही दासता हमें विश्व के हर देश के सामा िक परिदृश्य, उसके इतिहास में नज़र आती है।

कानून न तो उसके अधिकारों को निर्धारित करता है और न ही सैद्धांतिक रूप से उसे कोई अधिकार देना ाहता है। बल्कि यह घोषणा कर देता है कि स्त्री को ितना मिला है उतना उसके लिए अधिक है उसी में उसे संतुष्ट होना ाहिए। आज्ञाकारिता, आदेश, सामा िक नियम, पारंपरिक स्थिति में ीना ही उसकी दुर्भाग्यपूर्ण अवस्थाएँ हैं।

रोमन सभ्यता और ईसाई धर्म के कुछ सिद्धांतों के प्रभाव से इस प्रकार की रू़ि ग्रस्त मान्यताएँ, भेदभाव को खत्म करने का प्रयास किया गया है। देशों ने यह घोषणा कर दी कि मानव अधिकार ही सर्वोपरि है िसमें किसी का कोई लिंग, वर्ग व सामा िक प्रतिष्ठा नहीं सब समान और अपने आप में श्रेष्ठ और सर्वोपरि है।

1.5.1 स्त्री-विमर्श:पाश ात्य

स्त्री-विमर्श को किसी एक सिद्धांत में नहीं बांधा ा सकता और न ही उसका एक बाद या सीमित परिधि है िसको नापा ा सके। ब स्त्री की समानता और अधिकार का वि ार आता है तो कई सिद्धांत, कई वाद अपना रूप ग्रहण करते हैं। इन सिद्धांतों में स्त्री की स्थिति और उसकी मांगों को उठाया गया।

पाश ात्य देशों में स्त्री विमर्श पर कई सिद्धांतों का प्रादुर्भाव हुआ है। ये सिद्धांत समय के हिसाब से बदलते रहे और स्त्री की व्यवस्था, उसकी स्थिति, मुक्ति, मांग, अधिकारों को साहित्यिक माध्यमों से सामा िक परिवर्तनों से, स्त्री संबंधी समस्याओं को सुल ाने का प्रयत्न किया गया।

पाश ात्य दृष्टिकोण में देखा ाए तो अनेक आलो कों ने स्त्री-विमर्श पर विवे ना की है िनका ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, परिदृश्य अपने आपमें एक-दूसरे

से पृथक है। पृथक होते हुए भी कुछ तथ्यों में समानता रखते हैं। इनका केंद्र बिंदु स्त्री है। उससे ाुड़े तमाम तथ्य ािनसे वह नि ााद पाना ााहती है।

बु ुर्वा दृष्टिकोण, समा ावादी, उदारवादी, उग्रवादी, विद्रोही दृष्टिकोण, ब्लाकवादी, तीसरी दुनिया का दृष्टिकोण इत्यादि। प्रत्येक दृष्टिकोण का अपना एक सैद्धांतिक ां ाा है, उसकी अपनी वि ाारधारा है, उनकी अपनी उपलब्धियाँ, अपनी अलग पह ाान है। स्त्री विमर्शीय दृष्टिकोण स्त्री की सामा ािक समानता, उसके स्वतंत्रता की पह ाान के साथ ाुड़ी हुई है। इन सिद्धांतों के माध्यम से स्त्री-मुक्ति, स्त्री अधिकारों से संबंधित वि ाार-विमर्श किया गया है। स्त्री-विमर्श के सभी तथ्यों पर इन सिद्धांतों ने वि ाार कर स्त्री संबंधी ाकड़बंधिता को तोड़ने में सफलता भी अर् ाित की है। स्त्रियों को कानूनी अधिकार के साथ स्वतंत्रता का अधिकार भी प्राप्त करवाने में कई सिद्धांतकार सफल हुए है। स्त्री-विमर्श के वि ाार को हम इन सिद्धांतों के माध्यम से देखने का प्रयत्न करेंगे।

1.5.1.1 बु ुआः दृष्टिकोण

स्त्रियों के सामा ािक अधिकार और स्त्री-पुरुष के समानाधिकार की मांग सबसे पहले बु ुआ क्रांतियों की पूर्व बेला में प्रबोधनकाल (Age of Enlightenment) के दौरान केंद्रित हुई। प्रा ाीन काल में स्त्री शोषण के विरुद्ध, उसके यौन-उत्पीड़न, उसके सम्मान, उसके अधिकार, सभी तथ्यों के विरुद्ध एक बगावत मात्र थी। केवल पुरुषसत्ता के खिलाफ एक संघर्ष मात्र था। बु ुआ सिद्धांत की कोई सुनिश्ि ात पृष्ठभूमि नहीं थी केवल पुरुष सत्ता के खिलाफ एक संघर्ष मात्र था।

"'मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा' के मॉडल पर ओलिम्पी द गू ो (1748-93) ने 'स्त्री और स्त्री नागरिक के अधिकारों की घोषणा' तैयार

की और उसे 1791 की राष्ट्रीय असेंबली में प्रकट किया। स्त्री-पुरुष के बी ा सामा ाक, रा ानीतिक, समानता की मांग को उठाया गया था।"[18]

यूरोप में 18 वीं सदी के ज्ञान-प्रसार आंदोलन में बुद्धिवाद िंतन केंद्र में था। इस आंदोलन के कुछ वि ाारक मानते थे कि "स्त्री अपनी प्राकृतिक संर ाना से पुरुषों से हीन है।" इसी मानसिकता के कारण उनके समानाधिकार के विरोधी थे। बुद्धिवाद के सिद्धांतकारों ने परंपरागत ाली आ रही संस्थाओं को ाुनौतियाँ दीं।

बौद्धिक व्यक्तिवाद मानव अधिकार को केवल पुरुष अधिकार ही मानते थे। इनकी दृष्टि में स्त्री अपूर्ण और असमर्थ थी। दिदेरी, मान्टेस्क्यू तथा रूसो ौसे वि ाारक स्त्री को भावनाओं और आवेग की उप ा मानते थे। इनके वि ाार में-"वे सभी स्त्रियों को मूलतः भावनाओं और आवेग की उप ा सम ाते थे, ाो पत्नियों और माताओं के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, लेकिन सार्व ानिक क्षेत्र के लिए सार्व ानिक कारणों से ही वे उपयुक्त नहीं है।"[19] इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री की भूमिका उसके रूपों को महत्व देती है, उसके सार्व ानिक हस्तक्षेप को नहीं।

इसी काल में अमरीकी क्रांतियाँ और फ्रांसीसी क्रांतियाँ हुई थीं। इन क्रांतियों ने स्त्री आंदोलन शुरू किया था। 'स्वतंत्रता की अमरीकी घोषणा' (1776) और फ्रांसीसी घोषणा (1779) स्वतंत्रता और मानवता के अधिकार सामा ाक दृष्टिकोण से होने लगे थे। इसका प्रभाव स्त्रियों के अधिकार के प्रश्न पर भी केंद्रित होने लगा था।

ाँ आँतुआँ कोन्दोर्से (1743-94) स्त्रियों की समानता का प्रबल पक्षधर था। इनके वि ाार में-"स्त्रियों के बारे में मौ ाूद गहरे पूर्वग्रह उनकी असमानतापूर्ण सामा ाक स्थिति का बुनियादी कारण है। वह कानूनी समानता और शिक्षा के

[18] सरला माहेश्वरी, नारी प्रश्न-पृ.14

[19] मेरी वोल्सटन क्राफ्ट, स्त्री अधिकारों का औ ात्य-साधन, अनु मीनाक्षी-पृ.15

 ारिए स्त्रियों की मुक्ति को संभव मानता था।"[20] इन्होंने सामा िक श्रेणियों का विरोध कर, रा नीतिक समानता का उत्कट समर्थन किया है।

अमरीकी क्रांति के दौरान मर्सी वारेन और एबिगेल एडम्स के नेतृत्व में स्त्रियों ने मताधिकार और सम्मति के अधिकार के साथ सामा िक समानता की मांग को उठाया था ि से स्त्रीवाद की शुरुआत मानते हैं।

फ्रांसीसी क्रांति ने पूरे यूरोप को उद्वेलित कर दिया था ि ससे इंग्लैंड का बुद्धि ीवी समा भी ब न सका। इसी क्रांति से यूरोप में स्त्री आंदोलन की शुरुआत हुई। स्त्रियाँ इस समय ान-प्रदर्शन कर रही थी, रा नीतिक कामों में भागीदारी ले रही थी। स्त्रियों के क्रांतिकारी क्लबों के रूप में स्त्रियों के संगठन अस्तित्व में आए। संगठनों के माध्यम से सामंतवाद-विरोध संघर्षों में स्त्रियों ने भाग लिया और मांग की कि आज़ादी, समानता और भातृत्व के सिद्धांतों को किसी लिंग, भेद-भाव को न मानते हुए सार्विक रूप से लागू किया ाना ाहिए।

रि ार्ड प्राइम ने फ्रांसीसी क्रांति की प्रशंसा मुक्त कंठ से की और यह कहा कि-"फ्रांसीसियों की तरह ब्रिटिश नता को भी यह न्यायसंगत अधिकार है कि वह एक बुरे रा ा को सिंहासन से हटा दे।"[21] इस व न से रू ि़वादी अंग्रेज़ी समा पागल सा हो गया था।

बु ुआ समा में स्त्रियों की सामा िक स्थिति के प्रति एक अंतर्विरोध स्थापित था। इस अंतर्विरोध के ालते पूं ीवाद उत्पादन प्रक्रिया ने ऐसी परिस्थिति बना दी ि सके अंतर्गत सामा िक उत्पादन में स्त्री मज़दूरों और अन्य नौकरीपेशा स्त्रियों की हिस्सेदारी ब ़ती रही ि सके फलस्वरूप यौन-भेद, उत्पीड़न के नये परिणाम सामने आये, यौनिक आधार पर शोषण के नये परिणाम तथा पुरुषसत्ता की सांस्कृतिक, सामा िक मूल्यों का समा में एक नया तंत्र विकसित हुआ।

---

[20] मेरी वाल्सटन क्राफ्ट, स्त्री अधिकारों का औ ित्य साधन, अनु मीनाक्षी-पृ.15
[21] मेरी वाल्सटन क्राफ्ट, स्त्री अधिकारों का औ ित्य साधन, अनु मीनाक्षी-पृ.18

बु ुआ क्रांतियों के समय सर्वप्रथम 18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में मेरी वोल्सटन क्राफ्ट (1759-1797) यूरोपीय बुद्धि ीवी वर्ग की उस पीि की सदस्या थी िसका मानस प्रबोधनकालीन दार्शनिकों के क्रांतिकारी वि ारों के आत्मिक परिवेश में निर्मित हुआ था। स्त्री-आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावे । इनकी पुस्तक-"स्त्री के अधिकारों का औि त्य-साधन" (A vindication of the rights of women) प्रकाशित हुई यह पुस्तक 'ओलिम्पी दि गु ो' के दस्तावे । के प्रतिपादनों को ही उन्नत और विस्तृत करती है। 19 वीं शताब्दी के बु ुआ क्रांतिकारी स्त्री-अधिकार आंदोलन और 20 वीं शताब्दी के नारीवादी आंदोलन की बुनियादी रूपरेखा देखने को मिलती है। इस पुस्तक को आधुनिक काल में स्त्रीवादी वि ारों की सबसे महत्वपूर्ण सशक्त पुस्तक के रूप में स्वीकारा है।

बीसवीं शताब्दी में िस बु ुआ स्त्रीवाद का ान्म और विकास हुआ, वह पुरुष-व र्स्ववादी और यौनिक आधार पर भेदभाव सहित स्त्री-प्रश्न के सभी पहलुओं को किसी-न-किसी रूप में समा । विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया से और सामाि क संर ना के आर्थिक मूलाधार से वि छिन्न करके देखता रहा है। वह स्त्री-मुक्ति के प्रश्न को समस्त शोषित-उत्पीड़ित ानों की मुक्ति की परियो ना का एक अंग मानने के ब ाय एक स्वतंत्र-स्वायत्त प्रश्न मानता रहा है।"[22]

सामाि क परिवेश से ो खाई स्त्री-पुरुष के बी । विद्यमान थी उसको मिटाने के लिए क्राफ्ट ने समान शिक्षा, समानाधिकार की मांग को केंद्रित किया है। ये स्त्री के अधिकारों के प्रति आवाज़ उठाती है। सामाि क परिस्थितियों में अदम्य साहस दिखाकर आ । भी ये स्त्री-मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार मानी ाती है।

क्राफ़्ट यह स्वीकार नहीं करती कि-"स्त्रियाँ बुद्धि के मामले में पुरुषों से कम ोर है अथवा छुईमुइपन, ना ुकता तथा सतहीन उनका नैसर्गिक गुण है।

---

[22] स्त्री-अधिकारों का औि त्य-साधन, मेरी वोल्सटन क्राफ्ट, अनु.मीनाक्षी-पृ.13

रूसो को ुनौती देती हुई वह कहती है-‘मैंने संभवतः ो. ो.रूसो की तुलना में कहीं यादा संख्या में लड़कियों को उनके शैशवकाल से देखा है।’"[23]

आगे वे कहती हैं वह स्वतंत्र मानुषी है ाो बौद्धिक शिक्षा पाने में समर्थ तथा उसकी अधिकारी भी है। स्त्री-विमर्श के िंतन में उनका वि ाार-"स्त्रियाँ सुविधा ानक गुलाम हो सकती है, लेकिन यह गुलामी मालिक को और उसके अधम गुलाम को लगातार नी े गिराने का काम करती रहेगी।"[24]

मेरी क्राफ़्ट ने परंपरागत शिक्षा प्रणाली, नैतिक सामा िक मान्यताओं में स्त्री की दशा को केंद्र बनाया है उनका मानना है कि-"स्त्रियों को ‘अज्ञान और दासों ैसी निर्भरता’ की स्थिति में बनाए रखने में इनकी विशेष भूमिका होती है।"[25] यह व्यवस्था एक बुनियादी कारक है।

इस कथन पर थाम्पस ने सिर्फ स्त्रियों के लिए स्त्री अधिकार, रा ानीतिक अधिकारों, बौद्धिक क्षमताओं के साथ-साथ स्त्रियों को शारीरिक दृष्टि से पुरुषों से कहीं अधिक श्रेष्ठ माना है। उनके वि ाार में स्त्री आंदोलनों को नये दृष्टिकोण से समानाधिकार अनिवार्य रूप से सामा िक संबंधों, उत्पादन संबंधों के साथ ाोड़ कर दिखाया गया। "उत्पादन या नि ाी संपत्ति के संबंध में श्रेष्ठता हमेशा आदमी के कामों में औरतों की तुलना में कहीं यादा महत्वशाली होने की अतार्किक भावनाओं को गु ाारती रहेगी।"[26]

 ोम्म मिल के वि ाार में-" ूँकि महिलाओं का अपने पिता या पति से अलग कोई हित नहीं होता, इसलिए उनके स्वतंत्र रा ानीतिक प्रतिनिधित्व की कोई ारूरत नहीं है।"[27]

---

[23] A vindiction of the right of women-p.129

[24] मेरी वाल्सटन क्राफ्ट, स्त्री अधिकारों का औ ित्य साधन-पृ.21

[25] मेरी वाल्सटन क्राफ्ट, स्त्री अधिकारों का औ ित्य साधन-पृ.20

[26] सरला माहेश्वरी, नारी प्रश्न-पृ.17

[27] सरला माहेश्वरी, नारी प्रश्न-पृ.17

थाम्पस आगे कहते हैं स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता उनकी वास्तविक स्वतंत्रता के लिए ारूरी है ािससे वे अपने आप को स्वतंत्र सम ों और समा ा में सही ंग से बिना किसी नियम के, अड़ ान के खुली सांस ले सके। अपने दायित्वों को निभाते हुए अपना ीवन सार्थकता से व्यतीत करे।

बु ुआ दृष्टिकोण के अंतर्गत नागरिकों के अधिकारों की घोषणा के साथ स्त्री पुरुष के बी ा सामाािक, रा ानीतिक समानता की मांग को केंद्र में रखकर स्त्री की समान मानवीय अधिकार और परंपरागत ाले आ रहे नैतिक मूल्यों को ुनौतियाँ दी गयी है।

1.5.1.2 समा ावादी : दृष्टिकोण

समा ावादी दृष्टिकोण से देखा ााए तो स्त्रीवादी िंतन सबसे समग्र रूप से मेविलियन थाम्पसन (1775-1844) की प्रसिद्ध पुस्तक "Appeal of one half of Human race women, against the pretension of the other half, men to retain them in political and hence civil and domestic slavery" सामने आयी। प्रसिद्ध समा ावादी अध्यापक अन्ना हिलर (Anna Wheelar) के साथ मिल कर थाम्पसन ने यह पुस्तक लिखी थी ािसमें इन्होंने स्त्री-मुक्ति को पूरे समा ा की मुक्ति का सू ाक बताते हुए कहा-"िास प्रकार और गुलामी ने आज़ादी को अज्ञानता और निष्ठुरता के क्षेत्रों में ाकड़ रखा है, उसी प्रकार उसकी मुक्ति से आदमी को ज्ञान, स्वतंत्रता और सुख का पुरस्कार मिलेगा।"[28]

ाार्ल्स फूरिये की तो यह मान्यता था कि किसी समा ा में आज़ादी का एक बुनियादी पैमाना यह है कि उस समा ा विशेष में स्त्रियाँ किस हद तक आज़ाद हैं। इनके वि ाार में स्त्री की आज़ादी पर ही समा ा की स्वतंत्रता टिकी हुई है। समा ा स्वस्थ्य तभी होगा ाब स्त्री स्वतंत्रत होगी।

---

[28] अपील, थाम्पसन-पृ.213

थाम्पसन के वि ारों और परंपरा को आगे ले ाने वाले सदस्य-' ान स्टुअर्ट मिल' थे िन्होंने स्त्रियों के विषय में विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'आन द सब ेक्शन आफ वुमेन' (On the subjection of women) को समा ा, साहित्य में प्रस्तुत किया। इस पुस्तक को उदारवादी स्त्री-विमर्श की प्रमुख अभिव्यक्ति माना गया है, िसमें स्त्री की सामाि क स्थिति को केंद्र बिंदु बनाकर समा ा में स्त्री की स्थिति का सू ाक माना है। िसमें स्त्री से संबंधित वि ार-विमर्श को आंका गया है उसकी समस्या का समाधान ूँ.ने का प्रयास किया गया है।

स्त्री संबंधी वि ारों को समा ा में केंद्रित किया है िसमें स्त्री की परिस्थिति, परंपरावादी दृष्टिकोण को उभारा गया है। मार्क्सवादी वि ारधारा भी इन्हीं सब तथ्यों पर टिकी हुई है। मार्क्सवाद मानव इतिहास, समा ा का तथ्यात्मक विश्लेषणों का विवे ान करनेवाली एक वि ारधारा है, िसमें आधुनिक स्त्री-विमर्श के दर्शन भी मिलते हैं। एंगेल्स की पुस्तक 'परिवार नि ी संपत्ति और रा य की उत्पत्ति' को स्त्री-विमर्श के सिद्धांत का महत्वपूर्ण बिंदू माना ाता है िसमें इन्होंने लुईस मार्गन की पुस्तक के आधार पर आरंभिक कबिलाई समा ा से लेकर वर्तमान काल के परिवार के उदय के पूरे इतिहास को केंद्र में रखा है।

मार्क्स और एंगेल्स ने स्त्री-विमर्श के सिद्धांतों में स्त्री से संबंधित सभी तथ्यों को उनके स्रोत और ऐतिहासिक आशय की पह ान को ागृत किया है। ये स्त्री-विमर्शक िंतक नहीं थे फिर भी इनके सिद्धांत में स्त्री-विमर्श के सैद्धांतिक पक्षों का विवे ान मिलता है। एंगेल्स के वि ार में यह कमी दिखाई देती है कि वे स्त्री-पुरुष के बी ा विरोध को वर्ग-संघर्ष से नापते हैं। ठीक है कि स्त्री-पुरुष का संघर्ष वर्ग-संघर्ष का ही प्रतिरूप है पर दोनों संघर्षों को एक रूप में देखना संगत नहीं लगता क्योंकि दोनों अपने आप में अलग है वर्ग संघर्ष का कोई ैविक आधार नहीं है ाबकि सामूहिक ीवन में स्त्री-पुरुष का स्वार्थ प्रायः एक होता है। इनकी वर्ग सिद्धांत की समीक्षा (critique of class theory) प्रकाशित हुई

ि ासमें स्त्रियों को अधिकारण, भौतिक और अर्थव्यवस्था के बारे में विवे ान किया गया है। ‘Women oppression is essentially a by-product of class society and that full equality will only be achieved when capitalism is replaced by genuine socialism. Both these approaches use existing male theories and apply them to the situation of women."[29] एंगेल्स स्त्री-मुक्ति ैसी सामाि ाक स्थिति को ाागृत करने का प्रयास करते हैं। मार्क्सवाद एक भौतिकवादी वि ाारधारा है। ि ासमें अस्तित्व उसकी ेतना का मुख्य कारक तत्व होता है। मार्क्स के वि ाार में सामाि ाक परिस्थितियों से ुड़ी भौतिक और आत्मिक दोनों स्वरों से मानव मुक्त आवश्यक है।

समा ावादी समा ा के उत्पादन को ही समा ा का ारित्र मानते हैं। मार्क्सवादी उत्पादन की परिस्थितियों में परिवर्तन से स्त्री-पुरुष संबंध में परिवर्तन लाया ाा सकता है। ये श्रम के लैंगिक विभा ान से पुरुषों का और स्त्रियों का भेद मिटा सकते हैं-मार्क्सवाद सिद्धांत मानता है कि परिवार की संर ाना से स्त्री के घर के कार्यों का सं ाालन होता है। परिवार कैसे बना? स्त्रियों के पारिवारिक काम कैसे सं ाालित हों, स्त्री द्वारा कार्यों का लैंगिक विभा ान कैसे हुआ इन सब सामाि ाक तथ्यों पर ही इन वि ाारकों का ध्यान केंद्रित रहता है। आगे वे कहते हैं-"मानव अपना इतिहास स्वयं बनाते हैं पर अपने मन ााहे ंग से नहीं। वे उसे अपनी मन ााही परिस्थितियों में नहीं अपितु ऐसी परिस्थितियों में बनाते हैं ाो उन्हें अतीत से प्राप्त और अतीत द्वारा संप्रेषित होती है और ि ानका उन्हें सीधे-सीधे सामना करना पड़ता है।"[30]

---

[29] Feminist theory:A critic of idealogy-Feminism, Marxism method and state, Edited by Nanner O.Keohane-p.11

[30] मार्क्स-एंगेल्स संकलित र ानाएँ, लूई बोनापति की 18 वीं ब्रूमेर भाग-1, प्रगति प्रकाशन मास्को-पृ.133

ब्रिटेन में सबसे पहले समा ावादी सिद्धांत का अध्ययन हुआ। **Juliet, Mitchell, Sheila, Rowbotha, Michela Barrett** इस अध्ययन में समा ावादी अवधरणा के अनुसार स्त्रियों की परिस्थिति की ाँ ा की। लिंग और अर्थव्यवस्था को सम ा सही ंग से उसके संबंधों का परि ाय दिया। समा ावादियों ने स्त्री के परंपरागत ाकड़बंधी की उपेक्षा की है उसका ये खंडन करते हैं।

Juliet Mitchelli की पुस्तक **"Women! The longest Revalution" (1940)** इसमें आधुनिक गर्भ निरोध के द्वारा उत्पादन के पुनरुत्पादन में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है इसका विवे ान करती है। स्त्रियों के पुनरुत्पादन की प्रक्रिया को उत्कृष्ट समा ा की विसंगतिपूर्ण तत्व मानती है पुनरुत्पादन, उत्पादन, ब ाों का सामा ाीकरण और लैंगिकता, ये तत्व सामाि ाक संर ाना में आये परिवर्तन हैं ाो स्त्री को हर प्रकार से शोषित करती है। समा ावादी दृष्टिकोण इन तथ्यों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

अमरीकी अगस्त बेबेल **(1904)** की पुस्तक 'नारी और समा ावाद' **(Women and socialism)** स्त्री-विमर्श पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण को व्याख्यायित करने तथा वैज्ञानिक समा ावाद के सिद्धांतों पर आधारित सर्वहारी स्त्री आंदोलनों को प्रमुखता देने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। इस पुस्तक ने ार्मनी के साथ-साथ यूरोप पर भी प्रभाव डाला। विश्व की प्रसिद्ध स्त्री नेताओं ौसे क्लारा, ोटकिन, रो ाा लुक्सम वर्ग आदि स्त्रियों ने स्त्री-मुक्ति के कई संघर्ष और क्रांतिकारी वातावरण के कई ां ो तैयार किये। ा ाा-ब ाा बीमा, कामगर स्त्री सुरक्षा, स्त्रियों की रा ानीतिक शिक्षा, स्त्री के उत्पीड़न, ाकड़बंधी संबंधी तथ्यों के विकास के लिए रा ानीतिक संगठनों का विकास किया। अमरीकी **socialist party** के सदस्यों द्वारा 'द न्यु रिव्यु मासिक पत्रिका' में स्त्रीवाद और समा ावाद के संदर्भों में विमर्श किये हैं।

केरोलिन रमा ोनोग्लु की पुस्तक ‘फेमिनि म एण्ड द क्रांट्रडिक्शन ऑफ आपरेशन’ में कहा-मेरा मानना है कि स्त्री अपने लिंग के कारण असमानता ोलती है। अतः नारियों के स्वास्थ्य सुधार, समान शिक्षाधिकार, समान नागरिक अधिकार, समान तन्ख्वाह तथा लोकतांत्रिक रा ानीति में बराबर के हक के लिए आंदोलन किए।"[31] ये मार्क्सवाद और स्त्रीवाद को परंपरा विरोधी मानते हुए कहती है-"मार्क्सवादी नारीवाद स्वभाव से अतिवादी नारीवाद का परस्पर विरोधी है समा ावाद एक विशेष वर्ग की रु ा के लिए एक विशेष ऐतिहासिक मानव विकास के स्तर को उठाने का संघर्ष है। इसलिए फेमिनिस्टों ने प्रतिकूल स्थिति में स्त्री की रु ा के लिए संघर्ष की व ानबद्धता, वर्ग की लापरवाही, आर्थिक रु ा, साथ ही शोषित वर्ग के हितों के लिए संघर्ष की व ानबद्धता पर बल दिया।"[32] ये स्त्री पर होने वाले अत्या ार पर विवे ान करती है।

बार्बरा रयान की पुस्तक-Feminism and the women movement में-"नारीवाद स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए ालाया गया आंदोलन है क्योंकि स्त्री हर ागह शोषित है। अतः पूरे समा ा के रूपांतरण के लिए यह आंदोलन आवश्यक है।"[33] ये सो ाते हैं स्त्री से संबंधित तथ्य समा ा से ाुड़े हुए हैं इसलिए इसके शोषण का संबंध समा ा से है तो आंदोलन होना ारूरी हो ााता है। ये आगे मार्क्सवादी स्त्रीवाद के बारे में कहते हैं-"मार्क्सवाद नारीवाद वाम से अपने संबंधों को बिना खराब किए ही स्त्री की स्वतंत्रता के लिए प्रश्न उठाता है।"[34]

---

[31] Feminism and the contradiction of oppression, Carline Ramozonylo-p.11

[32] Feminism and the contradiction of oppression, Carline Ramozonylo-p.13

[33] Barbara Ryan, Feminism and the women movement-p.23

[34] Barbara Ryan, Feminism and the women movement-p.23

समा ावादी दृष्टिकोण में स्त्री की सामा िकता की मांग को उठा कर स्त्री की सामा िक व्यवस्था का स्वास्थ्य और स्वतंत्रता निर्भर की घोषणा कर, स्त्री की सामा िक व्यवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया गया है।

1.5.1.3 उदारवादी : दृष्टिकोण

उदारवाद स्त्रीवाद ने सामा िक दृष्टिकोण से न ाते हुए सीधे स्त्री के प्रश्न पर ध्यान दिया है। वे स्त्री के अधिकारों और उसकी समानता पर अधिक बल देते हैं। इस सिद्धांत में लिंग-भेद पर होने वाले शोषण पर अधिक बल दिया है।

मेरी वोल्सटनक्राफ्ट की पुस्तक "ए विण्डिकेशन ऑफ दि राइट्स ऑफ विमेन" (1792) से ही उदारवादी स्त्रीवाद का प्रारंभ मानते हैं। ये मानती है कि मनुष्य ैसे ही स्त्री को नागरिक अधिकार शिक्षा मिलनी ाहिए वे सारी सुविधाएँ स्त्री को प्राप्त होनी ाहिए ो पुरुष को प्राप्त है।

उदारवादी स्त्रीवाद में बेट्टी फ्राइडन, ार्मन ग्रीयर, एन ओकाली इन लेखिकाओं ने स्त्री अधिकार एवं स्थिति पर अपनी पुस्तकों में आवाज़ बुलंद की। 'बेट्टी फ्राइडन' की 'नारी रहस्य कथा' (The femine mystique-1963) में स्त्री से ुड़े तमाम तथ्यों को पेश कर यह सिद्ध किया कि पुरुष प्रधान समा ा में मनोवैज्ञानिक दबाव डाल कर स्त्रियों की वासना पूर्ति का साधन माना और माँ, गृहिणी तथा रमणी की भूमिकाएँ ही स्वीकार करने को विवश किया है।[35] इस पुस्तक ने पाश ात्य देशों में स्त्री मुक्ति को न्म दिया और यह पुस्तक काफी ार्ित व लोकप्रिय हुई।

बेट्टी फ्राइडन ने नाऊ (now) (नेशनल आर्गेनाइ ेशन आफ वीमेन) नामक संगठन की स्थापना की और ये इसकी अध्यक्ष भी थी। इसमें अमरीकी समा ा की स्त्रियों से संबंधित तथ्यों पर वि ार होता था। इसे दुनिया का सबसे बड़ा संगठन माना ाता है। बेट्टी फ्राइडन ने नोऊ में अपने वि ार व्यक्त करते

---

[35] The women mistic-Betty Fridan-34

हुए कहा है-"We aim... to take action to bring women in to full participation in the main stream of America society now, exercising all the priviliges and responsibilities theory in truly equal partnership with men."[36] यानी स्त्री को सामा िक,रा नैतिक में खुल कर भाग लेना ाहिए। स्त्रियों का वृत्तियों में और उ ा शिक्षा में समान प्रवेश होना ाहिए। स्त्री एक समान सामा िक समूह के तरह बनी है तो स ोत होकर सब कार्यों में भाग लेना होगा।

'वोगेल' के वि ार में 'फ्राइडन' के 'नाऊ' को उदारवादी विमर्श माना है। इसमें स्त्री-मुक्ति के कई आंदोलन हुए िसमें उदारवादी रा य द्वारा अधिकार व अवसर के वादों से मुकरने को स्त्री के उत्पीड़न के कारण के रूप में पह ाना था। वैधानिक उपायों और सरकारी कदमों के माध्यम से समानता को हासिल करने की कोशिश की थी।

ार्मन ग्रीयर की 'फीमेल यनेक' पुस्तक में स्त्री के शारीरिक सर्वेक्षण के द्वारा स्त्री के अवयव संबंधी मिथकों को तोड़ने का प्रयास किया और कहा कि- "हमें क्रांति लानी है, कोई सुधारवादी आंदोलन नहीं ालाना है।"[37]

उदारवादी स्त्रीवाद लिंग भेदभाव को स्वीकार नहीं करता, ये लिंग से संबंधित परंपरागत ालती आ रही पितृसत्तात्मक रूप को नहीं मानते हैं, ये व्यक्तिवादी होते हैं व्यक्ति से संबंधित वि ार करते हैं और विवाह ैसे संबंध को भी अस्वीकारते हैं। ये समान अवसर के लिए विरोध और संघर्ष करते हैं। उदारवादी स्त्रीवाद के आंदोलन तथा 1917 की सोवियत क्रांति और समा ावाद ने स्त्रियों को ो कानूनी अधिकार प्राप्त कराये, उसके साथ ही परिवार के बदलते

---

[36] The feminist, Challenge, David Bouchier, Macmillan London-1983-p.218

[37] Female Uniq- ार्मन ग्रीयर-पृ.36

हुए रूप, घरेलू कामका ों में नई-नई मशीनों के प्रयोग ने समा ा के लिए नया माहौल और साथ ही नयी ुनौतियाँ भी प्रस्तुत कीं।

उदारवादी दृष्टि में स्त्री की कानूनी समानता, रा नैतिक, आर्थिक, सामा िक अधिकारों को केंद्र में रखकर स्त्री-मुक्ति के वि ार को न्म दिया गया है।

1.5.1.4 उग्रवादी : दृष्टिकोण

उदारवादी स्त्री-विमर्श ने कानूनी समानता, रा नैतिक, आर्थिक, सामा िक अधिकारों के केंद्र में रखा था। इसके विपरीत उग्रवादी स्त्री-विमर्श ने पुनरुत्पादन और अनुभव को केंद्र में रखा है। दोनों स्त्री-विमर्शों का केंद्र बिंदु स्त्री ओर उससे संबंधित विमर्श है। उग्रवादी स्त्री-विमर्श पितृसत्तात्मक समा ा के खिलाफ एक बर्दस्त आंदोलन है, िसमें नये स्त्री-विमर्श के दर्शन दिखाई देते हैं। उग्रवाद ने पूरी दुनिया में आंदोलन फैलाने का सशक्त काम किया है इसमें पुरुषों के समान ही स्त्रियों ने रा नीति में हिस्सा लेना प्रारंभ किया है।

कैरोलिन ने उग्रवादी स्त्री-विमर्श पर वि ार करते हुए कहाँ-" हाँ उदारवादियों ने स्त्रियों के अधिकारों के लिए आंदोलन लाए वहीं अतिवादी नारीवादियों ने पुरुष प्रधान समा ा पर प्रहार किया। इनके अनुसार स्त्री-पुरुष संबंधी रा नीतिक रूप से भी समस्या प्रधान है। इन्होंने हर उस वैध सामा िक व्यवस्था पर प्रश्न ह्न लगाया, िसमें पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर हो रहे दमन को ारी रखा है।"[38] उग्रवादियों ने पहली बार बलात्कार ैसे शोषण, यौन उत्पीड़न पर आवाज़ उठाई। इस विषय पर सुसेन ग्रीफन की 'The politics of Rape (1970) पुस्तक काफी र्ि त है। उग्रवादियों में मुख्य भूमिका निभाने वाले वि ारक हैं-'शुभामिथ फायरस्टोन', 'एस.ब्राउन मिलर', 'एम.डाली' तथा 'केट मिलेट'।

---

[38] Feminism and the Women's movement, Barbara Ryan-p.49

'केट मिलेट'-ने 'Sexual politics' 1770 में 'Second wave feminism' या उग्र स्त्री-विमर्श को बहुत ही प्रभावित किया है। इन्होंने पुरुष सत्ता के उग्र विरोध के साथ यौन क्रांति का आह्वान किया है। उग्रवादी सिद्धांत के शुरू होने से पुनरुत्पादित लैंगिकता के बारे में विमर्श प्रस्तुत किया।

'कमला ामोला' ने 'केट मिलेट' को संबोधित करते हुए अपने एक लेख में लिंग भेद के संदर्भ में कहा है-"हमारी सामा िक परिस्थितियों के कारण पुरुष और स्त्रियाँ वास्तव में दो संस्कृतियाँ हैं उनके ीवन अनुभव बिलकुल भिन्न हैं। यह बात महत्वपूर्ण है ब ापन से लेकर होनेवाले लिंग अस्मिता के विकास में अभिरु ायों, सामा िक स्थिति, औकात, मुद्रा और अभिव्यक्ति के संदर्भ में दोनों लिंगों के लिए क्या संगतिपूर्ण हैं।"[39]

इसी विषय में केट मिलेट की पुस्तक 'सेक्सुअल पालिटिक्स' में "पुरुष प्रधान समा ा के उग्र विरोध के साथ यौन क्रांति का आह्वान किया और फ्रीसेक्स तथा लेस्बियन का समर्थन किया साथ ही उन्होंने स्त्रियों की एक ुटता में कमी पर भी वि ार किया ो पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में कम पाया ाता है।"[40] आगे शुलमिथ फायरस्टोन की 'द डायलिटिक्स आफ सेक्स' (1970) में ये बताती है कि अधीनता उसकी प्र ानन शक्ति पर निर्भर है ो कि ौविक सत्य है।

सेक्सुअल पालिटिक्स में आत्मिक सामा िक परिवेश द्वारा पुरुष प्रधान परिवार की स्थापना बताई है िसमें पुरुषत्व के शाब्दिक सामा िक, ऐतिहासिक, कल्पनाओं को संश्लेषित किया है। इसके मूलभूत वि ार स्त्रियों के अत्या ार, शोषण, उनके ौविक से न होकर सामा िकता के निर्माण पर टिका है इसमें रा ानीति, सामा िकता, प्रतिमानों को दर्शाया है। सामा िक, लैंगिक, व्यक्तियों के दृष्टिकोण शिक्षित कर सामा िक बुराइयों उनमें छिपी टिंस विसंगतिपूर्ण हिंसा को नियंत्रण करने का प्रयास दिखाया गया है।

---

[39] अंधेरी सुरंग का मुहाना, कमला ामोला-पृ.49, हंस ानवरी 1995

[40] Sexual politics, Kate Millet-p.38

सुसान ब्राउन मिलर ने अपनी पुस्तक-"Against our will, men, women and Rape' (1975) में उग्रवादी दृष्टिकोण के मुख्य लक्ष्यों को केंद्र में रखा है। ि ासमें स्त्रियों के पुनरुत्पादित भूमिकाओं को शारीरिक और मानसिक अत्या ार के बी । के संबंध को सम । सकना बताया है। आगे वे कहते हैं-लैंगिक हिंसा मुख्य रूप से बलात्कार अथवा बलात्कार की धमकी, पुरुषों का स्त्रियों पर नियंत्रण कर देते हैं। सारी स्त्रियाँ इससे प्रभावित होती हैं क्योंकि यह धमकी स्त्रियों को वशीकरण करके उनके द्वारा पुरुष को लाभ देती है।

सुसान ग्रीफन 'उग्रनारीवाद' में सामा ाक निर्माण अथवा सरल प्रयोग से आक्रमणशील की तरह पुरुष में स्थित आत्मकला के स्त्री-पुरुष में नफरत का अध्ययन है ि ासमें ग्रीफन का वि ार है कि प्रकृति पर समा । द्वारा आक्रमण को स्त्री पर होनेवाले अत्या ारों को केंद्र में रखती है स्त्री के पुनरुत्पादन शक्ति से स्लेतन सत्ता स्थापित करती है।

उग्रवादी सिद्धांत में स्त्री अपने सामा ाक परिवेश के खिलाफ, पुरुष प्रधान समा । में अपनी अस्मिता की खो । करती नज़र आती है। ये स्त्री से ुड़े हर तथ्यों को वैज्ञानिक सार्थकता की दृष्टि से परखने का प्रयास करती नज़र आती है। इनका ि ांतन केवल भेदभाव के अंतर में निहित है। इस वाद ने किसी प्रकार की रा ानैतिक, आर्थिक सामा ाक शक्ति की तुलना नहीं की। ये भी कांग्रेस के नरमदल की भांति सिर्फ प्रस्तावों के माध्यम से क्रांति में बदलाव लाना ाहती थी ि ासका समाधान भी सीमित परिधि में था। परंपरागत पुरुष प्रधान समा । को केंद्र में रख उससे बाहर आने की कल्पना नहीं करते। समा । में स्त्री की स्थिति के सुधार के बारे में विवे ाना ालती रही उससे बाहर आने की कोशिश नहीं की।

स्पष्ट है कि उग्रवादी दृष्टिकोण में पुनरुत्थान, पुनरुत्पादन की अनुभव शक्ति को केंद्र में रख कर पुनरुत्पादित लैंगिकता के विषय में वि ार विमर्श किया गया है।

1.5.1.5 विद्रोही:दृष्टिकोण

विद्रोही दृष्टिकोण से देखा ाए तो स्त्री हर छोटी-बड़ी समस्या पर विरोध करती नज़र आती है ो कानूनी नियम बनाये ाते हैं। उन पर भी वे विद्रोह की तीव्र दृष्टि रखती है। हर एक स्त्री समस्या को विरोध के माध्यम से हासिल करने की मांग करती है। इस विद्रोही सिद्धांत का आधार उदारतावादी सिद्धांत है। इसकी मांग भी स्त्री के समान अधिकार, रा ानीतिक अधिकार पर ही केंद्रित है। विद्रोही स्त्री कोई भी दुर्भाग्य ानक बात को आसानी से नहीं मातैती। वे पुरुषों के बनाये हितों को, उनके दृष्टिकोण को, नहीं अपनाना ाहती। क्योंकि इनके वि ार में पुरुष ो नियम बनाते हैं उस नियम में पुरुष का ही हित निहित होता है।

स्त्री के उत्पीड़न के औप ारिक समानता की ओट में न्यायो ित करार देंगे, सिर्फ कानून बनाने से स्त्रियों की वास्तविक स्थिति नहीं सुधरेगी उस पर अमल लाना होगा। अंत में स्त्रियों का यह दृष्टिकोण लैंगिक भेद पर ाकर सिमट ाता है, स्त्रियों की यौन स्वतंत्रता को मुक्ति मान लिया गया इसका प्रभाव स्त्रियों की मानसिकता पर पड़ा और वे भी पुरुषों की भांति अपने साथी को बदलना, किसी के साथ भी पूर्ण सुख की कामना, ये सारी बातें स्त्री मुक्ति की खोखली तस्वीर बन कर रह गयी।

यूरोप में विद्रोही स्त्री-विमर्श स्त्रीवादी और समा ावादी स्त्रीवाद का ि ाक्र होने लगा। ये स्त्रियाँ मार्क्सवादी वि ारों को वर्गीय समा ा की उप ा मानती है और आर्थिक संघर्ष के साथ पितृसत्तात्मक मूल्यों और नैतिकताओं के विरुद्ध संघर्ष को स्त्री उत्पीड़न ही मानती है। घर के कामों और पारिवारिक संघर्ष को मुख्य केंद्र बनाया गया है।

विद्रोही स्त्रीवाद का वि ार है कि ो पितृसत्तात्मक मूल्य है उसी में परिवार निहित है ि ससे घर से ही स्त्रियों का शोषण शुरू होता है। इस प्रकार की मिथ्याओं, रूि यों को तोड़ने की प्रक्रिया विद्रोहणीया करती है। घर के कार्यों को करना, घर की ि ाम्मेदारी का पूरा भार ोना, इस कार्य के लिए कोई तनख्वा भी

नहीं मिलती। उस पर प्रताड़नाएँ, उत्पीड़न, शोषण ही हाथ आता है। इसके साथ यौन-शोषण की प्र ानन आदि विषयों को भी ोड़ती है। इस वि ार में फायरस्टोन कहती है-"वर्तमान समा । में सिर्फ ब ों का लालन-पालन नहीं, बल्कि प्रेम महिलाओं के उत्पीड़न का सबसे बड़ा कारण है, क्योंकि पितृसत्तात्मक समा । में प्रेम समानता पर आधारित नहीं हो सकता। उसके अनुसार प्रेम महिलाओं की आर्थिक और सामा िक निर्भरशीलता को प्रतिबिंबित करती है, ताकि महिलाएँ अपनी गुलामी के विरुद्ध आवा । न उठा सकें।"[41]

इनके वि ार में प्रेम स्त्री को पंगु बना देता है ि ससे वह सो ते-सम ते हुए भी अपनी अस्मिता पर ताला लगा देती है न आवाज़ उठेगी, न ही विद्रोह होगा। ि ससे वह अपनी आत्मीयता को मार कर ीवित रहती है।

विद्रोही स्त्रीवाद में ब ों की परवरिश में, लालन पालन में पुरुषों को समान दायित्व निभाने की मांग करती है। ि ससे पुराने ां े को तोड़ ा सकता है। इस प्रक्रिया से आनेवाली पी ़ी स ेत होगी अपनी पूरी ि म्मेदारी और दायित्वों को बिना किसी लिंग भेद के निर्वाह करेगी। नयी दृष्टि से नये दृष्टिकोण से परिवार पारिवारिक संस्कार, आ ारण, सामा िक परिवेश को नये ंग से उठाया गया है। इनके वि ार में स्त्रियों की मुख्य गुलामी के तत्व धर्म, संस्कृति, संस्कार, भाषा और ज्ञान पर टिकी है। पुरुषों का इन सभी परिदृश्यों पर नियंत्रण है।

स्त्री को पुरुष ैसा ाहे वैसा बनाता है। पाश ात्य दृष्टि में-"नारियाँ ही नारी ीवन की स ाई को व्यक्त कर सकती है तथा वह भी तभी ब वह पुरुष प्रधान समा । द्वारा लाद दी गयी नैतिकता, संस्कार और भाषा से अपने को पूरी तरह मुक्त कर ले।"[42] पाश ात्य विद्रोही स्त्रीवाद भी अपने अंत में, बाज़ारवाद की एक बिकाऊ वस्तु बन कर रह गयी है। आ । पशि ामी पत्र-पत्रिकाओं में स्त्री

---

[41] नारी प्रश्न, सरला माहेश्वर-पृ.46-47

[42] नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.53-54

को ि ास प्रकार यौन के प्रतीक के रूप में उछाला ाा रहा है उसके मूल में विद्रोही स्त्रीवाद का काफी बड़ा हाथ है।

पाश ात्य देशों में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूं ीवादी देशों ने उपभोक्तावाद की नयी तकनीक तैयार की ि ासमें सामग्री को नयी शक्ल मिली ि ाससे स्त्री को भी नया वि ार मिला ि ाससे वह नये प्रकार के आदर्शों में ीने लगी। इन वस्तुओं के प्र ार के लिए स्त्री को मुख्य रूप से इस्तेमाल किया गया। ि ासमें उपभोग की वस्तु साधन न होकर साध्य रूप प्र ारित होने लगा। इस प्रकार के प्र ार ने स्त्री के घरेलू संख्या को कम से कम किया है।

शिक्षा के विस्तार, विकसित अधिकार, नयी ेतना, नये उत्पादन, नयी तकनीक से मध्यवर्गी स्त्रियों के साथ म ादूर स्त्रियों के परिवार में बहुत असर पड़ा है। इन वर्गों में स्त्री के ीवन में कई परिवर्तन हुए हैं। घरेलू स्त्री की ाकड़बंधी का दमन हुआ है। नये संदर्भों में नया दृष्टिकोण स्त्रियों ने अर् ित किया है। ाो सवाल स्त्रियों ने उठाये थे समा ा के नैसर्गिक अंग बन गये हैं। आ ा के परिवेश में पाश ात्य स्त्री की परिस्थिति समा ा में काफी भिन्न है सुधार के साथ-साथ स्त्री का विनाश और पतन भी नज़र आता है। अत्यधिक विद्रोह का कारण विस्फोट ही होता है ि ाससे पतन निश्ि ात होता है। अत्यधिक विद्रोही होते हुए स्त्रियाँ अपने अस्तित्व को भूल ाुकी हैं।

इसमें स्त्री के उत्पीड़न के औप ारिक कानूनी अधिकारों पर अमल लाने की बात को उठाया गया है।

1.5.1.6 ब्लॉक:दृष्टिकोण

रंग-भेद पर सबसे पहले आवाज़ उठाने वाले व्यक्ति नलस्न मनडेला थे। अफ्रीका देश में ाो आर्थिक रूप से पिछड़े और रंगभेद के शोषण से सदियों से पीड़ित एवं दलित हैं, उन देशों में 70 के दशक में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के साथ ही स्त्री-मुक्ति आंदोलन की लहर भी दौड़ पड़ी थी। दासत्व समा ा, सामंती समा ा की पितृसत्तात्मक गुलामी के लंबे अरसे से इस व्यवस्था के खिलाफ

राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और युद्धों के विस्फोट में अधिक से अधिक स्त्रियों ने भाग लिया था। यहाँ की स्त्रियाँ दोहरे रूप से शोषित थी एक रंग-भेद दूसरा स्त्री होना। इनकी समस्या भी भिन्न थी क्योंकि ये देश हाल में ही दासता से मुक्त हुए हैं। आर्थिक रूप से सामा िक व्यवस्था से डामाडोल थे। इनकी सामा िक परिस्थिति पिछड़ी हुई थी। सामा िक व्यवस्था के कारण यहाँ के नागरिक भुखमरी, पोषण ठीक न था, कमाने के लिए कोई साधन ने थे तो दास बनना पड़ा। इन सारी समस्याओं से ू ाते हुए ये आंदोलन कर रहे थे।

दो शताब्दी पूर्व अमेरिका में दक्षिण गुलामों और काली नीग्रो स्त्रियों पर अत्यधिक ुल्म, अत्या ार किया ाता था। मुफ्त में काम करने के लिए गुलाम संतानों की आवश्यकता थी इसकी पूर्ति के लिए ये नीग्रो स्त्रियों का इस्तेमाल करते थे। अमेरीकन इन स्त्रियों का बलात्कार करते थे उनको बंधी बनाकर म ादूरी करवाते थे। बंधी स्त्रियों को ये अपनी संपत्ति सम ाते थे इसका इस्तेमाल ाब ाहे, ाहाँ ाहे उनके अनुरूप करते थे। उन पर दोहरा अत्या ार किया ाता था। इन स्त्रियों के पास शोषण से ब ाने के लिये कोई कानूनी अधिकार नहीं थे। मालिक के वहशी ुल्मों का शिकार होना पड़ता था। साथ ही मालकिन की घृणा को भी सहना पड़ता था। ये अगर थोड़ा-सा भी विरोध करती नज़र आयी तो उसकी शामत आ ाती है कभी कोड़ा की मार, ाकू से गोदना या फिर गोली से खतम करना।

गुलाम ब्लाक स्त्रियों का कार्य मालिकी के लिए म ादूरी करना और उनके ब े पैदा करना मात्र थे। इन ब ों पर इनका कोई अपना ही अधिकार था न हि कानुनी। मालिकों को उन ब ों पर सारे अधिकार प्राप्त थे ओर वे उन ब ों को ‘व ीनिया’ ो व्यापार का बड़ा केंद्र था वहाँ बे ा देते थे और इन ब ों से 8 वर्ष की आयु में ही कठोर कामों का करवाया ाता था। अगर इनसे कोई सुंदर और गोरी लड़की हुई तो उन्हें वे ‘फैंसी गर्ल्स’ के नाम पर विश्व के वेश्यावृत्ति ागहों पर बे ा दिया ाता था। गोरे इनके पिता होने पर भी ये ब े संपत्तिहीन

और पितृत्व का कोई प्रश्न नहीं था। इसके विपरीत इनसे म ादूरी करवा कर हमेशा के लिए गुलाम बना लिया ाता था। इनसे बिना तनख्वाह के भारी-भारी कठिन कामों को करवाया ाता था। यहाँ दास प्रक्रिया ालती थी।

'70' के प्रारंभिक वर्षों में पत्र प्रकाशित हुए ि ानमें स्त्रियों की गुलामी के साथ काली स्त्री और म ादूर स्त्रियों के शोषण की गाथा को केंद्र में रखा। उनके उत्पीड़न, प्रताड़नाएँ, शोषण और घर की ाकड़बंधी से मुक्ति के आंदोलन स्त्रियों ने किए इसमें मालिकों के अत्या ार, घर के अत्या ारों के ब ाव के लिए अनेक नई संस्थाओं की स्थापना की गयी। ि ासमें स्वास्थ्य केंद्र निकट संबंधियों द्वारा शारीरिक हमलों के ब ाव की होटलाइन, बलात्कार संबंधी मामलों के केंद्र, खोले गये ि ासमें गरीब स्त्रियों को भी लाभ मिला।

फ्रें ा समीक्षक 'सीमोन द बोउवा' अपनी पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' में कहती हैं-"स्त्री को अमीर हो या गरीब श्वेत हो या काली अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी।" इस वि ाार ने विश्व की स्त्रियों को बहुत प्रभावित किया। इसकी प्रेरणा से बहुत सी स्त्रियों ने अपनी लड़ाई खुद लड़ने के लिए आवाज़ उठाने का प्रयत्न किया। कुछ सफल हुए, कुछ असफल रहीं। पर आंदोलन करना नहीं छोड़ा किसी-न-किसी संदर्भ में आंदोलन करती रही।

Bellhook's के वि ाार में-"Black women felt they were asked to choose between a black movement that primarily served the interest of black male. Patriarchs, and a women's movement which primarily served the interest of racist white women."[43] स्पष्अ है कि ब्लाक स्त्रियों पर ाो आंदोलन किया गया था वे केवल पश्ि ामी श्वेत स्त्रियों के अनुभवों पर ही निर्भर था। ये आंदोलन केवल श्वेत स्त्रियों तक ही सीमित थे। ब्लाक स्त्रियों पर वि ाार-विमर्श करनेवाली कुछ स्त्रियों ौसे

---

[43] IA women? Black women and feminism, Bell hook's (Ain't)-p.76

Angela Davis, Andrelorde, Bellhooks ब्लाक स्त्री की स्थिति, प्रश्नों पर वि ार-आलो ना कर रही है। ब्लाक स्त्री आ ा भी समा ा में असुविधा ानक, दमित, शोषित ैसी दारुण स्थितियों से गु ार रही है। समा ा में पुरुष सत्ता स्त्री पर आ ा भी यथा-स्थिति अपना अधिकार ामाए हुए है।

ब्लॉकवादी दृष्टिकोण में देखा ाए तो स्त्रियों के दोहरे शोषणों के मानदंडों को उ ागर किया गया है।

1.5.1.7 तीसरी दुनिया और स्त्री-विमर्श

तीसरी दुनिया में यादातर वे देश आते हैं ो हाल में ही स्वतंत्र हुए हैं। तथा हाल में ही विकासोन्मुख की दिशा में अग्रसर हुए हैं। उद्योग के माध्यम से विकासशील देशों में ि ानको गिना ाने लगा है ो सदियों से गुटबा ी, शीतयुद्ध, गुलामी आदि संक्रामिक युद्धों से मुक्त हुए हैं। इन देशों में आ ा भी सामाि ाक व्यवस्था डामाडोल है ि ासकी आर्थिक व्यवस्था भी ठीक नहीं है। ाहाँ समा ा में बु ु आ सामंतवाद, नये उपनिवेशवाद का व ास्व आ ा भी तथा-कथित बना हुआ है।

भारत और एशिया के अनेक देश तीसरी दुनिया के देशों में आते हैं। भारत और एशिया के देश हाल ही में स्वतंत्र होने के कारण सामाि ाक व्यवस्था पिछड़ी हुई होने से इन देशों में स्त्री मुक्ति के आंदोलन राष्ट्रीय संघर्ष के साथ ही शुरू हो गये थे। इन देशों में रा ानीतिक, सामाि ाक और आर्थिक अधिकारों से बहुत बड़ी आबादी आ ा भी वंि ात है। स्वतंत्रता क्या है? वे शायद इससे भी वंि ात हैं। इन तथ्यों को देखा ाए तो तीसरी दुनिया के सभी देशों में साम्रा यवाद, नवउपनिवेशवाद, व्यवस्था, उद्योगीकरण व्यवस्था तथा पूँ ाीवाद के विरुद्ध एक राष्ट्रीय ानवादी क्रांति की ारूरत है ि ासके ाुड़े तमाम स्त्री मुक्ति आंदोलन के तथ्यों का भविष्य तय होगा। क्योंकि स्त्री समस्याओं को समा ा के ताने-बाने से हटाकर अलग नहीं रखा ाा सकता है। समा ा से ाुड़ी हुई स्त्री समस्याएँ हैं उनसे ही वास्तविक मुक्ति कहलाएगी।

भारतीय समा ा के अब तक के इतिहास से पता ालता है कि भारत समा ा में क्रांति का यह अधूरापन इस दौर की खासियत नहीं है अपितु असाध्य रोग में शुरू से ही आधे-अधूरेपन ने हमारे समा ा को ग्रस्त रखा है। यह स्थिति एशियाई देशों की है ाो तीसरी दुनिया के देश कहलाते हैं। मार्क्स के वि ाार में - "यूरोपीय पृष्ठभूमि में आदिम साम्यवादी समा ा, दास समा ा, सामंती समा ा और पूं ाीवादी समा ा के ाि ान स्पष्ट ऐतिहासिक ारणों का सामाा ाक विकास की प्रक्रिया में उल्लेख किया था, वैसा स्पष्टता उन्हें एशियाई समा ाों में नहीं दिखाई दी थी। उन्होंने एशियाई समा ाों के सिलसिले में उत्पादन की एशियाई पद्धति में ग्रामीण सामुदायिक अर्थव्यवस्था, दास-प्रथा, बर्बर समा ा के साथ ही साथ गणित ओर कलाओं में पारंगत तीक्ष्ण बुद्धिसंपन्न भारतीय मेधाओं, मुद्रा व्यवस्था, माल-उत्पादन और वाणि ाय के विकास आदि सबकों ाैसे एक साथ विद्यमान एक खास किस्म की एशियाई संर ाना में देखा था।"[44]

कामरेड ई.एम.एस.नम्बूदिरिपाद ने 'द मार्क्सिस्ट' के दूसरे भाग में 'भारत में वर्ग संघर्ष' में वि ाार किया है कि-"किस प्रकार एक ामीन में सारी मानव सभ्यता का केंद्र-स्थल सम ाा ााने वाला समा ा, मार्क्स ने ाि ासे दुनिया की तमाम भाषाओं और धर्मों के ानक के रूप में देखा था, बाद में अपने से अपेक्षाकृत पिछड़े हुए यूरोपीय समा ा में दास-प्रथा, सामंतवाद और पूं ाीवाद की तरह के लंबे-लंबे डगों के साथ हुई प्रगति के सामने पिछड़ता ाला गया। ...एशियाई समा ा, दास-प्रथा, सामंवाद और पूं ाीवाद के रूप में व्यक्त किया था, वहीं बाद में अपने अंतिम निष्कर्षों में, एशियाई समा ा की संर ाना को उन्होंने पूर्व पूं ाीवादी संर ानाओं की संज्ञा दी अर्थात् ऐसी सामाा ाक संर ाना ाि ासमें पूं ाीवाद के पहले के अन्य सभी समा ाों के तत्व विद्यमान हो। इसी आधार पर

---

[44] नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.79

उन्होंने एशियाई संर ानाओं में आधुनिक पूं ीवाद के रूप में भी मानव समा की प्रगति की एक अवधारणा दी थीं।"[45]

एशियाई समा में सामा िक व्यवस्था प्रा ीन काल से सामंती युग तक के प्रवृत्तियाँ उत्पादन व्यवस्था, हर संभव रूप में अपने अस्तित्व को तथा-कथा बनाये रखा है। िससे यह कि स्त्री सामा िक व्यवस्था के कारण आ भी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही है। वास्तविक परिस्थितियों के कारण स्त्री की स्थिति आ भी ऐसी बनी हुई है।

स्त्री-विमर्श की परंपरा व इतिहास पाश ात्य दृश्टि से देखा ाए तो स्त्री हर देश में दमित, कुंठित थी। उसे घर की ार दीवारी में ही सीमित रख ाता था। स्त्री को कई संदर्भों से व्याख्यायित किया ाता है। प्रा ीन रोमन, यूनानी साम्रा य में स्त्रियाँ पुरुष की संपत्ति मात्र थी। ापान में स्त्रियाँ धार्मिक अधिकारों से वं ित थी, ीन, स्पेन, इटली अरबवासियों की धारणा में स्त्री पुरुष के पैरों की ूती से यादा कुछ नहीं थी। इस समय स्त्री पारंपरिक ाकड़बंदी से निकलने में असमर्थ थी। उनहें पुरुष की मानसिकता के अनुरूप ालना पड़ता था।

1.6 स्त्री विमर्श की परंपरा व इतिहास : भारतीय

भारतीय दृष्टिकोण में स्त्री समा के केंद्र में निहित है। स्त्री को यहाँ सदियों से आदर सम्मान और श्रद्धा के साथ देखने की ा ाएँ नज़र आती हैं पर स्त्री का अनेक रूपों में, अनेक दृष्टिकोणों से, भिन्न स्तरों पर, शोषण नज़र आता है। स्त्री शोषण की दासता विश्व के हर क्षेत्र में निहित है। िसकी छटपटाहट से उसने कई आंदोलन किये हैं िसका असर प्र ार-प्रसार माध्यम से भारतीय स्त्रियों पर भी पड़ा।

भारतीय पुरुष प्रधान समा में स्त्री को देवी ैसे सम्मान तो दिया, पर परंपरागत ाँ े से निकले नहीं दिया। माँ रूपी स्त्री को आदरणीय सम्मान प्राप्त है पर अन्य स्त्रियों को शोषण से ग्रस्त रखा है। संविधान ने समान अधिकार दिये,

---

[45] नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.79

पर सामा िक दृष्टिकोण से उनको परंपरागत लते नैतिक मूल्यों के तहत बंदी बना कर वैसा ही रखा ैसे सदियों से उसकी स्थिति है। पितृसत्तामक समा ने स्त्रियों की मानसिकता को अपने अनुरूप ही बनाया है। पुरुषों के बनाये नियमों का वह विरोध कभी कर नहीं पायी। समा ने स्त्री की परिस्थिति सुधारने के काफी प्रयत्न किये। उसकी सुरक्षा के कई संगठन तैयार किये गये पर अपनी मानसिकता को बदल ना पाये। 'स्त्री सुरक्षा' के कई संगठन है पर क्या उनकी सुरक्षा हो पा रही है। शिक्षित समा भी अंध-श्रद्धा में फंसा हुआ है। समा की अ छाइयों-बुराइयों ैसे विसंगतिपूर्ण वातावरण से वह पथ-भ्रष्ट होती ली ा रही है िससे वह अपने लस की लीक से हटती ा रही है। स्वतंत्रतापूर्व की स्त्री ारदीवारी को लाँघ नहीं पायी क्योंकि परंपरागत मूल्य, पितृसत्तात्मक नैतिकता उसके आड़े आते गये। सुशिक्षित पुरुष सत्ता ने आ भी स्त्री को अधिकारों से वं ित रखा है। आ भी स्त्री अपने परिवार, समा के सामने कठपुतली की तरह ना ाती नज़र आती है।

"स्त्री िस परंपरा का शिकार है, वह सदियों से हज़ारों शाखाओं, प्रशाखाओं, कटती, बंटती, संकु ित परिवर्तित संवर्द्धित होती इस मुकाम तक आई है। उसे गुरुओं, पिताओं, पतियों, भाइयों और बेटों में ही नहीं, माओं, दादियों, परदादियों ने भी बनाया है एक पूरी की पूरी ीवनगत सामूहिकता िसने स्त्री के वर्तमान को ग . ा है।"[46]

भारतीय समा में स्त्री की सबसे बड़ी समस्या भौतिक दरिद्रता और आर्थिकता है ो सांस्कृतिक दरिद्रता के साथ मिलकर अनेक प्रकार के दुःखों को न्म देती है। कुछ हद तक आर्थिक समस्याओं का निवारण भी हो सकता है। पर उसकी आंतरिक छटपटाहट की समस्या और भी गहरी होती ाती है।

आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति कोई वास्तविक अंतर्विरोध नहीं है पर सामा िकता के तथ्य इसी पर टिके हुए हैं। औद्योगिक क्रांति ने समा के मनुष्य

---

[46] आधुनिक कथा साहित्य में नारीःस्वरूप और प्रतिमा, रा ी सेठ-पृ.1

को ि तना मुक्त किया है वह उससे कहीं याादा कटु भी बनता गया है। स्त्री-पुरुष के अंतर्विरोध को कोई भी सभ्यता, विकास, दिशा, ीवन शैली, परिवर्तन या फिर परिस्थितियाँ खत्म नहीं कर सकतीं। क्योंकि स्त्री सभ्यता के शुरू से ही शांत-सम्मोहक की भूमिका निभाती आयी है ि ासमें पुरुष ने उसे देवी की, माँ की छवि को एक रहस्यपूर्ण स्थिति में रखा है। कभी वह उसकी पू ाा करता है कभी उसका दमन किया ााता है। स्त्री कभी भी अपने आपको अनावृत्त नहीं कर पायी क्योंकि समा ा, परिवार, सांस्कृतिक स्थिति, पारंपरिक नैतिकता, सामा ि ाक परिवेश यथा-तथा बना पड़ा रहा। सभ्यता का स्तर ि ातना ऊँ ाा होता गया स्त्री पर उतनी पाबंदी, उतना ही अंकुश लगता गया ि ासमें उसकी ीवन शैली अधिक से अधिक कठोर होती गयी।

वास्तविक परिस्थितियों के इस परिदृश्य में समा ा में स्त्रियों और उसकी वास्तविकताओं, उसकी परिस्थिति तथा उसके मुक्ति संघर्षों पर आंदोलन का वि ाार किया ि ासमें उसके देवी और ंडी के रूप से लेकर अबला, असहाय ीवन की वास्तविक परिदृश्य के तत्वों को प्रा ीनकाल में मध्यकाल, आधुनिककाल तथा स्वतंत्रतापूर्व, स्वतंत्रता के बाद तथा इक्कीसवीं सदी तक के बदलते परिवेश में स्त्री की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का वि ाार-विमर्श स्त्री के सामा ि ाक ीवन के उतार- ा.ाव उसके शोषण, अत्या ाार, दमन की वास्तविकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

1.6.1 प्रा ीनकाल

भारतीय प्रा ीन समा ा के वैदिक युग की स्त्री के संबंध में ाो स्त्री अधिकार और समानता की मान्यताएँ समा ा में प्र ालित हैं वे वास्तविक सत्य नहीं लगती क्योंकि एक तरफ उन्हें मातृसत्तामूलक समा ा में स्त्रियों की विकसित और सम्मानित दृश्य को दर्शाया गया है और दूसरी ओर स्त्री की भूमिका गौण नज़र आती है। एक तरफ तो आ ाार्यों द्वारा स्नातकों की मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आ ाार्य देवो भव ि ासमें माता का स्थान गुरु और पिता से श्रेष्ठ और

ऊँ ा माना गया है वहीं दूसरी ओर कन्या, बहन और अन्य रूप में निम्नतर माना गया ो बिना पिता और भाई के उसका कोई नि ी व्यक्तित्व नहीं वह उन पर ही आश्रित है बताया गया है। एक ओर तो मनुस्मृति में मनु ने स्त्री की गरिमा को मानते हुए कहा-

"यत्र नार्यस्तु पू यंते रमंते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पू यंते सर्वास्त त्रा फलाः क्रियाः।।[47]

मनु के अनुसार हाँ स्त्रियों का आदर सम्मान होता है वहाँ देवता बसते हैं और हाँ पर स्त्रियों का निरादर होता है वहाँ सब काम निष्फल ही रहते हैं और ि स देश में स्त्रियाँ कष्ट पाती हैं वहाँ का शासन असफल माना ाता है। दूसरी ओर मनु स्त्री की स्वतंत्र अस्तित्व को खत्म करते हुए आदेश ारी करता है कि- स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं रह सकती, ब ापन में उसे पिता का आश्रय ाहिए, युवावस्था में पति का, वृद्धावस्था में पुत्रों का आश्रय ाहिए। इससे यह ज्ञात होता है। स्त्री हमेशा किसी-न-किसी पुरुष के ही अधीन होती है। बिना पुरुष के उसका ीवन ल ही नहीं पाता। आश्रित होना उसकी नियति बन गई थी। वैदिक युग में स्त्री को मानव न सम कर सामग्री से संबोधित किया ाता था। सामग्री यानी एक प्रकार से वस्तु ही सम ा ाता था। इस युग में स्त्री को गृहस्थी के कामों से ही सम्मानित किया ाता था। स्त्री के प्रति सम्मान की भावना अतीत का एक प्रतिबिंब मात्र थी। इस युग में स्त्री अपेन वक्त की श्रेष्ठतम कलाओं में पारंगत थी। विद्या और बुद्धि में पुरुषों से किसी भी प्रकार से कम नहीं थी अपितु उनसे एक कदम आगे ही थी। पर पितृसत्तात्मक समा के नियमानुसार यह घोषणा थी कि स्त्री की किसी की स्वतंत्र भूमिका का नहीं है और उसकी स्वतंत्र भूमिका को स्वीकारा भी नहीं ाएगा। और वे इस मान्यता के साथ लते थे कि स्त्री के बिना पुरुष का ीवन अपूर्ण है ैसे प्रकृति के बिना ीवन यापन करना। इस तथ्य को ानते हुए

---

[47] मनुस्मृतिः5/136/1147-उद्धृत

भी वे सामा िक व्यवस्था उनके अनुकूल ही बनाई गई थी। 'शततथ ब्राह्मण' में हम इस तथ्य को देख सकते हैं-

"अर्धो ह वा एष आत्मनो स ााया तस्माधा व ायां

न विदन्ते नेव तावत्प्रा ाायते असर्वोहिता वल्दवति

अय यदैव ाायां विन्दतेडथ प्र ाायते तर्हिसर्वी भवति।।"[48]

अर्थात् पत्नी को वे अपनी आत्मा का आधा भाग मानते हैं और व्यक्ति ाब तक पत्नी और उससे उत्पन्न संतान को प्राप्त नहीं करता अधूरा कहलाता है। ाब वह पत्नी और संतान को प्राप्त कर लेता है तो पूर्ण हो ाता है। इससे यह पता ालता है कि पुरुष स्त्री के बिना अधूरा, अकेला, अपूर्ण है ि ासके बिना उसका ाीवन सार्थकता से आगे नहीं ब. ़ सकता फिर क्यों पुरुष इतने अहम में ाीता है।

वैदिक युग में स्त्री को स्वयंवर ाुनने की आज़ादी थी। पर वह भी पिता द्वारा लाये गये पुरुषों से। ि ान पुरुषों को पिता द्वारा सभा में बुलाया ाता था कन्या उनमें से ही अपने योग्य वर को ़ँ.ती थी। अपना वर ़ँ.ने की स्वतंत्रता और गौरव उसे प्राप्त था। इस पर प्रेम ांद अपने वि ाार व्यक्त इस प्रकार करते हैं-"स्त्री प्रेम में काफी छानबीन करती थी। पहले भी तो स्वयंवर से पुरुषों की परीक्षा होती थी। वह मनोवृत्ति अब भी मौ ाूद है, ाहे उसका रूप कुछ बदल गया है।"[49] इस युग के इतिहास में शिक्षित स्त्रियों का उल्लेख मिलता है ाो उ ा ब्राह्मण वर्ग से संबंधित थी पर उनका सामा िक कार्य में कोई महत्व न के बराबर ही था। ये स्त्रियाँ वैदिक ऋ ााओं की र ायित्री भी थी, लोपामुद्रा, रोमांस, छोषा, अपाला, विर्लामी, ार्मा, वाग्भणी, विश्वंभरा आदि ऋषिकाओं और ब्रह्म ाारिणी, ब्राह्मणियों का उल्लेख मिलता है। इस तथ्य का बार-बार उल्लेख किया ाता है क्योंकि वैदिक युग में स्त्री की श्रेष्ठ, सम्माननीय, आदरणीय सिद्ध करने का प्रयास किया ाता था। ये सारी स्त्रियाँ उ ा वर्ग की थी निम्न वर्ग की स्त्रियों का कोई

---

[48] अथर्ववेद-11/5/17, उद्धृत नारीःअंतर्दर्पण व समा ा से

[49] गोदान, प्रेम ांद-पृ.490

महत्व इन ऋ ााओं में नहीं दिखाया गया है। सामान्य स्त्री का कोई उल्लेख इस युग में नहीं मिलता।

ऋग्वेद में माँ और पत्नी को सर्वो ा स्थान प्राप्त था पर बेटी, पुत्री या बहन को उतना महत्व नहीं दिया ााता था। पुत्रियाँ अपने पिता या भाई पर निर्भर रहती थी। घर का काम-का ा किया करती थी। अगर किसी पुत्री का विवाह सफल न हुआ तो वह अपने पिता का घर छोड़ दी ााती थी। अगर विवाह के पश ात उसे संतान के रूप में पुत्र को ान्म नहीं दिया तो वह पिता के घर भे ा दी ााती थी और पति को दूसरा विवाह करने का अधिकार प्राप्त था।

"स्त्री का पहला कर्तव्य है, पुत्र संतान को ान्म देना।"[50] निःसंतान पत्नी को विवाह के दस वर्ष बाद त्याग दिया ााता था, ाो स्त्री कन्या-संतान को ान्म देती है उसे बारह वर्ष बाद त्याग दिया ााता था, ाि स स्त्री को संतान हो पर वह ाीवित न रहे तो उसे पंद्रह वर्ष बाद त्याग दिया ााता था, ाो स्त्री कलह परायण थी उसे तुरंत त्यागने का रिवा ा था।"[51] इस युग में स्त्री की स्थिति निम्न से निम्नतर हो गई थी। स्त्रियों को अधिकार और महत्व नहीं था।

इस युग में सामा ाक नियम ऐसे थे कि विवहा के अनुष्ठानों में स्त्री को वस्तु या सामग्री की तरह ही ग्रहण किया ााता था। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। वह पुरुष की अनुगामिनी थी। स्वयं पर उसका कोई अधिकार नहीं था। पुरुष की सत्ता सर्वत्र थी।

ऐतरेक ब्राह्मण में-"उसी स्त्री को उत्तम सम ाा ााता है ाो अपने पति को संतुष्ट करती है। पुत्र संतान को ान्म देती है, पति से किसी भी मामले में बहस नहीं करती है।"[52] विवाह के अनुष्ठान में पति को कहना पड़ता था-"आओ हम एक हो ाायें, हमारी संतान पुत्र हो, ाि स संतान द्वारा संपत्ति वृद्धि हो, इसके

---

[50] आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1/10-51-51

[51] बोधायन धर्म सूत्र, 2/4/6

[52] ऐतरेय ब्रह्मण-3/24/27

साथ प्रार्थना की ाती थी "पुत्र, पौत्र, दास, शिष्य, वस्त्र, कंबल, धातु बहुभार्या, रा ा अन्न और सुरक्षा की।"[53] और शतपथ ब्राह्मण में पति के बाद पत्नी को खाने की बात कही गई है।"भुक्तवा छिष्ट वैयैव ददात।" याने की ूठन स्त्री को देना।"[54] इसमें पुराने कपड़े शूद्र को देने का, और पिता का ूठा पत्नी को खाने का रिवाज़ था। आगे उसे 'आपस्तम्ब धर्म सूत्र' में स्त्री को ानवरों और गिद्धों के साथ ोड़कर देखते थे याने उसकी तुलना ानवरों से की ाती थी। "काली ि ाड़िया, गिद्ध, नेवला, छछूंदर और कुत्ते की हत्या एवं शूद्र हत्या करने पर ो प्रायश्ि ात्त करना पड़ता है वही स्त्री के हत्या करने पर भी वही प्रायश्ि ात करना पड़ता है एक दिन का कष्टदायक व्रतालाप करना पड़ता था।"[55] इनकी मान्यता के अनुसार स्त्री भी नेवला, कुत्ता, गिद्ध, काली ि ाड़िया और शूद्र ैसी है। इन्हीं मान्यताओं के तहत स्त्री को समा ा में सम्मान प्राप्त था। याने ीव- ंतु में और स्त्रियों में कोई भेदभाव नहीं है।

इन सभी तथ्यों से यही पता ालता है कि स्त्री अस्तित्वहीन थी। पुत्र संतान को ान्म देने से ही समा ा में सम्मान प्राप्त था, नहीं तो उसका बहिष्कार किया ाता था। अगर वह पति के मार्गपर न ाले तो कुल्टा सम ा ाता था। उसकी तुलना ानवरों से की ाती थी। पति का ूठा खाने की उसकी नियति थी। इन्हीं सब संस्कारों का पालन करना वरना उसको निम्न से निम्नतर रखा ाता था।

वैदिक युग के द्वितीय ारण में बहु-विवाह प्रथा का प्र ालन आरंभ हुए ि ासमें दास प्रथा ने स्थान लिया। युद्धों में स्त्रियों का हरण कर उसे दासी बनाया ाता था। फिर उन दासियों से विवाह कर लिया ाता था। पर इन्हें सार्व ानिक और धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदारी नहीं दी ाती थी। ो पहली आर्या पत्नी होती थी उन्हीं की भागीदारी संभव थी। इस युग के परिदृश्य को देखा ाए तो

---

[53] हिरण्यकेशी गृहम सूत्र, 1/6/12/14

[54] गृह्य सूत्र-1/4/11, उद्धृत औरत के हक़ से

[55] आपस्तम्ब धर्म सूत्र-1/9/23/45, उद्धृत नारीः अंतर्दर्पण व समा ा से

पुरुष विलासी और निहायत ही स्वार्थी प्रवृत्ति का हो गया था ि ासमें पुरुष स्वार्थों के कारण अंततः स्त्रियों के स्थायी बंधन रू ़ होते गये। ि ासेस स्त्री-पुरुष के नैतिक नियम निम्नतर गिरते ाले गए, उनको निभं पाना भिन्न हो गया। इस युग में सती प्रथा नहीं थी, ाो विधवा स्त्री होती थी उसको दूसरा विवाह करने की अनुमति समा ा द्वारा प्राप्त थी। मनुस्मृति में 'स्त्री को पुनर्विवाह की स्वीकृत थी। पति के शव के पास रोती पत्नी को उद्‌बोधन से उठाया ााना, हे नारी, उठो और पुनः सांसारिक ाीवन को अपनाओ। इस निष्प्राण शरीर के पास रहना व्यर्थ है। उठो और ाो तुम्हारा हाथ पकड़ने को तैयार है, ाो तुम से स्नेह रखता है, उसे नए पति के रूप में स्वीकार करो।"[56] इसमें उसका नया पति, उसका देवर, प्रेमी या कुल का श्रेष्ठ पुरुष या अन्य कोई योग्य पुरुष हो सकता था।

धर्म सूत्रों में भी स्त्री की स्थिति का अंकण हुआ है। यहाँ पर भी विधवा विवाह को मान्यता प्राप्त थी। गौतम बुद्ध के अनुसार "विधवा अगर संतान कामना रखती हो तो उसके देवर के साथ सहवास कर संतान उत्पन्न कर सकती थी। इसके साथ विधवा का रहन-सहन सादा होना ााहिए। परिवार के बड़े व्यक्ति के आदेशानुसार ही वह पुत्र या संतान को पा सकती थी। इस युग में स्त्रियों की निर्वाण प्राप्ति के लिए उसे विवश करते थे। ाातकों में भी स्त्रियों के दो समुदाय थे-पहला वर्ग ब्राह्मणवादिनी तथा दूसरा वर्ग सद्योवदू थी। ब्राह्मणवादिनी भिक्षुणी हुआ करती थी। और सद्योवधू गृहस्थ ाीवन को अपनाती थी।

पुराणों में भी स्त्री की स्थिति लगभग इसी प्रकार की थी। वाल्मीकि रामायण में स्त्री की सर्वस्तरीय महत्ता थी। 'उत्तर राम ारित' में महाकवि भवभूति ने अपनी वाणी से ानक के द्वारा ब्रह्मविद् कर्मयोगी से वनवासिनी स्वदुहिता सीता के प्रति ये वाक्य कहलाये हैं-"तुम मेरी कन्या हो या शिष्या, यह ध्यान देने की बात नहीं तुम्हारा आ ारण अपनी पूर्ण परिणति को पहुँ ाा हुआ है ि ासमे मु ामें तुम्हारे प्रति विशेष श्रद्धा है। स्त्री रूपिणी अथवा अवस्था में कम

---

[56] नारी शोषणःआइने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.6

होने पर भी तू ागद्बंध है, क्योंकि गुणियों का आदर उनके गुणों से होता है न कि ाति (लिंग) या अवस्था भेद से।"[57]

इसमें पिता ने अपनी पुत्री को स्त्री रूपी और अवस्था में कम होने पर बात की है याने पुरुष से कम शक्ति की होने पर भी अत्यधिक गुणों से संपन्न बताया गया है। आगे कहते हैं कि लिंग भेद से कुछ नहीं होता गुणियों का आदर उसके गुणों को देख कर ही किया ाता है। समा ा में स्त्री के यथार्थ रूप को दिखाया गया है। वहीं आदर्श समा ा व्यवस्था में तुलसीदास ने ाहाँ ' ोल गँवार शूद्र पशु नारी' को दंड देने का विधान था। याने स्त्री पशु समान दण्ड योग्या है। रामायण के युग में कन्याएँ ाो विवाह योग्य हो ाती थी माता-पिता के लिए ि ांता का विषय बन ाती थी।"[58]

"कन्या पितृत्व दुख हि सर्वेषा मानकाक्षिणाभ।"

इसमें पुत्री के विवाह पर धन देने की प्रथा मिलती है, कन्यादान पिता के लिए पू य का काम था ि ासमें पिता कन्यादान को अपना सौभाग्य सम ाता था। ाो विवाहित स्त्रियाँ थीं अपने परिवार में सम्मान की पात्र थीं वे अपेन घर गृहस्थी को संभालने के साथ-साथ सास-ससुर, देवर, ननद, पुत्रवधु के साथ स्नेह का व्यवहार करना था। सीता, कौशल्या, तारा ये शिक्षित स्त्रियाँ थीं ाो कर्मकाण्ड और शास्त्र ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम थी। गृहस्थी की व्यवस्था पर पत्नियों का एकाधिकार था।

रामायण के समान ही महाभारत में पुत्रियों को अनेक प्रकार की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त थी। इसमें स्त्री का प्रधान गुण उसका ारित्र और व्यवहार माना ाता था। ये पुरुषों की वास्तविक संगिनी थी। विवाहित स्त्री का माता-पिता के घर पर रहना निंदनीय माना ाता था। इसमें वै ाारिक विषमता इतनी ब. गयी थी कि समा ा में स्त्री के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं। मत्स्यगांधा (सत्यवति), कुंती

[57] रामायण 7/9/1, नारी:अंतदर्पण व समा ा से उद्धृत
[58] रामायण 7/9/10, नारी:अंतदर्पण व समा ा से उद्धृत

आदि स्त्रियों में विवाह से पूर्व संतान उत्पन्न का उल्लेख मिलता है तो दूसरी ओर अहल्या, सावित्री ैसी पतिव्रता स्त्रियों का भी उल्लेख हुआ है। ऋषि-मुनियों का तप भंग करने हेतु रंभा, ऊर्वशी, मेनका ैसी स्त्रियों का उल्लेख हुआ है।

इसी प्रकार रामायण, महाभारत में स्त्रियों का वर्णन विदूषियों के रूप में कम, तप, त्याग, नम्रता, पति सेवा परायण आदि वशीभूत गृहस्वामिनी के रूप में अधिक दिखाया गया है। इस युग में पति सेवा और आज्ञा पालन ही स्त्रियों का प्रमुख गुण हो गया। महाभारत में पांडवों द्वारा द्रौपदी की ुएँ में दाँव पर लगा देना और राम ने सीता को वनवास देना एक धोबी द्वारा संदेह व्यक्त करने पर अग्नि परीक्षा करवाना, पत्नी पर पति के मनमाने अधिकारों की पुष्टि करता है। पुरुष सत्ता को व्यक्त किया गया है ासमें स्त्री उपभोग की वस्तु बन कर रह गई। स्त्री को धार्मिक संस्थानों के लिए अयोग्य घोषित किया गया। महाभारत में इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं ैसे-नस्त्री स्वतंत्रता महिति, भीष्म ने युधिष्ठिर से कहा-"नारी से ब कर अशुभ और कुछ भी नहीं, नारी के प्रति पुरुष के मन में कोई स्नेह या ममता रहना उ ात नहीं, पिछले ान्म के पाप के लिए इस ान्म में स्त्री बन कर पैदा हुई हे, त्रिभुवन में ऐसी कोई स्त्री नहीं ाो स्वतंत्रता पाने योग्य है, नारी ान्म की ारम सार्थकता पति को संतुष्ट करने एवं संतान धारण करने में है स्त्री के लिए विवाह ही उपनयन, पतिग्रह में वास करना ही गुरुगृह में वास करना है।"[59]

मौर्यकाल में स्त्रियों की सामा ाक स्थिति में ह्रास के लक्षण दिखाई देते हैं। इस युग में स्वतंत्रता, स्व छंदता, सम्मान ानक ये सारी बातें परतंत्रता और संकीर्णता में बदल गयी थीं। इस युग में भी बहु विवाह प्रथा प्र ालित थी। विवाहित स्त्रियों के लिए आमोद-प्रमोद के लिए घर में ही व्यवस्था कर के रखी ााती थी। कौटिल्य के अनुसार "पुरुष कितनी ही स्त्रियों से विवाह कर सकता है,

---

[59] महर्षि व्यास, महाभारत-12/40/1, नारी: अंतर्दर्पण व समा ा से उद्धृत

स्त्रियाँ संतान उत्पन्न करने के लिए है।"[60] इस काल में दहे ा प्रथा भी प्र ालित थी। उस समय तलाक ैसे नियम भी थे। स्त्री अगर अपने वैवाहिक ीवन से संतुष्ट न हो तो मोक्ष के रूप में तलाक ले सकती थी। मोक्ष शब्द तलाक को केंद्रित करता है। कौटिल्य के शब्दों में-"मोक्ष के अधिकारी पति व पत्नी दोनों थे, व्यभि ारी, प्रवासी, पतित, स्त्रियों को पति परित्याग कर सकता था। रा द्रोही, खूनी, नपुंसक पतियों का स्त्री परित्याग कर सकती थी।"[61]

"नी ात्व परदेशं वा प्रास्थितो रा ा किल्विषी।

प्राणभिहन्ता पतितस्त्वा यः क्लीवोपि वा पतिः।"

गुप्त काल में भी स्त्री शिक्षा का प्र ालन था। इस युग में स्त्रियाँ वेद-मंत्रों की भी शिक्षा प्राप्त करती थी। शीलाभट्टारिका एक योग्य और विद्वान महिला का उल्लेख मिलता है ि ासमें 'पां ाली रीति' की एक विदुषी माना गया है।

"शब्दार्थयोः समो गुम्फः पाँ ाली रीतिरिप्यते।

शिलामट्टरिका वा ि ावेक्तिषु य सा यदि।।"

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि स्त्री रूप के उतार- ा.ाव, स्त्री शिक्षा, सामा ि ाक परिवेश और उसकी अवस्था का प्रा ीन काल में अंकन हुआ है। देखा ाए तो स्त्रियों को इतनी स्वतंत्रता नहीं थी, न ही सुरक्षित ही नज़र आती है। उसे कुछ रूपों में वह आदरणीय सम्मान प्राप्त है पर अन्य रूपों में उसकी दशा और दिशा एक ही नज़र आती है। इस युग में स्त्री आश्रित, अधीन और शोषित नज़र आती है। पत्नी, पति की सहधर्मिणी, गृहिणी, सखी, मंत्रणा देनेवाली स ि ाव के साथ पुरुष के व र्स्व पर ालनेवाली साधारण स्त्री के रूप में ही दिखाया गया। इस युग में स्त्री किसी भी रूप में विद्रोहिणी और आक्रोशी या प्रतिशोधी नज़र नहीं आती बल्कि शांत, आज्ञाकारी, अनुगामी, रू ि.वादी, सामा ि ाक, नैतिकता के

[60] अर्थशास्त्र-91, नारीःअंतर्दर्पण व समा ा से उद्धृत

[61] अर्थशास्त्र-17, नारीःअंतर्दर्पण व समा ा से उद्धृत

मूल्यों को बनाये रखने में सहयोगी साबित हुई है। इनकी स्थिति शोषिता की ही यथा-तथा नज़र आती है।

1.6.2 मध्यकाल में स्त्री

यूनानियों और शकों के भारत पर आक्रमण के बाद मध्यकालीन समा ा व्यवस्था में स्त्री सुरक्षा गिरती ाली गई। इस काल में स्त्री को कई बंधनों में बांधा गया ि ासमें वह प्रताडित, अपमानित और शोषण के घेरों से घिरती गयी। समा ा में ऐसी रीति-रिवा ाों में स्थान लिया ि ासे आ ा तक भी स्त्री इनसे छुटकारा पाने में असमर्थ है। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, बलात्कार, सती प्रथा इन सारी सामाि ाक बुराइयों ने अपने पैरों को ामाना आरंभ किया ि ासकी ाकड़बंधी सामाि ाक व्यवस्था को विसंगतिपूर्ण वातावरण में बदल दिया। गुप्तों के स्थान पर हूण, गु ार, अहिर आये ाो युद्ध क्षमता में कम ाोर थे। इसी कारण से वे अपनी स्त्रियों की रक्षा करने में असमर्थ साबित हुए। ये कन्या के ान्म होते ही मार देते थे। ये परंपरा भारत ने भी अपना ली। साथ में सती-प्रथा, ाौहर प्रथा ने भी इस काल में ान्म लिया। "आठवीं शताब्दी से अट्ठारहवीं शताब्दी के आरंभ याने मुहममद बिन-कासिम के आक्रमण से लेकर मुगल साम्रा ाय के पतन तक भारत में मुस्लिम हमले व मुस्लिम रा ाय के प्रभाव से हिंदु स्त्रियों पर अनेकानेक सामाि ाक बंधन लगे, … इसके परिणामस्वरूप पुरुष नारी के सहधर्मिणी, सहकर्मी रूप से वंि ात हो गया और समा ा उसकी सहभागिता से वंि ात हो नीति, नियम व ाारित्रिक निष्ठा में गिर गया।"[62]

इस काल में स्त्री का सामाि ाक स्तर कम होता गया ि ासका कारण आ ा भी स्त्रियाँ अपेन स्तर को ऊपर उठाने में लगी हुई हैं। मुगल रा ाय में भारतीय स्त्रियों को कोठों तक पहुँ ाा दिया कुछ को वैश्यावृत्ति पर उतार दिया। स्त्रियों ने वैश्यालय का मुँह इसी काल में देखा। रानियों, सामान्य स्त्रियों का सुंदर होना पाप

---

[62] नारी शोषणःआईने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.15

सम ा गया। सुंदर होना बर्बादी का कारण बन गया। "रानी पद्मिनी पर अलाउद्दीन की नज़र पड़ने से सैकड़ों रा ापुतानियों के ाौहर में ाल मरने का कारण बना।"[63] स्त्रियों को पर्दे में रहने के लिए बाध्य किया गया। कई कोठों का निर्माण हुआ ािसमें मीना बा ाार था। इस 'मीना बा ाार' में रा ाा, नवाब तथा ाागीरदार ााया करते थे ािसमें सामाािक परिस्थिति डांवाडोल हो गई थी। पुरुष अत्यधिक विलासी प्रवृत्ति के हो गये थे ािसके कारण वह स्त्री का अपमान, शोषण करने लगे। स्त्रियों को वे निरादपूर्ण देखते थे। रा ाा, नवाबी की देखा-देखी सामंतों का आ ारण भी विलासमय हो गया ािसके कारण वे सुंदर स्त्रियों का अपहरण करवाते थे, उनके क्षेत्र में काम करनेवाली ग्वालिनों, मालिनों, खेतिहर म ादूरनियों पर ये अपना अधिकार मानते थे। इस काल में स्त्री-शोषण दिन-ब-दिन ब.ता ाला गया। सामंत और ाागीरदार सामाािक व्यवस्था के प्रतिष्ठित और शक्ति का प्रतीक बन बैठे थे। इन्हीं सब कारणों से बाल-विवाह, विधवा-विवाह, सती-प्रथा, पर्दा प्रथा उन दिनों की आवश्यकता बन गई। इस काल में स्त्रियों का दमन ही नज़र आता है ाो विलासपूर्ण है। वे क्या देश की और स्त्रियों की रक्षा कर पायेगी। इस काल में विधवा स्त्रियों को बलपूर्वक ािता में धकेल दिया ााता था। कुछ का मंगलकार्यों में आना मना था। सती प्रथा में मासूम स्त्रियों को ािता में ाोंक दिया, पर्दा-प्रथा से स्त्रियाँ शिक्षा से वंाित होने लगीं। समाा में अनेक आडंबर और विडंनाओं ने ान्म लिया ािससे स्त्री शिक्षा विहीन, अंधविश्वासों में ाकड़ती ाली गई। पुरुष सत्ता के अधीन स्त्री होती ाली गई। उसकी मानसिकता और व्यवहार को दासता, शोषण का शिकार बनना पड़ा।

पूरे भारत को विदेशी आक्रमणों ने घेरा ािससे दक्षिण भारत भी ब ा न पाया ािसके कारण सामाािक कुरीतियाँ, अंधविश्वास, आडंबरों, स्त्री विडंबनाओं ने विसंगतिपूर्ण वातावरण को प्रारंभ किया। पुरुषों के अधीन स्त्रियाँ होने लगीं। ाकड़बंधी ने स्त्री को कैद कर लिया। घर की ाारदीवारी में ही वह

---

[63] नारी शोषणःआईने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.15

सिमट कर रह गई। सामा िक, रा नीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भूमिकाओं से वह अनभिज्ञ ही रह गई। इस स्थिति ने स्त्री की मानसिकता को कुंठित किया िसकी छटपटाहट से बाहर निकलने में वह असमर्थ रही। उसके व्यक्तिगत रूप को छिन्न-भिन्न कर दिया।

भारत में नि ी संपत्ति के उदय, दास-प्रथा और सामंतवाद में स्त्री की स्थिति मातृ-सत्ता की समाप्ति से शुरू हुई है। स्त्री की पराधीनता की परिस्थिति मनुस्मृति में नज़र आती है िसमें "स्त्रियों को वर्णों में विभा ित किया गया। इस व्यवस्था में निम्नतम वर्णों, वैश्य और शूद्र के साथ ही पापा योनी वाली वर्ण में रखा गया है।"[64] सामंती सामा िक व्यवस्था संबंध को घृणित, मानसिकता के भौतिक आधार प्रदान करता है।

मध्यकाल के भक्ति आंदोलन ने स्त्री को धार्मिक कार्यों में शामिल किया गया पर इससे भी स्त्रियों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। भिक्षुणियों को सामान्य नता अलग प्रकार से देखते और व्यवहार करते हैं। "इस्लाम के कुरान शरीफ में स्त्रियों को समान अधिकार दिये ाने की बात की ाती है। पर कुरान की आयतों की ब व्याख्याएँ की गईं तो यह स्पष्ट हो गया कि स्त्रियों का द ाा काफी निम्न है, स्त्री न मस् िद में नमा प. सकती है न मुल्ला या इमाम बन सकती है। स्त्रियों की पवितत्रता पर निगाह रखने के लिए घरों में नानाखाने व बुरका पहनने के नियम बनाये गए।"[65] यह प्रथा उ वर्ग में ही सीमित थी। पर निम्न वर्ग के व्यक्ति अपने आप को उ वर्ग, श्रेष्ठ और ऊँ ी ाति के कहलाने के लिए इन धारणाओं को अपनाने लगे। इसी प्रकार ईसाई धर्म में भी स्त्री को पुरुषों को आकर्षित व पथभ्रष्ट करने वाले तत्व के रूप में बाइबल में ित्रित किया गया है।

---

[64] डी.डी.कोशाम्बी, मिथक और यथार्थ-पृ.18

[65] महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर योति-पृ.20

धार्मिक विश्वासों के अंधविश्वासों में बदलने पर स्त्री शोषण की दृष्टि से देवदासी प्रथा भी भारतीय समा ा में कलंक सिद्ध हुई। 8 वीं सदी तक के देशवासियों के प्रति लोगों की पवित्र भावना थी। उसमें किसी अनैतिकता की भावना नहीं थी। किंतु मध्यकालीन सांस्कृतिक ह्रास के साथ र ााओं, सामंतों, पु ारियों, ामींदारों ने मिलकर इस प्रथा में व्यभि ार का बी ारोपण किया। इस युग में देव-नर्तकियाँ, देव दासियाँ बन गईं। ओर देवदासी वैश्या का पर्याय बन कर रह गया। धर्म और भगवान के नाम पर ब ापन से ही वेश्या-वर्ग में प्रवेश कराने के लिए तैयार किया ाता ाा। इस परिदृश्य में देखा ाए तो स्त्री पर अत्या ारों से उसका भोग्या रूप ही उभर कर आता है।

मध्यकालीन स्थिति पर आशा रानी व्होरा के वि ार इस प्रकार हैं-"इस प्रकार अब तक हमने देखा, प्रा ीन भारत की अस्त्र, शस्त्रधारी घुड़सवार वीर नारी किस तरह घोड़े से उतरकर पालकी और परदे में आयी। शास्त्रार्थ करनेवाली विदुषी महिला धीरे-धीरे अशिक्षा के अंधकार में डूबती ाली गई। आम स्त्री स्वतंत्र प्रेम व ुनाव का अपना अधिकार खोकर मानसिक गुलामी और शारीरिक शोषण का शिकार हुई।"[66] इसमें आशा ी ने स्त्री के बदलते रूप की व्याख्या की है और किस प्रकार स्त्री समय-समय पर गुलामी के शिकं ो में फंसती गई उसके शोषण का ित्रण किया गया है। "विदेशी आक्रांताओं, विशेषकर मुसलमानों के आक्रमण के परिणामस्वरूप पहले उत्तर भारत में और फिर दक्षिण भारत में भी मुस्लिम संस्कृति के प्रसार और प्रभाव के कारण पर्दे की प्रथा का ान्म हआ और पालकी युग की शुरुआत हुई। संभ्रांत परिवारों की लड़कियाँ और महिलाएँ एक ागह से दूसरी ागह ाने के लिए पालकियों का उपयोग करने लगीं। म ाल था कि उनके किसी अंग भर का दर्शन किसी पुरुष को हो ाए।

[66] नारी शोषणःआयने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.18

कभी-कभी तो पालकी के ऊपर भी पर्दा डाल दिया ाता था कि कहीं परछाई तक नज़र न आ ाए।"[67]

मध्यकाल में भी शास्त्र से लेकर शस्त्र तक के सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान से मंडित विदुषियों, वीरांगनाओं के उदाहरणक कम नहीं हैं। अपने-अपने रा यों की सीमा-रक्षा के लिए तथा देश की आज़ादी की लड़ाई में हिंदू-मुस्लिम रानियाँ दुर्गावती, ाँदबीबी, ाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम ह ारत महल एक ही ध्येय को लेकर सा ी लड़ाई लड़ रही थीं।"[68]

निष्कर्ष रूप से कहें तो विदेशी आक्रमण और पराधीनता की ाकड़बंधी से भारतीय स्त्री का स्वरूप मानसिक गुलामी और शारीरिक शोषण का शिकार हुआ।

1.6.3 आधुनिक काल में स्त्री

"प्रा ीन काल में पुरुष की पूर्णता सम ी ानेवाली स्त्री अथवा मध्यकाल में पुरुष की संपत्ति सम ी ाने वाली स्त्री आधुनिक युग में व्यक्ति-स्वतंत्रता के लाभ से लाभान्वित होकर पुरुष की दासता से बिल्कुल मुक्त स्वतंत्रत अस्तित्व रखनेवाली हो गई। आधुनिक काल में भी सामंतवाद का प्र ंड तांडव यथा-तथा केंद्र में ही था। इस काल में सामंती संबंधों को मिटाने के ब ाय उनको अत्यधिक प्रबलता, प्रमुखता दी गई।"[69] "एक अर्ध विकसित, अर्थ सामंती समा ा से आर्थिक स्वतंत्रता वाले, आधुनिक, औद्योगिक राष्ट्र में रूपांतरण से तात्पर्य केवल मौ ूदा कारखानों की संख्या में वृद्धि होना, अथवा नये बड़े पैमाने के यंत्रीकृत कारखानों का कायम हो ाना ही नहीं है इसके लिए नये सामा िक संबंध, नई आदतें और ीवन की नई पद्धति अपेक्षित है... वि ारधारा के क्षेत्र में भी विज्ञान और ानतंत्र के आधुनिक वि ारों के साथ-साथ गणा ह्वाल सर्वात्मवाद

---

[67] इक्कीसवीं सदी की ओर, शीला ान ूनवाला, सं.सुमन कृष्णकांत-पृ.24
[68] स्त्री सरोकार, आशारानी व्होरा-पृ.85
[69] नारीःअंतर्दर्पण व समा ा, ंद्रमोहन अग्रवाल-पृ.278

और ादू-टोनों के पंथी का अहअस्तित्व है।"[70] ाहाँ तक स्त्री स्वतंत्रता का वि ाार है सदियों से स्त्रियों में त्याग, सहनशीलता, आत्मपीड़न की प्रक्रिया हम यथा-तथा देखते आ रहे हैं। आधुनिक काल में रू ़ि यों की श्रृंखलाओं मं ाकड़ी स्त्री अशिक्षित, बाल-विवाह, बेमेल-विवाह, वेश्या वृत्ति ऐसी सामा िाक स्थितियों से ग्रस्त है। परिवार में आर्थिक अधिकार हीन, महत्वहीन इन्हीं सभी कारणों से स्त्री के स्वास्थ्य और मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ा है। पूं ाीपतियों की वस्तु बन कर स्त्री पराधीनता की ाकड़बंधी में फंसती ाा रही है। शिक्षा से वं ाित स्त्री की सामा िाक, रा ानीतिक भूमिकाएँ अंधविश्वास, रू ़ि वादिता, निरक्षरता और अज्ञानता में डूबी हुई है। एंगेल्स ने आधुनिक वैयक्तिक परिवार के मूल रूप का वर्णन करते हुए वि ाार किया है-"आधुनिक वैयक्तिक परिवार नारी की खुली और छिपी हुई घरेलू दासता पर आधारित है।" आधुनिक समा ा वह समस्या है ाो वैयक्तिक परिवारों के अणुओं से मिलकर बना है। आ ा अधिकतर परिवारों में, कम से कम मिथकीय वर्णों में पुरुष को ाीविकोपा र्ान करना पड़ता है और परिवार का पेट पालना पड़ता है। इससे परिवार के अंदर उसका आधिपत्य कायम हो ााता है।"[71] इस स्थिति में स्त्री को निम्नतर बना देता है िासका कार्य घर के कामका ा तक ही सीमित हो ााता है।

भारत में स्त्री की स्थिति, उसकी नैतिकता समय सापेक्ष रही है। इसकी ालक हम प्रा ाीन और मध्यकाल में देख ाुके हैं। उसकी परंपरा, संस्कार, दायित्व, सामा िाक व्यवस्था विभिन्न धर्मों, वर्गों, समुदायों में कहीं समान तो कहीं भिन्न नज़र आती है। हमारे समा ा में कुरीतियाँ, अंधविश्वास, रू ़ि याँ, कट्टरपंथी, आडंबर हर वर्ग की स्त्री में समाहित हैं। ाो उसे धार्मिक अनुष्ठानों से प्राप्त हुए हैं। आधुनिक काल में इन सब कुरीतियों को देख कर ही नव ाागरण काल का उदय हुआ। नव ाागरण काल के वाहक भारतेंदु हरिश ांद्र ने कई पत्र-

---

70 भारतीय ि ांतन परंपरा, के.दामोदरन-पृ.505-506

71 नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.85

पत्रिकाओं का संपादन किया ि ासमें एक विशेष पत्रिका स्त्री केंद्रित थी-"बाल-बोधिनी ि ासमें रवींद्रनाथ के काव्य में अभिव्यक्त काव्य के अनेक तत्वों के साथ स्त्री समता और स्त्री मुक्ति का शक्तिशाली स्वर ध्वनित होता है। इसी प्रकार के वि ार रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा 1839 में स्थापित तत्वबोधिनी सभा के सदस्यों द्वारा भी व्यक्त किए गए। नव ागरण काल के सुधारक पुरुषों ने इस तथ्य को ाना और वे स्त्री शिक्षा, कुरीति-निवारण व समा ा-सुधार के कार्यक्रम लेकर सामने आए। रा ा राममोहन राय, ईश्वर ंद्र विद्यासागर, केशव ंद्र सेन, महर्षि दयानंद, महात्मा फूले, महर्षि कर्वे, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी के अलावा और भी अनेक नमा हैं ि न्होंने स्त्री ागरण का शंख-उद्घोष किया। इनके साथ उनकी देशी-विदेशी साथिनों व शिष्याओं-डॉ.ऐनी बेसेंट, सरो ानी नायुडू, मार्गरेट क ांस, भगिनी निवेदिता, सरला देवी ौधरानी, मीरा बेन, दुर्गाबाई देशमुख, कमला देवी ाटोपाध्याय ैसी अग्रणी स्त्री-वेताओं ने और फिर इनकी दूसरी-तीसरी पी ़ी की नेत्रियों ने बागडोर संभाली। आज़ादी के सत्याग्रही-संघर्ष और क्रांतिकारी संघर्ष में स्त्री-पुरुष ही साथ-साथ नहीं रहे, उ ा-मध्य निम्न वर्गों की स्त्रियाँ भी वर्गीय, प्रांतीय, ातीय, भाषीय भेदभाव भूलकर साथ-साथ लडीं।"[72]

ब्रह्म समा ा के प्रवर्तक रा ा राममोहन राय ने समा ा की संकीर्णताओं और रू ़ियों को समाप्त करना इनका उद्देश्य था। इन्होंने स्त्री उत्पीड़न की सामा ाक विसंगतियों की ैसे सती प्रथा, विधवा-विवाह को समाप्त करने के लिए कानून बनाने की मांग को उठाया। 1815 में उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा पर बल दिया। सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन सर्वप्रथम इन्होंने ही किया। 1818 में बंगाल के तत्कालीन प्रांतीय गवर्नर विलियम बैंटिक ने प्रांत में सती प्रथा पर रोक लगा

[72] स्त्री सरोकार, आशारानी व्होरा-पृ.33

दी। 1829 में सती निर्मूलन एक्ट पास किया और कहा-"सती होना आवश्यक नहीं और यह भी कि वह कोई मान्यता प्राप्त धार्मिक गतिविधि नहीं है।"[73]

समा ा सुधारक ईश्वर ंद्र विद्यासागर ने 1850 में विधवा पुनर्विवाह पर लगे प्रतिबंध की समाप्ति के लिए आंदोलन ालाए। इनकी बंग्ला पुस्तिका में कहा विधवा पुनर्विवाह शास्त्र-सम्मत है। इस वि ार पर सूमंत बन ी कहते हैं- "'विधवा की आवाज़' में तथा यह बताने की कोशिश की कि विधवाएँ अपने वैधव्य निकलकर पुनर्विवाह के लिए तैयार थीं और उनकी खुशी का इ ाहार इन गीतों में किया गया है।"[74] ि ास बहस को अखबारों में गीतों द्वारा उ ागर किया गया। प्रार्थना समा ा के महादेव रानाड़े ने "अंतराष्ट्रीय विवाह मनुष्य की समानता तथा स्त्री शिखा पर अधिकाधिक बल दिया।"[75]

आर्य समा ा के दयानंद सरस्वती के अनुसार आर्य भारत में कोई सामाा िक बुराई नहीं थी ैसे बहुपत्नीत्व, बाल-विवाह तथा स्त्री बहिष्कार ैसी कोई प्रथा विद्यमान नहीं थी। इनके वि ार में स्त्री-पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हैं। इनकी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाशन' में "वैदिक भारत में शिक्षित स्त्री तथा पुरुष एक समान हैं। लड़कियाँ नेऊ के लिए अधिकृत हैं तथा उनको भी यज्ञोपवीत संस्कार किया ा सकता है।"[76] 1880 में आर्य समा ा स्त्री शोषण के कार्यों में आगे आया। इसमें समा ार पत्र में विज्ञापन पद्धति का विकास हुआ ि ासमें स्त्री के शोषण और पुनर्विवाह पर आंकडे प्रकाशित होने लगे। अमृतसर का आर्य समा ा इस कार्य में अधिक संलग्न था।

योतिबा फुले ने स्त्रियों की दशा के सुधार किए उन्होंने ऐसे गृह का निर्माण किया ि ासमें विधवा और अविवाहित स्त्रियाँ अपने अवैध संतान को न्म दे सके और बाद में उसे गोद ले ले। इन्होंने कई कन्या पाठशालाओं को लागू

[73] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.27
[74] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.37
[75] हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ.शिवकुमार शर्मा-पृ.411
[76] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.41

किया-इनके वि ार में-"काफी परिपक्व सो । वि ार के पश ात मैं इस नती े पर पहुँ ा हूँ कि कन्या पाठशालाओं की स्थापना, विद्यालयों से अधिक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है क्योंकि शिक्षा की ड़ें सामान्यतया स्त्रियों में अधिक गहरी होती हैं। इसलिए वे अपने ब ों को दूसरे तीसरे वर्ष से ही शिक्षित करना शुरू कर देती है।"[77]

सरला देवी घोषाल, िन्होंने 'भारती' के संपादक के रूप में 1891 के रूप में पद ग्रहण किया था ये राष्ट्रवादी, पुनरुत्थानवादी, उग्रवादी एक समा । सुधारक थे। इन्होंने भारतीय स्त्री महामंडल की स्थापना की। सरो िनी नायुडु के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल का गठन आयरलैंड के तत्कालीन भारत प्रवासी नागरिक एम.ई.कू िंस द्वारा किया गया था िसमें ौदह स्त्रियाँ शामिल थीं। प्रतिनिधिमंडल ने मांग की कि-"स्त्रियों के लिए बेहतर शैक्षणिक सुविधाएँ उन्नत स्वास्थ्य तथा प्रसूति सेवाएँ और उनके भाइयों के समान ही वोट देने के अधिकार दिये ाएँ।"[78] इन्होंने युवाओं को 'भौतिक संस्कृति' में लिप्त होने के तथा अपनी स्त्रियों का अंग्रेज़ सिपाहियों द्वारा गालियों तथा थानों में बलात्कार किये ाने से रक्षा करने के लिए प्रेरित किया। इसी तरह की एक अपील एक महिला संवाददाता द्वारा 'सं ीवनी' नामक पत्रिका में भी की गई बलात्कार को सामा िक व राष्ट्रीय गौरव को अपमानित किये ाने के रूप में राष्ट्रवादियों ने केंद्रित किया। स्वर्णकुमारी देवी 1886 में 'सारवी समिति' नामक महिला संगठन शुरू किया िसका उद्देश्य विधवाओं को प.ने के लिए प्रशिक्षण देना था िसके माध्यम से वे आत्मनिर्भर होकर शिक्षा के प्रसार में सहायता कर सकें। वहीं हम पाते हैं कि सन् 1910 के बाद में उग्र राष्ट्रवादी स्त्रियों ने महिला अधिकारों की मांग उठाई, अधिकार और समानता के मुद्दे पर होनेवाले आंदोलन अत्यधिक

---

[77] धनं ाय वीर, महात्मा योतिबा फूले, फादर ऑफ आवर सोशेल रिवॉल्यूशन, बंबई, 1965-पृ.40

[78] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.121

सक्रिय हुई। सुश्री मार्गरिट कूं ास "वीमंस इंडिया एसोसिएशन की संस्थापक, स ाव तथा 'स्त्री-धर्म' नामक पत्रिका की संपादक थी। इन्होंने एक पत्र लिखा, ासे अनेक महिला संगठनों और प्रमुख व्यक्तियों को भे ाा ासमें "देश की स्त्रियों को स्त्री शिक्षा के विषय में ाा करने के लिए बुलाया गया। निस्संदेह ही महिलाओं के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि वे भारत में लड़कियों तथा लड़कों, विशेष रूप से लड़कियों को वर्तमान में दी ानेवाली शिक्षा पर अपना मत स्पष्ट करें। अगर इन वि ारों को एक मेमोरैंडम की शक्ल दी ाा सके तो यह निश ाय ही भविष्य के प्रति स्त्रियों की सेवा तथा युवा भारत के शैक्षणिक भाग्य के निर्माण के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों की सहायता मानी ााएगी।"[79]

1905 के बंग-भंग के समय लगभग पूरे देश की स्त्रियाँ स्वदेशी आंदोलन में कूछ पड़ी थीं। डॉ.ऐनी बेसेंट ने स्त्री उत्थान के कार्य किये थे। एक स्त्री दृ ़ता तथा शक्ति का स्रोत थी। इन्होंने मार्गरिट क ांस और मार्गरिट नोबल (भगिनी निवेदिता) के साथ मिलकर 'वेक अप इंडिया' नाम से एक आंदोलन का सूत्रपात किया ाो बाद में 'होमरूल' लीग में परिणत हो गया था। कु ांस के हिसाब से यह नारी ाागृति का नूतन आयाम है।

पूरे देश में महिला संगठनों की संख्या ब ़ी साथ ही स्वयं सेवा संघ बने। 1900 से 1903 के बी ा मैसूर तथा मद्रास सहित पूरे देश में विधवाओं को अध्यापिकाओं के रूप में प्रशिक्षित करने की यो ाना लागू की गई। भारत भगिनी की संपादक श्रीमती हरदेव रोशनलाल ने दृ ़तापूर्वक कहा-"राष्ट्रीय सामा िक सम्मेलन कांग्रेस से अधिक महत्वपूर्ण संगठन है क्योंकि यह इस बात पर ाोर देता है कि स्त्रियों का सरोकार, पुरुषों के साथ ही है, साथ-साथ दोनों उठते या गिरते हैं, वामन या ईश्वर की तरह, बंधन युक्त या उन्मुक्त।"[80]

---

[79] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.135

[80] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.121

स्वयं सेवा संघ ऐसे संगठन थे ि ासमें स्त्री श्रमिकों की मांग को उठाया गया, ि ासमें प्रसूति छुट्टी तथा उसके लाभ की मांग को केंद्र में रखा गया। 1920 में नारी वादियों ने प्रतिनिधित्व के वि ाार पर स्त्रियों को समा ा के निर्माण एवं उसे संगठित होने पर ध्यान दिया। स्त्रियों ने 'नारी सक्रियता' ैसी वि ाारधारा का निर्माण किया।

स्वतंत्रता के बाद संवैधानिक अधिकारों के तहत स्त्री को स्वतंत्रता व समानता के अवसर मिले। शिक्षा, रो ागार, वैयक्तिक ीवन में उसे पुरुष के समान अधिकार और अवसर मिले। परंपरागत मध्यवर्ग की स्त्री ने नौकरी करना आरंभ किया। पर उसकी स्थिति घर के बाहर एक आधुनिक, सोसायटी वुमन और घर के अंदर पारंपरिक स्त्री। ये स्थिति परंपरा को बराबर बनाए रखती है। शिक्षा से स्त्री में आत्मविश्वाास, आत्मसम्मान और आत्म निर्भरता का भाव उत्पन्न हुआ है। ो पुरुष व स्वि सम े ाते थे उन सभी क्षेत्रों में स्त्री ने कदम रखा है। पं ावर्षीय यो ाना में स्त्री के विकास हेतु शिक्षा एवं उसके व्यक्तित्व विकार पर विशेष ध्यान दिया। अनेक कमीशनों द्वारा स्त्रियों की बेहतरी हेतु बहुमूल्य सु ााव दिया, विश्वविद्यालय शिक्षा समिति, नारी-शिक्षा की राष्ट्रीय समिति, केंद्रीय सलाहकार समिति ने, कोठारी कमीशन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति परीक्षण ने स्त्री शिक्षा के प्र ाार-प्रसार उसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु सु ाावों के साथ-साथ स्त्री शिक्षा की ओर आकर्षित करने का सु ाव दिया। "वर्तमान प्रतिस्पर्धा की स्थितियों में हम ि ास शिक्षा को उपलब्ध करा रहे हैं वे उन्हें विकास के क्या अवसर उपलब्ध करा रहे हैं। बड़े सपने देखनेवाली लड़कियों के सामने अवसर कितने हैं और उनका उपयोग कर पाने के लिए स्थितियाँ कैसी हैं। ... रो ागार के सीमित साधनों के बी ा आर्थिक विकास के अवसर पारंपरिक शिक्षा नहीं ुटा पातीं। गैर पारंपरिक उ ा रो ागारोन्मुख शिक्षा की उपलब्धता स्थान व साधन की दृष्टि में अति सीमित है।"[81] स्त्री शिक्षा के साथ आत्मनिर्भरता का तत्व इसलिए नहीं ुड़ पाता क्योंकि

---

[81] स्त्री ि ंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.88

आ ा भी स्त्री का सबसे सुरक्षित कैरियर विवाह माना ाता है। स्त्री आत्मनिर्भर होने पर भी ाब तक विवाह नहीं करती, तब तक पूरे मानवीय अधिकार तथा संपूर्ण मानवीय गरिमा नहीं प्राप्त कर सकती। बेटे के साथ भविष्य में परिवार के पोषण की भावना ुड़ी होती है। अतः लड़की ाो विवाह उपरांत किसी दूसरे घर के पोषण में अपनी कमाई ख र् कर देगी। लड़कियों के विवाह पर होनेवाला ख र् अक्सर अभिभावकों को उनकी शिक्षा पर ख र् करने से रोकता है, परिणामस्वरूप शिक्षा अथवा विवाह के ख र् में वे विवाह पर ख र् के विकल्प को ही ुनते हैं।

स्त्रियों के लिए शिक्षा और नौकरी में ब .ते आरक्षण के परिणामस्वरूप भी स्त्री शिक्षा पर ध्यान दिया ााने लगा है। यह परिवर्तन प्रारंभिक स्थिति में है। आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, समा ा में उ ा वरीयता और पुरुषों की समकक्षता की कामना ने स्त्रियों में शिक्षा के प्रति रु ाान में वृद्धि करना ााहा है, स्त्री ने शिक्षा के क्षेत्र में अपने लिए स्थान सुरक्षित करना ााहा है, उ ा शिक्षा के लिए घर से बाहर निकलने के अवसर ब ़े हैं, शेष विश्व से संपर्क के अवसर उपलब्ध हुए हैं। शिक्षा के अवसरों ने और उनके उपयोग ने स्त्री के व्यवसाय, व्यापार के अवसर भी उपलब्ध कराए हैं। शिक्षा के प्रसार-प्र ाार और राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी ने स्त्री को घर की ाारदीवारी से निकलना संभव बना दिया था। स्थितियाँ स्त्रियों के पख में ााने लगीं परंतु ैसा हमेशा होता आया है। आपात स्थितियाँ स्त्री को बाहर के क्षेत्र सम्हालने का अवसर देती हैं और अवसर बीतते ही उन्हें सप्रयास घरों में सुरक्षित खोली में वापिस भे ा दिया ााता है।"[82] परिवार के परिवेश और स्त्री की आर्थिक हैसियत की भिन्नता ने स्त्री को परिवार में भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ सौंपी हैं और उसका द ाा निर्धारित हुआ है। बदलती हई परिस्थितियों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सामान्यतया परिवार और विवाह के प्रश्न पर कामका ाी स्त्रियों को दोहरा संघर्ष करना पड़ता है। एक ओर पारिवारिक दायित्वों को निभाना स्त्री ाीवन में प्रथम स्थान और कार्यस्थल

---

[82] स्त्री ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.90

पर ागह बनाने की कशमकश ने स्त्री को दोहरे दायित्वों में बांधा है। "पारंपरिक, विवाहिता और स्वावलंबी बने रहने में स्त्री पर ि ाम्मेदारियों में वृद्धि होती है, बदले में उसे तनाव व थकान मिलता है। पुरुष प्रधान परिवेश में परवरिश स्त्री से "अधिकारों का त्याग मांगता है और स्वावलंबन अधिकारों की ाह। इन दोनों के बी ा बँटी हुई स्त्री निरंतर तनाव ेलती है और टुकड़ा-टुकड़ा ाीती है।"[83] स्त्री की स्थिति में खास परिवर्तन नहीं आया। उसके तनाव और दबाव ब े हैं। स्त्री को बोलने का अधिकार मिला है पर फैसले का अधिकार अब भी परिवार के पुरुषों के पास सुरक्षित है। स्त्री ने कामका ाी होकर भी अपने दायित्वों को निभाया है। पर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि रीति-रिवा ा, सामा ाीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप पुरुष स्त्रियों को निम्न स्थिति में ही सम ाता है।

1971 के दशक के उत्तरार्द्ध में म ादूर आंदोलनों में महिलाओं की उपस्थिति अत्यधिक थी क्योंकि म ादूर स्त्रियों पर होनेवाले शोषण, उनके कार्यों का समय और उनके वेतन को लेकर ा ाएँ अत्यधिक संगठनों के माध्यम से केंद्रित की गईं। इस समय अनेक महिला ट्रेड यूनियन नेता थी ि ान्होंने स्त्रियों में महिला कामगारों में संगठित होने की ाागरूकता उत्पन्न की।

समा ा सुधारकों में ाहाँ स्त्री की आत्मबलिदानी प्रकृति को संस्कारात्मक दबावों के ालते कष्टप्रद रूप में देखा वहीं पुनरुत्थानवादियों ने महिलाओं के संस्कारात्मक बलिदान को हिंदु स्त्री के गौरव की संज्ञा दी, लेकिन महात्मा गांधी ने स्त्री के आत्मबलिदानी स्वभाव को हिंदु संस्कारों से इतर माँ के रूप में भारतीय स्त्रीत्व के विशेष गुणों को परिभाषित किया। स्त्रियों के सार्व ानिक, व्यावसायिक क्षेत्रों में डॉक्टरी, अध्यापिकाओं और समा ा सेविकाओं के रूप में सम्मान प्राप्त किया इसके साथ किसान, म ादूर आंदोलनों में रा ानीतिक ख्याति प्राप्त करने पर गांधी ने अपने वि ाार व्यक्त किये-"स्त्रियाँ उदासीनता को त्यागकर सुधार के

---

[83] स्त्री ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.93

सकारात्मक उद्देश्य की ध्व ावाहिका बन गई है।"[84] भारतीय स्त्रियों ने परदा फाड़कर फेंक दिया। और राष्ट्र के काम के लिए बाहर आ गई। "उन्होंने महसूस किया कि देश उनकी घरेलू देखभाल की िम्मेदारी के अलावा कुछ और अधिक करने की मांग कर रहा है।"[85]

1970 तक स्त्रीवादी कार्यकलापों में शांति बनी रही ैसे ही लिंग समानता की बात में कानूनी लापरवाही नज़र आयी तो स्त्री आंदोलन तेज़ी से ब.ने लगा। इस समय स्त्रीवाद और मार्क्सवाद, स्त्रीवाद तथा सांप्रदायिकता विरोधी और स्त्रीवादी तथा ातिवाद विरोधी संगठनों का निर्माण किया गा। इस विषय पर 'मैडम कामा' तथा 'सरो ानी नायुडु' ने मातृशक्ति का बयान करते हुए कहा- "याद रखो ो हाथ पालना ुलाते हैं वही दुनिया पर रा ा करते हैं।"[86] इस दशक के स्त्रीवादियों ने वर्ग- ागरूकता के साथ भातर के स्त्री-पुरुष, स्त्री-स्त्री के बी ा ब.ती असमानता, ाति, कबीला भाषा धर्म और वर्ग के बी ा की खाई को ा ि ति किया है। स्त्रियों द्वारा अपने नि ी ीवन पर उसके स्वयं के नियंत्रण के अधिकार को लेकर स्त्रियाँ आगे आयी है। इसके साथ ही स्त्री के स्वयं निर्णय लेने के अधिकारों को उठाया गया। 1970 में िपकी आंदोलन, शराब-विरोधी एवं मूल्यवृद्धि स्त्री आंदोलनो ने ामकर अभियान ालाए हैं।

1980 में भारतीय स्त्री आंदोलन में व्यापक ा ा का विषय लिंग आधारित भेद को सख्ती से उठाया गया। िसमें समानता की इ छानुसार भेदभाव के विरोध को हटाने और स्त्रियों को सम्माननीय अधिकार देने की ा ाएँ दिखाई दी। इन आंदोलनों में भी पुरुषों का व स्वि अत्यधिक तथा पर अनेक स्त्रियों ने भी भारी संख्या में शामिल किया। स्वाधीनता तिंभागा एवं तेलंगाना आंदोलन में स्थितियों के ित्रित के साथ 'महिला सरोकारों' ैसे स्त्री की भूमिका एक गृहिणी के रूप में

---

[84] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.175
[85] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.177
[86] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.13

सीमित होकर रह गई ि ासे घर के लिए ाल, खाना बनाने तथा गर्भ सीमित होकर रह गई ि ासे घर के लिए ाल, खाना बनाने तथा गर्म करने के ईंधन, भो ान, भो ान के लिए धन इत्यादि की व्यवस्था करनी थी। इन सब समस्याओं के माध्यम से स्त्रियों ने समूहों या संगठन के रूप में एक ाुट होकर कार्य करना आरंभ किया। इन संगठनों में स्त्रियों ने शराबखोरी विरोधी, पानी, उत्पीड़न विरोधी तथा दहे ा विरोधी, बलात्कार विरोधी, अभियानों में ामकर भाग लिया और स्त्रियों ने पुरुष अभियुक्तों के मुँह पर कालिख पोतकर समा ा में सार्व ानिक तौर पर उन्हें प्रताड़ित किया। पुरुषों को प्रताड़ित करने का स्त्रियों का एक ही तात्पर्य था कि वे अपने अत्या ाारों, स्त्री शोषण, घरेलू हिंसा का सबक पुरुष को सिखाई पुरुष के विरुद्ध उनका कोई याति तौर पर बेर नहीं था। उनका तात्पर्य पुरुष को एहसास दिलाना था कि स्त्री भी उन्हीं की तरह मानव है, इन्सान है ाो अपने सम्मान, अधिकार और स्वस्थ्य ाीवन ाीने की अधिकारी है।

1.6.4 स्त्री-मुक्ति आंदोलन

वैदिक काल से ही स्त्रियों की मुक्ति की छटपटाहट उनकी स्थितियों में नज़र आती है। पर ौसे- ौसे स्त्री की परिस्थितियों में ह्रास होने लगा उसने ाीवन की सार्थकता मानकर इस नियति को लगभग स्वीकार किया। मध्यकाल से नव ाागरण काल तक हमें स्त्री का यही रूप दृष्टिगो ार होता है। भारतीय दृष्टिकोण में देखा ााए तो स्त्री ने कभी पुरुष सत्ता से मुक्ति की मांग नहीं की। उसने तो राष्ट्रीय आंदोलनों में पुरुष का साथ दिया है। राष्ट्र समस्याओं को पुरुषों के साथ मिलकर सुल ााया है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की ाँसी की रानी, बेगम ह ारत महल, ामानी बेगम, देवी ाौधरानी, किबूर की गनी ोनम्म, ौसी वीरांगनाएँ हुई हैं ि ान्होंने समय-समय पर राष्ट्रीय ोतना का परि ाय दिया है।

भारतीय स्त्री का मुक्ति संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से माना ााता है। ाब सामा ाक पुन ाागरण और राष्ट्रीय ोतना का विकास हुआ। इस समय

देश में अज्ञानता, गरीबी, शोषण, दासता और आडंबर, परंपरागत मूल्यों ने सिर उठाना शुरू कर दिया था। सामा िक व्यवस्था के साथ आर्थिक, रा ानीतिक व्यवस्था भी अस्त-व्यस्त थी। इस समय स्त्री ने पुरुषों के साथ इन सभी विसंगतियों से मुक्ति आंदोलन शुरू की। इस कार्य के लिए बंगाल में ब्रह्म समा ा, बंबई में प्रार्थना समा ा, उत्तर भारत और पं ााब में आर्य समा ा के सुधारकों एवं राष्ट्रवादियों ने स्त्री की स्थिति को परखा और उसकी परंपरागत ाकड़ बंधी से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा, सती-प्रथा, विधवा विवाह, प्र ातीय विवाह, बाल-विवाह ैसी सामा िक विसंगतिपूर्ण व्यवस्था में सुधारने हेतु अपने कदम उठाये। 1829 में सती प्रथा कानूनी तौर पर खत्म कर दिया। 1856 में विधवा-विवाह, पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता प्राप्त करवाई। स्त्री शिक्षा पर अत्यध्कि ध्यान दिया। "ईश्वर ंद्र विद्यासागर ने 19 वीं शताब्दी में महिला महाविद्यालय, बेडले कॉले ा, कलकत्ता में स्थापित हुआ। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक ारण में मार्गरेट नीबेल (भगिनी निवेदिता) ने भारतीय स्त्री शिक्षा को आगे ब ़ाने के कदम उठाए। इस समय शिक्षा से तात्पर्य विदेशी शासन की दासता के विरुद्ध ाागरण मात्र था। इसके बाद ऐनी बेसेंट ने स्त्री ाागरण के मुद्दे को आगे ब ़ाया। इन्होंने 'होम रूल लीग' की स्थापना की। और 1917 में कलकत्ता अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष पद प्राप्त किया और देश के रा ानीतिक प्रक्रिया में स्त्रियों के मताधिकार का प्रस्ताव पास कराया। इसी समय मद्रास में क ान्स ने अखिल भारतीय महिला संगठन 'इंडियन विमेन्स ऐसोसिएशन' स्थापित किया। रा ानीतिक व्यवस्था में सक्रिय सहायता देने के लिए सरो ानी नायुडू के नेतृत्व में भारतीय स्त्रियों ने महिलाओं के मताधिकार की मांग का पहला प्रयत्न किया। िासका सफल प्रयास यह था कि 1925 में सरो ानी नायुडु कांग्रेस की पहली स्त्री अध्यक्षा बनी। स्त्रियों में राष्ट्रवादियों ने रा ानीतिक ोतना के लिए 1927 में बाल विवाह निषेध अधिनियम

पास किया। ि ासके फलस्वरूप स्त्री की सामाि ाक स्थिति में कुछ हद तक सुधार नज़र आया। स्त्री शिक्षा में वृद्धि, स्त्री के व्यक्तिगत रूप के विकास में कार्य हुए।

भारतीय स्त्रियों ने ैसे कस्तूरबा गांधी, अरुणा, आसफ अली,सु ोता कृपलानी, सरो ानी नायुडु, रेणुकारे, अम्मुस्वामी नायर, राधाबाई सुब्रह्मण्यम, रा ाकुमारी, अमृत कौर, दुर्गाबाई देशमुख इन स्त्रियों ने भारत छोड़ो आंदोलन के साथ वैधानिक क्षेत्र में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व नज़र आता है। ि ान्होंने संविधान निर्माण में भी अपना योगदान दिया है। आ ा ऐसा कोई क्षेत्र नहीं ाहाँ स्त्री ऊं ो पद पर आसीन नहीं। पर विडंबना की बात यही है और भी स्त्री की ना ही सामाि ाक स्थितियों में परिवर्तन आया है न ही रा ानैतिक आर्थिक दृष्टि से स्त्री स्वतंत्र नज़र आती है। कई राष्ट्रव्यापी महिला संस्थाओं की स्थापनाएँ हुईं, शैक्षणिक उत्थान हुए, स्त्री एवं बाल-कल्याण की दिशा में सक्रिय प्रयत्न हुए हैं पर स्त्री दासता वहीं-की-वहीं नज़र आती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्री मुक्ति आंदोलन एक नये मोड़ पर खड़ा नज़र आता है। बाज़ारवाद, खुली अर्थव्यवस्था में स्त्री-पुरुष के आपसी संबंधों को प्रभावित करना प्रारंभ कर दिया है। आज़ादी के संग्राम में रा ानीति, सांस्कृतिक, आर्थिक हर क्षेत्र में स्त्री ने ामकर आंदोलन किए हैं। साठ के दशक के पश ाात भारतीय समा ा व्यवस्था में स्त्री ाीवन की परिस्थितियों में अत्यधिक परिवर्तन नज़र आता है। स्त्री का व्यक्तिगत रूप पहले से अधिक स ाग और सक्रिय हो गया है। आर्थिक रूप से स्त्री की मानसिकता में व्यापक परिवर्तन हुआ है। ि ासमें 'स्त्री ि ांतन' मुक्ति की नयी राह खो ाती नज़र आ रही है। स्त्री समस्या आ ा भी देश में अपनी परंपरा निभा रही है। ैसे अशिक्षित, बाल-विवाह, दहे ा प्रथा, अनमेल विवाह, लड़की का बो ा माना ााना, विधवा स्त्री का शोषण, बलात्कार, पारिवारिक शोषण, कार्यालयों में शोषण, घरेलू हिंसा में मारपीट, स्त्री का कार्यालयों में शोषण, घरेलू हिंसा में मारपीट, स्त्री को घर में कैद करना ये पितृसत्तात्मक स्थिति यथा-तथा आ ा भी विद्यमान है। आ ा की स्त्री दोहरे भार

को लेकर अपना ीवन यापन करती है। बाहर नौकरी करना, घर की पूरी िम्मेदारी संभालना। नौकरी और व्यवसाय के माध्यम से पुरुष मानसिकता को ोल रही है। पुरुष दृष्टि में स्त्री आ । भी भोग की वस्तु है, ाहे वह कितनी ही विकासमान, परिवर्तनशील क्यों न हो। "आ । देश में ो महिला संगठन कार्यरत है उनमें केंद्रीय समा । कल्याण बोर्ड, महिला बाल कल्याण परियो नाएँ, कस्तूरबा स्मारक निधि, भारतीय ग्रामीण महिला संघ, अखिल भारतीय महिला परिषद की विभिन्न शाखाएँ नारी रक्षा समिति, बाई.डब्ल्यू.सी.ए. वीर नारी संगठन 'वार.वी.ए. ऐसोसिएशन' आदि प्रमुख हैं।"[87] स्त्रियों के कल्याण और सुधार के लिए इन संगठनों का निर्माण हुआ है। सामाि क स्थिति में सुधार लाने के लिए इन संगठनों के माध्यम से समय-समय पर स्त्री मुक्ति आंदोलन हुए हैं। कई यो नाएँ बनीं, कुछ नये कानूनी संशोधन भी हुए। वर्तमान समय में समा । का ो रूप दिखाई देता है वह आर्थिक और नैतिक दृष्टि से खोलना नज़र आता है। िसमें नियम कानून तो हैं पर कोई एक्शन नहीं है। "आ । शासन रा नीति, विज्ञान, शिक्षा, समा ।-कल्याण, संस्कृति, ट्रेड यूनियनों, व्यापार, सभी गह स्त्रियाँ महत्वपूर्ण और दायित्वपूर्ण पद संभाले हुए है। पर इनकी दूसरी लड़ाई अभी शेष है। यह लड़ाई है, सामाि क भेदभाव और सामाि क अन्याय दूर करने की। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों और 'अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' के नियमानुसार स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में समानाधिकार प्राप्त हैं। पर व्यवहार में भेदभाव हर स्थान पर विद्यमान है। आपसी व्यवहार में, वेतन में, शिक्षा में, नौकरी के अवरों में, शिक्षा के समानाधिकार की बात "'यूनेस्को' के आंकड़ों में एक व्यंगय सी लगती है। सामाि क शोषण से मुक्त न हो पाने का कारण नारी का स्वभावगत दुर्बलता ही है। समस्या की ड़ वास्तव में नारी के भीतर छिपी असुरक्षा की भावना है।"[88] आ । भी भारतीय स्त्री अपने रू. एवं परंपराओं के

---

[87] महिला उपन्याकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर योति-पृ.23
[88] महिला उपन्याकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर योति-पृ.24

ाल से मुक्त करने में असमर्थ है। आ ा भी स्त्री शोषण समा ा और परिवार में निहित है। आ ा भी स्त्री अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना के लिए संघर्षरत है।

स्त्री मुक्ति आंदोलन पहले ैसी वि ारधारा नहीं रही। स्त्रीवादी सो ा वर्तमान समय में बदल ुकी है। स्त्री में इंसान की तरह अ छाई-बुराई का समावेश नज़र आता है। वह अपेक्षाकृत अत्यधिक गतिशील और व्यवाहारिक बन गई है। इस तथ्य पर प्रगति सक्सेना वि ार व्यक्त करते हैं-"हमें पुरुषों से दुगुना तिगुना काम इसलिए करना पड़ता है कि हम सिद्ध कर सकें कि हम मह ा सुंदर और मूर्ख (बिंब) नहीं हैं। हमारे पास भी दिमाग है, बुद्धि है और ब यह साबित हो ाता है, तो ाने क्यों, हमारे पुरुष सहकर्मियों को इसे स्वीकारना अपमान नक लगता है।"[89] सामा िक स्थितियों में स्त्रीवाद की छवि अ छाई और बुराई दोनों के समावेश पर टिकी हुई है। इस स्थिति में स्त्री व्यावहारिक भी है और विश्वसनीय भी। समा ा के अनुकूल ही धारणा और सो ा है। नाओमी का कथन है-"मैं अकेली हूँ, बुरी भी, शोषक भी हूँ और आक्रामक भी, र ायिता हूँ तो विनाश्का भी, मैं शोषित नहीं हूँ, संत नहीं हूँ, बल्कि एक इंसान हूँ ो दोस्तों के लिए स्नेहमयी हे और शत्रुओं के लिए खतरनाक।"[90]

बीसवीं सदी की ‘महिला- ागरण का युग’ कहा गया। स्त्रियों के संगठित आंदोलन हर क्षेत्र में हो रहे हैं। अपने नागरिक अधिकारों के लिए प्रयत्नशील रही है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में स्त्रियों भागीदारी की उन्नति के लिए 1975 का वर्ष ‘अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष’ के रूप में मनाया गया। सन् 1985 तक महिला उत्थान के विशेष कार्यक्रमों के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक मनाया गया है। क्या? महिला ागरण, महिला वर्ष और महिला उत्थान के विषयों ने स्त्री को मुक्त किया है या एक कोसला बन कर रह गया है।

---

[89] इक्कीसवीं सदी का नारीवाद, हंस-पृ.73

[90] इक्कीसवीं सदी का नारीवाद, हंस-पृ.77

स्त्री-मुक्ति के संदर्भ में मृणाल पांडे के वि ार इस प्रकार हैं-"पहले नारीवाद उग्र रूप में था तथा बिखरा हुआ था। लेकिन अब फेमिनिज़म एक इंटिग्रेड रूप में आ रहा है ि सके तहत नारी मुक्ति एवं ेतना को समग्रता की दृष्टि से देखती है।"[91] प्रभा खेतान के वि ार में "आंदोलन कैसे किया ाए हम पुरुष वर्ग से यह सीखना भी ाहती हैं किंतु उन सिद्धांतों को ओ ना नहीं ाहती, ो हमारी अपनी स्त्री मानस की उप ा नहीं है। साथ ही अब तक ो कुछ उपलब्ध किया है उसे खोना नहीं ाहती।"[92] आ ा स्त्री मुक्ति आंदोलन स्त्री ाति की सभी स्थितियों को समाहित करके आगे ब . ना ाहता है। शिक्षित, उ ा वर्ग, मध्यम वर्ग सभी समुदायों की स्त्रियों ने मुक्ति के लिए संघर्ष किये हैं।

आ ा के संदर्भ में देखा ाए तो 'बलात्कार' और 'दहे ा' दो सामा िक बुराइयाँ देश में अत्यधिक ब . गई हैं। 'दहे ा' एक ऐसी बीमारी है ि सने पता नहीं कितनी मासूम लड़कियों को मौत के घाट उतार दिया है। कितनी ही लड़कियों की ि ंदगी से खिलवाड़ किया है। कितने ही ाहें अन ाहें व्यक्तित्व को उभारा है। "भारत में इस प्रकार का 'पारिवारिक ागड़ा' लगभग सभी ातियों, वर्गों, धर्मों एवं समुदायों में सामान्य बात है। वास्तविकता यह है कि दहे ा की शर्त पत्नी-उत्पीड़न का पर्याय बन गया है। यह इतनी ानी-पह ानी करतूत हो गई है कि स्त्रयों के विरुद्ध इस प्रकार की हिंसा महिला आंदोलन का प्रमुख मुद्दा बन गई है।"[93] सबसे पहले ये विरोध हैदराबाद में हुआ। ो 1975 में प्रगतिशील महिला संगठन द्वारा द र् कराया गया। दहे ा उत्पीड़न और हत्या के विरुद्ध दिल्ली, पं ाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गु रात, मध्यप्रदेश, पश्ि ाम बंगाल के साथ पूरे भारत में दहे ा संबंधी अपराधों के खिलाफ आंदोलन हुए। 'नारीवादी आंदोलन' में 'महिला दक्षता समिति' पहली महिला संस्था थी ि सने दहे ा एवं दहे ा

---

[91] परिधि पर स्त्री, मृणाल पांडे-पृ.11

[92] दुर्ग द्वार पे दस्तक, कात्यायनी-पृ.57

[93] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.240-241

उत्पीड़न के मुद्दे को उठाया। परंतु स्त्री संघर्ष द्वारा दहे ा हत्या की ा ाी घर-घर में फैल गई। महिला दक्षता समिति ने दिल्ली में दहे ा विरोधी प्रदर्शन आयोि ात किया तथा मुद्दे पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की।"[94] "दहे ा मौतों के प्रति न्यायिक रवैया बदलने लगा। 1983 में अपराध कानून (दूसरा संशोधन) पास हुआ ि ासमें 498-ए धारा के अंतर्गत पत्नी के विरुद्ध अत्या ाार की गैश्र- ामानती संज्ञेय अपराध माना गया।"[95] दहे ा हत्या को पूं ाीवाद से उप ाी समस्या से ाोड़कर देखा ााए तो इस आंदोलन में पितृसत्ता विरोधी, पूं ाीवादी विरोधी, स्त्रियों ने आंदोलन किये। वास्तविकता यह है कि कितने ही आंदोलन हों कानून बनें, संगठनों का निर्माण हो पर इस बीमारी का कोई इला ा नहीं क्योंकि खुद परिवारवाले, समा ा, रा य और देश इस व्यवस्था को बदलना नहीं ाहती। डाइरेक्ट या इनडाइरेक्ट आ ा भी दहे ा का लेन-देन ाल रहा है। ाब तक लेन-देन ालता रहेगा, दहे ा-उत्पीड़न हत्याएँ लगातार होती रहेंगी। ि ातना ऊँ ाा, शिक्षित, प ़ा-लिखा व्यक्ति उतना अधिक दहे ा। पहले ामीन- ाायदाद पर कम रूपों में ालता था। आ ा करोड़ों में यह व्यापार ालता है। याने ि ातनी आदमी की हैसियत, अहोदा है उतना दहे ा समा ा की मांग है। कोई ह ़ाारों में तो कोई लाखों में, तो कोइ्र करोड़ों में, इस व्यवस्था को बनाए हुए है।

भारतीय स्त्री का संघर्ष पुरुष के खिलाफ न होकर उस व्यवस्था के खिलाफ है ि ासे वह बदलने की कोशिश में है। भारत में स्त्री-मुक्ति सामाि ाक स्थिति है, कोई नारा नहीं है। समा ा में परिवर्तन सामाि ाक विसंगतियों में सुधार, विश्लेषण, बौद्धिक स्तर पर विकास से संभव है। "भारत में नारी मुक्ति आंदोलन की विफलता का कारण पशि ामी आंदोलन की नकल ही है। साथ ही आंदोलन का अपना शैशवकाल से ही सनसनी खे ा पत्रकारिता, महिला संस्थाओं की आपसी

[94] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.245
[95] स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार-पृ.255

रा ानीति और किन्हीं मामलों में अति प्र ार से ूठे प्र ार तक शिकार हो ाना है।"[96]

आ ा भी स्त्री स्वतंत्रता का उपयोग करने में असमर्थ है। रू ि यों, कुप्रथाओं, आडंबरों में ीवन यापन करते हुए सामा िक, आर्थिक पारंपरिक व्यवस्था में दासता की ाकड़बंधी में फंसी हुई है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय स्त्री की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन और संवैधानिक दृष्टि से समानता का अधिकार स्वीकारा है। पर घरों में परिवार को आ ा भी बो ा माना ाता है। पराये धन से संबोधित किया ाता है। "आ ा भी ऐसे दृश्य देखने में आते हैं ाब विवाह के अवसर पर शहनाई के स्वर श्रृंगार की तरह विहाग गाने लगते हैं ाब हंसी और कहकहों का माहौल बदल ाता है। और उसका स्थान ले लेती है सिसकियाँ और आहें। दहे ा प्रथा के अभिशाप के कारण आ ा भी अनेक लड़कियों को आ ीवन कुमारी रहना पड़ता है या फिर गले में फाँसी लगाकर अपने आप को मारना पड़ता है। आ ा भी सुदूर दक्षिण में धर्म और परंपरा के नाम पर विधवा का मुंडन होता है। शादी कराने या ीविका देने के बहाने लश्वार, बेनस, भोली-भाली युवतियों को बहलाने-फुसलाने वाले तस्करों का व्यापार आ ा भी धड़ल्ले के साथ ाल रहा है। औरत आ ा भी ि ासकी तरह बिक रही है।"[97] 1987 से 91 के बी ा पुलिस के पास महिलाओं के विरुद्ध हिंसाके ाो मामले द ा हुए, उनसे पता ालता है कि भारत में हर सातवें मिनट पर महिलाओ के विरुद्ध कोई-न-कोई अपराध होता है। हर 26 मिनट पर छेड़खानी की घटना होती है 54 मिनट पर किसी-न-किसी महिला के साथ बलात्कार होता है हर 45 मिनट पर एक महिला का अपहरण होता है तथा हर 102 मिनट पर एक दहे ा हत्या होती है 87 सेवा के बी ा पुलिस के पास द ा कराये गये तथ्यों का हिसाब है लेकिन अनगिनत मामले बिना द ा हुए ही रह ाते हैं। उसके अलावा आ ा के खुले बा ार के

---

[96] महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर योति-पृ.24

[97] इक्कीसवीं सदी की ओर, सुमन कष्णकांत-पृ.26

उपभोक्तावादी दौर में यही संख्या किस हद तक ब ़ ुकी होगी, इसका हिसाब अभी आना बाकी है।"[98] स्त्री के प्रति अपराधों को देखते हुए उसकी असमानता के तथ्य और उसके संघर्षपूर्ण पूं ीवादी अर्द्ध सामंती उत्पादन संबंधों के, सामा िक व्यवसाय में पितृसत्ता, ातिवाद तथा धार्मिक तत्ववाद के परंपरागत वि ारधारा कठिन तथा हिंसा की टिलता में व्यक्त हुआ है।

निष्कर्ष

विमर्श में किसी भी तथ्य की खो उस तथ्य की पुनर्व्याख्या है। पुराने वि ार-विनिमय को नये वि ार-विनिमय में परिवर्तित करना ही विमर्श है। यानी तथ्य को पुनर्व्याख्यायित करना है। विमर्श में मूल तथ्य से संबंधित संदर्भों को ाँ ाते-परखते हैं िनसे वह विमर्श उत्पन्न हुआ है। आ का युग विमर्श का युग है िसमें एक विमर्श, नया विमर्श बन ाता है और पुनः अनेक उपविमर्शों में विभा ित हो ाता है।

इन परिभाषाओं में स्त्री-विमर्श स्त्री ीवन की व्यथा-कथा के रूप में ित्रित हुआ है। इस ित्रण में स्त्री ीवन से ुड़ी समस्याओं, संघर्ष, अधिकार ेतना, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता, अस्मिता, स्त्री उत्थान आदि स्त्री विमर्श के तथ्य हैं। उनके शोषण, अधिकार, आज़ादी, सुविधा, विरोध को उभारा गया है।

स्पष्ट है कि विमर्श में तथ्यों की पुनर्व्याख्या की ाती है और स्त्री-विमर्श में स्त्री संबंधी तथ्यों की पुनर्व्याख्या होती है।

स्त्री-विमर्श के सैद्धांतिक परिदृश्य में समय के अनुसार स्त्री के प्रति होनेवाले शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई है। साथ ही समा में व्याप्त विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया गया है। समय-समय पर कई सिद्धांतों का प्रादुभाव हुआ है िसने पुरुष प्रधान रूि़बद्धता को तोड़ने के लिए कई आंदोलन किए हैं। इन आंदोलनों ने स्त्री के मानवीय पख को उभारने का प्रयास किया है।

---

[98] नारी प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.95

बु र्ुआ दृष्टिकोण के अंतर्गत नागरिकों के अधिकारों की घोषणा के साथ स्त्री पुरुष के बी । सामा िक, रा ीनीतिक समानता की मांग को केंद्र में रखकर स्त्री की समान मानवीय अधिकार और परंपरागत ाले आ रहे नैतिक मूल्यों को ुनौतियाँ दी गयी है।

समा ावादी दृष्टिकोण में स्त्री की सामा िकता की मांग को उठा कर स्त्री की सामा िक व्यवस्था का स्वास्थ्य और स्वतंत्रता निर्भर की घोषणा कर, स्त्री की सामा िक व्यवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया गया है।

समा ावादी दृष्टिकोण में स्त्री की सामा िकता की मांग को उठा कर स्त्री की सामा िक व्यवस्था का स्वास्थ्य और स्वतंत्रता निर्भर की घोषणा कर, स्त्री की सामा िक व्यवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया गया है।

स्पष्ट है कि उग्रवादी दृष्टिकोण में पुनरुत्थान, पुनरुत्पादन की अनुभव शक्ति को केंद्र में रख कर पुनरुत्पादित लैंगिकता के विषय में वि ार विमर्श किया गया है।

इसमें स्त्री के उत्पीड़न के औप ारिक कानूनी अधिकारों पर अमल लाने की बात को उठाया गया है।

ब्लॉकवादी दृष्टिकोण में देखा ाए तो स्त्रियों के दोहरे शोषणों के मानदंडों को उ ागर किया गया है।

स्त्री-विमर्श की परंपरा व इतिहास पाश ात्य दृश्टि से देखा ाए तो स्त्री हर देश में दमित, कुंठित थी। उसे घर की ार दीवारी में ही सीमित रख ाता था। स्त्री को कई संदर्भों से व्याख्यायित किया ाता है। प्रा ीन रोमन, यूनानी साम्रा य में स्त्रियाँ पुरुष की संपत्ति मात्र थी। ापान में स्त्रियाँ धार्मिक अधिकारों से वं ित थी, ीन, स्पेन, इटली अरबवासियों की धारणा में स्त्री पुरुष के पैरों की ूती से यादा कुछ नहीं थी। इस समय स्त्री पारंपरिक ाकड़बंदी से निकलने में असमर्थ थी। उनहें पुरुष की मानसिकता के अनुरूप ालना पड़ता था।

अतः कहा ाए तो स्त्री का पतन और उस पर हिंसा वैदिक काल में ही आरंभ हो गयी थी। महाभारत में स्त्री को स्वयं संपत्ति मानकर ुए की बा ी में दांव पर लगा दिया। उसके साथ बुरे से बुरा व्यवहार किया गया। मध्यकाल के आक्रमणों ने उसे कई विषमताओं में घेर लिया उसे पर्दा-प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, ोहार प्रदान नाम से स्त्री शोषणों में अपने पैरों को सामाि क व्यवस्था में मा लिए ि ससे वह शिक्षा से वं ित घर की ारदीवारी में दमघोंटू स्थिति में पड़ी रहने को बाध्य किया। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक दुर्बलता के ालते स्त्री कुंठा ने समा ा में निम्न स्थिति कम पहुँ ा दिया। स्त्री का दर-ब-दर पतन होना पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सामाि क परिस्थितियों के कारण आ ा भी यथा-तथा बना हुआ है।

प्रभा खेतान ने पितृसत्ता के संबंध में कहा है कि 'पितृसत्ता' वह वि ार है, सिद्धांत है, आदर्श हे ो अपने से या अपने समूह से भिन्न प्रत्येक व्यक्ति पर नियंत्रण ाहती है। सवर्णी होने का अहंकार भी उसी पितृसत्ता की देन है। स्त्री विशिष्टता का भ्रम पाल सकती है किंतु वह विशिष्ट कभी नहीं हुई।'

स्त्री मुक्ति की मांग प्रा ीन समय से लेकर आ ा तक की यात्रा अत्यधिक संघर्षमयी रही है। शिक्षा के माध्यम से उसकी स्थिति में विस्तार हुआ है। उसे स्वयं के निर्णय लेने तक सार्थक बनाया है। देखा ाये तो पितृसत्तामक व्यवस्था, सामाि क वातावरण, आर्थिक असमानता, पूं ीवाद परंपरा ने उस पर शोषण किये। सुरक्षा के नाम पर बंदी बनाकर घर की ारदीवारी में बांधे रखा। आ ा स्त्री अपनी रूरतों को महसूस करती है। उनको पूरा करने के लिए कार्यरत भी है। ागृति और पूर्णरूपेण उसे आगे ब़ाया है ि ससे वह अधिक कुंठित, संत्रास लगती है। समानता की होड़ में अपने अस्तित्व को नया रूप देने में उतारू हो गई है। इस प्रतिस्पर्धा में स्त्री-पुरुष के पारिवारिक ीवन में अत्यधिक गहरी होती खाई नज़र आती है।

* * *

द्वितीय अध्याय

'स्त्री-विमर्श' का साहित्यिक परिदृश्य

द्वितीय अध्याय

'स्त्री-विमर्श' का साहित्यिक परिदृश्य

2.1 स्त्री-विमर्श : विविध ारण

2.1.1 प्रा ीनकाल

2.1.2 मध्यकाल

2.1.3 आधुनिक काल

2.2 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु:पुरुष लेखन के संदर्भ में

2.2.1 प्रेम ंदपूर्व हिंदी उपन्यास

2.2.2 प्रेम ंदकालीन हिंदी उपन्यास

2.2.3 प्रेम ंदोत्तर हिंदी उपन्यास

1. मनोविश्लेषणवाद
2. प्रगति या मार्क्सवाद
3. आधुनिक बोध
4. आं ालिकता

2.3 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु:स्त्री-लेखन के संदर्भ में

2.3.1 स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास

2.3.2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

2.3.3 साठोत्तर दशक के हिंदी उपन्यास

2.3.4 सातवें दशक के हिंदी उपन्यास

2.3.5 आठवें, नवें दशक के हिंदी उपन्यास

द्वितीय अध्याय

'स्त्री-विमर्श' का साहित्यिक परिदृश्य

'साहित्य' में समा ा के बदलते स्वरूप, रु ायों, परिस्थितियों और प्रतिस्पर्धी व्यवस्था का ि ात्रण होता है। साहित्य समय सापेक्ष है ि ासके अंतर्गत सामा ाक स्थितियाँ, मूल्य एवं मान्यताएँ समय-समय पर अपना रूप ग्रहण करती है। साहित्य की अनेक विधाओं में समा ा की प्रवृत्तियों, व्यवस्था तथा परिस्थितियों का अंकन सटीक रूप से किया ाता है। साहित्य में रा ानैतिक, आर्थिक, सामा ाक गतिविधियों का अंकन विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। कहना न होगा कि साहित्य भी कई बार सामा ाक परिवर्तन, परिवेशों का उत्प्रेरक बन ाता है और समा ा की गतिविधियों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अपना हस्तक्षेप करता है।

साहित्य अ ास्त्र विकसित होनेवाली धारा है ि ासमें मानव मन की संकल्पना, अनुभूति, भावना, कल्पना का सं ात भंडार समाहित है। मानव ने ज्ञान, बुद्धि, अनुभवों को लिखित और लिपिबद्ध रूप से साहित्य में प्रतिष्ठित किया है। यह मानव की उपलब्धियों का सर्वो ा साधन है ि ासके माध्यम से ाीवन और संसार के गत्यात्मक साधनों को सौंदर्य की भावमयी अभिव्यक्ति नये प्रयोगों, नये ंग, नयी सो ा को व्याख्यायित किया ाता है। ज्ञान के साथ-साथ मानव की मनोवृत्तियों को हर क्षेत्र में गतिमान और परिवर्तनशील बनाता है। "साहित्य में मानवीय ोतना की प्रक्रिया और उसका धरातल और अतींद्रिय ागत को, मानव

किस प्रकार देखता है। इसका स्पष्ट आभास उसके साहित्य में मिलता है। मानव की एक स्पष्ट परिकल्पना साहित्य में अंतर्निहित होती है।"[1]

मानव मन की सभी ोष्टाओं और भावनाओं का साहित्य में समावेश, परिलक्षित होता है। प्रेम ंद के वि ाार में-"साहित्य उसी र ाना को कहेंगे ि ासमें कोई स ााई प्रकट की गई हो, ि ासकी भाषा प्रौ ़ परिमार्ि ात और सुंदर हो, और ि ासमें दिल-दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न है ाब उसमें ाीवन की स ााइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हों।"[2] साहित्य में मानव ाीवन की संपूर्ण गाथा, अनुभूतियाँ, व्यथा-कथा का अंकन होता है।

"आदमी ने ाीवन में ाो कुछ देखा, अनुभव किया और ि ांतन किया, हम सभी के आ ा और आनेवाले दीर्घकालीन हितों को लेकर ि ान संवेदनाओं से साक्षात्कार किया, वह उसकी मार्मिक लिखित वृत्तांत है। इस प्रकार, वह मूल रूप से भाषा के ज़रिए ाीवन की ही अभिव्यं ाना है...।"[3] साहित्य में मानव ाीवन की परिपूर्ण ाीवन गाथा का समावेश परिलक्षित होता है।

साहित्य अखंड आनंद का स्रोत है, व्यावहारिक ज्ञान का अक्षर भंडार है, लोक शिक्षा का विरल प्रवाह है, लोकहित का अनंत सिंधु है और साद्य पर विवृत्ति का शाश्वत मंदिर है। साहित्य की शीलता स्रोतस्विनी में अवगाहन करने से र ास और तम् से विमुक्ति मिलती है, भौतिक कष्टों से छुटकारा मिलता है।"[4] साहित्य ऐसा माध्यम है ि ासके द्वारा मानव मन की अतल गहराइयों के साथ समा ा की व्यवस्था, उसके गुण-दोष ौसे तत्वों का ज्ञान भी होता है। रा ाशेखर साहित्य को "राष्ट्र और अर्थ के यथायोग्य और सहयोग वाली विद्या

[1] परंपरा, इतिहास बोध और संस्कृति-पृ.154-160
[2] साहित्य का उद्देश्य-पृ.7
[3] गु ाराती दलित साहित्य में नारी, हरबंस पटेल-पृ.179
[4] साहित्यिक निबंध-पृ.421

ही साहित्य विद्या है।"[5] मानवीर प्रसाद द्विवेदी की दृटि में साहित्य-"ज्ञानराशि के सं ात कोष का नाम साहित्य।"[6] 'साहित्य' शीर्षक ग्रंथ में रवींद्रनाथ टैगोर कहते हैं-साहित्य शब्द से साहित्य की उत्पत्ति हुई है, अतएव धातुगत अर्थ करने पर साहित्य शब्द में मिलन का एक भाव दृष्टिगो ार होता है। वह केवल भाव का भाव, भाषा का भाषा, ग्रंथ का ग्रंथ का मिलन ही नहीं वरन यह भी बतलाता है कि मनुष्य का मनुष्य, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट मिलन कैसे होता है इन तथ्यों का साहित्य में समावेश ही साहित्य है। इससे यह दृष्टिगत होता है कि साहित्य मानव के समान और असमान तत्वों का समावेश ही नहीं अपितु तथ्यों का सामां ास्य भी स्थापित करता है। साहित्य में भाव पक्ष की आत्मा एवं अनुभूति तथा कलापक्ष की बाह्य अभिव्यक्ति समाहित है। ो बुद्धि, ज्ञान, कल्पना, भाव, भाषा, शैली, कला ैस तत्वों को एक साथ समेटे रखता है। साहित्य की अनेक विधाएँ हैं ैसे काव्य, नाटक, कहानियाँ, एकांकी और उपन्यास। उपन्यास विधा का आगमन 19 वीं शताब्दी से माना ाता है। ीवन के रंगमं ा पर स्त्री-पुरुष की उपस्थिति िस तरह अनिवार्य सम ी ाती है उसी प्रकार प्रा ीनकाल से लेकर आधुनिक कालीन साहित्य के विविध विधाओं में विविध रूपों में पुरुष और स्त्री का ित्रण समान रूप से होता आ रहा है। युगीन वातावरण के प्रभाव से प्रत्येक काल में ित्रण दृष्टि में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह ही उपन्यासों में स्त्री- ीवन का ित्रण विविध प्रकार से उपलब्ध है। आगे हम स्त्री का साहित्यिक परिदृश्य देखेंगे। साहित्य की र ानाओं में स्त्री का योगदान किस प्रकार का है उसका विवे ान करने का प्रयास करूँगी।

---

[5] साहित्य का स्वरूप-पृ.17

[6] साहित्य का स्वरूप-पृ.17

2.1 स्त्री विमर्श : विविध ारण

भारतीय साहित्यधारा का उद्गम वेदों से माना ाता है। यह साहित्य धारा रामायण और महाभारत में से होती हुई स्मृति पुराण तथा बौद्ध ग्रंथों से समाहित होती गयी। संस्कृत भाषा हमारे देश की वर्तमान भाषाओं की ननी है। "संस्कृत सिंधु ाल से शब्द-संपदा ग्रहण कर आ ा की भारतीय भाषाएँ परिपुष्ट होती आयी हैं। इसमें ान ीवन के प्रा ीन इतिहास के विलोभनीय प्रतिबिंब िलमिलाते हैं नारी ीवन का ित्रण भी उसी में समाहित हुआ है।"[7]

साहित्यिक निर्माण में प्रा ीनकाल से ही स्त्री-लेखन का योगदान रहा है। स्त्री ीवन की व्यथा-कथा को र ानात्मक धरातल पर स्त्री लेखिकाओं ने यादा न कहते हुए कुछ मात्रा में साहित्यिक र ाना की है। इन लेखिकाओं ने अनुभूति और काल्पनिक धरातल पर स्त्री ीवन को व्याख्यायित किया है। "समसामयिक परिस्थिति का प्रभाव साहित्य पर परिलक्षित होता है तथा साहित्य में अभिव्यक्त वि ारों का प्रभाव, ीवन में परिवर्तन ला सकता है युगीन परिस्थिति का समालो ान इसीलिए आवश्यक है।"[8] इसलिए सामा िक परिस्थिति, सांस्कृतिक परिवेश, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता आदि का विवे ान साहित्य में दृष्टिगो ार होता है। पुरुष लेखकों ने भी स्त्री ीवन के अनेक तथ्यों का अपने साहित्य में अपनी र ानाओं के माध्यम से उद्घाटन किया है। उसके स्त्री-प्रश्नों को भी सटीक और सार्थक ंग से व्याख्यायित किया है पर स्त्री ने स्त्री की समस्याओं, उनके प्रश्नों को अत्यधिक सटीक और स्त्री के व्यक्तिपरखता को सार्थक ंग से अपनी र ानओं में विश्लेषण किया है। क्योंकि कहीं-न-कहीं स्त्री-प्रश्न, समस्याएँ और संघर्ष उसका अपना भोगा हुआ सत्य नज़र आता है। अपनी व्यक्तिपरकता, अस्तित्व की पह ान की छटपटाहट उसने स्वयं महसूस की है। स्त्री-विमर्श की स्त्री से बेहतर शायद पुरुष र ानाकार नहीं ान सकता है। स्त्री की मानवीय

---
[7] हिंदी मराठी नाटकों में नारी, डॉ.वसुधा ोशी-पृ.17
[8] हिंदी मराठी नाटकों में नारी, डॉ.वसुधा ोशी-पृ.19

संवेदनाओं, परिस्थितियों, उसके सह ा रूप को साहित्य में उद्भव काल से ही अंकन हुआ है। स्त्री-विमर्श स्रष्टा रूप में कम तथा प्रेरणा रूप में अधिक साहित्य में प्रतिपादित हुआ है।

साहित्य की अधिकांश विषयवस्तु स्त्री समुदाय के यथार्थ ीवन की विशिष्टताओं से ही तथ्यों को उ ागर करती है और इसी को लेकर वह अन्य साहित्य स कि से विशिष्ट हो ाती है। इन्हीं तथ्यों का वि ार हम प्रा ीनकालीन स्त्री लेखन, मध्यकालीन स्त्री लेखन तथा आधुनिक कालीन स्त्री लेखन में देख सकते हैं।

2.1.1 प्रा ीनकाल

इस काल में ऋग्वेद में स्त्रियों की स्थिति समा ा में श्रेष्ठ और सम्मानपूर्ण थी ो शिक्षित और वेद-ऋ ाओं की ज्ञाता भी थी। इन विदुषियों की अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान भी प्राप्त था। ये विदुषियाँ धार्मिक कार्यक्रमों में भी अपना सक्रिय सहयोग दिया करती थीं। इनको पुरोहितों एवं ऋषिकाओं का सम्मान और द ा प्राप्त था। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों और सूत्रों की व्याख्या से संबंधित थी। ब्रह्मवादियाँ और ऋषिकाएँ विदुषियों की ा ा साहित्य में मिलती है पर सामान्य स्त्री या लेखिकाओं का योगदान कहीं भी दृष्टिगत नहीं होता है। ऋग्वेद और सामवेद की ऋ ाओं में अपना सहयोग और योगदान देनेवाली ब्रह्मवादिनियों तथा ऋषिकाओं में प्रमुख है-लोपामुद्रा, धोषा, माधवी, अपाला, रोमसा, इड़ा, श्रद्धा, कामायनी, इंद्राणी आदि उल्लेखनीय है। "ऋग्वेद और सामवेद में ऐसे कुल 21 महिला नाम मिलते हैं। सूर्या सावित्री ने प्रसिद्ध 'सूर्यासूक्त' की र ाना की। यह विवाह संस्कार के समय गाया ाता है। 21 वीं पौलोमी में ऋग्वेद के दसवें मंडल में 154 वें सूक्त की र ाना की। इस मंडल में 39, 40 सूक्त घोषा काशीवती द्वारा र े गये। 'गृहदेवता' में थमी, गोधा, माधवी, इंद्राणी, लोपामुद्रा आदि का उल्लेख मिलता

है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' में कुमारी गंधर्व का नाम उल्लेखनीय है।"[9] उत्तर वैदिक काल में शास्त्रार्थ करनेवाली कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है-मैत्रेयी, गार्गी, सुलभा है इन्होंने 'आश्वलायन गृहसूत्र' की र ाना की है।

साहित्य के वीरगाथाकाल में स्त्री गौरव के प्रतिम में दृष्टिगत हुई है ि ासने युद्ध की प्रेरणा दी है और प्रेरक के साथ-साथ स्त्री शौर्य के दर्शन भी दिखाए हैं। इसके विपरीत रा ाघरानों में उसकी दयनीय स्थिति का सह ा रूप ही दृष्टिगो ार होता है। "बौद्धकाल में पाली भाषा में लिखा गया पाँ ा सो से अधिक कविताओं का काव्य-संग्रह 'थेरी गाथा' 13 भिक्षुणियों ने मिलकर लिखा था। ैन काल में कन्नड़ भाषा की कवयित्रियों 'अक्कादेवी' और 'भद्रा' ने ैन-भिक्षुणियों के रूप में समर्पित भाव के भक्ति गीत लिखे। इस काल में अधिकतर भक्तिगीत ही लिखे गए, पर होनम्मा नामक एक शूद्र स्त्री इसका अपवाद भी रही। अनुपमा द्वारा भी काव्य-र ाना का उल्लेख मिलता है।"[10]

प्रा ीनकाल में स्त्री शिक्षित होने के कारण साहित्य लेखन कर सकी। पर वे ही स्त्री विदुषी थी ाो ब्राह्मण कुल की थी या ऋषिकाएँ, या फिर श्रेष्ठ रा ाुल की। सामान्य स्त्री लेखिकाओं का दर-किनार कर दिया ााता था ैसे होनम्मा शूद्र स्त्री इसका उदाहरण है। कुछ ही विदुषी और कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है। ि ान्होंने साहित्य र ाना में अपना योगदान दिया है। स्पष्ट है कि नाम मात्र के लिए ही इन लेखिकाओं और कवयित्रियों को प्रा ीन काल के ऋग्वेद में ा ार्ा की ााती है।

2.1.2 मध्यकाल

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति में परंपरागत, अंधविश्वास तथा बौद्धिक ि ांतन के अभाव के दोष दृष्टिगो ार होने लगे। वैदिक युग की शिक्षित स्त्री इस युग में आते-आते लुप्त हो रही थी। धार्मिक कट्टरपंथी ने सिर उठाना प्रारंभ

---

[9] भारतीय नारी: दशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.49

[10] भारतीय नारी: दशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.49

किया था। धार्मिक मान्यताओं के कारण बाह्याडंबर तथा कर्मकांडों में सामान्य ान ीवन उल ाने लगा था। इस प्रकार के आडंबरों और कर्मकांडों का खुलकर विरोध कश्मीर की भक्त कवयित्री 'लल्लेश्वरी' ने अपनी र ानाओं में किया। इन्होंने समा ा में व्याप्त भ्रष्टा ाार, पाखंड, दोहरी नीतियों के विरुद्ध अपनी आवाज़ साहित्यिक माध्यम से उठाई थी।

तमिल की प्रथम भक्तिगीत लेखिका 'कोधई आंडाल' का उल्लेख मिलता है "रामानु ा की भक्ति-धारा पर आधारित उनके 'तिरनभीली' और 'तिरुप्पावई' नामक दोनों ग्रंथ तमिल साहित्य में बहुत प्रसिद्ध हैं। प्राकृत तथा संस्कृत भाषा में प्रभुदेवी, मदालसा, शीला, सुभद्रा आदि उल्लेखनीय कवयित्री हैं ि ान्होंने स्त्री ीवन की सुंदर अभिव्यक्ति की है। हिंदी व ब्र ाभाषा में मीराबाई के गीत उल्लेखनीय हैं। मीरा ने रा ा-पाठ रा ाकुल की मर्यादाओं को त्याग कर वैरागिनी बन कर भक्ति परख गीत लिखे हैं। मीराबाई के पद-ि ान्हों पर ालने वाली छत्रकुंवरिबाई, प्रताप कुवरिबाई, राधाबाई, कृष्णाबाई, दिवालीबाई तथा मुस्लिम कवयित्री ता ा इन सभी ने भक्तिपरक र ानाएँ लिखी हैं। इन सब में 'राग गोविंद' की र ायिता मीराबाई के कृष्ण के प्रति समर्पित गीत और भ ान लिखकर साहित्य को अमूल्य निधि दी है। मराठी में संत मद्धम्बा, उडिया में ैतन्य देवी, अनेक कवयित्रियों का योगदान साहित्य लेखन की दृष्टिगत होता है। सामा ािक विसंगति का अपने समय में खुलकर विरोध किया ि ासके कारण ये अपमानित, शोषित तथा अनेक अत्या ाारों का शिकार बनना पड़ा। इस काल में काव्य, गद्य का ही प्रादुर्भाव नज़र आता है। गद्य र ाना में स्त्री लेखन शून्य ही प्रतिपादित होता है।

"अनुभूति की तीव्रता और भावुकता ही इनकी लोकप्रियता और सार्व ानीनता के कारण हैं। कुछ अन्य नाम भी उल्लेखनीय हैं-11 वीं शती में रा ाा भो ा की सभा में सीता नामक कवयित्री थी। 14 वीं शताब्दी में गंगा देवी ने

'वीर ारित्र' लिखा। 17 वीं शताब्दी में बै ायंती ने 'आनंदलतिका' लिखी और त्रिवेणी ने काव्य, नाटक दोनों में ख्याति प्राप्त की।"[11]

साहित्य में 18 वीं शताब्दी में कुछ गिने- ुने उपन्यासों की ा ाि मिलती है। तेलुगु की प्रख्यात लेखिका 'मुदुपलानी' का नाम उल्लेखनीय है ि न्होंने 'राधिका संतवानम्' तथा 'अष्टपदी' नामक र नाएँ लिखीं। बंगला में स्वर्ण कुमारी देवी ने सामा ाि क उपन्यासों की र ना की ि ससे "प्रथम भारतीय महिला उपन्यास लेखिका"[12] होने का गौरव प्राप्त किया। आपने राष्ट्र आंदोलन में भाग लिया, स्वतंत्रता संग्राम की भी भागीदार रही और कहानीकार, नाटककार, पत्रकार तथा समा ा सेविका के रूप में प्रख्यात हुई। "'भारती' पत्रिका का टैगोर से पूर्व सात साल तक संपादन कर शायद उन्होंने इस क्षेत्र में भी पहल की थी।"[13] बंगाल की मानकुमारी बासु, कुसुम कुमारी, सीता देवी आदि उल्लेखनीय लेखिका है ाे उ ा परिवार से, श्रेष्ठ कुल से संबंधित थी ाे शिक्षा-दीक्षा में परिपूर्ण थी। ि सके कारण संस्कृति, मान्यताओं, परंपराओं को साहित्य में आगे ब ़ ाने का दायित्व निभाया।

साहित्य में स्त्री ि तनी प्रेरणा के रूप में उपस्थित हुई है शायद स्वयं का सृ ान लेकर नहीं। स्त्री ने समय-समय पर अपनी कलम को उठाया है। स्त्री-विमर्श की तथ्यों को सही दिशा देने में असमर्थ नज़र आती है।

2.1.3 आधुनिककाल

आधुनिक साहित्य में स्त्री लेखन में सुधार दृष्टिगत हुआ है। इस काल की लेखिका ने स्त्री की सामा ाि क स्थिति के संबंध में अनेक सुधारवादी भावनाओं का विकास किया है। स्त्री प्रश्न को लेखिकाओं ने नये ंग से व्याख्यायित किया है। इनकी र नाओं में स्त्री रूप के कई तथ्यों का बड़े ही मार्मिक ंग से ि त्रण किया

---

[11] भारतीय नारी: दशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.50

[12] भारतीय नारी: दशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.51

[13] भारतीय नारी: दशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.51

गया है। साहित्य में वर्तमान परिस्थितियों में असंतोष, सामाा िक विसंगतिपूर्ण वातावरण, राष्ट्रीय भावना, विद्रोह के स्वर, मानसिक दृष्टिकोण सभी तथ्यों को लेखिकाओं ने अपनी र ानाओं में दर्शाया है।

कविता क्षेत्र में पुरानी परंपरा पर र ाना करनेवाली कवयित्रियाँ हैं- गिरिरा ाकुंवरी, रामप्रिया, ुगल प्रिया तथा परंपरा के साथ कुछ नये प्रयोग ांद्रकलाबाई,सरस्वती देवी तथा हेमंत कुमारी प्रसिद्ध थीं। सुभद्राकुमारी ाौहान ने राष्ट्रप्रेम तथा राष्ट्रीय ाागरण की कविता लिखी-‘ ाांसी की रानी’ इनके साथ राष्ट्र भावना की कविता तोरन देवी शुक्ल, विद्यावती, रामेश्वरी देवी गोयल ने की। छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा ाी अपनी र ानाओं के लिए प्रख्यात और अग्रणीय है। "स्त्रियों की स्थिति को लेकर बीसवीं सदी के मध्य में ौसा महादेवी वर्मा ने लिखा, वैसा शायद ही किसी और ने नहीं लिखा। महादेवी तब स्त्रियों के बारे में ौसा लिख रही थीं वैसा तब अंग्रेज़ी भाषा में दिखाई नहीं देता। उनकी सारी औरतें बेहद कर्मठ, निम्न ाातियों और विपत्ति की नारी हुई हैं। विधवा और परित्यक्ता हें। इसलिए समा ा सिर्फ उन्हें लांछन देता है।"[14] रूमानी गीतिकाव्य में सुमित्राकुमारी सिन्हा और ांद्रमुखी ओ ाा का नाम प्रसिद्ध है। गद्य काव्य में दिनेश नंदिनी, नई ेतना की आधुनिक कवयित्रियों में शकुंता माथुर, क्षानवती सक्सेना, अमृता भारती, सरो ानी प्रीतम आदि उल्लेखनीय हैं।"[15]

कहानी क्षेत्र में बंग महिला का नाम अग्रणी है। इनका वास्तविक नाम ‘रा ेंद्रबाला घोष’ है ि ान्होंने हिंदी साहित्य को पहली कहीन के रूप में ‘दुलाई वाली’ की र ाना की। ये 1907 में ‘सरस्वती’ में प्रकाशित हुई थी। शिवरानी देवी, सुभद्राकुमारी ाौहान, हेमवती देवी, उषादेवी मित्रा, कं ानलता सब्भरवाल इनकी कहानियों में स्त्री समस्याओं को अपना विषय बनाया है। साहित्यिक भाषा

---

[14] स्त्रीत्ववादी विमर्श-समा ा और साहित्य, क्षमाशर्मा-पृ.103

[15] भारतीय नारीःदशा और दिशा, आशारानी व्होरा-पृ.51

की पकड़, कल्पना, अलंकृत काव्यमयता को कहानियों में अंकन किया है। आधुनिक स्त्री के उ ा मध्यवर्ग की स्थितियों को र ानी पनीकर ने अपनी कहानियों में कामका ाी रूप को उठाया है िासमें कार्यशील स्त्री की पीड़ा व शिकायत को स्वर दिया है। इनके अतिरिक्त, शशिप्रभा शास्त्री, दीप्ति खंडेलवाल, रा ाी सेठ ने भी कहानियों में स्त्री रूप को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

आशा रानी व्होरा, सरला महेश्वरी, क्षमा शर्मा, कात्यायनी, मृणाल पाण्डे साहित्य में स्त्री प्रश्नों, स्त्री विमर्श, उनकी दशा और दिशा, स्थिति-परिस्थितियों को लेकर स्त्री संबंधित वि ाार-विमर्श का र ानात्मक सृ ान किया है। िासमें स्त्री रूपों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा-परखा और सम ाा है।

आशा रानी व्होरा साहित्य की सभी विधाओं में प्रमुख सशक्त साहित्यकार हैं ाो कवयित्री, कथाकार, निबंधकार, संस्कृति-ि ांतक, समा ाशास्त्री, बाल-किशोरी साहित्यकार और महिला-विषय की विशेषज्ञ के रूप में स्त्री की सभी दिशाओं में दृष्टि रखकर प्र ाुर लेखन कार्य किया है। स्त्री परिदृश्य में देखा ाये तो आशा ाी ने ‘साहित्य परिप्रेक्ष्य में भारतीय नारीःदशा दिशा’, ‘भारतीय नारी अस्मिता और अधिकार’, ‘नारी शोषणःआयने और आयाम’, ‘नारी विद्रोह के भारतीय मं ा’ के बाद ‘स्त्री-सरोकार स्त्री विषयक’ संबंधी समस्याओं, योगदान तथा उनकी परिस्थितियों का विलेषण किया है। यहाँ वि ायेंद्र स्नातक के वि ाार दृष्टव्य हैं-

"श्रीमती आशारानी व्होरा एक ऐसी प्रमुख साहित्यकार हैं, ाो नारी-अस्मिता के बोध को सार्व ानिक बनाकर पिछले ाालीस वर्षों से अपनी सधी कलम का प्रयोग कर रही हैं। उन्होंने नारी ााति की अंतरंग और बहिरंग समस्याओं को ध्यान रखकर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होते रहते हैं।"[16]

[16] स्त्री सरोकार, आशारानी व्होरा-पृ.8

भारतीय नारीःदशा-दिशा में स्त्री लेखिकाओं का साहित्य में योगदान दर्शाया है। भारतीय नारीःअस्मिता और अधिकार में स्त्री प्रश्नों के आलोक में स्त्री ाति अपने स्वत्व, ममत्व, अस्मिता और अधिकारों की पह ान को प्रशस्त करने की मांग को उठाया गया है। नारी शोषणःआयने और आयाम में सदियों से ाले आ रहे स्त्री शोषण की दासता को भारतीय परिप्रेक्ष्य में उभारा है। नारी ागरण की मशाल को साहित्य में ालाया है। "'स्त्री-सरोकार' में आधुनिक स्त्री की सभी समस्याओं को समेटते हुए एक संतुलित दृष्टि से उनके समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।"[17]

उपन्यास साहित्य में भी सर्वप्रथम उषादेवी मित्रा का नाम अग्रणीय है। उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, र ानी पनिकर, मेहरुन्निसा परवे ा, मृदुला गर्ग, मं ुल भगत, मालती ोशी, कृष्ण अग्निहोत्री, शशिप्रभा शास्त्री, मृणाल पाण्डे, सभी लेखिकाओं ने स्त्री संदर्भों का अपनी र नाओं में विश्लेषण किया है। आधुनिक संदर्भों को स्त्री माध्यम से सशक्त रूप में उठाया है। बदलती हुई युगीन परिस्थितियों की, स्त्री के आंतरिक, बाह्‌य धरातल को साहित्य में प्रतिबिंबित किया है।

साहित्यिक क्षेत्र में कृष्णा सोबती, ित्रा मुद्‌गल, प्रभा खेतान, अलका सारावगी, मृदुला गर्ग स्वतंत्रता के बाद लेखन में सर्वाधिक मान्यता प्राप्त लेखिकाएँ हैं िन्होंने वर्तमान युग की पुरुष प्रधान संस्कृति से विमुक्त होकर पुरुष से पीड़ित स्त्री का आक्रोश, कुंठा, संत्रास, संवेदना, व्यथा, तनाव को अपनी र नाओं में अभिव्यक्त किया है।

क्षमाशर्मा ने भी स्त्री विषयक संबंधों को लेकर साहित्यिक सृ न किया है। इनका स्त्रीवादी विमर्शःसमय और साहित्य, हिंदी साहित्य में होनेवाली बहसों ने एक महत्वपूर्ण मोड़ लिया है। स्त्रीत्ववादी विमर्श को अपने र नात्मक और िंतनपरक लेखन के माध्यम से आगे आनेवाली लेखिका क्षमा शर्मा का नाम

[17] स्त्री सरोकार, आशारानी व्होरा-पृ.8

उल्लेखनीय है। इन्होंने कहानी, उपन्यासों, लेखों-टिप्पणियों, समीक्षाओं के माध्यम से समय-समय पर स्त्री की त्रासदी को उ ागर करने का कार्य साहसपूर्वक किया है। इनके औरतें और आवाज़ें, परछाई, अन्नपूर्णा, स्त्री का समय, मेरा औरत होना में स्त्री की त्रासदी को उ ागर किया है। स्त्री पर होनेवाले शोषण, उत्पीड़न, अत्या ार, अपमान, असमानता का खुलकर उपन्यासों में विद्रोह किया है। इनका उद्देश्य स्त्री को मानवपूर्ण बनाना है।

साहित्य के सृ ान में स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री को केंद्र में रखा है। काव्य में स्त्री रूप को उभारा, कहानियों में उसे सार्थकता दी तथा उपन्यास में स्त्री ीवन को मानव बनाने का उद्देश्य परिलक्षित किया। हर विधा में स्त्री विमर्श के भावुक, रोमांटिक, संवेदनशील रूप को उभारा तथा उसके प्रश्नों के समाधान को तथ्यपरख रूप से सुल ाने का प्रयास किया गया।

2.2 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु : पुरुष लेखन के संदर्भ में

हिंदी उपन्यासों में आरंभ से ही स्त्री किसी न किसी रूप में वर्णन का विषय रही है। आरंभ में स्त्री का ित्रण वास्तविकता के धरातल से कोसों दूर नज़र आता है। उपन्यासों में स्त्री की परिस्थिति हमेशा समय के अनुकूल रही है। युगीन परिस्थितियों के अनुसार ही उपन्यासों ने स्त्री ीवन के तथ्य और सत्य को ित्रित किया है। प्रारंभिक उपन्यासों में स्त्री का ित्रण होते हुए भी नहीं के बराबर था। प्रारंभिक उपन्यासकार स्त्री रूप को उपदेशात्मक धरातल पर व्याख्यायित कर रहे थे, समस्याओं का निरूपण कर रहे थे पर समाधान का कोई अता-पता दृष्टिगत नहीं होता था। इस प्रकार देखा ाए तो सामाि क समस्याओं की तरह ही स्त्री समस्याओं की उपदेशात्मक दृष्टि से उपन्यासों की र ाना की। ैसे- ैसे स्त्री की समस्याओं, द्वंद्वों, प्रश्नों का उद्घाटन हुआ वैसे-वैसे स्त्री भी साहित्यिक परिदृश्य में उपन्यासों के माध्यम से प्रभावशाली, संघर्षमयी, सुदृ. प्रतिभा संपन्न सार्थक ित्रण होने लगा। उपन्यासकारों ने प्रत्येक युग के अनुसार स्त्री समस्याओं, प्रश्नों को समकालीन परिदृश्य से ित्रण किया गया है।

इन सभी तथ्यों को युगों के अनुसार विवे ान करने का प्रयास किया ाएगा। स्त्री-विमर्श को हिंदी उपन्यासों के परिदृश्य में प्रारंभिक, उपन्यासों में मध्य के उपन्यासों और आधुनिक काल के उपन्यासों में ा ार्ा करेंगे। अध्ययन की दृष्टि से प्रेम ंद पूर्व, प्रेम ंद युग तथा प्रेम ंदोत्तर काल में उपन्यासों में स्त्री-विमर्श का विव ेान किया ाएगा।

2.2.1 प्रेम ंद पूर्व हिंदी उपन्यास

प्रेम ंद पूर्व हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श का आधार स्तंभ नहीं था। स्त्री पात्रों का ित्रण किया ाता था, केवल आभ्यारी, तिलस्मी के लिये उन्हें कटपुतली मात्र दर्शाया ाता था। इस युग में देश परतंत्र था देश की आर्थिक, सामाि ाक, धार्मिक स्थिति ावाडोल थी। भारत देश की परिस्थितियों के अनुसार ही स्त्री का कोई अस्तित्व नज़र नहीं आता। इस युग के साहित्यकार भी अपनी संकीर्ण दृष्टि स्त्री ाति के प्रति बनाये हुए थें। स्त्री का किसी भी र ाना में स्वतंत्र रूप दिखाई नहीं देता। उसे दबी, कु ाली, दमित तथा घर कि ारदीवारी में कैद को ही दर्शाया है। इस युग के र ानाकारों ने तिलस्मी, ासूसी, ऐय्यारी, ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सामाि ाक परिदृश्य को ही उपन्यासों में स्थान दिया। मध्यकालीन स्त्री की ाो परिस्थिति थी उसी को ही अपनी र ाना में स्थान दिया। इस युग की स्त्री साहित्य में नि ाीव और व्यक्ति विहीन थी ाो एक के बाद एक ऐय्यार के हाथ की कटपुतली मात्र थी। इस युग में उपन्यासों के नाम स्त्री पात्रों पर ही रखे ाते थे ैसे देवकीनंदन खत्री कृत 'नरेंद्र मोहिनी, कुसुमकुमारी, ंद्रकांता, ंद्रकांता संतति' किशोरीलाल गोस्वामी कृत तारा, ापला, रि ाया बेगम एवं तरुण तपस्विनी आदि का उल्लेख मिलता है िानमें पुरुष प्राधनता, ऐतिहासिक, सामाि ाक व्यवस्था का ही ित्रण मिलता है। स्त्री पात्रों को केवल मनोरं ान के लिए या वैश्या रूपी अधिकार देने के लिए ही ित्रण होता था। इन उपन्यासों में स्त्री को कहीं देवी कहा गया, कहीं कुलटा, कहीं उसका अपहरण दर्शाया गया, कहीं उसे सामाि ाक दायित्वों को निभाते हुए वैश्या बनाया गाय। कहीं उसे किसी-न-

किसी पुरुष पात्र के अधीन दर्शाया गया तो कहीं मनोरं ान तथा प्रसन्नता की कटपुतली के रूप में दर्शाया गया। इस युग में स्त्री साहित्यिक परिदृश्य में गुलाम मात्र नज़र आती है। उसका कोई अपना 'स्व' का रूप कहीं भी दृष्टिगो ार नहीं होता है।

प्रेम ंद पूर्व के उपन्यासों में स्त्री अशिक्षित अधिक थी। इस कारण से वह परंपरागत मूल्यों, कुप्रथाओं, आडंबरों तथा अंधविश्वासों में अधिक ध्यान देती थी। स्त्री अपने मानवीयता से कोसों दूर थी। यथार्थ से उसका कोई सरोकार नहीं था। वह केवल प्रेयसी, सुंदरी, मृदुभाषिनी, आनंदविलास की सामग्री मात्र थी। यही इस युग की स्त्री रूप का ि त्रण है।

भारतेंदु हरिश ंद्र के ' ंद्र प्रभा पूर्ण प्रकाश' उपन्यास में अनमेल विवाह ैसी सामाि ाक विसंगति के दुष्परिणामों को दर्शाया है। समस्या को उठाने में हरिश ंद्र सार्थक सिद्ध हुए पर समाधान प्रस्तुत करने में असमर्थ क्योंकि इस समय समा ा में स्त्री की इन्हीं समस्याओं पर सभी समा ासेवियों, राष्ट्रवादियों, समा ा सुधारकों का ध्यान केंद्रित था। इसी समय वैश्यावृत्ति से ब ाने के प्रयास किये गये। विधवाओं के पुनर्विवाह की यो ानाएँ बनाई गईं। दहे ा प्रथा का बोलबाला था पर कहीं भी समाधान प्रस्तुत नहीं किया। इसी लीक पर ालने वाले उपन्यासकार हैं-ल ाराम शर्मा कृत-'सुशीला विधवा', गोपालराम गहमरी कृत 'सांस पतोहु', कार्तिक प्रसाद खत्री कृत 'दलित कुसुम', किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'स्वर्गीय कुसुम' ि ान्होंने सामाि ाक विसंगति के दुष्परिणामों को उपन्यासों में व्याख्यायित किया पर अपनी रू . परंपरागत मूल्यों को नहीं छोड़ा। ि ासमें स्त्री अपने नैतिक मूल्यों का त्याग नहीं करती, घर, परिवार, पति की सेवा ही अपना भाग्य सम ाती है। स्त्री का परंपरागत सती-साध्वी रूप ही अधिक ि ात्रित हुआ है।

प्रेम ंद पूर्व हिंदी उपन्यासों में स्त्री केंद्र में थी पर किसी भी उपन्यासकार में स्त्री ाीवन की विडंबनाओं का ि त्रण अपनी र ानाओं में नहीं किया। कुछ गिनी ाुनी स्त्री लेखिकाएँ हैं ि ान्होंने भी स्त्री के आदर्शोन्मुख रूप का ही उद्घाटन किया

है। स्त्री के यथार्थपरक रूप की कहीं भी व्याख्या नहीं हुई है। स्त्री विमर्श पर ा र्ा करने वाला पहला उपन्यास ‘श्रद्धाराम फुलौरी’ कृत ‘भाग्यवती’ (1877) है ि ासमें स्त्री शिक्षा विषय पर ध्यान दिया गया है। इस उपन्यास की नायिका शिक्षित है। इसी कारण से पति उसे त्याग देता है। वह ाीवनयापन तथा अर्थोपा र्न के लिए अध्यापिका बनती है। आत्मनिर्भर बन कर ाीवन बिताती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षित होना एक शाप है ि ासिसे पारिवारिक ाीवन में, दांपत्य ाीवन में विघटन होता है। दाम्पत्य ाीवन की विषम परिस्थिति से नायिका अकेलापन भुगतती है। इस उपन्यास में भी पुरुष सत्ता को ही दर्शाया है ि ासमें पुरुष अहम और उसके व्यक्तिपरकता को ही दर्शाया गया है।

लाला श्रीनिवासदास कृत ‘परीक्षा गुरु’ (1882) में स्त्री का सनातनी रूप ही ि ात्रित किया गया है। इस काल में वैश्या वृत्ति के उन्मूलन के प्रयास किये गये हैं। साथ ही विधवाओं के पुनर्वास की भी कल्पनाएँ की ाने लगी। इस काल में सांस्कृतिक, राष्ट्रीय पुनरुत्थान का स्वर तेज़ी से ब ़ने लगा था ि ासिसे सामा ि ाक ोतना का अभ्युदय होने लगा। उपन्यास प्रधानतः सुधारवादी एवं उपदेशवादी प्रवृत्ति से परि ाालित थे और उनका मुख्य उद्देश्य मनोरं ान ही माना ाता था। इसी कारण स्त्री विमर्श का सनातनी रूप ही इन उपन्यासों में दृश्टिगो ार होता है।

2.2.2 प्रेम ांदकालीन हिंदी उपन्यास

हिंदी उपन्यासों का विकास साहित्य में प्रेम ांद युग से ही माना ाता है। इस युग के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श विषयक दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है। इस युग के उपन्यासकारों ने अपनी र ानाओं के माध्यम से स्त्री की दशा, स्थिति, सुधारने का प्रयत्न किया है। इस युग में सामा ि ाक विसंगतियों ने प्र ांड म ा ा रखा था, ि ासका निवारण उपन्यासों में दिखाई देता है। ौसे-बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, वेश्या समस्या, विधवा-विवाह, विधवा समस्या आदि उल्लेखनीय हैं। प्रेम ांद काल में कथा-साहित्य ने नया मोड़ लिया, ि ासमें भारतीय स्त्री की वास्तविकता को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धरातल पर साहित्य में अंकित किया गया।

उपन्यासकारों ने अपनी गंभीर दृष्टि से सामा िक व्यवस्था और ा रि रू ि यों को तोड़ने का प्रयास किया गया।

इस युग के प्रमुख उपन्यासकार-प्रेम ंद, प्रसाद, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, आ ार्य ातुरसेन शास्त्री, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, पांडेय बे ान शर्मा 'उग्र', वृंदावनलाल वर्मा प्रमुख हैं ि न्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री की नई ेतना को स्पष्ट दिखाया है। इस युग में स्त्री-शिक्षा का महत्व अधिक होने लगा था ि ससे वे रू ि यों, आर्थिक धरातल पर स्वावलंबी बनने लगी थी। उनमें परंपरागत तथा नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष ेतना ागृत होने लगी थी ि ससे स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास हुआ।

इस युग के प्रारंभिक उपन्यासों में राष्ट्रीय आंदोलन कृषक समस्या, मानवतावादी, भारतीय संस्कृति ैसे विषयों को केंद्र में रखा गया था। पर इस युग के समकालीन उपन्यासों में अनमेल विवाह, दहे ा प्रथा, वैश्यावृत्ति, विधवा समस्या, बाल-विवाह, पुनर्विवाह की समस्या को केंद्र में रखकर स्त्री की विविध समस्याओं का ि त्रण किया है। प्रेम ंद के स्त्री पात्र भारतीय ीवन के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित करने वाले पात्र हैं। ि नमें पात्रों का स्वभाव, वैयक्तिक विशिष्टता, परंपरा, व्यवहार, नैतिक मूल्य, रु ि-अभिरु ि आदि तत्वों का समावेश एक साथ ही उपन्यासों में दृष्टिगो र होता है।

प्रेम ंद और उनके युग के उपन्यासकारों ने स्त्री की दुर्दशा, समस्या को लेकर स्त्री संबंधी विषयों पर अनेकों उपन्यासों की र ना की। प्रेम ंद कृत-वरदान, सेवासदन, प्रतिज्ञा, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, ायशंकर प्रसाद कृत कंकाल, तितली, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत अपसरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती कौशिक कृत-भिखारिणी, माँ, 'उग्र' ी कृत शराबी, भगवती प्रसाद ातुर्वेदी कृत-पतित की साधना, भगवती ारण वर्मा कृत-तीन वर्ष, उषा देवी मित्रा कृत- ीवन की मुस्कान, धनीराम प्रेम कृत-वेश्या का हृदय, ते ारानी दीक्षित कृत-हृदय का काँटा, वृंदावनलाल वर्मा कृत-कुण्डली ाक्र आदि उल्लेखनीय

उपन्यास हैं ि ानमें स्त्री समस्या किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। परंतु इन समस्याओं का कोई समाधान इन उपन्यासों में दिखाई नहीं देता।

'सेवासदन' में विवाह से ाुड़ी समस्याओं ौसे दहे ा प्रथा, कुलीनता का प्रश्न, पत्नी का स्थान, अनमेल विवाह, वैश्या समस्या से संबंधित समस्याओं का ि ात्रण हुआ है। 'वरदान' में हिंदु समा ा की वैवाहिक समस्या का ि ात्रण किया गया है। अनमेल विवाह का दुष्परिणाम और विधवा ाीवन का अभिशाप सामाि ाक समस्याओं की दृष्टि से मुख्य प्रतिपाद्य विषय है।"[18] प्रतिज्ञा मध्यवर्गीय सामाि ाक परिस्थितियों के साथ विधवा समस्या को उठाया है। "प्रेम, कर्तव्य और विधवा ाीवन की समस्याओं पर पूरे उपन्यास का ां ाा खड़ा कर दिया है।"[19] निर्मला में दहे ा प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या, सामाि ाक विषमताओं का ि ात्रण यथार्थवादी दृष्टि से परिलक्षित होता है। घटनाएँ मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं ाो मनोविज्ञान की दृष्टि पर भी खरी उतरी है। 'कायाकल्प' में स्त्री समस्या और बहु विवाह प्रथा तथा सांप्रदायिक प्रश्नों को उठाया गया है। इसमें निष्काम प्रेम बौर कर्तव्य को मनोरमा के माध्यम से व्याख्यायित किया है। 'गबन' में स्त्रियों के आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों का ि ात्रण किया है। इसमें वैयक्तिक समस्याओं को उठाया गया है। ि ासमें प्रेम व्यक्ति के उत्थान-पतन और संस्कार-निर्माण के साथ वैश्या ाीवन के पुनरुत्थान की कथा है। प्रेम ांद के उपन्यासों में स्त्री वर्ग के प्रति उनका दृष्टिकोण है शोषित, प्रताड़ित एवं सामाि ाक बंधनों में ाकड़ी हुई स्त्रियों पर उन्होंने काफी लिखा है। साथ ही स्त्रियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि अपनाकर स्त्री पात्रों के माध्यम सेआदर्शोन्मुखी व्यक्तितत्व का अन्वेषण किया है। स्त्री ाीवन की विडंबनाओं का ाीता- ाागता ि ात्रण प्रेम ांद के उपन्यासों में दिखाई देता है। सेवा सदन की पात्र सुमन शोषण और पाखंड के विरुद्ध विद्रोकह करती है। पति से विद्रोह करने वैश्या वृत्ति अपनाती है। पारिवारिक विद्रोह ही नहीं बल्कि समा ा

---

[18] भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन, शंभुनाथ पाण्डेय-पृ.24

[19] भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन, शंभुनाथ पाण्डेय-पृ.24

से भी विद्रोह करती है। वह अन्याय के सामने ुकना नहीं ानती। उसके आत्मसम्मान को कोई ठुकराता है तो उसे वह आड़े हाथ लेती है। सामा िक बुराइयों और पति द्वारा उपेक्षा उसे वेश्या बनाता है। इसके निवारण के लिए "सुमन को वैश्यालय पहुँ ा कर उन्होंने ये संदेश दिया कि उनके उद्धार के लिए सेवासदन की स्थापना करनी ाहिए।"[20] इस पर 'अपर्णा ागे' अपने वि ार प्रकट करती हैं-"प्रेम ंद अपने पूर्ववर्ती लेखकों से भिन्न दृष्टिकोण से वैश्या समस्या पर वि ार करते हैं,वे वेश्याओं के प्रति घृणा नहीं बल्कि सहानुभूति प्रकट करते हैं, घृणा के पात्र वेश्या नहीं बल्कि समा है ो यह अनैतिक व्यवस्था ग्रहण करने के लिए बाध्य करता है।"[21]

बे ोन शर्मा 'उग्र' कृत 'शराबी' उपन्यासों में वेश्यावृत्ति का निराकरण विवाह द्वारा दर्शाया गया है। ावाहर नामक वेश्या का विवाह मानिक नामक पात्र से संपन्न करवाकर लेखक ने सुधारवादी दृष्टि अपनाई है। इनके उपन्यासों की विषयवस्तु व्यभि ार, वेश्यालय, मदिरालय, रोमांस तक ही सीमित है। कौशिक ी कृत 'भिखारणी', 'माँ' उपन्यासों में उन्होंने अंत ातीय विवाह की समस्या तथा मध्यमवर्गीय परिवार का ित्रण करते हुए वेश्यालयों के वातावरण को प्रस्तुत किया है। उषा देवी मित्रा कृत ' ीवन की मुस्कान' में वेश्यावृत्ति के कारणों को उठाया गया है। आर्थिक संपन्नता के अभाव के कारण परिवारके ीविकोपा िन के लिए वेश्यावृत्ति अपनाने की विवशता दिखाई है-"पूरबी के माध्यम से वेश्या समस्या उठाने पर है। उसके मायम से व्यक्ति और समा को इस विषय में सो ने के लिए विवश करने पर है।"[22]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यासों-अप्सरा, प्रभावती, निरुपमा। इनमें स्त्री समस्याओं को उठाया गया है और उनके निवारण का निरूपण प्रमुख

---

[20] महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टिकोण, डॉ.अमर योति-पृ.29

[21] प्रेम ंद के उपन्यासों में नारी, अपर्णा ागे पाटील, सं ारिका-2006-पृ.41

[22] उषा देवी मित्रा, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्रभा सक्सेना-पृ.2

रूप से किया गया है। इन सभी र ानाओं में वैश्या वृत्ति को आदर्श के धरातल पर ही प्रस्तुत किया गया है।

विधवा समस्या और दहे ा प्रथा पर भी इस युग के उपन्यासकारों ने अपनी दृष्टि रखकर विधवा स्त्रियों की दुर्दशा का ि ात्रण किया है। प्रेम ंद कृत 'वरदान, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा', प्रसाद कृत कंकाल, तितली, ते ारानी दीक्षित कृत-हृदय का कांटा, ंद्रशेखर कृत-विधवा के पत्र, ातुरसेन शास्त्री कृत-आत्मदाह, अमर अभिलाषा आदि उपन्यासों में विधवा की समस्याओं को उठाया गया। पर किसी ने भी समस्या का समाधान प्रस्तुत नहीं किया। प्रेम ंद ने 'प्रेमा' में पूर्णा व प्रेमा के वैधव्य ाीवन में पुनर्विवाह ौसे तथ्यों को प्रस्तुत कर समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। प्रतिज्ञा में भी समस्या विधवा विवाह की है। विधवा आश्रम का सु ााव प्रस्तुत किया साथ ही प्रेम ंद ने यह घोषणा की- "विधवाओं का उद्धार करने के लिए उनसे विवाह करना ाहिए और वनिताश्रम की स्थापना की ानी ाहिए।"

उपन्यासकारों ने विधवा की समस्याओं को पुनर्विवाह, विवाह से ोड़कर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पर मु ो नहीं लगता कि विधवा समस्या का समाधान विवाह है। वह समा ा में स्वस्थ और मानव बन कर ाीना ाहती है न कि फिर से विवाह के बंधन में बंध कर ाीवन भर उपेक्षाओं, यातनाओं, घृणाओं में अपना ाीवन ाीना ाहे। खुले वातावरण में खुली सांस लेकर स्वस्थ ाीवन यापन करना ही विधवा स्त्री की परिकल्पना तथा मनोकामना है।

दहे ा प्रथा सामा ाक कुरीतियों को आ ा भी ब ़ावा देती नज़र आती है। प्रेम ंद युग में भी इस कुरीति को अपने उपन्यासों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सेवासदन, निर्मला, प्रतिज्ञा, कुंडली ाक्र में दहे ा प्रथा के दुष्परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। इस प्रथा के कारण ही अनमेल विवाह ौसे विसंगति समा ा में पनपी है। दहे ा के अभाव के कारण पिता अपनी बेटी की शादी किसी बू ़े व्यक्ति, भद्र, कमज़ोर, विकलांग ये भी करने के लिए तत्पर हो ाते हैं। इन उपन्यासों में

इस समस्या का विकराल रूप दर्शाया गया है। सुमन का विवाह एक प्रो. व्यक्ति से होता है ि ासका परिणाम वह वैश्या बन ाती है यानी अनमेल विवाह का दुष्परिणाम वैश्या बनना है। इस युग के र ानाकार इन समस्याओं का समाधान करने में भी असमर्थ नज़र आते हैं। इन उपन्यासों में स्त्री पात्रों में कहीं-कहीं विद्रोह भी नज़र आता है। रंगभूमि की सोफिया, गबन की ालपा, कर्मभूमि की सुखदा और गोदान की मालती, ते ास्वी विद्रोहिणी स्त्रियाँ हैं ाो अंत में परंपरागत आदर्शों की शिकार होकर सामा ाक परिस्थितियों के अंतर्गत आदर्श की प्रतिमा मात्र बन ाती है-प्रेम ांद के स्त्री पात्र अपनी सामा ाक स्थिति के कारण बै ोन है पर वे विद्रोह की दिशा में बहुत दूर तक नहीं ाा सकते। अतः प्रेम ांद अपने स्त्री विषयक वि ान में अंतर्विरोध के शिकार हैं। "इस काल के हिंदी उपन्यासों में स्त्री द्वारा विद्रोह बहुत कर ाित्रित हुआ है। ये स्त्रियाँ अपने प्रति स ोत तो है परिस्थितियों की विषमता की शिकार भी है। पारंपरिक आदर्शों से युक्त, स्त्री की सेवा भावना, सहिष्णुता एवं त्यागनिष्ठा समर्पण भावना ही दिखाई देती है। यहाँ तक कि वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग भी लेती है पर रू. ग्रस्त बंधनों में फंसी दिखाई देती है। इस काल के लेखन में स्त्री को अंत में हृदय परिवर्तन और गलतियों के एहसास और पश ाताप से सुधार की संभावना दिखाई है। "आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का समर्थन करते हुए स्त्री पात्रों की र ाना की है ि ासमें आदर्श और यथार्थ का समन्वय करते हुए उसका दृष्टिकोण अस्वाभाविक आदर्शवाद यथार्थवाद और अति यथार्थवाद पर आकर केंद्रित हो ाता है।"[23]

इस युग के उपन्यासों में निम्न वर्ग की स्त्री को अधिक कर्मठ और ु ारू ाित्रित किया गया है। स्त्री ाीवन के आर्थिक पक्ष को भी उभारा गया है। पराधीनता के प्रति विद्रोह, स्त्री ाागरण, सम्मलित परिवारों का विघटन भी दृष्टिगत होता है। स्त्री के ा ाति एवं स्वतंत्र वि ाारों को प्रेम ांद ने 'गबन' में ालपा के माध्यम से दर्शाया है-वे एक संदर्भ में कहती हैं-"अगर मेरी ाबान में इतनी ताकत होती कि

---

[23] समस्यामूलक उपन्यसकार प्रेम ांद, महेंद्र भटनागर-पृ.51

सारे देश में उसकी आवाज़ पहुँ ाती तो मैं सब स्त्रियों से कहती बहनों किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो ाब तक अपना सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो ाब तक अपना घर अलग न बना लो, ैन की नींद मत सोना।"[24] पात्रा द्वारा समा ा की सभी स्त्रियों की ा ि ति होने का आह्वान प्रस्तुत किया गया है।

2.2.3 प्रेम ंदोत्तर हिंदी उपन्यास

प्रेम ंदोत्तर उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक, यथावस्तु, यथातथ्यवाद घोर नग्न-यथार्थवाद, अव ोतनवाद तथा प्रतीकवाद ैसे अनेक नये प्रयोगों का समावेश हुआ है। पाश ाात्य साहित्य ने इस काल के उपन्यासकारों को प्रभावित किया है। मार्क्सवाद और फ्रायडवाद से प्रभावित होकर इस युग के लेखकों ने अपने उपन्यासों में नया परिवर्तन दर्शाया है। मार्क्सवादी वि ाारधारा से प्रभावित यशपाल, नागा ुनि, भैरवप्रसाद गुप्त ने अपनी कृतियों में वर्ग संघर्ष, वर्ग ोतना, वर्ग वैषम्य ैसे विषय को प्रस्तुत किया। वहीं दूसरी ओर फ्रायडीय वि ाारधारा से प्रभावित ैनेंद्र, अज्ञेय, इला ंद्र ाोशी, भगवती ारण वर्मा आदि लेखकों ने काम, अ ोतन, स्वप्न ैसे विषयगत रूप अपनी कृतियों में दर्शाया। स्त्री पुरुष संबंधों को नया रूप, नया दृष्टिकोण, नैतिकता के नये मानदंडों को मनोवैज्ञानिक धरातल पर उभारा गया। इस काल में व्यक्तिवादी मानसिकता की विसंगति, संबंधों की विषमता सह ा ही इन उपन्यासों में परिलक्षित होती है।

इस काल में स्त्री की विभिन्न समस्याओं के साथ विभिन्न स्वरूपों को भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत किया गया है। स्त्री के बाह्य एवं आंतरिक मानदंडों को बदलते हुए स्त्री स्वयं के अस्तित्व के सामा ाक, पारिवारिक, व्यक्तिगत धरातल पर खो ाती दिखाई देती है। इस संदर्भ में डॉ.उमाशुक्ल के वि ाार दृष्टव्य हैं-"मैं कामायनी की श्रद्धा नहीं इडा हूँ, भावना नहीं प्रज्ञा हूँ, मात्र स्पंदमयी नहीं, तर्कमयी भी हूँ, मात्र समर्पिता नहीं अधिकारमयी भी।" इस से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री में

---

[24] महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर योति-पृ.30

अपने ‘स्व’ के प्रति नई दृष्टि तथा नयी मानसिकता का उदय हुआ है। इस युग में व्यक्ति सापेक्ष दिखाई देता है और समा ा गौण रूप में। इस तथ्य को इन लेखकों की र ाना में देख सकते हैं-अज्ञेय कृत ‘शेखर ःएक ीवनी’, ैनेंद्र कृत ‘परख’, सुनीता, त्यागपत्र, सुखदा, इला ंद्र ोशी कृत ‘पर्दे की रानी’ निर्वासित आदि उल्लेखनीय हैं ो व्यक्ति प्रधानता को उ ागर करते हैं। इस युग के उपन्यासों को मनोविश्लेषणवादी, प्रगतिवादी, आं ालिक, प्रयोगवाद या आधुनिक बोध की विषयवस्तु पर रखते हुए स्त्री-विमर्श की ा ार् करने का प्रयास करूँगी।

1. मनोविश्लेषणवाद

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में ैनेंद्र, इला ंद्र ोशी तथा अज्ञेय उल्लेखनीय हैं। ैनेंद्र कृत परख (1929), सुनीता (1935), त्यागपत्र (1937), कल्याणी (1939), सुखदा (1952), विवर्त (1953), व्यतीत (1953) में नई दृष्टि प्रदान की है। लेखक ने उपन्यासों में विभिन्न स्त्री पात्रों की मन की उल ानों, गुत्थियों एवं शंकाओं का निरूपण कथ के माध्यम से किया है। स्त्री पात्रों की परिकल्पना में लेखक अपेक्षाकृत अधिक ागरूक स ोत और प्रगतिशील दिखाई देते हैं। स्त्री पात्रों की संकल्पना उसकी मानसिक स्थिति के अनुकूल प्रस्तुत की है। सुनीता ऐसी स्त्री हे िासका पुरुष के बिना कोई अस्तित्व नहीं। वह घर परिवार और पति को ही प्रधानता देती है। त्यागपत्र की मृणाल ऐसी पात्र है िासका ीवन अतृप्त और करुणामयी है। मृणाल स्त्री विषयक परंपरागत रूि़यों की ं ीर को तोड़कर स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। स्त्री की अतृप्त ीवन की करुणा की कथा ‘कल्याणी’ की है ो आधुनिक स्त्री का प्रतिपादन करती है। इस काल की स्त्री मानसिक द्वंद्वों से उत्ते ित और ागृत हुई उसे वास्तविक रूप में प्रधानता देने का प्रयास किया गया है। भौतिक सुख की कामना तथा पारिवारिक विघटन को दर्शाया है। मनोवैज्ञानिक तथ्यों से सं ालित नयी सामा िक मान्यताओं की स्थापना का युग है।

मनोविश्लेषणवादी धरातल पर स्त्री ार रूपों में प्रस्तुत हुई है-1. विद्रोही, 2. विवाहित स्त्रियाँ, 3. पतिव्रता स्त्रियाँ, 4. आदर्श और त्यागशील।

विद्रोहिणी ो विद्रोह करती हुई आत्मपीड़न की शिकार है ैसे ैनेंद्र कृत 'सुखदा' की सुखदा ो अपने पति से कहती है-"सुनते हैं आप! मैं आपकी और इस घर की गुलाम नहीं हूँ। बाहर बहुत काम पड़ा है।"[25] विद्रोही होते हुए भी सामाि क परंपरा को तोड़ने में असमर्थ दिखाई देती है। सुखदा ैसे ही मृणाल, कल्याणी, इला ंद्र ोशी की वसुंधरा, शारदा परंपरागत रू ि यों, आडंबरों के प्रति स्त्री का विद्रोह रूप है उसको प्रस्तुत किया गया है। पर ये विद्रोहिणी समय के साथ आदर्श भावना के धरातल पर सिमट कर रह ाती है।

विवाहित स्त्रियाँ हैं ि नका पूर्व प्रेमियों के साथ विवाह के बाद भी आकर्षण दिखाई देता है। सुनीता, सुखदा, अनिता, नीतिमा पत्नीत्व और प्रेयसीत्व के अंतर्द्वंद्व में उल ी प्रतीत होती है। सुनीता के संदर्भ में ैनेंद्र स्वयं कहते हैं- "निस्संदेह ो 'घर और बाहर' में है वही सुनीता में भी है वही समस्या है किंतु घर और बाहर में परस्पर सम्मुखता ही देखता हूँ।"[26]

पतिव्रता स्त्रियाँ-ि नका अस्तित्व पति धर्म पर है ही टिका हुआ है। ो अपना धर्म, कर्म, पूर्णता, सौभाग्य पति में ही सम ाती है। सुख-दुःख सारी मानवीय संभावनाएँ पति से शुरू पति पर ही खत्म होती हैं। इस पर रा श्री कहती हैं-"धरमपत्नी कभी गिनती के लिए नहीं हुआ करती है, उसका धरम पति के साथ ही होता है।"[27]

आदर्श और त्यागशील प्रेमिकाओं के रूप में परख की कट्टो तथा र्विन की तिन्नी प्रस्तुत हुई है। दोनों प्रेम की आस्था में लीन है, अपना सारा ीवन प्रेमार्पण में ही बिता देती है। दोनों प्रेम में असफलता के काण आत्मोत्सर्ग कर देती है। इन

---

[25] सुखदा, ैनेंद्र कुमार-पृ.41
[26] सुखदा, ैनेंद्र कुमार-पृ.41
[27] साहित्य का श्रेय और प्रेय, ैनेंद्र-पृ.113-114

उपन्यासों में त्याग और समर्पण को एक तरफ दिखाया गया है ि ासमें स्त्री ही बली ा.ती दिखाई देती है। भोग्या रूप का ही निरूपण किया गया है। मनोवैज्ञानिक ंग से भी स्त्री का रूप दर्शाया गया है ाो प्रेम ांद और उससे पूर्व युग की स्त्री का था-सहयोगिनी, सह ारिणी, भोग्या, त्यागमयी आदि। ये पात्र लेखक की कोरी कल्पना की नि ाी मौलिक सृ ान है। स्त्री की वैयक्तिकता, अहमतता, सामाि ाक परंपराओं का विद्रोह केवल भावना की उप ा है उसका कोई निवारण नहीं। इस पर स्वयं ौनेंद्र कहते हैं-"मैं यह नहीं मानता हूँ कि परिस्थितियों को तोड़ने में ाो एक मक्ति सम ाी ााती है.. वह मुक्ति नहीं, उसको मैं मुक्ति नहीं मानता हूँ। ाहाँ व्रिदोह अधिक है मैं सम ाता हूँ कि वहाँ फड़फड़ाहट तो है लेकिन उसका फल मुक्ति नहीं है। इसलिए मेरा पात्र परिस्थितियों को धक्का देकर तोड़ने में उतना उद्धृत नहीं मालूम होता। परिस्थितियों में मिसमिसाता दिखाता है, लड़ता ागड़ता है।"[28]

इससे स्पष्ट होता है कि लेखक की दृष्टि में स्थिति ौसी है वैसी रहे उसे बदलने में कोई फायदा नहीं। लेखक परंपरागत ालते आ रहे पुरुष सत्ता के ही पक्षधर दिखाई देते हैं। इनके पात्र आत्मपीड़ा, मानव-मन की अंतर्निहित अदम्य कामनाओं, अतृप्तियों, कुंठाओं और घात-प्रतिघात के द्वंद्वात्मक परिसीमा में उल ा कर रह ााते हैं। स्त्री का कोई ‘स्व’ का अस्तित्व नहीं, वह मनोविज्ञान धरातल पर ना ाती कठपुतली दिखाई देती है।

इला ांद्र ाोशी भी इसी परंपरा के उपन्यासकार है। इनकी कृति-संयासी (1941) पर्दे की रानी (1941), प्रेत और छाया (1945) में मानव मन की कुंठाओं एवं ग्रंथियों का ही विश्लेषण हुआ है। इनका विषय भी प्रेम एवं रोमांस ही है। अज्ञेय कृत शेखर एक ाीवनी (1941) भी मनोविश्लेषण परक उपन्यास है।

---

[28] साहित्य का श्रेय और प्रेय, ौनेंद्र-पृ.79

2. प्रगति या मार्क्सवाद

प्रगतिवादी लेखक मार्क्सवादी वि ारधारा का आधार ग्रहण करके उपन्यासों का ित्रण करता है। यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद इसी कोटि के उपन्यासकार हैं। इन्होंने सामा िक ेतना को ागृत करने का प्रयास किया। िसमें स्त्री समस्याओं का सामा िक मान्यताओं में स्थापना की। स्त्री के प्रगतिशील रूप का ित्रण इस युग के उपन्यासों में आरंभ हुआ, सर्वप्रथम स्त्री प्रश्नों के प्रति ागरूकता को इन्हीं उपन्यासों में दर्शाया। भारतीय सामा िक ीवन में परिवर्तन, स्त्री-पुरुष संबंधों का नया दृष्टिकोण इन उपन्यासों में प्रस्तुत हुआ िससे स्त्री के विभिन्न रूप को भी नयी दृष्टि मिली है। विवाह के प्रति भी इस युग में अविश्वास, अनिष्ठा दिखाई देती है। 'यशपाल' कृत 'दादा कामरेड' के हरीश की दृष्टि में स्त्री की पूर्ण स्वतंत्रता का अर्थ है विवाह की प्रथा को दूर कर देना, अश्क कृत 'गिरती दीवारें' उपन्यास में विवाह के स्थान पर स्व छंद प्रेम को प्रोत्साहन दिया गया है। 'तट के बंधन' में प्रभाकर ने विवाह ैसी व्यवस्था को नकारा है।

यशपाल की स्त्री-विषयक दृष्टि 'दादा कामरेड' (1943) तथा 'देशद्रोही' (1993) के माध्यम से होती हुई 'दिव्या' (1945) में विस्तार ग्रहण करती है। यशपाल ने स्त्री की पुरानी व्यवसथा को नये ंग से 'दिव्या' में व्यक्त किया है- 'दिव्या' ब्राह्मण कुल की कन्या है ो दासपुत्र से प्रेम करती हे ओर कुंवारी माँ बनती है िससे समा । अपने नियमों का उल्लंघन मान कर उसे समा । से बहिष्कृत करता है। यहाँ से उसे कई अत्या ारों, उत्पीड़न, उपेक्षाओं का शिकार बनना पड़ता है। इन सभी बुराइयों के ालते वह आत्महत्या करने की ठान लेती है। पर संभल ाती है और अपनी असफलता के कारण अंत में वैश्या बन ाती है िसमें वह स्वतंत्रता का अनुभव करती है। इसमें भी स्त्री रूप को घिसी-पिटी मान्यताओं के बी । रख कर प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों में स्त्री या तो आत्महत्या करती है या फिर वैश्या बन ाती है। इसके सिवाय लेखकों ने स्त्री

पात्रों को दूसरा मार्ग नहीं सु ााया। ि ासमें वह अपने 'स्व' को पह ाानती हुई अपने ाीवन को सार्थकता, व्यक्तिपरक, आत्मनिर्भर होकर व्यतीत करे। इस कोटि के अन्य लेखक हैं-राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, अमृत राय के अपनी में स्त्री रूप को स्वतंत्र प्रेम की भवभूमि पर संसार की सृष्टि करना ाहा है विवाह संबंधी नैतिकता के प्रति भी नयी दृष्टि का प्रयास किया है। परंतु ाले अपनी पुरानी लीक पर ही।

3. आधुनिक बोध

आधुनिक बोध या प्रयोगवादी उपन्यासों में नवीनतम धारा कहा ाा सकता है। ि ासमें भारतीय स्त्री के दो महत्वपूर्ण पक्ष उद्‌घाटित हुए हैं-पहला ि ासमें स्त्री ाीवन की आर्थिक सामाि ाक और पारिवारिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। दूसरा पुरुष के साथ संबंध, दाम्पत्य ाीवन की विषमताओं का विश्लेषण हुआ है। औद्योगीकरण, बदलते हुए परिवेश, भ्रष्ट व्यवस्था, महानगरीय ाीवन के परिणाम से आ ा स्त्री ाीवन में तनाव, विश्रृंखलता, अकेलापन, निराशा, कुंठा ने अपना स्थाई स्थान बना लिया है। संत्रास, असुरक्षा की भावना स्त्री ाीवन में घर कर गर्ठ है। यौन विसंगतियों, विद्रोह, मूल्यों का ह्रास आ ा के उपन्यासों के विषयवस्तु बन गये हैं। इन उपन्यासों में 'सेक्स' एवं रोमानियत को अधिक स्थान दिया गया है। बदलते परिवेश के कारण प्रा ाीन मानदंडों की अवहेलना हो रही है। आधुनिक बोध में पिछड़ी स्त्री वै ाारिक धरातल पर ोतन हो गयी है। शिक्षित बन गई है, आत्मनिर्भर होकर अर्था ान करने लगी है। इन उपन्यासों के विषयों में विविधता को उपन्यासकारों ने दर्शाया है ि ानमें शैलीगत विभिन्नता भाषायिक विभिन्नता, संवादिक विभिन्नता दृष्टिगत होती है।

मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' (1971) में मानसिक यातना, शारीरिक यंत्रणा, ाीवन की विरसता के कारण दाम्पत्य संबंधों में वि छेद के कारण बंटी पर पड़नेवाले दुष्परिणाम और ब ो पर पड़नेवाले दुष्प्रभाव को दर्शाया गया। तलाक के बाद माता-पिता दूसरा विवाह कर लेते हैं। इस पर बंटी की प्रतिक्रिया उसकी

मानसिक स्थिति सो ानीय हो ाती है। 'महाभो ा' (1971) में भी स्त्री ीवन की व्याख्या की गई है। रा ाकमल ौधरी के 'मछली मरी हुई' में समलैंगिक यौन सुख में लिप्त स्त्रियों का ित्रण हुआ है। उषा प्रियंवदा के 'रुकेगी नहीं राधिका' एवं 'प ापन खंबे लाल दीवारें' में कार्यशील अविवाहित स्त्रियों की बाहरी व आंतरिक परिस्थितियों एवं उनके ीवन संघर्षों का ित्रण हुआ है। ये स्त्रियाँ पारिवारिक िम्मेदारी निभाते हुए नौकरी पेशा है और अपने परिवार के दायित्वों के प्रति स ाग है िससे ीवन भर अविवाहित रहना पड़ता है। इनके आंतरिक मन में कई उतार- ा.ाव आते हैं। सबको दबा कर अपनी िम्मेदारियों के प्रति साहसिक भूमिका निभाती है। 'िंदगी नामा' में भी स्त्री ीवन की समस्याओं को दर्शाया गया है। र ानी पनिक्कर, मीरा माहादेवन और शशि प्रभा शास्त्री आदि उल्लेखनीय लेखिकाएँ हैं िन्होंने स्त्री संदर्भों को अपनी कृतियों में स ागता और सुदृ.ता से िित्रित किया है। स्त्री ीवन की आधुनिक समस्याओं को दर्शा कर स्त्री ीवन की व्यथा-कथा, केंद्रित किया है। इसी प्रकार मृदुला गर्ग कृत 'ित्तकोबरा' में उन्मुख यौन ित्रण है। श्रीकांत वर्मा कृत 'दूसरी बार' में स्त्री के सामने पुरुष की हीन भावना को दर्शाया है। कृष्णा सोबती की 'सूर ामुखी अंधेरे के' में रतिका नामक लड़की की काम कुंठाओं की समस्याओं को दर्शाया है िसमें ब ापन में ही वह इस विसंगति का शिकार बन ाती है। और इसी कुंठा को मन में पाले रखती है। 'मित्रों मर ानी', 'यारों के यार' भी इसी श्रेणी के उपन्यास हैं।

अमृतलाल नागर की आधुनिक बोध की समस्याओं को उद्घाटित इनके 'नान्यो बहुत गोपाल' में कहते हैं इनकी यह कृति आधुनिकता की भाव-भूमि की उप ा है िसमें आ ा की स्त्रियों की व्यवस्था, सो ा-वि ार, मानसिकता को दर्शाया है। अंतर ातीय विवाह के दुष्परिणाम को, काम वासना को दर्शाया गया है। इस कृति में दैहिक शोषण का ित्रण किया गया है। नागा ुन कृत 'इमरतिया' भी इसी प्रकार का उपन्यास है िसमें धर्म के नाम पर स्त्री शोषण, यौन शोषण से

उत्पीड़ित स्त्री का रूप दर्शाया गया है। रा ेंद्र यादव भी स्त्री-विमर्श के सशक्त पक्षधर माने ाते हैं। इनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री केंद्रित रहती है। इनकी र नाओं में स्त्री ीवन की नि ी समस्याओं, पारिवारिक विघटन, सामा िक विसंगति, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ू ाती स्त्री ीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया है। 'सारा आकाश' में परिवार की एक स्त्री ही दूसरी स्त्री के व्यक्तित्व में कैसे बाधा बनती है दर्शाया गया है। मध्यमवर्गीय स्त्री की आत्मपीड़ाओं, ीवन भर ससुराल के सदस्यों द्वारा प्रताड़ना, उपेक्षा और तिरस्कार का ीता- ागता ित्रण प्रस्तुत किया है। "रा ेंद्र यादव की कहानियों आज़ादी के बाद तेज़ी से विघटित हो रहे मानव मूल्यों, स्त्री-पुरुष संबंधों, बदलती हुई सामा िक और नैतिक परिस्थितियों तथा पैदा हो रही एक नई दृष्टि को रेखांकित करती है। उन्होंने व्यक्गित माध्यम से समा ा को सम ाने को लगातार कोशिश की है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में रूपायित व्यक्ति ेतना, सामा िक ेतना से विरत या निरपेक्ष नहीं है, क्योंकि एक अनुभूति सामा िक यथार्थ ही उनका यथार्थ है।"[29] यही तथ्य और यथार्थ उनके उपन्यासों में भी परिलक्षित होता है। उन्होंने आधुनिक दृष्टिकोण से स्त्री-पात्रों को उनकी यथार्थ परिस्थितियों में दिखाने का प्रयास किया है। स्त्री का विश्लेषण निकटता एवं सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। इसी संदर्भ में पंक ा विष्ट के वि ार हैं कि- "इसी कारण रा ेंद्र यादव के पात्र अधिकांशतः मध्यवर्ग से संबंधित हैं। संभवतः इसीलिए उनमें एक विशिष्ट किस्म की बौद्धिक ऊ ाा का भास है। यह वह वर्ग है, ो अपने कार्य-कलाप और मानसिकता से बदलते यथार्थ का गहरा अहसास ही नहीं कराता, बल्कि इस बात का भी संकेत देता है कि यह समा ा आखिर ाने-वाला किस दिश में है।"[30]

[29] रा ेंद्र यादव की प्रतिनिधि कहानियाँ, मोहन गुप्त-भूमिका

[30] रा ेंद्र यादव की कहानियाँ वहाँ तक पहुँ ने की दौड़, पंक ा विष्ट-भूमिका

आधुनिक बोध के हिंदी उपन्यासों के परिदृश्य में स्त्री शोषण स्त्री ीवन के प्रश्न, उत्पीड़न, समस्याओं को अपना केंद्रीय विषय बनाने वाले उपन्यासकार निम्नलिखित हैं-फणिश्वरनाथ रेणु (मैला आं ाल, परती-परिकथा), शैलेश मटियानी (ौथी मट्टी), रामदरश मिश्र (पत्नी के प्रा ीर), नागा ुन (रतिनाथ की ा ी, बल ानमा), कमलेश्वर (डाक बंग्ला), रा ेंद्र यादव (अनदेखे अन ाने पुल, सारा आकाश, कुल्टा), मन्नू भंडारी (आपका बंटी) ममता कालिया (नरक-दर-नरक), उषा प्रियंवदा (प ापन खंभे लाल दीवारें), शिवानी (भैरवती), मैत्रेयी पुष्पा (इदन्नमम), मं ुल भगत (अनारी), रा ी सेठ (तत्सम), शशि प्रभा शास्त्री (नावें) आदि उल्लेखनीय हैं। ि ानमें उपन्यासकारों ने स्त्री-विमर्श दृष्टि से उपन्यासों की र ाना की है।

आरंभिक उपन्यास साहित्य में ीवन के यथार्थ बोध से मुक्त, अलौकिक व ि ाज्ञासावर्धक कार्य-व्यापारों को प्रबल प्रवृत्ति मिली है। प्रेम ांद पूर्व उपन्यासों में सामा ाक उपन्यासों के अंतर्गत उपन्यासकारों ने पतिव्रता धर्म, पारिवारिक धर्म, विधवा-धर्म, सदा ार, नियमों के प्रति निष्ठा को महत्व दिया है। ि ासमें प्रा ीन मान्यताओं के आधार पर ीवन को आदर्श की दृष्टि पर रख कर परिवर्तन करनेवाली स्त्री-शिक्षा, सामा ाक विसंगतियों को उपस्थित किया गया है। सांस्कृतिक पुनरुत्थान का स्वर मुखरित हुआ है सामा ाक ेतना का अभ्युदय कहीं भी नहीं दर्शाया गया। स्त्री का प्रा ीन रूप ही इन उपन्यासकारों की र ानाओं में दिखाई देता है। स्त्री के व्यक्ति रूप की शून्य तथा उपदेशात्मकता को अधिक प्रदर्शित किया गया है।

प्रेम ांदकालीन उपन्यासों में अर्थाभाव ान्य समस्याओं को प्रस्तुत किया है। ैसे-अनमेल विवाह, दहे ा प्रथा, विधवा समस्या, निम्नस्तरीय परिवार में विवाह, पराधीनता, पारिवारिक विघटन, वैमनस्य, स्त्री ीवन का संघर्ष तथा आत्मनिर्भरता का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इस काल की स्त्रियाँ कर्मठ और संघर्षशील हैं। अन्याय-अत्या ार का विरोध करती है। परंतु अंत में

आदर्शोन्मुख यथार्थपरक की दृष्टि से साहस नहीं दिखा पाती। सामा िक बंधनों और रू ि यों को तोड़ने में असमर्थ ही दिखाई देती है। स्त्री की अनेक समस्याओं को केंद्र में रखा है परंतु स्त्री की वास्तविक छवि पर कोई केंद्र नहीं है।

प्रेम ंदोत्तर काल अनेक नये प्रयोगों और परिवर्तनों का युग है ि ासमें कई वि ारधाराओं सिद्धांति ने ान्म लिया है। मार्क्सवादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, आं ालिक, आधुनिक बोध आदि प्रमुख हैं ि ानमें स्त्री-विमर्श को इन सिद्धांतों के माध्यम से व्याख्यायित, विश्लेषित किया गया है। इनमें पाश ात्य साहित्य ि ंतन का प्रभाव परिलक्षित होता है। स्त्री की सामा िक व व्यक्तिगत समस्याओं को मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्वपरक ंग से प्रस्तुत किया गया है।

4. आं ालिकता

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में ‘आं ालिक’ उपन्यास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। वे उपन्यास ि ानमें किसी विशेष अं ाल का ि ात्रण कथानक के द्वारा किया ाता है। इन उपन्यासों में पिछड़े हुए वर्ग का उद्घाटन हुआ है ाो अपनी समग्रता में संकीर्ण वि ारों एवं मान्यताओं में घिरा हुआ आ ा प्रगति की खो ा में भटक रहा है। अविकसित ाातियों के ाीवन में शोषण, रू ि यों के प्रति विद्रोह, नैतिक मूल्यों के पतन तथा स्व छंद ाीवन प्रवृत्ति ान ाागृति युग-युग से घर की ाारदीवारों में पिसती हुई स्त्री की नवीन ोतना, धार्मिक पाखंडों एवं अंधविश्वासों में मानव की अनास्था का स्वर ाीवन का आशा ानक प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टिकोण लेकर मुखरित हुआ है, ाो आं ालिक ाीवन में ान- ाागरण का संदेश देता है।

फणीश्वरनाथ रेणु कृत ‘मैला आं ाल’ (1954) तथा ‘परती परिकथा’ (1957) उपन्यासों में स्त्री पात्र आं ालिक परिदृश्य में उभरी है। ये उन्हें अपना ारित्र और व्यथा, संघर्ष को उ ाागर करने के लिए प्रेम ंद की तरह आदर्शोन्मुख यथार्थवादी भावभूमि तैयार नहीं करते बल्कि मुख्य स्त्री पात्र अपनी उपस्थिति को अपने महत्व को स्वयं ही पूरी तरह अभिव्यक्त कर देती है। रेणु ने अशिक्षा,

कुरीति, स्त्री के शोषण, नैतिक मूल्यों, शहरी और ग्रामीण अं ाल में स्त्रियों के भेद को उभारा है। स्त्री पात्रों को सामा िक, नैतिक मूल्यों की परछाई में न रखते हुई उनमें रागात्मक, ागृति का समावेश, उनकी भौतिक आवश्यकताओं तथा भावनात्मक द्वंद्वों को दर्शाया है। भाव पक्ष के साथ-साथ उनकी ारित्रिक विशेषताओं, गुणों, शारीरिक दुर्बलताओं को उभारने का प्रयास किया गया है। इस वर्ग के उपन्यासकारों में नागा ुन (रतिनाथ की ा ी, बल ानमा), उदयशंकर भट्ट (सागर लहरें और मनुष्य) आदि उल्लेखनीय हैं।

इन उपन्यासों में पवित्रता का नवीन दृष्टिकोण, पतित स्त्रियों के प्रति उदारवादी, स्त्री-पुरुष समानता, आधुनिक स्त्री के वि ार, धन-वैभव की लालसा, स्त्री-पुरुष के संबंधों की स्वाभाविकता, प्रेम विवाह, नैतिक मूल्यों का विघटन, स्त्री का पुनर्विवाह, विधवा विवाह का नया दृष्टिकोण, स्त्री की स्वतंत्र ेतना का विकास, अतृप्ति, प्रेम को नयी दृष्टिकोणों, संदर्भों से अं ाल विशेष पर स्त्री को दर्शाया गया है।

2.3 हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के आधार बिंदु : स्त्री-लेखन के संदर्भ में

स्त्री लेखन के संदर्भ में स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यासों में, स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में तथा सातवें, आठवें, नवें दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री लेखिकाओं ने विवे य उपन्यासों में आर्थिक समस्याओं, पारिवारिक िम्मेदारियों तथा दाम्पत्य ीवन की विषमताओं, विसंगतियों, वैश्यावृत्तियों को दर्शाया गया है। स्वतंत्रता पूर्व उपन्यासों में अर्था न करनेवाली स्त्री को दर्शाया है िसमें उसकी व्यक्तिगत, सामा िक, पारिवारिक समस्याओं को सह ा रूप में दर्शाया गया है। स्वतंत्रता के बाद पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य विषमता तथा स्त्री के आंतरिक उध्वलेक को दर्शाया है।

2.3.1 स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास

19 वीं सदी के अंत से ही स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री-विमर्श पर अपनी लेखनी ालाई है।

प्रारंभिक काल में हिंदी कथा साहित्य के लेखन क्षेत्र में लेखिकाओं का पदार्पण बंग महिला से माना ाता है, पर उपन्यास क्षेत्र में लेखन की दृष्टि से "रुक्मणी देवी का 'मेम साहब' (1819), साध्वी पतिप्राण, अखला का सुहासिनी (1890), सरस्वती गुप्ता का 'रा ाकुमार' (1898), प्रियंवदा देवी का लक्ष्मी (1905), हेमंत कुमारी ौहान का आदर्शमाता (1911), ब्रह्म कुमारी भगवान देवी दुबे का सौंदर्य कुमारी (1925) उल्लेखनीय है।"[31] इन लेखिकाओं ने भारतीय समा ा की कुरीतियों के निराकरण एवं स्त्री के त्याग, बलिदान, पति-भक्ति को महत्व दिया है साथ ही स्त्री करुणा पर प्रकाश डाला है। इन उपन्यासों में लेखिकाओं की दृष्टि समा ा केंद्रित थी ि ासमें उन्होंने स्त्री रूप को उपदेशात्मक ही दर्शाया है। ि ासमें स्त्री का ारित्र-ि ात्रण शून्य के बराबर है। इस संदर्भ में डॉ.सुलो ाना के वि ाार दृष्टव्य हैं-"ये नारी पात्र अपरिपक्व और अविकसित है। पाठकों को अनायास ही आकर्षित करने वाली किसी प्रकार की ाारित्रिक विशेषताएँ नारी में नहीं हैं और न ऐसी पीड़ा, वेदना या करुणा ही इन ारित्रों में हे, ाो प . कर आँसू बहाएँ आगे वे कहती है-इस समय की महिला उपन्यासकारों का ध्यान उपदेश देने और समा ा में विधवा की स्थिति कैसी है? और उसकी पीड़ा का ि ात्रण करने की ओर था। इसलिए इस समय के उपन्यासों का साहित्य के कोई स्थायी मूल्य नहीं हैं।"[32] "ये लेखिकाएँ उपदेशात्मक उपन्यासों द्वारा नारी ाीवन में सुधार लाना ाहती थीं।"[33] समा ा केंद्रित तथा उपदेशात्मक स्त्री रूप को उभारने का प्रयास स्त्री के वैयक्तिक रूप में असमर्थता परिलक्षित होती है।

---

[31] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.38
[32] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.38
[33] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ.एम.वेंकटेश्वर-पृ.29

2.3.2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

हिंदी साहित्य में उपन्यास स्त्री लेखन स्वतंत्रता पूर्व से ही प्रारंभ हो गया था। स्वतंत्रता पूर्व उषा देवी मित्रा का नाम सर्वप्रथम उपन्यास लेखन में उल्लेखनीय है। "हिंदी की सर्वप्रथम उपन्यास लेखिका बनने का गौरव निर्विवाद रूप से उषा देवी मित्रा को ही प्राप्त है। कई विद्वानों ने एक मत होकर यह स्वीकार किया है।"[34] "स्वतंत्रता पूर्व काल की अन्य लेखिकाओं में कुटंब प्यारी देवी (हृदय का ताप), योतिर्मयी ठाकुर (मधुबन), ते ारानी दीक्षित (हृदय का काँटा 1928) और श्रीमती पूर्ण शिशिदेवी (रात के बादल) महत्वपूर्ण हैं।"[35] कं ानलता सब्बरवाल, र ानी पनिकर के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इनकी र ानओां में स्त्री पात्रों का कोई महत्व दिखाई नहीं देता ि ससे उनके उपन्यासों का साहित्य क्षेत्र में कोई स्थायी मूल्य दृष्टिगत नहीं होता है। उषा देवी मित्रा का आगमन हिंदी उपन्यासों के क्षेत्र में सन् 1936 में माना ाता है। इनकी र ानाओं में 'व ान के नील', 'पिया', ' ीवन की मुस्कान', 'नष्ट नीड', 'साहनी' में प्रेम के त्यागमय स्वरूप का ि त्रण अधिक किया है। इनकी र ानाएँ सामा िक समस्याओं को स्पर्श करने वाली कृतियाँ हैं ि नमें इन्होंने युग की बदलती हुई स्त्री का ि त्रण किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से कामका ी स्त्रियों का भी ि त्रण किया है। ' ीवन की मुस्कान' यह उपन्यास सामा िक समस्याओं को उद्घाटित करनेवाला उपन्यास है ि समें स्त्री ीविकोपा ान और अर्था ान की समस्याओं को उभारा गया है। मुख्य पात्र सविता और पूरबी है। सविता और ो पति द्वारा उपेक्षिता दर्शायी गई है वह प ़ी-लिखी होने के कारण दुःखी नहीं होती अपने-आपको व्यस्त रखती हुई भूकंप पीड़ितों की सेवा करती है। दूसरी पात्र पूरबी है शिक्षा न होने के कारण वह वेश्यावृत्ति अपनाती है। अपने परिवार के दायित्वों को निभाने के लिए अपना सर्वस्व खो बैठती है। आर्थिक अभाव के कारण वेश्या बनना,

---

[34] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ.एम.वेंकटेश्वर-पृ.29

[35] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ.एम.वेंकटेश्वर-पृ.30

वेश्या समस्या को लेखिका ने उभारा है। इस समस्या के कारण सामा िक एवं आर्थिक कारणों का विश्लेषण किया गया है।

इनका ‘पथ ारी’ उपन्यास में आर्थिक संपन्नता का अभाव तथा बेकारी की समस्या का ित्रण किया है। इसकी पात्र गुलाबी ो शादी शुदा है पति का उत्तरदायित्वहीन होने से आर्थिक म ाबूरी से वेश्या बनती है। अपने पति और तीन ब ों का पेट भरने के लिए ये काम करती है।

"उषा देवी मित्रा अपने युग की प्रतिनिधि उपन्यासकार है। उनके आलो य उपन्यास की नारियाँ अशिक्षित हैं। वे आर्थिक संकटों से, कुछ काम न मिलने की विवशता से अपने परिवार को ालाने के लिए वेश्या बनती हैं। पूरबी और गुलाबी इसके उदाहरण हैं, पूरबी अविवाहित है, अपने भाई-बहनों के भरण-पोषण के लिए पतन के मार्ग पर आकर कमाती है। गुलाबी की स्थिति अलग है। वह विवाहित है। अपने पति की उत्तरदायित्वहीनता के कारण वेश्यावृत्ति अपनाकर घर ालाती है।"[36] उषा ी ने प्रेम ंद की तरह ही सामा िक समस्याओं को उठाया है और स्त्री को वेश्या समस्याओं से ू ाते दर्शाया है। इनकी पात्र भी अशिक्षित के कारण वैश्या मार्ग ही ुनती हैं। शायद ये समय के सोर उपन्यासकार एक ही सो ा को लेकर इस युग में आये हैं।

कं ानलता सब्बरवाल कृत ‘मूक प्रश्न’ (1944), संकल्प (1947) इन उपन्यासों में असफलत दाम्पत्य ीवन और अविवाहित स्त्री को उ ागर किया गया है। दहे ा प्रथा को उ ागर करते हुए कं ानलता ने संकल्प में समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसकी नायिका प ़ी-लिखी है पर दहे ा के कारण अनमेल विवाह की विषमता को उ ागर किया है। मूकप्रश्न में अशिक्षित, आर्थिक समस्याओं के कारण किस प्रकार नायिका को म ाबूरन वैश्या बनना पड़ता है उसे दर्शाया गया है। इनके उपन्यासों में भी आर्थिक समस्या सभी समस्याओं को उत्पन्न करने का कार्य है उसे सटीक ंग से लेखिका ने दर्शाया है।

---

[36] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरि देशपांडे-पृ.53

स्वतंत्रता पूर्व उपन्यासों में आर्थिक समस्याओं, सामा िक बुराइयों को लेखिकाओं ने अपनी र ानाओं में दर्शाया है। इनकी स्त्री पात्र किस प्रकार वेश्या बनती है उन्हीं तथ्यों को उठाकर निवारण करने का प्रयत्न किया गया है।

2.3.3 साठोत्तर हिंदी उपन्यास

इसी युग में स्वातंत्र्योत्तर काल में कं ानलता सब्बरवाल कृत अन ाहा (1950) तथा अन ाबी राहें (1960) र ानी पनिकर कृत पानी की दीवार (1954) मोम के मोती (1955), ाडे की धूप (1958), ठोकर, प्यारे बादल, शिवानी कृत मायापुरी, ौदह फेरे (1960), इंदिरा नूपुर, सपने गान और हठ, वह कौन थी, कृष्णा सोबती का डार से बिछुड़ी (1958) आदि उल्लेखनीय लेखिकाएँ हैं ि न्होंने समस्या और निवारण के समावेश से स्त्री-विमर्श को दर्शाया है। समा ा की विषमाओं को आर्थिक संपन्नता के अभाव का कारण माना है। इनकी स्त्री शिक्षित, अशिक्षित, कामका ी है। ि न्होंने अपने घर परिवार के दायित्वों को निभाते हुए अपने ीवन के संघर्षों को स्वाभिमान, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता के साथ निभाए हैं।

'अन ाहा' में दहे ा के दुष्परिणाम के कारण मन्नू अविवाहित रहती है। आर्थिक परिस्थितियों के कारण पारिवारिक पोषण के लिए नौकरी करती है। दहे ा का विरोध करने पर अविवाहित रह ाती है। अन ानी राहें मध्यमवर्गीय स्त्री की संघर्षमय परिस्थिति को उठाया गया है।

इस युग की मूर्धन्य उपन्यासकार के रूप में 'र ानी पनिकर' का नाम उल्लेखनीय है ि न्होंने अपनी र ानाओं में शिक्षित पात्रों के माध्यम से पारिवारिक ीवन की उथल-पुथल, उसके व्यक्तित्व की तथा उसके मन के उद्धलेखों की उथल-पुथल को दर्शाया है। 'मोम के गोती' में स्त्री के पारिवारिक ि म्मेदारी संभालने का दायित्व, नौकरीपेशा स्त्री के आंतरिक एवं बाहरी संघर्षों का उद्घाटन दिखाया गया है। सब के साथ होते हुए अकेलेपन का एहसास उसके ीवन में त्रासदी ला देता है। "इसकी यात्रा माया एक कर्मशील नारी है, ि सका ीवन बाहर

से 'मोम के मोती' की तरह ामकता है, किंतु यथार्थ में उसका ीवन शोभा रहित है संघर्ष से भरा हुआ है। वह बहन की शादी करती है और भाई सिखाकर नौकरी के लिए भे ाती है।"[37] इस कृति में स्त्री की इ छाओं, आकांक्षाओं को दबाते हुए स्त्री किस प्रकार अपनी ि म्मेदारियों को निभाती है यह दर्शाया गया है।

' ाड़े की धूप' में दाम्पत्य ीवन की विषमताओं और स्त्री ीवन की विडंबना को दर्शाया है। भारती ो विवाहित स्त्री है तनावग्रस्त दाम्पत्य ीवन की असफलता के कारण अपने सहकर्मी से प्रेम करती है पति द्वारा उपेक्षित होने पर भी त्यागने पर भी अपनी सांस को संभालती है। प्रेमी और पति के सामं ास्य के बी ा अंत में पति को ही ुनती है। आंतरिक संघर्षों के ालते हुए अपनी संस्कृति और पवित्रता की सीमा लांघती नहीं। भारतीय आदर्श स्त्री का निरूपण करती है "इसमें लेखिका ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि भारती आत्मनिर्भर स्त्री होते हुए भी अपनी संस्कृति और पवित्रता की सीमाओं की दीवार नहीं तोड़ सकती।"[38] इनके उपन्यासों में स्त्री के नये रूप की व्याख्या हुई है ो संघर्षशील है, आत्मनिर्भर है पर अपने नैतिक मूल्यों के प्रति स ाग है।

कृष्णा सोबती कृत 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में पं ाब क्षेत्र की खास मिट्टी से बनी नायिका है ो अपनी त्व ा और रंगों में बहते खून के प्रति स ा और ईमानदार है कृष्णा ी की नायिका अपनी आत्मा और देह से परि ित है वे अपनी आंतरिक आंकाक्षाओं को दबाती नहीं बल्कि सामाि क विषमताओं का ोखिम एवं भर्त्सनाओं, उपेक्षाओं को ेलकर भी अपनी इ छाओं, आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करने में समर्थ है।

शिवानी ने अपनी नायिकाओं के माध्यम से संवेदनशील स्त्री को दर्शाया है ि ासमें वास्तविकता के धरातल पर अनुभवों का ि त्रण हुआ है ि ासमें स्त्री समा ा से विद्रोह करती दिखाई देती है। इनकी स्त्री सुशिक्षित ाागृत भी दिखाई देती है।

---

[37] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.49
[38] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.51

इनके ा ि त उपन्यासों में 'मायापूरी', 'कष्णकली', 'विषकन्या', 'श्मशन ाम्पा', ' ौदह फेरे' उल्लेखनीय है। मायापूरी में शोभा के माध्यम से कार्यशील स्त्री के ीवन संघर्ष का ित्रण मिलता है तथा ' ौदह फेरे' में अहल्या के माध्यम से पारिवारिक ीवन के साथ कार्यक्षेत्र का भी ित्रण मिलता है। "शोभा आत्मनिर्भर बनने के लिए नौकरी करती है तो अहल्या ीवन से ऊबकर।"[39]

साठोत्तर पूर्व की स्त्री लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में आत्मा सार्थकता की तलाश के लिए कोई भाव-भूमि तलाश नहीं की क्योंकि इस युग में आर्थिक, सामा िक, रा ानैतिक, परिस्थितियों में अनेक विषमताएँ, आडंबर तथा विसंगतियों का बोल-बाला था। समा ा की आर्थिक विषमता के कारण स्त्री अनैतिक रूप ग्रहण करती नज़र आती है। शिक्षित है तो नौकरी करती है अशिक्षित हो तो वेश्या बन ाती है इसके सिवाय विवे य उपन्यासों में स्त्री का 'स्व' के प्रति कोई दृष्टिकोण नज़र नहीं आता है। स्वतंत्रता पूर्व स्त्री अशिक्षित रूप में दर्शाया गया है। िसे वैश्या बनने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं दिखाया। स्वतंत्रता के बाद स्त्री को शिक्षित की अवधारणा में खड़ा किया ाो आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी और स ाग है। इन उपन्यासों में अनमेल विवाह, दाम्पत्य विषमता, नौकरीपेशा स्त्री का संघर्ष दर्शाया गया है। "हिंदी में स्वातंत्र्योत्तर काल के महिला लेखन में स्त्री-पुरुषों के संबंधों को, दाम्पत्य संबंधों से परे नये संदर्भों एवं मान्यताओं के साथ परखा गया है। वैयक्तिक आक्रोश, अ ानबीपन, कुंठाओं आदि की अभिव्यक्ति भी इनमें हुई है। इन लेखिकाओं ने नारी को सह ा मानव के रूप में स्थापित किया है। इन्होंने अपनी कृतियों में सामा िक दायित्वों के निर्वाह के साथ ही आर्थिक प्रसंगों एवं रा ानीतिक स्थितियों को भी प्रमुखता प्रदान की है।"[40]

---

[39] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.53

[40] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, डॉ.एम.वेंकटेश्वर-पृ.30

विवे य उपन्यासों में स्त्री त्यागमयी, ागृत, मर्यादित और सुशिक्षित, आदर्शोन्मुख भारतीय संस्कृति संपन्न आदि रूपों को दर्शाया गया है।

2.3.4 सातवें दशक के उपन्यास

सातवें दशक में स्त्री को अपने 'स्व' का परि ाय हो गया था। इस दशक के उपन्यासों में संवेदना, नयी वि ारधारा को समय के अनुकूल दर्शाया गया है। शिक्षित होने से स्त्री ागृत तथा उसमें मुक्ति की लहर पाश ात्य साहित्य से अपनाई है। इस दशक में स्त्री ने शोषण के खिलाफ एक ुट होकर अपनी आवाज़ उठाई है। अन्याय-अत्या ार का डटकर विरोध किया है। लेखिकाओं ने अपनी र नाओं में स्त्री- ेतना, स्त्री-प्रश्न, समस्या को उत्तरोत्तर विकास की दिशा में अग्रसर किया है। उन्होंने पुरुष सत्ता से पीड़ित स्त्री का आक्रोश, संघर्ष, व्यथा-कथा, संवेदना, तनाव को अभिव्यक्त किया है। शोषण, अपमान, अत्या ारों को अपने उपन्यासों की विषयवस्तु बनाकर विरोध किया है। इन समस्याओं के निवारण के लिए साहित्य में प्रयास किया है। "नारी मुक्ति केवल शब्द नहीं बल्कि उसे व्यवहार में लाना भी अनिवार्य सम ा, नारी का अपना ीवन है, और उसे भी सिर्फ महिमा पंडित होकर ीना नहीं, अपितु मानव प्राणी मात्र बनकर ही ीना है। इसी तथ्य को महिला लेखिकाओं ने सम ा और उसी का ित्रण किया। इनका लेखन, बहुस्तरीय, स ा, ईमानदार है।"[41] "सातवें दशक की स्त्री विभिन्न कार्य क्षेत्रों में, प्रमुखता सम्मान और सफलता के शिखरों को छूनेवाली भारतीय स्त्री पारिवारिक और सामा िक धरातल पर शोषित एवं अन्यायग्रस्त दिखाई पड़ती है यही असंगति ध्यान देने योग्य है।"[42]

सातवें दशक में स्त्री लेखिकाओं में स्त्री पात्रों को शिक्षिता के रूप में दर्शाया है साथ ही उसके आत्मपीड़न, अ ानबीपन, अकेलापन ैसे विषयों पर भी अपनी दृष्टि माई है। आर्थिक विपन्नता, स्त्री-पुरुषों के नये संबंधों, पारिवारिक

---

[41] सं ारिका-2006-21-स्त्रीवादी साहित्य पर वि ार विमर्श, सविता कीर्ति

[42] महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, डॉ.अमर योति-पृ.40

विघटन, दाम्पत्य ीवन की विषमताओं को नये ंग से दर्शाने का प्रयत्न किया है। "साठोत्तर वि ारधारा के फलस्वरूप उत्पन्न परिवेश में मानव मूल्यों और मर्यादाओं को नई दिशा से ग्रहण किया है। ो पश्चि ाम का अंधानुकरण ही लगता है। उनके द्वारा निहित परिस्थितियों से आरोपित और ूठी प्रतीत ही लगता है। उनके द्वारा निहित परिस्थितियों से आरोपित और ूठी प्रतीत होती है।"[43] "साठोत्तर युग में व्यक्ति ीवन के प्रभावित किया है। इस युग को देखा ाए तो उसमें अनेक समस्याएँ थी-भ्रष्ट-व्यवस्था, स्वार्थनीति, पाखंड का बोलबाला आदि अनेक परिस्थितियों के कारण व्यक्ति अपने से अ ानबी होकर घुटन महसूस करने लगा। ये घुटन दूर करने के लिए उससे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष यो ाना, नारी आंदोलन ालाए गए। यहाँ तक कि नारी भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्षशील बनी।"[44]

"सातवें दशक के कुछ उपन्यासकारों ने समा ा में स्त्री के प्रति होनेवाले अत्या ार और उत्पीड़न का गहरी संवेदनशीलता के साथ अंकन किया।"[45] इस दशक में आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने पर भी स्त्री पुरुष सत्ता की संस्कार ान्य कुंठाओं की शिकार होती हुई अपनी मुक्ति के लिए परिस्थितियों से संघर्ष, उसकी दुर्धर्ष ीवनी शक्ति और अपने लक्ष्य पर पहुँ ाने की ज़िद आ ा की उभरती स्त्री शक्ति का लेखकिाओं ने अपनी कृतियों में दर्शाया है। पुरुष उसे अपनी 'वस्तु' मान कर उसके ारित्र पर शक करना तथा उसे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित करना अपना अधिकार मानता था। ि ासके प्रतिरूप में स्त्री संघर्ष अनिवार्य हो गया। स्त्री इस दशक में विश्वास, धैर्य, सहनशीलता की स ीव मूर्ति से हटकर संघर्षमयी, विद्रोही, अपने मूल्यों के प्रति स ाग रूप में ि ात्रित हुआ है।

---

[43] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.23

[44] साठोत्तर हिंदी नाटकों में दलित ेतनाःसामाि ाक समस्याओं के संदर्भ में, प्रतिभा ाावले-पृ.38

[45] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉय-पृ.419

इनकी कृतियों में मध्यवर्गीय स्त्री पात्रों के पारिवारिक, आर्थिक ि ाम्मेदारियों का अंकन मिलता है।

सूनीता ौन-बो यू, सफर के साथी, कृष्णा सोबती (मित्रो मर ाानी-1967), मेहरुन्निसा परवे ा (आखों की दहली ा-1969), उषा प्रियंवदा (प ापन खंभे लाल दिवारें-1961), (रुकोगी नहीं राधिका-1967), र ानी पनिकर (एक लड़की दो रूप-1961), (भैरवी-1969), शशि प्रभा शास्त्री (अमलताश-1968) आदि उल्लेखनीय लेखिकाएँ हैं ि ान्होंने अपनी कृतियों में स्त्री-विमर्श के आधुनिक तथ्यों को उ ाागर कर के उनकी संभावनाओं की कोशिश की है। इन लेखिकाओं की नायिका मध्यवर्गीय सामान्य प ़ी-लिखी स्त्री है ाो अपने आर्थिक और पारिवारिक संघर्षों को दायित्वपूर्ण निभाती नज़र आती है।

उषा प्रियंवदा कृत 'प ापन खंभे लाल दीवारें' (1961) में सुषमा एक ऐसी नायिका है ाो आधुनिक शिक्षित, नौकरीपेशा, अधिक उम्र तक अविवाहित रह ाानेवाली मध्यमवर्गीय परिवार का प्रतिनिधित्व करती है। इस कृति में सुषमा वैयक्तिक स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता के लिए नौकरी करती है। इस उपन्यास का केंद्र बिंदु लड़कियों का एक होस्टल है ि ासमें प ापन खंभे और लाल दीवारों वाली होस्टल की यह विशाल इमारत अपनी भव्यता के बाव ाूद, रू ़ियों, प्रवादों एवं बंधनों की प्रतीक है। सीमित आय वाले परिवार में शिक्षित सुषमा अपनी ि ाम्मेदारियों का पालन करती है। सुषमा पारिवारिक ि ाम्मेदारी को निभाते हुए किन तनावों एवं संघर्षों से गु ारती है लेखिका ने प्रवाहपूर्ण अंकन किया है। उसका परिवेश ऐसा है कि उसे समा ा, घर-परिवार प्यार करने तक की इ ाा ात तक नहीं देता। परंपरागत बद्ध समा ा में युवमन की आकांक्षाओं, व ानिाओं के तनाव को सुषमा के माध्यम से लेखिका ने सफल प्रयास किया है-"परंपराग नैतिक-सामाि ाक मूल्यों के तड़कने की पीड़ा को भी लेखिका ने गहरी संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है। इसके साथ ाुड़ी प्रेमकथा में एक रू ़िग्रस्त, नैतिक व ानिाओं से ग्रस्त समा ा में शिक्षित युवती की अपेन कम उम्र

के प्रेमी से विवाह न कर पाने की विवशता और तनाव का ाो ि ातना बाहरी है उतना ही आंतरिक भी, प्रभावशाली ि ात्रण हुआ है।"[46]

'रुकोगी नहीं राधिका' (1967) में आधुनिक स्त्री की ाटिल मानसिकता, भटकाव, पीड़ा, संत्रास और विद्रोह को दर्शाया गया है। लेखिका ने आधुनिकता बोध का गहरा रूप उभरा है। राधिक स्त्री का रूप है ाो भारतीय परिवेश और विदेशी संस्कृति के बी ा सामं ास्य स्थापित करने में अपने आप को अनफिट सम ाती है। यही स्थिति उसको अकेलेपन तक पहुँ ाा देती है वह स्वयं को परिवेश से कटा हुआ पाना, अनिश्‍ िातता तथा सारहीनता का बोध उपन्यास का केंद्र है। "उषा प्रियंवदा ने आधुनिकता तथा भारतीय संस्कारों के मध्य सूक्ष्म द्वंद्व को सफलतापूर्वक ि ात्रित किया है नारी मन के द्वंद्व तथा उसके ाीवन की विसंगतियों का सफल ि ात्रण लेखिका ने किया है।"[47] उनमें परंपरागत नारी संहिता और संस्कारों के प्रति विद्रोह का भाव पैदा हुआ। इसके ालते वह भटकाव की भी शिकार हुई है। राधिका का उस आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है ाो परंपरागत मूल्यों और नैतिक तथा आ ारणगत विधान को स्वीकार नहीं कर सकती है। अविवाहित अवस्था में ही पुरुषों के साथ रहने, कुंठा या अपराध बोध से ग्रस्त नहीं होता। रुकोगी नहीं राधिका में अनेक बाधाओं के बी ा निरंतर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो रही आधुनिक नारी की कथा कहना ही लेखिका का उद्देश्य है।"[48]

र ानी पनिकर कृत एक लड़की दो रूप (1961) तथा महानगर की मीता (1969) में प्रेम संबंधों और स्त्री ाीवन की आधुनिक समस्याओं को केंद्र में रखा है। इनके उपन्यासों में कामका ाी स्त्री का ि ात्रण हुआ है। एक लड़की दो रूप की नायिका 'माला' आधुनिक वि ाारधारा वाली स्त्री है ाो पारिवारिक दायित्वों का

---

[46] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉय-पृ.420

[47] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.31

[48] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉय-पृ.420-421

भरण-पोषण तथा अपनी आवश्यकताओं के प्रति स ाग है। वह एक संदर्भ में कहती है-"मैं नौकरी इसीलिए नहीं करती कि ितना कमाऊ उतना ही ख र् कर डालूं या मेरा घर स ा ाए और मेरे पास साड़ियाँ अधिक हो ाएँ। मैं तो काम इसलिए कर रही हूँ कि घर की आवश्यकताएँ पूरी हो ाएं। परिवार के दोनों समय का भो ान ाल सके।"[49]

इस उपन्यास में लेखिका ने मध्यमवर्गीय स्त्री की मानसिकता को उठाया है िासमें वह केवल आर्थिक विपन्नता के कारण नौकरी करती है। घर-परिवार का सही समय पेट भर ाये इसी धारणा को लेकर ालती है। नायिका की दृष्टि में भौतिक सुख को कोई मान्यता नहीं है वह परिवार और उसके दायित्वों के प्रति स ाग, निष्ठावान प्रतीत होती ाहै। इनकी प्रमुख प्रवृत्ति स्त्री को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर अधिक रही है।

शिवानी कृत 'भैरवी' (1969) उपन्यास में लेखिका ने स्त्री का संवेदनशील रूप और वास्तविकता को दर्शाया है। लेखिका ने स्त्री के सौंदर्य को कटु अनुभवों का दर्शाया है तो कहीं समा ा से टक्कर लेती हुई अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उ ाागर करती स्त्री का। इस उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या को दर्शाया गया है। नायिका किसी से प्रेम करती है समा ा का विद्रोह कर उसके साथ भाग ाती है पर पिता अपनी प्रतिष्ठा के लिए उसे उठा कर लाते हैं और उसे बंदी कनाकर किसी भद्र, प्रौ ़ हलवाई से उसका विवाह कर देते हैं। प्यार करने की स ाा अनमेल विवाह में परिवर्तित हो ाती है। शादी के बाद उसे ऐसा पति मिलता है ाो शंकालू प्रवृत्ति का है। और उम्र में उससे कहीं बड़ा व्यक्ति है। समय से पहले ही वह विधवा बन ाती है और अपनी ाीविका के लिए शिक्षण का मार्ग ॅं ़कर पहले स्कूल खोलती है और फिर कॉले ा की स्थापना करती है। ािसमें वह प्राध्यापिका बन ाती है। "इस र ाना में स्त्री की ऊब,

---

[49] एक लडकी दो रूप, र ानी पनिकर-पृ.6

उत्पीड़न, अकेलेपन को दर्शाया गया है जिसमें वह जीवनयापन और अर्थार्जन के लिए प्राध्यापिका बनती है। आत्मसम्मान से समाज से टक्कर लेती है।"[50]

सुनीता जैन ने भी लगभग इसी प्रकार के उपन्यास लिखे हैं-बो यू (1965), सफर के साथी (1966) में लेखिका ने पाश्चात्य परिवेश में आधुनिक स्त्री के नैतिक मूल्य, संकट, दाम्पत्य जीवन की विषमता, स्त्री-पुरुष के सामंजस्य की समस्या को इन उपन्यासों में दर्शाया है। "हिंदी उपन्यासों में ऐसी स्त्रियों का चित्रण होने लगा है जो शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने पर भी पुरुष की संस्कारजन्य कुंठाओं की शिकार होती हैं।"[51]

मेहरुन्निसा परवेज़ कृत 'आँखों की दहलीज' (1969) में मातृत्व क्षमता से रहित एक टूटी-हारी मुसलमान युवती अनचाही परिस्थितियों में एक विवाहित युवक से संबंध स्थापित करती है जिससे वह मानसिक कुंठा के अवसाद की शिकार होती है। युवक बेदाग बच जाता है पर स्त्री को अनेक योतनाओं, वर्जनाओं से गुजरना पड़ता है और अंत में वह मर जाती है। इस उपन्यास में सामाजिक रूढ़ियों, कट्टरता को उजागर किया गया है जिसमें स्त्री पुरुष द्वारा छली जाती है। पुरुष सत्ता को उजागर किया गया है जिसमें स्त्री को सदियों से ही उत्पीड़ित, उपेक्षित ही दर्शाया गया है। इस उपन्यास में भी मध्यमवर्गीय स्त्री का रूप ही केंद्रित है जिसमें शोषण और उपेक्षा को संजीदगी के साथ दर्शाया गया है।

कृष्णा सोबती का 'मित्रो मरजानी' (1967) में पुराने मूल्यों को जागृत करते हुए मध्यमवर्गीय परिवार में एक विस्फोटक प्रतिक्रियाओं वाली नायिका के उथल-पुथल मचा देनेवाले आचरण को दर्शाया है, "एक पुराने मूल्यों को जीते हुए मध्यवर्गीय पंजाबी परिवार का चित्रण किया, पर इसके मुख्य विशेषता इस परिवार की एक स्त्री, मित्रो का विद्रोह है। मित्रो नारी संहिता को उन सारी धाराओं

---

[50] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.30

[51] हिंदी उपन्यास इतिहास, गोपाल राय-पृ.421

को ध्वस्त कर देती है जिसके कारण किसी स्त्री का जीवन नरक हो जाता है।"[52] "कृष्णा सोबती ने नारी को दमित वासनाओं ओर कुंठाओं को अपनी कृतियों में चित्रित किया है। "उन्होंने प्रेम के उस स्वरूप को उजागर किया है जो काम तक सीमित हो जाता है।"[53]

शशि प्रभा शास्त्री का अमलताश (1968) में प्रस्तुत उपन्यास का "वैशिष्ट्य यह है कि मीदिपुर के विलय और ध्वस्त होने के साथ-साथ कामदा के माध्यम से नारी मात्र की भावनाओं संवेदनाओं उनके अरमानों और लालसाओं का प्रतिबिंबन और उनका विलयन भी साथ-साथ उ ि ात किया गया है। कामदा उपन्यास की नायिका जहाँ एक सामान्य नारी के सदृश विभिन्न कामनाओं को संजोये ढालती है वहाँ समय आने पर एक विशिष्ट नारी की भूमिका का निर्वाह भी उसने बड़ी निपुणता से किया है।"[54]

विवेच्य उपन्यासों में लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय जन जीवन में स्त्री के रूप को उभारा है जिसमें नौकरीपेशा स्त्री का चित्रण आर्थिक संपन्नता के अभाव के कारण उसे घर और बाहर परिस्थितियों का सामना करते हुए चित्रित किया है। व्यवस्थाओं के कारण स्त्री स्वाभिमानी, स्वावलंबी तथा पारिवारिक दायित्वों को निष्ठा और लगन से निभाती है। अविवाहित नौकरी पेशा स्त्री अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान है जो अपनी इच्छाओं आकांक्षाओं को दबा कर पारिवारिक सुख में ही अपना सुख समझती है। जो विवाहित है वे भी संघर्षरत दिखाई देती है। इन उपन्यासों में स्त्री की स्वाधीनता को लेकर चिंता प्रकट हुई है। जिसमें पाश्चात्य और भारतीय मूल्यों में स्त्री सामंजस्य निभाती दिखाई देती है। आधुनिक बोध का निरूपण भी लेखिकाओं ने किया है। जिसमें उसके जीने का तरक ही बदल दिया है। सामाजिक रूढ़िगत वर्जनाओं, जटिल संस्कारों और उसकी जीवन प्रणाली को

---

52 हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉय-पृ.409
53 हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.31
54 अमलताश शशिप्रभा शास्त्री, भूमिका

बदलने के लिए स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना के लिए संघर्षरत स्त्री को दर्शाया है। सामा ाक, आर्थिक, पितृसत्तात्मक तथा धार्मिक ऊहापोहों के बी ा पिसते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए भारतीय स्त्री रूप का ही द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण लेखिकाओं ने अपनाया है।

2.3.5 आठवें, नवें दशक के हिंदी उपन्यास

आठवें दशक तक स्त्री-लेखिकाओं का साहित्य ारम सीमा तक पहुँ ा गया था। इनके उपन्यासों में स्त्री विविध रूपों में ित्रित हुआ है। "सत्तरोत्तर परिवेश भारतीय एवं रा ानीतिक दृष्टि से निश्ित ा ही अपूर्व मानना होगा इसमें एक ओर परिस्थितियों ने अपूर्व रूप से करवटें बदलना शुरू किया तो दूसरी ओर एक ऐसा माहौल मौ ाूद हुआ िासने तरक्की के लिए काफी गुं ााइश छोड़ दी और नई-नई ाुनौतियाँ भी खड़ी कीं। इस परिवेश के परिणामस्वरूप ही लेखन के क्षेत्र में इने-गिने नाम ही ा ार्ा में रहे। वस्तुतः आज़ादी के बाद शिक्षा से प्रभावित और लाभान्वित समा ा की महिला वर्ग का सही अर्थ में साहित्य के प्रति अपूर्व आकर्षण ब .ता गया। कहना सही होगा कि नारी लेखिकाओं ने नारी लेखक का प्रबल प्रवाह सत्तरोत्तर कालखंड में ही अधिक व्यापक होता गया। अब उँगलियों पर गिनने लायक नाम नहीं बल्कि सैकड़ों की संख्या में लेखक से ाुड़ी हुई नारियाँ उभरती गयीं। आठवें तथा नवें दशक को नारी लेखन की दृष्टि से अपूर्व कहना होगा।"[55] शताब्दी का ाौथी ारण स्त्री लेखन की संपूर्णता का ारण है इस ारण में स्त्रियों ने अपनी दृष्टि का विस्तार किया है तथा एक ऐसी संभंवना का पता दिया है ाो अब तक उनके लेखन में नहीं पायी गयी। यह ारण हिंदी महिला उपन्यासों में महिला लेखन के विकास और उनकी नयी संभावनाओं के लिए भी याद किया ााएगा... परंपरागत नारी िांताओं और प्रश्नों से मुक्त होकर लेखिकाओं ने कथा साहित्य को नयी भूमि दी है। यह भूमि रा ानीति,

---

[55] आठवें तथा नवें दशक के हिंदी उपन्यासों में नारी, डॉ.वंदना सोपानराव मोहिते- प्रारंभ पे ा

मानवीय संबंध, सामा िक व्यवस्था, स्त्री-निर्यात और शोषण ैसे अनेक प्रश्नों से निर्मित हुई है, इसलिए आँसू खो ना यहाँ व्यर्थ सिद्ध होगा।"[56]

स्त्री लेखिकाओं ने अपेन उपन्यासों में स्त्री के विविध रूपों को विविध दृष्टिकोणों से ि त्रित किया है। ो आ ा की स्त्रीवादी ेतना का पूर्ण वहन करती दिखाई देती है। अपने मूल्यों के प्रति स ाग दिखाई देती है। आठवें दशक के मध्य से हिंदी के उपन्यास लेखन में सामा िक व्यवस्था दृष्टिगत होती है। ो नये मूल्यों, नये स्त्री निर्यात और शोषण को नये बौद्धिकता के साथ दृष्टिगत करता है। स्त्री रूप का मनोवैज्ञानिक धरातल पर ि त्रण किया गया है, ि समें वह अपने अस्तित्व के प्रति कभी-कभी अतिक्रमण करती हुई दिखाई देती है। इन दशकों में मध्यमवर्गीय स्त्री समस्याओं को बौद्धिकता की तारकिक दृष्टि से दर्शाया है।

स्त्री- ेतना, ागरण, प्रश्नों एवं संघर्षों को अत्यक्त प्रभावपूर्ण ंग से ि त्रित करने वाली स्त्री लेखिकाओं में प्रमुख हैं। कृष्णा सोबती, शिवानी, सूर्यबाला, मन्नु भंडारी, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री, अंसल कुसुम, ममता कालिया, दीप्ति खंडेलवाल, मं ुल भगत, कांता भारती, शशि प्रभा शास्त्री, सुनीता ैन, सुभा वर्मा, मृणाल पांडे, मालती ोशी, ंद्रकांता, नासिरा शर्मा, रा ी सेठ, रं ानी पनिकर, इला डालमिया, उषा प्रियंवदा, निरुपमा सेवती, मधूलिका, महेरुन्निसा परवेज़, दिनेशनंदनी डालमिया।

इन लेखिकाओं ने अपनी र नाओं में अनेक संघर्षशील स्त्रीवादी नायिकाओं को ग.ा ो आ ा की विषम एवं ाटिल सामा िक परिस्थितियों में अपने स्त्री-प्रश्नों, व्यक्तित्व, ीवन की सभी विषमताओं में संघर्ष करेन में समर्थ है। इन लेखिकाओं की दृष्टि मानवीय संवेदनाओं के धरातल पर अधिक व्यावहारिक एवं मानवतावादी रही है।

र ानी पनिकर कृत दो लड़कियाँ (1973) में स्त्री मुक्ति का प्रश्न और उससे उत्पन्न ेतना उपन्यास की नायिका रं ाना में दिखाई देता है। वह एक

---

[56] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.110

संघर्षशील पात्र है ो पारंपरिक और नये मूल्यों के द्वंद्वों में कड़ी हुई है। पारिवारिक दायित्वों के प्रति स ग है। परिवार के लिए सामा िक व र्नाओं को तोड़ती है।

कृष्णा सोबती कृत 'सूर मुखी अंधेरे के' (1972) ि ंदगीनामा (1979) इन उपन्यासों में लेखिका ने "अतीत की स्मृतियों की पड़ताल की है और उसमें मानवीय भावों को खो ा है, वहीं स्त्री को उसका अर्थ दिया है। यह अर्थ नियति और लिंग भेद की रू ि से स्त्री को शक्ति देने का कार्य किया है। ाहे वह समा की ार व्यवस्था में निकट पाये पर या ना और दीनता की ि ंदगी उसे स्वीकार्य नहीं। वह पुरुषों से दो-दो हाथ कर सकती है, उसकी अमानवीयता को ुनौती दे सकती है, पर वह उसे विलीन करके मनमानी करता रहे, यह उसे कतई मं ूर नहीं है।"[57] लेखिका ने स्त्री की दमित वासनाओं और कुंठाओं को अपनी कृतियों में ित्रित किया है ो काम तक सीमित हो ाती है। इनकी नायिका मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित होती है ो स्त्री-संहिता की सभी धाराओं को तोड़ देती है और विद्रोहिनियाँ बन ाती हैं उन्हें किसी संसार, परिवार का कोई महत्व नहीं रहता।

मं ुल भगत कृत अनारो (1977), टूटा हुआ इंद्रधनुष (1976), लेडीस क्लब (1976), बेगाने घर में (1978), खातुल (1983), तिरछी बोछारें (1984) इनके उपन्यासों में स्त्री विशिष्ट व्यक्तित्व एवं विविधता प्रधान है। निम्न वर्ग लेकर, उ ा वर्ग तक की स्त्रियों की संवेदनाओं का अंकन इनकी र नाओं में हुआ है। इनके सभी उपन्यासों में स्त्री ीवन के पक्ष को उभारा गया है। इनकी नायिका अधिकतर बुद्धि ीवी हैं। इनकी नायिका शिक्षित और अशिक्षित भी है ो अपनी भावनओों, संवेदनाओं के साथ यथार्थ ीवन में भी विश्वाास रखती है। 'तिरछी बौछारें' में स्त्री शिक्षित है, आर्थिक रूप से भी संपन्न है। स्त्री का आत्मनिर्भर होना दाम्पत्य ीवन की विषमता बन ाती है। िसमें स्त्री 'वस्तु'

---

[57] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.111

बन कर रह ाती है और पति उसे नी ा दिखाने के लिए शारीरिक, मानसिक रूप से प्रताड़ित, उद्वेलित करता है।

महानगरीय परिवेश में स्त्री विमर्श को मं ुल भगत ने लेडी ा क्लब (1976) में दर्शाया है। अभि ात वर्गीय स्त्रियों के आत्मप्रदर्शन, ूठी िंदगी, कृत्रिम आ ारण और उनके मानसिक अंतर्विरोधों का अंकन हुआ है।

'अनारों' और 'बेगाने घर' की स्त्रियाँ अशिक्षित हैं। ये निम्नवर्ग की ौका-बर्तन करनेवाली स्त्री है। ये स्वाभिमानी, परंपरावादी, कर्मठ तथा टिल परिस्थितियों में परिवार का दायित्व संभालने का प्रतीक है। ये बौद्धिकता के विषय में भी सभी शिक्षितों से कहीं आगे निकलने में समर्थ है। इनके उपन्यासों में दाम्पत्य ीवन की विषमताओं को भी दर्शाया है। स्त्री के मनोविज्ञान, विकृतियों, आत्मपीड़न, कुंठा इन सभी तथ्यों के माध्यम से स्त्री- ित्रण किया है।

शशि प्रभा शास्त्री ने स्त्री समस्याओं और दाम्पत्य ीवन की विसंगतियों का मनोवैज्ञानिक ंग से ित्रण किया है। मानव मन की अतल गहरायियों को दर्शाया है। 'नावें, सीि याँ, कर्क रेखा, परछाइयों के' इनके प्रमुख स्त्री-विमर्श संबंधी उपन्यास हैं। िनमें लेखिका ने स्त्री- ीवन के संवेदनशीलता के अनेक टिल प्रश्नों के विश्लेषण का प्रयत्न किया है।

लेखिका के वि ार में-"नारी की पीड़ा की कहानी, उसके उत्सर्ग और संघर्ष की कहानी किसी भी युग मतें मिट सकेगी, इससे संदेह है।"[58]

नवें उपन्यास की मालती अविवाहित मातृत्व की स्थिति को सह ा स्वीकारती है, अपराध बोध की भावना उसमें दृष्टिगत नहीं होती। इस पर उसके वि ार में माँ बनने के लिए शादी की कोई अहमियत नहीं है। इसके माध्यम से स्त्री के बौद्धिक एवं मानसिकत रूप को दर्शाया है।

मन्नू भंडारी कृत आपका बंटी (1971), महाभो ा (1989) एक इं ा मुस्कान उपन्यास में स्त्री केंद्रित है। आपका बंटी में दाम्पत्य ीवन की विषमताओं

---

[58] अमलताश, डॉ.शशिप्रभा शास्त्री-भूमिका

को उभारा गया है। माता-पिता के विघटन से उत्पन्न बालक की मनःस्थिति का ि त्रण तथा त्रिकोणात्मक संबंधों का ि त्रण सफलतापूर्वक हुआ है। महाभो ा में मन्नु ी ने समा ा के सर्वाधिक शोषित वर्ग हरि ान की त्रासदी को व्यक्त करते हुए सामाि ाक, रा ानैतिक स्थितियों पर भी प्रकाश डाला गया है। इनका लेखन नये विषयगत मूल्यों का है। प्रेम- ीवन के संवेद्य पक्षों पर सफलतापूर्वक अर्थहीन होने की प्रक्रिया के बी ा स्त्री की यातना, संघर्ष और उसके स्वप्न भंग की सं ीदगी से दर्शाया है। आधुनिक स्त्री की ाटिल ि ांदगी, दाम्पत्य संबंध का विघटन और नये सिरे से नये संबंध बनाकर ीने का आग्रह प्रस्तुत किया है ि ासमें समस्या ाुनौतिपूर्ण और त्रासद हो ााती है।

मालती ोशी कृत पाषाण युग निष्कासन, सह ाारिणी, समर्पण का सुख, इनकी कृतियाँ हैं ि ानमें परंपरा का निर्वाह और आधुनिकता का समन्वय परिलक्षित होता है। इन्होंने मध्यवर्गीय परिवार के टूटते-बिखरते संबंधों को, प्रेम और विवाह की उल ानों को स्त्री के माध्यम से दर्शाया है। आधुनिक भावभूमि पर नायिकाओं का ि त्रण किया है। इनके उपन्यासों में अनेक स्त्री संघर्ष के अनेक उल ानों को प्रस्तुत किया गया है।

मृदुला गर्ग् एक सशक्त लेखिका है। अपने लेखन में आधुनिक स्त्री की ाटिल मानसिकता तथा अस्मिता का संघर्ष अपने उपन्यासों में दर्शाया है। उसके हिस्से की धूप (1975), वंश ा (1976), ि त्तकोबरा (1979), अनित्य (1980), मैं और मैं (1984), कठगुलाब (1996) आदि उपन्यास हैं।

'उसके हिस्से की धूप' में आधुनिक स्त्री के प्रेम का त्रिकोणात्मक संघर्ष नये दृष्टिकोण से दर्शाया है। ि ासमें परंपरागत मूल्यों एवं भावुकता को पूरी तरह से नकार दिया है ि त्तकोबरा विवाहित उपन्यास है ि ासे 'बोल्डनेस' का नाम दिया गया है। डॉ.गोपाल राल के अनुसार "वास्तव में यह उपन्यास यौनावेगों एवं यौन अरा ाकता को ही ब ़ावा देता है। इसके केंद्र में एक संवेदनशील लेखिका के नीरस, प्रेरणारहित ऊब भरी, पति और ब ाों वाली दुनिया में एक ऐसे व्यक्ति

का प्रवेश होता है ाो उसके स ानात्मकता का विकास करता है। इसमें आधुनिक नारी के विखंडित व्यक्तित्व, दोहरी ािंदगी के तनाव एवं रति कर्म का बहुत ही साहस पूर्ण ंग से खुला ाित्रण है।"[59] मैं और मैं (1984) में लेखिका स्त्री की अस्मिता के संघर्ष को अभि ाात वर्ग संदर्भों में अंकित करती है। स्त्री की सामाा िक और आर्थिक आ ाादी के बिना इस तरह उसके स्वतंत्र और अस्मिता का संघर्ष एक विशेष वर्ग का स्त्री के संदर्भ में उपन्यास है।

मेहरुन्निसा परवे ा कृत 'उसका घर' (1972), 'कोर ाा' (1977), 'अकेला पलाश' (1981) इन उपन्यासों में निम्न मध्यवर्गीय स्त्री ाीवन की त्रासदी का केंद्र विषय है। ाो प्रेम, त्याग, विवाह, तलाक, पतियों का निकम्मापन, अवैध संबंध का अत्या ाार सौतेली माँ का अत्या ाार, परित्यक्ता का अकेलापन, स्त्री ाीवन के अनेक तथ्यों को उ ाागर लेखिका ने बड़े मार्मिक ंग से ाित्रित किया है।

ांद्रकांता कृत 'अर्धान्तर' और 'अंतिम साक्ष्य', बाकी सब खैरियत है (1983) हैं। अर्धांतर एक संवेदनशील स्त्री की भावनात्मक भटकन और बे ैनी का विश्वसनीय अंकन है। पर अंतिम साक्ष्य कथ्य और कथासंसार में दोनों ही बिखराव के शिकार हो गये हैं। बाकी सब खैरियत है (1983) में पारिवारिक संबंधों की, ाो मध्यवर्गीय मूल्यधर्मिता, परंपरावादिता, अंधविश्वास और व्यक्तिगत स्वार्थ और विदेशी मनसिकता ग्रस्त आधुनिकता दृष्टियों के द्वंद्व का भी लेखिका ने इस उपन्यास में अंकन किया है। इन उपन्यासों के माध्यम से ांद्रकांता समर्थ उपन्यासकार के रूप में सामने आती हैं। मध्यवर्गीय ाीवन की विडंबनाओं को व्यक्त करने में ांद्रकांता को विशेष सफलता मिली है।

कृष्णा अग्निहोत्री-निष्कृति (1987), अभिषेक (1984), नीलोफर (1988), बात एक और की (द्वितीय संस्करण 1982)। इन उपन्यासों में पुरुष

---

[59] गोविंद मिश्र के उपन्यासों (कोहरे में कैद रंग) तथा धूल पौधों पर में स्त्री-विमर्श, शिल्पी गुप्ता, 2009-पृ.44

सत्ता और स्त्री की भोगवादी प्रवृत्ति से पीड़ित स्त्री की मूल ीतकार, आधुनिक बोध की विडंबनाओं, भ्रष्टा ार एवं अवैधिक पारिवारिक ीवन के कारण स्त्री के बिखराव का अंकन यथार्थपरक हुआ है। नीलोफर उपन्यास में गुलामगिरी के कारण शहना ा और इब्राहीम बिछड़ ाते हैं। यह आदिवासियों के ीवन पर आधारित नवीनतम आं ालिक उपन्यास है। ाति भेद, पारिवारिक समस्याओं का उद्घाटन है। मानवीयता को केंद्र में रखा गया है।

अभिषेक उपन्यास के माध्यम से स्त्री की सामा िक ेतना स्पष्ट हुई है। परंपराओं की ाकड़बंदी के कारण पति के अन्याय और अत्या ार को सहती है। पति मरने के बाद विधवा बनने पर विद्रोह करती है और कहती है-"मु े आपकी इस दौलत से लोभ नहीं। आ ा भी प ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ी होना ाहूँगी और छोटे-से ीवन को अ छे संस्कारों से ही काटूँगी।"[60] विधवा प्रथा का विरोध करते हुए आगे वह कहती है-" ो हो गया मैं सम ा सकती हूँ ये श्रृंगार ़ाकर पुनः उतारने की प्रथा से ही मैं विधवा नहीं होऊँगी।"

'बात एक औरत की' में घूँघट परदा प्रथा का विरोध है। साथ ही ाति भेद भाव को उ ागर किया गया है। दांपत्य ीवन की असमर्थता है िसमें पति-पत्नी के वि ार दृष्टिकोण अलग हैं िससे उनमें पारिवारिक बंटवारा हो ाता है। पारिवारिक अन्याय-अत्या ारों का उभर की स्त्री के विद्रोह बनाया है। विवे य उपन्यासों में स्त्री अपने पारिवारिक िीवन को समेटना ाहती है। परंतु अनेक यादतियों, अन्याय-अत्या ारों के कारण विद्रोही बन ाती है।

नासिरा शर्मा कृत ठीके की मंगनी (1989), शल्मली (1987), िंदे मुहावरे (1984), शाल्मली उपन्यास की नायिका शाल्मली है ो उ ा पद पर नौकरी पेशा स्त्री है। वह सुशिक्षित उदा प्रवृत्ति की एक विवेकशील अफसर है। लेखिका ने इसके दाम्पत्य संबंधों में तनाव को उपन्यास में दर्शाया है। सात नदियाँ एक समुंदर (1984), ठीकरे की मंगनी, िंदा मुहावरे सभी उपन्यासों में

[60] कृय्एरर अग्निहोत्री, अभिषेक-पृ.47

शर्मा ी ने स्त्री के अधिकारों के समक्ष आ रहे समा ा, धर्म, परिवार, विवाह संस्कारों की ाकड़बंधी तो तोड़ने का प्रयास किया है साथ ही स्त्री प्रश्न को स्वतंत्रता के धरातल पर आगे ब . ने की संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। ये प्रगतिशील वि ाारधारा की लेखिका हैं ि ान्होंने अपने पात्रों के माध्यम से ये वि ाार प्रस्तुत भी किये हैं। ये मनुष्यता को धर्म, संप्रदाय से कहीं उ ा मानती हैं। शाल्मली और ठीकरे की मंगनी आधुनिक भारतीय स्त्री की स्थिति पर आधारित उपन्यास है। ि ासमें परिवार, संवेदना, अनुभव को ि ंतन का विषय बनाया है। "मेरा विश्वास न घर छोड़ने पर है न अपने को किसी एक के लिए स्वाह करने में। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी" यह वह नारी दृष्टि है, ाो नासिरा शर्मा के कथा-लेखन को परि ाालित करती है।"[61] नासिरा शर्मा ने नारी की राह ाुनने की आज़ादी की ोतना को सार्थक ंग से रूपायित किया है। मुस्लिम परिवार की अंदरूनी उनके रीति रिवा ा, सामाि ाक समस्याओं तथा विश्वविद्यालयीन ाीवन की विडंबनाओं को भी लेखिका ने अ छी तरह से उभारा है।"[62]

रा ाी सेठ कृत तत्सम (1983) उपन्यास में आधुनिक स्त्री के पुनर्विवाह की समस्या को गहरे संवेदनात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया है। रा ाी सेठ नवें दशक की एक सशक्त और उल्लेखनीय लेखिका है। इनका उपन्यास आधुनिक स्त्री के ाीवन की विडंबना है ि ासमें नायिका सही-गलत का फैसला करने में असमर्थ है। "वसुधा इसकी पात्र है ाो मध्यवर्ग की विधवा स्त्री है पति मरने के बाद संवेदनशील स्त्री के लिए द्वितीय सहयात्री या पति के ाुनाव का प्रश्न मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास लेखिका ने किया है।" इसमें रा ानीतिक सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्या नहीं है बल्कि इस उपन्यास में सामाि ाक

[61] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉय-पृ.380
[62] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल रॉ-पृ.381

समस्या को उभारा गया है। बहु विवाह, विधवा विवाह, तलाक, दहे ा प्रथा, पुनर्विवाह आदि सामाि ाक समस्याओं के अंतर्गत आती है।"[63]

इस उपन्यास की समस्या पुनर्विवाह की है। ाो आ ा की रू ़ समस्या प्रतीत नहीं होती है पर लेखिका ने इस समस्या को बड़े ही संवेदनशीलता के साथ उभारा है। स्त्री के लिए दूसरे पति का ाुनाव करना सह ा नहीं होता। परंतु लेखिका ने यह सवाल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उभारा है। वसुधा परंपरागत संस्कारों के दबाव और अपनी मानसिकता के तनाव में इस प्रकार उल ाी हुई हे कि वह अपने आनेवाले समय में सही निर्णय नहीं कर पाती। इस उपन्यास में भावना और संवेग का सामं ास्य है। ाीवन की उथल-पुथल को स्त्री के माध्यम से दर्शाया है। लेखिका की दृष्टि ाीवन के प्रति सार्थक दृष्टिगो ार होती है। इसमें सामाि ाक रू ़ियों, विसंगतियों और स्त्री-संघर्ष की विषमताओं और समस्याओं का ाित्रण हुआ है। स्त्री पात्र नये युग बोध का समर्थन करती है। आधुनिक बोध के बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक का समोवश लेखिका ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

सुनीता ाैन कृत अनुगूँ ा, मरणातीत (1977) आदि उपन्यासों में पश ाात्य परिवेश में आधुनिक स्त्री की पीड़ा, संकेट, दांपत्य ाीवन की विषमताओं की समस्या को बहुत मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री की अभिंशप्त नियति संको ा, कुंठा आदि अपराध बोध से ग्रस्त आधुनि स्त्री की कथज्ञ लेखिका ने उपन्यासों में ाित्रित किया है। "सुनीता ाैन ने प्रेम के बदले स्वरूप को अभिव्यक्त किया है उनका लेखन भावों को लेकर ालता है। मन की सतह के नी ो प्रेम की धारा को अपनी कोमल, भावुक दृष्टि से कृतियों में ाित्रित किया है।"[64]

---

[63] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.379

[64] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.34

ममता कालिया कृत बेघर (1971) नरक दर नरक (1975) उपन्यासों में मध्यवर्गीय संस्कारों, उनके नैतिक मूल्यों को सहती हुई स्त्री की नियति का ि त्रण किया है। परंपरागत ालते धार्मिक अनुष्ठान उनकी संहिताएँ और मध्यवर्गीय दाम्पत्य ीवन की त्रासदी का अंकन है। ि ासमें स्त्री ीवन नरक बन ाता है। इसी तथ्य का अंकन लेखिका ने किया है।

निरुपमा सेवती कृत पत ाड़ की आवा ें, बटता हुआ आदमी, मेरा नरक अपना है, इनके उपन्यासों में महानगरीय ीवन में ही स्त्री संघर्षों को ठुठने का प्रयास किया है। इनकी नायिका शोषण की विषमताओं तथा विवशताओं को तोड़ने का प्रयास करती है ो अपने अस्तित्व की तलाश में अतिभावुक एवं संवेदनशील है। लेखिका ने स्त्री रूप को उसके अस्तित्व के प्रश्नों के साथ महानगरीय परिवेश में संघर्षों का सामना करती नायिका का ि त्रण किया है।

दीप्ति खंडेलवाल कृत प्रिया, वह तीसरा, कोहरे में स्त्री-पुरुषों के मनोभावों से उत्पन्न विकृति और विषमता को उभारा गया है। आधुनिक परिवारों के बिगड़ते दाम्पत्य ीवन की संवेदना तथा रिश्तों में पड़ी गहराई को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है। संबंधों के प्रति स्त्री की मानसिकता का, उसके आंतरिक उत्पीड़न और परिस्थितियों की विवशता को दर्शाया गया है।

शुभा वर्मा कृत ‘कोई एक’ (1978), एक और की ि ांदगी (1978), फ्रीलान्सर (1981), मोहतरमा (1983), अनाम रिश्तों के नाम (1985), सुभान तेरी कुदरत (1987), हड़ताल (1987), कटमंगूर (1989) आदि उल्लेखनीय उपन्यास हें। इनके उपन्यासों में स्त्री ेतना को उभारा है साथ ही स्त्री पुरुष के नये दृष्टिकोण को केंद्र में रखा है। इनके आपसी द्वंद्व स्वतंत्र ेतना, स्वावलंबी और मुक्तिकांक्षी स्त्री का ि त्रण हुआ है। स्त्री-विमर्श के सभी तथ्यों को इनकी कृतियों में देखा ा सकता है। इनकी पात्र सभी समस्याओं से ू ाती और मुक्ति के मार्ग को तलाशती दिखाई देती है। फ्री-लान्सर की शाहना विषम परिस्थितियों का निड़रतापूर्वक सामना करती है। इस कृति में बदलते हुए

सामा िक परिवेश में स्त्री की आत्मरक्षा और सम्मान का ित्रण हुआ है। ‘एक औरत की िंदगी’ की रती एक विवाहित पुरुष से प्यार करती है। लेखिका ने प्रेम समर्पण के नये मानदंडों को उभारा है। ये स्त्रियाँ परंपरागत नैतिक मूल्यों का विद्रोह करती हैं। पुरानी रू ़ियों का खंडन कर मुक्ति ाहती है। "शुभा वर्मा की ‘फ्री लान्सर’ व ‘एक औरत की िंदगी’ परंपरागत नैतिक बंधनों को समाप्त कर नये स्त्री समा ा की कल्पना प्रस्तुत करती है।"[65] इनकी स्त्रियों का प्रेम वास्तविकता के साथ आत्मिक न होकर शारीरिक धरातल पर केंद्रित हुआ है। "मूल-विघटन और नैतिकता की निरर्थकता को शुभा वर्मा के ‘मोहतरमा, फ्री-लांसर, एक औरत की िंदगी’ में देखा ा सकता है। ‘मोहतरमा’ में शहल सामा िक प्रतिरोधों की परवाह न करते हुए नैतिकादर्शों को नकारती है। "फ्री-लांसर की शाहना भी रू ़ियों की दीवार पार कर खड़ी होती है। कोई एक की रानी प्रेम की सनातनी मान्यताओं पर गहरा आघात करके अपने प्रेम प्रसंग में क्षणिक सत्य को कही बताती है।"[66] इनके उपन्यासों में स्त्री का बदलता रूपी दिखाई देता है ो सामर्थ्यवान, स्वाभिमानी और स्वावलंबी है ये स्त्रियाँ धर्म ओर संघर्ष के महत्व को उ ागर कर स्वयं के स्वतंत्र और मुक्ति की आकांशा को उ ागर करती है।

सूर्यबाला कृत दीक्षांत (1984), मेरी संधी पत्र, सुबह के इंत ार तक उल्लेखनीय उपन्यास कृतियाँ हैं। लेखिका स्त्री ीवन के अनेक पक्षों पर ाटिल प्रश्नों के विश्लेषण को अभिव्यक्त करती है। तथा भारतीय, सामा िक ीवन के विविध पहलुओं पर भी स्त्री रूप को दर्शाया है। इन्होंने स्त्री की आंतरिक एवं बाहरी मानसिकता के संबंधों को उ ागर किया है। स्त्री लेखन की पारंपरिक लीक से लेखिका ने मुक्त होने का सशक्त प्रयास किया है।

---

[65] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.122

[66] हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, एम.वेंकटेश्वर-पृ.124

अंसल कुसुम कृत उसकी पं ावटी, उस तक, अपनी-अपनी यात्रा इनके मुख्य उपन्यास हैं िसमें लेखिका ने स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्ष को केंद्र में रखकर स्त्री शोषण की वलंत विषमताओं को अपनी र नाओं में स्त्री समस्याओं को दर्शाया है। दाम्पत्य ीवन की नीरसता, खोखलेपन तथा सामा िक विसंगतियों से भरी विडंबनाओं का ित्रण किया है। स्त्री परिस्थितियों से ू ाते हुए संवेदनशील तथा सहानुभूतिपूर्ण दिखाई देती है।

दिनेश नंदिनी डालमिया कृत मु े माफ करना (1974) में मारवाडी परिवारों में स्त्री की दशा, उनकी नियति, सामा िक आडंबरों को विविध स्तरों तक ााति हुई व्यवस्था और इस व्यवस्था और इस व्यवस्था में स्त्री का संघर्ष दर्शाया है।

मृणाल पांडे कृत 'विरोध' है। मृणाल पाण्डे ने स्त्री ीवन की समस्याओं को कौटुंबिक एवं ग्रामीण परिदृश्य में दर्शाया है। स्त्री की ाटिल विषमताओं को हृदयगायी प्रस्तुत किया है।

कान्ता भारती कृत 'रेत की मछली' (1976) में त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है। स्त्री ीवन और उसके परिवेश को मानवीय संदर्भों से ोड़कर लेखिका ने आधुनिक भाव-भूमि को तैयार किया है िसमें पति को खलनायक रूप में ित्रित किया। स्त्री को कामका ी रूप को दर्शाया है। स्त्री के प्रति गहरी सहानुभूति लेखिका ने दिखाई है। लेखिका ने तलाक के वाद स्त्री कितनी यातनाओं से गु ारती है उसके अकेलेपन को दर्शाया है।

उषा प्रियंवदा कृत 'शेषयात्रा' में आ ा की आधुनिक युग की स्त्री ित्रण हुआ है। आधुनिक तथा भारतीय संस्कारों के बी ा सूक्ष्म द्वंद्व को दर्शाने का सफल प्रयास किया है। स्त्री मन को मनोवैज्ञानिक धरातल पर ित्रित किया है। स्त्री के अंतर्द्वंद्वों के ालते ीवन की विषमताओं का सफल ित्रण लेखिका ने किया है।

मधुलिका, इला डालमिया, इंदिरा नुपूर, बसंत प्रभा, इंदुबाली आदि उल्लेखनीय नाम है ि न्होंने स्त्री-विमर्श, उसके संघर्ष, स्त्री-प्रश्नों, स्त्री-समस्याओं को अपने उपन्यासों में दर्शाया है। इन लेखिकाओं ने दांपत्य संबंधों के टकराव, तनाव, कुण्ठा, सामाि ाक विषमताओं और पारिवारिक उल ानों, प्रेम और विवाह की दुविधा में ग्रस्त भावुक और संवेदनशील स्त्री को दर्शाया है।

नवें दशक के समाप्त होते-होते स्त्री-विमर्श में हिंदी उपन्यासों में एक प्रमुख स्थान ग्रहण किया है। स्त्री-विमर्श विषय को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों का केंद्र बिंदु बनाया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रारंभिक काल से लेकर नवें दशक तक स्त्री लेखक ने सशक्त उपन्यासों को र ाा है। लेखिकाओं ने स्त्री रूपी को तीन अवस्थाओं में व्याख्यायित किया है। प्रारंभिक अवस्था में स्त्री सदियों से ाली आ रही शोषण और अत्या ाार की स्थितियों की शिकार है। मध्यम अवस्था में स्त्री नयी परिस्थितियों से पैदा हुई समस्याओं से ू ा रही है। और अंतिम अवस्था में स्त्री का रूप आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने, परंपरागत स्त्री संहिता की ाकड़ने को ाुनौती देने और रा ानीतिक दृष्टि से सबलीकरण की दिशा में अग्रसर होने के लिए संघर्षरत, विद्रोही, दर्शाया गया है। लेखिकाओं ने स्त्री के सभी संदर्भों ैसे सामाि ाक, पारिवारिक, वैयक्तिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, धार्मिक एवं नैतिक आदि विषयों का अपने उपन्यासों में विश्लेषण किया है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के उपन्यासों की विकास यात्रा में अनेक देशों से प्रभावित होकर स्त्री-मुक्ति की लहर समा ा में फैल गई। किंतु हमारा राष्ट्र धर्म संस्कृति के क्षेत्र में स्त्री को सम्माननीय पक्ष देने का पक्षधर रहा है। त्याग, सेवा, प्रेम, समर्पण आदि गुणों से स्त्री की पह ाान हो ााती थी। बीसवीं सदी के साठोत्तर पूर्व, छठें, सातवें, आठवें, नब्बे दशक में स्त्रियों पर आधारित लिखा हुआ साहित्य उसकी उत्पीड़न की दासता किसी-न-किसी रूप में मिल ााता है।

प्रा ीन काल से आ ा तक स्त्री किसी-न-किसी रूप में शोषित रही है और शोषण का विरोध सदियों से करती आयी है।

निष्कर्ष

बीसवीं सदी के उपन्यासों की विकास-यात्रा में अनेक प्रतिभाशाली र ानाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उपन्यासों को सही दिशा देने तथा मानवीय सरोकार से ोड़ने का काम हुआ है। आधुनिकता से साक्षात्कार करते हुए हमारी उपन्यासकार आदिम युग से लेकर निकट अतीत के भूले-बिसरे ित्रों तक अतीत को ौकन्नी दृष्टि से देख रही हैं। उपन्यासों को वर्तमान संदर्भों से ोड़कर देखना तथा महाकाव्यीय विराटता प्रदान करने का प्रयास हो रहा है।

स्त्री पर होनेवाली ार्ाओं ने अब साहित्य में केंद्र बिंदु का स्थान ले लिया है। स्त्री को केंद्र में रखकर होनेवाले िंतन ने अब निर्णायक स्थिति अख्तियार या अपना ली है। सदियों से हाशिये पर पड़े हुए ये स्त्री वर्ग अब ार्ा में हैं। और अपना महत्व सुनिश्ि ात कर ुके हैं। साहित्य के नवें दशक तक महिला लेखिकाओं का साहित्य ारम सीमा तक पहुँ ा गया है। इनकी कहानी, उपन्यास, विधा ने स्त्री को विविध रूपों में ित्रित किया है। सामाि ाक, रा ानैतिक स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। स्त्रीवादी विमर्श को अपने र ानात्मक और िंतन परख लेखन के माध्यम से आगे ब ़ाने का कार्य स्त्री र ानाकारों ने समय-समय पर उपन्यासों के माध्यम से किया। स्त्री की त्रासदी को उ ाागर करने का कार्य साहसपूर्वक किया है। लेखिकाओं ने छठे दशक से नवें दशक तक मध्यवर्गीय परिवार में स्त्री की उत्पीड़न, त्रासदी को, उसके अकेले होने की नियति को, समा ा में एक नौकरीपेशा स्त्री की उपस्थिति और तरक्की पर उठते हुए संदेह को वि ालित कर देनेवाला ित्र खीं ाा है। ब ापन के टूटते विवाहों के मं ार, महिला-पुरुष में भेदभाव, स्त्री का स्टेटस, पत्रकारिता में महिलाओं की स्थिति, विज्ञापन और सशक्तिकरण में साहित्य की भूमिका आदि विषयों पर उसने ारूरी सवाल उठाये हैं। लेखिकाओं ने अपने लेखों और कृतियों के माध्यम से पुरुष समा ा में

नारी के उत्पीड़न और शोषण पर अपने लेखों से गहरे व्यंग्य भरे कटाक्ष किये हैं। स्त्री विमर्श को साहित्य में एक नई दृष्टि से श्रेष्ठ बनाया है। स्त्री व्यथा को सही अर्थों में एक स्त्री ही सही ंग से सम ा सकती है और उसकी अपनी भावनाओं के अनुकूल अभिव्यक्त कर सकती है। क्योंकि उस व्यथा, पीड़ा, उत्पीड़न, संत्रास, संघर्ष को उसने प्रत्यक्ष रूप से भोगा हो सकता है। पर ऐसा नहीं कि पुरुष द्वारा स्त्री दुःख या पीड़ा को सशक्तता से अंकित नहीं किया ा सकता है। हम देख सकते हैं कि लेखकों ने स्त्री- ीवन की त्रासदी, संत्रास, उत्पीड़न को सम ा और उसकी ीवन गाथा, व्यथा-कथा को अपने साहित्य में व्यापकता से ि ात्रित किया है।

आधुनिक समय में पिछड़ी वै ारिक धरातल पर ेतन हो गयी। शिक्षित, आत्मनिर्भर होकर पुरुष के बराबर अर्था न करने के लिए कंधे से कंधा मिला दिया, पुरुष प्रधान संस्कृति से विमुक्त होकर पुरुष से पीड़ित स्त्री का आक्रोश, संघर्ष, व्यथा, संवेदना और तनाव को अभिव्यक्ति मिली है। स्त्री ेतना से ागृत है मुक्ति के प्रश्न उठाने लगी है वह वस्तु नहीं बल्कि मानव के रूप में ीवन ीना ाह रही है। हर क्षेत्र में अपनी पात्रता सिद्ध कर रही है। स्त्री पर होनेवाले अपमान तथा अपने हक के लिए लड़ना आदि विषयों का ि ात्रण साहित्य में हुआ है। स्त्री संबंधित समस्याओं को उठाना उनका समाधान प्रस्तुत करना स्त्रीवादी साहित्य की भूमिका रही है। लेखिका ही स्त्री की पक्षधर रही है। पुरुष प्रधान समा ा का ेहरा कितना भयावह तथा विद्रूप है यही दिखाना स्त्रीवादी साहित्य का उद्देश्य है। स्त्री की अस्मिता को स्थापित करने में ये अग्रसर रहे हैं। परंपरागत मूल्यों तो तोड़, रू ि़यों को तोड़ा और यथार्थ के सूक्ष्म गहरे दृष्टिकोण को पह ानने का प्रयास कर अपने दायित्वों से परि ि ात स्थितियों, विसंगतियों और भ्रष्टा ार को अपने लेखन में ि ात्रित किया। स्त्रीवादी स्त्री साहित्यकारों ने साहस के साथ नये यथार्थ सामा ि ाक मूल्यों की प्रतिष्ठा की है। प्रेम विवाह, दांपत्य ीवन, दहे ा, विधवा बाल विवाह, अर्थात् सामा ि ाक आर्थिक स्थितियाँ उपेक्षित नहीं रही। वर्तमान में

स्त्री लेखिकाओं ने नये विषयक समस्याओं पर लिखा। परिवार की बदलती परिस्थितियों पर, स्त्री उत्थान एवं स्त्री ीवन की पृष्ठभूमि में स्त्री शोषण, नि ी पारिवारिक समस्या, सामा िक, आर्थिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ू ाते स्त्री ीवन के विविध रूप उभरे हैं। धर्म के नाम पर यौन शोषण, विकास में बाधा, दायित्वों के दायरे में स्त्री को विवश होकर किस प्रकार अपने अरमानों का गला घोंटना पड़ता है। स्त्री अस्मिता उसके संत्रास, पीड़ा की ाद्‌दो ाहद को प्रस्तुत किया है।

* * *

तृतीय अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श:सृ ान के नये संदर्भ

तृतीय अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श : सृ ान के नये संदर्भ

3.1 अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास : सृ ान के नये तेवर

3.2 लेखिकाओं के ि ांतन के परिवर्तनकामी आयाम

3.2.1 स्त्री लेखन के सार्थक हस्ताक्षर : कृष्णा सोबती

3.2.1.1 कटु अनुभवों का दस्तावे ा : ऐ लड़की

3.2.1.2 सामंती मूल्यों का खोखलापन : दिलोदानिश

3.2.2 स्त्री संघर्ष की नयी ामीन : मैत्रेयी पुष्पा

3.2.2.1 स्त्री नियति की गहरी छटपटाहट:बेतवा बहती रही

3.2.2.2 अस्तित्व की तलाश : इदन्नमम

3.2.2.3 सामा ािक यथार्थ का दर्पण : ाक

3.2.2.4 मानसिक उद्वेग : ूला नट

3.2.2.5 'क ाा और कबूतरों' की मुठभेड:अल्मा कबूतरी

3.2.3 ोतना की संवाहिका : ि ात्रा मुद्गल

3.2.3.1 ाड़ों की खो ा : एक ामीन अपनी

3.2.3.2 रिश्तों का खुलासा : आवां

3.2.4 सर्वांग शोषण की सशक्त वाणी : मृदुला गर्ग

3.2.4.1 संघर्ष का नया संदेश : कठगुलाब

3.2.5 संवेदनशीलता की ि तेरी : ंद्रकांता

3.2.5.1 अंतरंग सपनों की तलाश : अपने-अपने कोणार्क

3.2.6 अद्‌भुत ीवट स्त्री : प्रभा खेतान

3.2.6.1 विश्वव्याप्त त्रासदी का मार्मिक ि त्रण : आओ पेपे घर ले!

3.2.6.2 नैतिक मूल्यों का संवाहक : छिन्नमस्ता

3.2.6.3 रिश्तों का द्वंद्व : अपने-अपने ेहरे

3.2.6.4 पीि यों का संघर्ष तथा स्त्री पीड़ा : पीली आंधी

3.2.7 युवा पीि की सार्थक प्रतिनिधि :अलका सारावगी

3.2.7.1 आत्मकेंद्रित समा की पराधीन प्रवृत्ति :

कलिकथा:वाया बाईपास

3.2.8 अंतिम दशक की खो : गीतां ली श्री

3.2.8.1 मोहभंग का तीव्र एहसास : माई

3.2.8.2 सांप्रदायिक वैमनस्य : हमारा शहर उस बरस

3.2.9 हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका : सूर्यबाला

3.2.9.1 दाम्पत्य ीवन का विघटन : यामिनी कथा

3.2.10 संवेदनशील लेखिका : नमिता सिंह

3.2.10.1 मन के अंतद्वंद्व : अपनी सलीबें

3.2.11 आधुनिक स्त्री की प्रतिनिधि : मीना शर्मा

3.2.11.1 सात्विक प्रसंग : अनाम प्रसंग

तृतीय अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श : सृ ान के नये संदर्भ

3.1 अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास : सृ ान के नये तेवर

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में युगीन सामा िक, सांस्कृतिक, रा ानीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का बड़े ही रो ाक ंग से सुंदर ि ात्रण किया गया है। अंतिम दशक के उपन्यासों में तनाव, कुंठा, अमानवीय व्यवहार, असंतोष, मन की मानसिकता और छटपटाहट, क्रूर वातावरण, मानसिक अभिव्यक्ति को उ ागर किया है। उपन्यासों में परिवेश के प्रति दुःख, यथार्थ की पीड़ा, भयानक परिस्थिति में टूटते-बिखरते, पनपते, असंगति, अनास्था, अकेलापन, घृणा, स्वार्थपरायणता, कुंठा, स्त्री ावीन की समस्याओं का यथार्थ ि ात्रण मार्मिक ंग से किया गया है।

अंतिम दशक के उपन्यासों में मनुष्य की लघुता में भी मनुष्य की सार्थकता का ि ात्रण हुआ है। अंतिम दशक की लेखिकाओं ने मनुष्य को नये ंग से सम ाने की कोशिश की है। आधुनिकता के संदर्भ में पूर्ण निर्मित रूप तोड़कर नये रूप की स्थापना करना साधारण कार्य नहीं है। एक ओर परंपरा की ाकड़ है, दूसरी ओर नए युग की यांत्रिक विवशता, ि ासमें स्त्री की स्थिति और भी दयनीय हो गयी है। अतः इस समस्या का समाधान अतीत के प्रयुक्त उपायों से संभव नहीं है। नए भाव स्तर पर ही स्त्री को पह ाानना एवं उसकी सही स्थिति को ााना ाा सकता है।

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री की सामंतीय स्थिति और आधुनिक बनने की होड़ में फंसे मन की अस्त-व्यस्त स्थिति को दर्शाया गया है तथा स्त्री की वास्तविक पह ाान क्या है उसका बोध कराया गया है। अंतिम दशक की लेखिकाओं ने ऐतिहासिक परिक्षण तथा वर्तमान संदर्भ में स्त्री की तत्कालीन परिस्थिति के साथ-साथ उसके गंतव्य का बोध भी कराया गया है। वर्तमान संदर्भ में स्त्री रूि. गत ोतना से मुक्त है। अपने मानवीय मूल्यों के प्रति स ाग दिखाई देती है।

संसार की सामाि ाक, आर्थिक, रा ानैतिक स्थितियों से लेकर विभिन्न प्रदेशों की अनेक समस्याएँ, अंतिम दशक के उपन्यासों में घटित हुई हैं। व्यक्तियों की आकांक्षाओं से लेकर सामाि ाक ाीवन की ोतना के विकास विभिन्न ारणों तक पिछले दस सालों में सामाि ाक ाीवन में संपन्न कई परिणामों का ि ात्रण इस दशक के उपन्यासों में हुआ है। व्यक्ति से लेकर समा ा तक सारी ोतना को नियंत्रित करनेवाले अनेक आयामों को इसी दशक में अभिव्यक्त किया गया है। इस क्रम में दबी पड़ी ानता की अनेक श्रेणियाँ स्वतंत्र रूप से सो ाने लगी है। इसके पहले ानता की ये श्रेणियाँ व्यापक रा ानैतिक आ ारण या सामाि ाक आदर्शों के विविध स्वरों से ाुड़ी हुई थीं। समा ा संपन्न और गरीब, मध्यवर्गीय, निम्नकोटियों की ानता में 1990 के बाद अपने अस्तित्व, उसकी पह ाान की ोतना ाागी। पिछड़ी निम्न कोटि की ानता में अपने व्यापक अस्तित्व में अपना अस्तित्व ूं ने की कोशिश दिखाई देती है। अंतिम दशक के उपन्यासों में ानता का हर वर्ग और ााति अपनी और अपने देश की समस्याओं को सम ाकर उसको अभिव्यक्त करने लगा है। आ ा की ानता अपने महत्व को सम ाने लगी है।

स्त्री के ाीवन की समस्याओं को लेकर पितृसत्तात्मक, पुरुषवादी दमन का विश्लेषण करते हुए इस दशक में उपन्यासों का प्रणयन हुआ है। ब ापन से ही स्त्री को घर की ाार दीवारी में बांधे रखना और उसके ाीवन को नियंत्रित

करनेवाली स्थिति परिवार और समा ा में दिखाई देती है। इन बंधनों के प्रति आ ा की स्त्री आक्रोश और विरोध व्यक्त करती नज़र आती है। आ ा की स्त्री के हृदय में समानता की भावना पायी ाती है। ागरण के इस युग में स्त्री अपने अधिकारों के प्रति स ेत हुई है तथा वह पुरुष के समान ही आर्थिक रा ानैतिक, सामा िक क्षेत्रों में समानता की माँग करने लगी है। वह सामा िक वातावरण में निस्पंद गतिहीन ीवन ीना नहीं ाहती है। उसका ीवन क्षेत्र विशाल और व्यापक हो गया है। वह स्वतंत्र होकर ीवन बिताना ाहती है।

आ ा वह पति के साथ व्यक्तित्वहीन नहीं रहना ाहती है। शिक्षित स्त्री बंधन मुक्ति की प्रबल भावना से सामा िक कुरीतियों का विरोध करने लगी है। समा ा में स्त्री ाति की दो कोटियाँ हैं, एक वह ो पति की प्रवृत्ति से समन्वय पाकर समरस का ीवन बिताती है। दूसरी ो अपने पति से विलग प्रवृत्ति रखती है। ऐसी स्त्री पुरुष से समानता की माँग करती है। ीवन के हर क्षेत्र में सुख अनुभव करना, नौकरी करने तथा समा ा में मुक्त होकर फिरने, सभा में प्रवेश करने, रा ानीति में भाग लेने, अन्यान्य व्यवसायों में, पुरुषों के समान अपना ीवन लाना ाहती है। टिल परिस्थितियों में भी वह साहस, बल और शक्ति से उसका सामना करके समस्याओं का निराकरण करती है। स्त्री पुरुष की संपत्ति मात्र न बनकर उसकी सहभागिनी होकर ीवन व्यतीत करना ाहती है।

"स्त्री लेखन ने स्त्री की उन अनुभूतियों को स्वर दिया है ो अब तक किसी अकेले कोने में पड़ी उदास थी। स्त्री लेखन में स्त्रीवादी लेखन से परे ाने और विविध विषय क्षेत्रों में स्थापित होने की क्षमता है तो पुरुष लेखन में स्त्री ेतना सम्पन्न साहित्य र ाने की संभावना भी है।"[1]

आ ा के उपन्यासों में स्त्री का आक्रोश और विरोध नज़र आता है। अलग स्वभाव वाले पतियों के अनुरूप पत्नियों के द्वारा अपनाए ानेवाले सम ौते के

---

[1] स्त्री-विमर्श :विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.112

रास्तों का ि ात्रण, मानवी में पुरुषवादी पितृसत्तात्मक समा ा के विरुद्ध स्त्री का आक्रोश स्त्री की मानवतापूर्ण बनने की आकांक्षा की अभिव्यक्ति, स्त्रियों की पराधीनता, स्वयं निर्णय लेने के अधिकार, स्त्रीवादी उपन्यासों में परिवार व्यवस्था, ाति, लिंग, मानव-संबंध, नैतिक मूल्य इन सबका मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। स्त्री-पुरुष के संबंधों के बी ा फैले हुए अमानवीय अंशों की ा ार्ा करते हुए मानव व्यवहार और प्रवृत्तियों के परिदृश्य में सक्रिय सामाि ाकता की खो ा इन उपन्यासों में की गई है।

स्त्री स्वयं अपने लिए क्या सो ाती है? स्त्री के विषय में स्वयं उसकी अपनी दृष्टि, धारणा, वि ाार क्या है? समा ा के विषय में उसके अनुभव कैसे है?

स्त्री को व्यक्ति रूप में प्रस्थापित करना तथा उसके अस्तित्व के प्रति ाागरूकता का निर्माण किया है।

स्त्री-विमर्श के इन बिंदुओं को यदि उपन्यास के विशेष संदर्भ में देखना है तो स्त्री लेखिकाओं का एक विपुल वर्ग है ाो निरंतर उपन्यास लेखन में अत्यन्त सक्रिय सहयोग दे रही है। इन लेखकाओं ने पुरुष लेखकों से बेहतर अत्यत्न संवदेनशीलता के साथ स्त्री के मन की टोह ली है। अपनी पीड़ा को, अनुभूतियों को, संघर्ष को लेखिकाएँ अत्यन्त तलखी के साथ भी प्रस्तुत कर रही है। कामका ाी स्त्री की समस्या, स्त्री का दोहरे स्तर पर संघर्ष, आधुनिक स्त्री की बदलती हुई परिस्थति, मानसिकता, उससे उत्पन्न नयी समस्याएँ, परिवारिक एवं दाम्पत्य ाीवन के बनते-बिगड़ते संदर्भों को उपन्यासों में लेखिकाओं ने अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ दर्शाए हैं।

प्रभा खेतान के शब्दों में स्त्री न स्वयं गुलाम रहना ाहती है और न ही पुरुष को गुलाम बनाना ाहती है। वह ाहती है मानवीय अधिकार। दलित और पीड़ित स्त्रियों की मानसिक समस्याओं को लेकर र ो गये उपन्यास में धोखा खानेवाली स्त्रियों और उनके संघर्ष, स्वाभिमान, त्याग, प्रेम की शक्ति का परि ाय मिलता है। मध्यवर्गीय स्त्रियों के ाीवन में आनेवाले वास्तविक परिणामों के प्रति

ध्यान देते हुए स्त्री-पुरुष संबंधों में आनेवाले वांछनीय और अवांछनीय पारस्परिक और आधुनिक शुभ और अशुभ परिणामों का ि ात्रण हुआ है। मध्यवर्गीय ाीवन संकट में पड़ गया है। सम्मिलित परिवार टूट गए हैं। पीि ़यों के बी ा व्यवधान ब ़ ागया है। नौकरी करनेवाली विवाहित, अविवाहित स्त्री तरह-तरह की समस्याओं का सामना कर रही है। माँ-बाप, सास-ससुर, रिश्तेदार, मित्र, सांस्कृतिक विरासत, अधिकार आदि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्त्रियों के ाीवन पर प्रभाव दिखा रहे हैं। ााति, धर्म, दहे ा, सुंदरता, ओहदा, उपभोक्ताआदि मध्यवर्गीय व्यक्तियों में उथल पुथल म ाा रहे हैं। मानव संबंधों में बे ौनी का, पालन पोषण, विवाह, प्रेम, दाम्पत्य ाीवन से सब प्रबंध शास्त्र की सीमाओं में आ गए हैं। अब परिवार की समस्याओं के संदर्भ में उठनेवाली शिकायतों को लेकर नई परिभाषा सामने आने लगी है। इसी दृष्टि के बल पर इन सब उपन्यासों में वर्तमान शिक्षित स्त्रियों पर शोषण, मध्यवर्गीय पारिवारिक ाीवन और स्त्री समस्याओं का ि ात्रण बहुत सूक्ष्म ंग से किया गया है। स्त्री के सशक्तिकरण का ि ात्रण, आ ा के परिवेश में स्त्री का सम ाौतापूर्ण ाीवन, पारिवारिक त्रासदी, उसकी अकेले होने की नियति को, समा ा में नौकरीपेशा स्त्री की उपस्थिति और उसकी तरक्की पर उठते हुए संदेह को वि ालित कर देने वाले ि ात्र खीं ो गए हैं। स्त्री की अस्मिता की खो ा, स्त्री सिर्फ कामना की वस्तु नहीं है बल्कि एक व्यक्ति और अपने बारे में समा ा से खुली बहस ााहती है। स्त्री वस्तु नहीं, मानवी बनना ााहती है। आ ा की स्त्री विद्रोहिणी, पारिवारिक संदर्भों से ाुड़ी, संघर्षमयी, नई ाुनौतियों को स्वीकार करनेवाली, नई राह बनानेवाली, विद्रोह-तत्वों की खो ा ऐसे ि ात्रण को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में खीं ाा है। स्त्री पर होनेवाले अन्याय एवं अत्या ाार का लेखिकाओं ने स्त्री में ाागी ोतना शक्ति का ि ात्रण किया है। स्त्री-पुरुष में स्पर्धा प्रतियोगिता को दार्शाया गया है।

प्रतियोगिता की यह भावना ाब मन में घर करने लगती है तब असंतुष्टि के बी ा स्वाभाविक रूप से अपनी ाड़ें ामाने लगते हैं। परिवार नरक बन ाताहै। शिक्षा बुद्धिमार्ग, प्रेम, सब कुछ एक कोने में मुँह छिपाकर बैठ ाते हैं। परिवार टूटने लगते हैं, आपसी संबंध बिगड़ने लगते हैं। ाीवन से 'रस' लुप्त हो ाता है। केवल 'सम' ब ाता है। आनेवाली पी.ी पर भी इसका बुरा असर पड़ता है। इससे ब ाना बहुत ही आवश्यक है। यही स्त्री विमर्श है कि स्त्री सो ा सकती है कि हम किसलिए ाीते हैं, किसलिए मरते हैं। हमें क्या करना है क्या नहीं करना है।

'स्त्री विमर्श' उपन्यासों में स्त्री समस्याओं का अंकन हुआ है। उसकी पीड़ा, संत्रास, उत्पीड़न शिक्षित होने पर भी दबी हुई, सम ाैतों का सामना करनेवाली, अपनी अस्मिता, अस्तित्व को ब ााने की कामना शक्ति और आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान, आत्मसम्मान की होड़ में स्त्री आधुनिक मानदंडों को अपना रही है।

"स्त्री-लेखन ने स्त्रियों के दृष्टिकोण से ाीवन को देखा और दर्शाया है। इस क्रम में अनेक ऐसी अनुभूतियों ने साहित्य को समृद्ध किया है, ाो अब तक अछूती थी। यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। स्वानुभूति अब सहानुभूति का आसरा छोड़कर अपनी राह और मं िाल खुद पाना ाहती है। क्योंकि वह सहानुभूति के खतरों को पह ाानती है ाो स्त्री-वर्ग में भेद करती है।"[2]

अंतिम दशक के उपन्यासों में अत्यधिक आधुनिकता के कारण स्त्री कई समस्याओं का उद्घाटन कर ाुकी है। ि ासके कारण स्त्री के ाीवन में आमुलाग्र परिवर्तन हुआ है। इस दशक में भी परंपरागत ालती आ रही पुरुष सत्ता यथा-तथा बनी हुई है। संदर्भ ारूर बदल गये हैं। पुरुष प्रधान संस्कृति के दाम्पत्य ाीवन, पारिवारिक ाीवन तथा वैवाहिक ाीवन की विषमताओं को नये ंग से, नये दृष्टिकोण से नये प्रश्नों के साथ उभारा गया है। स्त्री का स्वतंत्र व्यक्तित्व

[2] स्त्री विमर्श ः विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.110

आ ा भी दिशाहीन, कुंठाग्रस्त, उपेक्षित है। दिन-ब-दिन ब ़ रहे अन्याय, अत्या ार, शोषण से स्त्री वर्तमान समय में भी ू ा रही है। स्त्री लेखिकाओं ने 'स्त्री-विमर्श' में स्त्री समस्याओं को, उनकी स्वतंत्रता की छटपटाहट को नये दृष्टिकोण से अपने उपन्यासों में ित्रण किया गया है। स्त्री के आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता के प्रश्नों को उपन्यासों में स्वानुभूति तथा सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री ीवन के ित्रण में स्त्री लेखिकाओं ने अपना सशक्त योगदान दिया है। अविवाहित मातृत्व की समस्या, अनमेल विवाह, प्रेम-विवाह, असफल विवाह का ित्रण कर विवाह वि छेद को आवश्यक माना है। स्त्री ीवन के नये तथ्यों को प्रस्तुत कर उनके सुधारों की संभावनाओं को नये परिवर्तनों के साथ उपन्यासों का विषय बनाया है। अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री का नया, बदलता हुआ स्वरूप, परिवर्तनशील सामाा िक संदर्भ में स्त्री ीवन की विषमताओं का ित्रण हुआ है। स्त्री अब दब्बू बनकर ीना नहीं ाहती अपनी स्वतंत्रता को महसूस करना ाहती है। परंपरा ने ो उसके माथे पर सहनशील-त्यागमयी, दब्बू का लेबल िपका रखा है उसे उखाड़ फेंकने को तत्पर है। आ ा की स्त्री कुछ हद तक सहन करती है ाब सहनशीलता अतिक्रमण करने लगती है तो उसे तोड़ने में भी आ ा की स्त्री संको ा नहीं करती है। नये मूल्यों नयी राही पर ालने को अड़िग है। शोषण, समस्याओं का सामना कर अपने 'स्व' को पह ाानने में लगी हुई है।

3.2 लेखिकाओं के िंतन के परिवर्तनकामी आयाम

अंतिम दशक के उपन्यासों में लेखिकाओं ने स्त्री- ीवन के नये तथ्यों, नये संदर्भों तथा ाटिल प्रश्नों से मुठभेड़ करने की प्रवृत्ति अपनायी है। लेखिकाओं ने पारंपरिकता के विरुद्ध पात्रों को खड़ा कर नये युग में, नये समय में स्त्री के प्रति नयी ीवन-दृष्टि की मांग को उठाते हुए कई ुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। स्त्री को पुरुष नहीं विवेकवान, व्यक्तित्ववान स्त्री बनना है।

"बीसवीं शताब्दी का अंतिम दशक अगर इसलिए याद किया ाये कि उसमें हिंदी के महिला उपन्यास-लेखन ने अपनी 'संपूर्ण दृष्टि' पा ली है तो कोई आश ार्य की बात नहीं होगी। इस अवधि में ंद्रकांता, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, गीतां ालि श्री, अलका सरावगी और सं ाना कौल का परिदृश्य पर एक ामक के साथ प्रकट होना महत्वपूर्ण घटना बन गया। मृदुला गर्ग, ित्रा मुद्‌गल, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान और रा ाी सेठ ैसी लेखिकाएँ नयी नहीं है। पर उनका नया रूप पहले से अधिक आश्वस्तकारी और महत्वपूर्ण लगता है। शेष तीन महिला लेखिकाओं में गीतां ाली श्री, अलका सरावगी और सं ाना कौल इसी दशक की खो ा हैं िन्होंने न केवल लीक से हटकर विलक्षण प्रयोग किये हैं, वरन् पुरुष लेखकों के लिए भी एक सृ ानात्मक ुनौती बनी है।"[3] अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री लेखन एक महत्वपूर्ण पह ाान के साथ अधिक सफल हुआ है िसमें लेखिकाओं की संवेदना अत्यधिक दृष्टिगो ार होती है। लेखिकाओं के िंतन में, प्रेम का नया दृष्टिकोण, विवाह के प्रति नयी सो ा, संबंधों की नयी व्याख्या, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से स्त्री का ित्रण, स्वतंत्रत अस्तित्व, व्यक्तित्व की खो ा सभी तथ्यों को सरलता और स ागता से अभिव्यक्त किया गया है। ये लेखिकाएँ अपनी विशेषताओं के साथ नये दृष्टिकोण से स्त्री पात्रों का विश्लेषण उपन्यासों में कर रही है।

"स्त्री स्वभाव को सम ाना 'स्त्री-विमर्श' की सबसे बड़ी ाीज़ है।"[4]

"स्त्री-विमर्श स्पेस को बल देता है। पुरुष की उदारता पर बल देता है। `र सारी ाीज़ें उससे बंधी हुई हैं। यह बहस का विषय उतना नहीं है, ितना ाागृति का।"

---

[3] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ाोशी-पृ.113

[4] स्त्री विमर्श : विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.40

अंतिम दशक के उपन्यासों में 'स्त्री-विमर्श' के प्रश्नों को अपने उपन्यासों में उठाने वाली निम्नलिखित लेखिकाएँ हैं-कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, ित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, ंद्रकांता, प्रभा खेतान, अलका सारावगी, गीतां ालि श्री, सूर्यबाला, नमिता सिंह, मीना शर्मा। इन्होंने स्त्री-विमर्श के मुद्दों को नये परिप्रेक्ष्य में नये दृष्टिकोण से, नयी सो ा के साथ, आधुनिक संदर्भों में नये तथ्यों का विवे ान किया है।

स्त्री-लेखन पर वि ाार करते हुए लेखिकाओं ने स्त्री से ाुड़े महत्वपूर्ण मूलभूत प्रश्नों को उठाते हुए अपने उपन्यासों में 'स्त्री-पक्ष' को रेखांकित किया है। इनके वि ाार में-"स्त्री-विमर्श का प्रमुख सरोकार स्त्री का अपने पक्ष में खुद लड़ना और खुद खड़े होना रहा है, ाब तक यह लड़ाई अपनी ओर से नहीं लड़ी ााएगी स्त्री के पक्ष में नहीं ााएगी।"[5] स्त्री को 'स्व' के लिए स ोत होना होगा, अपनी ारूरतों को महसूस करना होगा तभी वह अपने पक्ष के बारे में सो ा सकती है। "स्त्री-विमर्श स्त्री के ाीवन के अनछुए अन ााने पीड़ा ागत के उद्घाटन के अवसर उपलब्ध कराता है परंतु उसका उद्देश्य साहित्य एवं ाीवन में स्त्री के दोयम द ों की स्थिति पर आँसू बहाने और यथास्थिति बनाए रखने के स्थान पर उन कारकों की खो ा से है ाो स्त्री की इस स्थिति के लिए िाम्मेदार है। वह स्त्री के प्रति होनेवाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है।"[6] "स्वयं ोती हुई स्त्री के स्वाधिकार स्त्री-विमर्श के सरोकार हैं।"[7] "स्त्री की सृ ानात्मक क्षमता स्त्री-विमर्श की सबसे प्रश्ननीय ामीन है।"[8] स्वयं के अधिकारों के प्रति स ोत स्त्री तथा उसकी सृ ानात्मक शक्ति ही स्त्री की अपनी ामीन है िास पर वह अपनी और भावी पी ि की िाम्मेदारियों को खुद सम ा कर, आनेवाली पी ी को भी सम ाा सकती है।

[5] स्त्री िंतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-फ्लैप पे ा से
[6] स्त्री िंतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.25
[7] स्त्री िंतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.27
[8] कठगुलाब से गु ारते हुए, रा ाी सेठ-कथादेश- ाून 1998-पृ.63

स्त्री लेखन पर मृदुला गर्ग ी कहती हैं-"स्त्रीवादी लेखन का संबंध लिंग से नहीं भावबोध, ीवन दृष्टि और ेतना से है। स्त्री ेतना संपन्न कथा-साहित्य स्त्री-पुरुष दोनों र ा सकते हैं।"[9] मृदुला ी के लेखन में ीवन दृष्टि तथा मानसिकता का सामं ास्य स्थापित है। यह तटस्थता साहित्यिक मूल्य का द ाि पाती है। प्रभा खेतान ी के अनुसार स्त्री लेखन-"विश्लेषणात्मक प्रणाली और नियोि ात प्रतिमान कहीं स्त्री लेखन को उभरने नहीं देते। प्रतिमान शाश्वत नहीं उन्हें बदलना होगा। स्त्री केवल प्रकृति नहीं वह हर प्रकार से समर्थ है। वह इतिहास में हस्तक्षेप कर सकती है उसे मोड़ दे सकती है।"[10] प्रभा खेतान पारंपरिक लोक से हट कर नये दृष्टिकोण को अपनाने की पक्षधर हैं।

स्त्री िंतन के प्रति लेखिकाएँ अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देती हैं। स्त्री लेखिकाओं में िंतन प्रणाली के साथ उनकी प्रतिबद्धता भी अधिक ईमानदार तथा समा ापरक रही है। ि ात्रा ी इस संदर्भ में कहती है-"लेखन मेरे लिए आत्मरति नहीं समा ा की ाड़ स्थितियों पर प्रहार की तरह है। अपने समय के समा ा पर वह मेरा लेखकीय हस्तक्षेप है। हस्तक्षेप से भी कहीं यादा वह मेरी ेतना का दायित्व है, सामाि ाक दायित्व। लेखन आत्माभिव्यक्ति का केवल माध्यम ही नहीं मेरे लिए सर्वोपरि है। "अपनी र ानाओं में अपने लेखन की मौ ूदगी के विषय में मेरा यह मानना है वह मेरी समग्र र ानाओं में दृष्टि के रूप में उपस्थित होता है।"[11] आगे वह कहती है-"स्त्री की क्षमता को उसकी देह से ऊपर उठकर स्वीकार न करनेवाले रू ़ रुग्ण समा ा को बोध करना आखिर किन कंधों का दायित्व होगा।"[12] "लेखक की उपस्थिति को लेखन दृष्टि के रूप में ही लिया ााना ााहिए।"[13] स्त्री पक्ष के प्रश्नों को लेखिकाओं ने भारतीय स्त्री के विडंबनापूर्ण

---

[9] हंस-मा ि, 1993-पृ.34

[10] प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत-पृ.36-37

[11] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.7

[12] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.9

[13] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.8

ीवन परिस्थितियों तथा उससे संबंधित प्रत्येक संघर्ष को अपने उपन्यासों में दर्शाया गया है। स्त्री के व्यक्तित्व के प्रति समा ा का ध्यान आकर्षित करने का सफल प्रयत्न किया गया है।

इन लेखिकाओं ने अपनी र ानाओं में स्त्री- ीवन के सभी पक्षों को अत्यधिक स ीव तथा प्रभावशाली ंग से ित्रित किया है। शैल रस्तोगी कहती है-"पुरुष स्त्री स्वभाव का केवल दृष्टा मात्र है दर्शन केवल देखी-सुनी बातों का ही वर्णन कर सकता है। अनुभूति का अभाव होने के कारण उसके ित्रों में वह तन्मयता नहीं आ सकती, ो स्त्री के स्त्री ारित्रों में आनी संभव है।"[14] स्त्रीवादी लेखन का प्रमुख नारा है 'पर्सनल इज़ पोलिटिकल' यह नारा स्त्री के संघर्षों, व्यक्तिगत अनुभवों और सत्य का खुलासा स्त्री की ुबानी करने का पक्षधर है ताकि उसकी त्रासदी स्थितियों का बोध समा ा को हो सके।"[15]

लेखिकाओं के लेखन में सामा िक दायित्वों को निभाते हुए स्त्री संघर्षों, उसके व्यक्तिगत अनुभवों के साथ आत्माभिव्यक्ति समग्र दृष्टि के रूप में उपस्थित होती है। ये स्त्री पक्ष की पक्षधर है इनके उपन्यासों में आंसू और वेदना के आलाप गायब हो रहे हैं। इनकी र ानाओं में संपूर्ण लेखन की धारा फूट पड़ी है। उसमें स्त्री संघर्ष, प्रश्नों, समस्याओं के साथ-साथ समय, समा ा और नियति की िंताएँ समग्र होने लगी हैं। लेखिकाएँ बीसवीं सदी के अंतिम दशक की सशक्त उपलब्धि मानी ानी ाहिए िन्होंने सामा िक, आर्थिक, पारंपरिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक सभी पक्षों को अपने उपन्यासों का माध्यम बनाया है िसमें स्त्री इन सभी तथ्यों से ू ाती, ु ारू होती दिखाई देती है। स्त्री-पक्ष को केंद्र में रख कर इन सभी पक्षों को बड़े ही संवेदनशील ंग से ित्रण किया

---

[14] हिंदी उपन्यासों में नारी, शैल रस्तोगी-पृ.294

[15] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.234

गया है। ि ानका विवे ान स्त्री-लेखिकाओं ने अपनी र ानाओं में किया है। स्त्री-विमर्श के सभी तथ्यों का विवे ान इनकी र ानाओं में किया ाएगा।

3.2.1 स्त्री लेखन के सार्थक हस्ताक्षर:कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती ने इन उपन्यासों में स्त्री ाीवन की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री ाीवन के संपूर्ण व्यवस्था को समेटा गया है। परंपरा और आधुनिक सो ा का सामं ास्य स्थापित किया गया है। "कृष्णा ाी अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी र ानात्मकता के लिए ाानी ााती है। कम लिखने को वे अपना परि ाय मानती हैं। ि ासे स्पष्ट इस प्रकार किया ाा सकता है-'कि उनका कम लिखना' दरअसल विशिष्ट लिखना है।"[16] कृष्णा ाी ने अपने उपन्यासों में नयी वि ाारधारा को अपनी क्षमताओं के साथ बौद्धिक उत्ते ाना, आलो ानात्मक धरातल पर साहित्य में नये संसार को उत्पन्न किया है। उनके सामाि ाक और नैतिक अनुगूं ा उनके पाठकों में हमेशा बनी रहती है। कृष्णा ाी ने विलक्षण ता ागी के साथ भाषा-संस्कार के घनत्व, ाीवंत प्रां ालता और संप्रेषण की मानवीय स्वातंत्र्य और नैतिक उन्मुक्तता के लिए प्रभावित व प्रेरित किया है। वे कहती हैं-"मैंने अपने ाीवन में ाो सिद्ध किया वह मेरी स्वायत्तता है, लेकिन इसके लिए मु ो बहुत बड़ी कीमत ाुकानी पड़ी है।"[17]

3.2.1.1 कटु अनुभवों का दस्तावे ा : ऐ लड़की

'ऐ लड़की' कृष्णा ाी का एक लघु उपन्यास है इसके संदर्भ में कुछ आलो ाक लघु उपन्यास तथा कुछ लंबी कहानी मानते हैं। "ऐ लड़की उद्दाम ि ाीविषा की कहानी है। अम्मू के माध्यम से वे एक सामान्य मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की स्त्री की नियति को पारिभाषित करती है शिल्प की दृष्टि से यह कहानी कथा साहित्य में नये प्रयोगों की प्रतिभा है।"[18] यह उपन्यास आधुनिक काल के

---

[16] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-भूमिका

[17] स्त्री ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.234

[18] ऐ लड़की में नारी ोतना, डॉ.गरिमा श्रीवास्तव-पृ.70

स्त्री-विमर्श को हमारे सामने प्रस्तुत करता है ि ासमें पितृसत्तात्मक समा ा के मूल्यों, मान्यताओं, व िनाओं पर संदेह करता है। स्त्रियों ने पिछली सदी के अंत में, सदियों से ाली आ रही स्वत्वहीनता के मौन को तोड़ा तथा अपनी ुप्पी को गहरे मानवीय अर्थ दिये। सदी के अंतिम दशक के इसी दौर की प्रतिनिधि र ाना है 'ऐ लड़की'।"[19]

यह प्रयोगात्मक उपन्यास है ि ासमें कृष्णा ाी ने स्मृतियों में ाीती हुई 'माँ' तथा उसकी बेटी में हार्दिक संवादों का ि ात्रण किया गया है। यह ाीवन यात्रा का क ाा-ि ाट्ठा ही नहीं बल्कि समग्र स्त्री ाीवन को केंद्रित करता है। ि ासमें स्त्री ाीवन की इ छा, ि ा ाीविषा और ाुगुप्सा, ऐंद्रिय तृष्णाओं की स्वीकृति तथा उसके प्रश्नों, अस्मिता की खो ा का सुंदर एवं स ाीव अभिव्यक्ति के साथ ि ात्रण मिलता है। ि ासमें परंपरागत कथानक से हटकर अपना अलग वैशिष्ट्य लेखन में दर्शाया गया है। कात्यायनी के शब्दों में-"कृष्णा ाी का स्त्रीवाद उग्र है,अनुभववादी है पर सर्वनिषेधवादी नहीं। यह परिवार और समा ा में स्त्री के स्थान को लेकर ि ांताएँ अधिक वै ाारिक हो उठी है।"[20]

ऐ लड़की लघु कलेवर में स्त्री ाीवन की महागाथा है। इस उपन्यास की नायिका एक वृद्ध स्त्री है 'अम्मु' ि ासका ाीवन मृत्यु के निकट है। उसे पल-पल लगता है कि अभी प्राण पखेरू बन कर उठ ााएंगे। मृत्यु से पहले अम्मू ाीवन को पूरी तरह से ाीना ााहती है क्योंकि वह मानती है कि मृत्युलोक तो उसका पराया घर है। वह मरने से नहीं घबराती पर ाीने की गहरी ि ा ाीविषा है। अम्मू अपने ाीवन अनुभवों को अपनी बेटी से बांटती है। यहाँ एक माँ अपनी बेटी को संबोधित कर आने वाली पूरी पी ़ी को संबोधित कर रही है। पूरा उपन्यास इनके आपसी संवादों पर ालता है। ि ासमें मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री संबंधित कष्टों,

---

[19] ऐ लड़की में नारी ेतना, डॉ.गरिमा श्रीवास्तव-भूमिका
[20] उत्तर प्रदेश साहित्य वार्षिक-1997-पृ.25

दायित्वों का निर्वाह करती हुई अम्मू अपनी अविवाहित बेटी के ऐकाकिपन से परेशान है। अकेलेपन से उभारने के लिए अम्मू बेटी को ीवन ागत की बातों का साक्षात्कार करवाती है। इसमें अम्मू के माध्यम से स्त्री की पीड़ा ानक स्थिति का बोध होता है। लेखिका ने ीवन की स ाइयों को संवादों के माध्यम से स्त्री ीवन को केंद्र में रखा है। इस कृति में स्त्री के बदलते दृष्टिकोण को बौद्धिक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है।

3.2.1.2 सामंती मूल्यों का खोखलापन : दिलो दानिश

'दिलो-दानिश' कृष्णा सोबती का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है िासमें सामंती मूल्यों का खोखलापन दृष्टिगत होता है। 'दिलो दानिश' में सामंती ीवन-दृष्टि और ीवन शैली की अमानवीयता और स्त्री की इ छा और मानवीय अनुभूतियों का ित्रण मिलता है। "सामंती परिवेश और सामंती ीवन-शैली में स्त्री के पास अपना कुछ भी नहीं होता है। यह ऐसा परिवेश है ाहाँ स्त्री के ऊपर अनेक प्रतिबंध होते हैं। प्रतिबंधों के कारण ीवन शून्य हो ाता है। ारा- ारा-सी इ छाओं के लिए उसे लांछित होना पड़ता है।"[21]

स्त्री की अस्मिता की खो ा तथा स्वयं को पह ानने की कोशिश है। लड़ाई ाहे पत्नी की हो या दूसरी औरत (रखैल) की दोनों ही पुरुष सत्ता की शिकार हैं। अपनी पह ान पाने के लिए वह कौन सा रास्ता अपनाती है वह उसकी नि ी बात है। लेखिका ने स्त्री के पूरे व्यक्तित्व और इतिहास को बड़े ही मानवीय ंग से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास मानव की अस्मिता, उसके अस्तित्व तथा उससे संबंधित सामाि क मूल्यों, स्त्री संदर्भों में स्त्री की पह ान के प्रश्नों को प्रमुखता देता है। पात्रों के आपसी त्रिकोणीय द्वंद्वों तथा उनके अंतःसंघर्षों को दर्शाया गया है।

[21] स्त्री अस्मिताःसाहित्य और वि ारधारा, ागदीश्वर ातुर्वेदी, सुधा सिंह-पृ.319

यह उपन्यास स्त्री स्वतंत्रता और स्त्री मुक्ति के प्रश्नों को बीसवीं सदी के समय को समेटता है। अपने में सामंती मूल्यों एवं स्त्री ोतना को उभारते हुए भारतीय मिट्टी से ोड़कर देखा है। समू ो सामा िक परिप्रेक्ष्य में स्त्री की अनिवार्यता को अंकित किया गया है। इसमें स्त्री अपने अधिकारों एवं परिस्थितियों के लिए उग्र रूप धारण कर लड़ती हुई दिखाई देती है। फिर भी स्त्री के इस उग्र रूप को हम उसके आरंभिक रूप में ही पाते हैं।

"स्त्री के सेक्स, संपत्ति, घर और संतान की समस्या को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तलाशने की कोशिश की है। हवेली और फराशतखाना का द्वार मध्यकालीन सामंती मानसिकता से बहुत गहरे ुड़ा हुआ था। हवेली की अपनी संहिता होती है। िसमें व्यक्ति की नि ी भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं था। पुरुष का अपनी प्रेमिका के ब ों का बाप बन ाने पर संपत्ति को लेकर पारिवारिक संघर्ष तो होता ही था फ़राशतखाने की औरत रईस के ब ों की माँ होकर भी उसकी कानूनी पत्नी और हवेली का अंग नहीं हो पाती थी। दिलोदानिश में विवाहेतर काम-संबंध और संतान की स्वीकृति का प्रश्न अपनी सारी ाटिलताओं और तीखेपन के साथ विद्यमान है।"[22] इसमें दिल्ली के परिदृश्य को केंद्रित किया गया है। 19 वीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दिल्ली के परिदृश्य में मानवीय संबंधों को सार्थकता देने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास में पारिवारिक तनाव तथा प्रेम संबंधों के बी ा स्त्री का संपूर्णता में केंद्रित करने का प्रयत्न किया गया है। िसमें परपत्नी को 'रखैल' कहा ाता था। उसके आंतरिक और बाह्य समस्याओं को, संघर्ष को दर्शाया गया है। 'दिलो-दानिश' 19 वीं 20 सदी के दरम्यान एक खानदानी रईस और वकील कृपानारायण के हवेली के भीतर की दुनियाँ (उसकी माँ, पत्नी, बेटी, बहन आदि) और हवेली के बाहर की दुनियाँ (दूसरी औरत, महकबानो, उसका बेटा और

---

[22] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.427

बेटी) के रिश्तों ओर टकरावों के माध्यम से तत्कालीन सामंती समा ा में औरत की सामा ाक स्थिति और ेतना को सम ाने की एक ाोखिम भरी र ानात्मक कोशिश है।"[23] इसमें ऐसे व्यक्ति के आसपास के व्यक्तियों के इर्द-गिर्द पिरोया गया है ाो वकील कृपानाराण अपने व्यक्तितत्व को दिल और दानिश में बंटा हुआ पाता है अपनी दानिशमंदी का शिकार है। इसमें ब्याहता पत्नी कुटुंबप्यारी को और रखैल महकबानो को पुरुष सत्ता की शिकार और शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाते दिखाया गया है इसमें कथा की सो ा सदी पुरानी है फिर भी इसमें ाो प्रश्न उठाये गये हैं वे आ ा के समा ा के समक्ष उसी प्रकार ता े हैं। पारंपिरक पारिवारिक मध्यवर्गीय स्त्रियों की ाो स्थिति हे उसी को सटीक ंग से दर्शाया गया है। "इस परिवार की कथा का दूसरा ध्रुव प्रेम पर नहीं टिकता है। कृपानारायण वकील साहब थोड़ी देर के लिए यह ारूर महसूस कर लेते हैं लेकिन फर्क ाहने में नहीं ाहत में है।

इस प्रकार कृष्णा सोबती ने अपनी र ानाओं में अतीत की स्मृतियों की पड़ताल की है और उसमें मानवीय तथ्यों की खो ा की है, वहीं स्त्री को उसका 'स्व' पह ानने का अर्थ दिया है। यह सो ा-वि ार स्त्री को शक्ति देने और समा ा की ा रि व्यवस्था में डटकर विद्रोह करने के लिए स ेत किया है।

3.2.2 स्त्री संघर्ष की नयी ामीन : मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा कृत 'स्मृतिदंश' (1990), 'बेतवा बहती रही' (1993), 'इदन्नमम' (1994), ' ाक' (1997), ' ूला नट' (1999), 'अल्मा कबूतरी' (2000) आदि बहु ार् ित लोकप्रिय उपन्यास हैं। इन र ानाओं ने हिंदी के उपन्यास साहित्य को काफी प्रभावित किया है। इन उपन्यासों का महत्व अपने आप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। "इन उपन्यासों का महत्व इस बात में नहीं है कि यहाँ स्त्री के संघर्ष को नयी ामीन मिली और वे समा ा को ललकार उठी हैं बल्कि

[23] उत्तर प्रदेश, साहित्यिक वार्षिकी 1997-पृ.25

इस बात में है कि यहाँ ीवन का संपूर्ण ागत मुखरित हो उठा है। विन्ध्य अँ ाल मैत्रेयी पुष्पा की र ानाओं का क्षेत्र है िसे उन्होंने अन्य उपन्यासों की तरह ही 'इदन्नमम' और ' ाक' में उठाया है और पूरे कौशल के साथ उस अँ ाल को उसकी सारी विद्रुपताओं के साथ उपस्थित कर दिया है।"[24] स्त्री के सभी संघर्षों को विभिन्न पहलुओं के साथ कथावस्तु बनाकर लेखिका ने स्त्री विषयक उपन्यासों की र ाना की है। स्त्री द्वारा प्रताड़ना से ग्रसित अपने ीवन की साधनापूर्वक लक्ष्य तक पहुँ ाने वाले विभिन्न उपन्यासों में स्त्री रूप की सरलता से प्रस्तुत किया गया है। "अपने उपन्यास लेखन का आरंभ स्मृति दंश से किया फिर इनका लघु उपन्यास 'बेतवा बहती रही' प्रकाशित हुआ।"[25] दोनों ही 'कथा' की दृष्टि से बहुत 'मार्मिक' है, किसी भावुक पाठक की आँखों को अश्रुपूरित कर देने वाले। दोनों ही उपन्यासों में परंपरागत पुरुष समा द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्या ार का अंकन किया गया है। पर "औपन्यासिक वि ान और यथार्थ की गहरी सम की दृष्टि से इनका विशेष महत्व नहीं है।"[26]

लेखिका को अपनी र ानाओं पर अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हैं। 'सार्क लिटरेरी अवार्ड' और 'द हंगर प्रो ेक्ट' द्वारा दिये गये 'सरो िनी नायुडू पुरस्कार' के अतिरिक्त अनेक राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पुरस्कारों से सम्मानित है, हिंदी अकादमी द्वारा साहितय कृति सम्मान। कथा पुरस्कार (फैसला कहानी पर)। बेतवा बहती रही का प्रेम ंद सम्मान, 1995 उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान द्वारा मिला। इन्हें उनके बहु ि ति लोकप्रिय उपन्यास 'इदन्नमम' के लिए वर्ष 1996 को शाश्वती संस्थान द्वारा नं ानागुडु तिरुमालंबा पुरस्कार, प्रेम ंद सममान एवं 1996 में मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा 'वीरसिंह देव' सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया। इनका स्वतंत्र लेखन अपने आप में अनोखा, सराहनीय, सटीक है।

---

[24] राकेश कुमार, हंस- ानवरी-1994-पृ.95
[25] उपन्यास की समकालीनता- योतिष ोशी-पृ.113
[26] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.387

3.2.2.1 स्त्री नियति की गहरी छटपटाहट : बेतवा बहती रही

'बेवता बहती रही' में ऊर्वशी के माध्यम से स्त्री की यंत्रणाओं को उ ागर किया गया है। "एक बेवता! ... एक मीरा! ... एक उर्वशी। नहीं-नहीं अनेक ऊर्वशियों, अनेक मीराओं, अनेक बेतवाओं की कहानी है... शोषण के सतत प्रवाह में डूबा समा ा। एक अनोखा समा ा, अनेक प्रश्नों, प्रश्न ाह्नों से घिरा... प्रा ीन रू ़ियाँ हैं ाहाँ सनातन। अंधविश्वास है अंतहीन। अशिक्षा का गहरा अंधियारा। शताब्दियों से ाली आ रही अमानवीय यंत्रणाएँ... उर्वशी का दु ःख है कि वह उर्वशी है। साधारण में भी असाधारण। इसलिए सब तरह से अभिशप्त रही तिल-तिल मिटती रही ुप ााप... प्रेम, वासना, हिंसा, घृणा से भरी एक हृदयद्रावक अछूत कहानी। पूरे एक अं ाल की व्यथा-कथा।"[27] उर्वशी की यह कथा उसी की क्या, किसी भी ग्रामीण कन्या की व्यथा हो सकती है। विपन्नता का अभिशाप-शोषण और सनातन संघर्ष। एक विवश यातनामय नारकीय ीवन। ... मगर स ा है। क्योंकि वह औरत है, औरत सदैव रहती है-सहने के लिए, ोलने के लिए और ू ाने के लिए..."[28] मैत्रेयी ी ने बेतवा नदी के किनारे बसने वाली छोटी बस्तियों का अंकन किया है िासमें उस समा ा की विषमताओं को दर्शाया गया है।

3.2.2.2 अस्तित्व की तलाश : इदन्नमम

'इदन्नमम' इनका उत्कृष्ठ उपन्यास है िासके माध्यम से लेखिका को नयी पह ाान मिली है। "िासमें एक वि ान है ाो लेखिका के बुंदेलखंडी ीवन के प्रामाणिक और अंतरंग अनुभव, पहाड़ी अं ाल की धरती और बीहड़ पहाड़ के ीवन के सामाि ाक यथार्थ तथा गहरी मानवीय संवेदना से संपन्न है। अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों में मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखंड की अहीर कन्याओं की करुण

---

[27] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-फ्लैप पे ा से

[28] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.6, 8

नियति कथा, ो किसी न किसी रूप में नारी पात्र की नियति कथा है, गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत की है। पर इदन्नमम में यह कथा करुणा की सीमा का अतिक्रमण करती हुई ‘ ु ारू’ हो गयी है।"[29] गहरी संवेदना और भावनात्मक लगाव से लिखी गई यह कहानी बदलते, उभरते ‘अं ाल’ की यातनाओं, हार- ीतों की एक निर्व्या ा गवाही है… पठनीय और रो ाक"[30]

इस उपन्यास में "नारी की संपत्ति को पुरुष के द्वारा हथियाना और नारी अधिकार ेतना का भाव स्पष्ट होता है, उपन्यास में स्त्री की तीन पी ़ियाँ अपने ीवन संदर्भों को लेकर प्रश्नांकित मुद्रा में खड़ी है। उपन्यास के रत्नयादव के ि ांदगी की मं िाल नारियों को बहला फुसला कर अपहरण करके उसकी संपत्ति को हड़प लेना है।"[31]

महानगरीय मध्यवर्ग की स्त्री ो अस्तित्व की तलाश में मंदाकिनी एक अ ीब निष्कव ा, निश्छल, निरीह, संकल्प-दृ ़ स्त्री का व्यक्तित्व लेकर केंद्रित हुई है ो वास्तविक अर्थों में एक ु ारू तथा ेतित स्त्री है। वह समा ा और परिवार द्वारा स्त्री के लिए बने बंधनों का खंडन ही नहीं करती, उस शोषण के विरुद्ध भी तनकर खड़ी हो ाती है ो आ ा के नेताओं तथा ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों, निम्न ातियों तथा ग्रामीण समा ा को सहना और भोगना पड़ता है। लेखिका ने पात्रों के माध्यम से ीवंत यथार्थ, परंपरागत नियति और स्त्री व्यथा की संवेदनशीलता को दर्शाया है। इसके साथ ही पुरुष सत्ता को निभाते हुए रा ानीतिक नेताओं और ठेकेदारी के ारित्र को भी पर्याप्त मात्रा में अंकित किया गया है।

3.2.2.3 सामा िाक यथार्थ का दर्पण : ाक

---

[29] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपालराय-पृ.387

[30] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-भूमिका (रा ेंद्र यादव के कथन से)

[31] हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श, सं ीव कुमार नरवाडे-पृ.32, सं ारिका 2006

‘ ाक’ उपन्यास में लेखिका ने खेती-किसान से ुड़े ाटों का स ीव ित्रण किया है। इसमें स्त्री- ीवन को केंद्र में रखकर उसकी नियति, विउंबना और संघर्ष का ित्रण किया है। यह उपन्यास ग्रामीण परिदृश्य में ोतित स्त्री को दर्शाता है। स्त्री विमश के माध्यम से सामाि ाक यथार्थ का दर्पण दिखाने का लेखिका ने सशक्त प्रयास किया है।

ाक उपन्यास की कथा निम्न मध्यवर्गीय किसान ीवन में उभरे नये दृष्टिकोण, परिवेश, वि ारों के संघर्ष, सांस्कृतिक विघटन तथा सामाि ाक व्यवस्था में परिवर्तन के कारणों को दर्शाती है। ‘ ाक’ से अभिप्राय कुलाल ाक्र से है ि ासे कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है। लेखिका ने ाक को गतिशील काल ाक्र के प्रतीक के रूप में संपूर्ण परिवर्तनशील समा ा की संहिताओं को दर्शाया है। यह सामाि ाक यथार्थ का अविकृत दर्पण है ि ासमें अनेक समस्याओं से टकराती, स्त्री ीवन है ो समय की गतिमानता में ाक की तरह ऊपर नी ो, कभी दबती, कभी तनती, कभी रोती, गर ाती, दहाड़ती स्त्री को सारंगी के रूप में व्यक्त किया है। इसमें स्त्री के ारित्रगत आयामों को दर्शाया गया है।

किस प्रकार ाट समा ा से उसके नैतिक संहिताओं का खंडन स्त्री करती है और यह रू ि ग्रस्त समा ा उल्लंघन करने पर स्त्री से ीने का अधिकार छीन लेते हैं और हत्या को समा ा हल्की सी ा ार्ग के साथ समाप्त कर देते हैं। इसमें स्त्री नियति का ित्रण कर ौकाने वाली दृष्टि को प्रस्तुत किया है। प्यार करने की स ाा यदि रेशम की हत्या की ाती है तो गुलबंदी को ि ांदा ालाया ाता है। पिछड़ी ाति की स्त्री हो या दलित स्त्री हो या समा ा के किसी भी श्रेणी की स्त्री उसे अपना ीवन स्वयं ीने तथा प्यार करने के अधिकार से वं ाित किया ाता है। समा ा का कोई भी पुरुष ऐसे अमानवीय दृश्य के विरोध खड़ा नहीं हो सकता क्योंकि ये नियम उसके ही बनाये हुए हैं। इस उपन्यास की नायिका सारंग ो बहुत प ी लिखी तो नहीं है, पर ि ासमें संकल्प की ग ाब की दृ ता है। सारंग में शोषण से लड़ने, आततायियों का मुकाबला करने, स्त्री अधिकारों के लिए अपने

आपको स्वाहा करने की हिम्मत और दृ.ता है। उसमें गहरी संवेदनशीलता, विवेक ओर संगठन क्षमता है। वह स्त्री संहिता की समस्त मान्यताओं को ुनौती देती है। ग्राम पं ाायत के ुनाव में प्रधान पद के लिए खड़ी हो ााती है ि ासका विरोध पूरा गाँव, सारा पुरुष समा ा यहाँ तक कि उसका पति भी करता है। इसमें लेखिका ने स्त्री की सत्ता से संघर्ष करने के लिए उसे ुनाव में खड़ा किया है। और "वह अपने खुद के निर्मित नारी-संगठन के बल पर पुरुष सत्ता को ुनौती देने का साहस भरा कदम उठाती है। इससे यह वि ाार उभरता है कि ाब तक सत्ता स्त्री के हाथ में नहीं आती, पुरुष समा ा द्वारा उसका शोषण और उस पर होने वाला अत्या ाार समाप्त नहीं हो सकता।"[32]

समय से आगे ााने का प्रयास, ाौखटे तोड़ने की तड़प और अपनी बात को कहने की निर्भीकता का साहस ााक को उन महत्वपूर्ण कृतियों की श्रेणी में ला खड़ा करता है ाो अगली शताब्दी का कथा-साहित्य तय करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

3.2.2.4 मानसिक उद्वेग : ूला नट

‘ ूला नट’ मैत्रेयी पुष्पा का एक विशिष्ट उपन्यास है। ि ासका विषय भी ााट समा ा की पारिवारिक स्थिति, संबंधों के उल ानों में फंसे मानसिक उद्वेग का ि ात्रण करता है। इसकी नायिका शीलो ाो परंपरागत मूल्यों को ुनौती देने तथा स्त्री-नियति को नकारते हुए विद्रोहिणी का रूप धारण करती है। "गाँव की साधारण सी ओरत है शीलो-न बहुत सुंदर और न बहुत सुधड-लगभग अनप.ृ-न उसने मनोविज्ञान प.ा है, न समा ाशास्त्र ाानती है। रा ानीति और स्त्री-विमर्श की भाषा का भी उसे पता नहीं है। पति उसकी छाया से भागता है मगर तिरस्कार, अपमान और उपेक्षा की यह मार न शीलो को कुएँ-बावडी की ओर धकेलती है और न आग लगाकर छुटकारा पाने की ओर। वशीकरण के सारे तीर-तरकश टूट ााने

---

[32] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.388

के बाद उसके पास रह ाता है ीने का निःशब्द संकल्प और श्रम की ताकत-एक अडिग धैर्य और स्त्री होने की ि ीविषा... उसे लगता है कि उसके हाथ की छठी अंगुली ही उसका भाग्य लिख रही है... उसे ही बदलना होगा।"[33]

इस उपन्यास की कथा में सास-बहू, माँ-बेटे, पति-पत्नी तथा देवर-भाभी के संदर्भों के संबंधों को दर्शाया है। इसमें न वक्तव्य है न भाषण पात्रों के माध्यम से ीवन और परिवेश को नाटकीय रूप को दर्शाया है। िसमें बालकिशन को माँ और शीलो ो उसकी पत्नीवत भौ ाई है दोनों के बी ा पिसते हुए उसके मानसिक उद्वेग को दर्शाया है। आपसी संबंधों की ाटिलताओं और विषमताओं को शीलो के माध्यम से सह ा विविधता से लेखिका ने ााने कितनी स्थितियों, प्रसंग और घटनाओं के ाक्रव्यूह को दर्शाया गया है। " ूला नट की शीलो हिंदी उपन्यास के कुछ न भूले ाा सकने वाले ारित्रों में एक है। बेहद आत्मीय, पारिवारिक सह ाता के साथ मैत्रेयी ने इस ाटिल कहानी की नायिका शीलो की कहानी के साथ 'स्त्री-शक्ति' को फोकस किया है।"[34] "शीलो में सारंग की तरह अद्‌भुत ि ीविषा, अपना भाग्य स्वयं लिखने का संकल्प, और समा ा से अकेले ही लोहा लेने की क्षमता है।"[35]

3.2.2.5 'क ाा और कबूतरों' की मुठभेड : अल्मा कबूतरी

अल्मा कबूतरी नयी और सशक्त र ाना है िसमें बुंदेलखंड क्षेत्र में बसनेवाली कबूतरा ााति के ीवन को केंद्रित किया गया है। हमारे देश में आ ा भी कुछ ऐसी पिछड़ी, ान ाातियाँ हैं ाो स्वतंत्रता का अर्थ तक नहीं ाानती। कभी-कभी सड़कों, गलियों में घूमते या अखबारों की अपराध-सुर्खियों में दिखाई देनेवाले कं ार, साँसी, नट, मदारी, सपेरे, पारदी, हाबूडे, बन ाारे,

---

[33] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-द्वितीय फ्लैप से

[34] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-भूमिका

[35] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.388-389

बाबटिया, कबूतरे न ाने कितनी ही ान- ातियाँ हैं"[36] उनके पास न ामीन है, ठिकाने का घर-बार। ो सभ्य समा के हाशियों पर डेरा लगाये सदियां गु ार देती है। "मैत्रेयी पुष्पा ने अल्मा कबूतरी में इस कटु यथार्थ को गहरी संवेदना और ाबरदस्त स ृनात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके अपमान, विवशता और पीड़ा भी ि ांदगी के ीवंत पात्रों के अद्‌भुत कथासंसार में बदल दिया है। इसके साथ ही लेखिका ने समानांतर ‘सभ्य’ समा से, ि न्हें वे क ा कहकर पुकारते हैं। उनके टकराव, संघर्ष और परा ाय का भी अत्यन्त विश्वसनीय और मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। ‘क ा’ और कबूतरा समा की मुठभेड़ और द्वंद्व ही अल्मा कबूतरी का केंद्रीय विषय है।"

भूरी उसका बेटा रामसिंह और उसकी बेटी अल्मा के इर्द-गिर्द कथा को र ा गया है। पर मु े इस उपन्यास की कथावस्तु कदमबाई मंसाराम और राणा के इर्द-गिर्द घूमती नज़र आई है। भूरी ‘क ा’ समा से टक्कर लेती है। अल्मा की कथा स्त्री के विद्रोह की कहानी है। कुवारी माँ बनती है। समा की विषमताओं को साहस के साथ ेलती है। ानवरों से भी बदतर ीवन ीती है। अंत में विधान सभा ुनाव में प्रत्याशी बनती है। इसमें लेखिका ने स्त्रीवाद को उठाया हे ि ासमें स्त्री अपने प्रश्नों और अधिकारों के लिए स ेत, ेतित दृष्टिगत होती है। इसमें एक स्त्री लेखक का ‘बोल्डनेस’ तो है, ो कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग आदि के प्रसंग में कभी उछाला भी गया था, पर इसका कोई सौंदर्यशास्त्रीय औ ित्य भी है, यह संदिग्ध है। अधिक से अधिक इसे नारी संहिता के प्रति आधुनिक स्त्री का विद्रोह ही माना ा सकता है।"[37] परमानंद श्रीवास्तव के शब्दों में मैत्रेयी में मानवीय भावों के सघन अंतरंगता और संबंधों की ाटिलता को ि ात्रित करने की अनोखी क्षमता मौ ूद है।

---

[36] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-फ्लैश बैक

[37] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.390

लेखिका ने सभी उपन्यासों में विन्ध्य और ब्र ा-अं ालों के यथार्थ-ि ात्रण में स्त्री ाीवन को केंद्रित किया है। इनकी नायिका ग्रामीण और निम्नवर्गीय स्त्रियाँ हैं ाो सरल, आत्मीय, पारिवारिक, सह ाता, संवेदनशील, विद्रोही, स्त्री-संहिताओं को ाुनौती देनेवाली, समा ा की विषमताओं, विसंगतियों का डटकर सामना करनेवाली, अपना भाग्य स्वयं लिखने तथा समा ा से अकेले ही लोहा लेने का संकल्प की क्षमता रखती है लेखिका ने स्त्री नियति की विडंबना और उसके संघर्ष का ि ात्रण किया है। डॉ.प्रभा खेतान अपने लेख में मैत्रेयी पुष्पा के बारे में कहती है-"वो ाब लिखती है तो अपने उपन्यास की नायिका के साथ एक है। संवाद सह ा है। ि ात्रण स ाीव है, इसलिए नहीं कि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य है, बल्कि इसलिए कि वह स्त्री-लेखिका है।" इदन्नमम की बऊ, प्रेमा, मंदा इन स्त्रियों के माध्यम से तीन पीि़यों की संघर्षपूर्ण कथा को प्रस्तुत करती है। ' ााक' में सारंग के साहसपूर्ण संघर्ष और ाुनौतीपूर्ण व्यवहार को दर्शाया गया है। ािसमें वह समा ा की विषमताओं का खंडन करती तथा अपने 'स्व' अस्तित्व की लड़ाई लड़ती दर्शायी गयी है। बेतवा बहती रही की विधवा उर्वशी, ाूला नट की शीलो, अल्मा कबूतरी की अल्मा, भूरी के माध्यम से ाोतित, ाागृत स्त्रियों का अंकन किया गया है। मैत्रेयी स्वयं कहती है-"इदन्नमम में नारी मन की पीड़ा और दर्द, द्वेष, तिस पर सामंती समा ा के हिंसक अंतर्विरोध आदि का बी ाारोपण है। इदन्नमम ाो नारी की समा ा में सम्मान ानक प्रतिष्ठापना की भूख मेरे प्रत्येक पात्र में मौ ाूद है ााहे वह इदन्नमम की कुवारी मंदाकिनी हो, बेतवा बहती रही की विधवा उर्वशी हो या ' ााक' की विवाहिता सारंग हो।"[38]

3.2.3 ाेतना की संवाहिका : ि ात्रा मुद्गल

ि ात्रा मुद्गल कृत 'एक ामीन अपनी' (1990) और 'आवाँ' (1999) मुख्यतः स्त्री विमर्श पर आधारित उपन्यास हैं।

---

[38] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.390

ित्रा मुद्गल आधुनिक कथा-साहित्य की बहु ािति और सम्मानित र ानाकार है। प्रखर ोतना की संवाहिका ित्रा ी के पास अनुभवों का विपुल भंडार है। उन्होंने समा ा के विभिन्न समुदायों विशेषकर दलित-शोषितों के बी ा पैठ कर काम किया है। आंदोलनमुख संगठनों से इनका गहरा नाता है। यही कारण है कि इनकी मान्यता है कि सामा िक परिवर्तनों की दिशा में आंदोलनों की निर्णायक भूमिका है। समकालीन यथार्थ को वह िस अद्भुत भाषिक संवेदना के साथ अपनी कथा र ानाओं में परत-दर-परत अनेक अर्थछवियों में अन्वेषित करती है, ाकित कर देनेवाला है।"[39] इस पर लेखिका कहती है कि "लेखन आत्माभिव्यक्ति का ारिया है लेकिन मेरे लिए वह आत्माभिव्यक्ति भर नहीं है, मेरे लिए सर्वोपरि है। मेरे पाठक आत्माभिव्यक्ति मैं अपने लिए नहीं, पाठकों के लिए करती हूँ। लेखन मेरे लिए आत्मरति नहीं समा ा की ाड़ स्थितियों पर प्रहार की तरह है। अपने समय के समा ा पर वह मेरा लेखकीय हस्तक्षेप है। हस्तक्षेप से भी दो कदम आगे एक तरह से वह मेरे ोतना का दायित्व है, सामा िक दायित्व।"[40]

सामा िक दायित्वों को सम ाने के लिए लेखिका ने रू रुग्ण समा ा को ाग ोरकर ागाने का प्रयास किया है। स्त्री के स्त्रीत्व पर की गई ोट, उसके सम्मान पर किया ानेवाले आघात को महसूस करते हुए कहती हे कि-"स्त्री क्षमता को उसके देह से ऊपर उठकर स्वीकार न करने वाले रू ़, रुग्ण समा ा को बोध कराना आखिर किन कंधों का दायित्व होगा?"[41]

आवां पर सहस्राष्टि का पहला अंतर्राष्ट्रीय 'इंदु शर्मा कथा सम्मान' लंदन (इंग्लैंड) से प्राप्त हुआ। दिल्ली के हिंदी अकादमी द्वारा 'साहित्यकार सम्मान तथा विकास' काया फाउंडेशन द्वारा सामा िक कार्यों के लिए विदुला सम्मान

---

[39] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल, द्वितीय फ्लाप से

[40] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल, द्वितीय फ्लाप से

[41] आवाँ, ित्रा मुद्गल-पृ.9 (भूमिका)

और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' प्राप्त हुआ है। ये अपने स्वतंत्र लेखन एवं सामाि ाक कार्य के लिए हमेशा इसी प्रकार सम्मानित तथा उल्लेखनीय रहेंगी।

3.2.3.1 ाड़ों की खो ा : एक ामीन अपनी

'एक ामीन अपनी' विज्ञापन की उस दुनिया की कथा है ाहाँ समा ा की इ छाओं को पैना करने के लिए औ ाार रूप में स्त्री का प्रयोग किया ााता है। यह कथा बंबई के महानगरीय परिदृश्य में विज्ञापन- ागत् के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकड़म, देह व्यापार के बी ा स्त्री विमर्श के माध्यम से स्वयं सत्ता-प्रतिष्ठान में स्त्री अपनी देह और प्रकृति के माध्यम से ब ाार के लुभावने संदेशों को ही उपभोक्त तक नहीं पहुँ ााती, बल्कि परदे के पीछे एक बड़ी तर्क-फोर्स भी स्त्रियों से ही बनती है।"[42] इस परिवेश में वह ाहे कितनी योग्य एवं प्रतिष्ठावान हो पर उसे भोग्य की वस्तु बनना पड़ता है। इसमें आधुनिक स्त्री की स्थिति की त्रासदी को दर्शाया गया है। पत्नी और प्रेयसी के रूप को ि ात्रा मुद्गल ने गहरी संवेदनशीलता के साथ उसकी दयनीय स्थिति तथा स्त्री के अधिकारों की मांग को दर्शाया है। साथ ही "स्त्री के उस संघर्ष की भी ाो स्त्री इस मायावी दुनिया में अपनी र ानात्मक क्षमता की पह ाान अर् ाित करने के लिए और सिर्फ देह-भर न बने रहने के लिए करती है। एक ओर पारिवारिक संस्कारों से उ र्वसित उपन्यास की नायिका अंकिता है, और दूसरी ओर विज्ञापनों की ाका ाौंध-भरी दुनिया में आशा-निराशा ेलती, अपनी मादक देह के तिलस्म में उल ाी नीता। ... इन दोनों युवतियों को ही मूलतः केंद्र में रखकर रो ाक कथा के माध्यम से अनेक प्रश्न उठाए गए हैं। नारी आखिर किस तरह की स्वाधीनता के लिए युद्धरत है? वह अपने लिए किस तरह की ामीन और किस तरह का समा ा ाहती है? ि ास संभ्रांत और दिखनौटे समा ा के कु ाक्र में फंसकर वह अपने अस्तित्व के मूल

---

42 एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-भूमिका

प्रश्नों में टकरा रही है, वह उसे कहाँ ले ा रहा हे? ऐसा तो नहीं कि वह अन ाने ही एक सुनियो ित धोखे में अपने को डालकर ि ास तरह साहस और संघर्ष का प्रदर्शन कर रही है, वे उसकी नासम ी से स्वयं उसे ही दांव पर लगा रहे हों?"[43] लेखिका ने स्त्री-नियति के प्रति असंतोष प्रकट किया है। "स्त्री के संघर्ष का गहरा विमर्श है ो महानगरीय ीवन में सिर्फ भोग की वस्तु रह गयी है। उपन्यास की स ि नात्मकता प्रभावित करती है और उसे एक बेहतर र ाना बनाती है।"[44] "ि ासमें स्त्री अपनी क्षमता साबित करने हेतु उसने कड़ी मेहनत की है और अपनी क्षमता को मात्र स्त्री से भिन्न 'व्यक्ति' के रूप में स्थापित करने हेतु ी-तोड़ मेहनत की है। समा ा में पुरुष से समानता की आकांक्षी इस स्त्री ने अपने लिए ागह बनानी ाही है।"[45]

3.2.3.2 रिश्तों का खुलासा : आवां

'आवाँ' व्यास सम्मान से सम्मानित ि ात्र मुद्गल का बृहत, प्रसिद्ध उपन्यास है। 'स्त्री की स्थिति', गति की ा ा परिवार में सुरक्षा के यथार्थ और परिवार के बाहर स्वतंत्रता के अर्थों के संदर्भ में रिश्तों का खुलासा किया गया है। पितृसत्तात्मक सामा ि ाक संस्कारों वाले परिवार के मध्य आ ा की स्त्री की परंपरागत स्थिति एवं परिवर्तन का रेखांकन 'आवाँ' के माध्यम से संभव हो सकता है।"[46] बीसवीं सदी के अंतिम प्रहार में एक म ादूर की बेटी के मोहभंग पलायन और वापसी के माध्यम से उपभोक्तावादी वर्तमान समा ा को कई स्तरों पर अनुसंधानित करता, निर्ममता से उधेड़ता, तहें खोलता, ि ात्रा मुद्गल का सुवि ाारित उपन्यास 'आवां' अपनी तरल, गहरी संवेदनात्मक पकड़ और भेदी पड़ताल के अंतर्याप्त र ाना कौशल से ि ान बिंदुओं पर पाठकों को आत्मालो ान

---

[43] ि ात्रा मुद्गल, एक ामीन अपनी-भूमिका से
[44] उपन्यास की समकालीनता, ोतिष ोशी-पृ.112
[45] स्त्री-ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कुस्तवार-पृ.92
[46] स्त्री-ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तुवार-पृ.189

के कटघरे में ले, ि ास विवेक की मांग करता है वह ुनौती ोलना क्या आ ा की अनिवार्यता नहीं।"[47] स्त्री प्रश्नों को लेकर उसकी विडंबना और स्त्री की वस्तुपरकता को स्पष्ट करता हय उपन्यास प्रभावी एंग से पात्रों को अंकित करता है। इस कथा की केंद्रीय पात्र नमिता पांडेय है ो स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध संघर्षशील है और अपने 'स्वयं' की राह पर वहाँ पहुँ ाती है ाहाँ उसे नहीं पहुँ ाना ाहिए था। स्थितियाँ उसे ऐसा बनने पर म ाबूर करती हैं न वो स्वयं की रह पाती है और न घर परिवार की।

केंद्रीय विषय एक नौ ावान लड़की का ीवन संघर्ष है, ो एक पारंपरिक रू ि ग्रस्त, घुटन भरे मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। भेदभाव के परिवेश में बड़ी होती है। परिस्थितियों के ालते अपने-आप को संघर्षों से लड़ने के लिए तैयार करती है। इन्हीं कारणों से उपन्यास का शीर्षक 'आवां रखा गया है। इसके साथ ही उपन्यास के परिदृश्य के रूप में म ादूर संघों के कार्यकलापों तथा उनकी आंतरिक रा ानीति, उठापटक आदि का भी ि ात्रण सरलता से उभारा गया है। नमिता का ीवन संघर्ष पुरुष के साथ अवैध संबंधों को लेकर भी प्रस्तुत किया गया है। साथ ही म ादूर संघों की शक्ति, संभावनाओं और कम ाोरियों को पूरी तरह तटस्थता के साथ उभारा गया है। लेखिका ने ममता गौतमी और स्मिता ैसे पात्रों के माध्यम से परिवेश से उभरी स्त्री-शक्ति, स्त्रीवादी स्त्रियों को दर्शाया है। ो परंपरागत ालती स्त्री-नियति को ाड़ से ठुकराने तथा स्वतंत्र ीवन व्यतीत करने को तैयार है। इसी के साथ म ादूर नेता के पारिवारिक ीवन का ि ात्रण और पुरानी रीति रिवाज़ों में ाकड़ी कुटिल, खेल और परले द ों की स्वार्थी स्त्रियों का ि ात्रण भी किया गया है।

नमिता अपनी परिस्थितियों के ालते दृ ा हो ाती है। उसकी मानसिक स्थिति स्व छ और सह ा कृतज्ञ है। इसी सह ाता के कारण वह अं ाना वासवानी

---

[47] आवाँ, ि ात्रा मुद्गल-भूमिका (फ्लाप पे ा)

से छली ाती है और सं ान कनोई उसकी कृतज्ञता का गलत फायदा उठाता है। ब्याह का ाँसा देता है, प्यार के ूठे ाल में फंसा कर अपनी क्षुद्र वासना का शिकार बनाता है। 'आवां' नमिता के माध्यम से ि स स्त्री-विमर्श को प्रस्तुत करता है उसका सूत्र आसानी से 'सिमोन द बोउवा' के 'द सेकेंड सेक्स' और महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कडियाँ से ुड़ता है। नारीवाद अपने को समर्थ बनाने के काम आये तो वरेण्य है, केवल नारे उछालने भर से स्त्री की सामाि क स्थिति नहीं बदल सकती। परिवार, समय, समा ा और राष्ट्रहित के दायित्वों से विमुखता और निरंतर वैयक्तिक सुखों की खातिर स्वतंत्रता का अतिक्रमण ही यदि नारीवाद का घोषित उद्देश्य है तो 'आवाँ' की नमिता अपने आ ारण में उसका निषेध करती है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'आवां' की यह एक उपलब्धि है।"[48]

ि त्रा मुद्गल ने निश ाल ही कार्य के लिए अथक परिश्रम किया है और बड़े मनोयोग से ारित्रों के भीतर की दुनिया को प्रत्यक्ष किया है। हाल के वर्षों में ऐसे उपन्यास लगभग नहीं के बराबर लिखे गये हैं ि नमें स्त्रियों की इतनी सूक्ष्म ाँ ा दिखायी देती हो और परिवार तथा समा ा की प्रगति-दुर्गति में उनकी भूमिका को आलो ानात्मक ंग से परखा गया हो।"[49] 'आवाँ' उपन्यास में स्त्री विमर्श का यह स्वर निश ाय ही सकारात्मक है और व्यावहारिक स्तर पर प्रशंसनीय भी। एक संस्कृति की कथा है ो भारतीय सामाि क ीवन के समानांतर बन रही है ि समें ीवन का अर्थ भौतिक तुष्टि है। पर दुःखद बात यह है कि इससे ीवन बोि ल बनता ाता है। ि तनी मनोकामनाएँ, मनोइ छाएँ मानव मन में पनपेगी, उतना ही अत्यधिक दुःख त्रासदी उसके ीवन में घटेंगे। क्योंकि अत्यधिक मांग मनुष्य को पंगु बना देता है और उससे वह बुरे कामों में अपना ध्यान देने लगता है। लेखिका ने ऐसे तथ्यों को स ीव करने का प्रयास किया है।

---

[48] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.172
[49] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.173

3.2.4 सर्वांग शोषण की सशक्त वाणी : मृदुला गर्ग

इनकी सभी कृतियों में आधुनिक स्त्री की ाटिल मानसिकता ओर अस्मिता का संघर्ष देखा ाा सकता है। स्त्री विषयक संदर्भ में इन्होंने महानगरीय परिवेश का प्रयोग किया है। परंपरागत स्त्री-संहिता और संस्कारों के प्रति विद्रोह का भाव, अनेक समस्याओं के बी ा निरंतर मुक्ति का मार्ग टूटती आधुनिक स्त्री की कथा ि ासमें उसका भटकाव, पीड़ा विद्रोह का ि ात्रण लेखिका ने किया है। स्त्री की अस्मिता से ाुड़े प्रश्नों को गहरी संवेदनशीलता और तर्क के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन्होंने पाश ाात्य स्त्री के संघर्षों का भी ि ात्रण किया है। किस प्रकार वह अपने पति और सहयोगियों द्वारा छली ााती है याने स्त्री कहीं की भी हो किसी भी देश-विदेश की, किसी भी धर्म- ाति की, किसी भी वर्ग की, उसका संघर्ष, पीड़ा, संत्रास, संवेदना एक ही कोण पर आकर रुक ााता है। उसकी छटपटाहट से निकलने के प्रयत्न में वह पूरा ाीवन दांव पर लगा देती, वैध हो ाहे अवैध वह पुरुष द्वारा ठगी ारूर ााती है। शायद उसकी यही नियति है ि ासके कारण वह विद्रोह तक करती है पर उसे न ही स्वतंत्रता प्राप्त होती हे न ही 'स्वयं ाीने का सार्थक अधिकार।

3.2.4.1 संघर्ष का नया संदेश : कठगुलाब

'कठगुलाब' में मृदुला गर्ग का नारी विषयक निष्कर्ष यह है कि स्त्री ाहे भारत की हो या अमेरिका की, उ ा वग्र की हो या निम्न वर्ग की, पुरुष द्वारा श्रम और सेक्स दोनों रूपों में देह-शोषण उसकी नियति है। फिर नारी-मुक्ति की दिशा क्या है? यह सवाल आ ा की समस्त महिला लेखकों के सामने है। क्या यह मुक्ति उग्र नारी में है ाहाँ स्त्री पुरुष को 'नर सुअर' के रूप में देखती है या नारी के उस स्वाभिमान और स्वावलंबन के मार्ग में ाहाँ वह आर्थिक और सामा ािक दृष्टि से अपने पैरों पर पूरी तरह से खड़ी रहकर भी अपना संतुलन नहीं खोती और उन मूल्यों की रक्षा करती है। ाो मनुष्य मात्र को सह ा ाीवन प्रदान करते हैं।

लेखिका कदा ित दूसरे विकल्प की ओर ुकी हई है।"[50] स्त्री-नियति के प्रश्नों को गंभीरता से उठाया गया है केंद्रीय विषय शिक्षित कार्यशील स्त्रियों का है ािसमें मध्यवर्गीय परिवेश की नियति के धर्म, ाति, यौन, उत्पीड़न को उठाया गया है। भोगवादी दृष्टि, स्त्री की शारीरिक कम ोरी, गर्भ-धारण की विवशता आदि से स्त्री संहिता का परि ाय दिया है। आधुनिक स्त्री में पारंपरिक स्त्री नियति को नकारने, आर्थिक स्वावलंबन के साथ स्वतंत्रत ीवन ीने तथा ीवन व्यतीत करने के लिये मानसिकता को ुनौती देने के साहस को दर्शाया गया है। यह उपन्यास विभिन्न समा ों, राष्ट्रों और वर्गों की स्त्रियों की नियति से साक्षात्कार कराता है। डॉ. ंद्रकांत बांदिवडेकर के मतानुसार-"कठगुलाब एक प्रौ ़ िंतनपरक र ना है, ो नारी के लगभग सर्वांग शोषण को सशक्त वाणी देती हुई नारी की प्राकृतिक सामर्थ्य का प्रभावपूर्ण रेखांकन करती है।"[51] इसमें स्त्री विद्रोहों को पात्रों के माध्यम से उभारा गया है। स्त्री- ाति की पनपती वेदना को मनोविश्लेषणात्मक िंतन के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा, विपिन, नमिता, असीमा की माँ आदि पात्रों के माध्यम से बौद्धिक, िंतनशील, शिक्षित, आर्थिक स्वावलंबी तथ्यों को उभारा गया है। उन्होंने स्त्री पात्रों के माध्यम से पुरानी परंपराओं को तोड़कर नये युग की नई परंपराओं, परिकल्पनाओं का ित्रण किया है। भंरतीय परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर पाश ात्य सभ्यता के आलोक में स्त्री में आये बदलाव को रेखांकित किया है।

मृदुला गर्ग ने स्त्री ाति की वेदना, संत्रास, कुंठा को दर्शाया गया है ािससे स्त्री ेतना को ागृति मिली है। इसमें नयी सो ा के प्रश्नों को उभारा गया है ो मातृत्वविहीन स्त्री किसी प्रकार विद्रोह करती है और उसका संघर्ष उसे किस मोड़

---

[50] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.423

[51] अक्षरा, आलो ना विशेषांक, संपादक गोविंद मिश्र-पृ.77

पर ले ा रहा है ये सब बातें उपन्यास में वि ारणीय हैं। बं ार भूमि और स्त्री के साम्य को उ ागर करने का प्रयत्न किया गया है ि ासमें स्त्री वैध-अवैध किसी भी रूप में संतान और उसके सुख का अनुभव करती है। इस उपन्यास की एक पात्र मारियान ो मातृत्व सुख के लिए अपनी र नाएँ पति को दे देती है उसे पता है कि उसका पति उसके साथ छलाव कर रहा है। फिर भी उसे मातृत्व सुख के सामने कोई भी सुख कम लगता है। ाब दूसरे पति से भी मातृत्व की उपलब्धि की संभावना नष्ट हो ाती है ि ासमें उसे अपना ीवन खत्म होते दिखाई देता है, नये ीवन की राह उसे मातृत्व में दिखाई देती हैं वह कहती है-"हाँ, मैं एक़दम पारंपरिक, ाहिल गंवार प्राकृत औरत हूँ। औरत हूँ मैं। औरत हूँ तो? क्यों न हूँ औरत मैं ि ाल्ला-ि ाल्ला कर कहती हूँ, मैं एक ब ा पालना ाहती हूँ मैं उसका पहला शब्द सुनना ाहती हूँ। पहला कदम संहालना ाहती हूँ, अपनी आँखों के सामने अपने पर निर्भर ब ो को आत्मनिर्भर बनते देखना ाहती हूँ। उसे आत्मनिर्भर बनाने में इनवेस्ट करना ाहती हूँ। मैं पालना-पोसना, सहे ाना-सँवारना ाहती हूँ। मैं एक स ाक होना ाहती हूँ।"[52] ीवन के सभी दुखों का निवारण करने के लिए इस उपन्यास की पात्राएँ ीवन के सार्थकता देने के लिए ब ो ाहती है। एक ब ो के लिए वे सभी को माफ करने के लिए तैयार है। समय के साथ उसका दृष्टिकोण बदल ाता है। "दुख, पीड़ा में डूबे ीवन के महत्वपूर्ण लम्हें सृ ान की गरिमा से लहलहा उठते हैं। भविष्य कुछ भी हो पर अपने पर विश्वास, सृ ान के संदर्भ खो ाती मारियान स्त्रियों के लिए विकल्प सौंपती है। वह कहती भी है कि क्या वाकई एक वक्त था ाब वह एक ब ो के खातिर अपनी ि ांदगी के ह ारों-लाखों लम्हें बेमानी करने पर आमादा हैं। मृदुला गर्ग स्त्री के इस भ्रम को तोड़ने में सफल होती है कि मातृत्व ही एकमात्र सृ ान है और औरत अकेले सृ ान नहीं कर सकती। स्त्री को अपने अकेले की सृ ान क्षमता

[52] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.104

पर विश्वास करना ही होगा। मारियान आ ा भले ही न पह ानी ाए, उसका संघर्ष लंबा और सघन है। पर रास्ता यहां से भी है, मृदुला गर्ग का संकेत है।"[53] उपन्यास में अनेक स्त्रियाँ हैं ो अपने-अपने स्तर पर ीवन को ीने का साहस करती हैं। नीर ा, नमिता, असीमा, स्मिता, नर्मदा तथा मारियान की कथा से उपन्यास स्त्री संवेदना की उन बीहड़ स्थितियों तक पहुँ ने का यत्न करता है िसमें स्त्रीत्व कोई ल ा ानक या हास्यास्पद भेद नहीं रहता। स्त्री अपनी ेतना में दायित्व और संघर्ष के ऐसे बिंदु पा ा पहुँ ाती है ाहाँ उसका ीवन ही एक 'धर्म' बन ाता है और व्यवहार ही 'दायित्व'।"[54] 'कठगुलाब' की स्त्रियों में स्त्री- ेतना, स्त्री-विद्रोह, प्रतिशोध की भावना को लेखिका ने केंद्रित किया है। पुरुष शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाना, स्त्री को बलात्कार की समस्या से ू ाते हुए दिखाना, स्त्री का स्वावलंबी बन कर आत्मनिर्भर होना, पुरुष के अत्या ार को मुहतोड़ ावाब देना, इन सभी स्थितियों के माध्यम से स्त्री के अंतर्मन को उ ागर किया तथा बाल-म ादूरी स्त्री शिक्षा, अकेलेपन की पीड़ा आदि के स्वरूप को उभारा गया है। नर्मदा के माध्यम से बाल-म ादूरी को निम्नवर्गीय परिदृश्य को दर्शाया गया है। स्मिता, मारियान के माध्यम से दो-दो विवाह के उपरांत भी अकेलेपन की समस्याओं को उभारा गया है। नीर ा, नमिता तथा असीमा और उसकी माँ की दशा और अंतर्मन को दर्शाया गया है। इन सभी पात्रों में स्वयं के लिए संघर्ष एवं स्वावलंबी स्वभाव तथा आत्मनिर्भर होने की नियति को उभारा गया है। इस उपन्यास में फेमिनि म की स्वर-ध्वनि प्रमुख रूप से दिखाई देती है। मृदुला ी ने स्त्री समस्याओं को इसके मद्देनज़र उठाया और समाधान भी प्रस्तुत किया है।

---

[53] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.185
[54] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.114

3.2.5 संवेदनशीलता की ि तेरी : ंद्रकांता

ंद्रकांता कृत अपने-अपने कोणार्क (1995) उपन्यास है िसमें माध्यवर्गीय ीवन की विडंबनाओं को व्यक्त करने में ंद्रकांता को विशेष सफलता मिली है।

3.2.5.1 अंतरंग सपनों की तलाश : अपने-अपने कोणार्क

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा 1997 में ंद्रकांता को पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी र नाओं पर इन्होंने अलग-अलग अकादमी द्वारा पुरस्कार प्राप्त किये हैं। "अपने-अपने कोणार्क : यानी कश्मीर से उड़ीसा का सफर। कश्मीर की सरसब ावादी मेरी न्मभूमि है। वहाँ का विशिष्ट परिवेश और वहां के लोकरंग मेरे मन में बसे हैं, मेरी सो ा और मेरे संस्कारों का हिस्सा है। लेकिन फिर भारत के अनेक प्रांतों में रहने-बसने का अवसर मु ो मिला-आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, रा ास्थान, उत्तर प्रदेश आदि की ीवन शैली लोकरंगों और परंपराओं की महक मैंने महसूस की है और उनके विशिष्ट परिवेश को तहेदिल से ि ाया भी है।"[55]

उड़ीसा की सांस्कृतिक धरोहर कोणार्क के शिल्पियों से प्रभावित लेखिका ने कोणार्क के संपूर्ण ीवन को ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिदृश्य के साथ वर्तमान की स ाइयों के साथ ोड़कर अपने-अपने कोणार्क की र ना की। इस उपन्यास की पात्र कुनी के रूप में एक ऐसी स्त्री की नियति का ि त्रण किया है ो शिक्षित है आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर है। इस पात्र के बारे में लेखिका कहती हैं-"संयोग से मु ो वहाँ कुनी मिली, उसने मु ो काया प्रवेश करने की इ ाज़त दी। वह माध्यम बनी आम ओड़िया ान को उसके विगत और वर्तमान के साथ प्रस्तुत करने के लिए। 'मोर गौरव ागन्नाथ' में विश्वास करता आम ओड़िया ान अपने पारंपरिक आलोक से मुग्ध, रक्षणशील एवं संस्कारवान भी है

[55] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-भूमिका (क)

और हम सबकी तरह अंधविश्वासी एवं रू ़ मानसिकता से ग्रस्त भी। ... कुनी ऐसे ही एक रक्षणशील परिवार की बड़ी बेटी है-ह ारहा दायित्वों की साँकलों में कैद।"[56] गोकि वह उन्हें साँकले सम ाती नहीं। "वह अपनी लीक आप बनाती, वक्त की स ाइयों के रू-ब-रू होते अपने भीतर को ानने और पाने की कोशिश करती है।"[57]

इस उपन्यास में मध्यवर्गीय उड़ीसा परिवार के नैतिक मूल्यों को दर्शाया गया है। इसकी नायिका नौकरीपेशा है। घर की िम्मेदारियों के प्रति स ाग है तथा अपने दायित्वों को पारंपरिक ंग से निभाती है। पुरानी लीक से हटने की उसने कोशिश नहीं की क्योंकि उसकी मानसिकता में रूि ग्रस्त वातावरण ने घर कर लिया था। लेखिका ने "एक ऐसी स्त्री की पीड़ा भरी स्थिति प्रस्तुत की है, ाो प ़ी-लिखी और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने पर भी रूि ़वादी संस्कारों से ग्रस्त परिवार, तिलक दहे ा की प्रथा, अपने स्वाभिमान और परिवार की स्वयं ओठी, िम्मेदारियों के ालते बड़ी उम्र तक अविवाहित रह ाती है। उसके सामने भी अपनी िंदगी को व्यवस्थित करने की समस्या है, ाो अंततः हल भी होती है पर इस बी ा उसे िान असह्य पीड़ादायक स्थितियों से गु ारना पड़ता है, उनका अंकन ंद्रकांता ने प्रभावशाली रूप में किया है।"[58] कुनी ब ़ती उम्र तथा एकाकीपन और अनिर्णय की मानसिकता में अपना समय बिता रही है। सिद्धार्थ के परि ाय से उसे स्त्री होने तथा एकाकी होने का अहसास होता है। वह उससे प्रेम करने लगती है। पर रूि ़ग्रस्त वातावरण तथा अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण यह संबंध समाप्त हो ाता है। उस पर उसकी भाभी की उपेक्षा उसे हमेशा सहनी पड़ती है। वह ननद की आज्ञा से ालना खुद का अपमान सम ाती है और हमेशा कोई-न-कोई हंगामा खड़ा करती है। घर में तनाव निर्माण करना उसकी

---

[56] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-भूमिका (ख)
[57] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-कवर पे ा
[58] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.422

आदत बन ुकी थी। एक दिन वह कहती है-"नानी को अब शादी कर ही लेनी ाहिए। बाद में तो कोई दुहा ू भी नहीं मिलेगा। ... दीदी बू ़ी हो ाएँगी तो हमें ही देखना पड़ेगा न?"[59] अंत में उसका विवाह अनिरुद्ध से हुआ ो विधुर था। उसके दो ब े थे। स्थितियों को मद्देनज़र रखते हुए कुनी ने अनिरुद्ध के साथ उसके ब ों को भी अपना लिया। "पुरुष स्त्री को आदर दे, प्यार और विवेक से उसे उसकी गह दे, तो औरत भी पूरे समर्पण से उसके इर्द-गिर्द बेल-सी लिपट ाती है। मैं भी अनिरुद्ध की पतनी बनकर उसकी अपनी हो गई।"[60] कनी ने सामा िक दायित्व तथा पारिवारिक िम्मेदारियों के बी अपने अंतरंग सपनों को अपने में ही समाहित रखा और नये ीवन को सार्थकता देने के लिए आगे ब ़ी। इस उपन्यास में अधिक उम्र की कामका ी स्त्री की समस्याओं को उठाया गया है िसमें नायिका अपनी पारंपरिक लीक से नहीं हटती, ब ़ती उम्र को देख कर एक दुहा ू से शादी कर लेती है। अपने ीवन को उसके अनुरूप ाल लेती है। दो ब ों के पिता डॉ.अनिरुद्ध को अपने ीवन-साथी के रूप में स्वीकार कर अपने ीवन को सार्थकता प्रदान करती है।

3.2.6 अद्‌भुत ीवट स्त्री : प्रभा खेतान

प्रभा खेतान कृत आओ पेपे घर लें (1990), छिन्नमस्ता (1993), अपने-अपने ेहरे (1994), पीली आँधी (1996) और तालाबंदी (1990) उपन्यास हैं। अंतिम दशक के स्त्री-लेखन में प्रभा खेतान विशेष स्थान रखती हैं। इन्होंने बदलते परिवेश में बदली स्त्री की मानसिकता के साथ ुड़ी हुई मारवाड़ी स्त्री समस्याओं के साथ-साथ अमरीकी, ीनी, पाश ात्य, भारतीय स्त्री को केंद्र में रखा है। याने विश्व की सभी स्त्रियों की समस्या, संघर्ष एक ही है। शायद थोड़ा हेर-फर हो वे यादा बोल्ड आत्मविश्वासी लगती हैं। हमारे देश की स्त्री आ भी

---

[59] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.95

[60] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.197

कई दायरों में उनसे पीछे की कतार में ही दिखाई देती है। ये भी बोल्ड है आत्मविश्वासी है फिर भी कहीं कुछ खाइयाँ हैं ो उन्हें उभारने में असमर्थ है।

प्रभा खेतान ने बदलते परिवेश में बदलती स्त्री की मानसिकता, समस्याएँ, उनके संघर्षों का ित्रण मारवाडी स्त्री के माध्यम से औपन्यासिक सृ ान किया है। "मारवाडी शब्द सुनते ही कं ूस मारवाडी की छवि ेहन में उभरती है और उनकी औरतें अनप ़, अंधविशवसी व्रत भ ान में गर्क अनाकर्षक मादाओं से अधिक नहीं सम ी गयी हों... ऐसे वर्ग विशेष की नारी का बदलता रूप उसका आत्मविश्वास एवं विद्रोह, अपनी अस्मिता की पह ान में दिसावरी करती अद्‌भुत ीवट वाली नारी के ये तमाम नवीन रूप उपन्यासों में दृष्टिगो र होते हैं। इन सबको प्रभा ी ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा और ित्रित किया है िससे न ही संबंध ीवन की लांछना आयी और न ही ग्लोरिफीकेशन।"[61] इनकी यादातर नायिका मारवाडी परिदृश्य से उभर कर आयी है ो अनेक मुश्किलों से भी अपने ीवन का मार्ग खो ा लेती है। ला ार बने हुए अपना ीवन नहीं ीती। स्त्री की दिशा का संपूर्ण साक्षात्कार इनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है।

3.2.6.1 विश्वव्याप्त त्रासदी का मार्मिक ित्रण : आओ पेपे घर ालें

आओ पेपे घर ालें प्रभा ी का पहला उपन्यास है। यह प्रमुखतः स्त्री केंद्रित उपन्यास है िसमें अमेरीकी परिदृश्य में अमरीकी स्त्री के ीवन की स ाइयों को उ ागर करता है। इसमें लेखिका ने अमरीकी स्त्री के एकाकी ीवन, उसके अकेलेपन की दासता को बड़े ही संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। आइलिन, मिसे ा डी.हेल्गा, केथरीन, मरील सभी पात्र आर्थिक स्वतंत्रता को ीने की आवश्यकता मानी है। सभी संपन्न स्त्रियाँ हैं फिर भी कहीं-न-कहीं वे दुखी हैं। इनके मन में कुंठा, संत्रास भरा हुआ है। अपने शोषण तथा आत्मपीड़न के प्रति आइलिन कहती है-"औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती? वह ितना भी

---

[61] प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत-फ्लैप पे ा

रोती है, उतनी ही औरत होती ाती है।"[62] इसमें लेखिका ने स्त्री विषयक संवेदना को अभिव्यक्त करते हुए उसके शोषण, दमन तथा औरत होने की नियति से नि ात पाने का सवाल उठाया गया है। भाग-विलास में डूबी अमरीकी स्त्री के आंतरिक संत्रास, उसके अकेलेपन, असहायता, पीड़ित होने को दर्शाया गया है। आइलिन दो पतियों तथा पाँ ा प्रेमियों को छोड़ कर कुत्ते पेपे को बेटा बनाकर ीवन के दुखों को भुलाना ाहती है। कुत्ते में आदमी को दखेती हुई खुद को प्रेम करती है।

दाम्पत्य ीवन की विषमता के कारण ब ों का भटकाव मरील की बेटी द्वारा दर्शाया गया है। इसी विषमता के कारण मिसे ा डी दाम्पत्य ीवन में असफल होती है। घर को टूटने से ब ाने के लिए वह हर प्रयास करती है पर अंत में तलाक ले लेती है। हैल्गा को लगता है दुनिया में प्यार शब्द एक म ाक मात्र है। केथरीन पति के पैसों पर ना ा कर ऐशो आराम की ि ांदगी ीना ाहती है। इस प्रकार पाश ात्य परिदृश्य में स्त्री की नियति को पह ानने और उद्घाटित करने का लेखिका ने स ि नात्मक प्रयास किया है। इसके साथ ही लेखिका का स्वयं देखा अमरीकी समा ा की तसवीर भी है। स्त्री ीवन के अंतर्विरोध, तनाव, संबंध वि छेद, दिखावटी ीवन, दाम्पत्य ीवन की टकराहट तथा बिखरते ब ों की मानसिकता, भोगविलास के पीछे पागल अंधी दौड़, आर्थिक समृद्धि के साथ संवेदनशून्यता की पीड़ा को गहरी अनुभूति को वैश्विक स्तर पर स्त्री ीवन की भयावह स ाइयों को दर्शाया गया है।

3.2.6.2 नैतिक मूल्यों का संवाहक : छिन्नमस्ता

यह स्त्री-विमर्श पर केंद्रित मारवाडी परिदृश्य का उपन्यास है। इस कृति में स्त्री ि ांतन और संवेदना को मनोवैज्ञानिक परंपरा के आत्मकथात्मकता को केंद्र में रखा गया है।

---

[62] आओ पेपे घर ालें, प्रभा खेतान-पृ.35

‘छिन्नमस्ता’ (1993) प्रभा खेतान का बहु ा ित उपन्यास है। मारवाडी परिदृश्य में स्त्री-विमर्श के िंतन और संवेदना का मनोवैज्ञानिक धरातल पर आत्म कथात्मक विश्लेषण है। इसमें प्रिया की भोगी व्यथा-कथा का ित्रण है। स्त्री के शोषण, दमन और उपेक्षा में ना सिर्फ पुरुष है बल्कि पूरा परिवार समा ा भी शामिल है। आधुनिक युग में भी स्त्री के प्रति पारिवारिक, सामा िक दृष्टिकोण यथा-तथा बना हुआ है। स्त्री अपनी लड़ाई खुद लड़ रही है। ागरूक है। संघर्ष शक्ति से कर रही है। फिर भी भोगनेवाले छोर पर ही खड़ी है। प्रिया ब ापन से ही उपेक्षा, अपमान, दुतकार और फटकार की पीड़ा के साथ बड़ी हुई है। पिता मरने पर बड़े भाई की वासना का शिकार बनने से वह और भी सहमी, डरी, उपेक्षित रही है। समय के साथ वह विद्रोह करना सीख लेती है। आधुनिक स्त्री की त्रासदी का उसके संकल्प का लेखा- ोखा िसमें "स्त्री अपना अधिकार हासिल करने के लिए अपना भाग स्वयं निर्मित करने के लिए संघर्ष की राह पर है। यही छिन्नमस्ता का विषय है।"[63]

छिन्नमस्ता का विषय प्रिया ैसी संवेदनशील आधुनिक स्त्री के लिए बहुत सार्थक मिथक है, ो अपना कटा सिर हाथ में लेकर, पुरुष समा ा से संघर्ष कर रही है। फिर भी शून्य में ीती हुई अकेलेपन से भयभीत है।

प्रिया के माध्यम से लेखिका ने सदियों से शोषित-पीड़ित स्त्री की संवेदनशीलता और उसके ीवन की सार्थकता ाहाँ प्रश्न भी है समाधान भी समा ा और परंपरा के ाड़े मूल्यों को ुनौती देने का साहसिक प्रयास किया है।

3.2.6.3 रिश्तों का द्वंद्व : अपने-अपने ेहरे

अपने-अपने ेहरे प्रभा खेतान का मारवाड़ी परिवार की ंतरंग कथा का दस्तावे ा है। इसमें प्रभा ी स्त्री नियति और उसके दूसरे पहलू को केंद्रित करती है। इसमें स्त्री अस्तित्व के बोध, प्रश्न तथा निष्कर्ष को गहरी संवेदना के साथ

---

[63] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.384

दर्शाया गया है। इसमें स्त्री पह ान पुरुष की तलाश मात्र नहीं है। उसका अपना अस्तित्व है, अपनी स्वयं की पह ान तथा सार्थकता है। उपन्यास की रमा सो ती है-"वह प्यार तो एक बार करती है बस एक बार एक पुरुष से। कभी शादी के बाद कभी शादी के पहले इसके बाद तो वह अपने आपको ोलना सीखती है।"[64] सही अर्थों में इसे प्रभा खेतान की आत्मकथा का अधूरा अंश माना ाता है। इसकी नायिका 'रमा' है। इसमें उपन्यास में विवाह, प्रेम, पति, ब े आदि से अलग हटकर प्रभा खेतान ने 'स्त्री-अस्तित्व' को पह ानने की कोशिश की है। उन्होंने यह बतलाने की कोशिश भी की है कि स्त्री द्वारा की ानेवाली खो ा में मात्र पुरुष ही नहीं है, उसे स्वयं को भी खो ना है।"[65]

रमा एक विवाहित पुरुष से प्रेम करती है ो बाल-ब ों वाला व्यक्ति है िसकी पत्नी फूहड और गँवार है। उसे प ़ी-लिखी संभ्रांत आधुनिक स्त्री ाहिए थी ो रमा के रूप में मिल ाती है। रमा अपने कला कौशल से बि नेस के साथ उसे भी संभालती है। पर उसे समा ा 'दूसरी औरत' होने की व ाह से हेय दृष्टि से देखती है। विडंबना यह है कि न ही पत्नी सुखी है और न ही प्रेमिका खुश रह पाती है। "रमा के रूप में 'दूसरी औरत' की पीड़ा अंतर्द्वंद्व और आत्म-मंथन ही इस उपन्यास का केंद्रीय विषय है िसमें वह हारती, टूटती तार-तार होती है।"[66] सामा िक और पारिवारिक मनोदशा को इसमें दर्शाया गया है। 'दूसरी स्त्री' होने की पीड़ा को स ीवता के साथ ित्रित किया गया है। िसमें टूटती, बिखरती हुई रमा फिर से ीने की कोशिश करती है। लेखिका ने समा ा की सभी स्त्रियों को ाहे वह मारवाडी हो या और किसी वर्ग-समुदाय की उसकी आत्मकथा का अंकन किया है। स्त्री की व्यथा-कथा का विश्लेषण किया है। "पुरुष प्रधान समा ा में हर

---

[64] प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत-पृ.44

[65] प्रभा खेतान का औपन्यासिक कृतित्व, निमिषा राय-दस्तावेज़ 108/ ुलाई-सितंबर 2005-पृ.40

[66] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.385

वर्ग की स्त्री को अंततः उपेक्षित, आहत और अपमानित होना पड़ता है। अगर स्त्री इस सामा ाक ाल से मुक्त होना ाहती है तो इसमें ह र् क्या है? इस उपन्यास का स ा एक परिवार में होने वाली समस्याओं का दर्शनशास्त्र है। मानो प्रभा ाी ने इस कृति के बहाने तमाम अमीर परिवारों, उनके मुखिया, उनकी स्त्रियों के नि ाी संसार को बेबाकी के साथ कह डाला हो।"[67]

3.2.6.4 पीर् ़ियों का संघर्ष तथा स्त्री पीड़ा : पीली आँधी

इस उपन्यास में भी लेखिका ने मारवाडी पृष्ठभूमि को रेखांकित किया है। यह भी सर्वाधिक र् ाित उपन्यास है। इसमें प्रौ ़ अनुभव के साथ परिपक्व िंतन, व्यवस्थित कथा भाषा में लेखिका को यशस्वी बनाने में अधिक सहायक बनाया है। 1932 से 1940 की अवधि में रा ााओं औश्र सामंतों के अत्या ाारों से मारवाड़ी बनिये अपनी ामीन छोड़कर बंगाल तथा बिहार की ओर पलायन करने लगे थे। "वास्तव में पीली आंधी संयुक्त परिवार को न टूटने देने की िाद में घर की स्त्रियों की आंतरिक घुटन और आंतरिक कलह से उप ाी किया प्रतिक्रिया की कथा है। इसमें मारवाड़ की सामंतीय व्यवस्था के उत्पीड़न और अकाल से त्रस्त मारवाड़ी ााति का कलकत्ता आने और इस बेगानी धतरी पर अनेक अवरोधों-विरोधों के बाव ूद अपने श्रम एवं व्यापार-कुशलता के बल पर व्यवस्थित और समृद्ध होने का अत्यन्त विश्वसनीय िात्रण किया गया है। यही नहीं, इस पूरे दौर में समय के साथ इस ााति की मानसिकता एवं ाीवन-शैली में होने वाले परिवर्तनों तथा आधुनिकता के दबाव से उदीयमान स्त्री ेतना का सूक्ष्म विश्लेषण इस उपन्यास की बड़ी उपलब्धि है।"[68]

---

[67] प्रभा खेतान का औपन्यासिक कृतित्व, निमिष राय-दस्तावेज़ 108/ ुलाई-सितंबर 2005-पृ.41

[68] प्रभा खेतान का औपन्यासिक कृतित्व, निमिष राय-दस्तावेज़ 108/ ुलाई-सितंबर 2005-पृ.41

संयुक्त परिवार को ोड़कर रखने की िद्द घर की स्त्रियों के सड़ते-लड़ते संबंधों की गाथा तथा पारंपरिक आत्म संघर्ष में छटपटाती स्त्री शक्ति अपनी मुक्ति के लिए अब नई पह ान बना रही है। एक तरह से पीली आंधी मुक्ति काली स्त्री की पह ान तथा मुक्ति संघर्ष का आधुनिक परिदृश्य प्रस्तुत किया गया है। तीन-तीन पी ियों की स्त्रियों का आत्मसंघष्र दर्शाया गया है। "सभी मिलकर लगभग डे ़ सौ साल की यात्रा करती हुई अपनी-अपनी पी ़ी की कथा कहती हुई वर्तमान समय तक पहुँ ाती है। पारिवारिक संर ना, वि ार और मुक्ति कामी स्त्री के व्यक्तित्व, समा ाशास्त्र ओर अर्थशास्त्र को सम ाने और सम ाने की दिशा में 'पीली आंधी' एक उल्लेखनीय उपन्यास है।" विस्तृत और वैविध्यपूर्ण कथाफलक के कारण मारवाड़ी समा ा के संघर्ष और पीड़ा का महाकाव्य बन गया है। 'पीली आंधी' प्रतीक है, सब कुछ उ ाड़ ाने का इस पीली आंधी के बाद कैसे एक छोटा-सा अंकुर फूटता है और वह फलने फूलने लगता है, यही इस उपन्यास का केंद्रीय वस्तु है। इस वस्तु में सोमा पुरानी लोक को तोड़ती हुई पारंपरिक रू िता का विद्रोह करके मातृत्व के लिए करोड़पति का घर छोड़ कर प्रोफेसर के घर रहती है। इसमें नायिका अपनी अस्मिता की पह ान के लिए आर्थिक स्वतंत्रता तथा मातृत्व के लिए भविष्य का सपना सार्थक करती है। अपना समा ा बनाने का प्रयत्न करती है। िसमें लेखिका ने तीनों पी ियों की स्त्रियों के संघर्ष को दर्शाया गया है।

3.2.7 युवा पी ़ी की सार्थक प्रतिनिधि :अलका सारावगी

अलका सारावगी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से डॉ.शंभुनाथ के निर्देशन में रघुवीर सहाय पर शोध कार्य किया। साथ ही र्नलिज़्म में डिप्लोमा किया है। आरंभिक लेखन के समय वह डॉक्टर ट्रीटमेंट के कनेक्टेड और नारी समस्याओं पर लेख लिखा करती थीं। लेखिका ने आरंभ समय में र्नलिस्टिक लेख लिखती रहीं। इसलिए कि र्नलिज़म में डिप्लोमा किया है। खासकर Doctors

Treatment का Connected issues पर लिखना आरंभ किया। लेखिका बनने का शुरुआत यहीं से हुआ। इन्होंने पहली कहानी का शीर्षक रखा 'आप की हंसी' वर्तमान साहित्य के विशेषांक में प्रथम र ाना के रूप में छपा था। 'आपकी हंसी' रघुवीर सहायक की कविता है, ाो अलका को बहुत पसंद है।

इन्होंने एम.फिल. के बाद लिखना आरंभ किया। इनको लगा कि वह ाीवन से बहुत असंतुष्ट हैं, इसलिए कि ाीवन बिताने का तरीका यह नहीं है, किताबों की दुनिया से धक्का मार कर इस तरह की ांदगी में डाल दिया कि उनके लिए ब ाों की परिवरिश करना कठिन था।

3.2.7.1 आत्मकेंद्रित समा ा की पराधीन प्रवृत्ति : कलिकथाः वाया बाईपास

अलका सारावगी कृत 'कलि-कथा वाया बाइपास' इनका पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में स्वतंत्रता के प ाास वर्षों के समय का अपने ंग से किया गया विश्लेषण है। यह विश्लेषण ऐतिहासिक परिदृश्य में उपनिवेषवाद के उस समय शुरू होता है ाब 18 वीं सदी में ब्रितानी सरकार भारत में अपनी ाड़ें ामा रही थीं और अपने लिए एक समर्थ वर्ग तैयार कर रही थी। यहाँ से शुरू हो कर यह उपन्यास भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के कुछ संदर्भों को छूते हुए आ ा तक पहुँ ाता है और सवाल करता है कि ान मूल्यों और सपनों को लेकर यह संघर्ष किया गया उन संघर्षों का क्या हुआ? 50 सालों में ाो हमारा मध्यवर्ग तैयार हुआ है, क्या उसकी इ छाएँ, आकाँक्षाएँ वही हो गई ाो उपनिवेषवाद के आरंभिक समय में उस वर्ग की थी, ाो विदेशियों के साथ मिलकर अपने स्वार्थों की पूर्ति कर रहा था। यह कृति स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उप ो आत्मनिर्भरता और धर्मनिरपेक्षता ैसे मूल्यों के संदर्भ में आ ा के मध्यवर्ग की आलो ाना करता है।

प्रभा खेतान ने पीली आंधी में ास प्रकार मारवाड़ी समा ा की तीन पी ियों के ाीवन संघर्ष तथा स्त्री पीड़ा को केंद्र में रखा था। उसी प्रकार अलका सरावगी ने मावाड़ी परिवार की पाँ ा पी ियों की संघर्ष कथा तथा स्त्री संघर्ष को प्रस्तुत

किया है। उपन्यास में लगभग तीन सौ वर्षों की मारवाड़ी समा ा की अनेक छवियाँ सामने आती हैं।

इस उपन्यास में प्लासी युद्ध (1757) में अंग्रेज़ी का साथ निभंने वाले अमी ंद से लेकर बाबरी ँ ा विध्वंस होने तक को कहानी के साथ लालू, राबड़ी, सोनिया और बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक के संदर्भों को लिया गया है। प्रौ . दृष्टि और शिल्प के नये कौशल के कारण ा ि ति उपन्यास है।

मारवाड़ी औरत की पीड़ा को उपन्यास में संवेदनात्मक मार्मिक रूप में उभरती है, वह पीड़ित है, शोषित है, परंतु विद्रोह का प्रयास कहीं नहीं दिखाई देता। बा ारवाद की भोगवादी मानसिकता के ाकड़े हुए मारवाड़ी समा ा की नयी पी . ी की असंवेदनशीलता को उपन्यास में दर्शाया गया है। "अलका सरावगी के इस उपन्यास में कथ्य का संयो ान बहुत कलात्मक ंग से हुआ है। उपन्यास के केंद्र में एक पूरा मारवाड़ी वर्ग है ो समग्र उत्त्श्र भारतीय ानता का प्रतिनिधित्व करता है। इस वर्ग के अतीत और वर्तमान तथा आदर्श और यथार्थ का ऐसा विलक्षण मेल किसी भी अन्य उपन्यास में ऐसी तन्मयता से शायद ही मिले। यहाँ स्त्री का एकल ीवन नहीं है। वह अपनी पूरी पारिवारिकता के साथ आती है। किशोर की भाभी यानी ललित की विधवा पत्नी को अगर लक्ष्य करें तो उसके प्रेम, समर्पण और मारवाड़ी परिवार में उसकी नियति को अलका सरावगी ने ीवंतता के साथ प्रस्तुत किया है।"[69] मुख्य कथा की पृष्ठभूमि में स्वाधीनता संघर्ष, बंगाल की दयनीय स्थिति, 1943 का अकाल, सुभाष ंद्र बोस, महात्मा गाँधी की हतया, सांप्रदायिक हिंसा के प्रसंग गहरी संवेदना के साथ अंकित होने पर भी अलग-अलग ालकियों ैसे प्रतीत होते हैं। ... इस व्यापक और वैविध्यपूर्ण कथ्य की प्रस्तुति के लिए अलका सरावगी ने रामकिशोर बाबू के बाइपास स ारी के कारण विक्षिप्त होकर अतीत को ीने लगने की ि ास प्रविधि का आविष्कार किया है, वह

[69] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ोशी-पृ.118

ामत्कारपूर्ण है और उपन्यास की ा प्र का कारण भी। इस प्रविधि के साथ रामकिशोर बाबू की डायरी का उपयोग करके सरावगी ने अपने कथाशिल्प को ामत्कारपूर्ण ही नहीं, कथ्य के लिए आवश्यक भी बना दिया है।"[70]

अलका सरावगी ने कलकत्ता शहर को केंद्र में रखा है। इसमें मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित 70 वर्षीय किशोर बाबू के इर्द-गिर्द घूमती है। कथा की शुरुआत किशोर बाबू की बाईपास स िरीस शुरू होकर अतीत से वर्तमान तक का साक्षात्कार होता है। साथ-साथ सामा िक, आर्थिक, रा ानीतिक, घटनाओं को लेखिका ने खास संदर्भों के रूप में उठाए हैं। इसमें 300 वर्षों से दबी, प्रताड़ित, उपेक्षित शोषित स्त्री का ि ात्रण मिलता है ाो समय-समय पर अपने असहाय होने की दासता बताती है। मन-ही-मन कु . ती रहती है पर विद्रोह नहीं कर पाती। उपन्यास की कथावस्तु मुख्य रूप से 'फ्लैश बैक' पद्धति में दिखाई देती है। पूरा उपन्यास वर्तमान में ालते- ालते अतीत में ाांकने लगता है।

मारवाड़ी समा ा की स्त्रियों की स्थिति, उनका पिछड़ापन, आत्मकेंद्रित मारवाडी समा ा, रामविलास और शांता भाभी का अकेलेपन की पीड़ा स्त्रियों की पराधीन प्रवृत्ति, स्त्री की अशिक्षा, पिछड़ापन और पराधीनता, भेदभाव, पारिवारिक टूटन, अकाल की भयावहता, सांप्रदायिक फसाद की भयंकरता, गर्भ ाल परीक्षा, टेस्ट ट्यूब बेबी आदि पर प्रकाश डालना इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है। इसके साथ बहुत सारे नारीतर विषयों का ि ात्रण किया है।

3.2.8 अंतिम दशक की खो ा : गीतां ाली श्री

गीतां ाली श्री ने इतिहास में एम.ए., एम.फिल. पी-ए ा.डी. ावाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली और सया ाीराव यूनिवर्सिटी बड़ौदा से किया। इनका शोध ग्रंथ 'बिटवीन टू वर्ल्ड्सः एन इंटेक ाुअल बायोग्राफ़ी ऑव प्रेम ांद' है। वे कहानियों, उपन्यास आदि लिखती हैं। इंदु शर्मा कथा सम्मान, हिंदी अकादमी का

[70] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.397

साहित्यकार सम्मान, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की सीनियर फ़ेलोशिप, ापान फाउंडेशन की फेलोशिप तथा ार्ल्स वालेस ट्रस्ट की फेलोशिप मिली है। माई के अंग्रेज़ी अनुवाद को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

3.2.8.1 मोहभंग का तीव्र एहसास : माई

गीतां ाली श्री कृत 'माई' (1993) उपन्यास में नयी पी ़ी का पुरानी से मोहभंग, स्त्री की परंपरागत दृष्टि, नई नैतिकता के माध्यम से व्यक्तित्व को उभारना, पितृसत्ता के बी ा स्त्री की अपने लिए नयी ागह खो ाने का प्रयास, सामा ाक व्यवस्था में स्त्री की पह ाान का संकट, स्त्री-विमर्श का महत्वपूर्ण बिंदु है।

इस उपन्यास में नयी पी ़ी का पुरानी पी ़ी से मोह भंग का एहसास है। इस पर प्रभा खेतान के वि ाार दृष्टिगत हैं-"मोहभंग तो तभी होता है, ाब किसी परम सत्य की अवधारणा का विखंडन हो या इस परम सत्य के ाारों ओर लिपटे हुए धुंध के हटाने की कोशिश हो या शास्त्रां को ाुनौती देने वाले तर्कों का इस्तेमाल हो।"[71]

ि ासमें लेखिका ने नई नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में 'नई स्त्री' के व्यक्तित्व तथा उसकी अस्मिता को पह ाान देने का प्रयास किया है। "पिछली पी ़ी की स्त्री को हम आ ा भी भूमिकाओं में परिभाषित करते और रिश्तों में ाीते हैं। 'माई' में यह प्रश्न शिद्दत से उठाया और वि ाारा गया है।"[72] माई को सम ाने की कोशिश रिश्तों में बाँधकर की गई है। बाबू की पत्नी, दादा-दादी की सेवा करनेवाली आज्ञाकारी, सुबोध, सुनैना की 'माई' को इसी रूप में देखा गया है। र ाो के रूप में उसकी कोई पह ाान नहीं है। उसके व्यक्तिगत रूप की कोई

---

[71] स्त्री-अस्मिता : साहित्य और वि ाारधारा, ागदीश्वर ातुर्वेदी, सुधा सिंह-पृ.351
[72] स्त्री ि ांतन की ाुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.168

पह ान नहीं है। सिर्फ "माई को हमेशा उसकी भूमिकाओं के 'धड़' से पह ानने की कोशिश की गई उसके सिर को (व्यक्तिगत, पह ान, अस्मिता), उसके धड़ से ोड़ने की कोशिश नहीं की गई।"[73] यह उपन्यास "एक ऐसी औरत की गाथा है ो घर को संभालती और सहे ाती है। लातार उसेमं खपती ाती है, पर उसकी आत्मा को पह ानने की ारूरत कोई नहीं सम ाता... परिवार के बी ा एक म ाबूत धुरी बनी औरत किन-किन स्थितियों से गु ारती है और खामोश होकर अपने को विसर्ग ित करती ाती है। मूक बनी सब कुछ सहते ाने की यह प्रवृत्ति भारतीय औरत की नियति है और यह नियति को गीतां ालि श्री ने बखूबी उद्घाटित किया है।"[74] माई द्वारा पुराने मूल्यों का वहन करते दर्शाया गया है। इसके विपरीत 'माई' की बेटी सुनैना के माध्यम से पुरानी लीक से हटकर पुराने नैतिक मूल्य का अतिक्रमण करते हुए दर्शाया गया है। "अपनी समरूपा उत्पन्न करना माँ के लिए बड़ा महत्वकारी है। पुण्य है। बेटी के पैदा होते ही माँ सदा ीवा हो ाती है। वह कभी नहीं मरती। हो उठती है वह निरंतरा। वह आ ा भी है कल भी बेटी के रूप में रहेगी। हमेशा ीवित रहेंगे बेटी से बेटी तथा उसकी भी बेटी में" पर इस उपन्यास की सुनैना 'माई' नहीं बनना ाहती। वह कहती है-मु ो माई नहीं बनना, मैं माई वैसे भी नहीं बनूँगी... मैं ाहूँ भी तो माई नहीं बन सकती, वह सिफत नहीं मु ामें, मैं माई को ाक ोर के ाटक देती हूँ। अलग, मु ो त्याग बुरा लगता है, क्योंकि वहीं माई का बो ाल इतिहास है... मु ो उसकी तरह नम्रता और उदारता को अपराध नहीं बना देना है, उसके इतिहास से लड़ना हे, उसे नकरना है, और इसीलिए लेना है, लेके पाना है..." हर नई पी ़ी का पुरानी पी ़ी से यह द्वंद्व दिखाई देता है। माँ सब कुछ खोने के लिए तत्पर रहती है। बेटी सब

---

[73] स्त्री ि ंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.169

[74] उपन्यास की समकालीनता, गोपाल राय-पृ.116

कुछ पाने के लिए उत्साहित रहती है। माँ बेटी का यही द्वंद्व इस उपन्यास में दिखाई देता है।

3.2.8.2 सांप्रदायिक वैमनस्य : हमारा शहर उस बरस

इनका 'हमारा शहर उस बरस' (1998) ार्ति उपन्यास है ािसमें हिंदू सांप्रदायिकता का ात्रिण किया गया है। उपन्यास के केंद्र में एक शहर है, ाहाँ एक 'मठ' है और एक विश्वविद्यालय दोनों संस्थाएँ सांप्रदायिकता को ब ़ावा देते हैं। रहस्यपूर्ण आतंक शहर में छा ाता है ािसका तनाव एक असामान्य स्थिति एक मुस्लिम पात्र को अकेले होने तथा उसकी मानसिकता का ात्रिण किया गया है। इसमें सांप्रदायिकता की भयावहता को दर्शाया गया है। इसकी नायिका श्रुति है ाो हनीफ से विवाह करती है। विवाह के बाद भी अपने धर्म को नहीं बदलती, हनीफ भी ऐसा ही करता है। धर्म को भूलकर सूखी दाम्पत्य ाीवन बिताते हैं। श्रुति का एक संवेदनशील तथा विवेकशील स्त्री गुण उभारा गया है, ािसमें वह राष्ट्रीय एकता की गवाही देती है।

3.2.9 हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका : सूर्यबाला

सूर्यबाला हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका मानी ााती हैं। र ानाकार के लिए हर र ाना एक ाुनौती होती है। इन ाुनौतियों को ोल ााने के दौरान रोमां ाक अनुभूतियाँ उसका सर्वोपरि सुख है। और इस उपन्यास को लिखने के दौरान हर कुछ कदमों के बाद ोतन-अव ोतन के तमाम सूत्र आ-आ कर उल ाते रहते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अपनी र ानाओं से सूर्यबाला महत्वपूर्ण लेखिका मानी ााती हैं।

3.2.9.1 दाम्पत्य ाीवन का विघटन : यामिनी कथा

'यामिनी कथा' (1991) में दाम्पत्य ाीवन का विघटन तथा पारिवारिक ाीवन में असफल पत्नी तथा असफल माँ के रूप में यामिनी का ात्रिण किया गया है। नये सिरे से नये संबंध बनाकर रहने का आग्रह, आधुनिक ाीवन की एक

स ाई है िसमें आर्थिक और सामाि क सहारे के लिए आधुनिक स्त्री की ाटिलता को लेखिका ने उभारा है। "सूर्यबाला ने यामिनी कथा में पुनर्विवाह और संतान की समस्या को एक दूसरे कोण से प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस उपन्यास में एक विभक्त माँ और विभक्त पत्नी के मानसिक तनाव और अनेकस्तरीय यातना तथा वर्तमान पति और पूर्व पति और पूर्व पति से उत्पन्न संतान के प्रति निष्ठाओं के बी ा तनाव ोलती स्त्री का बेहद ाक ोरने वाला ि त्रण किया है।"[75] उसके ोवन संघर्षों के निर्माण को दर्शाया गया है। इसमें विधवा ोवन की त्रासदी है। समा ा के नियमों को ठुकरा कर निखिल से पुनर्विवाह करती है ि ससे समा ा के व्यंग्य बाणों का उसे शिकार बनना पड़ता है।

3.2.10 संवेदनशील लेखिका : नमिता सिंह

नमिता सिंह ने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान) तथा अलीग ़ विश्वविद्यालय से पी-ए ा.डी. की उपाधि प्राप्त की।

खुले आकाश के नी े, रा ा का ौक, नीलगाय की आँखें तथा ंगल-गाथा, अपनी सलीबें आदि उनकी ार्ि ति र ानाएँ हैं। संप्रति वे विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान, टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीग ़ में कार्यरत हैं। आप आ ा हिंदी ागत की ानी-मानी लेखिका हैं एवं ानवादी महिला संघ की सदस्या भी हैं। आपकी लेखनी अथवा र ानात्मकता का प्रमाण आपके कृतित्व से लगाया ा सकता है ो वाकई काबिले तारीफ है।

3.2.10.1 मन के अंतर्द्वंद्व : अपनी सलीबें

'अपनी सलीबे' (1995) में स्त्री मन के अंतर्द्वंद्वों को उ ागर किया गया है। इस उपन्यास की नायिका नीलिमा है ो अपने अहम के कारण दाम्पत्य ोवन में कटुता लाती सिर्फ ाति से छोटे होने पर पति को बिना बताये उसे छोड़ देती है। उसे लगता है पति का उसकी ाति छुपाने उसको धोखा देना है। सिर्फ मु े

---

75 हिंदी उपन्यासों का इतिहास, गोपाल राय-पृ.422

नहीं, हम दोनों को ूठ बोला उसने।"[76] इस पर माँ परेशान होकर पूछती है क्या वह पहले से शादी-शुदा था, या उसने किसी और से संबंध ब ़ा लिये थे। इन प्रश्नों में नीलिमा घिर ााती है और कहती है नहीं माँ-"वह हमारे बराबर का नहीं अम्मा! वह ठाकुर नहीं है लेकिन वह ब्राह्मण भी नहीं है। वह बहुत छोटे लोगों में से है ि ानके हाथ का पानी तुम गाँव में शायद आ ा भी न पी सको। उसने हमेशा हमें धोखे में रखा अम्माँ"[77] इस पर माँ कहती है ईशु सम ादार, सीधा-सादा भला इंसान है। उससे कहीं यादा वह तुमसे बहुत प्यार करता है और हमेशा तुम्हारा ख्याल रखता है। तुम्हारी म र्ाी बगैर कुछ नहीं करता। आगे कहती है-"तो! इतनी सारी बातें एक तरफ और सिर्फ एक बात कि वह ााति का छोटा आदमी है, एक तरफ! तुमने दोनों पलड़े बराबर कर दिए। बल्कि सारी अ छाइयाँ खत्म करके तरा ़ू पर सिर्फ उसकी ााति रख दी।"[78] क्या नहीं था तुम्हारे पास। लायक पति। पद-सम्मान। अधिकार और प्रतिष्ठा सबसे महत्वपूर्ण बात पति के हृदय की संपूर्ण स्वामिनी। केवल खानदान की बात पर उसे अकेले छोड़ आयी किसी खानदान की बात करती हो शराबी, ाुआरी और ऐयाशों के ाहाँ औरतें अपने पति की शक्लें देखे मुद्दत हो ााति थी। वह केवल हवेली की सामग्री बन कर बे ाान हिस्सा बन कर रह ााती थी। इसमें नमिता सिंह ने अम्माँ के माध्यम से यथार्थ का दर्शन उसकी ठोस ामीन का, तथा ि ांदगी के सख्त रास्तों का ाीवन दर्शन दिखाया गया है। पुराने मूल्यों को तोड़कर नये मूल्यों को ागाने की कोशिश की है। नीलिमा नौकरीपेशा त्री है ाो पति को छोड़कर अकेले ाीवन यापन कर रही है। अपने आत्मनिर्ाोर तथा आत्मसम्मान से ाीवन से संघर्षरत है। अपने 'स्व' के लिए 'स्वाहा' हो ााती है। यह उपन्यास "नीलिमा नामक युवती के संघर्षों का उपन्यास है। नीलिमा बौद्धिक रूप से स ाेत है अपने भीतर से म ाबूत

---

[76] अपनी सलीबे, नमिता सिंह-पृ.216
[77] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.217
[78] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.218

भी, पर कुछ स्मृतियाँ हैं ाे लगातार उसका पीछा करती है। ईशू की ाहत की स्मृतियाँ साकार भी होती हैं ाब ईश्वर ंद्र के रूप में एक अधिकारी होकर नीलिमा का हाथ थामता है फिर दोनों में ाति के बी ा में ओन से संबंध बिगड़ता हे और घटनाक्रम के बदलते ही ईश्वर मृत्यु के हाथों छीन लिया ाता है। नीलिमा अंदर से टूटती है, पर त्रासदी को सहने का उसमें अपार धीर ा है ाे उसे िंदा रखता है। नमिता ने उपन्यास को संवेदनात्मक ऊँ ााई दी है और स्त्री-परुष के बदलते संदर्भों को गहराई से आंका है।"[79] िसमें अकेलेपन की समस्या, दाम्पत्य ीवन की कटुता, आर्थिक संपन्नता की ऊँ ााई, बलात्कार की समस्या, दहे ा की समस्या, ाति भेद, अपने 'स्व' को बनाने की एकरसता, खानदानी ठाकुर, ामींदारों का आ ा भी व स्वि, मिथ्या लोकला ा ओर कुटुंब-परिवार की आलो ाना तथा सुमित्रा देवी द्वारा स्वावलंबी, आत्मविश्वास, दबी घुटी िंदगी को नकारना, पात्रों के माध्यम से बौद्धिकता का परि ाय दिया है। "नमिता सिंह की कहानियों में ीवन को सही अर्थों में सार्थक बनाने की कोशिश पूरी शिद्दत के साथ मिलती है। आ ा बदलती, सामाि ाक रा ानीतिक और आर्थिक परिस्थितियों में एक ओर रूि गत पूर्वाग्रहों और संस्कार तथा दूसरी ओर यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं के संघर्ष और उनके अंतर्द्वंद्व से उप ाी यह कृति अपने समय को सम ाने के लिए एक कलात्मक हस्तक्षेप है। सामाि ाक सरोकार, संवेदना और शिल्प के अनूठे सामं ास्य को सं ाोये यह उपन्यास नमिता सिंह की कथा-यात्रा का अलग पड़ाव है।"[80]

3.2.11 आधुनिक स्त्री की प्रतिनिधि : मीना शर्मा

मीना शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से 1981 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपकी ाि ति र ानाएँ अनाम प्रसंग, लगभग एक द ान कहानियाँ हैं। आप

[79] उपन्यास की समकालीनता, योतिष ाेशी-पृ.118
[80] अपनी सलीबें, नमिता सिंह, द्वितीय फ्लैप से

16 वर्ष से एक प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान में विभिन्न पदों पर कार्य, वर्तमान में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं।

3.2.11.1 सात्विक प्रसंग : अनाम प्रसंग

मीना शर्मा कृत 'अनाम प्रसंग' (1995) में लेखिका ने प्रगतिशील नायिका का ि त्रण किया है। वह अपनी इ छा, रु ि को महत्व देती है और वह स्कूलिंग के बाद ही नौकरी करना ाहती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो ाने के कारण उसका व्यक्तित्व आत्मविश्वास से भर ाता है तथा वह अपनी इ छानुसार ीती है। पारिवारिक दायित्व उस पर न होने से निश्ि ंत रहती है। अपनी इ छा से प्रेम करती है। उसके साथ ीवन ीना ाहती है बिना किसी शर्त के। ममता में काम करने का प्रकृति ान्य गुण विद्यमान है ि ससे वह एकनिष्ठा और लगन से कार्यक्षेत्र में काम करती है ि ससे प्रकाश अंकल, संतुष्ठ थे। उनके बाद उनके बेटे तथा बॉस अभय साथ ही स्टाफ के सभी कार्यकर्ता उसकी तारीफ करते थे। "वह खूब लगन और मेहनत से काम करती है।"[81] ऑफिस को उसने अपने घर सा ही सम ा था। अपनी उम्र के कीमती साल इसी आफिस की देखरेख में बिता दिये थे।"[82] दफ्तर की मीटिंग का नियो ान वह स्वयं करती थी। उसकी सुंदर व्यवस्था से सभी प्रसन्न होते और उसे बधाई देते थे। उसकी ईमानदारी और निष्ठा को देखकर अभय उससे प्रेम करने लगा था। ममता का सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव उसे बहुत पसंद था। ममता भी अभय से प्रेम करती है। परंतु अभय शादीशुदा था ि ससे घर वाले से उसने विद्रोह करना पड़ा। ीवन में तूफान आ ाता है। फिर भी वह अभय को ाहती है उसके साथ ीवन बिताना ाहती है। ममता कहती है-"अभय मैं तुम्हारे पत्नी और ब ों का बुरा नहीं ाहती। मैं तो ाहती हूँ कि उन्हें उनके पूरे अधिकार मिले, लेकिन अभय में अब तुम्हारे बिना

---

[81] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.13
[82] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.15

रह नहीं सकती। मु ो तुम्हारी पत्नी के अधिकार में से थोड़ा-सा प्यार का हिस्सा ाहिए बस।"[83] ये एक दूसरे से मन से प्यार करते हैं और ममता सम ाती है कि अभय को छोड़कर वह नहीं ी सकेगी क्योंकि प्यार बड़ी से बड़ी मुसीबत सह सकता है पर ुदाई नहीं सह सकता।"[84] अभय का दाम्पत्य ीवन विषमताओं से भरा हुआ था। उसकी पत्नी पारिवारिक िम्मेदारियों को नकार कर अपने ही किसी ऐश्वर्य लोक में ीति थी। पति क्या करता है? कहाँ ाता है? क्या खाता है? उसे कोई िंता नहीं थी। ऐसे में ममता का प्रवेश उसके ीवन को ता ा बनाता है-"ममता किसी एक व्यक्ति के प्रति ही नहीं, पूरी सृष्टि के प्रति स्त्रीयोि ात ममता, कर्तव्यपरायणता और विवेक से संपन्न होती है। ऐसी ही नायिकाएँ अपने दांपत्य का नरक भुगत रहे नायकों को अपने स्नेहिल स्पर्श का मरहम लगाकर ीने का संबल प्रदान करती हैं, वरना वे कब के इस संसार को अलविदा कर ुके होते। किसी युगल के बी ा आयी दूसरी स्त्री हमेशा से इस संसार में आकर्षण का केंद्र रही है, विष पीकर उस स्त्री ने प्रायः ही संसार को अमृत और 'अभय' प्रदान किया है, मगर समा ा इससे अधिकांशतः भयभीत ही हुआ है और ऐसी स्त्री को उसने क्रॉस पर ा.ा दिया है। ममता और अभय की यह कथा वस्तुतः इसी त्रास और क्रॉस की कथा है।"[85]

निष्कर्ष

उक्त सभी लेखिकाओं ने स्त्री से ुड़ी सभी समस्याओं को उद्घाटन अपनी पुस्तकों में संवेदना के साथ स्त्री-प्रश्नों, उसकी समस्याओं, संघर्षों, उत्पीड़न, कुंठा, शोषण तथा अमानवीय व्यवहार, अत्या ार, उपेक्षाओं को केंद्र में रखा है। इन सभी तथ्यों से ये संभावनाओं की तलाश करती दृष्टिगत होती है।

---

[83] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.71

[84] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.121

[85] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा, द्वितीय फ्लैप से

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श : सृ ान के नये संदर्भ के अंतर्गत अंतिम दशक के उपन्यास में नये ि ंतन के आयाम को स्त्री लेखन समर्थ उपस्थिति के साथ दृष्टिगो ार होता है। लेखिकाओं ने उपन्यासों में केवल स्त्री-संघर्षों का ीवन ही नहीं दर्शाया बल्कि पूरे समा ा व्यवस्था की अनेक ांकियाँ भी दर्शायी हैं। सामाि ाक विषमताओं को उ ागर किया गया है। लेखिकाओं ने संवेदनशील भोगे हुए यथार्थ का ि ात्रण तथा ीवन की अनुभूतियों को व्याख्यायिक किया गया है। इन उपन्यासों में भावुकता कम तार्किकता अधिक दिखाई देती है। अस्तित्व, अस्मिता की खो ा, स्वाभिमान, आत्मविश्वास का संबल तथा अपनी समस्याओं, संघर्षों के प्रति स ोत रहते हुए पात्रों को दर्शाया गया है।

स्त्री उत्पीड़न में भारतीय समा ा की ऐसी ही विडंबनापूर्ण वास्तविकताओं को वस्तुपरक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास स्त्री लेखिकाओं ने किया है। इसमें थोथी आधुनिकता, दाम्पत्य ीवन की विसंगतियों, देह-व्यापार के दबलते स्वरूप, घटते स्त्री अनुपात, पारिवारिक परिस्थितियों, स्त्री-शोषण, मीडिया द्वारा स्त्री के ि ात्रण इन सबसे संभावित उत्पीड़न को तर्कपूर्ण और वस्तुपरक रूप में दर्शाया गया है। व्यवहार की शालीनता, संबंधों की पवित्रता एवं निर्णय की वस्तुनिष्ठा से परे आ ा की स्त्री में भड़काऊपन, व्यवहार में बनावटीपन, संबंधों में स्वार्थपरक, आदतों में पशि ामीकरण, मर्यादाओं का खंडन, परंपराओं से मुक्ति, मान्यताओं का खंडन आ ा की स्त्री नियति इन उपन्यासों में नज़र आती हैं। ो अपने आतमगौरव, सम्मान, आत्मनिर्भरता के प्रति स ाग है। पर अपने अमूल्य गुणों का त्याग कर रही है। 'स्व' के लिए 'स्वाहा' होती ा रही है।

* * *

ातुर्थ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री घुटन:विविध संदर्भ और पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में)

ातुर्थ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री घुटन : विविध संदर्भ और पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में)

4.1 पितृसत्तात्मक व्यवस्था

4.1.1 स्त्री की वास्तविक लड़ाई

4.1.2 पितृसत्ता व्यवस्था में सामा ाक ाीवन

4.1.3 स्त्री का वैवाहिक ाीवन

4.2 स्त्री घुटन : विविध संदर्भ

4.2.1 अनमेल विवाह

4.2.2 अकेलापन

4.2.3 दहे ा

4.2.4 बलात्कार

4.2.5 रखैल-प्रताड़ित, उपेक्षित

4.2.6 ाति

4.2.7 प्रेम

4.2.8 पुनर्विवाह

4.2.9 आडंबर, अंधविश्वास

4.3 पुनरुत्पत्ति

4.3.1 स्त्री की ौविक प्रक्रिया

4.3.2 लिंग में भेदभाव

4.3.2.1 लिंग और सेक्स में अंतर

4.3.3 यौनिकता

4.3.4 मासिक धर्म : एक अभिशाप

4.3.5 मातृत्व भावना : विवाह का खण्डन

4.3.5.1 सेगोरेट मदर, खरीदी गई कोख

4.3.6 प्र ानन क्रिया से बिगड़ा स्त्री स्वास्थ्य

4.3.6.1 प्र ानन क्रिया से

4.3.6.2 गर्भपात के कारण

4.3.7 विवाहेतर, विवाहपूर्व काम संबंध

4.3.7.1 विवाहेतर संबंध

4.3.7.2 विवाह पूर्व संबंध

ातुर्थ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(पितृसत्तात्मक व्यवस्था, स्त्री घुटन : विविध संदर्भ और पुनरुत्पत्ति के संदर्भ में)

4.1 पितृसत्तात्मक व्यवस्था

पितृसत्ता का अर्थ है 'पुरुष की सत्ता'। यह एक सामाा िक व्यवस्था है ि ासमें पुरुष को उत्तम माना ााता है। इस व्यवस्था में निर्णयों व संसाधनों पर पुरुषों का अधिक नियंत्रण होता है। उत्पादन या श्रम शक्ति पर, पुननरुत्पादन या प्र ानन शक्ति पर, यौनिकता पर, गतिशीलता पर, संसाधनों पर नियंत्रण ौसे आर्थिक, रा ानैतिक, धार्मिक और सामाा िक संस्थाएँ तथा परिवार, धर्म, शिक्षा आदि पर पुरुषों का नियंत्रण होता है। पुरुष का बाहुल्य होता है वो पितृसत्ता का स्वामित्व होता है।

प्रभा खेतान के वि ाार में "पितृसत्ता एक सामाा िक घटना है। ह ाारों साल से ाली आयी ऐसी व्यवस्था है, ि ासमें स्त्री को अधीनस्थता सर्वविदित है। पितृसत्ता ने स्त्री को अपने ज्ञान की वस्तु बनाया, उसे साधन के रूप में प्रयुक्त किया उसके नाम, रूप, ााति, गोत्र सब अपने संदर्भ में परिभाषित किए।"[1]

स्त्रीवादी साहित्य ि ांतन के क्षेत्र में पितृसत्तात्मक की व्याख्या और पुनर्व्याख्या की लंबी परंपरा है। पुरुष लेखकों की र ानाओं में पुरुषवादी पूर्वाग्रह

---

[1] उपनिवेश में स्त्रीःमुक्ति कामना की दस वार्ताएँ, 39/दस्तावे ा-68, ाुलाई 1995

अमूमन आ ाते हैं। पुरुषत्व के आग्रहों की अभिव्यक्ति प्रगतिशील लेखकों में सु िंतित ंगसे न होकर अ ोत रूप में हुई है तो कहीं-कहीं स ोत ंग से हुई है। पितृसत्तात्मक मूल्यों के साथ समा ा का कई ह ाार वर्षों का अभ्यास उन्हें सह ा, सुबोध एवं सर्वमान्य बना देता है। ऐसा महसूस होता है कि पितृसत्तात्मक विभा ान सदा-सर्वदा के लिए स्वीकृत विभा ान है, इसे बदला नहीं ाा सकता। पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण की यह विशेषता है कि वह स्त्री और पुरुष में विभा ान करता है। स्त्रियाँ सामा िक नियमों का पालन करती हैं। समा ा में ाब सब नियमों के तहत होता है तब पितृसत्तात्मकता का अंग ही होता है। ाब नियमों का उल्लंघन होने लगता है तब पितृसत्तात्मक व्यवस्था हने लगती है। समा ा में पितृसत्ता से भिन्न दृष्टिकोण व्यक्त होता है। पर स्त्री की सामा िक स्थिति एवं सामा िक ेतना में कोई बदलाव नहीं आता। स्त्री पवित्रता और संयम ये दोनों पितृसत्तातमकता से ुड़े हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री को घर सौंपा ाता है ाहाँ स्त्री पर अनेक शोषण होते हैं। पितृसत्तात्मकता पर वि ाार करें तो लैंगिक समानता और असमानता पर भी सो ें। "लैंगिक समानता का अर्थ है स्त्री और पुरुष ानता की सामा िक गतिविधियों के बारे में निर्णय ले, ध्यान रहे यह प्रक्रिया किसी-न-किसी रूप में नियंत्रण में भी अभिव्यक्त होती है।"[2]

स्त्री-विमर्श के अंतर्विरोध में प्रभा खेतान कहती हैं-"पितृसत्ता वह वि ाार है, सिद्धांत है, आदर्श है ाो अपने से या अपने समूह से भिन्न प्रत्येक व्यक्ति पर नियंत्रण ाहती है। "पितृसत्तात्मक समा ा ने हमेशा स्त्री को एक वस्तु रूप में देखा है। हालाँकि पितृसत्ता शब्द की आ ा अपनी समस्याएँ हैं और अंतर्विरोध हैं। पितृसत्ता दलन के उन वैश्विक और ऐतिहासिक तरीकों का इस्तेमाल करती रही है, ाो स्त्री को उसकी ैविक, अधीनस्थ स्थिति से बार-बार परि ि ात कराती है। पितृसत्ता के नियमित ाँ े और आकार हैं ि ासमें किसी भी प्रकार का

---

[2] स्त्री अस्मिता-साहित्य और वि ाारधारा, ागदीश्वर ातुर्वेदी, सुधा सिंह-पृ.336

वैरियेशन (बदलाव) स्वीकृत नहीं और न ही इनके अलग रहने वाली शांति से रहने ही दिया ाता है। पितृसत्तात्मक समा । स्त्री के मुद्दे पर सो ाना ही नहीं ाहता। न यह स्वीकारना ाहता है कि "ऐतिहासिक विकास के दौरान आधुनिक स्त्री ने अपने लिए अलग से कुछ भी हासिल किया है।"[3]

"ह ारों सालों से ऐतिहासिक विकास के दौरान पितृसत्ता नित नए नामों से दलन की प्रक्रिया को ारी रखती आई है। पितृसत्ता की औपनिवेशिक मानसिकता, स्त्री को भूगोल को कैसे अधिकृत रख सके, इसी में उल ी हुई है।"[4]

4.1.1 स्त्री की वास्तविक लड़ाई

अंतिम दशक के उपन्यासों में पितृसत्ता की परंपरा और पराधीन की समस्या को दर्शाया गया है। स्त्री का ीवन घुटन भरा, पीड़ा ग्रस्त तथा दमित दिखाई देता है। इन उपन्यासों में परंपरागत वि ारों वाली माँ, बेटी, पत्नी, सास भाभी ऐसी नायिकाओं का ि त्रण हुआ है ो इस नियम को तोड़ नहीं सकती और परंपरा की परिधि में रह कर अपना ीवन पराधीन तथा घुटन भरा बना लेती है। "माँ लड़की को अपने संरक्षण में अपनी ही तरह बनाने में पूरी तरह से ुटी रहती है।"[5] माँ, सास अपनी बहु बेटी पर परंपरा का बो । लादने की कोशिश में लगी है। पति अपनी पत्नियों को अपने अधीन में रखना ाहता है। पितृसत्तात्मक परंपरा की आड़ में पुरुष ही स्त्री को दमित, शोषित, उपेक्षित नहीं करता बल्कि स्त्री-स्त्री को भी दमित, शोषित, अधीन, उपेक्षित करती है।

इस संदर्भ में ि त्रा मुद्गल अपने उपन्यास 'एक मीन अपनी' में अंकिता और तिलक के संवादों के माध्यम से बताती है-"न मानिए... पर आपके मानने, न मानने से स ाई बदल ाएगी स्त्री-समा । की? स्त्री-स्वातंत्र्य की आड़ में स्त्री व्यर्थ ही पुरुष वर्ग को शोषक बनाकर 'मरो', 'मारो' का हल्ला म ा रही है। स्त्री

---

[3] स्त्री विमर्श के अंतर्विरोध, प्रभा खेतान-पृ.359-360

[4] उपनिवेश में स्त्रीःमुक्ति कामना की दस वार्ताएँ-39, दस्तावे ।-68/ ुलाई 1995

[5] स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, डॉ.प्रभा खेतान-पृ.136

की वास्तविक लड़ाई तो स्त्री से है-उसकी शत्रु स्त्री ही है। कहीं वह सास बनकर शोषण कर रही है तो कहीं माँ बनकर ौकीदारी तो कहीं ननद बनकर ासूसी, तो कहीं प्रेमिका बनकर सीना ोरी। इसके बी ा में ही सारे घपले घट रहे हैं... आंदोलन करना है, तो स्त्री को स्त्री की संकीर्णताओं और क्षुद्रताओं के विरुद्ध करना ाहिए। उसकी सामाि ाक स्थिति में तभी परिवर्तन आ सकता है... इस पर अंकिता कहती है-किसी हद तक तिलक, लेकिन उसके लिए भी स्त्री नहीं, व्यवस्था दोषी है, ो उसे समा ा ने दी है और उस व्यवस्था को बनाया पुरुष ने ही है।"[6]

'छिन्नमस्ता' की प्रिया को पितृसत्तात्मक परंपरा की आड़ में पराधीनता की समस्या का शिकार होना पड़ा है। प्रिया की माँ 'कस्तूरी' पारंपरिक माँ के रूप में ि ात्रित हई है। ो मारवाड़ी समा ा की परंपरा, रीति रिवा ा को निभाती है। अपनी ही बेटी को उपेक्षित अपमानित करती है। प्रिया को ब ापन से ही पराधीन रखा ाता है। ाब वह बड़ी होती है तो डेट के समय उसे छुआछूत का पालन करना पड़ता है। माँ हमेशा उसकी उपेक्षा करती-"ठीक से ालो, क्या पैरों की धम-धम आवा ा करती ालती हो? शऊर से बैठ... कूबड क्यों निकाल लेती हो? क्या खो-खो लगा रखी है? खाँस रही हो तो खाँसे ही ा रही हो... और यदि मैं खाँसी दबाने की कोशिश करती तो, क्या गया कि इस तरह गरगरा रही है...?"[7] प्रिया को उसका ब ापन असहाय और अनाथ लगता था वह सो ाती कि अम्मा मेरा अपराध क्या है, अ ाीब सी आत्मग्लानि, अपराधबोध यंत्रणा। क्या यही मेरा ब ापना है। उसे माँ के नियमों के अनुसार रहना पड़ता है। समय से पहले बड़ी होने पर उसके शारीरिक विकास होने लगता है इस पर माँ कहती है- "सल्लो, यह तो सा े दस की उमर में ही ौदह की लगने लगी।"[8] उसका शारीरिक विकास न दिखे इसलिए उसे शमी ा पहनने को दी ाती है। पराधीनता

---

[6] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.110-111

[7] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.44

[8] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.49

के कारण न तो उसे खाने को ंग से मिलता है और न ही किताबें खरीदने के लिए पैसे। उसे दस रुपये के लिए भी तरसना पड़ता है। अपनी माँ की परंपरावादी वि ारधारा को देख कर प्रिया सो ाती है-"इस परंपरा की ड़ें शरीर के रेशों में समाई है सदियों की इस अमानवीय परंपरा को किस बीमारी का नाम दूँ हाँ मेरी ैसी विद्रोही लड़कियाँ भी समर्पित पत्नी और माँ बन ाने को विवश होती ाती है।"[9] प्रिया की बड़ी भाभी भी परंपरागत वि ार रखती है उसे परंपरा को तोड़ना पसंद नहीं है। उसे कुर्ता पहनकर घूमना, लिपिस्टिक लगाना, सलवार-कमी ा पहनना अ छा नहीं लगता। परंतु पति के कहने पर उसे सब करना पड़ता है। अपने परंपरावादी वि ारों के कारण पराधीन तथा घुटनभरी िंदगी ीना पड़ता है। पति का शराब पीना, आधुनिक वि ार रखना, अय्याशीपन उसे असहनीय और अपमानित लगता है। िसके कारण घुट-घुट कर वह मर ाती है।

पारंपरिक आडंबर के कारण दूसरी स्त्री को घर की ारदीवारी में नहीं लाया ाता, न ही किसी सामा िक या पारिवारिक रीति-रिवा ा में शामिल किया ाता है। प्रिया की सास छोटी माँ ो प्रिया के ससुर की दूसरी पत्नी थी, उसे भी परिवार के किसी भी शुभ-अशुभ कामों में शरीक नहीं किया ाता था। समा ा और परिवार उसकी उपेक्षा करता था। प्रिया की रखैल सास को उनकी शादी में भी आने नहीं दिया ाता। नरेंद्र को प्रिया का उनसे मिलना पसंद नहीं है। शादी के बाद भी वह पराधीन है। पति के विरोध के कारण वह छोटी माँ से मिलने ाती है िसके कारण नरेंद्र उसे थप्पड़ मारता है। वह उसे अपने अधीन रखने की कोशिश करता है। "स्त्री अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष के मार्ग पर है।"[10] प्रिया भी इसी मार्ग पर ालने का प्रयत्न करती है। प्रिया पराधीन होना नहीं ाहती। वह स्वतंत्र ीवन बिताना ाहती है। प्रिया रू ि़ग्रस्त परंपरा के खिलाफ

---

[9] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.91

[10] स्त्री-विमर्श, विविध रूप, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.216

कदम उठाती है तो समा ा की उपेक्षा का पात्र बनती है। उसके ससुर की मृत्यु पर सामाि ाक कर्मकांड को देख कर प्रिया सो ाती है उसकी सास को सभी सांत्वना देते हैं पर छोटी माँ (रखैल सास) के बारे में कोई नहीं सो ाता। उन पर क्या बीत रही होगी, किसी का ध्यान नहीं ााता। वह अकेली पति मरने के बाद बाबूघाट पर स्नान करने ााती है। "बाबूघाट पर छोटी माँ अकेले नहाती दिखी... ाूड़ियाँ तोड़ रही थी, मांग का सिंदूर मिटाया था अकेले बिल्कुल अकेले। फिर भीड़ से ाुप ााप निकल गई। ओह! मेरी सास को तो दस-दस औरतें थामे हुए थीं। सब पत्थर दिल। पर मैं किसको गालियाँ दे रही थी व्यक्ति को? समा ा को? परंपरा को, पता नहीं। या सिर्फ इस निष्क्रिय मौन स्वीकृति के लिए छोटी माँ स्वयं िाम्मेदार थी।?"[11] प्रिया व्यवसाय के लिए लंदन ााने वाली होती है तो नरेंद्र उसे रोकने की कोशिश करते हुए कहता है-"ईमानदारी, वफादारी, प्यार, समर्पण इन सभी को तुम ठुकराकर ाा रही हो, इस पर प्रिया कहती है-हम सभी तो अपनी-अपनी सुविधानुसार वायदों को तोड़ते-मरोड़ते रहते हैं-कुछ नहीं। स ा कहूँ नरेंद्र ये शब्द भ्रम है। औरत को यह सब इसलिए सिखाया ााता है कि वह इन शब्दों के ाक्रव्यूह से कभी नहीं निकल पाए ताकि युगों से ाली आती आहुति की परंपरा को कायम रखे।"[12] प्रिया परंपरा और पराधीनता की स्थितियों को तोड़कर आगे ब.ना ााहती है। नरेंद्र ने उसे कितनी बार उपेक्षित किया अपमानित किया िासकी छटपटाहट से वह अपने ाीवन मूल्यों को ाीना ााहती है न कि अधीनस्थता में घुट-घुट कर मरना।

प्रिया की माँ, भाभी, सास, छोटी माँ, दाई माँ सभी परंपरावादी हैं िासके कारण पराधीनता की समस्याओं से गु ार रही है। प्रिया इन सब कर्मकांड, अंधविश्वास, रीति-रिवा ा का खंडन करती है। उसने भी 15 वर्षों तक सब कुछ

---

[11] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.151

[12] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.12

सहा है। पति के कहे पर कटपुतली की तरह ना ी है। उसे क्या मिला, ऑडर भरे शब्द, अपमान, उपेक्षा, अवमानना ि सकी व ाह से वह विद्रोह बन कर सारे पारंपरिक दायरों को तोड़ कर अकेले व्यवसाय कर अपना ीवन बिताती है। इसमें इस बात का स्पष्टीकरण हुआ है कि "स्त्री का विरोध प्रमुख रूप से पुरुष के विरुद्ध अर्थात् पितृसत्तामक सामा िक व्यवस्था के विरुद्ध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ है।"[13]

कलिकथाःवाया बाईपास में परंपरागत ालते मारवाड़ी समा ा के अंधविश्वास, रू ि ग्रस्त वातावरण, पराधीनता के कारण स्त्रियाँ परंपरा की ाकड़बंधी में छटपटा रही है। परिवार के अधीन रह कर पराधीनता को महसूस करती है। सांस्कृतिक परिवेश में विधवा स्त्री को मन ाहे कपड़े पहनने का भी हक नहीं है। मारवाड़ी स्त्री के शोषण की समस्या के कई ि ात्र इस उपन्यास में लेखिका ने उभारे हैं। किशोर की बड़ी भाभी सोलह वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो ाती है और ताउम्र किशोर के घर में ही अपनी कुंठाग्रस्त ि ांदगी ीती है। घर के ती ा-त्यौहार, फंक्शनों पर भी उसे मन ाहा पहनने की इ ा ा ात नहीं देते। अगर वो पहन भी ले तो परिवार वाले उसकी उपेक्षा करते हैं। बंदिश की स्थिति घर की बेटियों की भी है। घर में परंपरा और पराधीनता इतनी छाई रहती है कि उन्हें घर से बाहर नहीं ाने दिया ाता है। घर की बंदिश में ही छटपटाते हुए रहना पड़ता है। इस संदर्भ में किशोर की छोटी बेटी अपनी बड़ी माँ से कहती है-"बड़ी माँ! तुम बताओ कि पापा इस तरह क्यों सो ाते हैं लड़कियों के बारे में? हम क्यों नहीं खेल सकते बगल के मकान की लड़कियों से? हम क्यों नहीं खड़े हो सकते बरामदे में? हम क्यों नहीं ा सकते अपनी सहेलियों के घर? हम क्यों कैद हैं पिं ारे बंद ि ाड़ियों की तरह? तुम क्यों कैद हो बड़ी माँ? तुमने क्या पाया ऐसा ीवन ीकर? किसके लिए ीवन ि ाया तुमने ऐसा? तुम क्यों सहती हो हर

---

[13] समाकालीन लेखनःस्त्री का समा ाशास्त्र, डॉ.कमलेश कुमार सिंह-पृ.202

बात पर पापा की मर ी।"[14] वह अपनी बड़ी माँ की पराधीनता की स्थिति देख कर परंपरा से विद्रोह करना ाहती है। परंतु समा ा स्त्रियों की यह सो ा उभरने नहीं देता बाहरी दबाव इस विद्रोह को वाणी देने नहीं देता है। किशोरबाबू की माँ कुंती ुनिया, रामविलास की पत्नी की मौसी, बड़ी भाभी, बड़ी मामी ये सारी स्त्रियाँ मारवाड़ी समा ा की ौखट में उपेक्षित एवं प्रताड़ित हैं।

पितृसत्तात्मक सत्ता ही वह मूल कारण है ि ासने समा ा में स्त्रियों की अधीनता को स्थापित करते हुए उसे दोयम द ेर् का नागरिक बना दिया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था इस व्यवस्था पर आधारित होती है कि स्त्रियाँ पुरुषों से हीन हैं और पुरुष उनसे श्रेष्ठ हैं। इसलिए स्त्रियों पर पुरुषों का नियंत्रण ााय ा है। "यही स्थिति अलका सारावगी ने अपने उपन्यास कलिकथाःवाया बाईपास में दर्शाया गया है।"[15]

और किशोर की बेटी के माध्यम से पुरानी पी ़ी की छटपटाहट को दर्शाया गया है। साथ ही नयी पी ़ी अपनी पह ाान के लिए, स्वतंत्र अस्तित्व के लिए ाागरूक स ोत दिखाई देती है ाो पुरानी परंपराओं का खंडन कर नयी व्यवस्था की स्थापना में विद्रोही का रूप धारण किये हुए है। "आ ा स्त्री अस्मिता की लड़ाई आधी दुनिया को मनुष्य का द ाा दिलाने की लड़ाई है।"[16]

'एक ामीन अपनी' में अंकिता की माँ परंपरावादी है अंकिता ाब प्रेम विवाह करती है तो माँ परंपरा की आड़ में मान-मर्यादा तथा प्रतिष्ठा के कारण आवेश में धतूरा पीसकर खा लेती है और अंकिता को कोसती हुई कहती है- "कुल ्छन! भोगेगी... ारूर भोगेगी अपने करमन को कुलबोरन। उससे ि ानसे हमारी ााति बिरादरी नहीं मिलती... खानपान नहीं मिलता... हुँआ बियाव-शादी

---

[14] कलिकथाःवाया बाइपास-पृ.58

[15] समाकलीन लेखनःस्त्री का समा ाशास्त्र, डॉ.कमलेश कुमार सिंह-पृ.202

[16] समाकलीन लेखनःस्त्री का समा ाशास्त्र, डॉ.कमलेश कुमार सिंह-पृ.202

नहीं टिकती अऊर टिकेगी भी नहीं...।"[17] कुछ समय बीतने पर अपने आपसे सम ौता कर लेती है बेटी के विवाह को अपना भी लेती है पर बेटी के घर का खाना-पीना अपनी पारंपरिक प्रतिष्ठा के खिलाफ मानती है। बेटी के घर का पानी पीना भी उसे नरक भोगने ैसा ऐहसास होता है।

अभिषेक दुबे के वि ार में-"सदियों से स्त्री पुरुष समा के शोषण और दमन की शिकार बनती रही है।"[18] अंकिता के दोस्त मेहता की बहन वंदना भी परंपरा की कड़बंदी के कारण न ाहते हुए भी एक साधारण क्लर्क हरीश से विवाह करने को रा ी हो ाती है। मेहता की पत्नी कोकिला घर में आत्महत्या करती है िसके कारण वंदना के लिए रिश्ते मिलना मुश्किल हो ाता है। वंदना की शादी में बाधा आने के कारण उसकी माँ सो ती है-आखिर हमारा समा है ही कितना बड़ा... कोई यह भी नहीं सो ता कि बहू के आत्मघात से वंदना के ब्याह का क्या लेना-देना वंदना कैसे दोषी हो गई उस सबके लिए।"[19] माँ न ाहते हुए भी बेटी की शादी मामूली क्लर्क के साथ तय कर देती है-कुटुंब की प्रतिष्ठा के लिए सौदा किया है... वंदना और हरीश का रिश्ता सिर्फ इसलिए स्वीकार किया है कि वे कोकिला की आत्महत्या के कलंक को परिवार के माथे पर पोंछ सके। मुक्त कर सके उस अभिशाप से सभी को...। वे बिरादरी को मुँह-तोड़ वाब देने के लिए इस शादी को स्वीकार कर रही हैं कि देखो, तुम क्या सम ते हो, तुम्हारी लगाई-बु ाई के लते मेरे घर में ब्याह-शादी नहीं होगी? मेरी बेटी कुंआरी बैठी रहेगी ीवनपर्यंत यही पीड़ा है... यही।"[20] सामा िक मान-मर्यादा, पारिवारिक परंपरा के कारण न ाहते हुए भी वंदना और उसकी माँ को रिश्ता स्वीकारना पड़ता है। माँ बेटी के लिए एक योग्य वर की कल्पना करती है। अंकिता की

---

[17] एक मीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.19
[18] स्त्री-विमर्श : विविध पहलु, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.216
[19] एक मीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.138
[20] एक मीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.202

ि ांदगी भी पराधीनता की समस्याओं के कारण टूट ााता है। पति उस पर अपना हर समय अधिकार ाताना ााहता है। उसे कठपुतली की तरह न ााना ााहता है। हमेशा उपेक्षित-अपमानित करता रहता है ि ासके कारण दोनों का संबंध वि छेद हो ााता है।

‘आओ पेपे घर ालें’ की प्रभा पर उसकी माँ के परंपरावादी वि ाार समाहित है। अमेरिका ााने पर बाल कटवाने से भी डरती है। वह सो ाती हे "यहाँ अमेरिका में हो ना इसलिए ऐसी बातें कर रही हो, वहाँ ालो हिंदुस्तान में और वह भी ान्मों किसी मारवाड़ी सेठिया परिवार में, तो पता ाल ााएगा।"[21] यहाँ स्त्री में परंपरागत ाकड़ी संस्कृति को दर्शाया गया है पर स्त्री की ाकड़बंदी पराधीनता की समस्या भारत में ही नहीं पूरे विश्व में एक ैसी है। यही लेखिका ने अमेरिका की कैथी द्वारा उदाहरण प्रस्तुत किया है-"कि क्या पता ाल ाायेगा? बंदिश? वे हम लोगों के ाीवन में क्या नहीं है? फिर एलि ाा क्यों रोती है? क्यों मेरी माँ ने आत्महत्या की? क्यों मेरी आण्टी का नाम तक नाना के परिवार में लिया नहीं ााता।"[22] इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री के प्रति पारंपरिक वि ाारधारा हर देश में एक ैसी ही है ााहे तो अमेरिका ही क्यों न हो। स्त्री वहाँ भी रू ि़वादी व्यवस्था के शोषण की शिकार होती है।

स्त्री की दमित स्थिति को देख कर उपन्यास का एक पात्र आइलिन का कथन है-"औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती, वह ि ातना भी रोती है उतनी ही औरत होती ााती है।"[23]

इस कथन से प्रभा खेतान का नारी-दर्शन स्पष्ट मुखरित होता है। प्रभा खेतान को नारी का यह रूप और उसका निरंतर, औरत होते ााना स्वीकार नहीं है। हिंदी उपन्यास में स्त्री की पीड़ा का ि ात्रण हम बहुत सारे उपन्यासों में देख

---

[21] आओ पेपे घर ालें, प्रभा खेतान-पृ.116

[22] आओ पेपे घर ालें, प्रभा खेतान-पृ.116-117

[23] स्त्री विमर्श ः विविध पहलु, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.216

सकते हैं। परंतु अमरीकी स्त्री के ीवन-सत्य को ित्रित करने वाला यह हिंदी का पहला उपन्यास है।

‘दिलो-दानिश’ में सित्र्यों के परंपरा की आड़ में ठगा ाता है। स्त्री को परंपरा की ाकड़बंधी से कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कृपानारायण की बहन छुन्ना बीबी के माध्यम से असमय विधवा बनी युवती की दयनीय दशा की समस्या, विधवा की ामीन- ाायदाद हड़प करने की समस्या को दर्शाया गया है। विधवा होने पर छुन्ना अपने मायके रहती है। यहाँ पर उसे अपने परिवा ान की उपेक्षा का पात्र बनना पड़ता है। घर के शुभ कामों से उसे दूर रखा ाता है। यहाँ तक कि उसकी भाभी कुटुंबप्यार हमेशा उसकी उपेक्षा करती है। उसे विधवा ैसा ीवन बिताने को सू ाती है। घर में ब ़ी-बू ़ी विधवाओं की तरह सफेद साड़ी पहनने पर म ाबूर किया ाता है। छुन्ना को परंपरा के मूल्यों पर ालने को हर कोई सीख देता फिरता है, खाना-पीना, रहना, ओ ़ना-पहनना, सभी विधवा की परिधि में रहकर करना होगा। रू ़िग्रस्त रीति-रिवा ा, परंपरा के कारण छुन्ना पराधीनता महसूस करती हुई सो ाती है-"गफ़लत और काहिली में या तो पत्ते खेलती रहो, सिलाई-बुनाई करती रहो। दिल लगाने को गज़ल गुनगुनाती रहो, सुबह-शाम पू ाा-आरती करती रहा, नहीं तो मरो विधवा की मौत। छुन्ना परंपरामुक्त ीवन ीना ाहती है। वह पराधीन नहीं रहना ाहती इसी कारण सबको मुहतोड़ ावाब देती है। इस पर सभी घरवाले कहते हैं छुन्ना की किसी से नहीं बनती हमेशा दूसरे के खिलाफ। खिलाफत का ंडा उठा रखती है... यह लड़की किसी की सगी नहीं। छुन्ना बीबी को तो खब्त हो गया। ि ास-तिस का पर्दाफाश करने की कसम उठा रखी है।"[24] खानदानी मान-मर्यादा, पारिवारिक प्रतिष्ठा के कारण, परंपरागत ालती रू ़ि व्यवस्था के कारण कृपानारायण की दूसरी औरत (रखैल) महकबानो को घर में आने तथा यहाँ के रीति रिवा ाों में

---

[24] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.139-140

शामिल होने का हक नहीं है। उसे हमेशा एक बंद कमरे में रहना पड़ता है। अपने और उसके ब ों के लिए कृपानारायण के सहारे की आवश्यकता पड़ती है। महकबानो को हवेली तथा ाति बिरादरी में आने के लिए मना किया ाता है। समा । रखैल के ब ों को तो अपनाना ाहता है पर उसे नहीं। "लेखिका साफ़ ाहिर करती है कि उनके शोषण होने और समा । पर प्रभाव न ामाने का सबसे बड़ा कारण स्त्रियों की स्वयं की ाड़ता के साथ-साथ पुरुषवादी मानसिकता है।"[25]

इन्हीं रू ़ी परंपराओं को ोने के कारण उसका ीवन अधीन, पराधीन हो गया है। इस अमानवीय व्यवस्था में उसे घुट-घुट कर ीवन बिताना पड़ता है। इसी छटपटाहट को वह एक दिन कृपानारायण के समक्ष ताती है-"बेटा हमेशा से आपका है अब बेटी को भी गोद लिया ा रहा है। अहा-हा, हमसे ो पैदा हुए। वकील साहिब, इन बि ारे लावारिसों को खानदानी ामा पहनाना तो ारूरी है आप ही बताएँ-इन दोनों के बिना हमारे पास आपका क्या धरा पड़ा है? है कुछ?"[26] यहाँ तक कि उसकी बेटी की शादी में उसे आने से मना किया ाता है। खानदानी प्रतिष्ठा के कारण। इस पर महक विद्रोही बन ाती है और पितृसत्ता के पारस्परिक मूल्यों की ाकड़बंधी, पराधीनता की सभी ं ीरों को तोड़कर, सभी मान-मर्यादाओं की सीमा लांघ कर बेटी की शादी में रौब से शामिल होती है। महक परंपराओं का विरोध करती है परंतु इससे समा । में कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि सामा िक व्यवस्था यथा-स्थिति बनी हुई है।

स्त्री अपनी शरीर-संर ना और स्थितियों के कारण स्त्री है। पितृसत्ता व्यवस्था में स्त्री हमेशा पुरुष के अधीन रही है। "औरत की स्थिति प्राकृतिक मान ली ाए तो यह बदलाव की संभावना से परे हो ाती है। औरत अपने आपको

---

[25] सीमंतगी उपदेश ः स्त्री मुक्ति- ेतना का आख्यान, राठोड पुंडलिक-पृ.55
[26] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.171

एक ऐसी अनावश्यक वस्तु मानती है ाो कभी अनिवार्य नहीं हो सकती। इसीलिए औरत स्वयं इस परिवर्तन को लाने में असमर्थ रही है।"[27]

'यामिनी कथा' की यामिनी भी पितृसत्तात्मक परंपरावादी वि ाार वाली स्त्री है। वह पति द्वारा की गई उपेक्षा, अपमान तथा अन्याय को अपना धर्म मान कर सहती रहती है। वह सो ाती है पति के लिए सिंगार, उसे आकर्षित करना, पति को अपने मोह- ााल में बांधे रखना, पति ााहे कितना भी धुतकारे, उपेक्षा करे पति के पैरों की धूल माथे पर स ााना पड़ता है। उसके लिए सा ा सिंगार आवश्यक होता है। पति का प्यार उसे नहीं मिलता है ि ासके कारण उसकी मानसिकता खराब हो ााती है। ाीवन घुटन भरा हो ााता है। पति मरने पर यामिनी प्यार की तलाश में दूसरा विवाह करना सो ाती है। पर परंपरावादी सास की उपेक्षा की पात्र बनती है। सास बेटे की मृत्यु के बाद यामिनी को कहती है विधवा होने पर दूसरे पुरुष का वि ाार करना पाप है। यामिनी सामाि ाक तथा आर्थिक विपन्नता के कारण पुनर्विवाह करने की ठान लेती है। इस पर सास नाराज़ हो ााती है और यामिनी से कहती है-"एक बात तुम्हें बता दूँ कि मैं अपने ही घर में, अपने बेटे की ागह किसी अ ानबी को नहीं देख सकूँगी। इसलिए ऐसी कोई भी बात हो तो ारा पहले ही बता देना सुधा (उसकी भती ाी) के पास ाली ााऊँगी।"[28] परंपरावादी सास को यह कतई मन ाूर नहीं कि उसकी बहू घर की मान मर्यादा का खंडन करे और खानदान की प्रतिष्ठा को भट्टी में ाोंके।

इदन्नमम की बऊ परंपरागत मूल्यों को निभाती है इसमें विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति दर्शायी गयी है-बऊ अपने परिवार तथा खानदान की प्रतिष्ठा के लिए अपनी इ छाओं-आकांक्षाओं को दफन कर देती है। खानदान की ामीन-ाायदाद तथा अपने बेटे के कारण अपना ाीवन दाव पर लगा देती है।

---

[27] स्त्री:उपेक्षिता, सीमोन द बोउवार, अनुवादिका प्रभा खेतान-पृ.24

[28] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.62-63

बऊ के विपरीत उनकी बहू प्रेम का ि त्रण हुआ है ो पितृसत्ता की परंपराओं का खंडन करती है। विधवा होने पर वैधव्य का खंडन करते हुए रतन यादव के साथ भाग ाती है। प्रेम अपेन भावी ीवन के लिए बेटी मंदा को भी त्याग ाती है। पर ाब उसमें बेटी की लालसा ाागृत होती है और व मंदा से मिलने आती है तो बऊ उसे घर की दहेरी में घुसने नहीं देती। "बऊ पितृसत्तात्मक मंदा से मानसिकता के कारण प्रेम की उपेक्षा करते हुए कहती है- "तोरी मतारी में अपने मस्तानेपन में कुछ न वि ाारा... बई आबरू को तुम्हारी मतारी ने राई-रेत... हम पूछते हैं, काहे नहीं रही हमारी तरह? अपनी ावानी कंटरौल नहीं कर पा रही थी तो सती-सावितरी के ोंग काहे को भरती रही? हमारी देहरी को ाूठी काहे करती रही? ावानी की हिलोर नहीं दबा पा रही थी तो देह ारा डारती।"[29]

आगे बऊ मंदा से कहती है। "राँड-विधवा तो हम भी हुए थे बेटा। और ा.ती उमर में हुए थे। ानी के लान आसनाई करनेवालों की कमी नहीं होती। पर हम ाानते थे ऊँ ा-नी ा। बात को परखने की बुद्धि नहीं खोई थी हमने। ाहिर थी यह बात कि उन दुष्टों की आँख हमारी देह और ाायदाद पर थीं। कैसे-कैसे कपटी-अन्यायियों को ोला है हमने। कैसे-कैसों से ाड्डु ली है। इतनी िंदगानी ऐसे ही नहीं का.ी। हँसी-खेल नहीं है विधवा ानी का इ ात-आबरू से रहना, अपनी देहरी की नाक को सुधी रखना। ... बिन्नु वे ामाने तो सतियों के थे। कायदा से तो सती हो ााना ाहिए था, पर हमारी राह में महेंद्र की क ी किलकार आ गई। वेद-पुरान में भी यही बताया है कि बाल-ब ा की माता सती पाछे है, माता पहले। और फिर अपने ससुर की, अपने पति की वंसबेल की िंता। सो बिटिया गद्दर उमर का हींसा देह तका े ारा डारे ाई देहरी के होम

---

[29] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.307

कुंड में।"[30] परंपरा के दायित्वों को निभाने के कारण बऊ में अपनी इ छाओं का दमन कर दिया। वह मान-प्रतिष्ठा के कारण ीवन दाव पर लगा देती है इसके विपरीत मंदा की माँ है। प्रेम िसने परंपरा को तोड़ा है विधवा के नियमों की पितृसत्तात्मक ाकड़बंधी को तोड़कर दूसरा विवाह कर लेती है।

'अपनी सलीबे' की नीलिमा पितृसत्तात्मक रू़ि ग्रस्त परंपराओं को निभाने वाली नायिका है। परंपरा और खानदान की मान-मर्यादा की व ाह से वह पति ाो छोटी ााति का है, उसे छोड़ कर अकेले ीवन यापन करती है। नीलिमा परंपरा की आड़ में काबिल पति को त्याग कर अपने खानदानी- ामीनदार अहम को दर्शाती है और ीवन भर पछतावे का बो ा ोती रहती है।

'बेतवा बहती रही' की उर्वशी, मीरा की दादी, दादी की ािठानी आ ाी, उर्वशी की माँ, भाभी सभी स्त्रियाँ पितृसत्तात्मक व्यवस्था में घुटन भरा ीवन बिताने पर विवश है। ये सभी स्त्रियाँ परंपरा की ाकड़बंधी के कारण शोषण का शिकार होती है। कोई अपने बेटे के अत्या ाार-अन्याय की शिकार है। कोई अपने भाई बंधुओं के शोषण का शिकार है सभी परंपरा, मान-मर्यादा की आड़ में मुँह बंद कर अपनी इ ात को ब ााने के लिए पराधीनता की समस्याओं से ाू ा रही है। उर्वशी को भी परंपरा के ालते अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विवाह से पहले भी भाई की ाकड़बंधी में रहती है। भाभी का हुकुम मानती है। माँ-बाप ने उसे यही सिखाया है कि बड़ों के सामने लड़कियों को अपनी ाुबान काबू में रखनी ााहिए। ऊर्वशी भी अपने भाई की बात नहीं टालती थी। विधवा होने पर भाई की ाबर्दस्ती और पितृसत्त मानसिकता के कारण ससुराल छोड़ना पड़ता है। भाभी की उपेक्षा की पात्र बनती है। आस-पड़ोसी के अपमान भरे शब्दों का शिकार होती है। ऊर्वशी अपनी पराधीनता की समस्या की दासता अपनी सहेली मीरा से कहती है-"सिरसा छौड़ो तो उनके कहे पर। छाती से िपटो नन्हा

---

30 इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.306-307

बालक त्याग दऔ-हिरदय के टूक-टूक कर डाले, दाऊ (ेठ) की मोह ममता को अनदेखा करके रा ागिरी आ गये। उनके कहने पर ही रा ागीरी छोड़ दी... परंपरा ने माँ, बाप ने ो ुप रहना सिखाया था। बड़ों से तर्क-वितर्क नहीं करना ाहिए उसी राह पर ाले वही किया ो भाई ाहता था। पर भाई ने कभी बहन को बहन ना सम ा उसके लिए रुपया बन कर रह गई केवल काग ा के कुछ नोट।"[31] उर्वशी का ीवन पितृसत्ता समा ा की परंपरा के ां ो में ल कर पराधीनता के कारण छटपटाता रहा। और उसने अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया। परंपरा की राह पर ालते आत्मपीड़ा को ेलती रही। अंत में प्राणों को भी त्याग दिया। यहाँ पितृसत्ता की एकनिष्ठ पर परंपरागत ालते समा ा की रूि ग्रस्त व्यवस्था को दर्शाया गया है ि ासमें स्त्री तिल-मिल मरती रहती है। अपनी मर्यादाओं का बो ा ोती हुई प्राणों की आहुति दे देती है।

"कुछ परंपरागत बेटियाँ अपने माता-पिता, घर-परिवार में विरोध करने से डरती हैं। आर्थिक विषमता तथा विवशता के कारण घर की ि ाम्मेदारी तथा दायित्वों को निभाती हैं।"[32] कुनी भी घर की बड़ी संतान हे और आर्थिक तंगी तथा अपने पिता का हाथ बटाने के कारण नौकरी करती है। घर की ि ाम्मेदारी तथा छोटे भाई बहनों की देखभाल करती है। कुनी परंपरावादी वि ाार रखती है। वह अपने परिवार की देखभाल के कारण ब ़ती उम्र तक अविवाहित रह कर ि ाम्मेदारियों को निष्ठा से निभाती है। वह अपने से कम उम्र के सिद्धार्थ से प्रेम करने लगती है। पर अपना प्रस्ताव न उसके सामने रख पाती है न घरवालों के समक्ष। वह इस रिश्ते को सबके सामने रखने से घबराती है और वह सो ाती है कि-"परंपरा के ालते मैं अब तक भीतर ालती ग्रंथियों से मुक्त नहीं हो पाई थी, बदलाव की प्रक्रिया हालाँकि शुरू हो ुकी थी। नैतिकता का ो रू ़ अर्थ मेरे

---

[31] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.140

[32] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.112-113

ोहन में भरा था उसे बदले बिना मैं सिद्धार्थ को अपना नहीं सकती थी क्योंकि मेरे रू. वादी परिवार के मानदंडों पर हमारा रिश्ता खरा नहीं उतरता था।"[33] यही वि ार कुनी की छोटी बहन प्रीति सो ाती है और अपनी बहन के पूछने पर बताती है "बप्पा नहीं मानेंगे। वे लोग ब्राह्मण नहीं हैं... वे मारवाडी हैं। कई पी. यों से कटक में बस गए हैं वहीं गोल्डस्मिथ की दुकान है। लड़का (बसंत) भी व्यापार करता है।"[34] परंपरावादी वि ार के कारण परिवार के सदस्य ाति तथा प्रेम विवाह को इ ात नहीं देते। और ऐसे रिश्ते को अपनाना पसंद नहीं करते ो सामा ाक प्रतिष्ठा को ठेस पहुँ ाए। परंपरा को निभाने के लिए कुनी अधिक उमर होने पर परिवार की म ीं के हिसाब से अनिरुद्ध से विवाह कर लेती है ो पहले ही शादीशुदा होता है और दो ब ों का पिता भी। 'आवां' की नमिता भी घर की बड़ी बेटी है और आर्थिक तथा सामा ाक विषमाओं के कारण अपने घर की िम्मेदारियों के लिए नौकरी करती है। पिता के बीमार होने पर घर के दायित्वों का वहन करती है। माँ परंपरावादी है ो बेटी की हमेशा उपेक्षा करती है, गाली देती है, यहाँ तक कि मारना-पीटना भी करती है।

माँ के उत्तरादियत्व से भी महत्वपूर्ण है माँ का व्यक्तित्व। माँ का व्यक्तित्व ही संतान के ारित्र का निर्माण करता है। यदि माँ स्वार्थी हो, ारित्रहीन हो, संतान के प्रति िंता न करती हो, ऐसी माँ के प्रति संतान संवेदनशून्य होती है।"[35] इसी प्रकार माँ की अपनी प्रति हमेश उपेक्षात्मक व्यवहार देख नमिता भी माँ के प्रति संवेदनशून्य हो ाती है।

घर के दायित्वों को निभाने के लिए नमिता अपना सब कुछ दाव पर लगा देती है और घर की बड़ी संतान की समस्याओं को ोलती हुई सो ाती है- "आर्थिक विषमता, परिवार के आंतरिक संकटों की विवशता तथा घर में बड़ी

---

[33] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.129

[34] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.146

[35] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.174

संतान का दायित्व कांटों-भरा किरीट ठहरा।"[36] ीवन-मरण के बी ा प्रति क्षण संघर्ष करते रहना अपना सब कुछ दाव पर लगा देना यही सब समस्याएँ हैं ि न्हें नमिता ोते हुए संघर्ष कर रही है।

'अपने-अपने ोहरे' की रमा भी सामाि ाक परंपरा के ालते अनेक संघर्षों का सामना करती है। विवाहित पुरुष गोयनका से प्रेम करती है ि ासके कारण उपेक्षा का पात्र बनती है। समा ा में उसे हेय दृष्टि से देखा ााता है। ि ासके कारण वह अकेलेपन की समस्या को ोलती है। रा ोंद्र गोयनका भी रमा से प्रेम करता है पर पहली पत्नी के होते वह रमा से विवाह नहीं कर सकता। उसे आत्म ग्लानि महसूस होती है। अपने को गुनेहगार सम ाता है। रमा के लिए कुछ करना ाहिए यह सो ा कर कई नये ट्रस्टों का निर्माण करता है। और इन ट्रस्टों में रमा को अपनी तसल्ली के लिए सभी में ट्रस्टी बना देता है। इस पर रमा सो ाती है क्या एक स्त्री पुरुष की दोस्त नहीं हो सकती? क्या कोई पुरुष दोस्त, स्त्री दोस्त को कुछ देने के लिए छिपाकर देना होगा? और आगे वह सो ाती है-"क्या परिवार वालों को मु ा पर इतना विश्वास है... क्या रा ोंद्र के बाद कोई मेरे पास ाँकने भी आएगा? या ट्रस्ट से रिटायरमेंट के काग ाों पर सही करना होगा... फिर रा ोंद्र मु ो ोड़ते क्यों हैं? ही लव यू। ओह-प्यार... इस एक शब्द के साथ कितने ह ाार साल की परंपरा ुड़ी है? और स्त्री? इससे इतनी सम्मोहित क्यों हो ाती है, कि ाब प्यार ुक भी ाए तब भी खाली ागह में कल्पना के रंग भरती रहे। सड़े और उबाऊ प ीस साल के इस संबंध को क्या नाम दूँ-प्यार, आनर्सेशन, आदत?"[37] या फिर परंपरा या फिर पराधीनता ो सामाि ाक रूि ग्रस्त व्यवस्था के अनुकूल स्त्री को ीना पड़ता है। दूसरी औरत ि ासे समा ा परिवार अपनाता नहीं उसकी उपेक्षा करता है उस पर तरह-तरह के शोषण करता है स्त्री इस

---

[36] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.358

[37] अपने-अपने ोहरे, प्रभा खेतान-पृ.74

अवस्था में कई समस्याओं का सामना करती है। और आत्मसम्मान से ीवन ीने के लिए आत्मनिर्भर बनती है। अकेले अपना ीवन अपने मूल्यों पर ीती है।

पीली आँधी में विधवा पद्मावती पितृसत्तात्मक व्यवस्था में परंपराओं की ाकड़बंधी में छटपटाती असमय विधवा हुई स्त्री की दासता है। ो पारिवारिक ि ाम्मेदारियों को निभाते हुए उसके मुनीम सुराणा ी से प्रेम करने लगती है। पर अपनी सीमाओं के दायरे में रहती है। पद्मावती परंपराओं तथा समा ा में प्रदत्त मर्यादाओं को तोड़ना नहीं ाहती वह अपने संस्कारों को निभाये ालती है और सुराणा ी को भी मर्यादा में रहने को कहती... "सुराणा ी आप मु े इतना प्यार नहीं दीि ाए कि मैं बड़े बाबू को भूल ाऊँ... मैं विधवा हूँ किसी पराए पुरुष का ख्याल भी गलत है।" इन सभी बातों से परपरावादी वि ाार ालकते हैं कि विधवा स्त्री को प्रेम करने तथा दूसरे विवाह के बारे मं सो ाना पाप है। वह आत्मपीड़ा के साथ ीवन ीना ाहती है।

यही परंपरा और पराधीनता को पारिवारिक सदस्य 'दिलो-दानिश' की छुन्ना पर लगाना ाहते हैं। छुन्ना भी असमय विधवा बनी युवती है ि ासको परंपरा के दायरों में रहने की हिदायत दी ाती है। घर-परिवार, आस पड़ोस के सदस्य उससे विधवा ैसा ीवन ीने पर म ाबूर करना ाहते हैं। अंधविश्वास और आडंबर के कारण उसका घर के शुभ कार्यों में हस्तक्षेप पसंद नहीं करते। उसे अपने कमरे में रहकर सिलाई-बुनाई या फिर पू ाा-पाठ में ध्यान लगाने को कहते हैं। पर छुन्ना परंपरा के मूल्यों का खंडन करती है। विद्रोह कर अपना ीवन अपने मूल्यों के हिसाब से ीना ाहती है। रूि़ग्रस्त मान्यताओं को न मानती हुई दूबारा विवाह कर लेती है।

' ूला नट' की शीलो भी परंपरा तथा पराधीनता की समस्या से गु ारती है। शीलो की सास कहीं-कहीं परंपरावादी तथा कहीं-कहीं परंपरा मुक्त नज़र आती है। शीलो परंपरामुक्त स्त्री का ि ात्रण है ो अपने नियमों के हिसाब से ालती है। देवर से संबंध बना कर उससे विवाह नहीं करना ाहती क्योंकि उसके

वि ाार में परंपरा से विवाह होने पर उसे कुछ हासिल नहीं हुए। ाब सुमेर उसे समा ा के समक्ष, सात फेरों के साथ-साथ लाया था अपनी अर्धांगिनी बना कर और रूप रंग को देखकर त्याग कर ाला गया ाब इस ााति, समा ा, परिवार ने क्या किया। वह सास से कहती है परंपरा के आड़ में सब बकवास है। वह सामाि ाक व्यवस्था की उपेक्षा करती है। कहती है-"अ ास गठरिया मत बाँधे मेरे सिर, हाँ... अम्मा ाी, रीत-रसम लिखा हुआ रुक्का तो नहीं होता... तन-मन का ब्याह किया है... तीसरा कौन होता हे हमारे बी ा?"[38] शीलो पुराने रीति रिवा ा को नहीं मानती। वह पुनर्विवाह के खिलाफ समा ा, आस-पड़ोस तथा ााति-बिरादरी के नियमों का खंडन करती है। उसे किसी की परवाह नहीं। वह आत्मसम्मान से ाीना ााहती है। वह पति को ठुकरा कर देवर बाल किशन से प्रेम करती है। उसी के साथ रहती है। सामाि ाक तथा ााति के नियमों को ठुकरा कर।

अंतिम दशक 'छिन्नमस्ता', 'कलिकथाःवाया बाइपास', 'एक ामीन अपनी', 'आओ पेपे घर ाले', 'दिलो दानिश', 'यामिनी कथा', 'अपनी सलीबे', 'बेतवा बहती रही', 'अपने-अपने कोणार्क', 'अपने-अपने ोहरे', 'पीली आँधी', ' ाूला नट' आदि उपन्यासों में प्रिया की माँ, सास, छोटी माँ, इदनम्म की बऊ, कलि-कथा वाया बाइपास की बड़ी माँ, एक ामीन अपनी की अंकिता की माँ, दिलो-दानिश की कुटुंबप्यारी, अपने सलीबे की नीलिमा सभी पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नियमों को निभाती हुई पराधीनता की समस्या से गु ार रही हैं। वह परंपरामुक्त पराधीनता की ाकड़बंधी को तोड़कर नया ाीवन बिताना ााह रही है। समा ा की संहिता को तोड़ अपने अस्तित्व के लिए विद्रोह बन समा ा के नियमों का खंडन कर रही है। इदन्नमम की प्रेम परंपरा मुक्त विधवा का ाित्रण प्रस्तुत है ाािसमें प्रेम परंपरागत वैधव्य की ाौखट को पूर्णतः नष्ट कर देती है। छिन्नमस्ता की प्रिया भी परंपरा तथा पराधीनता की समस्या से ग्रस्त है और

---

38 ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.75

विद्रोही बन कर पति को छोड़ देती है। ूला नट की शीलो परंपरा मुक्त स्त्री का ि ात्रण है ाो देवर से संबंध तो रखती है पर उससे विवाह नहीं करना ाहती। शीलो ने परंपरा के सभी हद पार कर विद्रोही बन गई है। अपने ाीवन को अपने हिसाब से ाीना ाहती है।

4.1.2 पितृसत्तात्मक व्यवस्था में सामाािक ाीवन

आलो य उपन्यासों के आधार पर स्त्री का सामाािक ाीवन असुरक्षित तनावग्रस्त, भयभीत दृष्टिगत होता है। सामाािक व्यवस्था के भय के कारण वह पति से शोषण, उपेक्षा, अपमान तथा पति के अन्याय-अत्याार, वैहशी रूप को सहती है। समाा में स्त्री का कोई भी रूप हो शोषित होता अवश्य है। समाा में विधवा हो, शादीशुदा, अविवाहित, तलाशशुदा, नौकरीपेशा हो उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण समाा का अलग है। उसे आा भी वही उपेक्षाएँ, उत्पीड़न, शोषण, उपहास, अत्याार सहना पड़ता है।

भारतीय समाा में परिवर्तन परिवेश के अनुसार तो गति से ब़ता है। समाा में संयुक्त घर तथा सम्मिलित परिवार व्यवस्था का विघटन एक महत्वपूर्ण सामाािक परिवर्तन है। 'बेतवा बहती रही' में समाा के इस परिवर्तन को दर्शाया गया है। "बड़ी बखरी ही कभी संयुक्त घर थी। पूरा परिवार उसी में रहता था। दादी उसी घर ब्याहकर आयी थीं। फिर विधवा होने के बाद भी वहीं... आाी ने छोटी बहन का-सा प्यार दिया था-वही लाड़-दुलार। कहने को दादी की ोठानी थी आाी, पर दादी को पुत्रीवत रखतीं।"[39] बेटा बड़ा होने पर संयुक्त परिवार को तोड़ देता है। उसमें न बड़ों की मर्यादा का खयाल था न ही किसी को मान-सम्मान देना और न शिष्ट आारण का रखता था। सम्मिलित परिवार टूटने पर दादी परिवार के अनेक अवसरों पर पारिवारिक दायित्वों को निभाती है। बेटे

[39] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.56

की उपेक्षा पूर्ण व्यवहार का सामना करते हुए अपनी इ ात को बनाये रखने के लिए ुप रहती है।

समा ा में पुरुष के ाहुँमुखी उत्पीड़न को उर्वशी के शोषण द्वारा प्रस्तुत किया गया है। समा ा में पुरुषों के स्वार्थ और छलना की शिकार इस उपन्यास में उर्वशी, ग ारा, उर्वशी की माँ, दादी, आ ाी ऐसी अनेक स्त्री पात्र प्रत्यक्ष देखी ाा सकती हैं।

दादी बेटे के विषैले घूँट पीने में ही भलाई सम ाती थी। पुत्र कही? ाो मुह में आए बक न दे उन्हें बेआबरू कर दे इ ात की मारी दादी बेअे के सारे शोषण सह लेती। घुटन भर गई थी, भारी बो ािल मन को सांतवना "कभी देवरानी-ि ाठानी ने एक देहरी को पू ाा थ॰ एक ही पितर ि ांवाये थे, घर की ाौखट के समान स्नेह-तंतु लपेटे थे। अंतर को रिश्तों में समेटा था... पर वे आस्थाएँ क्यों क ाी मिट्टी की मूरत-सी टूट-फूट गयीं संस्कार क्यों संज्ञाहीन हो उठे? उनसे कहाँ गलती हुई? ि ा ाी के दर्शन की आज्ञा अपने ही पुत्र से। अपनी इ छा, अपना हक कुछ भी नहीं... यह कैसी विडंबना। कैसी त्रासदी।"[40] अपने ही घर में दुबकी-सहमी पड़ी रही। पति होते तो दबंग बनकर सब कुछ कह देती। अपनी राय दृ ़ होकर ाताती-पर पुत्र के आंगन में कैसी बेबस खड़ी थी-बंदिगी सी।"[41] यहाँ विधवा माँ की स्थिति को दर्शाया गया है। किस प्रकार वह अपनी इ छाओं, आकांक्षाओं का दमन कर उनकी मानसिकता का हनन करती रहती है।

'अपने-अपने कोणार्क' में अविवाहित स्त्री की त्रासदी को दर्शाया गया है। कुनी घर की बडी बेटी है। अपने परिवार तथा भाई-बहनों के दायित्वों को निभाने में अपना आधार ाीवन बिता देती है। समा ा में नौकरी करनेवाली अविवाहित स्त्री को किन-किन समस्याओं से ू ाना पड़ता है, अपनी इ छाओं को मार कर

---

[40] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.86
[41] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.86

घर-परिवार की ि ाम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। छोटे भाई बहनों की शादी करके समा ा में कहीं-न-कहीं उसे उसके दायित्वों को निभाने की निष्ठा से तारीफ तो मिलती है पर दूसरी ओर समा ा का दृष्टिकोण अलग हो ाता है। समा ा को लगता है ान्म अंत तक वह अविवाहित ही रहेगी। समा ा में अकेली स्त्री की विवशता से फायदा उठाने वाले राक्षसों की कमी नहीं है। डॉ.त्रिपाठी ने इला ा के बहाने उसे भोगने की कोशिश की। "कुनी, यू आर ए लोनली एण्ड ब्यूटिफुल वोमेन" ैसे वाक्य संपूर्ण समर्पण की उम्मीद से कहे थे।"[42] समा ा में कुवारी लड़की वह भी तीस पार की सब की नज़र लल ााने लगती है। "दोष मेरी उम्र में नहीं, ि ातना कुंवारी होने में था। लोनली वुमन।"[43] ये सब समा ा में आम तोर पर ावान लड़की के साथ घटता रहता है। भाइयों की शादी के बाद बहुएँ आईं तो माँ ने बहुओं को कुनी के आदर्शों पर ालने को कहा तो कुनी माँ से कहती है- "मैं उनकी ननद हूँ सास नहीं। वे उन घरों से आई हैं ाहाँ लड़कियों की तरह मायके में नहीं होती। उनकी गति, दुर्गति ाो भी होनी हो, सास-ससुर और पति के घर में लिखी होती है। मु ो वे कब तक सह लेंगी।"[44] सामाि ाक नियम ही ऐसे हैं कि लड़कियों का घर ससुराल में रहता है। वह 'पराया धन' ैसी सामग्री से संबोधित होती है। मायके में हस्तक्षेप परिवार वाले को कोंधता है। कुनु की छोटी भाभी कावेरी को भी कुनी का अधिकार अ छा नहीं लगता तो हमेशा उसकी शादी की ि ांता ाताती रहती है। "सदा मौ ाूद दीदी की ागह को स्वीकारना कावेरी के लिए मुमकिन नहीं था। इसे वह कई बार संकेतों से बता ाुकी थी। कल दीदी बू ़ी हो ााएंगी तो हमें ही देखना पड़ेगा ना।"[45]

---

[42] अपने-अपने कोणार्क, ांद्रकांता-पृ.70
[43] अपने-अपने कोणार्क, ांद्रकांता-पृ.71
[44] अपने-अपने कोणार्क, ांद्रकांता-पृ.79
[45] अपने-अपने कोणार्क, ांद्रकांता-पृ.95

घर में ही नहीं बाहर भी ब ़ती उम्र की ा र्ा होने लगी-फोन आने की बात पर मिसे ा पंडा ने वीणापाणि को टोका और कहा-"तुम भी क्या बात पूछ रही हो। अरे होगा कोई दोस्त। राह- ालते हमसे ही कितने टकराते हैं, फिर ये तो कुंवारी है, सूरत-सीरत से भी अ छी। अ छी तो है परंतु यानी कि उम्र कितनी हो गई। कोई मिला होता तो अभी तक बैठी रहती?"[46]

अंत में अनिरुद्ध से विवाह कर लेती है। वह डॉक्टर है पत्नी मर गई है। दो ब े भी हैं। समा ा और परिवार की मानसिकता को देखकर कुनी शादी के लिए तैयार हो ाती है। अपनी मौसी से कहती है-"छोड़ो मौसी, विवाहित-अविवाहित की बात। मैं भी अब कौन सोलह साल की किशोरी हूँ। स ा मानो तो मैं अब इस विवाह के प ाड़े से दूर ही रहना ाहती थी। तभी तो घर से दूर ाली गई। इस विवाह-प्रसंग में मु े काफी घसीटा गया मौसी।मैं ाख्मी हो गई। अभी तो थोड़ा सम्हली हूँ।"[47] समा ा की सो ा में छोड़ा परिवर्तन अवश्य हुआ है परंतु भारतीय स्त्री पूरी तरह से प्रा ीन परंपराओं, रू ़ियों, नैतिक मूल्यों से मुक्त नहीं हो पायी है। इसका उदाहरण कुनी में साफ नज़र आता है। उसके आंतरिक एवं बाह्य संघर्षशील समस्या को भी इस उपन्यास में ंद्रकांता ने दर्शाया है।

मैत्रेयी पुष्पा कृत अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरी समा ा की विसंगतिपूर्ण वातावरण तथा क ा समा ा का कबूतरी स्त्रियों पर शोषण को दर्शाया गया है। किस प्रकार क ा समा ा कबूतरी स्त्रियों को ोर ाबर्दस्ती से शोषण करते हैं। उनको भोग्य के रूप में देखते हैं। उनका इस्तेमाल कर गंदी-गंदी गालियाँ देते हैं। उनकी हवस का शिकार बनाते हैं। फिर लात मार कर हटा देते हैं। कबूतरी स्त्री इनकी भूख का शिकार होने से नहीं ब ा पाती। इनका समा ा भी ऐसा करने के लिए उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से तैयार करता रहता

---

[46] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.117
[47] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.196

है। समा ा की नियति को वह आँख मूंद कर मानती है। "कबूतरा समा ा सभ्य समा ा के हासिये पर डेरा डाले सदियाँ गु ार देत हैं। ...उनके लिए हम हैं क ाा... हमारे लिए वे ऐसे छापामार गुरिल्ले हैं ाो हमारी असावधानियों की दरारों से ापट्टा मारकर वापस अपनी दुनिया में ाा छिपते हैं। कबूतरा पुरुष या तो ांगल में रहता है या ोल में... स्त्रियाँ शराब की भट्टियों परया हमारे बिस्तरों पर।"[48] भूरी बेटे के भविष्य के लिए इन क ााओं का शिकार बनी थी। भूरी बेटे रामसिंह को प ़ा-लिखा कर कबूतरा समा ा से बाहर निकालना ाहती थी। "बस्ती की सबसे पहली माँ थी भूरी, ि ासने बेटे को कुल्हाड़ी डंडा न थमाकर पोथी-पाटी पकड़ाई थी। और मन काग ा की तरह हल्का कर लिया। माना कि मद के प्यारे लोग उसका ईमान छीनते और वह धरती पर लेटी सरग के तारो में रामसिंह को सितारे की तरह टाँक देती। कबूतरी के लिए क ाा लोगों को 'न' कहना भारी पड़ रहा था। पर कबूतरा ाीवन का बो ा बेटा न ोए, इसीलिए भूरी बदनामी का व ान ोने को तैयार हो गई।"[49] बेटे के उ वल भविष्य बिरादरी के लिए हानिकारक सिद्ध होने लगा। बिरादरी भूरी को छूत की बीमारी मान कर उसे मौत के घाट उतारने को तैयार थे। "ि ाद को तोड़ा बिरादरी ने। बदकार औरत। स ाा दो। रिवा ा टूट ााएंगे तो बिरादरी का क्या मतलब। हत्या करो नहीं तो बिरादरी के लिए शेरनी की तरह खुँखार हो उठेगी।"[50] "रामसिंह के लिए इ ात खरीदनेवाली माँ बेहि ाक बेइ ात होती रही।"[51]

कदमबाई भी बिरादरी के लिए सो ाती है। ाब राणा पैदा होता है तो-"पर तू क ाा है या कबूतरा? सो ाती हूँ मंसाराम बदनाम हो ााएगा तो तू अमाटा हो ााएगा। बिरादरी भी कम बेदर्द नहीं, भरम बना रहे तो तू पल ााएगा। मैं कितने

---

48 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, फ्लेप बैक पे ा से
49 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.75
50 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.76
51 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.77

मो ों पर ब ा पाती हूँ तु ो।"[52] कदम बेटे राणा को कबूतरा समा ा के रहन-सहन तौर तरीकों को सिखाना ाहती थी। पर राणा का मन कहीं और ही उड़ा रहता। उसे प . ने की लालसा ागी। वह कहती है "हमारी बिरादरी का कारोबार, दारू बे ाना, ोरी करना, यही है, राणा रे लाठी भाँ ा, गुलेल ाला, कुल्हाडी का वार करना सीख मेरा बेटा बहादुरी से ोरी करेगा।"[53] राणा तू इनकी संगत में रहकर अपने धंधे की ईमानदारी से भी ाएगा। तू करन के साथ रह कर क ा नहीं बन सकता। हमारी ि ांदगी खरपतवार, क ा लोग उखाड़ने को तत्पर रहते हैं। पुलिस पीटने आ ाती है, ठेकेदार बिना व ाह खदेड़ते हैं। पर हम भी कम नहीं भूखे प्यासे तोपखाने लूटने से बा ा नहीं आते।

'छिन्नमस्ता' की प्रिया न घर में ही सुरक्षित है न ही समा ा में। समा ा ने उसको सदा से शोषित किया है। प्रिया सो ाती है कि ाख्मी होने का एहसास क्यों हर समय मु ो रुलाता रहता है। छिः मु ो नफरत है इस समा ा से, नफरत है उससे ाो मासूम, छोटी, नादान लड़की को भी नहीं छोड़ता। हर समा ा में इनसेस्ट प्रेम पर इतना भयानक टैबू क्यों हैं? क्यों सह ा प्रकृति का मृत्यु धर्म इनसेस्ट प्रेम पर लागू होता है। नहीं तो ान्म से ओरत असहाय औरत। उसे न पिता छोड़ता है न भाई। न समा ा। स्त्री अपनी देह में, स्वयं में क्षत-विक्षत होकर रह ााती है। पर क्या समा ा स्त्री की रक्षा करता है? क्या पुरुष की वासना के शिकार से मासूम लड़कियाँ ब ा पाती हैं। कब और कहाँ नहीं मु ा पर आक्रमण हुआ? वह कैसा ब ापन था। केवल भाई ने बल्कि एक नौकर ने भी अपनी गोद में बिठाया था। मार्केट ााते समय ठसाठस भीड़। कंधों से कंधों की टकराहट और मेरे साथ मेरे पीछे एक आदमी पैंट के बटन खोले पुरुष का रुग्ण, प्रदर्शन... और मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी कि भैया से या सरो ा से कहूँ। क्यों? मैं क्यों इतनी दब्बू? इतनी

---

[52] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.32
[53] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.37

कायर? क्या दाई माँ के कारण भय का संस्कार पनपा? या अम्मा की उपेक्षा में या फिर हमारे समा ा की ह ारों लाखों स्त्रियों के साथ ऐसा ही घटता रहा है।"[54] एम.ए. प ़ते समय उसे प्रोफेसर मुक ीं से प्रेम हो ाता है। "हाँ, मैंने प्यार किया था, पूरी ईमानदारी के साथ अपने को समर्पित किया था, बिना किसी शर्त के, बिना किसी से कुछ पूछे।"[55] प्रोफेसर ने धोख दिया केवल उसे भोग्या के रूप में ही देखा। इस घटना से उसका आत्मबल, विश्वास टूट ाता है। वह समा ा के किसी भी पुरुष से संबंध नहीं रखना ाहती। विवाह, सेक्स, प्रेम उसे सदियों पुराने घिसे शब्द लगते हैं। लड़की के लिए समा ा में कोई सुरक्षा नहीं है। नौकरीपेशा स्त्री को समा ा सह ाता से स्वीकारता नहीं है। वह कहती है-"पत्नी की भूमिका में मेरा असफल होना, तुम्हारे समा ा की न ार में मु े औरत होना ही नहीं ाहिए था... एक वक्त ऐसा भी आया ाब समा ा की न ार केवल सलीब की ओर थी। वे ाहते थे कि ऐसी घरफोड औरत को स ाा मिलनी ाहिए, क्योंकि कहीं-न-कहीं समा ा को मेरी सफलताओं से भय था। शायद ये मठाधीश सो ाते हों कि एक औरत लड़कर कुछ हासिल कर लेती है तो दूसरी औरतें भी तो उन्हीं रास्तों पर ालेंगी।"[56] समा ा में दूसरी औरत को हीन दृष्टि से देखा ाता है। उसे किसी शादी-ब्याह या किसी भी सामा िक कार्यों में हिस्सेदार नहीं बनाया ाता। परिवार के साथ समा ा की उपेक्षा का पात्र बन कर रह ाती है। प्रिया सो ाती है-"निष्ठुर, यह दुनिया मासूमों के प्रति इतनी निष्ठुर क्यों है।"[57] समा ा स्त्रियों को अंख्य अन्याय-अत्या ार शोषण, उपेक्षाओं के बो ा के नी े दबा देता है।

---

[54] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.119-120
[55] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.123
[56] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.206
[57] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.144

‘अपने-अपने ोहरे’ उपन्यास की रमा एक विवाहित मिस्टर गोयनका से प्यार कती है। उसके उद्योग के साथ-साथ उसे भी संभालती है। परंतु समा ा दूसरी स्त्री को अपना नहीं सकता, समा ा में ऐसे स्त्री को हेय दृष्टि से देखा ाता है। स्त्री किसी पुरुष से दोस्ती करे वह भी शादीशुदा तथा ब ों वाले व्यक्ति से तो वह समा ा की उपेक्षा की पात्र बन ाती है। हर सामा िक व्यक्ति उसके प्रति हेय दृष्टिकोण रखता है। पारंपरिक समा ा में दूसरी स्त्री स्वीकार्य नहीं। पहली पत्नी या विवाहित पत्नी ाहे पति का प्यार या इ ात ना पाये फिर भी समा ा की आदर पात्र तथा उसके सर पर सिंदूर समा ा में सदा ामकता रहता है। दूसरी औरत इस प्रकार के सम्मान से वं ित के साथ उपेक्षित रहती है। गोयनका शादीशुदा होने के कारण रमा से विवाह नहीं कर सकता क्योंकि समा ा पहली पत्नी के होते दूसरा विवाह नहीं करने देता। साथ ही अपने प्यार को छोड़ भी नहीं सकता, रमा उसकी मानसिक स्थिति को ानते हुए किसी प्रकार का अधिकार नहीं माँगती, वह सो ाती है उसका प्रेम स ा प्रेम है-"प्रेम करनेवाला अधिकार की लड़ाई नहीं लड़ सकता और ो अधिकार के लिए लड़ता है वह प्रेम करना नहीं ानता।"[58] अपने प्यार और सामा िक कट्टरता को देखते हुए वह अकेले ीवन ीती है। गोयनका से दोस्ती भरा व्यावसायिक संबंध से ीवन बिताती रहती है।

‘दिलो-दानिश’ की महकबानो को पुरुष सत्ता का शिकार होना पड़ता है। महकबानो ो दूसरी औतर है सामा िक व्यवस्था उसे नहीं अपनाती। उसके ब ों को भी अलग दृष्टि से देखती है। ाति-बिरादरी में उसे निम्न द ाा ही दिया ाता है। पुरुष दो पत्नियों का शान से रखता है पर पत्नी को समा ा में घर, सम्मान, परवरिश सही ंग से नहीं दे सकता। इन सब के बी ा समा ा की परंपराओं का बड़ा रोड़ा आगे आ ाता है। स्वयं माँ होते हुए महक बानो को

---

[58] अपने-अपने ोहरे, प्रभा खेतान-पृ.92

शादी में आने की इ ा ात नहीं दी ाती। इस पर वह कहती है-"बेटा हमेशा से ही आपका है अब बेटी को भी गोद लिया ा रहा है।"[59] अतः दूसरी स्त्री को रखैल कहकर संबोधित किया ाता है और उसका ीवन केवल भोग्या के रूप में ही देखा ाता है। सामा िक रू ि़गत व्यवस्था बंधनों के कारण उसका ीवन हमेशा उपेक्षित, घुटन भरा हो ाता है।

भारतीय समा ा में विधवाओं का ीवन अत्यन्त उपेक्षित एवं तिरस्कृत माना ाता है। समा ा उन्हें अशुभ मानकर मंगल कार्यों तथा कोई भी शुभ काम में घृणात्मक दृष्टि रखते हैं। समा ा में उनकी अमानवीय दशा पर निर्मम ंग से शोषण किया ाता है। मैत्रेयी पुष्पा कृत इदन्नमम में विधवा बऊ की दुःखद स्थितियों का ित्रण किया गया है। बऊ की मीन- ायदाद को गोविंद सिंह, अभिलाख, रतनसिंह यादव हड़प लेते हैं। प्रेमा भी विधवा स्त्री है ाब वह सामा िक परंपरागत मूल्यों को त्याग कर ी ा के साथ भाग ाने पर परंपरामुक्त ावान विधवा स्त्री की आलो ाना करती हुई कहती है-"देखो तो मोंडी हिस्स उठी। कैसे कठकरे ा मतारी हती की छोड़ गई पुतरिया-सी-बिटिया को। ोरइया-परेबा तक नहीं छोड़ते अपने अंडी ब ा।"[60] याने समा ा स्त्री को प्रेम करने का भी हक नहीं देता।

'यामिनी कथा' में भी विधवा ीवन की त्रासदी का ित्रण हुआ है। यामिनी ाब विधवा होती है तो उसे समा ा का डर लगता है। समा ा अकेली, विधवा को बुरी दृष्टि से देखता है। इसी व ाह से वह "सबसे पहले हमें सहारे की ारूरत है, आर्थिक सहारे की।"[61] वह निखिल से पुनर्वि ाार कर लेती है। फिर भी समा ा उसे सही ंग से ीने नहीं देता। अपने व्यंग्य बाणों से उसे पीड़ित करता रहता है।

---

[59] दिलो-दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.171

[60] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.14

[61] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.64

ि त्रा मुद्गल कृत 'आवाँ' उपन्यास में स्त्री पात्रों की संख्या बहुत अधिक है ि ानका सामा ाक ीवन बिखरा पड़ा है। इस उपन्यास में भारतीय समा ा में स्त्री का नियति और हैसियत का एक मुकम्मल ग्राफ तैयार है। समा ा में स्त्री शोषण के विविध आयाम दृष्टिगत होते हैं। इस समा ा से स्त्री अपने को रू ़ि एवं परंपराओं के ााल से मुक्त नहीं कर पाई है। लड़की के ान्म के साथ ही सामा ाक तथा पारिवारिक दोनों स्तरों पर भेद किया ााता है। नमिता की माँ इसका अ छा उदाहरण है। वह बेटी के साथ सौतेला व्यवहार करती है। हमेशा बेटी के स्थान पर बेटे की परिकल्पना करती रहती है। समा ा में स्त्री में इतने परिवर्तन आने पर भी माँ बेटी के साथ किस तरह का भेदभाव रखती है यह सामा ाक कट्टरपंथी का ही नती ाा है। नमिता सामा ाक भेडियों का शिकार होती है। पहले उसके मौसा अन्ना साहब के फिर सं ाय कनोई के। नमिता की पारिवारिक स्थितियों का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ के लिए उसका उपयोग करता है। सं ाय कनोई नमिता को प्रेम की सा ाश दिखाकर बाप बनना ाहता है। उसका प्रेम नमिता की कोख खरीदने के लिए था। छल द्वारा बाप बनने की अवमानना आ ा के युग की देन है। आवां में बीसवीं सदी के अंतिम दशक के इस सामा ाक यथार्थ को ि त्रा ाी ने बड़े सह ा ंग से अभिव्यक्त किया है।

समा ा में गरीबों की हालत देखने लायक है ाो धमी लोग अपने कपड़ों में मांड़ देते हैं। उसी मांड से गरीब ब ाों का पेट भरता है। पर अपने कपड़ों की फिक्र है लेकिन गरीब के पेट की फिकर नहीं ाो उनके घ्झेरों में विन भर काम करते हैं। समा ा में यह ऊँ ा-नी ा की स्थिति आ ा की बात नहीं, यह खाई पहले से ही समा ा में मौ ाूद है। ये गरीब स्त्रियाँ सामा ाक विसंगतियों का भी शिकार होती हैं।

पुरुष प्रधान समा ा में आ ा भी पुरुष स्त्री ोतना को उभरने नहीं देते। अपने अधिकारों के लिए लड़े। उन्हें समान अधिकार प्राप्त हों। वे स्त्रियों को वही दोयम द ेा का मानते हैं। आवां उपन्यास की सुनंदा की इसी कारण हत्या होती है कि वह

अपने अधिकारों के लिए लड़ती है। समा ा को ठुकराती है। समा ा की पारंपरिक मर्यादाओं को तोड़ती है। ोतना संपन्न स्त्री थी उसके सामा िक सरोकार प्रबल थे ि ासके कारण उसकी हत्या हो ाती है। 'आवां' एक ालती हुई भट्टी है। समा ा में व्याप्त विसंगतियों की या यों कहूँ मानवीय ीवन की ज्ञात-अज्ञात विषमताओं का ि ात्रण है ि ान्हें आ ा समा ा के प्रत्येक व्यक्ति के मुखौटे के अंदर देख सकते हैं।

ये कैसा समा ा है ि ासमें स्त्री अपने और पराए सभी द्वारा ठगी ाती है। समा ा में उसे भोग्य की वस्तु ही माना ाता है। कहीं वह अपने मौसा का शिकार है कहीं सौतेले भाई का कहीं अधाडी के अन्ना साहब का तो कहीं करोडपति सं ाय कनोई ैसे व्यक्ति का उसका सामा िक अस्तित्व शून्य है। वह न ही घर में आ ादी का सांस ले सकती है न ही बाहर स्वतंत्रता से ी सकती है। हर प्रकार का शोषण, प्रताड़ना, उपेक्षित होना पड़ता है, घर में, समा ा में पूरी दुनिया में। स्त्री किसी भी वर्ग की हो शोषण उसका पीछा नहीं छोड़ता। अपने आत्मबल, आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान तथा व्यक्तिगत पह ान को बनाने के लिए स्त्री हमेशा से संघर्षरत है। पर रुग्न समा ा उसे खुली सांस खुला स्वतंत्र, खुला स्वास्थ्य देने में असमर्थ है।

मृदुला गर्ग कृत 'कठगुलाब' में सामा िक विसंगतियाँ अत्यधिक दृष्टिगत होती हैं। स्मिता के ी ा द्वारा स्मिता का बलात्कार करना, नमिता को लातों-घूसों से पीटना, पुरुष प्रधान समा ा में स्त्रियों को बहकाना नमिता कहती है। "कितना आसान है औरत को बहकाना नालायक से नालायक बेटे को ायदाद देने के लाल ा में तरह-तरह के प्रपं ा करके बेटी को बेदखल कर दिया ाता है।"[62] स्त्री का सामा िक ीवन अर्थहीन दिखाई देता है। स्त्री पर शोषण खुल कर होता है। स्त्री का बलात्कार की समस्या से ू ाना, अकेलेपन की पीड़ा उसके अंतर्मन की

[62] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.215

स्थिति से ू ाना, पुरुष के अत्या ार का अतिक्रमण दृष्टिगत होता है। कठगुलाब में स्त्री की सामा िक स्थिति पर दृष्टि डाली गयी है। स्त्री ाति की उभरती वेदना को मनोविश्लेषणात्मक िंतन के साथ उपन्यास की स्मिता, मरियान, नर्मदा, असीमा आदि स्त्री पात्र का ित्रण किया गया है।

स्त्री का सामा िक ीवन अर्थहीन है। सामा िक कुरीतियों का शिकार है। समा की विसंगतिपूर्ण वातावरण से कुछ स्त्रियाँ विद्रोह करती हैं िसका नती ा उन्हें मौत के घाट उतार देता है। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं ो सामा िक भय के कारण पति की उपेक्षा सहती हैं। अन्याय-अत्या ार को सहत हुई उनसे बिछुड़ना नहीं ाहती। समा में आ भी स्त्री पूरी स्वतंत्रता के साथ स्वस्थ ीवन ीने में असमर्थ है। सामा िक व्यवस्था में अब भी स्त्री का ीवन अनुकूल नहीं है। कहीं बलात्कार की शिकार है, कहीं धोखे, कहीं छेड़छाड़, भेड़ियों की दृष्टि से ब ाने में वह असमर्थ है। कहीं दहे के शोषण से पीड़ित है। विधवा, अकेलापन, नौकरीपेशा स्त्री, दहे , अमानुषता का व्यवहार, स्त्री के सामा िक ीवन को डावाडोल कर देता है। इन विसंगतिपूर्ण विषमताओं का शिकार स्त्री हमेशा से रहती आई है और शायद आगे भी रहती रहेगी। ाहे कितनी भी आधुनिकता समा में आ ाए स्त्री की स्थिति में कहीं कोई सुधार नहीं। शायद संदर्भ बदल अवश्य गये हों।

4.1.3 स्त्री का वैवाहिक ीवन

‘ ूला नट’ (मैत्रेयी पुष्पा) की शीलो का वैवाहिक ीवन पति के कारण घुटन भरा हो गया है। पति उसकी छाया से भागता है उसका तिरस्कार, अपमान, उपेक्षा ही करता है। इन सब कारणों से भी शीलो हार नहीं मानती है। न ही आत्महत्या करने की ठानती है। उसके पास रह ाता है ीने का निशब्द संकल्प और श्रम की ताकत एक अडिग धैर्य और स्त्री होने की ि ीविषा-उसे लगता है

कि उसके हाथ की छटी अंगुली ही उसका भाग्य बदल सकती है। उसे काट कर फेंक देती है।

'छिन्नमस्ता' (प्रभा खेतान) की प्रिया का वैवाहिक ीवन पति के कारण तहस-नहस हो गया है। उसका पति उससे नहीं उसके शरीर से प्रेम करता था। इस प्रवृत्ति के कारण उसके वैवाहिक ीवन में घबराहट निर्मित हो गई थी। वह कहती है-"केवल रात के प्रहर में ही नहीं बल्कि रात में, दिन में, शाम को वक्त-बेवक्त कभी भी पार्टी के लिए तैयार होकर हम निकलने वाले होते कि वह मु े वापस कमरे में घसीट लेता।"[63] वैवाहिक ीवन में वह एक कठपुतली के समान ी रही थी। पति-पत्नी मं आपसी कोई लगाव नहीं। इसी कारण संघर्ष उत्पन्न हुआ। बात यहाँ तक आ ाती है कि प्रिया एक दिन पति पर ाप्पल मार देती है। उसका यह विद्रोह वैवाहिक ीवन तोड़ देता है। उसका पति विश्वासघात होता है। दूसरी स्त्रियों के साथ भी संबंध रखता है। प्रिया का वैवाहिक ीवन बिखर ाता है। सारे पैसे, गहने ुप ाप लेकर ह म कर लेता है।

अल्मा कबूतरी (मैत्रेयी पुष्पा) में आनंदी का वैवाहिक ीवन पति मंसाराम तथा कदमबाई के संबंधों के कारण डगमगाता रहता है। मंसाराम कभी आनंदी के तरफ उन्मुख होता है कभी कदमबाई की तरह। मंसाराम हमेशा कदमबाई के पास भागने की कोशिश करता है। उससे मिलने का एक छोटा-सा लम्हा खो ाते रहते थे। ाब कदमबाई के पति ांगलिया की मौत हो ाती है तो मंसाराम कबूतरा बस्ती कभी नहीं गय धर्म को निभाने की कोशिश की ि ास "स्त्री से ब्याह का गठबंधन ुड़ा, उसे पूरी तरह निभाया। वंशबेल के रूप में ोधा और करन दो बेटे। परिवार की परंपरा नहीं तोड़ी। कुल-पितरों का तर्पण किया।"[64] उन दिनों पत्नी की उनके साथ तपस्या पर ुटी थी। मंसाराम का तप ईश्वर अराधना

---

[63] प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता-पृ.134

[64] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.26

था तो आनंदी की साधना पति सेवा थी।"[65] वह आनंदी से कहना ाहता था-तू मेरा विश्वास करना। पर रा ा के पैदा होने के बाद वह कदमबाई से मिले बगैर रह नहीं पाया। उसके लिए पालना लेकर सदा कबूतरा-बस्ती ाला गया। ब े बड़े होने लगते हैं "करण राणा से कहता है कि उसके पिता ी पीने के बहाने तेरी अम्मा से मिलने आते हैं, इसी कारण उसकी माँ पिता ी से लड़ती है। रोटी नहीं खातीं। आग में ालने की धमकी देती है।"[66] बेतुकी औरत! कदमबाई के भीतर की आवाज़-"करन तेरा यार है पर मंसाराम की औरत तूने देखी हे? अपने आदमी को लेकर हमसे खुन्नस मानती है।"[67] आनंदी ने इसी खुन्न्स के ालते राणा को अपने पालतू कुत्ते से बुरी तरह कटवा डाला। ाब मंसाराम इन् ेक्शन का प्रबंध करने के लिए सो ाते रहते हैं आनंदी व्यंग्य में कहती है-"साँप के सपेलुए भी छोड़े नहीं ाते।"[68] आगे कहती है-"हमें अब अपनी छाया पर भी भरोसा नहीं। करन को तुमने बगल में दे लिया है, काये से कि तुम्हें ोधा से टक्कर लेनी है। अपनी आसनाई की खातिर भइया-भइया फाँक डाल दी। इस ामाने में मंथरा लुगाई के रूप में नहीं, मर्द बनकर अवतार ले रही है।"[69] अपने पति की वह उपेक्षा करती है। अपने अकेलेपन और असुरक्षा के कारण उसका मानसिक बल कम होता रहता है। वह ोधा को साथ लेकर पति की उपेक्षा, अपमान करने पर उतारू हो ाती है। और पति को घर से बाहर निकलने पर उतारू हो ाती है। कहती है " ोधा, अब इस घर में तेरा बाप रहेगा या हम, काये से कि घर की पटरानी बनने कदमबाई कबूतरी आ रही है"[70] समा ा में आनंदी को सब ताना मारते हें ािसके कारण उसे शर्मिंदा होना पड़ता है। वह

---

[65] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.27
[66] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.40
[67] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.54
[68] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.87
[69] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.87
[70] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.88

अपने आपको अकेला महसूस करती है। पति की मनमानियों से तंग आकर एक दिन आत्महत्या करने में असफल होती है। आनंदी का वैवाहिक ीवन पति के कारण बिखरा हुआ है असफल है।

प्रभा खेतान कृत 'आओ पेपे, घर लें' उपन्यास में एलि ा का वैवाहिक ीवन पति के कारण बिगड़ता है। वह तो पति से बेहद प्रेम करती है। परंतु पति क्लारा ब्राउन के साथ रहता है। विदेशी संस्कृति के अनुसार वह अन्य पुरुषों में रु ि नहीं ाहती क्योंकि ा ि से ही उसने बेहद प्रेम किया है। उसे अपने होते हुए बर्दाश्त भी नहीं कर सकती। इसी उपन्यास का पात्र मरील का वैवाहिक ीवन भी बिखर गया है। क्योंकि नरील पति के होते हुए भी बॉय-फ्रेंड के साथ रहती है। उसकी आदत ही यह है कि किसी एक पुरुष के साथ वह साल भर भी नहीं रह पाती। अतः यहाँ मरील के कारण ही वैवाहिक ीवन बिगड़ गया है। मिसे ा बेरी भी वैवाहिक ीवन में शांत नहीं है। वह पति से बदला लेने के लिए वैवाहिक ीवन को दफना देती है। उसका कहना है कि पति उसे प्यार नहीं किया। केवल दया दिखायी है। यदि ये प्यार करते तो आ ा इस प्रकार का प्रश्न निर्मित ही नहीं हो सकता। वह कहती है-"वह एक दयालु इंसान है। बहुत ही भले पर प्रेम? नहीं, इस दुनिया में प्रेम कोई करता ही नहीं।"[71] इसी के कारण उसका वैवाहिक ीवन निराशामयी बन गया है। वह इ राइल ाने का वि ार करती है और परिवार ही उखड़ ाता है। पति उससे माफी माँगता है। परंतु वह उसे कभी भी माफ नहीं करती और किम्बूत ाती है। अतः अपने निश ाय पर अटल रहने के कारण वैवाहिक ीवन बरबाद हो ाता है।

'अपने-अपने ेहरे' (प्रभा खेतान) में रीतू का वैवाहिक ीवन डगमगाने लगती है। ाब उसका पति गोयनका उसकी सेक्रेटरी रमा से प्यार करने लगता है। ि ासे रीतू को यातना सहनी पड़ती है। अनप ़, गवार होने के कारण

[71] प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता-पृ.134

दकियानूस और असंवेदनशील परिवार की यातनाएँ ोलनी पड़ती है। आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होने के लिए वह संघर्ष करती है।

‘आवां’ (ि ात्रा मुद्गल) उपन्यास में उर्मिला का वैवाहिक ीवन उसकी अपनी कडवाहट से बिखरा हुआ है। वह कभी पति से सही ंग से नहीं रहती। उर्मिला के कर्कश स्वभाव के कारण उन दोनों के बी ा हमेशा खाई बनी रहती है। अपनी बेटी से भी तीस का आकड़ा रखती है। वह हमेशा ि ाम्मेदारियों के प्रति अपना अनिष्ठावान स्वभाव ही रखती है। ब ाों में फर्क रखती है बेटा आगे भविष्य में उसका सहारा होगा सो ा कर उसे ही ठीक ंग से फलने की कोशिश में रहती है। वह सो ाती है पति ने उसके लिये काम किया ाब काम करते थे कामगार अधाली में तो वहाँ के वर्क्स को उनकी ि ांता में ही समय बिताते थे। बीमार होने पर अपनी ही दुनिया में ीवन ी रहे हैं। पति मृत्यशय्या पर होने पर भी वह अपनी बहन से पति की निष्कृष्ठा की बात ही कहती है। वह कहती है-"कौन रा ापाट छोड़े ाा रहे बिन्नो, ि ासके खाने-पीने के मं ीर ब ााऊँ कि छाती कूटूँ... ि ांता इकलौते पेट पोंछना छुन्नुवा की हो रही।"[72] उर्मिला पति के रहते मकान अपने नाम करवाना ाहती है। इस पर नमिता कहती है-"पत्नी नहीं, कुटमी हो तुम। बाबू ाी की मौत भुनाने वाली। उसकी मौत की प्रतीक्षा करनेवाली। मौसी के हांके हक रही हो अपना परिवार डुबोने।"[73] इस पर माँ क्रोधित होकर उसे डांटने, गाली देने लगती है। पति मरने पर भी उर्मिला को कोई फर्क नहीं पड़ता। कुंती के साथ ठहाके मार कर हंसने पर नमिता रोकती है, इस पर उर्मिला (माँ) कहती है-"अपना ीवन ीकर ि ासे ााना था, सिधार गया। उसके मरे मैं भी मर लूँ, ऐसी सती सावित्री मैं नहीं। ाब तक ाांगर ालेगा अधाकर ि ाऊँगी। ... लावारिस कुकुरों की भांति इस घर को खंमा बनाया रात-दिन मूतते यूनियन

---

[72] आंवा, ि ात्रा मुद्गल-पृ.331
[73] आंवा, ि ात्रा मुद्गल-पृ.342

वालों ने? अनप़ ़ आई थी तो क्या और नहीं थी? ा तू अपना काम देख। टंगडी लगाने की ारूरत नहीं मेरे-उठे-बैठे, हंसे-बोले। नमी बड़ी क्या हुई कि तेरे ाी ाा ाी से गाहे-बगाहे होने वाले सलाह-मशविरों को भी आग लग गई। ाीवन की मूरख ठहरी, यही साबित कर दिया बाप-बेटी ने। उसी हाथ की बु ़ापे की लाठी है, कुंती। उसी लाठी को तेल-घी ाुपड़ पालना-पोसना होगा...।"[74]

पति द्वारा नीरसता तथा हमेशा कामगार अधाड़ी में व्यस्त रहने के कारण तथा युनियन वाले की िंता में घर-परिवार पर ध्यान न देने के कारण उर्मिला इतनी कठुर बन गयी थी कि उसने अपने वैवाहिक ाीवन में सुख को नहीं देखा। उसकी आशाएँ, इ छाओं का दमन के कारण, उसके कट्टर व्यवहार के कारण उसके वैवाहिक ाीवन संघर्षपूर्ण तथा दुःखी है। इसी व्यवहार के कारण वह अपने ब ाों को भी दुःखी रखती है। हमेशा उनकी उपेक्षा करना, डांटना, प्रताड़ित करने में ही संलग्न रहती है।

'एक ामीन अपनी' (ि ात्रा मुद्‌गल) उपन्यास में अंकिता का वेवाहिक ाीवन पति के कारण बरबाद हो ाता है। शादी के तीन सालों में ही पति उसकी उपेक्षा तथा उसमें कमी ूं ़ने लग ाता है। हमेशा उसे प्रताड़ित करना, घर में ाुआ अड्डा बनाना, दोस्तों के साथ मटरगस्ती करने में ही समय निकाल देता है। उसे मानसिक एवं शारीरिक दोनों तरह से तनाव देता है। उसे उसकी इ छा के अनुरूप ालना ाहता है। इन सभी यादतियों को अंकिता सहन नहीं कर पाती। विद्रोह करती है तो पति उसे मारता हे, शारीरिक अत्या ाार के साथ मानसिक तनाव भी देता है। इन सबके ालते अंकित रिश्ता खत्म कर देती है और वह कहती है-मु ो तुमसे घृणा है... घृणा... तुम्हारी ऐयाशियों और यादतियों को सती-साध्वी बनी, मांग में स ााए ोलती ााना... इस मुगालते में रहना कि मैं स्त्रीत्व की पूर्णता का भ्रम ाीती रहूँगी-लो, इसी वक्त यह रिश्ता खत्म। उसने

---

[74] आंवा, ि ात्रा मुद्‌गल-पृ.404

अपनी कलाइयों की ूड़ियाँ ान्न से फर्श पर उछाल दी थी और पैरों के बिछुए लो ़ें से कु ाल दिये थे।"[75] अंकिता अपने विवाहित ीवन के असफलता के कारण दुबारा इस प ाडे में पड़ना नहीं ाहती। स्वतंत्रता के साथ नौकरी करके ीवन यापन करती है।

ारीना ो मि.गुहा की पत्नी है, इनका भी वैवाहिक ीवन सफल नहीं है। मि.गुहा की अविवाहित पत्नी बाबी ठाकुर के कारण पति द्वारा उपेक्षित और परित्यक्त हुई। ारीना वैवाहिक ीवन की असफलता के कारण हिंदी फिल्मों में ारित्र अभिनेत्री का काम करने लगती है। एक अंग्रेज़ी दैनिक को दिए गए अपने विवादास्पद साक्षात्कार में उन्होंने बाबी ठाकुर को किसी का बना-बनाया घर उ ाड़ने वाली 'गली की कुतिया' ैसे विशेषणों से भी विभूषित किया। बाबी ठाकुर को उन्होंने सरेआम ुनौती दी कि वह किसी प्रकार के गुमान में न रहे, उनके नाटक प्रेमी रसिक पति को मं ा पर ही अभिनय करने और करवाने का शौक नहीं है, नि ी ीवन में भी वे मं े हुए अभिनेता हैं। विवाहित ीवन को टूटता हुआ देख आगे कहती है-"पति पत्नी में अगर नहीं पटती तो मात्र दिखाने के लिए मृत संबंधों को ोने से बेहतर है तत्काल अलग हो ाना... कि यह किसी के द्वारा किसी के अधिकारों के शोषण का प्रश्न नहीं है, अपितु ीवन ीने की बुनियादी शर्त है, िसे हमारे समा ा में पूरे साहस के साथ स्वीकार किया ाना ाहिए...।"[76] बाबी ठाकुर ने बहुत सो ा-सम ाकर यो ानाबद्ध तरीके से उनके समृद्ध और प्रतिष्ठित पति को अपने प्रेम ाल में फंसाया है। यहाँ दूसरी स्त्री के कारण, सुरक्षा के कारण, प्रतिष्ठित ीवन व्यतीत करने के कारण वैवाहिक ीवन में असफलता परिलक्षित होती है। स्त्री ाहे कितनी ही समृद्ध हो ानी, मानी हो

---

[75] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.
[76] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.51

उसे कहीं न कहीं किसी-न-किसी रूप में उपेक्षा का पात्र पति द्वारा होना ही पड़ता है।

कोकिला भी वैवाहिक ीवन में असफल रही क्योंकि मेहता उसकी आकांक्षाओं, इ छाओं को सम ाने में असमर्थ था। पति उसे यौन संतुष्टि नहीं दे पाता। ि ासके कारण कामांध कोकिला अपने ही देवर पर आसक्त होती थी। पर ैसे ही देवर की शादी की बात तय हुई तो कोकिला विमुख होने लगी। साथ ही देवर रु ि ारा से भावात्मक लगाव ीने लगा है। देवर का मन कोकिला की ओर से विरक्त होते देख कोकिला सारी हदें पार कर गयी। ि ासके कारण उसने आत्महत्या कर लिया। यह भी वैवाहिक ीवन को नष्ट करने के लिए पति ही कारण है।

दिलो-दानिश (कृष्णा सोबती) में विवाहेतर काम-संबंधों और संतान की स्वीकृति का प्रश्न, दूसरी स्त्री की ाटिता तथा तीखेपन के कारण कुटुंब प्यारी का वैवाहिक ीवन सुखी नहीं है। पति का दूसरा घर है। पति की दूसरी पत्नी और दो ब े भी हैं। विवाहित ीवन में महकबानो के कारण घुटन भरी ि ांदगी ीती है। हमेशा पति और महकबानो को कोसती रहती है। घर में महक को लेकर संघर्ष ालता रहता है। कुटुंब प्यारी न महक को बर्दाश करती है न उसके ब ों का हवेली आना। 'दूसरी औरत' को लेकर घर में हमेशा कुटुंब प्यारी तथा कृपानारायण के बी ा ालती रहती है। वह कहती है-"फिर ऐसा क्या है वहाँ ो आप उसे दूसरा घर बनाए हैं?"[77] कुटुंबप्यारी सो ाती है कि अगर वहाँ कोई ना ाने गाने वाली होती तो कोई फर्क नहीं पड़ता। पर वहाँ तो पति ने दूसरा घर बसा राख है। दूसरे घर की ि ांता से उसका वैवाहिक ीवन कष्ठमय हो गया है। वह अपने ीवन को असफल मानती हुई हमेशा दुखी रहती है। यहाँ भी पति के

[77] दिलो-दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.81

कारण ही वैवाहिक ीवन में दरार पड़ी है। स्त्री के सेक्स, संपत्ति, संतान की वस्तुपरकता से स्त्री ीवन में वैवाहिक ीवन में कड़ुवाहट आ गई है।

'यामिनी कथा' (सूर्यबाला) की यामिनी का वैवाहिक ीवन बिखरा हुआ है। पति का पयार उसे सही ंग से नहीं मिल पाता। पिता घर से बाहर काम करता है।उसे पति से मानसिक प्रेम नहीं मिलता। शारीरिक प्रेम का उसके ीवन में कोई महत्व नहीं। बेटा होने पर भी उसके ीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता। ीवन में घुटन भरे एहसास से वह अपनी व्यथा स्पष्ट करता है। "इस व्यक्ति ने मु े कितना तरसाया है। सब कुछ था इसके पास। सब कुछ दे सकता था यह... लेकिन नहीं दिया। सिर्फ शरीर की सतह पर फिसलाकर दुत्कार दिया करता था। तृप्ति की एक अमृत-बूँद के लिए तरस गई थी मैं। न मन लिया, न मन दिया।"[78] ीवन भर पति के प्यार के लिए तरसती रही। फिर भी पति सुख से वं ित रही। पति मर ाने पर वह दूसरा विवाह करती है। ये वैवाहिक ीवन भी इसे नौटंकी लगता है क्योंकि इसका दूसर पति केवल यामिनी से प्यार करते हैं। इसके पहले बेटे को दुतकारा है। इनकी दूसरी संतान होने पर दूसरा पति अपने ही बेटे को ाहता है। यामिनी का डर लगता हे कि यह भी वैवाहिक बंधन अधूरा न रह ाए। पुतुल के कारण वह पति के साथ आनंदित नहीं रह पाती है। एक दिन पति को कहती है-"अगर पुतुल तुम्हारा बेटा होता, तब भी क्या तुम उसके प्रति मेरे आग्रह को दुष्टि से देखते?"[79] इस सभी कारणों से वह संघर्ष करते हुए भेदभाव के ालते दूसरे पति निखिल के साथ वैवाहिक ीवन सुखी नहीं कर पाती। यामिनी का वैवाहिक ीवन असफल सिद्ध होता है।

'बैतवा बहती रही' की ग ारा का वैवाहिक ीवन डगमगाता रहता है। पति हरींदर (बैरागी) यादव पुत्र थे। ि निका विवाह ब ापन में ही ग ारा के साथ

---

[78] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.49
[79] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.93

हो गया था। "पाँ ा साल बाद गौना हुआ। दुल्हन विदा हो आयी-मगर ाने के पेड़-सी बौनी सीधे हाथ में पाँ ा की ागह छः उंगलियाँ। ऊपर से अमावसी रंग।"[80] दोस्ती का परिहास बने, पत्नी की ा र्ा समा ा में होने लगी ि ासको वह सहन न कर पाया तथा घर से भाग कर ोग लेलिया... (बैरागी को किसी रूप सी अप्सरा को मधुर सम्मिलन की आस थी, ो शत प्रतिशत खंड-खंड हो गयी।"[81] ग ारा को अकेले छोड़ कर भाग गया। उसने सास-ससुर की दिल से सेवा की। पति की आस की कभी तो आयेंगे। बैरागी ने "सन्यास भी क्या था- ीवन की खुशियों में र ाा बसा... गृहस्थ के बंधन से मुक्त।"[82] "वो बैरगिया! बड़ौ को आँख भर नहीं हेरत। यहाँ-वहाँ ताका- ाँकी से फुरसत मिले तब न। ग ारा पै न ार पड़त ही भाग लेत है ैसे ततैया-बर्र ने काटा हो। ो बि ाारी दिन-भर काम धंधे में लगी रहत है, सबकी सेवा-टहल करत है। बा नासमिटें के पू ाा-पाठ कौ समान तैयार करके धर देत, और अलग को हट ाात।"[83] पति को पति का रूप पसंद नहीं है। उसको उसके ाह की पत्नी नहीं मिली तो संन्यासी बन गया। और ग ारा का वैवाहिक ीवन घुटन भरा, अकेलेपन, संत्रास, पति के व्यवहार की टीस हमेशा दुःख भरा ीवन बिता रही थी। बैरागी का पत्नी से कोई लगाव नहीं, मेल-मिलाप नहीं, पर मुख देखे का संबंध क्या कम भारी है? गाँठ ोड़कर, अग्नि-साक्षी करके सात फेरों का बंधन क्या सह ा नकारा ाा सकता है? बहुत बड़ा आधार था उसके पास। अर्द्धांगिनी होने के अधिकार की गरुहता पर टिकी है ग ारा।"[84] पर भावनाओं, इ छा-आकांक्षाओं का दमन कर अपने वेवाहिक ीवन का भार मूक बनी ो रही थी सो ाती थी कभी तो दिन फिरेंगे दहली तक आ ही

---

[80] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.20
[81] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.20
[82] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.20
[83] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.52-53
[84] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.63-64

गये हैं कभी तो ीवन में भी प्रवेश कर ही लेंगे। इसी आस-विश्वास में ीती रहती है।

'अपनी सलीबे' की नीलिमा का वैवाहिक ीवन उसके अहम तथा ाति भेद के कारण अपने वैवाहिक ीवन में कटुता लाती है। प्रेम विवाह करने पर भी उसका वैवाहिक ीवन उसी के कारण असफल हो ाता है। इनके संबंधों में विषमता का मुख्य कारण ाति के छोटे होने तथा अहम आडे आ ाता है। नीलिमा को ाब पता ालता है कि उसका पति छोटी ाति का हे िासको गांव में ऐसी ाति के हाथों से पानी तक नहीं पीते, उसके छुए को हाथ लगाने से भी पाप होता है। वह मेरा पति है। उसने मु ो धोखा दिया है। इसी कटुता को पालते हुए वह अपने आप घर छोड़ देती है। वह कहती है-"तुमने छिपाया अपने बारे में। अपने घर, परिवार, अपनी ात के बारे में... हम लोगों के संस्कार होते हैं सामाि ाक मान्यताएँ, नियम होते हैं। लोगों को मालूम होगा तो क्या मुँह दिखाऊँगी।"[85] और इन सब बातों को सो ा कर वह हंसता-खेलता ीवन में अपने आप विषमता उत्पन्न कर देती है। और ईशु को छोड़कर अकेले नौकरी करके ीवन ीने लगती है।

' ाक' (मैत्रेयी पुष्पा) उपन्यास की सारंग का भी वैवाहिक ीवन सफल नहीं है। सारंग में अन्याय से लड़ने की क्षमता, आततायियों का मुकाबला करने की दृ. ता तथा स्त्री अधिकारों के लिए अपने आप को खत्म करने की हिम्मत है। वह स्त्री संहिता की समस्त मान्यताओं को ुनौती देती है। समा ा में हो रहे स्त्री पर अन्याय को सह नहीं सकती िासका विरोध, गाँव, समा ा तथा पति भी करता है। पति का हस्तक्षेप उसे सही नहीं लगता। पति उसके कामों में विघ्न डालता है और स्त्री संहिता को ुनौती देने पर पुरुष अहम के कारण पत्नी का विरोध करता है िासके कारण उनके वैवाहिक ीवन में दरार पड़ ाती है। संबंध डगमगाने से

---

[85] अपनी सलीबे, नमिता सिंह-पृ.182

वैवाहिक ीवन असफल बन ाता है। स्त्री-पुरुष की सो ा-वि ार में फर्क वैवाहिक संबंधों को खत्म कर देते हैं। कोई भी पति समा ा में स्त्री को उसके नियमों के हिसाब से ाते ही खुश होता है। ैसे ही स्त्री सभी संहिताओं को तोड़ती है अपने हक के लिए स ाग होती है तो पति ही क्या पूरा समा ा भी सहन नहीं कर पाता। उसके विरुद्ध हो ाता है। इस उपन्यास में भी ऐसा ही दर्शाया गया है।

'कलि-कथाःवाया बाइपास' (अलका सारावगी) में ललित की मामी का वैवाहिक ीवन डगमगाता रहता है। उसका पति किसी रखैल से संबंध रखता है। मामी बड़े खानदान की सुंदर सुशील लड़की है। वह रा ाघरानों की रानी की तरह लगती है। फिर भी पति बहूबा ार की मैना ठकुरानी के पास ाकर उसे अपनी रखैल बनाता है। उसके लिए अलग मकान की व्यवस्था भी करता है। यह सब देख कर उसे यक्ष्मा की बीमारी हो ाती है। घर के बड़े-बू े भी कुछ नहीं कहते ऊपर से नाना ी उसे सम ाते हुए कहते हैं-"पति को कोई शौक हो तो पत्नी को सम ाना ाहिए।"[86] वह पति का दूसरी स्त्री से संबंध हटाने के लिए ोर को पकड़ने का करतब दिखाने वाली बर्मन की माँ के पास भी ाती है पर इन सब प्रयत्नों से कुछ भी हाथ नहीं आता। इस घुटन भरे ीवन की स्थितियों से हारकर एक दिन मामी की मृत्यु हो ाती है। इस उपन्यास में भी पति के कारण ीवन घुटन भरी, असहाय, िंता पूर्ण है। िसके ालते एक मारवाडी परिदृश्य में स्त्री की असहाय नियति को परिलक्षित किया गया है। ो सब कुछ सहती हुई घुट-घुट कर ीवन त्याग देती है। विद्रोही नहीं बन पाती। यहाँ पर मारवाडी समा ा की रू ़िगत परंपरा को उ ागर किया गया है। िसमें पुरुष ो भी कुछ करता है उसमें उसका सुख मानकर पत्नी को उसका साथ देकर ीवन को ालाना पड़ता है। याने ीवन ीना नहीं ालाना, घसीटना पड़ता है। अपनी आत्मा को त्याग कर खुशी में खुश होना पड़ता है।

---

[86] कलिकथा : वाया बाइपास, अलका सरावगी-पृ.67

इदनम्म' (मैत्रेयी पुष्पा) में कुसुमा का वैवाहिक ीवन उसके क्रूर पति यशपाल के कारण ऊब ाता है। पति से संबंध वि छेद को वह यशपाल की क्रूरता, बेरहमी का कारण मानती है। उसने उसके ीवन को ुलसा के रख दिया। उस पर अत्या ार किये, उपेक्षा, मारपीट से उसका ीवन उ ाड़ होने लगा। वह पति के रहते उसकी क्रूरता से बदला लेने के लिए दाऊ ू (असर सिंह) से यौन-संबंध स्थापित करती है। वह गर्भवती होने पर यशपाल क्रोधित होकर उसे पीटता है। उसको प्रताड़ित करता है। वह सारी मान-मर्यादा त्यागकर विद्रोही होकर कहती है-"ओ नकीले, खैर मना कि ब ा दाऊ ू का है। नहीं तो यह किसी का भी होता, ात का आन ात का। गैल लते आदमी का। तुम्हें क्या हक... कुत्ता की ात, नहीं मिनते हम तुम्हें।"[87] कुसुमा अपने वैवाहिक ीवन से इतनी अतृप्त है कि उसकी तृप्ति के लिए वह कैसा भी कदम उठाने को तैयार है। अत्यधिक शोषण स्त्री को विद्रोही बना देता है। यशपाल ने कुसुमा के अहम को ठेस पहुँ ाई थी। उसकी उपेक्षा तथा प्रताड़ना से ही कुसुमा का वैवाहिक ीवन डगमगा ाता है।

आलो य उपन्यसों में कारण कैसा भी हो, ो भी हो पति द्वारा ही स्त्री का वैवाहिक ीवन साररहित हो गया है। नीरस ीवन से स्त्री ऊबकर विद्रोहिणी बन गयी है। पुरुष ने उसे हर पल छला है। उसे अपमानित, प्रताड़ित, उपेक्षित किया िासके कारण वह वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन पति के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। अन्याय, अत्या ार, मानसिक तथा शारीरिक तनाव के कारण स्त्री ने संबंध वि छेद किये हैं िासने नहीं किये घुट-घुट कर मर गयी।

---

[87] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.124

4.2 स्त्री घुटन : विविध संदर्भ

विवे य उपन्यासों में स्त्री सामा िक आधार पर कई समस्याओं का शिकार हुई दिखाई देती है। सामा िक अधिकारों के साथ मानसिक अधिकारों की समस्या का स्त्री को सामना करना पड़ता है। वह आ   भी अंधविश्वास, धार्मिक रू ़ियों का शिकार हुई है। घर-परिवार में बंदिनी तथा सामा िक विसंगतियों को सहना पड़ा है। अधिकार हीन तथा महत्वहीन   ीवन के कारण ही स्त्री शारीरिक, मानसिक दोनों स्तरों पर शोषण का शिकार हुई। तलाकशुदा, विधवा, परित्यक्ता, कुँवारी स्त्रियों को लेकर ही सामा िक समस्या का निर्माण हुआ है। इस समस्या से स्त्री सह ता से नहीं निकल पाती क्योंकि इस समस्या का केंद्र स्त्री के भीतर छिपी असुरक्षा की भावना तथा उसके आश्रित होने की नियति में है। यही व ह है कि शोषित स्त्रियाँ आ   भी उन्हीं विसंगतियों की शिकार है   ो वर्षों से समा   में व्याप्त है। नौकरी के क्षेत्र में भी स्त्री को सामा िक शोषण का शिकार होना पड़ता है। शिक्षित होते हुए भी वह सामा िक भय के कारण पति से अलग होने से संको   करती है। इसी कारण उसे पति से छुटकारापाने के लिए 10-15 वर्ष लग   ाते हैं। तलाक होने पर समा   का दृष्टिकोण बदल   ाता है। वे सामा िक, उपेक्षा की विषमता की शिकार बन   ाती है। अकेली स्त्री को देख पुरुष उस पर लाँछन लगाता है, उसकी तरफ वासना की दृष्टि से देखता है। अंतिम दशक की लेखिकाओं ने स्त्री के इस शोषित स्थिति को अपने उपन्यासों में बेबाकी से ि त्रित किया है।

4.2.1 अनमेल विवाह

विवाह एक ऐसा अटूट बंधन है ि समें स्त्री-पुरुष में वै ारिक समानता अत्यधिक आवश्यक है। नहीं तो ये बंधन अप्रिय, बो ,   कोसला बनकर रह   ाता है। मैत्रेयी पुष्पा कृत ' ूला नट' उपन्यास में 'शीलो' का विवाह बालकिशन के बड़े भाई सुमेर से होता है   ो उसकी उपेक्षा करता है और माँ के सम ाने पर

कहता है "तुम यश नामवरी की ाहना छोड़ दो, फिर सो ो कि तुम्हें अपेन बेटे की खुशियाँ कु ाल देने में भी गुरे ा नहीं ऐसी माँ... ो अपनी औलाद का मन हीन सम ो।"

"ठीक है, मैं तो अज्ञान हूँ बेटा"

"आपे से बाहर मत होओ। ठंडे दिमाग से सो ो, तुम्हारी छः उँगलियों वाली कल्लू बहू मेरे दोस्त को रोटी परोसने ही आ ाती, वह कल के दिन मु े बोलने न देता। काले गोरे दो रंग... पर तुम्हारी बहू तो नीली है, बैंगनी।"[88] शीलो, अपने रंग रूप तथा हाथ में छः उंगली होने के कारण अनमेल विवाह की शिकार होती है और ीवन की नीरसता से ीती रहती है। इस उपन्यास में स्त्री के रूप को दर्शाया गया है ो रंग रूप के कारण शीलो पति द्वारा अपमानित, प्रताडित होती है। पति उसकी छाया से भी दूर भागता है। वह सो ाती है-उसके हाथ की छठी अंगुली ही उसका भाग्य लिख रही है-और उसे ही बदलना होगा।"[89]

'बेतवा बहती रही' में 'ग ारा' का बाल विवाह हुआ था। पाँ ा साल बाद गोना हुआ। बैरागी उसका पति था ो सपनों में रूप सी अप्परा के मधुर सम्मिलन की आस रखता था। ग ारा उसके सपनों के विपरीत नज़र आयी-" ाने के पेड़-सी बौनी। सीधे हाथ में पाँ ा की ागह छः उंगलियाँ ऊपर से अमावसी रंग... यार-दोस्त हँसने लगे। खूब खिल्ली उड़ी। ि धर भी बैरागी पाँव धरते, उन्हें देखते ही लोग पत्नी की ा र्ा छोड़ देते। रो ाना दो- ार वाक्य कानों को छेद ही ाते।"[90] बैरागी (हरींदर) ग ारा को छोड़कर सन्यासी बन ाता है। ग ारा माँ-बाप की शिक्षा के कारण पति का घर नहीं छोड़ सकती, सास-ससुर की निष्ठा से सेवा करती है। "ग ारा किसी असंभव तरल पल की बाट ोह रही थी। पति की एक ालक पाने को तरसती रहती। कभी बैरागी का ूठे से भी आँगन- ाँके में

---

[88] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.37

[89] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-भूमिका से (cover page)

[90] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.20

सामना हो ाता तो निहाल हो उठती। क्षीण-सी आशा ाग उठी थी मन में, अंधियारे पक्ष में तारों की रोशनी को प्रकाश ैसी- ो घर तक लौट आया है, वह कभी निकट भी आ ायेगा। दिन भर सास-ससुर की टहल- ाकरी में लगी रहती। ससुराल की ौखट के भीतर सिमटी अपने को धन्य सम ा रही थी। ऊपर से माता-पिता के उपदेशों की अमोघ दीक्षा पल्ले के छोर से बंधी थी। "... बाप के द्वरे से पालकी उठी है ग ारा, अर्थी ससुर की देहरी से उठै बिटिया। मताई-बाप की ला ा राखियो।"[91] अनमेल विवाह के कारण ग ारा को पति का अपमान, उपेक्षा सहना पड़ा तथा उसके वियोग में वह अकेलेपन की पीड़ा को सहती रही। अनमेल विवाह शोषण को ान्म देता है।

'एक ामीन अपनी' की कोकिला का अनमेल विवाह होने के कारण वह देवर से संबंध बना लेती है। ाब देवर की शादी की बात उठती है तो वह आत्महत्या कर लेती है। ि ासके कारण उसकी ननद पर इसका असर पड़ता है। वंदना के विवाह में बाधा आ ाती है और वह सामाि ाक प्रतिष्ठा, पारिवारिक मान मर्यादा के लिए अनमेल विवाह करने को रा ाी हो ाती है।

'अपने अपने ोहरे' की श्रीमती गोयना भी अनमेल विवाह के शोषण की शिकार है। पति सुंदर, स ाीला, ऊँ ाी कद काठी का स्मार्ट व्यक्ति बी.ए. पास घर के खाते-पीते परिवार का बड़ा बेटा। रा ोंद्र गोयनका को ठींगने कद की सावली कुरूप पत्नी मिली। पहली रात को ही पति ने उसे नापसंद कर दिया था। पत्नी अनप ़ घरेलू पिछड़ी किस्म की स्त्री थी इसलिए कि पति उसे पसंद नहीं करता। वह ाानती है पति उसका नहीं है इसी कारण वह कटु बनती गयी। "पारंपरिक शादियों में अनमेल ाोड़े ाीवन भर एक दूसरे को ोने पर विवश होते हैं।"[92] इसलिए ये प्रेम की तलाश में बाहर भटकते रहते हैं। बेटी रीतू का भी शादी के

---

[91] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.21-22
[92] अपने-अपने ोहरे, प्रभा खेतान-पृ.176

बाद यही हाल था। पति कुणाल की सपनों की रानी रति अग्निहोत्री ौसी प्रेमिका थी, पर पत्नी उसके विपरीत 'मोटी बदसूरत, अनस्मर्ट' िासके कारण कुणाल उससे कतराता है और हमेशा रीतू के मोटे होने के कारण उसका अनाकर्षक दिखने के कारण पति उसकी उपेक्षा करता है।

'पीली आँधी' की पद्मावती 13 वर्ष की उम्र में उससे दुगनी उम्र के माधो के साथ आर्थिक तंगी के कारण ब्याह दी गई। अनमेल विवाह के कारण पति की मृत्यु हो गई और वह ीवन भर निसंतान रही। इसी उपन्यास की सोमा भी इसी समस्या की पीड़ा से त्रस्त है। पति गौतम विलासी और बेकार पति को छोड़कर प्रोफेसर सेन से मन-वि ार या शारीरिक संबंध बनाती है। उसे ब ा ाहिए ो पति दे नहीं सकता। इसी व ाह से वह रुंगटा परिवार की मान मर्यादा, सामा िक लोकोपवाद की िंता छोड़ कर गर्भ धारण करती है। पूरे परिवार की प्रताड़ना और पति से मिली, शारीरिक तथा मानसिक यंत्रणा से तंग आकर सु ीत के घर हमेशा के लिए ाली ाती है। इसी प्रकार अनमेल विवाह भी विषमता स्त्री के ीवन को भयानक रूप से शोषित करते हैं।

4.2.2 अकेलापन

तलाकशुदा, विधवा, परित्यक्ता, अविवाहित, नौकरीपेशा स्त्रियों को अकेलेपन की समस्या से ू ाना पड़ता है। समा ा में वे उपेक्षा की पात्र बनती है। अकेलेपन की कुंठा से त्रस्त होकर मानसिक तनाव को उत्पन्न कर लेती है। विधवा स्त्रियों का ीवन अत्यन्त दुःख भरा, करुणामय तथा यातनामय हो ाता है। पति की मृत्यु स्त्री को नितांत अकेला, असहाय निराश्रित बना देता है। सामा िक कट्टरता और रू ि़याँ उसके ीवन को दूभर कर देते हैं। अपने शेष ीवन को असहनीय पीड़ा, वेदना, कष्टमयी के साथ बिताने को म ाबूर हो ाती है। समा ा में अकेली स्त्री का ीवन अभिशप्त, अधिकारहीन हो ाता है। अंतिम दशक की स्त्रियाँ अपने वैधव्य के अकेलेपन को दूर करने के लिए विद्रोही बन गई है। कुछ

विद्रोह नहीं कर पायी तो ीवन भर दुःख को साथ ोए रहती है। यामिनी कथा की यामिनी आर्थिक अभाव के कारण पुनर्विवाह कर लेती है। 'बेतवा बहती रही' की उर्वशी विधवा के अकेलेपन की त्रासदी से गु ारती है। इदन्नमम की बऊ ीवन भर वैधव्य के अकेलेपन को ोती रहती है। बऊ की बहु प्रेम विद्रोह कर रतन यादव के साथ भाग ाती है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया अपनी ननद नीना से कहती है-"नहीं नीना। कभी अकेलेपन से खौफ खाकर मैंने गलत सम ौते किए थे। परिणाम भी मु े भोगने पड़े। किए गए सम ौतों ने मु े और अकेला बनाया, ाबकि आ ा? यों देखो, मेरे पास कोई नहीं फिर भी दो- ाार लोग ारूर ऐसे हैं, िान पर मैं स ा में भरोसा कर सकती हूँ। आदमी के प्रति यह आस्था ही तो हमें िालाए रखती है।"[93]

नौकरी पेशा, तलाकशुदा, परित्यक्ता स्त्रियाँ भी अकेलेपन की पीड़ा को ोल रही है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'एक ामीन अपनी' की अंकिता, 'कठगुलबा' की स्मिता, मारियान, 'ऐ लड़की' की बेटी, 'अपने-अपने कोणार्क' की कुनी, ' ूला नट' की शीलो सभी नायिकाएँ अकेलेपन की समस्या से पीड़ित है। प्रिया सो ाती है-मेरा यह नि ाी कोना काम की व्यवस्थाओं के मुखौटों के पीछे छुआ हुआ था। लेकिन अब यों खुद को छलने से फायदा? अकेले होने की पीड़ा, त्रासदी, आतंक में क्या नाम दूँ इसको? पर इतना प्रभाव तो मेरे मन पर पड़ा ही है। आँसुओं को मैं ते ा रफ्तार से दौड़ते हुए सुखाती रही। पिछले दस वर्षों से काम की व्यस्तताओं में उल ाकर इस प्रश्न को मैंने बार-बार पीछे केला है-अगर काम न होता... भाग दौड़ न होती तो क्या मैं ाी पाती?"[94] फिर सो ाती है-"नहीं मैं आ ा अकेली नहीं, पहले कभी भी।"[95]

---

[93] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.221
[94] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.22-23
[95] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.25

समा ा में नौकरीपेशा, तलाकशुदा, परित्याग स्त्रियों को अकेले ाीवन बिताना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वे अनेक प्रकार के शोषण का शिकार बनती है। उन्हें हर समय असुरक्षा की भावना परेशान करती है। पुरुषों की वासना भरी दृष्टि उनका हमेशा पीछा करती है। एक तरफ तो परिवार से अलग रहने की विवशता उस पर असुविधाओं को ोलना। नौकरी करते हुए ाीवन में अप्रिय तथा असुविधा ानक स्थिति में बिताने को बेबस हो ााती है।

कठगुलाब की स्मिता, मारियान, अकेलेपन की समस्याओं से ू ा रही है। दोनों 'रिलीफ फॉर एब्यू ड वुमेन', 'रॉ' में काम करती है। दोनों ही "पुरुष के हाथों विकराल मर्माघात सह ुकी थी और उससे उबरने के बाद, बाकी औरतों की मरहम-पट्टी में लग गयी थी।"[96] मारियान अकेलेपन से दूर होने के लिए स्वयं का ब ाा ााहती थी। पर प्रकृति ने उससे वो हक भी छीन लिया था। वह ब ाी को गोद लेना ााहती है पर उसके दूसरे पति ने मना कर दिया था। स्मिता भी अकेलेपन की त्रासदी से पीड़ित है। उसे काटने को आती है-" ाबरदस्ती खाली वक्त ूँ.कर ट्यूशनें प.ाती रही, स ा, व्यस्तता और थकान से ब.कर नेमत, दुनिया में नहीं है। हर ाीज़ पर हावी हो ााती है... किसे बहका रही हूँ?"[97] नर्मदा, असीमा, सभी अकेलेपन को भरने के लिए एक ब ो की ााह रखती है। सभी सामाा ाक शोषण का शिकार हुई है। नर्मदा अकेले होने पर कहती है-"छुँछी की छूँछी, इकली अनाथ न बालक भया न भर्तार।"[98] नमिता ाब स्मिता को अकेले छोड़ने की बात करती है तो नर्मदा कहती है-"तुम काहे बात की इकली हो, बीबी। हम बाँ ा औरतों में एक तुम्हीं बाल ब ोदार हो बेटा-बेटी, दोनों हैं

---

[96] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.65
[97] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.25
[98] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.161-162

तुम्हारे। तुम काहे इसुए बहाओगी। रोना तो हमें ाहिए मु ो असीमा बीबी को और तुम्हारी इस मेम बहन को भी, िनका ना बालक हुआ ना भर्तार रहा।"[99]

'अपनी सलीबें' की नौकरीपेशा अविवाहित, परित्यक्त, स्त्रियों अकेलेपन की समस्या से ू ा रही है। नीलिमा पति को छोड़कर अकेले ीवन यापन कर रही है। महिला कॉले ा में प ़ाती है और टी ार क्वाटर्स में रहती है। ाब वह नयी-नयी क्वार्टर में आयी तो उसे "कई दिनों तक नींद नहीं आई। नई ागह अकेले रहना, पूरे कमरे में अकेले सोना।"[100] अकेले रहती स्त्री की सभी उपेक्षा करते उसके सामने कुछ नहीं करते पर पीछे ारूर बातें करते हैं। "अरे एक ही ऐ ा ग्रूप की हैं। फिर अकेली हैं तीनों (रत्ना, शोभना, नीलिमा) न कोई िाम्मेदारी न कोई बो ा। ाहाँ ाहे ाएँ, घूमें। िातना दिल ाहे बोले-हँसे।"[101] नीलिमा को हमेशा सन्नाटे, अंधेरे और अकेलेपन से डर लगता था। वह हमेशा उ ााले की तलाश में अकेलेपन से भागती रहती थी। अविवाहित मिस कुमार भी ब ़ती उम्र में अकेलेपन से पीड़ित थी। वहीं दूसरी ओर कॉले ा के प्राइमरी विभाग में हेड मिस्ट्रेस प्रभा वर्मा ने नौकरी करते हुए पूरा ीवन बिता दिया। उनके साथ उनकी अधेड़ावस्था में छोटी बहन विभा दोनों अकेलेपन के कारण उनकी आँखों की उदासी और सूनापन दिन-पर-दिन आँखों के नी ो बन रहे काले घेरों को गहरा करता ााता है। विवशता भरी मुस्मुराहट ोहरे पर छा रही है। ाुर्रियों की हम ाोली बन रही है।"[102] इस स्थिति से ये दोनों सनकी बन गई हैं। किसी भी पुरुष को घर के भीतर आने नहीं देती। सतीत्व रक्षा की दोनों बहनों को िांता रहती है। सभी स्त्रियाँ किसी-न-किसी समस्या से ू ा रही हैं। किसी की अविवाहित होने की किसी की ब ़ती उम्र की तो किसी की परित्यक्ता की अकेले

---

[99] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.207
[100] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.7
[101] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.17
[102] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.31

ीना दूभर बन गया है। काम करते समय दिन कट ाता है। पर ाब रात हो या छुट्टी का दिन हो तो समय काटने आ ाता है। मानसिक स्थिति खराब हो ाती है। सो ा-वि ार के घेरे उन्हें किन-किन खड्डों में केलता है। उन्हें किन-किन मानसिक तनावों से गु ारना पड़ता है। अकेले होने की पीड़ा से वे त्रस्त हैं। म ाबूर है इस पीड़ा से उबरने के लिए।

ि ात्रा मुद्गल के 'एक ामीन अपनी' उपन्यास के अनुसार स्त्री का सामाि ाक ाीवन प्रा ाीन काल से बंधनों से मुक्त नहीं है। सामाि ाक व्यवस्था ाो पुरुष ने बनायी है उसने स्त्री को सदियों से कमरे में बंद रखा है। सामाि ाक व्यवस्था ने ही स्त्री के स्थान को निकम्मा बनाया है। तलाकशुदा स्त्री को समा ा में क्या स्थान है यह अंकिता के माध्यम से स्पष्ट होता है। अंकिता की ओर देखने का हरिंद्र की पत्नी सविता का दृष्टिकोण अलग ही रहता है। ाब अंकिता हरिंद्र के गुणों की प्रशंसा करती है तो हरिंद्र ही उसे बताता है कि ये पत्नी के सामने अ छा नहीं। तभी अंकिता सो ाती है-"एक तलाकशुदा स्त्री की किसी के पति के विषय में उसके गुणों को आत्मीय सहयोग ही साधिकार ा ार्ा, उनके संबंधों को संदिग्ध बनाती है।"[103] अतः स्त्री के वि ाार कितने भी अ छे हों परंतु ाब वह तलाकशुदा है उसे सामाि ाक सम्मान बिलकुल नहीं मिलता। नौकरी के कारण ाब वह अकेली रहती है तो मकान मालकिन की दृष्टि से उसकी ओर साशंक बनी रहती है। उसे ऐसा लगता था कि यह औरत अपने पति को कब ो में न कर ले। अतः ऐसी औरतों का ाीवन समा ा में तनावपूर्ण रहता है। मकान मालिक परब भी उसकी ओर वासना की दृष्टि से देखता है।

अकेली औरत को रहना एक मुसीबत ही बन गई है। अंकिता कहती है- "शाम होती और वह आया होता तो हाथ ाोड़- ाोड़कर मुसीबतें रोने लगता, पाँव पकड़कर कसमें खाता और अपनी मांग पूरी न होने पर रौद्ररूप धर उसे देख

---

103 एक ज़मीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.41

लेने की धमकी देने से भी न हि ाकि ाता।"[104] अतः इस प्रकार तलाकशुदा या अकेली स्त्री को समा ा में निर्मम बनकर ही रहना आवश्यक है।

एक अकेली लड़की अगर अकेला और निर्द्वंद्व ीवन ीती है तो समा ा के 'भलेमानुस' को यह अ छा नहीं लगता, वे मौक़े की तलाश में रहते हैं कि कुछ-न-कुछ ऐसा घटे कि वे ाटखारे लें। इस देश में सह ा निर्मल आनंद का इतना अभाव है कि लोग केवल मज़े की तलाश में रहते हैं और वह भी विकृत कुंठित मज़े की।"[105] इस उपन्यास में तिलक भी ऐसा ही भला मानुस है ाो हमेशा मौके की तलाश में रहता है कि उसे किसी स्त्री के नि ाी प्रसंगों पर घटी घटनाओं का समा ाार मिले और वह सगर्व अपने सहकर्मियों को ाटखारे ले-लेकर बताए। तिलक ाब नीता और बाकी ठाकुर की बातें केवल म ो की तलाश में सारे आम लांछित करता रहता है। अंकिता को तिलक के छद्म व्यक्तित्व से बड़ी ि ा. होती है और अंकिता उसे पछाड़े हुए कहती है। "यहाँ आपकी नैतिकता की ठेकेदारी इसलिए ाल रही है मि.तिलक कि कोई नहले का दहला मौ ाूद नहीं... ाटखारे लेने वाले अलबत्ता मौ ाूद हैं और इसलिए आप ब्रड़ी आसानी से हर लड़की की गोपनीय रपट अरेआम लिखते रहते हैं... यह और कुछ नहीं, पुरुष की बीमार मानसिकता ही है, ि ासकी विरासत अब भी आप ैसे ओछी मनोवृत्ति वाले पुरुष ो रहे हैं और मौका पाते ही दूसरों पर उल्टी करने लगते हैं।"[106]

4.2.3 दहे ा

दहे ा-समस्या ि ासने आ ा व्यापक सामाि ाक समस्या का रूप ले लिया है। "आ ा स्थिति यह है कि लड़की ाहे निरक्षण हो या उ ा शिक्षित, सुंदर या साधारण, नौकरी पेशा हो या गैर-नौकरीपेशा।"[107] साथ ही दहे ा ने आ ा के

---

[104] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.49
[105] और के हक में, तसलीमा नसरीन-पृ.19
[106] औरत के हक में, तसलीमा नसरीन-पृ.19
[107] स्त्री-अस्मिताःसाहित्य और वि ाारधारा, ागदीश्वर ातुर्वेदी-पृ.432

समा ा में नया रूप ग्रहण किया है। कुछ धनवान परिवार उपहार के रूप में अपनी बेटी को दहे ा देते हैं। इस पर आशारानी व्होरा अपने वि ाार इस प्रकार व्यक्त करती है-"नये-नये मुखौटे लगाकर दहे ा नये-नये रूपों में सामने आ रहा है। दहे ा की 'गिफ्ट ौक' के रूप में स्वीकार करना व 'गिफ्ट टैक्स' देकर कानून से ब ा ाना ऐसा ही एक नया रूप है।"[108]

यानी पैसों वाले समा ा में दहे ा लेना देना आपसी उपहार के रूप में विद्यमान है। भारतीय परिवेश में मध्यवर्गीय सामा िक व्यवस्था को दहे ा की समस्या सदियों से खोखला बनाती रही है। मध्यवर्गीय परिवार के ीवन की एक ऐसी विडंबना है ि ासके कारण लड़कियाँ ब .ती उम्र तक अविवाहित रह ाती हैं। शिक्षित हो या अशिक्षित, कमाऊ हो या घरेलू, लड़कियों का विवाह सामान्य माता-पिता के लिए बो ा बन ाता है। लड़कियाँ ब .ती उम्र के कारण किसी दुहा ू से भी करने को विवश हो ाती है। एक तो परिवार की आर्थिक कठिनाई दूसरे सामा िक उपेक्षा। दोनों कारणों से लड़कियाँ कई शोषणों, समस्याओं का शिकार होती है। परिवार की स्थिति तथा सामा िक उपेक्षा के कारण स्त्री का मानसिक संतुलन बिगड़ ाता है। इन सब ान ाटों से दूर वह अकेले ीवन ीना ाहती है। यही स्थिति 'अपने-अपने कोणार्क' की कुनी की है ो नौकरी पेशा स्त्री है। घर-परिवार के दायित्वों को निष्ठा से निभाती है। कुनी दहे ा की विषमता के कारण ब .ती उम्र में भी अविवाहित रहती है। उसके लिए रिश्ते आते हैं पर दहे ा को लेकर लड़के वाले बखेड़ा खड़ा करते हैं। एक बार रतिनाथ अपने बेटे का रिश्ता लाता है और दहे ा में 'कार' की मांग करता है। इस पर कुनी के पिता सो ा में पड़ ाते हैं-"रतिनाथ की माँगे काफी ऊँ ाी थी... इतना गहना-गुरिया, इतना नकद सा ाो समान, रंगीन टी.वी. और कार। ... स्कूटर तक तो ठीक था। थोड़ा इधर-उधर से ले-देकर रकम पूरी कर देते, प्रॉविडेंट फंड का पैसा भी रखा

---

[108] नारी शोषण आइने और आयाम, आशा रानी व्होरा-पृ.46

है लेकिन कार? कहाँ से आएगी कार? ाार बेटियों का पिता, रिटायर्ड, कहाँ से लाऐगा कार?"[109] पिता की स्थिति देख कर, वह शादी करने से मना कर देती है। पिता का अनुनय-विनय करना उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँ ााता है। उसके आत्मसम्मान पर तीखी ाोट करता है। वह माँ से कहती है-"बोऊ मैं यह शादी नहीं करूँगी, मैं बिकाऊ नहीं हूँ। मेरा मोल नहीं लगेगा।"[110] सब स्थितियों के ालते कुनी अपने छोटे-भाई बहनों को प ़ा-लिखा कर उनकी शादी ब्याह भी करवा देती है। खुद के विवाह के बारे में नहीं सो ाती अपनी ि ाम्मेदारी को ही महत्व देती है। पर खुद के परिवार वालों की उपेक्षा, आस-पड़ोसी की छीटा-कसी, सामाि ाक दृष्टिकोण तथा उपेक्षा के कारण ब ़ती उम्र में भी विवाह न होने पर घर से बाहर ााकर नौकरी करना सो ाती है। आर्थिक विपन्नता तथा दहे ा की समस्या से उत्पन्न स्त्री की यातना का ि ात्रण है। इसी प्रकार नमिता सिंह ने 'अपनी सलीबें' में इस समस्या को नीलिमा की माँ सुमित्रा देवी के माध्यम से उठाया है। बेटी प ़ी-लिखी है। पर आर्थिक तंगी के कारण वह बेटी के प्रेम विवाह को अपना लेती है और एक दिन नीलिमा से कहती है-"हाँ बेटी, सम ादारी ही तो थी। वर्ना हमारे पास क्या धरा था। मामूली सी ामीन की काश्त-उसके पीछे भी मु ा औरत ाात का खटना। रही एक हवेली, तो उस खंडहर से मैं क्या दे देती तुम्हें। एक प ़ा-लिखा कलक्टर पति कहाँ मिल ााता तुम्हें। कहाँ से लाती मैं आ ा के दस लाख... पंद्रह लाख।"[111] इसमें एक अकेली माँ की स्थिति का वर्णन किया गया है ाो विधवा है अकेले होने के कारण बेटी के विवाह के लिए दहे ा ाुटाने में असमर्थ है। दूसरी तरफ है नौकरी करनेवाली लड़कियों की समस्याएँ ाो आर्थिक विपन्नता के कारण ाीवन भर अविवाहित होने पर उपेक्षा की पात्र बनती है।

---

[109] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.127

[110] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.127

[111] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.221

ब ़ती उम्र के कारण अपनी सा ा-स ा पर अत्यधिक ध्यान देती है। स्टाफ की स्त्रियाँ उनका म ाक उड़ाती है। मिस सु ाता कुमार ालीस के ऊपर होने पर भी उम्र का लिहा ा नहीं रखती। कॉले ा में अत्यधिक मेकअप करके गुड़िया की तरह स ाध ा के आती है। रत्ना उसका म ाक उड़ाती है तो नीलिमा को अ छा नहीं लगता वह कहती है-"सिर्फ भाई-भाभी तो है इनके क्यों लाख रुपया दहे ा देने लगे वे लोग।"[112]

इस पर रत्न कहती है-"नहीं देंगे न। मैं इसीलिए म ाक उड़ाती हूँ कि ये औरतें अपने खोल से बाहर आने की हिम्मत क्यों नहीं करतीं। अरे प ़ी-लिखी हो-नौकरी करती हो। अपनी म ीं से शादी करो। क्या धरा है ात-पॉत में वर्ना रो ा बाल रंगो। मुँह रंगो इतरा-मतराकर बोलो... बनो सबके लिए म ाक की ी ा।"[113] नीलिमा कहती है-तुम क्या सम ाती हो। इंटरकास्ट में भी अब लोग एतरा ा नहीं करते, अगर लड़की मोटा दहे ा ला रही हो। सारी प्रॉब्लम तो दहे ा की है, ो ब ़ती ा रही है। बीमारी है यह भयंकर।"[114] परिवार की आर्थिक विफलता के कारण और सिर पर माता-पिता का सहारा न होने के कारण मिस कुमार ब ़ती उम्र में अविवाहित दहे ा के कारण रह ाती है। दहे ा की विडंबना में उसकी सभी उपेक्षा करते हैं। प ़ी-लिखी होने के बाव ूद नौकरीपेशा होने के बाव ूद उसे दहे ा की भयंकर बीमारी ने ाकड़ कर रखा है। ि ासके कारण वह कई समस्याओं का सामना करती है। सामा ािक शोषण का शिकार बनती है।

उसी प्रकार पीली आँधी की पद्मावती भी गरीब माँ-बाप की लड़की है। पिता ने गरीबी के कारण 13 वर्ष में ही पद्मावती की शादी उससे दुगने उम्र के माधोसिंह से की ो पहले ही शादीशुदा था। पद्मावती पीहर से एक बक्सा लाती है। ा ी सास ने उसे यह कह कर टांड पर रखवा दिया कि गरीब बाप ने क्या दहे ा दिया

---

[112] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.22
[113] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.23
[114] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.23

होगा। गरीब पद्मावती ने ाा ाी सास के अन्याय, अतया ाार को विनम्रता से सहा। देवर के ब ाों को अपना मान कर ाीवन भर निसंतान रही। दहे ा के शोषण से सोमा भी पीड़ित है। पिता श्री अग्रवाल की तीन बेटियाँ थीं सोमा बड़ी बेटी थी। सोमा की शादी गौतम से इसलिए की ााती है कि पिता के पास दहे ा के लिए मोटी रकम नहीं थी। परिवार में कोई बेटा नहीं था ाो कमाके लाए। प.ी-लिखी सोमा को गौतम पसंद नहीं था फिर भी पिता के आर्थिक विषमता के कारण स्वीकार करना पड़ा। दहे ा का सामान ताई सास को पसंद नहीं आया। पिता ने रईसी ताक ाांक देख कर उसे वहाँ बांध दिया। ाहाँ पति उसे मार-पीट, शारीरिक, मानसिक, अत्या ाार के सिवाए कुछ नहीं देता। सोमा शिक्षित प्रगतिशील वि ाारों वाली युवती थी। वही रुगटा परिवार में वैभव की ाका ाौंध के सिवाए कुछ नहीं था। दकियानूसी परंपरा, रीति-रिवा ा, आडंबर, इनमें ाीना उसके लिए असहनीय था तथा सास, ननद एवं ि ाठानियों के बी ा भी सोमा स्वयं को अकेला पाती थी। दहे ा की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या उत्पन्न करते हैं। बेमेल विवाह ि ासके कारण पति-पत्नी को छोड़ कर ाल्दी ही मर ााता है। ि ाससे स्त्री बाल विधवा बन कर ाीवन भर शोषण का शिकार होती है। दकियानूसी, आडंबरों को ाोते हुए ाीवन बिताती रहती है।

'बेतवा बहती रही' में भी इस ाड़ समस्या को लेखिका ने उठाया है। उर्वशी अत्यधिक सुंदर, सुशील, बड़ों का आदर करनेवाली युवती है। घर में कंगाली थी रोटी का ाुगाड़ भी नहीं हो पाताथा। भाई अ ाीत को घर के गहने गुरिया बे ा कर प.ाया था। बेटी बड़ी होने पर माँ-बाप ि ांता में पड़ ााते हैं कि उर्वशी का विवाह ऐसी निर्धनता में कैसे होगा। उर्वशी की माँ उसके पिता से कहती है-"अब लरका देखो मोंडी के लाने। अब ही से देखौगे तबन साल-दो-साल में संबंध तै हो पाहै। तुम्हें कछू सो ा-फिकर नहीं है। अरे बिटिया ानमत ही से बाप

ब्याही की सो ान लगत। दहे ा ोरन लगत।"[115] पर घर की हालत तोदो ून रोटी ुटाने की भी नहीं थी। "उर्वशी के ब्याह का व ान उनके सीने पर भारी पत्थर-सा लदा था। उसेक ान्म से ही वे ऋणी होने की अनुभूति से दबे थे। दहे ा का ख्याल आते ही कंगाली और दारिद्रय की खाई में ाा गिरते तल में डुब ााता।"[116] कई रिश्ते ूँ.ने लगे। "उनका आत्मविश्वास टूटने लगा, बेटी की बात। कछु ऊँ ा-नी ा हो ाये ो पूरी िांदगी खराब। सादी-ब्याह का मामला ठहरा।"[117] आगे वे सो ाते हैं बेटा अ ाीत प.ा-लिखा है। होशियार भी है। वो ही संभालेगा इस कार्य को। पिता ने बेटी की शादी के लिए बेटे पर आस बंधाई। पर बेटा ऐसा कि अपने सिवाय दूसरे के बारे में सो ाता नहीं था। बहन के लिए ऐसे रिश्ते ूँ.ता ाो बिना दहे ा के भविष्य में काम आनेवाले हों। दहे ा के प्रश्न उठते ही अ ाीत घबरा ााता। "बिना दहे ा के भी लोग रा ाी हुए पर उनकी खातिरदारी से भी अ ाीत पीछे हट गया। इस पर पिता कहते हैं-"दान-दहे ा नहीं माँग रहे, ो क्या कम है? खातिर-खुशामद तो करनै ही पड़है। अपने द्वारे आये बराती का भूखे भगा देहौ?"[118] पर अ ाीत तो ाहता था ऐसा रईस मिले ाो भविष्य में काम आ सके। "अ ाीत ऐसे दुहा ाु को खो ा निकालता है ाो ाार ब ाों का पिता। ािसमें अ ाीत की कौड़ी भी ख र् ा न हो ओर आर्थिक कठिनाइयों को भी सहारा मिले। दहे ा के बुलंद ांडों के नी ो उर्वशी का कोरा कन्यादान अंगे ाने को कोई तैयार नहीं होगा।"[119] आर्थिक विपन्नता के कारण परिवार के सदस्य सुंदर लड़की के लिए भी अंधा, काणा, दुहा ाू, ाोर, उ छके तलाशते हैं दान-दहे ा से ब ाने के कारण।

---

[115] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.24
[116] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25
[117] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25
[118] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25
[119] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.27

'छिन्नमस्ता' की प्रिया भी दहे ा की समस्या से गु ारती है। ब . ती उम्र के कारण, उसके रूप के कारण कोई भी उसे नापसंद करके ाला ाता है। इस पर उसकी माँ हमेशा खी ाती रहती है। सो ाती है पता नहीं इसे कोन ब्याह कर ले ाएगा। पिता मरने के बाद घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। फिर भी माँ ने घर को संभाल कर रखा था। पारंपरिक रीति-रिवा ा को, शान-शौकत को टूटने नहीं दिया था। प्रिया लाँ के फाइनल ईयर में थी, इतनी प .ाई के बाद लड़का आसानी से नहीं मिलता। लेकिन अग्रवाल परिवार से रिश्ते की बात ालती है। नरेंद्र को प्रिया पसंद आ ाती है। प्रिया के ससुर की एक रखैल थी ि ासके कारण उनके परिवार में कोई अपनी लड़की नहीं देना ाहता था। लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण और प्रिया की ब . ती उम्र के कारण माँ और भाई यह रिश्ता मन ूर कर लेते हैं। प्रिया की बहन सरला उसकी माँ से शादी के समय कहती है- "अम्मा सुनते हैं उनके घर का वातावरण अ छा नहीं, किसी बंगालन को रख रखा है... सुनते हैं उस औरत से एक एक लड़की भी है, इस पर माँ कहती है-तू भी सल्लो दो ब ों की माँ हो गई, लेकिन अब भी ब ापने की बात करती है। अगले में कुछ कमी है तभी न अपने यहाँ करा रहा है, फिर अपनी ओर की कम ोरी भी तो पह ानी... अम्मा का इशारा दहे ा की ओर था।"[120] आर्थिक कठिनाई एवं दहे ा के अभाव के कारण स्त्री का ीवन विसंगतियों का शिकार हो ाता है।

मार्कण्डेय के वि ार में-"दहे ा एक बड़ी समस्या है। यदि आप सही मायने में हिंदुस्तान में स्त्री विमर्श ाहते हैं तो अपने ब ों, खास तौर पर लड़कियों को ऐसा तैयार कीि ाए कि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। रो ाी रोटी कमारे लायक बनें।"[121] यदि वे पति पर निर्भर होंगी तो निश्ि ात रूप से उनके साथ अना ार, अत्या ार हो सकता है।

---

[120] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.137
[121] स्त्री विमर्श के विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.132

4.2.4 बलात्कार

बलात्कार की समस्या से स्त्री ाीवन भर अपराध-बोध से पीड़ित रहती है। स्त्री की इस घिनौनी सामाा िक तथा नैतिक अपराध के कारण मानसिक यंत्रणा की शिकार हो ााती है। बलाात्कार को सर्वाधिक घृणास्पद माना ााता है। यहाँ तक कि कुछ स्त्रियों को बलात्कार और हत्या के बी ा ाुनने की छूट दी ाायें, तो वे हत्या को ही ाुनेंगी।"[122] उसका व्यक्तित्व कुंठित हो ााता है। स्त्री पर यह एक अत्यन्त भयावह एवं घिनौना शोषण है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया का माई और प्रोफेसर ऐसे ही अतृत्व व्यक्तितत्व संपन्न व्यक्ति है। प्रिया बाल्यावस्था में ही अपने सगे भाई की वासना का शिकार होती है। युवावस्था में प्रोफेसर प्रेम ााल में फांस कर उसे ठगता है।

बताल्कारी पुरुष यादातर वे होते हैं, ि ानका यौन ाीवन अतृप्त होता हे या ाो शोषण करने की स्थिति में है।"[123]

यह घटना उसकी मानसिकता को असामान्य बना देती है। अपने भीतर पनपने वाले अपराध बोध के कारण ाीवन भर अविवाहित रहना ााहती है। पर विवाह होता है। पति भी ऐसा कि वासना का शिकारी, उसको हमेशा भोगने के सिवाए और कुछ नहीं करता। प्रिया को भोग्य की वस्तु ही मानता है। 'कठगुलाब' की स्मिता भी एक कुंठित पात्र है। उसकी कुंठा का कारण उसके साथ हुई बलात्कार की घटना है। स्मिता उसके ाी ाा की वासना का शिकार होती है। इसका प्रभाव स्मिता की मानसिकता को असामान्य बना देता है। उसे ते ा रोशनी से, आदमकदशिशे से डर लगता है। इस घटना के बाद वह कभी-भी आयना नहीं देखती। इला ा करवाने के लिए मनोविश्लेषज्ञ के पास ााती है। वह उसे केस सम ा कर शादी करता है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए, उस पर अपराधबोध

---

122 स्त्री-पुरुषःकुछ पुनर्वि ाार, रा ाकिशोर-पृ.107

123 स्त्री-पुरुषःकुछ पुनर्वि ाार, रा ाकिशोर-पृ.110

का एक्सपर्मेंट करना ाहता है। पर स्मिता को किसी अपराधबोध की शिकार न पाकर उस पर अत्या ार करता है, मारता है, पीटता है, गालियाँ देता है। उसे एक्पर्मेंट करते हुए भोगना ाहता है। स्मिता पर शारीरिक,मानसिक अत्या ार के कारण कुंठा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार 'आवां' उपन्यास की नमिता पांडे, गौतमी तथा स्मिता की बड़ी बहन अपने ही परि ानों की वासना की शिकार होती है। नमिता ब ापन में अपने मौसा की विकृत यौन मानसिकता का शिकार बनती है। उसके बाद म ादूर आंदोलन से ुड़ने के बाद नवयुवती के रूप में अपने नेता, पिता की उम्र वाले अन्ना साहब के विकृत यौना ार के दायरे में आती है। नमिता ागरूक और स ाग होते हुए भी निम्नमध्यवर्गीय संस्कारबद्धता और दब्बूपन के ालते न केवल उस शोषण पर ुप रहती है, आक्रांत होने पर भी आक्रांत के खिलाफ उठ नहीं पाती। यहाँ तक कि नमिता सं ाय कोन्नाई के प्रेम ाल में फंसकर उसके अवैध ब े की माँ बनने को भी तैयार हो ाती है। ाब नमिता का मिस्स क्यारे ा हो ाता है तो सं ाय कनोई तथा उसकी उद्धारक सम ो ानेवाली मैडम वासवानी की हकीकत उसके सामने आ ाती है। गौतमी भी अपने सौतेले भाई की हवस की शिकार बनती है। वहीं दूसरी ओर स्मिता की बड़ी बहन स्वयं के पिता के शोषणों से पीड़ित है। पिता मटकाकिंग है। वैहशीपन से घर की सुख-शांति भंग करके रहता है। उसकी इसी वैहशी भूख का शिकार उसकी अपनी बेटी बनती है। अपने-अपने कोणार्क की कुनी भी इस प्रकार के शोषण का शिकार होते होते ब ाती है। इला ा के लिए डॉक्टर के पास ाती है वहाँ पर डॉक्टर उसे लोलनी वूमन कहकर कहता है। तुम्हें एक पुरुष की आवश्यकता है और उसे भोगने की कोशिश करता है। पर कुनी ब ा निकलती है। 'इदन्नमम' की मंदा भी मास्टर की यौन मानसिकता का शिकार होती है। मंदा कैलास मास्टर को मामा कहकर बुलाती है। पर कैलास किसी भी रिश्ते को अहमियत न देकर मंदा को अपनी हवस का शिकार बनाता है।

‘अल्मा कबूतरी’ की अल्मा को ाति के कारण इस शोषण का शिकार होना पड़ता है। क ा समा ा के अन्याय, अत्या ार तथा वासना की शिकार होकर पशुओं से भी बदतर िंदगी ीने को बाध्य होती है। रा ानेता अपनी प्रतिष्ठा और पद ब ़ाने के लिए अल्मा को उनकी तरक्की के लिए वासना तथा सिनियर व्यक्तियों के लिए ारा बनाते हैं। उनकी वासना की शिकार होने के लिए कैद कर के रखते हैं। इसी प्रकार ाति की छोटी होने पर ‘अपनी सलीबें’ की मीना ो ामारों की लड़की है। गाँव में टॉयलेट की सुविधा न होने के कारण गाँव की लड़कियों को खेतों में या ंगलों में ाकर शौ ा करना पड़ता था। मीना को उस रात दस्त हो गए थे। उसे बार-बार शौ ा के लिए उठना पड़ रहा था। दो बार उसकी माँ साथ गई पर माँ को सोते देख मीना अकेली खेतों में ाली गई। वहाँ रात में तीन- ाार लोगों ने बलात्कार किया और फिर उसकी हत्या कर दी। नीलिमा के साथ महिला समिति की मेंबर अग्रवाल भी आयी थी। मीना पर हुए शोषण की व ाह गाँव में टायलेट न होना बतातेह ुए अग्रवाल कहती हैं-"इस ट्रे ाडी की व ाह "आ ादी के इतने सालों बाद भी टायलेट ैसी ारूरी ीज़ लोगों को मुहैया नहीं है। टट्टी पेशाब के लिए आ ा भी लोगों को, हमारी औरतों को बाहर, खुले मैदानों में ाना पड़ता है।"[124] गाँव के ामीनदारों का इसमें हाथ होने की संभावना से नीलिमा कहती है-"मीना के साथ ो हुआ, उस दरिंदगी, उसकी हत्या... गाँव के बड़े लोग द्वारा उसकी हत्या, क्या औरत होना पाप है... अगर आ ा कोई ातपात की बीना पर वहशीपन दिखाता है-दूसरों को ानवर सम ाता है, उसे िंदा रहने का हक नहीं। वह समा ा के लिए बेकार है... ऐसे लोग पापी हैं... नरक में ागह नहीं मिलेगी उन्हें।"[125]

---

[124] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.67
[125] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.74

विवे य उपन्यासों में युवतियाँ अपने ही परि ानों, पिता, भाई, ाी ाी, मौसा, मामा के शोषणों का शिकार होती है। उनकी वासना, विकृत यौन मानसिकता की शिकार होती है। प्रिया के उसके भाई द्वारा शोषण होने पर उसकी दाई माँ आलाप करते हुए कहती है-"अरे राक्षस! अरे कसाई! अपन माँ-बहन को छोड़ दे... कोठा नाहीं है का...?"[126] इसी प्रकार मंदा ाब कैलास मास्टर के वासना की शिकार होती है तो कुसुमा कैलास मास्टर की उपेक्षा करते हुए कहती है-"कीरा परें तुम्हारे। मंदा मामा कहकें टेरती हे, सो भी नहीं ख्याल किया? फिर काहे को बहन-भानि ा मानने का स्वाँग भरते हो? ग छत! कुकरमी! अधरमी!"[127] समा ा में बलात्कार एक प्रकार का दंश है ाो स्त्री के लिए ाीवन भर कुण्ठा, संत्रास तथा असहनीय अपमान ानक हो ााता है। स्त्री समा ा के अतातियों से ही नहीं परिवार ानों, परि ानों की हवस का शिकार बनती है। अपने ाीवन को प्रगति के लिए समर्पित कर समा ा में बलात्कृत स्त्री को शोषित, कुंठा, आत्मग्लानी, अपराधबोधी अवस्था में ही अपना ाीवन व्यतीत करना पड़ता है।

4.2.5 रखैल प्रताड़ित-उपेक्षित

रखैल स्त्री समा ा में पत्नी का हक नहीं पाती। हमेशा 'दूसरी औरत' ही रहती है। कानून कोई सुरक्षा नहीं देता। पति के मरने पर या पति रहने पर भी ये औरतें गैर शादी के किसी एक ही पुरुष की पनाह पाकर ाीवन बिताती हैं। उन्हें रखैल स्त्रियाँ कहते हैं। ये स्त्रियाँ परपुरुष के सान्निध्य में उसे ही अपना पति मानकर ाीवन यापन करती हैं। अंतिम दशक में भी ऐसी स्त्रियों का ि ात्रण हुआ है ाो रखैल स्त्री के संबंध में है-'दिलो-दानिश' की महकबानो, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'अपने-अपने ोहरे' की रमा, 'कलिकथाःवाया बाइपास' की मैना ठकुरानी, 'इदन्नम्म' की लीला राऊतिन, 'अल्मा कबूतरी' की कदमबाई ये सारी

---

[126] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.55
[127] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.106

स्त्रियाँ उपेक्षा, प्रताड़ना तथा ारित्रहीनता की समस्या से ग्रस्त हैं। रखैल की स्थिति 'न घर की न घाट की' ैसी हो ाती है। समा ा व परिवार किसी भी तरह उन्हें पत्नी का द ाा नहीं देने देता। वह समा ा में घृणा की पात्र बन ाती है। इनको किसी भी शुभ कार्यों में, शादी-ब्याह में, ती ा-त्यौहार पर सम्मिलित होने नहीं दिया ाता। इन सभी उपन्यासों में रखैल की समस्या के ित्रण के साथ उसकी व्यथा भी स्पष्ट हुई है।

'छिन्नमस्ता' में तिलोत्तमा एक प ़ी-लिखी स्त्री है िन्होंने कलकत्ता के लॉरेंटो कॉले ा से अंग्रेज़ी में बी.ए. आनर्स किया है। तिलोत्तमा के पिता कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे और प्रिया के ससूर उनके मवक्किल थे। पिता के पास केस के सिलसिले में आने- ाने से दोनों में प्यार हो गया है और कालीघाट ाकर ब्याह कर लिया। पिता ने बेटी को घर से निकाल दिया। इस पर तिलोत्तमा सो ाती है-"बाबा मु े कभी माफ नहीं कर सके, मैं तो उनके लिए कलंक थी। बैरिस्टर समा ा में बाबा सर उठाकर कभी ाल ही नहीं पाए।"[128] न पीहर वालों ने अपनाया न ही ससुराल में स्थान प्राप्त कर सकी। यहाँ तक कि अपने सौतेले बेटे नरेंद्र की शादी में भी शामिल हो नहीं सकी। ाति-बिरादरी के सामाि ाक बंधन के कारण अपने मन को मार लेती है। ाब प्रिया उससे मिलने आती है तो उससे कहती है-"तेरे ब्याह पर मैं ाा नहीं सकी। नीना तो बहुत रोती रही थी पर समा ा में किस-किस का मुँह बंद किया ाए?"[129] उसकी बेटी नीना को भी समा ा अपनाना नहीं ाहता िासके कारण नीना में पिता और उसके परिवार के खिलाफ कुंठा पनपने लगती है। वह कहती है-"भाभी क्या मु े उनकी इ छा-अनि छा का ख्याल करना ाहिए। भाभी, मु े पता है कि मैं एक ना ााय ा संतान हूँ। मम्मी कितना भी मांग में सिंदूर लगाएँ, उस लाल रंग में थोड़ी

[128] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.141

[129] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.142

कालिख धुली हुई है? इसलिए तो मम्मी का सिंदूर ामकता नहीं।"[130] रखैल स्त्री पति के साथ तो रहती है पर उसे सामा ाक और पारिवारिक सम्मान नहीं मिल पाता। इस पर प्रिया सो ाती है-"क्या ुटकी-भर सिंदूर से ही पत्नी कहलाने का हक मिल ााता है और बीस वर्ष बिना सात फेरे के संबंध को यों ही नकार दिया ाा सकता है।"[131] कि उसे अपने पोते से भी मिलने नहीं दिया ााता, न ही पति मरने पर कोई सांत्वना ही देता है। वह अकेले ही बाबूघाट पर स्नान कर लेती है। अपने आप ही ूड़ियाँ तोड़ लेती है, मांग का सिंदूर मिटा देती है। यहाँ स्पष्ट होता है कि समा ा में रखैल स्त्री और उसकी संतान उपेक्षित, प्रताड़ित है।

'दिलो दानिश' में रखैल तथा उसके ब ों की समस्या को दर्शाया गया है। महकबानो की माँ के वकील कृपानारायण थे। केस के सिलसिले में आना ााना था। माँ ने महक की िम्मेदारी कृपानारायण पर सौंप रखी थी। देखभाल के ालते दोनों एक दूसरे से बंध ाते हैं और रखैल की समस्या शुरू हो ाती है। वकील की पत्नी कुटुंबप्यारी उसे डाँटती है, दुत्कारती, उपेक्षा, अपमानित करती है फिर भी महक सब कुछ सहन कर लेती है। कुटुंब प्यारी उसे कई कडुवी बातें कहती है-"दलाल माँ-बेटियाँ मुकदमें की फीस न देकर शुक्राना में इनके सामने ाा लेटी। न ानिया। कमीनी।"[132] इस पर भी महक शांत रहती है। यहाँ तक कि सास द्वारा दिया गया कंगन भी कुटुंब प्यारी ाालाकी से यह कहकर वापस ले लेती है कि खानदानी ेवर खानदान में ही रहना ााहिए। महक कुछ न कह सुन कर कंगन भी लौटा देती है। यहाँ तक कि ब े बड़े होने पर उनके शादी ब्याह के लिए महक से अलग किये ाते हैं। इस पर महक घुटते हुए कहती है-"बेटा हमेशा से आपका है। अब बेटी को गोद लिया ाा रहा है। अहा-हा, हमसे ाो पैदा हुए।

---

[130] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.144-145

[131] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.146

[132] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.127

वकील साहिब, इन बि ारे लावारिसों को खानदानी ाामा पहनाना ारूरी है।"[133] ाब उसे बेटी के ब्याह में भी आने के लिए रोका ााता है तो महक घुटते-घुटते विद्रोही बन ााती है और वकील कृपानारायण से अपनी माँ के दिये ोवर की संदुक ी मांगती है। न मिलने पर अं ाम अ छा न होगा तक कहती है। विद्रोह में कहती है-"हम लोग! तुम लोग कौन? किसी कातिल डेरेदारन न ानिया के नवासे।"[134] आगे कहती है मु ो शादी से कुछ लेना-देना नहीं मु ो सिर्फ माँ के गहने ााहिए। अनेक अन्याय, उपेक्षा, अपमान को सहते-सहते वह केवल ममता के छिनने पर ही विद्रोही बनती है। उसका विद्रोही रूप खुद के ब ो छिन ाने के डर से उ ाागर होता है। याने रखैल होने की स ाा उसे किसी पर भी अधिकार नहीं है। समा ा, परिवार यहाँ तक कि खुद के ब ों द्वारा भी उपेक्षित हुए बिना नहीं रहती।

'अपने अपने ाहरे' की रमा ाो मिस्टर गोयनका के ब ों की टी ार बनकर आती है फिर प ़ी-लिखी होने पर तथा उद्योग का ज्ञान होने पर गोयनका की सेक्रेट्री बन ााती है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। ि ासे समा ा और परिवार अपनाता नहीं। उनकी उपेक्षा करते हैं। गोयनका उससे विवाह नहीं कर सकता क्यों कि समा ा पहली पत्नी के होते ऐसे रिश्ते को नहीं मानते। गोयनका शादी नहीं कर सकता है न ही प्यार के ााल से निकल सकता है। रमा उससे बेहद प्यार करती है पर कानूनी तौर पर उसे कोई अधिकार नहीं मिलता। वह सो ाती है-"स्त्री प्यार तो एक बार करती है, बस एक बार। एक ही पुरुष से। कभी शादी से पहले, कभी शादी के बाद इसके बाद तो वह अपने आप को ोलना सीखती है।"[135] उसे किसी सामाि ाक अधिकार एवं प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं है। वह प्रेम को ही श्रेष्ठ मानती है। "प्रेम करनेवाला अधिकार की लड़ाई नहीं लड़

[133] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.204
[134] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.206
[135] अपने-अपने ोहरे, प्रभा खेतान-पृ.181

सकता और ो अधिकार के लिए लड़ता है वह प्रेम करना नहीं ानता।"[136] ब समा और परिवार उसकी उपेक्षा करते हैं उनके संबंधों की छिटाकसी करते हैं। परिवार में उसका होना कलह को उत्पन्न करता है। तब वह गोयनका के साथ दोस्त बनकर ीवन बिताती है। गोयनका उसे परिवार से छिपाकर कुछ देना सो ता है वह इन्कार कर देती है। और कहती है-"क्या मैं स्त्री होने के कारण आपकी दोस्त नहीं हो सकती और दोस्त को छिपाकर देने की क्या रूरत है।"[137] वह समा और उसकी बनाई संहिताओं की िंता नहीं करती। समा का दृष्टिकोण उसके प्रति क्या है उसे परवाह नहीं। वह प्रेम और दोस्ती को ही महत्व देती है। गोयनका के परिवार के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है। बेटों को सम ाती है, बेटी ससुराल से आने के बाद उसे बि नेस करवाती है। परिवार की संतुष्ठि एवं संतोष को बनाने के लिए कई संघर्षों का सामना करती है। इतना करने पर भी "प ीस साल के संबंध के बाद भी वह परिवार की नहीं थी।"[138] इस पर रमा सो ाती है-"इस सड़े उबाऊ प ीस साल के इस संबंध को क्या नाम दूँ- प्यार, आबर्सेशन आदत?"[139] ीवन को यूँ ही दूसरी औरत के नाम से बिता देती है।

'इदन्नमम' में लीला राऊतिन रखैल के रूप में ित्रित हुई है। वह अभिलाख की रखैल है। रखैल होने का पूरा फायदा उठाती है। वह अभिलाख ैसे षडयंत्री, हड़पनीति में माहिर, म दूर स्त्रियों की आबरू से खेलने वाला व्यक्ति को अपने दबाव में तथा दिन-रात अपने ंगुल में फंसा के रखती है। सं सवरकर, नटनी की तरह रहती है। पूरे गांव पर अपना ठाक माती है। गाँव के किसानों के ट्रेक्टर बिकवाने का रौब ाड़ती है। इस स्थिति पर गाँव वाले

---

[136] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.92
[137] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.141
[138] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.215
[139] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.107

कहते हैं-"अभिलाख ने अपनी खास स्त्री को तो धोखा देने से बख्शा ही नहीं। उसकी ागह लीला राऊतिन को राखे है कुकरम नहीं है या अधरम नहीं है?"[140] लीला राऊतिन पूरी राऊतों पर रा ा ाला रही है। यहाँ ऐसी रखैल का ि ात्रण हुआ है ाो अपने ऐशो-आराम, मौ ा मस्ती में रहती है। ि ास पर शोषण नहीं होता वो ही दूसरों पर शोषण, अत्या ाार करती है। उनके सामने उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। पर पीठ पीछे ाी भर कर कोसना, उपेक्षा करना भद्दी गालियाँ देना नहीं छोड़ते।

दूसरी है तुलसीन ाो गनेसी दद्दा की रखैल है। ाो पहाड़ का ठेकेदार है। तुलसी की बेटी है अहिल्या, गनेसी दद्दा अहिल्या को अपनी धरम बेटी मानते हैं। ागेसर ठेकेदारों की रखैल रखने की प्रवृत्ति पर कहते है-"लीला के खातिर अभिलाख नहीं हो गये घर से बेघर। उसने नहीं छोड़ा कुटुंब परिवार कि तुलसीन के लिए गनेसी दद्दा ने नहीं छोड़ा सर्वस्व?"[141] यहाँ पर ाागीरदार तथा ठेकेदारों की अनीति, अमानवीय, रखैल रखने की प्रवृत्ति को दर्शाया गया है।

'कलिकथाःवाया बाइपास' में मैना ठकुरानी रखैल के रूप में दर्शायी गयी है ाो ललित के मामा की रखैल है। मामा ने सुंदर, संस्कारवान पत्नी को छोड़कर मैना ठाकुर को रखैल बनाकर रखा हुआ है। मैना की व ाह से घर में असंतोष, आपसी कलह उत्पन्न हुआ है। ि ासके कारण मामी उपेक्षा की पात्र बनती है और घुट-घुट कर बीमारी की शिकार हो ााती है। इस पर परिवार वाले मामी को ही सम ााते हैं-"पति को कोई शौक हो तो पत्नी को सम ाना ााहिए।"[142] यानि पुराने ामाने में रखैल रखना पुरुषों के लिए आम बात होती थी।और पत्नियों को इस आदत को स्वीकारना पड़ता था ााहे अंदर ही अंदर घुट कर मरना पड़े।

---

[140] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.230
[141] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.240
[142] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.240

‘अल्मा कबूतरी’ की कदमबाई भी दूसरी औरत के रूप में ि ात्रित हुई है। ाति की कबूतरी होने के कारण ऐसे संबंध बनाना इन स्त्रियों के लिए सह ा ही दर्शाया है। मंसाराम ो ाति के क ा है। कदमबाई को प्रेम करते हैं। कदमबाई शादीशुदा स्त्री है। पति कबूतरा समा ा के पेशे में माहिर है। ोरी करना, कुल्हाडी लाना, डाका डालना, खेतों से अना ा ुराना यही सब कबूतराओं का व्यवसाय है। ीविका का आधार है ि ासके कारण एक दिन उसकी मौत हो ाती है। ि ास दिन ंगलिया मारा ाता है उसी दिन दोनों अपना संबंध बनाते हैं। और उनसे ‘राणा’ पैदा होता है। इनके आपसी संबंधों का पता ाब आनंदी को लता है तो घर का वातावरण खराब हो ाता है। दोनों के दाम्पत्य ीवन में हल ाल, बहस, नोक ोंक, उपेक्षा ब ़ने लगती है ि ासके कारण आनंदी का दाम्पत्य ीवन घुटन भरा हो ाता है। बेटे को देख कदम सो ाती है... तू क ा है या कबूतरा? ो भी हो, कहीं मेरा ही मन बेईमान हो ाता है। सो ाती हूँ मंसाराम बदनाम हो गया तो तू अनाथ हो ाएगा। बिरादरी भी कम बेदर्द नहीं, भरम बना रहे तो तू पल ाएगा। मैं कितने मो ों पर ब ाा पाती हूँ तु ो...।"[143] कदम बेटे के कारण किसी से कुछ नहीं कहती वहीं दूसरी ओर आनंदी पति को कदम से मिलने से रोकती है न मानने पर आगे में लने की धमकी देती है। इस पर कदम सो ाती है-"नहीं पता था कि पतिव्रता औरत के सुहाग पर उसने डाका डाला है। पति को दोष कौन देती है? डकिनी कदमबाई ही, करन की माँ की छाती पर मूँग दल रही है।"[144] आनंदी ने कदम का क्रोध ‘राणा’ पर उतारा। उसके खूंखार कुत्ते से राणा को कटवाँ, नु ावा डाला और मंसाराम को इला ा के लिए इं ैक्शन भी लाने नहीं दिया। कदम ने बेटे के इला ा के लिए इं ेक्शन के ोरी भी करनी पड़ी। कदमबाई कबूतरी है तो क्या औरत नहीं? उसका आदमी मर गया, बस्ती ने

143 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.32
144 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.83

बहिष्कृत कर दी, बेटा अभी किसी लायक नहीं? उसका कौन है संसार में।"[145] मंसाराम का बड़ा बेटा भी कदमबाई की उपेक्षा करता है। इसी व ाह से पिता का अपमान, उपेक्षा तथा मार डालने की भी धमकी दे देता है। मंसाराम इन सब अवमाननाओं से ऊब कर हमेशा के लिए कदम के पास ाला ााता है। मंसा का कदम के पास आने पर-" ाोधा ने पाँव पकड़ लिए ाोधा की माँ ने कदमबाई के सामने पल्ला फैला दिया-मेरे सुहाग की भीख दे दे। मेरे ब ो का पिता लौटा दे।"[146] कदम समा ा से,परिवार से और मंसाराम के खानदान वाले की उपेक्षा की पात्र बन ााती है। उसने अपने और अपने बेटे के लिए कितने ही अत्या ाार, शोषण, अवमानना सही है।

विवे य उपन्यासों में रखैल की प्रवृत्ति का ित्रण हुआ है। 'दिलो दानिश' की रखैल परंपरा नवाबी वातावरण की देन है िासमें ये परंपरागत अनुकरण करते हैं और उनसे ान्मे संतानों को उनका सही हक देने का प्रयत्न करते हैं। अवैध संतानों के प्रति उनकी आत्मीयता पर वि ाार किया गया है। 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'कलिकथाःवाया बाइपास' की रखैल परंपरा पूँ ाीवादी, युग की देन है। िासमें रखैलों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाया ााता है। ये स्त्रियाँ अपनी आर्थिक कम ाोरी के कारण इनसे ाुड़ी रहती है। और धनिकों की रखैल बन कर रह ााती है। कहीं-कहीं प्यार के ााल में फांस कर उन्हें सामाािक उपेक्षा, पारिवारिक अवमानना का शिकार बनाते हैं। इनमें प ़ी-लिखी स्त्रियाँ हैं ाो प्रेम ााल में फंस कर ाीवन भर दूसरी औरत बन गई है-'अपने अपने ोहरे' की रमा, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'दिलो दानिश' की महकबानो इसके उदाहरण हैं।

---

[145] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.90
[146] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.167

4.2.6 ाति

समा ा में ाति के भेदभाव से भी कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। ाति भेद को लेकर अपमानित उपेक्षित किया ाता है। ो समा ा, पाति, वर्ग और लिंग के आधार पर टिकी हुई असमानताओं से भरा हुआ है, उसमें औरतों के प्रति समानता और न्याय पर टिका हुआ व्यवहार हासिल करना एक लंबे संघर्ष की अपेक्षा रखता है।"[147]

आवां उपन्यास में सुनंदा ातिभेद के कारण अपमानित तथा मौत के घाट उतार दी ाती है। वह हिंदु है मुसलमान लड़के से प्यार करती है। प्रेम करते समय तो कोई शर्त नहीं रखी ाती। पर विवाह के समय इस्लाम ग्रहण करने पर ोर दिया ाता है। वह इस्लाम ग्रहण नहीं करना ाहती िसके कारण सांप्रदायिक फसाद में मार दी ाती है। स्पष्ट है कि ाति की समस्या के कारण सुनंदा को शोषण का शिकार बनना पड़ा। इसी प्रकार 'अपनी सलीबे' की नीलिमा प ़ी-लिखी होने के बाव ूद भी पति का ाति से छोटा होने के कारण उसे हमेशा के लिए छोड़ देती है और अकेले होने की समस्या का सामना करती है। हमारे समा ा में फैली हुई विषमताएँ उत्पीड़ित और शोषित ातियों की औरतों की स्थिति को बहुत ही कठिन बनाये हुए है।"[148] यह स्थिति 'अल्मा कबूतरी' में भी दर्शायी गई है। उसी प्रकार 'अल्मा कबूतरी' की कदम भी ाति के कारण कई समस्याओं, शोषणों से संघर्ष करती है। इसी उपन्यास की अल्मा को तो ाति के कारण उपेक्षिता का ीवन ीना पड़ा, पशुओं से भी बदतर ीवन ीना पड़ा। 'एक ामीन अपनी' की अंकिता को भी इस समस्या का शिकार होना पड़ा। पति दूसरी बिरादरी का था िसके कारण आपसी तालमेल न ाम पाया और विवाहित

---

[147] नारी-प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.97

[148] नारी-प्रश्न, सरला माहेश्वरी-पृ.97

ािवन ाटके के साथ टूट गया। ािवन भर अकेलेपन की समस्या से ू ाती रहती है।

4.2.7 प्रेम

प्रेम को भी समा ा नहीं अपनाता, समा ा की रू ि ग्रस्त मान्यताएँ प्रेम की भावनाओं को नहीं मानते। स्त्री को प्रेम की समस्या का भी शिकार होना पड़ता है। ाति भेद के कारण हो, लड़कियों का विवाहित पुरुष से प्रेम हो, विधवा का प्रेम हो, सभी स्त्रियाँ उपेक्षा की पात्र बनती हैं। ' ाक' में गुलकंदी को प्रेम की स ाा मौत के घाट उतार दिया ताा है। गांव की मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा के लिए उसे आग में ि ंदा ाला दिया ाता है। 'आवां' में सुनंदा सुहैल से प्रेम करती है। लेकिन सफल नहीं हो पाती क्योंकि इस्लाम बी ा में आ ाता है याने ाति भेद के कारण इनका प्रेम सफल न हुआ। ाति-भेद के कारण प्रेमी से शादी नहीं हो पाई। 'अपने-अपने ेहरे' की रमा विवाहित गोयनका से प्रेम करती है ि ासके कारण उसे कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। प्रेमी ाहते हुए भी उससे शादी नहीं कर सकता। रमा प्रेम को ही श्रेष्ठ मानती है और ािवन भर अकेली रह ाती है। समा ा इनके रिश्ते को अपनाना पसंद नहीं करता ि ासके कारण रमा ािवन भर कई समस्याओं का शिकार होती है। रमा सो ाती है-"ओह प्यार... इस एक शब्द के साथ कितने ह ाार साल की परंपरा ुड़ी है। और स्त्री? इसे इतनी सम्मोहित क्यों हो ाती है, कि ाब प्यार ुक भी ाए तब भी खाली ागह में कल्पना के रंग भरती रहे।"[149] पीली आँधी में विवाहेतर प्रेम संबंध दिखाई देता है। पद्मावती तथा सुराणा का मानवीय, कोमल, स ाा प्रेम प्रसंग है ि ासमें पद्मावती विधवा स्त्री है और सुराणा मनीम है, ाो उसकी ाायदाद की देखभाल करता है। दोनों में प्रेम हो ाता है पर दोनों अपनी मर्यादाओं में रहते हैं। ये बात देवर को पता ालने पर देवर सुराणा को ालती आग में धकेल देता है। सोमा भी संतान

---

[149] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.74

पाने की खातिर प्रोफेसर सेन से प्रेम करती है और उसके ब ो की माँ भी बनती है। ाब उसके पति गौतम को पता ालता है तो वह उसे प्रताड़ित एवं शारीरिक दंडदेता है। उसे गर्भपात करवाने को कहता है। सोमा को गौतम ने मार-पीट, गालियों, मानसिक एवं शारीरिक अत्या ार के सिवाए कुछ नहीं दिया ि ससे ऊबकर वह प्रोफेसर सेन के घर ाली ाती है। प्रेम पाने के लिए रुगंटा मारवाडी परिवार की मान-मर्यादा को ठोकर मारती है।

कुछ लड़कियाँ प्रेम के कारण विद्रोही बन ाती हैं ो अपने परिवार, माता-पिता से भी विद्रोह करती हैं। अपना प्रेम पाने के लिए आत्महत्या करने तक नहीं ूकती। 'अनाम प्रसंग' की ममता भी विद्रोही बेटी के रूप में ि ात्रित हुई है। ममता अपने ही बॉस विवाहित अभय से प्रेम करती है। उसके बिना ी नहीं सकती, उसके लिए अपने माता पिता से विद्रोह करती है। वह अभय से किसी अधिकार की मांग नहीं करती केवल प्रेम ाहती है। उसके दिल में थोड़ी ागह ाहती है। वो अभय से कहती है-"अभय में तुमहारी पत्नी और ब ों का बुरा नहीं ाहती। मैं तो ाहती हूँ कि उन्हें उनके पूरे अधिकार मिले, लेकिन अभय मैं अब तुहारे बिना रह नहीं सकती। मु े तुम्हारी पत्नी के अधिकार में से थोड़ा-सा प्यार का हिस्सा ाहिए बस।"[150] अभय विवाहित है इसी व ाह से उसके पेरंटस दुःखी हैं और उसे घर में बंद करके रखते हैं। किसी अ छे, उसके लायक लड़के से शादी करना ाहते हैं। पर ममता अपने पेरेंट्स की बात नहीं मानती। उनके विरुद्ध ाती है। अभय को छोड़कर वह ि ांदा नहीं रहना ाहती। "प्यार में बड़ी-से-बड़ी मुसीबतें सह सकती है पर ुदाई नहीं सह सकती।"[151] प्रेम को पाने के लिए वह घर से भी ाली ाती है। अपने-अपने कोणार्क की कन्नु भी सिद्धार्थ से प्रेम करती है। लेकिन परिवार की परंपराओं के खिलाफ नहीं ा पाती ि ससे

---

[150] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.71

[151] अनाम प्रसंग, मीना शर्मा-पृ.121

उसका प्रेम असफल हो ाता है। 'इदन्नमम' की मंदा भी मकरंद से प्रेम करती है। मकरंद से विवाह न होने पर ीवन भर कुवारी रहना पसंद करती है।

विवे य उपन्यासों में स्त्री के प्रेम की समस्या उत्पन्न हुई है। स्त्री प्रेम करती है पर सफल नहीं बन पाती। अगर सफल हो भी ाय तो विवाह के बाद अंत तक टिक नहीं पाती ैसे अंकिता इसका उदाहरण है। प्रेम की समस्या लड़कियों को यादा विद्रोही बनाती है। क्योंकि माता-पिता, अपनी परंपराओं से युक्त रहते हैं। ममता एवं कनु इसके उदाहरण हैं। कुछ विवाहित स्त्रियाँ, पति, परिवार के रुष्ठ, अवमानना भरे वातावरण से ऊब कर प्रेम करती है सोमा इसका उदाहरण है। ' ाक' की गुलबंदी को प्रेम की स ा मीत मिलती है। कारण कौन सा भी हो स्त्री को प्रेम की समस्या से ू ाना पड़ता है। इस प्रकार के शोषण का शिकार बनना पड़ता है।

4.2.8 पुर्नविवाह

अगर किसी का पति नर ाता है तो उसे ीवनपर्यंत विधता के रूप में सगा ा, परिवार और आम ानता से तिरस्कृत एवं यातना दुःखी ीवन व्यतीत करना पड़ता है।"[152]

समा ा में आ ा भी इस समस्या को मान्यता प्राप्त नहीं है। विधवा स्त्री अगर पुनर्विवाह के बारे मं सो ाती है तो परिवार वाले उसे ऐसा करने से रोकते हैं। इस संदर्भ में आशारानी व्होरा अपने वि ार व्यक्त करते हुए कहती है- "विधवाओं के पुनर्विवाह को समा ा में अ छी नज़रों से नहीं देखा ाता।"[153]

अंतिम दशक के उपन्यासों में इस समस्या को दर्शाया गया है िसमें स्त्री विद्रोही बन कर अपने ीवन को घुट-घुट कर व्यर्थ नहीं करना ाहती। सूर्यबाला ने परंपरा का खंडन कर यामिनी का गठन किया। यामिनी कथा की यामिनी पति

[152] मानवाधिकार और महिलाएँ, डॉ.निशांत सिंह-पृ.108

[153] नारी शोषण आइने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.34

मरने पर पुनर्विवाह करना ाहती है। आर्थिक एवं सामा िक सहारे के लिए वह दूसरा विवाह करने की सो ती है तो सास उसकी उपेक्षा करती है। और कहती है शर्म कर अपने बेटे का तो ध्यान कर इस पर यामिनी विद्रोही बन कर कहती है- "अब तक की सारी िंदगी मैंने सबका ध्यान ही रखते हुए बिताई है माँ ी और अपनी ड्यूटी से अलग अपने सुख-दुःख नाम की भी कोई ीज़ होती है, कभी ध्यान ही नहीं आया।"[154] यामिनी रू ि परंपरा में फंसकर विधवा ीवन नहीं ीना ाहती। वह स्वयं के बारे में सो कर पुनर्विवाह करना ाहती है। और निखिल से विवाह कर लेती है। दुबारा विवाह करने के बाद भी वह सुखी नहीं रहती। पति उसके पहले बेटे को प्यार नहीं दे पाता अपनी खुद की संतान को ही प्यार करता है िसके कारण पति और बेटे के बी पिस कर अकेली हो ाती है। 'आवाँ' में गौतमी की माँ पति के अत्या ारों, शोषण से तंग आकर तलाक लेती है और पुनर्विवाह करती है। पर दूसरा पति ल्द ही मर ाता है िसके कारण गौतमी की माँ फिर अकली हो ाती है और अंत में गौतमी के साथ रहती है। 'इदन्नमम' की प्रेमा पति मरने पर वैधव्य की संहिताओं को तोड़ कर अपनी बेटी मंदा को छोड़कर रतन यादव के साथ भाग ाती है। 'दिलो दानिश' की छून्ना बीबी भी पारिवारिक, सामा िक अवमान ेलती है और बाद में सिकी की परवा न करते हुए पुनर्विवाह कर लेती है। ये परपंरामुक्त स्त्री है ो अपने ीवन मूल्यों को श्रेष्ठता देती है। रू ि परंपरा के खिलाफ ाकर कई समस्याओं तथा शोषण का शिकार होती है। समा इनके विद्रोही प्रवृत्ति के कारण उपेक्षित प्रताड़ित तथा शोषण करता है। अवमानना से इनका ीवन दूभर बना देता है।

4.2.9 आडंबर और अंधविश्वास

अंतिम दशक के उपन्यासों में अंधविश्वास, आडंबरों का भी ित्रण मिलता है। 'कलिकथाःवाया बाइपास' में ललित का मामा ब मैना ठकुरानी के

[154] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.62

साथ रहने लगता है तब मामी मामा को उसके ांगुल से छुड़वाने के लिए ाादू-टोटके में विश्वास करती है। वह अपने पति को छुड़ाने के लिए राधेश्याम बर्मन की माँ ाो ऐसे प्रयत्नों में माहिर है उसके पास ााती है। बर्मन की माँ ाोर पकड़ने के लिए अना ा फटकने का एक सूप कै ाी में अटकाकर रखती है, ाि से दो आदमी पकड़े रहते हैं। ाब ाोर का नाम आता है तभी सूप घूमता है।"[155] ऐसे कई प्रयत्नों के बाद भी मामा मैना ठकुरानी से छूट न सकें। 'दिलो दानिश' में कुटुंब प्यारी भी अंधविश्वास आडंबरों में ाीती है। पति कृपानारायण को महकबानो से छुटकारा पाने के लिए कुटुंब की भाभी सु ााती है-"हमारी मानो तो किसी साधु-महात्मा से पूछ देखो। कंटक निकाल बाहर करना उनके लिए क्या मुश्किल। आगे कहती है-"फसीलवाले भैरों बाबा का नाम तो तुमने भी सुना होगा। वह अपने स्वरूप की बहु आए दिन हाड़ तुड़वाती थी घरवालों से। भैरों बाबा ने वशीकरण दिया और उम्र-भर के ां ााल खत्म हो गए। अब ायों मुरारी बाबू का यह हाल कि आँखों से बीवी को यूँ देखा करते हैं ायों उस पर ाान छिड़काव करते हों। ... अपनी शकुन भी वही के ाक्कर काट रही है। तीन तो बेटियाँ हो ाुकी हैं दोनों को बेटे की ललक।"[156] भाभी की बात मानकर कुटुंब भी भैरो बाबा के ाक्कर काटती है। वकील साहब का महक के पास आना कम होने पर महक सो ाती है-कभी बेताबी से इंत ाार किया करते थे हम। आ ा लगता है, पुराने सिलसिले का कोई निशाँ ही बाकी नहीं... इनसे क्या कहें। उतरता है कोई वक्त तो हाथ से सारे रंग समेट लेता है। इन्हें क्या खबर उस ज़लील किस्से की। भैरों बाबा और भभूतियों के पाश! हमारा दिल ही मर गया।"[157] महक सो ाती है कि बाबा की भभूतियों के कारण कृपा का प्यार उसकी तरफ कम हो गया और वह कहती है-दुल्हन कैसी हैं। अब तो घर में अमन- ाैन होगा... बहु ाी का मिज़ा ा कुछ बदला? सुनते हैं कई

---

[155] कलिकथाःवाया बाइपास, अलका सारावगी-पृ.67
[156] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.87-88
[157] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.177

ालीहे कर ुकी हैं भैरों बाबा के यहाँ खे ारी लेकर आई थीं।"[158] उसे शक हो ाता है कि कुटुंब के टोटके से कृपानारायण दूर होते ा रहे हैं। छुन्ना सो ाती है कि इस घर में इतना अंधविश्वास कि विधवा को उनके मूल्यों के हिसाब से ालना होगा "अपने से उम्मीद यही की ाती है कि पू ा-ध्यान में दिल लगाएँ। व्रत करें। तीर्थों को ाएँ। अपने अंदर-बाहर की तरंगों को शांत कर भक्ति-भाव से विधवा बन ाएँ। पहनने-ओ ़ने की मुमानियत। हम अड़े हैं कि कुछ भी कहिए हम बिना किनोर की सफेद धोती न पहनेंगे। ो हुआ सो अपने हाथ में न था। संन्यासिन बनकर मथूरा ी में बैठने से रहे।"[159] अंधविश्वास और आडंबरों के ालते कोई विधवा स्त्री सुख ैन से ी नहीं सकती। छुन्ना इसका विरोध करती है िासके कारण परिवारवालों की उपेक्षा, अवमानना की पात्र बनती है।

'अल्मा कबूतरी' में भी अंधविश्वास और आडंबर भरा पड़ा है। किसी भी काम के लिए देवों को पू ा ाता है। अपने कार्यों के सफल बनने के लिए भगवानों को भोग लगाया ाता है। मनोतियाँ मांगी ाती हैं। राणा ाब कबूताराओं के रिवा ा अनुसार ोरी ाकारी करने से मना करता है, खून देख कर बेहोश हो ाता है। बीमार होने पर राणा बुदबुदाने लगा-" ामुनी- ामुनी, भ ानी ने सुनते ही हाय देवी माता, ामुनी ुडैल ने घर दबाया।"[160] राणा के सर से ामुनी का भूत भगाने के लिए गुनियाँ को बुलाया गया। गुनियाँ ने वीरदेव की स्थापना की। लिखी हुई ाबूतरी पर बेर के पत्ते, पान का पत्ता, गुड़ और बकरी का खून ा ़ाया। रोटी का ूरमा और लाल कपड़ा। मद और तेल पास में रखा। ... मंत्र प ़ने लगा... ह ह ह ह वीर देवता तोरी असवारी हं हं हं हं बडे पिशा ा तोरी अरवारी हं हं हं हं कुननी की संतान तोरी असवारी... गुनियों ने भोग कबूला और कहा बोल दारी तू कैसे आई। गुनियाँ सिर हिला-हिलाकर ूमता है।

---

158 दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.180-181

159 दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.65

160 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.50

अ ानक ि ंघाड़कर सवाल करता है। खुद ही ावाब दे लेता है राणा बीमारी के कारण बैठ भी नहीं पा रहा था। उसे इन सब से कुछ लेना देना नहीं था। गुनियाँ ने बी ा में ालती आग में तेल और मि ि डाल दिए। राणा कम ोरी के कारण सिर तक हिलाने में असमर्थ... गुनिया कि ाकि ाी माकर राणा की गर्दन पकड़ कर-बोल, ाएगी कि नहीं। गुनियाँ आग में और मि ि डालता है। राणा को धसका लगता है। आँखें निकली ाा रही हैं। उस पर सिर में ाडू मारी। वह तड़पा यों सिर ाटक गया हो। राणा काँपने लगा थर-थर धुआँ-खाँसी ाडू की मार-सिर में कड़कन। राणा ने ब ााव के कारण ोर से गुनियाँ को लात मारी ि ासे सारा आडंबर खत्म हुआ। देख कर गुनिया कहता है-"असगुन! मनहूस लड़का, और सारे मिलकर राणा को पीटने लगे।"[161] अंधविश्वास और आडंबर के कारण राणा पर अत्या ाार और शारीरिक शोषण किया ााता है।

' ूला नट' में बालकिशन आडंबरों को मानता है। वह पू ाा-पाठ करना, देवों का मनाना पू ाना सभी काम निष्ठा से करता है। ाब सुमेर शीलो को त्याग कर ाला ााता है तब शीलो की सास बेटे को वापस बुलाने के लिए शीलो से व्रत पू ाा करवाती है। बहु से कहती है-"बेटी प ़ा-लिख लड़का... कौन से बैरी ने घात धरा दी। मोरे महादेव बुद्धि फरेंगे तो सही ... ंपादास बैद दवा और दुआ-दोनों ाानते हैं।"[162] ंपादास आडंबर को अपनी रो ाी रोटी बनाए हुए है। स्त्रियों को ही अपने ााल में फंसाता है कहता है-"अबकी बार भी मेरे बताए ातन पर ालो, तो म ााल है कि ... बहू से महामहि के मंदिर तक और मंदिर से शिवाले तक ब्रह्म बेला में पेड़ भरवाओ (पेट के बल लेट लेटकर पहुँ ाना) पाँ ा गाय, तीन कुत्तों को रोटी नित नियम से निकाली ाएँ तुलसी का ौरा और पीपल का पेड़ ारे। घर में सुंदर कांड का पाठ करे। साला सुमेर क्या, सुमेर का बाप ाला

---

[161] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.51

[162] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.41

आएगा पर लोक से। तप की माया, देवी देवता का सिंहासन हिला दे, आदमी की क्या बिसात।"[163] शीलो ने पूरी निष्ठा के साथ आडंबर, कर्मकांड किये, पू ा-पाठ, व्रत, पू ा फिर भी उसे कुछ हाथ नहीं आया-बीमारी, ला ारी, घुटन भरी िंदगी के सिवाय। " ानी की िंदगी... और फिर अपने आदमी की आँखों से उतरी औरत? हे मेरे संकर महादेव, दुस्मन की गति न करना ऐसी।"[164] ' ाक' में भी अंधविकास और आडंकर को मनोहर की बहू की स्थिति और व्यथा में दर्शाया गया है। ब ो न होने पर उसकी मानसिकता खराब हो ाती है। उसकी दशा को देख कर गाँव वाले उस पर ुड़ैल ा ़ी औरत का खिताब देते हैं और बिन पैसों का नंगा ना ा देखते हैं।

विवे य उपन्यासों में अंधविश्वास और आडंबर की समस्या को उठाया गया है स्त्री िसके ापेट में आती है। सभी स्त्री पात्र इस घेरे में फंसी हुई हैं। कोई पति को रखैल से ुंगल से ब ाने के लिए भैरो बाबा के पास ाती है। कोई बेटे का भूत उतारने के लिए गुनियाँ ैसे ओ ा का सहारा लेती है तो कोई बेटे की अवमानना के लिए ंपादास ैसे वैद के ंगुल में धंस ाती है। सभी स्त्रियाँ अंधविश्वास और आडंबर, रीति-रिवा ा के कर्मकांडों से युक्त हैं।

4.3 पुनरुत्पत्ति

पुनरुत्पत्ति अंग्रेज़ीमें इसे 'Reproduction' कहते हैं। "The process of producing babies or young याने संतान उत्पन्न करने की प्रक्रियाःप्र ानन, संतानोत्पत्ति Sexual reporudction."[165]

पुनरुत्पत्ति को पुनरुत्पादन भी कहते हैं िसका अर्थ उदाहरण, प्रतिलिपि, प्रतिकृति या पुनः प्रस्तुतीकरण, पुनःप्रस्तुति कहते हैं।

---

163 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.42

164 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.45

165 Oxford-English-English-Hindi Dictionary-Dr.Suresh Kumar, Dr.Ramanath Sahai-p.1011

पुनरुत्पादन-"यह कार्य दो तरह का होता है-एक ैविक और दूसरा सामा िक। ैविक पुनरुत्पादन है प्र नन या नए मानवों को न्म देना, यह कार्य केवल स्त्रियॉ कर सकती हैं। सामा िक पुनरुत्पादन में ऐसे कार्य हैं िनके बगैर मनुष्य का ीना मुश्किल होता है और िसके लिए कोई पैसे ख र् नहीं करने पड़ते अर्थात् संभालने या पालने का कार्य। इसमें घर संभालना, परिवार के सदस्यों को पालना, खाना बनाना, सफाई करना व बीमारों की देखभाल करना आदि कार्य शामिल है। ये कार्य ीवन के लिए अति महत्वपूर्ण है पर इन्हें आर्थिक गतिविधियों में शामिल नहीं किया ाता इसलिए ये अदृश्य, अवैतनिक और महत्वहीन लगते हैं। ये कार्य स्त्रियों द्वारा किए ाते हैं।"[166] याने देखा ाए तो सामा िक दायित्व स्त्री के अंतर्गत आता है। पुरुष केवल आर्थिक दायित्वों, सामा िक प्रतिष्ठा को निभाने के अंतर्गत अपनी पुरुष सत्ता को बनाये रखता है। स्त्री घर के कामों में खटती रहती है, पारिवारिक िम्मेदारियों को निष्ठा से निभाती है। फिर भी उसे अपने कार्य का आर्थिक लाभ नहीं, समा ा, परिवार ने उसके ऊपर 'स्व' के दायित्व का लेबल िपका दिया है।

ान विज्ञान समता के अध्यक्ष कार्यकर्ता ब्रह्म रेड्डी ी ने रवींद्र भारती, हैदराबाद में मा र् 2011 को हुए 'महिला अधिकार आख्यान (Women Right) के संदर्भ में कहा था कि समा ा के हर क्षेत्र में आ ा भी स्त्री को स्वे छा नहीं है। आ ा भी स्त्री पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। न्म से ही स्त्री दमित है। उसकी परवरिश में भेदभाव है। स्त्री को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। उसे ाहिए कि अपने मन में छिपे वि ार 'मैं पुरुष से कम हूँ' निकाल देना ाहिए। स्त्री सुबह 6 ब े से 10 ब े याने पूरे 14 घंटे मानसिक तथा शारीरिक श्रम में व्यस्त है। उसे किसी प्रकार का श्रमिक वेतन नहीं मिलता है िससे उसका स्वास्थ्य खराब रहता है। स्त्री स्वास्थ्य की समस्या आ ा भी वैसी ही है या यूँ कहें कि उससे तीव्र हो गई है। आगे

---

166 ेंडर व पितृसत्ता पर प्रशिक्षण कार्यशाला-क्रिया-पृ.13

वे कहते हें-"रसोई स्त्रियों की ोल है, स्त्रियों का इस ोल से निकलना असंभव है। समता के लिए आ ा भी प्रासंगिक है कि समस्या स्त्री की है उसमें पुरुषों का क्या काम? पर सबको मिलकर उसका परिष्कार करना होगा।

पुनरुत्पादन या प्र ानन प्रक्रिया हमारे समा ा में विवाह उपरांत मानी ााती है। यह भी पुरुष सत्ता के नियमों के अनुसार ही है कि स्त्री की शादी होगी या नहीं, कब व किसके साथ होगी। अगर शादी हो ााती है तो ब ो होंगे या नहीं, और होंगे तो कब और कितने याने स्त्री को इतना भी अधिकार नहीं कि वह स्वयं के बारे में कुछ भी सो ा-सम ा सके। ये सारी बातें पुरुष तय करते हैं कि स्त्री को किस समय क्या करना है क्या नहीं करना है। अगर विवाह के बाद पुरुष को ब ाा नहीं ाहिए होता है तो गर्भ निरोधकों का प्रयोग स्त्रियों के लिए ही होते हैं, पुरुषों के लिए गर्भ-निरोधकों का प्रयोग न के बराबर है। गर्भनिरोध की ि म्मेदारी स्त्री की होती है। इस अवस्था में भी पुरुष की ही मनमानी ालती है।

स्त्री के पुनरुत्पत्ति के मुद्दों को अंतिम दशक की लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में ि ात्रित किया है। लिंग में भेदभाव, स्त्री का अधिकार नहीं अपनी ही यौनिकता पर, मासिक धर्म एक अभिशाप, मातृत्व भावनाःविवाह का खंडन, प्र ानन क्रिया से गर्भाधान का ातरा, विवाहेतर व विवाहपूर्ण यौन संबंध आदि तथ्यों का विव ोन किया गया है।

4.3.1 स्त्री की ौविक प्रक्रिया

स्त्री को आ ा भी समा ा में एक गर्भ के सिवाए कुछ नहीं माना ााता। उसे प्र ानन प्रक्रया का एक हिस्सा ही माना गया है। सीमोन द बुवऊर के वि ाार में- "औरत? औरत के लिए कोई स्वप्न-द्रष्टा एक बड़ा ही सीधा फार्मूला उ ारित है। औरत? औरत एक गर्भ है, अंडाशय है और एक औरत है ये शब्द काफी है, उसको परिभाषिक करने के लिए। स्त्री पुरुष दो प्रकार के प्राणी हैं, ाो मानव- ााति में प्र ानन की प्रक्रिया के आधार पर विभा ाित होते हैं। फिर स्त्री क्यों एक गर्भ की

प्रक्रिया के आधार पर विभा ित होते हैं। फिर स्त्री एक गर्भ कैसे हो गई वह तो उसकी प्राकृतिक क्षमता है। यही क्षमता पुरुष में भी विद्यमान है। 'स्पर्म' के रूप में याने पुरुष के स्पर्म से ही स्त्री गर्भ धारण की क्षमता पाती है। वर्तमान समय की आधुनिकाए पुरुष को 'स्पर्म' से यादा और कुछ नहीं मानती। मृदुला गर्ग ने 'कठगुलाब' में इस प्रकार के संदर्भ को पात्रों के माध्यम से उठाया है। उदाहरण देखिए-"विपि कहता है "मैं तुम्हारे लिए स्पर्म से यादा कुछ नहीं हूँ-इस पर नीर ा कहती है-मिस्टर विपिन म ूमदार, असीमा ने आपको ारूर बतलाया होगा कि कोई भी मर्द इससे यादा कुछ नहीं होता।"[167]

"प्र ानन की प्रक्रिया के संबंध में यह निश्ि ात रूप से कहा ाा सकता है कि निष्क्रियता की अवधारणा एक अवैज्ञानिक अवधारणा है। यह सम ा ा ुका है कि युग्मक के योग से ही नए ीवन का निर्माण होता है। प्र ानन प्रक्रिया से और पुरुष से ही नए ीवन का निर्माण होता है। प्र ानन प्रक्रिया स्त्री और पुरुष के संयोग से ही संभव होती है।"[168] फिर क्यों ब ों के लालन-पालन का दायित्व माँ पर छोड़ दिया ाता है। पुरुष को भी मिलकर अपने ब ों का लालन-पालन करना ाहिए।

सीमाने द बुउवार के वि ार में-"स्त्री को केवल उत्पादक शक्ति मानना बिलकुल असंभव है। वह अन्या है, ि ासके माध्यम से पुरुष अपने आपको खो ाता है। स्त्री को वस्तु न मानकर मानव मानना ही ाहिए। स्त्री केवल भोग्या की वस्तु नहीं एक मानव है। इस संदर्भ में उदाहरण प्रस्तुत हैं-"स्त्री प्राकृतिक संर ाना नहीं बल्कि सत्ता की एक सामा ाक संर ाना है।"[169]

स्त्री दलन के संदर्भ में स्त्री वास्तव में ान्म से स्त्रीकरण का शिकार है। स्त्री होने के लिए उसे पुरुष सत्ता का व स्वि स्वीकारना पड़ता है। आवश्यकता है कि

---

[167] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ-250

[168] स्त्री उपेक्षिता, सीमोन द बोउवर, समीक्षा प्रभा खेतान-पृ.31

[169] अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, रा ेंद्र यादव-पृ.190

स्त्रीकरण की इस यौनवादी व्यवस्था को रूपांतरित किया ाये। स्त्री को आमूल रूप से स्वयं को बदलना होगा। "पुरुष सत्ता द्वारा स्त्री कामना का निर्धारण यौन ीवन में स्त्री को किस-किस प्रकार से उत्पीड़न एवं हिंसा का शिकार होना पड़ता है। बलात्कार अश्लील साहित्य, अवै छिक मातृत्व तथा न्म निरोध एवं बाध्यकारी इतरलिंगी कामुकता ैसे मुद्दों को उठाने से स्पष्ट हुआ कि यौन ीवन के प्रसंग में स्त्री को पुरुष की इ छा के अधीन रहना पड़ता है।"[170]

प्र ानन का काम केवल स्त्री कर सकती है। प्र ानन एक ैविक प्रक्रिया हैि ासमें स्त्री मातृत्व का भार वहन करती है। मातृत्व के भार को वहन करने के लिए स्त्री ीवन में किसी मूलगत परिवर्तन की अपेक्षा नहीं रखता। इसी व ाह से स्त्री एवं पुरुष में ैविक दृष्टिकोण से परस्पर आकर्षण को हम सह ा स्वीकार भी करें, तब भी यह किन्हीं अन्य स्तर पर यौन-प्रताड़ना तथा बलात्कार के औदित्य को भी स्थापित करता है।

4.3.2 लिंग में भेदभाव

स्त्रियों से संबंधित कई मुद्दों पर बहस हुई है ैसे मातृत्व, बालपोषण, महिला सेक्स इत्यादि। परंतु सबसे महत्वपूर्ण एवं निर्णायक बहसें लिंग भेद (ेंडर वायस) को लेकर हुई है।

लिंग-वर्तमान समय में लिंग शब्द को सामाि ाक संदर्भ में एक व्यापक अर्थ में देखा ाा सकता है। ेंडर शब्द का अर्थ है समा ा स्त्री पुरुष को किस प्रकार देखता है। ैसे ब ो को ानम देना व ब ो को दूध पिलाना केवल स्त्रियों का काम है। उसी प्रकार गर्भ देना केवल पुरुष ही कर सकता है। ये प्राकृतिक या ैविक कार्य है। ाो स्त्री पुरुष के काम, व्यवहार और अधिकारों की स्थापना करते हैं।

[170] अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, रा ेंद्र यादव-पृ.186

एक लडकी और लड़के या स्त्री-पुरुष की सामा िक-सांस्कृतिक परिभाषा को ंडर कहते हैं।"[171]

4.3.2.1 लिंग और सेक्स में अंतर

लिंग एक सामा ाक अर्थ वाला शब्द है। परंतु अक्सर लिंग व सेक्स की अवधारणाओं में दुविधा पैदा हो ताी है। लिंग और सेक्स क्या है। इन धारणाओं को भी ुनौती दी ा सकती है। लिंग और सेक्स दो अलग ीज़ें हैं। यह माना गया है कि लिंग सामा ाक है और सेक्स प्राकृतिक। लिंग सेक्स से भिन्न श्रेणी का है। सेक्स शारीरिक भेद से संबंध रखता है, ाबकि लिंग सामा ाक भेद है।

लेकिन हिंदी भाषा में 'लिंग' की इस अवधारणा के लिए कोई अलग शब्द नहीं है। लिंग शब्द का प्रयोग ेंडर व सेक्स दोनों के लिए प्रयोग किया ाता है। इन दोनों के अंतर को बनाए रखने के लिए इस क्षेत्र में कार्य करनेवाले आलो ाकों ने दो नए शब्दों का विकास किया है-'सेक्स' को प्राकृतिक लिंग और ' ेंडर' को सामा ाक लिंग का नाम दिया है। छोटे रूप में सामा ाक लिंग को सालिंग और प्राकृतिक लिंग को प्रालिंग कहा ा कसता है। इन नए शब्दों से ेंडर व सेक्स का अंतर एकदम स्पष्ट हो ाता है।

लिंगानुपात का संतुलन बने रहना प्रकृतिक के नियमानुकूल है। पुरुष स्त्री के अनुपात के संबंध में अभी तक ि ातने अध्याय हुए हैं उनके अनुसार लिंगानुपात में संतुलन कायम रखने में प्रकृति की निर्णायक भूमिका है। प्रकृति का नियम है कि गर्भस्त शिशुओं मं बालक शिशुओं की संख्या बालिक शिशुओं की संख्या से अधिक होती है। किंतु कुछ वर्षों बाद ही बालिक शिशुओं की संख्या बालकों से अधिक हो ाती है। आशा रानी व्होरा ने उपर्युक्त संदर्भ के विषय में अपने वि ारों को प्रस्तुत करते हुए कहा है-"प्राकृतिक भिन्नता के बाव ूद नारी पुरुष से कम ोर है, यह धारणा गलत है। भारतीय मनीषियों के अनुसार,

---

171 ेंडर व पितृसत्ता पर प्रशिक्षण कार्यशाला-क्रिया-7

शारीरिक बल के ऊपर नैतिक बल लेकर और पुरुष का मातृ पद पाकर स्त्री पुरुष से ऊँ ी व श्रेष्ठ ठहरती है, आधुनिक मेडिकल सर्वेक्षणों ने तो उसे शारीरिक रूप से भी पुरुष से अधिक सशक्त सिद्ध कर दिया है। गर्भपात के मामलों में सौ शिशु बालिकाओं के मुकाबले 150 शशु बालक गिरते हैं। ुड़वा ब ो होने की स्थिति में लड़कियाँ अपेक्षाकृत अधिक िंदा रहती हैं। इसका अर्थ है, लड़यिाँ गर्भकाल से ही लड़कों की अपेक्षा अधिक म ाबूत व सुदृ. होती हैं।"[172]

लिंग शब्द का उदय क्यों हुआ क्योंकि उत्पीड़न अधिक हो गया है। स्त्रियों को पुरुषों से कम ोर सम ा ाता है इस भेदभाव को रोकने के लिए लिंग शब्द का उदय माना ाता है। परंतु क्या वाकई स्त्रियाँ अपनी शारीरिक बनावट के कारण कम ोर हैं? और यदि ऐसा है, तो इसे बदला नहीं ा सकता क्योंकि शारीरिक र ाना प्राकृतिक है। और इसीलिए स्थाई है। प्रकृति ने स्त्री पुरुष में भेद किया है पर भेदभाव नहीं पर समा ा में इनमें भेदभाव ालता रहा है। आ ा भी विद्यमान है।

अंतिम दशक की लेखिकाओं ने ऐसे मुद्दों को उठाया है ो स्त्री-पुरुष के भेदभाव की व्याख्या करते हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री को कम ोर माना है। उसे हमेशा से किसी पुरुष के अधीन रहने की सीख दी है। िसके कारण स्त्री के मन में असुरक्षा की भावना पनपी है। प्राकृतिक लिंग के आधार पर विवे य कालखंड के उपन्यासों में लड़का-लड़की में भेदभाव को दर्शाया है िसका असर सामालिक लिंग पर भी पड़ता है। इन्हीं तथ्यों से ब ाने के लिए लेखिकाओं ने पुनरुत्पत्ति की मांग उठाई है।

ित्रा मुद्गल कृत आवां उपन्यास में नमिता की माँ के माध्यम से ब ों में फर्क को दर्शाया है। नमिता की माँ बेटा-बेटी में फर्क मानती है उसी सो ा के ालते बेटे को अंग्रेज़ी माध्यम में दाखिला दिलवाती है और बेटी का अंग्रे ी

---

[172] नारी शोषणःआइने और आयाम, आशारानी व्होरा-पृ.260

स्कूल से निकाल कर हिंदी माध्यम में डाल देती है। नमिता सो ाती है कि-"मोटी फीस के ालते माँ ने बहन को अंग्रेज़ी स्कूल से निकाल कर हिंदी स्कूल में डाल दिया। प ़ाई छुटाई नहीं, यही गनीमत है।"[173] पर नमित को माँ का यह निर्णय अव्यावहारिक लगा था। ाो लड़की क्लास में हमेशा अव्वल आती है थी माध्यम की कठिनाई के कारण मुश्किल से पास होती है। इससे मुनिया दुःखी हो ाती है। पर माँ को उसके दुःख से, उसकी व्यथा से कोई फर्क नहीं पड़ता। ऊपर से माँ कहती है-कोन आसमान फट पड़ा। ाो हुआ सो ठीक ही हुआ, पास तो हो गई न। अब काहे सूतक-सा रोना पीटना मनाए बैठी घर में मनहूसियत फैला रही। अगले दफे अव्वल हो लेना।"[174]

नमिता बड़ी बेटी होने के कारण घर की सभी ि म्मेदारियों को निष्ठा से निभा रही है। नौकरी कर घर की आर्थिक ि म्मेदारी भी निभा रही थी फिर भी माँ को बेटे की कमी महसूस होती है। वह कहती है-"नमी की ागह आ ा हमारा ावान बेटा होता तो आपद-विपदा का सहारा होता मान लिया, लड़की कमा थमा रही है-लड़कों के बराबर कमा रही, मगर ठहरी ाार दिन की ाँदनी।"[175] नमिता के पैदा होने पर भी माँ खुश नहीं हुई थी बेटी होने की खबर सुन कर नमिता से मुँह फेर लिया था। नमिता के पिता की मृत्यु पश ाात् अंतिम संस्कार के क्रिया कर्म लिए तथा मुखाग्नी के लिए बेटे की कमी महसूस करती है। समा ा में बेटा होने पर माँ-बाप खुश होते हैं कि हमारी मुक्ती कायम है। ाहे बड़ा होकर बेटा निकम्मा, नाकारा, नालायक ही क्युं न निकले। पर बेटी होने पर दुःखी होते हैं। पराया धन मानते हैं ाहे वह बड़ी होकर कितनी ही सुशील, कर्मठ, कामयाब, होनहार हो माँ-बाप का निष्ठुर व्यवहार उसके प्रति बना रहता है। अपनी ही बेटी के साथ। इस उपन्यास में ि ात्रा ाी ने इसमें पुनरुत्पत्ति के दो संकेत दिये हैं। एक

[173] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.20
[174] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.26
[175] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.241

लड़की मृतक की अर्थी को कंधा दे सकती है। दूसरे अपने पिता को मुखाग्नी, दाह संस्कार कर सकती है। सामा ाक रू ़ यों का खंडन कर व्यवस्था की संहिताओं को ये दो उदाहरण प्रस्तुत कर ठुकाराया है। सुनंदा की मय्यत को कंधा दुस्साहस विमला बेन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। "पहली बार सुभवतः किसी और ने मय्यत को कंधा देने का दुस्साहस दिखाया होगा। हो सकता है, मय्यत को कंधा देनेवाली विमला बेन देश की पहली हठी महिला हो।"[176] सुनंद की मय्यत को कंधा देने पर खड़े हुए सभी व्यक्ति इस हिम्मत की उपेक्षा करते हैं। उपेक्षा करने पर वह कहती है-"मैं कंधा किसी औरत की मय्यत को नहीं दे रही, उस स्त्री ोतना को दे रही हूँ ि ासका गला घोंटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मैं हर ाति, धर्म, वर्ण की स्त्रियों का आह्वान करती हूँ कि वे सबकी सब श्मशान ालें और बारी-बारी से सुनंदा की मय्यत को कंधा दें।"[177] इसी प्रकार नमिता के पिता की मृत्यु पर अंतिम संस्कार के क्रिया कर्म में नमिता-"विधि-विधान में छोटे भाई के संग बैठ पंडित ाी के निर्देशानुसार तर्पण किया... घुनी वाली हंडिया निःसंको ा उसने लटका ली और छुन्नू की उंगली धर घर की सी ़ याँ उतरने लगी।"[178]

इस प्रकार ि ात्रा मुद्गल ने स्त्री रूपों की नयी व्याख्या की है। मानसिकता का पुनरुत्पादन किया है।

'प्रभा खेतान' कृत 'छिन्नमस्ता' में मारवाडी समा ा की कट्टर रू ़ वादी व्यवस्था में पितृसत्ता का ही अतिक्रमण दृष्टिगत होता है। प्रिया मारवाडी परिवार की बेटी होने पर घृणित पात्र है। इस कथा में प्रिया के ानम पर माँ दुखी होती है। अपनी बीमारी का कारण प्रिया को मानती है। इस पर दादी कहती है-"आ पडी ऊपर से... भाया साँवर अभी तो दो को ब्याह बाकी है... या तीसरी और तैयार

---

176 आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.153

177 आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.153

178 आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.400

होगी। तेरे तो ख ों ही ख ों है।"[179] यदि स्त्री का न्म हुआ है तो फिर क्यों वह स्त्री ाति और नारी ाति कहकर मानव ाति से अलग एक ाति के रूप में परि ित होगी? मानो स्त्रियाँ मानव से बाहर हैं, मानो स्त्री मनुष्य ही नहीं है। वह अलग ाति, अलग समा की है।"[180] यानी पराया धन है िससे घृणा, उपेक्षा के सिवाय कुछ नहीं किया ा सकता। ये सो बदलनी होगी। पर समा की प ़ी-लिखी प्रबद्ध स्त्री भी लड़की के न्म पर दुःखी होती है। पेशे से डॉक्टर अमृता यह सो कर दुःखी होती है कि लड़की होने पर उसकी प्राक्टिस खराब हो ाएगी। इसलिए वह दाई को यह सू ना देने को कहती है-"डॉ.अमृत ने मु े देखते ही दाई माँ से कहा तुम्ही ाकर सेठ ी से कहा कि लड़की हुई है। हम बोलेगा तो हमारी प्राक्टिस खराब हो ाएगा। सब कहेंगे कि डॉ.अमृता से ापा करवाने से लड़की ही होती है।"[181] यानी एक डॉक्टर होने पर भी वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था की मानसिकता में ी रही है। ये कैसा प्रोफेशन है िसमें लड़की होने पर 'प्रेक्टिस' खराब हो ाती है। प्राकृतिक तथा ैविक प्रक्रिया से भली भांति परि ित भी ऐसी दकियानूसी बात सो सकता है। इस प्रकार की मानसिकता को बदलना होगा तभी स्त्री की पुनरुत्पत्ति यानी स्वस्थ्य पुनरुत्पत्ति हो ायेगी। नहीं तो पुरानी परंपराओं की गली-सड़ी पितृसत्ता में ही स्त्री दम घोंटू ीवन ीने के लिए छटपटाती रहेगी।

प्रिया के नम के बाद कस्तूरी का शरीर इतना कम ोर हो ाता है कि उसे पलंग से उठने के लिए 3 महीने लगते हैं। माँ कहती है-"क्या करूँ, मु े न ही सुहाती यह बसे नमी है, मेरा तो शरीर ही टूट गया। खाट पकड़ ली मैंने।"[182]

---

[179] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.26
[180] औरत हक में, तसलीमा नसरीन-पृ.77
[181] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.26
[182] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.28

इन्हीं मानसिकताओं को बदलने के लिए प्रभा खेतान ने उपन्यास में पुनरुत्पत्ति का संकेत दिया है।

4.3.3 यौनिकता

पुरुष सत्ता का ध्यान हमेशा स्त्रियों, उनके शरीर और उनकी यौनिकता को नियंत्रण करने की ओर रहता है। इस प्रकार की अमानवीयता का खंडन स्त्री-विमर्श के सभी मुद्दों ने किया है। साथ ही स्त्री को पुरुष से हीन मानने की मान्यता को ठुकराते हुए पितृसत्तात्मक समा ा को ुनौती दी है। इनके वि ाार में स्त्री-पुरुष की शारीरिक भिन्नता प्राकृतिक है। परंतु उसमें विभा ान करना सामा ाक देन है। समा ा में स्त्री-पुरुष सांस्कृतिक उत्पाद हैं। "किंतु मौलिक रूप से यहाँ पर स्त्री के संबंध में पारंपरिक दृष्टिकोण की पुनस्थापना है, ाो स्त्री को पुरुष द्वारा मह ा देखे ााने लायक एक वस्तु रूप में रखती है, अतः स्त्री पुरुष से भिन्न ारूर है, मगर 'वस्तु' है। यह एक प्रकार से बहुलता की आड़ में आर्य संस्कृति के व र्स्व का दावा है।"[183]

स्त्रियों की यौनिकता पर भी पुरुषों का नियंत्रण होता है। हमारे समा ा में लगभग सभी धर्मों में विवाह के संबंध के बाहर स्त्रियों का यौनिकता के लिए कोई ागह नहीं है। ऐसा माना ााता है कि स्त्रियों को पुरुषों की इ छा व ारूरत के अनुसार यौनिक सुख देना ाहिए। समा ा के, धर्म के, कानून कुछ ऐसे हैं कि स्त्रियों को यौनिकता के साथ-साथ उसके रहन-सहन, पहनावे, पोशाक, खाना-पीना, पर संबंधों आदि सभी वस्तुओं पर नियंत्रण रखते हैं। धर्म और समा ा स्त्री की यौनिकता और रू्.िवादिता के मुद्दों पर अधिकाधिक विभा ात होता ाा रहा है।

अधीनस्थ रहना स्त्री का स्वभावगत 'गुण' बन गया है। स्त्री मात्र के कुछ अनुभव ऐसे हैं, ाो ााति या वर्ग की दूरियों के बाव ाूद इन सीमा रेखाओं से परे

---

183 स्त्री-विमर्श के अंतर्विरोध, प्रभा खेतान-57/हंस/सितंबर, 96

है। हर स्त्री पुरुष द्वारा ीन्स या ानवर की तरह प्रयुक्त होने से पीड़ित है सारी दुनिया में स्त्री की स्थिति एक सी है। वह अधीनस्थ स्थिति में रहने के लिए बाध्य है। "बलात्कार स्त्री के प्रति हिंसक प्रहार, मार-पीट, छीटाकशी और रीति-रिवा ा में अहेतु की हिंसा सभी वर्ग की स्त्रियों को ोलनी पड़ रही है।"[184]

स्त्रियों का पुरषों की इ छा व ारूरत के अनुसार यौनिक सुख देना ाहिए। नहीं तो पुरुष उस पर अत्या ार करता है। उसे मानसिक एवं शारीरिक यातनाएँ देता है। उस पर तरह-तरह के शोषण करता है। 'औरत के हक' में तसलीमा मसरीन एक लड़की की दास्ता इस प्रकार लिखती है। रतन नामक अट्ठारह वर्ष की लड़की की शादी परिवार वाले अपने हिसाब से कर देते हैं। शादी के बाद से उसका पति ौबीस घंटे में पाँ ा-छह बार उससे शारीरिक सुख ाहता है। लेकिन लड़की को इतनी बार यौनिक सुख अ छा नहीं लगता। उसके यौनांग में काफी दर्द होता है तो वह विरोध करती है। विरोध करने की स ाा उसे बि ाली के तार से बने ाबूक से पति की मार खानी पड़ती है। पति द्वारा पिटे ाने पर भी वह उसे छोड़कर नहीं ााती और कहती है-"पीटने की बात तो हदीस में लिखी है। (हदीस में लिखा है अगर पति यौनिक सुख ाहता है और पत्नी इनकार करती है तो पति को पूरा हक है पत्नी को पीटे।"[185]) यानी स्त्री को पितृसत्ता, सामाा िक व्यवस्था तथा धर्म के मिले- ाुले शोषणों का शिकार होना पड़ता है। न ाहते हुए भी पुरुष को यौनिक सुख देना पड़ता है।

प्रभा खेतान कृत छिन्नमस्ता में नरेंद्र के माध्यम से पुरुष की ारूरत व इ छा को उ ाागर किया गया है। नरेंद्र हमेशा प्रिया से शारीरिक सुख की मांग करता है। प्रिया के मना करने पर उसे गुस्सा आता है और वह प्रिया की उपेक्षा करने लगता है। प्रिया को प्रेम ाहिए और नरेंद्र को सेक्स। नरेंद्र सेक्स को ही

---

[184] स्त्री-विमर्श के अंतर्विरोध, प्रभा खेतान-58/हंस/सितंबर, 96
[185] तसलीमा नसरीन, औरत के हक में-पृ.34

प्रेम मानता है। इस पर प्रिया सो ाती है-"नरेंद्र की वहशी भूख से मैं स ा में घबड़ा उठी थी और बाद में तो उसकी यह सेक्सुअल भूख ब ़ती ही गयी। केवल रात के प्रथम प्रहर में ही नहीं, बल्कि रात में, दिन में, शाम को वक्त-बे-वक्त कभी भी पार्टी के लिए तैयार होकर हम निकलनेवाले होते कि वह मु े वापस कमरे में घसीट लेता। प्रिया नहीं तुम मेरी ीज़ हो... लोग इतनी अ छी ीज़ को देखकर लार टपकाएँ, इसके पहले मु े स्वाद ाखने दो।"[186] प्रिया विरोध करने पर उपेक्षा के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता। नरेंद्र के वहशी उन्माद की शिकार हो ाती। यानी प्रिया कोई व्यक्ति न होकर वस्तु है। और नरेंद्र इस वस्तु को अपने हिसाब से ाब ी ाहे इस्तेमाल कर सकता है।

उषा राणावत ने "प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार में" यौनिकता की रा ानीति पर प्रभा खेतान के वि ारों को प्रस्तुत किया है। प्रभा ी के वि ार में स्त्री देह के संदर्भ में स्त्री स्वयं अपनी देह के प्रति नया दृष्टिकोण निर्धारित करे। अपनी देह के संसाधन का महत्व पह ाने और वह स्वयं को कामना की वस्तु न बनाए। समलिंगी यौगिकता का सबसे सबल सशक्त पक्ष है गहरी संवदेना इसी दैहिकता के आधार पर वह प्रकृति के इतने करीब है उसमें अंतर्ज्ञान की क्षमता है।"[187]

ि ात्रा मुद्‌गल कृत 'आवां', 'एक ामीन अपनी' में पुरुष के इसी प्रकार के वहशी उन्माद और वहशी भूख को ि ात्रित किया है। नमिता, स्मिता की बहन, गौतमी, इसी वहशी उन्माद की शिकार अपने ही परिवार वालों, परि ानों, परि ातों में हुई है। दस साल की उम्र में नमिता सगे मौसा की हवस का शिकार होती है। कामगार अगाड़ी में काम करते समय अन्ना साहब की वहशी भूख का शिकार बनती है। अपनी वहशी उन्माद को मिटाने के लिए अन्ना साहब नमिता को

---

[186] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.134
[187] प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत-पृ.37

कहते हैं-"साफ कहूँ तुमसे साफ कहने का मैं आदी हूँ। देखो, दोस्त की बेटी हो तुम, बेटी नहीं हो मेरी। पिता समान हूँ, मैं तुम्हारा पिता नहीं हूँ... रिश्ते के इस गहन अंतर्सूक्ष्मता को महससू कर लोगी तो संबंध से स्वयं को शोषित अनुभव नहीं करोगी। न छुड़ाने की कोशिश करो, न उठने की... कहा न पिता नहीं हूँ, पिता समान हूँ।"[188]

आभूषण व्यापारी सं ाय कनोई के प्रेम ाल में फंस कर उसकी अमानवीय नियतियों की शिकार होती है। इसी प्रकार गौतमी अपने सौतेले भाई की भूख का ारा बनती है। स्मिता की बहन खुद के पिता के वहशी उन्माद को सहते हुए मानसिक सुंलन खो बैठती है। 'एक ामीन अपनी' की नीता प्रेम ाल में फंस कर अमानवीय वहशी भूख का शिकार बनती है। मानसिकता खराब होने पर आत्महत्या कर लेती है।

अल्मा कबूतरी की अल्मा, अपने-अपने कोणार्क की कुनी, कठगुलाब की स्मिता, नर्मदा, बेवता बहती रही की उर्वशी, इदन्नमम की मंदा, सभी नायिकाएँ किसी-न-किसी रूप में पुरुष की वहशी उन्माद की शिकार हुई है।

4.3.4 मासिक धर्म : एक अभिशाप

अंतिम दशक के उपन्यास में स्त्री के हर पक्ष, हर समस्याओं को लेखिकाओं ने बेधड़क ि ात्रित किया है। पहले की लेखिकाएँ स्त्री के कुछ पक्षों को संकेत मात्र देकर छोड़ देती थी। पर आ ा के संदर्भ में लेखिकाएँ स्त्री के गू ़ विषयों का भी खुलासा बेबाक ंग से कर रही हैं। लड़कियों का मासिक धर्म शुरू होना, उसकी प्रतिक्रिया समस्याओं का उठाया ाा रहा है। "मासिक धर्म समा ा या परिवार द्वारा अब भी सह ाता से स्वीकार नहीं। यह एक दाग है ाो औरत को हीन और अपूर्ण वर्ग में रख देता है। बराबरी के अधिकारों से वं ाित होना औरत के ऊपर एक बो ा है। वह मानवीय गरिमा से वं ाित होती है। सामा ािक, धार्मिक,

---

[188] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.136

पारिवारिक व्यवस्था ब ापन से ही स्त्री के मन में ये बातें भर देती है कि मासिक धर्म के कारण स्त्री सारी व निाओं से कम है पर वं ाना का यह भाव तब दूर हो सकता था, ाब औरत के अपने अस्तित्व को अतिक्रमण के अन्य सारे रास्ते पुरुष की बराबरी में खुले होते हैं।"[189] स्त्री की यह पूर्व निर्धारित हीनता उसके अतीत और ब ापन से सामाा िक परिवेश और ान्म से ही उस पर आरोपित नियति है। आ ा के उपन्यासों में मासिक धर्म के तथ्यों को Biological दृष्टिकोण से ि ात्रित किया गया है।

प्रभा खेतान कृत छिन्नमस्ता में प्रिया के माध्यम से मासिक धर्म की व्यवस्था एवं इससे उत्पन्न स्थितियों का ि ात्रण किया गया है। प्रिया सो ाती है- "सम ा में आया कि पीरियड्स हो गए है। हाय! अभी यदि अम्मा को ााकर बोलूँगी तो वापस ाार बोल और सुनने को मिलेंगे। पर एक राहत थी कि ालो आ ा का दिन पहला दिन कहलाएगा और परसों को तीसरा दिन सर से नहा लूँगी। कुल मिलाकर कल का ही दिन तो अलग बैठना होगा? "ब्लीडिंग बंद होने में कभी सात दिन, कभी आठ दिन लग ााते। बी ा में बीस दिन शांति से बीतते और फिर टाँगों की टूटन, पेट में हल्का दर्द, पीरियड होने के दो दिन पहले सर में भयंकर दर्द, अ ाीब-सी उदासी, खाने में अरु ि ा और पाँ ा-सात दिन का यह सारा कर्मकांड, यों ही दहशत में बीतता। कभी रात को यादा ब्लीडिंग हो गई, नींद नहीं टूटी तो सुबह उठकर देखती तो बिस्तर में बड़ा-सात लाल धब्बा लगा मिलता।"[190]

इस पर प्रिया सो ाती है... इसमें मेरा अपराध क्या है... पर बिना अपराध के भी अपराधबोध और यह कैसी निर्मम स ाा मु ो मिल रही है। "क्या महीने के महीने रांगो के बी ा रिसता हुआ खून मु ो अ छा लगता है? और इसके कारण

---

[189] स्त्री-उपेक्षित, सीमोन द बोउवार, समीक्षा प्रभा खेतान-पृ.146
[190] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.72

कैसी अ ीब सी आत्मग्लानि, अपराधबोध, यंत्रणा... दाई माँ। यह मेरे शरीर से हर महीने खून क्यों निकलता है? ... तू ारा ल्दी बड़ी हो गई बिटिया। प्रिया उसके बड़े भाई द्वारा दस साल की उम्र में बलात्कार की शिकार होती है िासके कारण उसे ल्दी ही मासिक धर्म शुरू हो ाता है। वह सो ाती है... उस दिन की उस घटना से भी तो पैाटी में खून लगा था। हाँ उसी के दो महीने बाद तो यह ाक्कर शुरू हो गया था। तो मेरे इस दुर्भाग्य के कारण हैं बड़े भइया।"[191] समय से पहले संभोग से यौनिक छिल्ली फंट ाती है िासे यह प्रक्रिया आरंभ हो ाती है। और मासिक धर्म शुरू होने के साथ-साथ स्त्री के शारीरिक अवयवों में भी परिवर्तन होने लगता है। प्रिया के शारीरिक उभार को ब ़ते देख माँ िंतित हो ाती है और अपनी बड़ी बेटी सरला से कहती है-"सल्लो यह तो सा े दस की उमर में ही ौदह की लगने लगी।" उसका शारीरिक उभार समा ा-परिवार में अभी से न दिखाई दे। इसके लिए उसको समी ा पहनने को दी ाती है ताकि असमय उभार को छिपाया ाा सके। यह कैसी अमानवीय स्थिति है ाहाँ लड़कियों को सही ंग से ब ़ने भी नहीं दिया ाता।

पीरियड्स होने पर छुआछूत और कपड़े के इस्तेमाल पर प्रिया, सरो ा के साथ मिलकर विद्रोह करती है। और अपनी टी ार का सहारा लेकिर सैनिटरी नैपकिन का प्रयोग सुलभ करवाती है। "मु ो बहुत ही शर्म आती है। सैनिटरी नैपकिन के बदले कपड़े की पट्टी लगाना और वह भी फिर धोना-सुखाना... इस प्रकार ही कपड़े का दुबारा व्यवहार करने से संक्रामक रोग का भय रहता है। ... पुराने ामाने में स्त्री इस समय अपनी साड़ी ही दबा कर कोने में बैठी रहती थी यह हमारा कैसा बेहूदा समा ा है।"[192] सैनिटरी नैपकिन से राहत मिली। "भीतर की ग्लानि और अपराधबोध ने, माइग्रेन तथा पीरियड से पहले दिन पेट में भयंकर

---

[191] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.50

[192] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.80

दर्द तथा डिप्रेशन ने स्थायी रूप ले लिया था।"[193] इसके साथ ही बारह वर्ष की किशोरी यौवन का उभार।

ि त्रा मुद्गल कृत 'आवां' में भी नमिता पाण्डे का दसवें वर्ष मौसा द्वारा बलात्कार होने पर मासिक धर्म शुरू हो ाता है। माँ को मौसी ने बताया कि नमिता को महीना शुरू हो गया। दसवाँ लगा है उसे...अभी से? नमिता अपनी माँ से मौसा की हरकतें बताती है माँ इस पर उसको ही डरा धमका कर ुप करवा देती है। बेटी से यादा माँ को अपनी बहन और उसके पति की प्रतिष्ठा की फिक्र होती है।

4.3.5 मातृत्व भावनाः विवाह का खण्डन

पुनरुत्पत्ति के श्रम में लगी स्त्री पुरुष सत्ता का कभी विरोध नहीं करती। पितृसत्ता द्वारा प्रतिपादित विवाह संस्था को इसलिए सहर्ष स्वीकारती है कि सुरक्षित रहे। परंतु अंतिम दश्क की लेखिकाओं ने पुनरुत्पत्ति को इस श्रम में लगी हुई स्त्रियों को पुरुष सत्ता के खिलाफ खड़ा कर विरोध किया है। वे मातृत्व के लिए विवाह को अनिवार्य नहीं मानती। इन उदाहरणों को हम आवां, एक ामीन अपनी, ाक, माई, अल्मा कबूतरी में देख सकते हैं।

मातृत्व भावना के कारण विवे य कालखंड की स्त्रियाँ विवाह ैसी सामा िक व्यवस्था का खंडन करती है। आवां उपन्यास में नमिता सं ाय कनौई के अवैध ब े की माँ बनने के लिए तैयार हो ाती है। वह विवाह को महत्व नहीं देती। प्रम को ही श्रेष्ठ मानकर सं ाय के ब े की माँ बनने को तैयार हो ाती है। उसी प्रकार 'एक ामीन अपनी' में नीता भी अविवाहित माँ बनती है। कठगुलाब की नीर ा मातृत्व भावना के कारण विवाह ैसे नियमों का खंडन करती है और विपिन के साथ अविवाहित रहती है। असीमा को भी मातृत्व की भावना माँ की मृत्यु के बाद ागती है। असीमा सो ाती है-कितना अ छा होता अगर हर माँ

---

[193] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.81

अपनी बेटी की बेटी बनकर पुन र्न्म ले पाती। तब बुद्धि से ही नहीं, मन से भी मु ो अहसास हो सकता कि हाँ, आत्मानित्य होती है। पर कैसे? मु ो तो ब ा हो नहीं सकता। समय निकल ुका प ास साल की हो ाली। अब मर्द बनकर ी सकती हूँ यही कहा था न डॉक्टर ने। ाब मासिक धर्म का समापन होने पर, उसके पास गयी थी। उसी प्रकार माई की सुनैना माई की मृत्यु के बाद मातृत्व के महत्व को महसूस करती है।

वहीं मारियान कठगुलाब में मातृत्व की समस्या से गु ारती है। माँ बनने के लिए पति द्वारा छली ाती है। पति उसे ांसे में लाकर उसके सारे ारनल को अपने उपन्यास के लिए इस्तेमाल कर उनको नष्ट कर देता है। मारियान इसका विरोध करने पर मानसिक रोगी कहकर तलाक ले लेता है। मारियान मातृत्व भावना के लिए इतनी ग्रस्त है कि वह अपना स्वयं के ब े भी अभिलाषा से पति द्वारा ठगी ाती है। तलाक के बाद दूसरा विवाह कर लेती है। लेकिन प्रकृति उसे धोका दे ाती है। फिर ब े को गोद लेना ाहती है तो पति मना कर देता है। मरियान अपनी वेदना को स्मिता के सामने प्रकट करती है-"नहीं। मु ो खुद का अपना ब ा ाहिए। मैं उसे अपने आँगन में खेलता-ब़ता देखना ाहती हूँ। अपने घर की दीवारों के बी ा गूँ ाती, शनैः-शनैः दृ़ होती आवाज़ सुनना ाहती हूँ। हाँ मैं एकदम पारंपरिक, ाहिल, गंवार, प्रकृति औरत हूँ। औरत हूँ मैं। तो? क्यों न हूँ औरत? मैं ि ल्ला-ि ल्लाकर कहती हूँ, मैं एक ब ा पालना ाहती हूँ।"[194] नर्मदा भी मातृत्व भावना से ग्रस्त है। वह नमिता को कहती है। तुम काहे बात की इकली हो, बीबी। हम बाँ ा औरतों में एक तुम्ही बाल ब ेदार हो। बेटा-बेटी, दोनों है तुम्हारे। तुम काहे टसुए बहाओगी। रोना तो हमें ाहिए। मु ो, असीमा बीबी को और तुम्हारी इस मेम बहन (स्मिता) को भी ि नका ना बालक हुआ, न भतीर रहा, आगे वह कहती है बाँ ा औरतों को रोना ारूर

[194] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.112

ाहिए। ना रोओ तो अगले ानम में भी कोख वीरान ावे है।"[195] कठगुलाब की सभी स्त्रियाँ मातृत्व की समस्या से ग्रस्त हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' की कुनी अपनी बहन मती के बेटी बावला को देखकर सो ाती है-गोल-मटोल गदबदा नन्हा बावला आश ार्य और उत्सुकता से ारों तरफ टुकुर-टुकुर ताकता, ुंबनी और गलबहियों से भिं ाता रहा। मेरा मन करता था इसे अपनी छातियों से सटा लूँ। नन्हें होंठों की छुअन महसूस कर मीठी गुदगुदी से पूरे िस्म में कंपकंपी सी महसूस की। अ ीब-अ ीन्ह-सा सुख... एक नन्हें मासपिंड को अपने भीतर उगते और ब ़ते देखने की अदम्य लालसा, एक नन्हीं ान को कोख में पालने का गर्व। गुलाब की पत्तियों- ैसे होंठों की छुअन ने मेरे भीतर के मातृत्व को अ ीब-सी ुनौती दी थी और भीतर-ही-भीतर ठह गई थी।"[196] अविवाहित होने के कारण अपने मातृत्व भावना को अपने भीतर ही समाप्त कर देती है।

4.3.5.1 सेगोरेट मदर, खरीदी गई कोख

"विज्ञान के विकास और समा ा की ारूरत ने रिश्ते की एक नई दुनिया विकसित की है। यह दुनिया है सेरोगेट मदर्स की। यह एक बिल्कुल नए किस्म की माँ है। यह माँ सिर्फ पैसों के लिए किसी अन्य के भ्रूण को अपनी कोख में पालती है और ब े के ान्म लेते ही कीमत देनेवाले व्यक्ति को उसे सौंप देती है। सेरोगेट मदर माँ का व्यापारिक रूप है, िसे लोग अपने फायदे के आधार पर उपयोग करते हैं।"[197]

आवां उपन्यास में हम सरोगेट मदर्स की भूमका में गौतमी को देख सकते हैं ाो पैसों के लिए व्यापारिक रूप में ित्रित हुई हैं। सं ाय कनोई गौतमी के बारे में नमिता को बताता है-" ूठी कोख है गौतमी। िास ठाठ-बाट से वह ाी रही है

---

[195] कगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.207

[196] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.78

[197] मई मातृ दिवस माँएँ ये भी हैं पर ारा हटकर हैं, सपना वा ापेयी मिश्रा-पृ.106

केवल प्रतिभा के बूते वहाँ तक पहुँ ाने में उसे बीस साल लग ाते। ि ास आलीशान फ्लैट में रह रही वह ानती हो किसका भेंट किया हुआ है? नामी-गिरामी उद्योगपति छेड़ा साहब का। ापान में उनके संग डे ़ साल रही गौतमी छेड़ा साहब की पत्नी मुंबई लौटी तो अपनी सूनी गोद में बेटा लेकर व्यवसाई समा ा में उन्होंने ूठा उड़ा रखा था कि मिसे ा छेड़ा गर्भवती है। दुनिया का कोई इला ा मिसे ा छेड़ा को माँ नहीं बना सकता था।"[198] गौतमी ने उसे यह सौभाग्य दिया।

व्यवसायी समा ा में अपनी प्रतिष्ठा के लिए सं ाय कनोई भी नमिता को खुद के ब े के लिए धोके से प्रेम ाल में फंसा कर उसे इस्तेमाल करता है। नमिता सं ाय कनोई की बेइमानियों से अं ान रहती है। प्रेम को स ा मानकर उसके ब े की अविवाहित माँ बनने को भी तैयार हो ाती है। पर अ ानक मानसिक तनाव के कारण गर्भपात हो ाता है तो सं ाय कनोई उसकी उपेक्षा करते हुए कहता है-" ूठी... प्राण ले लूँगा में तुम्हारे... मु े मेरा ब ा ाहिए... ब ा? ानती हो? बाप बनने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर कितना ख र् किया? उस अं ाना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके? उसका ि म्मा सिर्फ इतना-भर था कि वह मेरे पिता बनने में मेरी मदद करे और सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए। ... मु े सिर्फ उस लड़की से औलाद ाहिए थी ो पेशेवर न हो... पवित्र हो, ो मु ा से प्रेम कर सके। सिर्फ मेरे लिए माँ बन। सिर्फ मु ासे सहवास करे... हमारा मिशन सफल रहा... तेरह वर्ष बाद मैं बाप बना... अपने ब े का बाप। उस औरत से ि ासे मैं स ामु ा प्यार करने लगा। उसी ने... उसी ने मु े धोखा दिया? ऐशो आराम से रह सकती थीं... क्योंकि मैं... मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकता।"[199] यानी अपनी ारूरतों के लिए

---

[198] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.540
[199] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.541

स्त्री का प्रयोग धोके से किया गया है। सं ाय के लिए नमिता एक कोख के सिवाए कोई माईने नहीं रखती। सं ाय ने खुद के ब ो के लिए नमिता की कोख का प्रयोग किया है।

4.3.6 प्र ानन क्रिया से बिगड़ा स्त्री स्वास्थ्य

प्र ानन क्रिया अगर सावधानी से, स्वास्थ्य का ध्यान रख कर पूरी डॉक्टरी ाँ ा से हो तो स्त्री को कोई शारीरिक आघात नहीं पहुँ ाता। प्रसूति के समय सावधानियों के प्रयोग से स्त्री का शरीर स्वस्थ रहता है। लेकिन अगर कोई भी छोटी सी भी असावधानी बरते तो उसके समक्ष बहुत सारी कठिनाइयाँ आ सकती हैं। पहले कम उम्र की लड़कियों की शादी हो ाने से, अशिक्षित होने के कारण एक के बाद एक ब ो पैदा करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ ाता था। वे कई असावधानियों के ालते मृत्यु दर तक पहुँ ा ाती थी पर आ ा स्थिति बदल गई है। स्त्रियों के लिए कई स्वास्थ्य केंद्र, सलाह केंद्र है फिर भी स्त्री प्र ानन क्रिया से बिगड़ते स्वास्थ्य की समस्याएँ सामान कर रही हैं। अंतिम दशक की लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में इस व्यवस्था को उद्घाटित किया है। अधिक ब ों के प्र ानन से माँ का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। प्रसूति के समय सही इला ा न होने पर उसकी उसके समक्ष कई कठिनाइयाँ आ रही हैं। गर्भपात से भी स्त्री भयानक क्षति का सामना करती है।

4.3.6.1 प्र ानन क्रिया

प्र ानन क्रिया में यदि ब ों में अंतर न हो तो स्त्री का स्वास्थ्य पूरी तरह से खराब हो सकता है। इस समस्या को प्रभा खेतान ने छिन्नमस्ता उपन्यास में उठाया है। प्रिया की माँ कस्तूरी का विवाह ौदह वर्ष में हुआ अट्ठाईस वर्ष तक आते-आते छः ब ों की माँ बन गई। साल-साल ब ो पैदा होने के कारण कस्तूरी का शारीरिक एवं मानसिक संतुलन बिगड़ गया था वह अपने आप में कम ोरी महसूस करने लगी थी। और शरीर कम ोर हो ाने पर उनके मन में

कुंठा का उत्पन्न हो ाना सह ा ही प्रतिलक्षित होता है। प्रिया सो ाती है-"अम्मा को िंदगी में क्या मिला? हर दसवें महीने ब ो ही तो पैदा करती रही। ब ों के कारण औरत का शरीर खोखला हो ाता है।"[200]

प्रिया के ान्म के समय माँ का शरीर इतना कम ोर हो ाता है कि "पलंग से नी ो पैर रखने में उन्हें तीन महीने लगे।"[201] लड़की होने के कारण उनकी मानसिकता भी बदल ाती है। अपनी बीमारी की व ाह वह बेटी को मानती है- "क्या करूँ, मु ो नहीं सुहाती यह। ाबसे ानमी है मेरा तो शरीर ही टूट गया। खाट पकड़ ली मैंने।"[202] सुना कि मेरे पैदा होने के बाद माँ को तीन महीने तक ब्लीडिंग होती रही थी। बंद न होने पर इला ा करवाने से पता ाला गर्भाशय में खराबी है। और उन दिनों शायद गर्भाशय को निकालना ाोखिम का ऑपरेशन माना ाता था।"[203] "उनके इला ा के लिए 'रेडियो थेरेपी' का प्रयोग किया गया ािससे ब्लीडिंग बंद हो गई लेकिन नई बीमारी उत्पन्न हो गई। उनके टानसिल ब ़ गये थे।"[204] ािसके कारण ाीवन भर साइको थेरापिस्ट डॉ.गांगुली के सहारे ाीना पड़ा। पीड़ा और त्रासदी, क्या उन्हें इन्हीं में सुख मिलता है अपनी मानसिकता के कारण हमको अपनी त्रासदी का भागीदार बनाती थी। कभी अपने को सताती तो कभी बेहद परपीड़न पर उतर आती। मानसिक उद्वेग के कारण आक्रामकता के शब्दों के ााबुक बनाकर सब पर तड़ाक-तड़ाक पीठ पर मारती रहती।

---

[200] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.45
[201] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.27
[202] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.28
[203] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.31
[204] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.32

4.3.6.2 गर्भपात के कारण

गर्भपात के कारण भी स्त्री का स्वास्थ्य बिगड़ ााता है। एक से अनेक बार गर्भपात होने पर स्त्री के (युट्रेस) गर्भाशय में फाइब्रायड्स ब.ने पर स्त्री के स्वास्थ्य के भारी क्षति पहुँ ाती है। युट्रेस की क्षति पर स्त्री आ ाीवन मातृत्व भावना से वं ात हो ााती है। कठगुलाब की मारियान ाो लेखिका है और रॉ संस्थान में कार्यरत भी है उसके पति ईविन ने अपने फायदे के लिए उसका गर्भपात करवाया था ािसकी व ाह से प्रकृति ने फिर उसे माँ बनने का मौका न दिया। पति द्वारा धोखा खाने पर वह उससे तलाक लेकर गोरी नामक व्यक्ति से दुबारा विवाह कर लेती है। मारियान अपनी इस प्राकृतिक क्षति को स्मिता को बताते हुए कहती है-"मेरा इरादा पाँ ा साल में तीन ब ाों को ान्म देना था... अपनी यो ाना के तहत में पहले पाँ ा सालों में तीन बार गर्भवती भी हुई ारूर थी पर तीनों बार मेरा गर्भपात हो गया था। पहला गर्भपात मैंने अपनी म ार्ी से (यानी इर्विंग की म ार्ी से) करवाया था... इसलिए प्रकृति ने बदला लेने के लिए उसी को माध्यम बनाया। पुरुष डॉ. से मिलने पर डॉक्टर ने बताया कि-"दिस इस द रिवैं ा ऑफ द वूम्ब... गर्भाशय का प्रतिशोध ... महिला डॉक्टर से मिलने पर वह बताती है कि हैबि ाुअल गर्भपात की बीमारी, यादातर कामका ाी और खासकर फेमिनिस्ट औरतों को होती है।"[205] "मैंने... कब ााहा था, अपने गर्भ को सूना रखना?"[206] उसने ाान बू ाकर मेरे ब ो को सेबोटा ा किया। तीन साल के लंबे प्रसव के बाद खाली हाथ, डॉक्टर के पास लौटी तो बहुत देर हो ाुकी थी। फायब्रायडस इतने ब.ं ाुके थे कि उन्हें निकालकर गर्भ रखवाने की संभावना खत्म हो ाुकी थी। कैंसर के हमले से ब ाने के लिए वूम्ब निकलवाना ारूरी हो गया था। मैं सब तरह से रिक्त हो गयी। कोई विकल्प नहीं ब ाा तो पिछले बरस

---

[205] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.104

[206] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.105

मैंने वह घातक स रिी करवा ली।"[207] गर्भपात होने से स्त्री की मानसिकता पर भी भारी आघात पहुँ ाता है। इसी मानसिकता के ालते वह अपने आप को कम ोर मानकर कोसने लगती है।

कभी-कभी मानसिक आघात से, या शरीर पर हुए अत्यधिक प्रहार से किसी ना ुक ागह मार पड़ने पर गर्भपात हो सकता है। स्मिता के साथ भी ऐसा ही होता है। ाब ीम उसे केस सम ा कर अपराधबोध करने की कोशिश करता है और स्मिता अपने आप कोई अपराधबोध महसूस नहीं करती इस पर ीम ि ा. कर उसकी उपेक्षा करते हुए अपने बेल्टों से उस पर लगातार प्रहार करता है। स्मिता अपने पर हो रहे अत्या ार के प्रति स ोत होकर ि ाम का बेल्ट छिनकर उसकी अ छी तरह पिटाई करके उसे हमेशा के लिए छोड़कर रॉ ऑफिस आ ाती है वहाँ से उसे मारियान मिलती है और स्मिता को अपने घर ले ाती है। "सुबह उसके लिविंग-रूम के सोफे पर मु ो ते ा दर्द के साथ मेरे बदन से खून गिरना शुरू हुआ। मारियान मु ो अस्पताल ले गयी पता ाला कि मेरा गर्भपात हो गया। ि ाम की बैल्ट का आकस्मिक प्रहार किसी ना ुक ागह ाा लगा था। मैं ाानती भी नहीं थी कि मैं गर्भवती थी। ाब पता ाला, सब खाली हो ुका था। ... डॉक्टर ने कहा, सफाई कर दी, तो मेरे मुँह से एक प्र ंड ीख निकली। फिर एक बलात्कार पहले अस्मिता पर, अब शिशु पर। मेरे ीख ने अस्पताल के दरो-दरवा ो हिला दिये। ब ापन के बंधे-रुंधे बलात्कार के क्षण से, आंतों में घुटी ो पड़ी थी।"[208]

मानसिक तनाव तथा आंतरिक उद्वेग के कारण आवां की नमिता का भी गर्भपात हो ाता है। ाब वह कामगार अघाड़ी के अन्ना साहब की मृत्यु की खबर सुनते ही... "बस ऐसी हौक समाई पेट में कि दर्द की ीरती हुई लहरें सी उठने

---

[207] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.106
[208] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.59-60

लगी एकाएक... खड़ी नहीं रह पाई मैं। अपने को घसीटते-घसीटते बिस्तर तक ले गई। बिस्तर पर लेटी कि भल-भल खून रिसने लगा।"[209] इस प्रकार उसका गर्भपात हो ाता है।

स्त्री के दाम्पत्य ीवन की आपसी कलह के कारण पुरुष के शोषण एवं अत्यकिध ब ़ते अत्या ार को सहन करने की क्षमता खतम होने पर स्त्री की मानसिकता पर गहरा असर होता है। ि ासके कारण वह अपने शरीर को क्षति पहुँ ाती है। कई कारणों से गर्भपात हो ाता है। स्त्री की मानसिकता के साथ-साथ शरीर पर भी अकसमात घातक आघात होता है। एक ामीन अपनी की अंकिता के साथ भी यही होता है। दाम्पत्य ीवन की कडुवाहट को महससू करते हुए कहती है-मैं घर को ीना ाहती हूँ बरदाश्त करना नहीं... सुधांशु पगलाए सांड सा टूट पड़ा था। उस पर... वह क्षुब्ध हो दीवार पर अपना माथा पटक बैठी थी और भयंकर तनाव के क्षणों में विक्षिप्त-सी हो अक्सर पटकने लगी थी।"[210] ि ासके कारण उसका गर्भपात हो ाता है।

'अल्मा कबूतरी' में अल्मा का भी गर्भपात होता है। ाब उसके साथ सामूहिक बलात्कार होता है। समा ा की निर्मम व्यवस्था में स्त्री को न ाहते हुए भी अपने ऊपर शारीरिक, मानसिक अत्या ार को सहना पड़ता है। कारण ाो भी हो पुरुष सत्ता के व र्स्व के कारण स्त्री के साथ अमानवीय घटना घटती है। पुरुष स्त्री के भावी ीवन से ााने-अन ााने खिलवाड़ करता है। प्राकृतिक रूप से या शारीरिक रूप से उसकी आत्मा से उसके आत्मसम्मान तथा उसकी मानसिकता से पुरुष खिलवाड़ करता रहता है। स्त्री की मानसिकता खराब होने पर उसके शरीर में तरह-तरह के रोग उत्पन्न हो ाते हैं। पुरुष उसे नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त कर देते हैं ि ासके कारण उसे ीवन भर अस्वस्थ रहना पड़ता है और कुछ केसों

---

[209] अवाँ, ि ात्रा मुद्गल-पृ.538
[210] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.24

में स्त्री मर भी ाती है। छिन्नमस्ता की प्रिया की भाभी भी रोग ग्रस्त थी। प्रिया सो ाती है-"भाभी को ो पुराने संस्कारों के कारण भैया के ारित्र को लेकर विक्टोरिया नैतिकता से ग्रस्त घुटन भरे ीवन के कारण ब्लड प्रेशर ब ़ गया िसके कारण अधिक सो ने से हार्ट एनला र्ड हो गया साथ ही थायराइड काम नहीं कर रहा था... पेट में ब ा होने के कारण अधिक बीमार रहने लगी सारे दिन उल्टियाँ करती रहती कम ोरियों के कारण बेहोश होकर गिर ाती है। ब्लड प्रेशर ोक होने पर डॉ.अमृता कौर ने कहा-"तुरंत एबार्शन करवाना होगा नहीं तो माँ की ान ब ानी मुश्किल है... भाभी ी छः महीने के भ्रूण की हत्या का पाप सर पर नहीं लेना ाहती थी, ाहे प्राण भले ही ाले ाएँ। पर भौया की िद् के सामने उनकी एक न ाली। गर्भपात हुआ, पर भाभी ी ने हमेशा के लिए खाट पकड़ ली। हमेशा उल्टियाँ यूँ ही होती रहीं।"[211] और अंत में मृत्यु हो गई।

4.3.7 विवाहेतर और विवाहपूर्व काम संबंध

अंतिम दशक के उपन्यासों में विवाहेतर तथा विवाह पूर्व काम संबंधों के मुद्दों को रेखांकित किया गया है। स्त्री सेक्स को अपनी आवश्यकता मानती है। इसकी इ छा पूर्ति के लिए वह कोई भी कदम उठाने को तैयार है।

4.3.7.1 विवाह पूर्व संबंध

विवाह पूर्व यौन संबंध को अंतिम दशक की लेखिकाओं ने अत्यधिक आधुनिकताओं के संदर्भ में ित्रित किया है। इन आधुनिकताओं को ऐसे यौन संबंध से न पाप बोध होता है न वे अपने आपसे से घृणित होती हैं। न ही उन्हें किसी बात का पश ाताप होता है। प्रेम ाल में फंस कर धोखा रूर होता है। ये स्त्रियाँ अपेन सुख के लिए मान्यता नहीं देती। परंपरा का खंडन कर समा को ुनौतियाँ देती हैं। स्मिता गौतमी ऐसी ही आधुनिकाएँ हैं ो अपने सुख के लिए बॉयफ्रेंड बदलती रहती हैं। स्मिता पहले शरत को अपना दोस्त बनाती है। फिर

---

[211] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.79-80

विक्रम को। ि त्रा मुद्गल ने आधुनिकता में पथभ्रष्ट होती मानसिकता का ि त्रण स्मिता के माध्यम से किया है। स्मिता एक ऐसी लड़की है ो 'विवाहपूर्व दैहिक संबंधों का निषेध नहीं करती, ऐसे कार्य को पाप नहीं सक ाती।' लेकिन सावधानियों का पूरा ख्याल रखती है इसलिए कि इससे उसके ीवन के लिए स्वयं एक समस्या न खड़ी हो ाए। सहवास से गर्भ न ठहर ाए या कोई रोग न लग ाए। ब कि पुरुष गर्भ धारण के दायित्व से मुक्त रहता है। गर्भ धारण स्वयं में एक गंभीर वैयक्तिक ही नहीं सामाि क दायित्व भी है।"[212] फिल्म स्टार खुशबू मातनी है कि लड़कियों के लिए विवाह पूर्व सेक्स में कोई बुराई नहीं है बशर्ते वे इसकी सावधानी बरते कि उन्हें गर्भ न ठहरने पाए और वे किसी यौन रोग की शिकार न बने।"[213] स्मिता शरत के साथ सहवास करना ाहती है ओर उसे अपनी सावधानी के लिए 'कंडोम का पैकेट साथ लाना न भूलना' सम ाती है। पर शरत कहता है उसे कंडोम का इस्तेमाल नहीं आता और सारे काम आते हैं इस पर स्मिता कहती हे-"परेशानी मु े होगी। इसलिए होगी गधे की औलाद कि मैं तेरे ब े की कुंआरी माँ नहीं बनना ाहती और ो लड़का कंडोम इस्तेमाल करना नहीं ानता वह मेरा प्रेमी होने के काबिल नहीं। बैठ घर में।"[214] स्मिता को स्थितियों ने ऐसा बनाया है उसके घर का वातावरण इतना दूषित है कि उसे यौन सुख, यौन दुःख तथा उसे घटने वाली सारी घटनाओं से परिि त है। इसलिए वह कोई भी लापरवाई नहीं बरतना ाहती है। कोई भी लड़की अपेन ीवन को स्वस्थ एवं स्व छ रखना ाहती है। "शायद स्थिति के परिष्करण के

[212] महिलाःविवाहेतर संबंधों का सह ीवन पर उठते सवाल, डॉ.राधुश्याम शुक्ल-पृ.98
[213] महिलाःविवाहेतर संबंधों का सह ीवन पर उठते सवाल, डॉ.राधुश्याम शुक्ल-पृ.95
[214] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.205

संयोग के ालते तब ाब अभावों की गिरफ्त से मुक्त होने को छटपटाता व्यक्ति अपने खड़े रहने के लिए ग ा-भर आधार बनाने में सफल हो ाता है।"[215]

छिन्नमस्ता की प्रिया, एक ामीन अपनी की नीता, आवां की नमिता, अल्मा कबूतरी की अल्मा, अनाम प्रसंग की ममता, अपने-अपने ेहरे की रमा, सभी नायिकाएँ विवाहपूर्व संबंध बनाती हैं और ऐसे संबंध को बुरा नहीं मानती।

अंतिम दशक के उपन्यासों में पुनरुक्ति के लेखिकाओं ने कई तथ्य खो ा निकाले हैं ि निके कारण स्त्री अपने ीवन को सही ंग से व्यवस्थिंत कर सके। पुनरुक्ति में लैंगिक समानता, सुर ा तथा प्र ानन प्रक्रिया के मुद्दे उठा कर उनमें नवनिर्माण का संकेत छोटा है। आधुनिक धरा में बहती आधुनिकताओं को स ेत किया है कि कोई भी काम करो सो ा सम ा कर सावधान से करो। तथा आत्मसम्मान को ठेस न पहुँ े।

4.3.7.2 विवाहेतर संबंध

ाक की सारंग इसका अ छा उदाहरण है। वह विवाहित है और उसके प्रेमी श्रीधर से संबंध बना लेती है। क्योंकि उसके पति रं ित ने उसकी ामकर पिटाई की थी तो सारंग उस पिटाई का मुआव ा या भरपाई के लिए बे ि ाक, बिना घृणित महसूस किये श्रीधर से संबंध बना लेती है। " ैसा कि आधुनिकता के कुछ रूपों में हो रहा है। यह यौन उ छृंखलता या एक प्रकार का षडयंत्र है, ि सके द्वारा विवाह के मूल्यों को टकराने की कोशिश की ाती है।"[216] लेकिन इसलिए तो ‘ ाक’ द्वारा उठाया गया यह सवाल महत्वपूर्ण है कि क्या स्त्री-पुरुष रिश्तों में इतनी स्वाधीनता नहीं होनी ाहिए कि विवाह के बाहर भी संबंध बन ायें, तो इसकी उदार छूट हो?"[217] विधवा होने पर रेशम भी अपनी म ी से किसी से प्रेम कर दैहिक संबंध बनाती है। ि सके कारण वह गर्भवती बन ाती है। और विधवा

---

[215] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.206

[216] स्त्री पुरुषःकुछ पुनर्वि ार, रा ाकिशोर-पृ.141

[217] स्त्री पुरुषःकुछ पुनर्वि ार, रा ाकिशोर-पृ.142

का गर्भवती होना न परिवार स्वीकार करता है न समा ा, उसे मौत के घाट उतार देते हैं।

आवां की गौतमी भी विवाहेतर संबंध को पाप नहीं सम ाती। ीवन की ारूरतों का एक हिस्सा मानती है और नमिता को गोतमी कहती है कि स्थितियों ने इतना रू. बना दिया है कि-"एक वक्त था, दोस्त! िंदगी की शर्तों पर ीती थी मैं-घिसट-घिसट। आ ा मेरी शर्तों पर िंदगी ीती है। ैसा मैं ाहती हूँ... पति को घर की वस्तु से यादा कुछ नहीं मानती... मैं क्या हूँ, कहां ाती हूँ, किसके साथ रहती हूँ, किसके साथ सोती हूँ... कोई मतलब नहीं उससे। घर मेरा है। अशोक को रहना है रहे , न रहना हो छोड़कर ाला ाए।"[218] पीली आंधी की सोमा पति के अत्या ारों से तंग आकर पति के मानसिक, शारीरिक शोषण से ऊब कर मि.सेन से प्रेम कर उससे अपने संबंध बना लेती है और उसके ब ो की माँ भी बनती है। पति को हमेशा के लिए छोड़ कर मि.सेन के साथ रहने लग ाती है।

अल्मा कबूतरी की कदमबाई और भूरी ो कबूतरी समा ा की स्त्रियाँ हैं ऐसे समा ा में विवाहेतर संबंध को बुरा नहीं मानते। साथ ही पति उनके कभी-कभी ऐसा करने की सलाह देते हैं। आर्थिक विपन्नता दूर करने के लिए। कदमबाई मंसाराम से प्रेम करती है और उससे संबंध बनाती है। भूरि अपने बेटे के भविष्य के लिए ऐसे संबंध ब.ाने के लिए म ाबूर हो ाती है।

कठगुलाब की नमिता, नर्मदा विवाहेतर दैहिक संबंध बनाते हैं। नमिता असीमा के भाई असीम से तथा नर्मदा नमिता के पड़ोसी से। स्पष्ट है कि अंतिम दशक की सभी नायिकाएँ विवाहेतर संबंध को पाप न सम ाकर यौन सुख की एक मांग है, सम ाती हैं।

---

[218] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.361

निष्कर्ष

अंतिम दशक 'छिन्नमस्ता', 'कलिकथाःवाया बाइपास', 'एक ामीन अपनी', 'आओ पेपे घर ाले', 'दिलो दानिश', 'यामिनी कथा', 'अपनी सलीबे', 'बेतवा बहती रही', 'अपने-अपने कोणार्क', 'अपने-अपने ेहरे', 'पीली आँधी', ' ूला नट' आदि उपन्यासों में प्रिया की माँ, सास, छोटी माँ, इदनम्म की बऊ, कलि-कथा वाया बाइपास की बड़ी माँ, एक ामीन अपनी की अंकिता की माँ, दिलो-दानिश की कुटुंबप्यारी, अपने सलीबे की नीलिमा सभी पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नियमों को निभाती हुई पराधीनता की समस्या से गु ार रही हैं। वह परंपरामुक्त पराधीनता की ाकड़बंधी को तोड़कर नया ीवन बिताना ाह रही है। समा ा की संहिता को तोड़ अपने अस्तित्व के लिए विद्रोह बन समा ा के नियमों का खंडन कर रही है। इदन्नमम की प्रेम परंपरा मुक्त विधवा का ित्रण प्रस्तुत है िासमें प्रेम परंपरागत वैधव्य की ौखट को पूर्णतः नष्ट कर देती है। छिन्नमस्ता की प्रिया भी परंपरा तथा पराधीनता की समस्या से ग्रस्त है और विद्रोही बन कर पति को छोड़ देती है। ूला नट की शीलो परंपरा मुक्त स्त्री का ित्रण है ाो देवर से संबंध तो रखती है पर उससे विवाह नहीं करना ाहती। शीलो ने परंपरा के सभी हद पार कर विद्रोही बन गई है। अपने ीवन को अपने हिसाब से ीना ाहती है।

स्त्री का सामाि ाक ीवन अर्थहीन है। सामाि ाक कुरीतियों का शिकार है। समा ा की विसंगतिपूर्ण वातावरण से कुछ स्त्रियाँ विद्रोह करती हैं िासका नती ाा उन्हें मौत के घाट उतार देता है। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं ाो सामाि ाक भय के कारण पति की उपेक्षा सहती हैं। अन्याय-अत्या ाार को सहत हुई उनसे बिछुड़ना नहीं ाहती। समा ा में आ ा भी स्त्री पूरी स्वतंत्रता के साथ स्वस्थ ीवन ीने में असमर्थ है। सामाि ाक व्यवस्था में अब भी स्त्री का ीवन अनुकूल नहीं है। कहीं बलात्कार की शिकार है, कहीं धोखे, कहीं छेड़छाड़, भेड़ियों की दृष्टि से ब ाने में

वह असमर्थ है। कहीं दहे ा के शोषण से पीड़ित है। विधवा, अकेलापन, नौकरीपेशा स्त्री, दहे ा, अमानुषता का व्यवहार, स्त्री के सामाा िक ीवन को डावाडोल कर देता है। इन विसंगतिपूर्ण विषमताओं का शिकार स्त्री हमेशा से रहती आई है और शायद आगे भी रहती रहेगी। ाहे कितनी भी आधुनिकता समा ा में आ ाए स्त्री की स्थिति में कहीं कोई सुधार नहीं। शायद संदर्भ बदल अवश्य गये हों।

आलो य उपन्यसों में कारण कैसा भी हो, ो भी हो पति द्वारा ही स्त्री का वैवाहिक ीवन साररहित हो गया है। नीरस ीवन से स्त्री ऊबकर विद्रोहिणी बन गयी है। पुरुष ने उसे हर पल छला है। उसे अपमानित, प्रताड़ित, उपेक्षित किया ि ासके कारण वह वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन पति के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। अन्याय, अत्या ार, मानसिक तथा शारीरिक तनाव के कारण स्त्री ने संबंध वि छेद किये हैं ि ासने नहीं किये घुट-घुट कर मर गयी।

विवे य उपन्यासों में युवतियाँ अपने ही परि ानों, पिता, भाई, ी ी, मौसा, मामा के शोषणों का शिकार होती है। उनकी वासना, विकृत यौन मानसिकता की शिकार होती है। प्रिया के उसके भाई द्वारा शोषण होने पर उसकी दाई माँ आलाप करते हुए कहती है-"अरे राक्षस! अरे कसाई! अपन माँ-बहन को छोड़ दे... कोठा नाहीं है का...?"[219] इसी प्रकार मंदा ाब कैलास मास्टर के वासना की शिकार होती है तो कुसुमा कैलास मास्टर की उपेक्षा करते हुए कहती है-"कीरा परें तुम्हारे। मंदा मामा कहकें टेरती हे, सो भी नहीं ख्याल किया? फिर काहे को बहन-भानि ा मानने का स्वाँग भरते हो? ग छत! कुकरमी!

[219] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.55

अधरमी!"[220] समा ा में बलात्कार एक प्रकार का दंश है ाो स्त्री के लिए ाीवन भर कुण्ठा, संत्रास तथा असहनीय अपमान ानक हो ााता है। स्त्री समा ा के अतातियों से ही नहीं परिवार ानों, परि ानों की हवस का शिकार बनती है। अपने ाीवन को प्रगति के लिए समर्पित कर समा ा में बलात्कृत स्त्री को शोषित, कुंठा, आत्मग्लानी, अपराधबोधी अवस्था में ही अपना ाीवन व्यतीत करना पड़ता है।

विवे य उपन्यासों में रखैल की प्रवृत्ति का ित्रण हुआ है। 'दिलो दानिश' की रखैल परंपरा नवाबी वातावरण की देन है िासमें ये परंपरागत अनुकरण करते हैं और उनसे ान्मे संतानों को उनका सही हक देने का प्रयत्न करते हैं। अवैध संतानों के प्रति उनकी आत्मीयता पर वि ार किया गया है। 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'कलिकथाःवाया बाइपास' की रखैल परंपरा पूँ ाीवादी, युग की देन है। िासमें रखैलों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाया ााता है। ये स्त्रियाँ अपनी आर्थिक कम ाोरी के कारण इनसे ाुड़ी रहती है। और धनिकों की रखैल बन कर रह ााती है। कहीं-कहीं प्यार के ााल में फांस कर उन्हें सामाािक उपेक्षा, पारिवारिक अवमानना का शिकार बनाते हैं। इनमें प ़ी-लिखी स्त्रियाँ हैं ाो प्रेम ााल में फंस कर ाीवन भर दूसरी औरत बन गई है-'अपने अपने ोहरे' की रमा, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'दिलो दानिश' की महकबानो इसके उदाहरण हैं।

विवे य उपन्यासों में रखैल की प्रवृत्ति का ित्रण हुआ है। 'दिलो दानिश' की रखैल परंपरा नवाबी वातावरण की देन है िासमें ये परंपरागत अनुकरण करते हैं और उनसे ान्मे संतानों को उनका सही हक देने का प्रयत्न करते हैं। अवैध संतानों के प्रति उनकी आत्मीयता पर वि ार किया गया है। 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'कलिकथाःवाया बाइपास' की रखैल परंपरा पूँ ाीवादी, युग की देन है। िासमें रखैलों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाया ााता है। ये

---

[220] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.106

स्त्रियाँ अपनी आर्थिक कम ोरी के कारण इनसे ुड़ी रहती है। और धनिकों की रखैल बन कर रह ाती है। कहीं-कहीं प्यार के ाल में फांस कर उन्हें सामा िक उपेक्षा, पारिवारिक अवमानना का शिकार बनाते हैं। इनमें प ़ी-लिखी स्त्रियाँ हैं ो प्रेम ाल में फंस कर ीवन भर दूसरी औरत बन गई है-'अपने अपने ेहरे' की रमा, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'दिलो दानिश' की महकबानो इसके उदाहरण हैं।

विवे य उपन्यासों में स्त्री के प्रेम की समस्या उत्पन्न हुई है। स्त्री प्रेम करती है पर सफल नहीं बन पाती। अगर सफल हो भी ाय तो विवाह के बाद अंत तक टिक नहीं पाती ैसे अंकिता इसका उदाहरण है। प्रेम की समस्या लड़कियों को यादा विद्रोही बनाती है। क्योंकि माता-पिता, अपनी परंपराओं से युक्त रहते हैं। ममता एवं कनु इसके उदाहरण हैं। कुछ विवाहित स्त्रियाँ, पति, परिवार के रुष्ठ, अवमानना भरे वातावरण से ऊब कर प्रेम करती है सोमा इसका उदाहरण है। ' ाक' की गुलबंदी को प्रेम की स ा मीत मिलती है। कारण कौन सा भी हो स्त्री को प्रेम की समस्या से ू ाना पड़ता है। इस प्रकार के शोषण का शिकार बनना पड़ता है।

अंतिम दशक के उपन्यासों में पुनरुक्ति के लेखिकाओं ने कई तथ्य खो ा निकाले हैं ि नके कारण स्त्री अपने ीवन को सही ंग से व्यवस्थिंत कर सके। पुनरुक्ति में लैंगिक समानता, सुर ा तथा प्र ानन प्रक्रिया के मुद्दे उठा कर उनमें नवनिर्माण का संकेत छोटा है। आधुनिक धरा में बहती आधुनिकताओं को स ेत किया है कि कोई भी काम करो सो ा सम ा कर सावधान से करो। तथा आत्मसम्मान को ठेस न पहुँ े।

* * *

पं म अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना और स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में)

पं ाम अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना और स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में)

5.1 आत्मनिर्भरता

- 5.1.1 अस्तित्व एवं आत्मसम्मान

5.2 स्वावलंबन

- 5.2.1 प्रगतिशील स्त्री
- 5.2.2 समान अधिकार
- 5.2.3 स्वतंत्र ोतना

5.3 मानवीय संवेदना

- 5.3.1 पारिवारिक ीवन
- 5.3.2 ीवन घुटन भरा
- 5.3.3 तलाक : एक अभिशाप
- 5.3.4 विधवा की स्थिति

5.4 स्त्री सशक्तीकरण

- 5.4.1 स्त्री सशक्तीकरण में ोतित स्त्री

पं ाम अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

(आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना और स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में)

5.1 आत्मनिर्भरता

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री अपने स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के प्रति स ाग दिखाई देती है। विवे य उपन्यासों की नायिकाएँ विवाहित हों, अविवाहित हों, तलाकशुदा या परित्यक्ता हों, विधवा हों, नौकरीपेशा हों, सभी रूपों में स्वावलंबन के प्रति स ाग एवं विद्रोही नज़र आती हैं। अपने-अपने दृष्टिकोणों से लेखिकाओं ने स्त्री के स्वावलंबन रूप को ि ात्रित किया है। स्त्री के स्वावलंबन पर रा ाी सेठ अपने वि ाार व्यक्त करती है कि-"स्त्री की ि ांता आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान के लिए होनी ाहिए न कि सामा ाक स्थिति के अभिशाप को एक ब ााव की तरह इस्तेमाल करके करुणा बटोरने की। कहना न होगा कि आत्मनिर्भर होने पर, सामा ाक स्तर पर उसकी भूमिका स्वतः बदल ाती है क्योंकि ाो ां ाा उसके पराधीन होने की वास्तविकता पर खड़ा है वह स्वतः ह ाता है और वह उनकी मर्यादाओं को अपने आप लांघ ाती है ाो एक पराधीन मानसिकता के कारण पनपती रही है, यह अतिक्रमण ही बड़े एहसासों से ाुड़ने की ामीन है और नारी लेखन के बेहतर भविष्य की भी।"[1] स्त्री

---

[1] स्त्री, सृ ान और अस्मिता बोध-रा ाी सेठ-हंस, मा ा 2000-पृ.32

स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के कारण अपनी वास्तविकता समा ा में स्थापित करने में सह ा दिखाई देती है।

"आ ा समा ा बदला है, स्त्री भी बदली है। समा ा का स्त्री के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। आधुनिक स्त्री परंपरागत दासता को तोड़कर वैयक्तिक एवं सामाि ाक विकास में अपनी सार्थकता स्थापित करने का प्रयास कर रही है।"[2] स्व के लिए अपनी अस्मिता के लिए पहले से यादा सतर्क दिखाई देती है। "अपनी स्वाधीनता के लिए किया ाानेवाला उसका संघर्ष वस्तुतः किसी राष्ट्रवादी क्रांति से भिन्न नहीं है। आत्मनिर्भरता एवं स्वाधीनता के लिए किया ाानेवाला उसका यह संघर्ष किसी रा ानीतिक क्रांति से कम रोमां ाक और ाोखिम भरा नहीं है। इसमें उसे अनेक स्थापित सामाि ाक संस्थाओं और वि ाार सारणियों से टकराना पड़ा है।"[3] और वह नियमित रूप से टकरा भी रही है। स्त्रियाँ अपनी अनिवार्यता तथा अंतरंग भूमिका पर ाोर दे रही है। विवे य कालखंड की लेखिकाओं ने स्त्री के मानवीय रूप को ि ात्रित किया है। उसके अस्तित्व को नयी पह ाान देने का प्रयत्न किया है। "यह ऐतिहासिक संयोग ही कहा ााएगा कि एक खास किस्म की हिंदी लेखिका का ान्म हुआ है ाो पिछले लेखिका से थोड़ी भिन्न है।"[4]

आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान का नारा, आर्थिक स्वतंत्रता, समानता के नाम पर कुछ हद तक ाारित्रिक स्व छंदता अपने स्वास्थ्य, अपनी कमाई के बारे में सो ाना है। प्रभा खेतान के वि ाार में "स्त्री सिर्फ कामना की वस्तु नहीं है बक्ति एक व्यक्ति और अपने बारे में समा ा से खुली बहस ााहती है। वह आत्मनिर्भर बन कर समा ा में परिवर्तन लाना ााहती है। वह आत्मनिर्भर बन कर समा ा में परिवर्तन लाना ााहती है। आर्थिक विकास ही स्वावलंबन का आधार है। इसी को आधार बनाकर स्त्रियाँ अपनी विमुक्ति का रास्ता ूँ ़ सकती है। आ ा स्त्री घर,

---

[2] भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ, डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे-पृ.25

[3] स्त्री-विमर्श की दिशाएँ, मधूरेश, समीक्षा अप्रैल- ाून 2005

[4] उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श, सुधीश प ाौरी-पृ.119

परिवार, समा ा की ा रि परंपराओं एवं मूल्यों-आदर्शों को त्यागकर तथा नये ीवन एवं मानव-मूल्यों को अपनाकर अपनी विपन्नता को मिटाने के लिए बाहर निकली है आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर।"[5] अब उसकी हर क्षेत्र में घुसपैठ हो ुकी है िससे वह स्वावलंबी बनी है। स्वावलंबन आत्मनिर्भरता के लिए स्त्री ने अनेक संघर्ष भी किये हैं। उन्हें आत्मनिर्भरता के साथ-साथ साहसी बनना होगा नहीं तो पुरुष वर्ग उन्हें फिर घर की ारदीवारी में बंद कर देगा। इस तथ्य पर तसलीमा नसरीन के वि ार प्रस्तुत हैं-" ारित्र एक बेहद मूल्यवान वस्तु है पुरुष के लिए उसे संभाले रखने की ारूरत भले ही न हो, स्त्री के लिए होती है।" अगर स्त्री बाहर नौकरी करने ाती है तो पुरुष उसे ारित्रहीन कहने से नहीं ूकेगा। स्त्री को ाहिए कि वह दृ ता के साथ, आत्मविश्वास के साथ स्वावलंबी बने। इस पर तसलीमा नसरीन के वि ार हैं-"तुम लड़की हो, तुम बहुत अ छी तरह याद रखना, तुम ाब घर की दहलीज़ पार करोगी, लोग पीछा करेंगे, सीटी ब ाएँगे। तुम ाब गली पार कर मुख्य सड़क पर पहुँ ोगी, लोग तुम्हें ारित्रहीन कहकर गाली देंगे। अगर तुम नि ीव हो, तो तुम पीछे लौटोगी, वरन, ैसे ा रही हो, ाओगी।"[6] हर संघर्ष का सामना करते हुए अपनी बनाई हुई राह पर लते ाना, यही निर्णय स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, सुरक्षा और विकास का मूलमंत्र है। स्त्री का आर्थिक आधार पर निर्भर है। इससे स्त्री-समा ा को उभरना पड़ेगा।

"आत्मनिर्भर होने की परिभाषा है स्वयं के बुद्धि-विवेक का उपयोग न कि पुरुषों के समक्ष आर्थिक सक्षमता।"[7] और स्त्री स्वतंत्रता पर केंद्रित करता है। विश्वविख्यात फ्रें ा लेखिका सीमोन द बोउवर के वि ार में-"स्त्री-स्वाधीनता का अर्थ हुआ कि स्त्री पुरुष से िस पारंपरिक संबंध को निभा रही है उससे मुक्त हो।

---

[5] औरत के हक में, तसलीमा नसरीन-पृ.81

[6] औरत के हक़ में, तसलीमा नसरीन-पृ.82

[7] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.129

हम स्त्री पुरुष के बी ा घटनेवाले संबंध को नहीं नकार रहे। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व होगा और वह पुरुष की होकर भी ाीएगी। दोनों अपनी-अपनी स्वतंत्रता में दूसरे का अनन्य रूप भी देखेंगे। संबंधों की पारस्परिकता और अन्योन्याश्रितता से, ााह, अधिकार, प्रेम और आमोद प्रमोद के अर्थ समाप्त नहीं हो ााएंगे और नहीं समाप्त होंगे दो स्ँवेगों के बी ा के शब्द देना, प्राप्त करन, मिलन होना, बल्कि दासत्व ाब समाप्त होगा और वह भी आधी मानवता का, तब व्यवस्था का यह सारा ोंग समाप्त हो ााएगा। स्त्री-पुरुष के बी ा का विभेद वास्तव में एक महत्वपूर्ण नई सार्थकता को अभिव्यक्त करेगा।"[8]

4.1.1 अस्तित्व एवं आत्मसम्मान

अंतिम दशक के उपन्यासों में लेखिकाओं ने ऐसी नायिकाओं का ित्रण किया है ाो आत्मसम्मान के लिए आत्मनिर्भर रहते हुए अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए कई संघर्षों का सामना करती है।

आत्मनिर्भरता स्त्री को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवर्तित समा ा तथा आर्थिक विफलता के कारण परिवार का दायित्व निभाने के लिए स्त्री नौकरी पेशा हो रही है। आधुनिक युग में भौतिक सुख समृद्धि के लिए मनुष्य, मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करने लगा िससे उसका पतन हो रहा है। आपसी संबंधों में खोखलेपन और अकेलेपन तथा कुंठा ने स्थान ले लिया है। आ ा मध्यवर्गीय परिवारों में घर की स्त्रियाँ कामका ा के साथ घर के दायित्वों को भी निभा रही है। परिवार में ब ़ते हुए आर्थिक दबाव ने स्त्री की मानसिकता को बदला है। अंतिम दशक की स्त्री अर्थोपा िन के लिए कई समस्याओं का शिकार होती है। अकेले नौकरी करते समय आवास की समस्या, विवाहित स्त्री को पति की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। नौकरी करते समय आवा ाई तथा छिटाकसी की समस्या, विधवा होने पर ब ों के पालन-पोषण की समस्या के साथ

[8] स्त्री-उपेक्षित, सीमोन द बोउवर, प्रभा खेतान-पृ.386

ही परिवार उससे यह भी उपेक्षा करता है कि वह अपने घरेलू दायित्वों का भी पूर्ण निर्वाह करे। स्त्री को परिवार के प्रति दोहरे कर्तव्य को पूरा करना पड़ता है। स्त्री घर तथा बाहर दोनों मो ों पर सक्रिय और व्यस्त रहती है। उसे आराम नहीं मिल पाता। विवे य उपन्यासों में स्त्री प ़ी-लिखी नौकरी पेशा तथा उद्योगशील भी ित्रित हुई है। वह अपने परिवार की मदद के लिए नौकरी करती है। इन उपन्यासों में स्त्री की स्थिति आर्थिक ेतना से ागृत है। वह अपने आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता, कैरियर के लिए, अपनी स्वयं के अस्तित्व-अस्मिता के लिए स्वानुभूति, स्वाभिमान के लिए, ीविका के लिए आर्थिक समस्याओं का सामना कर रही है।

कृष्णा बिहारी के वि ार में-"वर्तमान परिवेश में शादी से ब ़कर स्त्री आर्थिक सुरक्षा ाहती है, िससे वह िंदगी की विकट-से-विकट समस्या पर दो टूक निर्णय ले सके, अपेन नी े एक पक्की मीन पा सके, अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सके।"[9]

'छिन्नमस्ता' में प्रिया आत्मनिर्भर होने के लिए नौकरी करना ाहती है। प्रिया व्यवसाय कर, परिवार की मदद करना ाहती है। मारवाड़ी समा ा नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय, कारोबार में अपना लक्ष्य केंद्रित करते हैं। प्रिया भी मारवाड़ी परिवार से संबंधित होने के कारण ामड़े का व्यवसाय करती है। वह अपने काम में इतनी व्यस्त हो ाती है कि घर परिवार पर ध्यान नहीं दे पाती है। अपने कारोबार को ब ़ाने के लिए निष्ठा से काम करती है। पति नरेंद्र को उसका कारोबार ब ़ाना अ छा नहीं लगता। वह सीमित परिधि में ही उसे कारोबार करने की हिदायत देता है। पत्नी की प्रतिभा देखकर पति ईर्ष्यालु हो ाता है। पत्नी के विकास को अवरुद्ध कर, स्त्री को वि ायी होते देख नहीं सकता। पर प्रिया अपने आपको आत्मनिर्भर कर आत्मसम्मान, स्वानुभूति, स्वाभिमान के साथ ीविका

[9] कृष्णबिहारी मिश्रु, आधुनिक सामाि ाक आंदोलन और आधुनिक हिंदी साहित्य-पृ.28

ीना ाहाती है। पति उसकी उपेक्षा करता है उसके कारोबार में विघ्न डालने की कोशिश करता है। ाब प्रिया व्यवसाय के लिए शिकागो की प्रदर्शनी के लिए विदेश ानेवाली होती है तो नरेंद्र उसे रोकने की कोशिश करता है। प्रिया का आत्मनिर्भर होना उसे बर्दाश्त नहीं होता। उसकी उपेक्षा करते हुए कहता है- "दरअसल तुम्हें इतनी खुली छूट देने की गलती मेरी ही थी। मु े पहले ही िाड़िया के पंख काट डालने ाहिए थे। पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया तुम्हारे इस भोले ेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का ेहरा है... तुम केवल मन लगाने के लिए आत्मविश्वास की कमी के लिए काम करना ाहती थी।"[10] प्रिया कहती है-"नरेंद्र मैं व्यवसाय रुपये के लिए नहीं कर रही हूँ, ार साल पहले ाब मैंने पहले-पहल काम शुरू किया था, मु े रुपयों की भी ारूरत थी। पर आ ा मेरा व्यवसाय मेरी आइडेंटिटी है।"[11] "क्या महत्वाकांक्षी होना अपराध है। ... िांदगी ीने के लिए अपनी लड़ाई लड़नी पड़ती है। यदि औरत व्यवस्था के बाहर कदम ब ़ाती है तो उसे यादा बड़ी कीमत ुकानी पड़ेगी।"[12] स्त्री का कोई स्वाभिमान नहीं? अपनी आइडेंटिटी, व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रिया अपना व्यवसाय ब ़ाती है िासके कारण प्रिया का दाम्पत्य ीवन हमेशा के लिए टूट ाता है। नरेंद्र प्रिया के आत्मसम्मान को अहं की संज्ञा देता है। प्रिया व्यवसाय के लिए पारंपरिक सीमाओं को तोड़ती है। सो ाती है-"स्त्री यदि सीमाएँ लाँघ ाए तो वह पारंपरिक समा ा उसके लिए खत्म हो ाता है।"[13] और अपने अस्तित्व के लिए समा ा परिवार से विद्रोह करना पड़ता है। प्रिया आत्मनिर्भरता के लिए कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पारिवारिक, सामाि ाक शोषण की शिकार भी बनना पड़ता है।

---

[10] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.11-12

[11] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.10

[12] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.188

[13] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.210

‘आओ पेपे घर ालें’ की प्रभा भी आत्मनिर्भरता के लिए अमेरिका ाली ाती है। प्रभा की माँ प्रभा के आत्मनिर्भरता की ोतना को देख उसका विवाह उसकी बड़ी बहन से पहले करना ाहती है। बड़ी बहन डॉक्टर है इसी कारण माँ उस पर फक्र करती है। प्रभा को घर में मान-सम्मान नहीं मिलता। कलकत्ता नौकरी करने के लिए सो ाती है-"आर्थिक स्वतंत्रता मेरी पहली ारूरत है। कलकत्ता लौटकर अपने पैरों पर खड़ा होना है। हेल्थ क्लिनिक खोलूँगी, पर कैसे? पहले ट्रेनिंग तो पूरी करूँ।"[14]

घर की आर्थिक विपन्नता के कारण प्रभा आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर होना ाहती है। पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक दशा और भी खराब हो ाती है। पैसे कमाने के लिए वह अमेरिका ाती है। समा ा में स्त्री दोहरे वि ाार से ग्रस्त रहती है। प्रभा की स्थिति भी ऐसी ही है।

‘अपने-अपने कोणार्क’ की कुन्नी आत्मनिर्भर स्त्री है। अपने परिवार को संभालती है। परिवार की आर्थिक कम ोरी के कारण वह अपने आप पर भी ध्यान नहीं देती। आत्मनिर्भर बन अपने भाई-बहनों को प ़ा-लिखा कर उनका विवाह भी संपन्न करवा देती है। अपने ीवन तथा विवाह के प्रति ध्यान नहीं देती।

‘कठगुलाब’ की सभी स्त्रियाँ आत्मनिर्भर हैं। ये शिक्षित एवं स्वावलंबी हैं। आत्मनिर्भरता के कारण विद्रोही भी हैं और अपने ीवन को आत्मसम्मान से ीना ाहती हैं।

शिक्षा और आत्मनिर्भरता के कारण स्त्री की मानसिकता में भी परिवर्तन होता है। वह स्वतंत्र होने की दिशा में प्रेरित होती है। इसी स्वतंत्रता की भावना ने स्त्री को आत्मनिर्भर बनाया है। वह अब पारंपरिक रू ़िगत मान्यताओं को स्वीकार नहीं करती साथ ही सामा िक रिश्तों-नातों को भी ठुकराती है ैसे स्मिता, मरियान, अमेरिका में ‘रॉ’ में लांछित, प्रताड़ित स्त्रियों के लिए काम

---

[14] आओ पेपे घर ालें, प्रभा खेतान-पृ.160

करती हैं। इन्होंने स्वानुभूति, स्वाभिमान के लिए ‘गोधड’ को अपना कार्यक्षेत्र ुना है। असीमा भी नौकरी के साथ-साथ गोधक का कार्यभार संभालती है।

असीमा की माँ अपने पति से अलग रहकर आत्मनिर्भर बनती है। असीमा की माँ आधुनिक फैशन परस्ती को नहीं अपनाती िसके कारण उसका पति उसे छोड़कर ाला ाता है। उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वह आत्मनिर्भर रहती है। आत्मनिर्भर होने के कारण अपने ब ों के परिवेश के लिए पति से किसी प्रकार का आर्थिक सहारा भी नहीं ाहती। वह कहती है-"मेरे सिद्धांत मु े ऐसे पति से एक पैसा लेने की इ ा ात नहीं देते, ो किसी और का पति बन ुका हो।"[15]

इस उपन्यास की नर्मदा ो अशिक्षित है, माँ के मरने के बाद आर्थिक सहारे के लिए ूड़ी के कारखाने में नौकरी करती है। और पहले असीमा की माँ का कपड़े सीलने में हाथ बंटाती है। असीमा की माँ दर्ािन से विख्यात बुटीका ‘सलीका’ की अपने आत्मविश्वाास से मालकिन बनती है। ये स्त्रियाँ आत्मनिर्भर और आर्थिक क्षमता के लिए मेहनती और परिश्रमी हैं। िन्होंने सामाािक, पारिवारिक शोषण को सहते हुए विद्रोह किया है। अपनी आत्मपीड़ा को ेलते हुए आत्मसम्मान का ीवन बिताने की कोशिश की है।

‘एक ामीन अपनी’ की अंकिता आत्मनिर्भर स्त्री है। नौकरी के लिए उसे अकेले रहना पड़ा है। अकेले रहते समय उसे कई सामाािक, आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। आर्थिक समस्या के कारण अंकिता ाार-पाँ ा ट्यूशन्स लेती है। इसी कारण वह फिल्मरस में भी आती ाती रहती है। आर्थिक प्राप्ति के लिए वह घर परिवार से भी दूर रहती है। उसे बेटी के विवाह के लिए पैसों की िंता लगी रहती है। आर्थिक अभाव के कारण ये स्त्रियाँ आर्थिक समस्याओं का शिकार हो गई है।

---

[15] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.167

‘आवां’ में नमिता आत्मनिर्भर बनने के लिए कई संघर्ष करती है। नौकरी की तलाश में भटकती है। उसकी माँ भी शाहबेन के श्रम ाीता संस्था में पापड़ बेलती है। आर्थिक अभावों की ि म्मेदारी नमिता पर सौंप कर किनारे हो लेती है। नमिता के पिता लकवा ग्रस्त हैं। उसकी माँ उसके पैसों से संबंध रखती है। हमेशा उसकी उपेक्षा करना, ि ड़कियाँ, भर्त्सना, ेतावनियाँ, सुनते, ेलते ाीवन का अनिवार्य अंग बन ाता है। शोषण के ये ि त्रण मध्यवर्गीय परिवार में अक्सर दिखाई देते हैं। परिवार में ब .ते हुए आर्थिक दबाव के कारण स्त्री की मानसिकता भी बदल ाती है। मानसिक तनाव स्त्री के व्यक्तित्व को नष्ट कर देता है। यही समस्या नमिता की माँ की है ि सका व्यक्तित्व मानसिकता के कारण कटु, कुंठित, त्रासद हो गया है।

‘ऐ लड़की’ की सूसन आत्मनिर्भर स्त्री है वह अम्मू की देखभाल के लिए नर्स बन के आती है। और आत्मनिर्भर रहने के लिए नर्सिंग में दाखिला लेना ाहती है। अपनी कमाई से माता-पिता को पैसे भे ाती है। भाई बहनों को प .ा-लिखा कर उनकी शादी करवा देती है। अपने विवाह के बारे में नहीं सो ाती। आर्थिक समस्या के कारण सूसन घर से बाहर नौकरी करती है। अपने परिवार-घर, भाई-बहनों का पोषण करती है। अम्मू कहती है-"अपने लिए कोई लड़का नज़र में है? ूँ .ने का काम तुम्हें खुद करना होगा। नहीं अम्मा ी अभी नहीं। मैं नसिंग में दाखिला लूँगी।"[16] नौकरी करने वाली युवतियों के समक्ष विवाह की समस्या खड़ी हो ाती है। परिवार वाले भी आर्थिक अभाव के कारण इस दिशा में सो ाते नहीं कि लड़की अविवाहित है और उसकी उम्र ब .ं रही है। ऐसी युवतियों को स्वयं ही वर तलाशना पड़ता है। अम्मु सूसन को विवाह के बाद रहने की सीख देती है-"सूसन शादी के बाद किसी के हाथ का ुन ुना नहीं बनना।

[16] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.53

अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना।"[17] आत्मनिर्भरता के साथ स्वाभिमान को भी बनाने की बात करती है अम्मु।

अंतिम दशक के उपन्यासों में आत्मनिर्भर स्त्री की हर समस्या का ित्रण करने में स ाग दिखाई देती हैं। कृष्णा सोबती अम्मु के माध्यम से कहलवाती है- "स्त्री का वक्त तब सुधरेगा ाब वह अपनी ीविका आप कमाने लगेगी।" यानी स्त्री ाब आत्मनिर्भर होगी तभी सभी समस्याओं का अंत होगा।

5.2 स्वावलंबन

स्वावलंबी स्त्री के प्रति समा ा का दृष्टिकोण सह ा नहीं होता। पुरुष सत्ता समा ा स्त्री की प्रगति नहीं ाहता। उसे हमेशा की तरह वंशानुसार दमित, शोषित, उपेक्षित, प्रताडित, अपमानित करते रहना ाहता है। परंपरा की आड़ में आडंबर, अंधविश्वास की आड़ में कई समस्याओं को उत्पन्न कर देता है िासे वह ू ाती हुई विद्रोह बन ाती है। स्वावलंबन की राह में ालते हुए स्त्री कहीं-कहीं समा ा-परिवार के साथ-साथ अपने आप का भी नुकसान कर बैठती है। परिवार में समानाधिकार की मांग करनेवाली, परंपरागत ालते रूि ग्रस्त संस्कारों का विरोध करती हुई, स्वतंत्र ेतना रखनेवाली, पति को त्यागकर प्रेमी या परपुरुष से संबंध रखनेवाली, कुछ स्त्रियाँ पति के साथ रहते हुए भी अन्य पुरुषों से संबंध स्थापित करने वाली होती है। घर-परिवार को, पति को छोड़कर स्वतंत्र ीवन बितानेवाली स्त्रियाँ स्वावलंबन तथा विद्रोही स्त्री के अंतर्गत आती हैं। अंतिम दशक की स्त्रियाँ आधुनिक रूप में व्याख्यायित हुई है। ये स्त्री संहिताओं को तोड़कर नयी राहों पर ाल पड़ी है। प्रा ीन काल की स्त्रियों की समस्याएँ कुछ हद तक कम थीं। पर ैसे- ैसे स्त्री स्वावलंबन तथा विद्रोही, शिक्षित हुई है उसके समक्ष समस्याएँ भी उतनी ही ाटिल और असहनीय हो गई है। आधुनिक स्त्री दोहरी समस्याओं का सामना कर रही है। पहले वह घर के

[17] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.53

कामका ा में ही पिसती थी आ ा के युग में नौकरी करते हुए अपने परिवार की ि ाम्मेदारियों को निभाते हुए पिस रही है। अंतिम दशक की स्त्रियाँ नौकरीशील हैं ाो बाहर तथा घर की समस्याओं से ू ा रही हैं। ये स्त्रियाँ अपने स्वानुभूति तथा आत्मनिर्भरता के लिए कोई भी कदम उठाने के लिए तैयार है। अपने वि ाारों को अपने ाीवन पर हावी न कर विद्रोही बनती हैं।

5.2.1 प्रगतिशील स्त्री

'छिन्नमस्ता' की प्रिया स्वावलंबी स्त्री है शादी के पंद्रह साल बाद भी पति का व्यवहार, उसके प्रति हीन तथा उपेक्षा भरा रहता है। पति के सो ा-वि ाार में प्रिया को कोई भी परिवर्तन नहीं दिखाई देता। वहीं दमित रखने का स्वभाव, अपमान, प्रताड़ना, इन सबसे प्रिया ऊब ााती है और नरेंद्र से तलाक लेकर व्यापार करने विदेश ाली ााती है। दाम्पत्य ाीवन में शारीरिक ही नहीं मानसिकत रूप से भी ाुड़ना आवश्यक हो ााता है। पति ने केवल उसे भोग्या एवं वस्तु ही सम ाा ि ासके कारण प्रिया स्वतंत्र ाीवन ाीना ााहती है। वह कहती है-"आ ा मेरा व्यवसाय मेरी आइडेंटिटी है। यह आए दिन की विदेशों की उड़ान... यह मेरी ि ांदगी के कैनवस को बड़ा करती है। नित्य नये लोगों से मिलना- ाुलना ाीवन के कार्य ागत को सम ाना। मु ो ि ांदगी उद्देश्यहीन नहीं लगती।"[18] प्रिया की माँ कस्तूरी के भी स्वावलंबी वि ाार स्पष्ट होते हैं। पति की मृत्यु के बाद कस्तूरी दुःखी होती है। वह ब ों के लिए पति मारे ााने पर कोर्ट-क ाहरी के ाक्कर लगाना बेकार सम ाती है। वह अपने देवर से कहती है-"मैं अब अपने ब ा ों का पेट भरूँ याफिर घर-द्वार बे ाकर मामला-मुकदमा लड़ूँ? ... मामला-मुकदमा के लिए भी तो रुपए ााहिए? मैं घराने की बेटी हूँ कोई, देहातन नहीं। मु ो अपने ब ों को पालना है। मेरा अनमोल रतन लौटेगा तो नहीं? कसाइयों से बदला लेने के लिए मु ो कोट-क ाहरी में पैसा नहीं फुँकना।"

[18] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.10-11

स्वावलंबन के कारण कस्तूर प्रगतिशील वि ार रखती है। प्रिया की छोटी सास की बेटी नीना भी स्वावलंबन की वि ारधारा रखती है। वह आत्मनिर्भर होकर शादी करना ाहती है। प्रिया भी तलाक होने के बाद बेटे सं ु को नरेंद्र के पास ही छोड़ आती है और सो ाती है "केवल स्त्री ही अपनी आहुति दे सकी है। मगर क्यों? किसलिए! इसलिए कि आदिकाल से देती आई है? लेकिन ओह! मैं क्या करूँ? मेरे संस्कार अलग हैं। मैं सं ू के सहारे िंदगी नहीं बिता सकती। न ही पति या बेटा या प्रेम ही, िंदगी के सहोर हो सकते हैं।"[19] एक स्त्री को स्वावलंबी बनते देख समा ा उसे हीन भाव से देखता और समा ा, परिवार, सभी उसे गुनाहों के बो ा से लाद देते हैं।

आधुनिक युग में स्त्री के प्रति सामाि ाक दृष्टिकोण में परिवर्तन तो अवश्य आया और साथ ही स्त्री स्वयं ही अपनी लड़ाई की संकल्पना शक्ति से भरी हुई है। किंतु अभी भी यह ागरूकता और संघर्ष प्रारंभिक दौर में ही है और कुल मिलाकर आ ा की स्त्री को भोगवादी दृष्टि में ही देखा ाता है। आधुनिक स्त्री अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष के मार्ग पर है।"[20]

'आओ पेरे घर ाले' में कैथी स्वावलंबी वि ार वाली स्त्री है। वह माँ बनने पर वि ार करते हुए कहती है-"नहीं, अभी तो नहीं। आदमी अपने-आप को ाब ैसा ाहे आत्मसम्मोहित करके ी सकता है।"[21] इसी तरह 'माई' की सुनैना माँ बनना नहीं ाहती। वह कहती है नहीं मैं कभी माँ नहीं बनूँगी। वह अपनी माँ ैसा घुटन भरा ीवन ीना नहीं ाहती है। 'एक ामीन अपनी' की अंकिता प्रेम-विवाह करके भी सफल नहीं हो पाती है। पति का व्यवहार उपेक्षा भरा रहता है। मारपीट उपेक्षा के कारण तथा अपने स्वावलंबी व्यक्तितत्व के कारण तलाक का

---

[19] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.170-171
[20] बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों के उपन्यासों में ि ात्रित स्त्री-विमर्श, अभिषेक दुबे-पृ.216
[21] आओ पेपे घर ालें, प्रभा खेतान-पृ.106

रास्ता अपना लेती है। वह रोती गिड़गिड़ाती नहीं। परंपराओं की ां ीरों को तोड़कर स्वावलंब का ीवन ीती है। अंकिता स्त्री की स्वतंत्रता के बारे में कहती है स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि वह अंग प्रदर्शन करे। वह अपनी सहेली नीता से कहती है-"प्रतिक्रिया प्रकट करने का उसे पूरा अधिकार है... और करना ाहिए... अपने कमरे के भीतर आप नंगे रहिए, कौन आँकने, देखने आता है, किसे आपत्ति हो सकती है। मगर घर से बाहर आप मात्र एक व्यक्ति नहीं होते... समा ा होते।"[22] यहाँ अंकिता अपनी सहेली नीता ो मॉडलिंग करती है उसके अंग प्रदर्शन पर उसे स ोत करती है। 'ऐ लड़की' की अम्मू स्वावलंबी वि ारों को अपनी बेटी पर ाहिर करती है। माँ के वि ार बेटी को भी स्वावलंबी बनाते हैं। अम्मु अपनी बेटी से कहती है-तुम किसी के अधीन नहीं। स्वाधीन हो। लड़की यह ताकद है। सामर्थ्य। शक्ति। सम ा रही हो न?"[23] आगे अम्मू कहती है-अपने लिए दुःख नहीं मनाना। निराशा को परे ही रखना। तुम्हारे लिए निश्ि ंत हूँ। न तुम सताई ा सकती हो और न किसी को सताती हो। हाँ सो ाकर बताओ कि ारूरत पड़ने पर आवाज़ किसे दोगी?"[24] इस पर बेटी के स्वावलंबी वि ार दिखाई देते हैं। वह कहती है-"मैं किसी को नहीं पुकारती। ाो मु ो आवाज़ देगा, मैं उसे ावाब दूँगी। अम्मू अब तो तसल्ली है।"[25] अम्मू अपनी नर्स सूसन को विवाह के बाद स्त्री को कैसे रहना ाहिए, सम ाते हुए कहती है-"सूसन शादी के बाद किसी के हाथ का ुन ुना नहीं बनना। अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना।"[26] यहाँ सूसन भी ीवन में आगे ब .ने की बात कहती है-"नहीं अम्मी ी,

[22] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.106
[23] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.50
[24] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.49
[25] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.49
[26] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.53

अभी नहीं। मैं नर्सिंग में दाखिला लूँगी।"[27] अम्मु तथा सूसन स्वावलंबी वि ारधारा रखती है आत्मनिर्भरता से ीवन ीना ाहती है।

'आवां' में सुनंदा स्वावलंबी वि ार वाली युवती है। वह एक मुसलमान युवक सुहैल से प्रेम करती है। उसके ब े की माँ भी बनती है विवाह करने के लिए धर्म-परिवर्तन करना नहीं ाहती। इसी व ह से सांप्रदायिक फसाद का कारण बनती है। कई विषमताओं का शिकार होना पड़ता है। नमिता ाब उससे कहती है-"सुहैल को तुम प्यार करती थीं, इस्लाम कबूल कर लेने में क्या दिक्कत थी।"[28] इस पर सुनंदा कहती है-"प्रश्न यह था दीदी, कि मैं औरों की सुख से तुष्टि के लिए अपने स ा को घोंट दूं या अपने 'स्व' के संरक्षण के लिए उसके उगने को देह धरने दूँ, उसे एक पूरी की पूरी काया ग्रहण करने दूं... सुहैल ने प्रेम करने के समय तो कोई शर्त नहीं रखी? ब्याह करना होगा तो उससे नहीं, इस्लाम से करना होगा... या उसे हिंदुत्व से? और वह कहती है-स्पष्ट कहा था मैंने-माँ को मना लूंगी ालो, हम कोर्ट मैरि ा कर लें, दोनों ओर के आडंबरों से मुक्त। माना नहीं, ो शर्त पहले शर्त नहीं थी, बाद में क्यों शर्त बने। सम ौते को मैं भी रा ी नहीं हुई। मु े लगा, दीदी, सम ौते 'आदि' तो होते हैं, 'अंत' नहीं।"[29] आगे वह कहती है-कुंआरी माँ की ा ाकी का हक लड़ने से पहले वे सांप्रदायिक उन्माद को खत्म करने की लड़ाई लड़े वरना सब बरबाद हो ाएगा। खोली-खोली के भीतर घुसकर हिंदु-मुसलमान औरतों को इतना ागरू कर दें कि वे अपने घरों में उन्मादी मर्दों के हाथों से उनकी कटारें छीन लें। उनकी संदिग्ध गतिविधियों को ेतावनी दे दें कि अगर उन्होंन भड़का-भड़काई के माहौल में हिस्सा लिया तो ध्यान रखें-अपने घर-परिवार से हाथ धो बैठेंगे-ब ों समेत वे

---

[27] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.53

[28] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.111-112

[29] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.112

आत्मदाह करेगी।"[30] इसमें सुनंदा का धर्म-परिवर्तन न करना, सांप्रदायिक फसाद को मिटाना, कुवारी माँ बनना, अपने 'स्व' के सक्षण के लिए अपना अस्तित्व मिटाना सभी बातों में प्रगतिशील वि ार दृष्टिगत होते हैं। नमिता भी आधुनिक वि ार रखती है वह भी प्रेम को श्रेष्ठ मान कर कुंवारी सं ाय कनोई के ब े की माँ बनने को तैयार हो ाती है। और पित के अंतिम संस्कार के समय समा ा से परिवार से विद्रोह कर पिता की अंतिम इ छा को पूरा करने के लिए विधि-विधान से पिता का अंतिम संस्कार के कार्यक्रम को निभाती है। पिता को मुखाग्नी देती है।

'अल्मा कबूतरी' की अल्मा ने परंपराओं की ाकड़बंधी को तोड़कर स्वावलंबन की राह पर ालने के लिए कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। शिक्षित होने पर भी क ा तथा कबूतराओं के संघर्श का ारा बनी। पिता मरने के बाद उसे ानवरों से भी बेहतर ीवन ीना पड़ा। अल्मा समा ा की अमानवीय विषमताओं का शिकार बनी। रा ानेता अपनी प्रतिष्ठा के लिए उसे इस्तेमाल करना ाहते हैं। उसे भूखे ानवरों के सम ा ारा बनाकर अपना उल्लू सीधा करना ाहते हैं। उसे दांव पर लगाया ाता है। शारीरिक, मानसिक अत्या ार, मानसिक उत्पीड़न तथा तरह-तरह के शोषणों का शिकार हो कर अल्मा अपने मन-मस्तिष्क को कटु बना लेती है। शोषणों तथा समस्याओं से ू ाती हुई अंत में प्रदेश के समा ा कल्याण मंत्री श्रीराम शास्त्री से विवाह कर उसका बांया हाथ बन ाती है। श्रीराम शास्त्री की हत्या होने पर अल्मा स्वावलंबी स्त्री है प्रकति की राह पर ालने का सबूत देती है। वह स्वयं पति को मुख्याग्नी देती है ि ससे समा ा, पंडित, ामा हुई ानता अवाक् रह ाती है उसे कई उपेक्षाओं से नवा ा ाता है। "श्रीराम शास्त्री के निधन के कारण खाली हुई बवीना विधान सभा सीट के लिए सत्तारू , पार्टी की ओर से श्रीराम शास्त्री की निकटतम सहयोगी और

---

[30] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.112

निष्ठावान गाइड अल्मा उम्मीदवार होंगी।"[31] अल्मा प्रदेश के समा ा कल्याण मंत्री के पद की उम्मीदवार बन ाती है। "अल्मा रथ में बैठी अपने इ छा मार्ग पर ा रही है।"[32] "...सो ा रही है मेरे भीतर आस का एक नन्हा सा पंछी फड़फड़ाया करता है कितनी बार पंख कटे, कितनी बार घायल हुआ, वह मरता नहीं। फिर-फिर फड़फड़ाता है। और उड़ने की कोशिश करता है। ऊँ ो से ऊँ ा उड़ने की। यह डरता भी नहीं।" अल्मा सामान्य से ऊँ ाई तक पहुँ ाने का प्रयास करती दृष्टिगत होती है। इस दशक की स्त्री समस्याओं से डर कर आत्मदाह नहीं करती उन परिस्थितियों का सामना कर ीवन अपनी राह पर ाल कर ीती है। यही स्थिति कठगुलाब में दर्शायी गयी है। स्त्री बलात्कार से पीड़ित है, पति के शोषण, अपमान, अवमानना तथा उपेक्षित-प्रताड़ित समा ा से बहिष्कृत फिर भी अपने राही को खुद तलाश कर ीवन के संघर्षों, समस्याओं को ेलकर एक ऐसी संस्था से ुड़तती है ाहाँ ऐसी अनेक स्त्रियाँ ामा हैं ाो समा ा से, परिवार से, पति से शोषित हुई हो। पति से ठगी गई स्त्रियाँ, धोका खानेवाली स्त्री हमारे भारतीय समा ा में ही नहीं पाश ाात्य समा ा एवं संस्कृति में भी अनेकानेक स्त्रियाँ पुरुष सत्ता द्वारा शोषित हुई है, मारियान भी ऐसी ही पात्र है ाो पति से ठगी, छली गई है वह उसे छोड़कर अपनी राह स्वयं बनाती है। अपनी आकांक्षाओं, इ छाओं को सफल बनाने में रिलीफ फॉर एष्यू ड विमेन 'रा' नाम की संस्था से ुड़ कर अपनी तरह ठगी, अपमानित, उपेक्षित-प्रताड़ित स्त्रियों को सहयोग देती है। यही कार्य स्मिता, असीमा गोदड संस्था से ुड़ कर अपनी ैसी स्त्रियों को शिक्षा देती है। सामाि ाक कट्टरता से, विषमताओं से, लड़ने का साहस ुटाती है।

' ूला नट' की शीलो गाँव की तथा ाट समा ा की स्त्री है फिर भी वह स्वावलंबी वि ाारधारा वाली है। गाँव की गवार, संस्कारवान परंपरा का खंडन कर

---

[31] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.390
[32] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.382

प्रगति की राह पर ालती है विद्रोही बनती है। शीलो आधुनिक युग की स्वावलंबी स्त्री का रूप है ाो शोषण अत्या ाार के कारण आत्महत्या नहीं करती। अपने भाग्य को ही बदल डालती है। नव-विवाहित शीलो की पति त्यागकर शहर में अपना दूसरा घर बसा लेता है ओर उसकी उपेक्षा करता है ि ासके कारण शीलो को दुःख होता है वह घूट-घूट कर ाीने भी लगती है पर सास के प्रोत्साहन से सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए विद्रोही बन ााती है। हालात को देखते हुए देवर बालकिशन से संबंध बना लेती है और सास ाब दुबारा ब्याह करने के लिए कहती है तो वह साफ इन्कार कर देती है। "न। बछिया-मछिया कुछ नहीं।"[33] सास से कहती है-"अम्मा ाी सात भाँवरे, आंगिन सा छी और बरातियों के आगे व ान भरकर संगी मु ो त्याग गया तो अछिया-बछिया का क्या विश्वास करूँ?"[34] शीलो कहती है बछिया नहीं हुई तो क्या ब्याह नहीं र ाा गया। गाँव, समा ा ााति त्यागी हुई का पुनर्विवाह करना ाहते हैं। बछिया का पता खाना ाहते हैं ये समा ा कोन होता है। गठबंधन करने वाला। ाूठी परंपरा, ाूठी मान-मर्यादा इन को ठोने से क्या मिला, अपमान, फब्ती और गालियाँ। छोड़ देती है बिरादरी, त्याग देती है पूरा पड़ोसी। खारि ा कर देती है गाँव। सिर्फ प्रेम की अन्नत माया में खो ााती है और समस्याओं से डटकर संघर्ष करती है।

ये स्त्रियाफँ इस बात में विश्वास रखती हैं कि मन का संतोष प्राप्त करने के लिए विवाह भी यदि बाधक बने तो उसे निःसंको ा तोड़ देना ाहिए क्योंकि देखा गया है कि विवाह प्रायः स्त्रियों की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधक बनता है। ाो स्त्रियाँ स्वतंत्र विकास करना ाहती हैं, उनके लिए विवाह उसी प्रकार बाधक होता है, ौसे कि काग ाों को स्वतंत्र उड़ने से रोकने के लिए पेपरवेट।"[35] शीलो इसका अ छा उदाहरण है।

---

[33] ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.75
[34] ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.114
[35] स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम, डॉ.ऋषभदेव शर्मा, डॉ.गोपाल शर्मा-पृ.170

परिवार समा ा, ाति किसी की परवाह नहीं। इस पर बालकिशन सो ाता है-"रद्द की हुई औरत अब बिरादरी से रद्द। ुड़ैल राक्षसी बदकार... कमाल है, शीलो को परवाह नहीं। निंदा का अर्थ क्या है? उसने सो ाना छोड़ दिया है, क्योंकि शबाशियों ने उसकी िांदगी तबाह कर दी। फब्ती और गालियाँ ही असलियत से मुठभेड़ करती हुई धूल ाड़कर उठती थी। बार-बार मौत से भी कठोर स ाा है, अपमान... ही... अपमान... अवज्ञा ही अवज्ञा।"[36] इन सब का खंडन कर शीलो स्वावलंबन की राह पर ालती है अपने आत्मसम्मान के लिए किसी से भी भीड़ ााने को तैयार रहती है। अपने स्वयं के बनाये नियमों पर ालती है। आधुनिक वि ारधारा वाली शीलो बालकिशन को भी आधुनिक बनने को कहती है-"बुरे की बात नहीं। मैं तो यह कहती हूँ कि हल हाँकते हो, इसका मतलब यह तो नहीं कि बू े हो गए। धोती-कुर्ता ही पहनोगे... िनगांव से कमी ा-पैंट काहे नहीं सिलवा लाते। और देखो, मूँड पर उस्तरा फिरवाने की ारूरत नहीं। हमें नहीं सुहाती घुटी मुड़ी। तिरछी माँग काठकर ुल्फें..."[37]

'यामिनी कथा' की यामिनी स्वावलंबी वि ारों वाली है वह पति की मृत्यु के पश ाात् सामाािक और आर्थिक सहारे के लिए निखिल से पुनर्विवाह करती है। सास ाब इस संबंध को मना करती है तो यामिनी सास से स्पष्ट शब्दों में कहती है-"अब तक की सारी िांदगी मैंने सबका ध्यान ही रखते हुए बिताई माँ ाी और अपनी ड्यूटी ब ााने में भी कभी किसी तरह की लापरवाही भी माँ बरती... यहाँ तक कि इस ड्यूटी से अलग अपने सुख-दुःख नाम की भी कोई ाीज़ होती है, कभी ध्यान ही नहीं आया।"[38] इस कथन से स्पष्ट होता है कि यामिनी रू ि-परंपरा में फँसकर अपना विधवा ाीवन नहीं बिताना ाहती है। वह समा ा की विषमता तथा आर्थिक विपन्नता के कारण दुबारा विवाह कहना ाहती है। विधवा स्त्री की

---

[36] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.84

[37] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.89

[38] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.62

समस्या िंता ानक होती है। उसके पास किसी प्रकार का आर्थिक स्रोत न हो तो उसकी स्थिति और भी सो ानीय हो ाती है। उस समय उसके पास साहस के साथ संघर्ष करते हुए आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनना मुश्किल हो ाता है। यामिनी अशिक्षित होने पर वह अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण दूसरा विवाह करने की सो ाती है और पारिवारिक, सामा िक उपेक्षा के बाद भी निखिल से विवाह कर लेती है। इस प्रकार स्त्री आत्म ेतना से स ाग और आत्म-निर्णय से युक्त होकर, न केवल सामंती परिवेश और बंधी मर्यादाओं के गठ को तोड़ती है अपितु साथ ही सकारात्मक तरीके से अपने व्यक्तित्व की र ाना भी करती है।"[39]

'अनाम प्रसंग' की ममता भी स्वावलंबी वि ारधारा रखती है। ममता अपने परिवार से सुख की िंता न करके अपनी इ छा, रु ि को प्राधान्य देती है और वो स्व छंदी रहती है। ममता स्कूली शिक्षा के बाद नौकरी करना ाहती है। घर में कोई आर्थिक तंगी नहीं होती फिर भी अपनी इ छानुसार नौकरी करती है और नौकरी करते समय अपने बॉस अभय से प्रेम करने लगती है। वह प्रेम को पाने के लिए घरवालों से विद्रोह करती है। अभय शादीशुदा है। इसी कारण परिवार इस रिश्ते को नहीं मानते बेटी के भावी ीवन की िंता रहती है। पर ममता अपने प्यार को पाने के लिए परिवार से विद्रोह करती है। वह नींद की गोलियाँ खा लेती है। मरने की कोशिश करती है। परंतु वह ब ा ाती है और अंत में माता-पिता की म ीं के खिलाफ अभय से मिलती रहती है। खाली समय में एक उपन्यास भी लिख लेती है। यहाँ पर माता-पिता की इ छा के खिलाफ ाना, अपनी इ छानुसार नौकरी करना तथा प्रेम की खातिर घर वालों से विद्रोह करना, एक स्वावलंबी बेटी तथा विद्रोही बेटी के रूप में ित्रित हुई है।

'कठगुलाब' के सभी पात्र स्वावलंबी तथा विद्रोही स्त्रियों का ित्रण हुआ है।

---

[39] बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों के उपन्यासों में ित्रित स्त्री-विमर्श-पृ.219

स्मिता, मरियान, असीमा, नर्मदा, असीमा की माँ, नीर ा सभी स्वावलंबी वि ारवाली स्त्रियाँ हैं। ये स्त्रियाँ किसी-न-किसी रूप से शोषित हैं। कोई परित्यक्ताएँ हैं कोई तलाकशुदा, कोई पति द्वारा छली गई स्त्री है, ये सभी अपनी-अपनी समस्याओं का सामना कर विद्रोही बन ाती हैं। असीमा की माँ पति द्वारा त्यागी गई स्त्री है। अपने ब ों के पालन पोषण के लिए कपड़े सीती है। और कई आर्थिक, सामा िक, मानसिक शोषणों का शिकार होती है। असीमा इन्हीं सब व्यवस्था को देख विद्रोही बन ाती है। वह अपने पिता को हरामी नं.1 तथा भाई को हरामी नं.2 का खिताब देती है और ि तने भी बेईमान, शोषक पुरुष हैं उनको हरामी का खिताब देती ाती है। स्मिता, मरियान पति द्वारा छली ाती हैं। पति उनकी उपेक्षा, अपमान करते हैं ि सके कारण वे विद्रोही बन कर उन्हें ही सबक सिखाने के लिए उनकी बेल्टों से पिटाई करती हैं। उपेक्षा भरे शब्दों से अपमानित कर तलाक ले कर स्वतंत्रता के साथ आत्मनिर्भरता से ीती हैं। वहीं नर्मदा अपने ी ा और बहन के शोषण का शिकार होती है। बहन सा ि श से उसका विवाह अपने ही पति से करवा देती है। बहन और उसके पति ने मिलकर नर्मदा के घर और ेवर हड़पने के लिए यह ाल ली थी।

पति के शोषण से तंग आकर विद्रोहिणी बनती है। और ी ा की अवमानना पर उसे पछाड़ती हुई उसका मौत की धमकी भी देती है। कहती है- "फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगें तोड़ के सड़क पर फेंक दूँगी। भडुवे, ा अपनी बीवी के पल्लू में ाके सो। मैं तेरी रखैल ना थी, तू मेरी रखैल था। कमा-कमा के तु े खिलाया मुस्टंडे, इसलिए, कि तू और तेरी बीवी मिलके मेरा हक मारो। ा, नामर्द सम ा के अपना हिस्सा माफ किया। पर याद रख, एक दिन आके वसूल कर लूँगी। वह मेरी बहन ना दुसमन है, पहले ान

लेती तो तुम दोनों की बोटी-बोटी काट के ील-कौवों को खिला देती। हिम्मत हो तो आ मेरे सामने।"[40]

स्मिता ने मनोवैज्ञानिक पति िम ानविस की बेल्टों से पिटाई की थी। िम उसे "ईडियट, बेवकूफ, पागल, साइकोपेथ कहता है। बेल्टों से उसकी पिटाई करता और कहता है-तुम एकदम आत्मकेंद्रित औरत हो, इसीलिए तुम्हारे अंदर अपराधबोध नहीं पनपता। ... तुम वहशी पागल हो। गलती करने पर तुम्हें ग्लानी नहीं होती।"[41] स्मिता मनोविश्लेषण के नाम पर ठगी गई थी। वह मन ही मन हँसती और अपमान, अवमान व निर्मम स्थिति को ोल लेती पर ाब अत्यधिक अत्या ार ब ़ गया और िम फाहश गालियाँ बकते हुए, वह उसके ऊपर उछला और बेल्ट की ापेट से उसे नी े गिरा दिया। फिर बेल्ट से उस पर वार करने लगा। "... इस बार वह बंधनमुक्त थी। उसने िम को पटकनी देकर ामीन पर गिरा दिया। उसकी बेल्ट छीन ली। और अ छी तरह उसकी धुलाई करके रख दी।"[42]

उसी प्रकार मरियान के पति इर्विंग ने उसे धोखा देकर उसके ारनल से उपन्यास बना लिया। उपन्यास छपने पर उसका नामोनिशान नहीं रखा और उसके ारनल नष्ट कर देता है।

उसी प्रकार मारियान के पति इर्विंग ने उसे धोखे से छला था। उसके ारनल लेकर भाषा की हेराफेरी करके उपन्यास अपने नाम से छपवाया। सारी सामग्री उसने ुटाई थी। सामग्री के लिए ईर्विंग ने उसे कहाँ-कहाँ नहीं दौड़ाया था। मारियान से उसने कहा था "यह उपन्यास हम दोनों ने लिखा है। हम दोनों के नाम से छपेगा। पर र ाना को अपने नाम से छपवा लिया। कहता है तथ्य ुटा

[40] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.55
[41] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.94
[42] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.95

लेने से उपन्यास नहीं लिखा ाता।"[43] इस पर मारियान सो ाती है "इस र ाना में मैंने सिर्फ बी ा नहीं डाला था, गर्भ भी धारण किया था और शिशु का प्रसव भी किया था। इर्विंग ने केवल उसे ामा पहनाकर, उसकी ोरी की थी। वह मेरे शिशु का अपहरण था। कपटी, धूर्त, नामर्द बास्टर्ड ... पूरा-का-पूरा मेरा ारनल टीपकर छपवा लिया। यह सरासर ोरी है। कमीने, मैं कभी तुम्हें माफ नहीं करूँगी, इसका बदला लेकर रहूँगी। ... यू सन ऑफ बि ा, यू इम्पोटेंट बास्टर्ड। कमी ा का कॉलर पकड़कर उसे ाक ोर डाला, सम ो क्या हो तुम... मैं तुम्हें छोड़ूँगी नहीं। प्ले ायरि म के ा र्ा पर ोल भि ावाकर रहूँगी। इस उपन्यास की बिक्री भी तभी होगी ाब इस पर मेरा नाम रहेगा, सम ो।"[44]

उसकी अस्मिता का आधार था उसका ारनल उसके छपते ही मारियान विद्रोही बन ाती है।

सामा ािक, विसंगतियों, विषमता की शिकार होने पर भी स्वावलंबन की राह पर ालती है। बलात्कार, अन्याय-अत्या ार, धोका, उपेक्षा, उत्पीड़न, आत्मग्लानी, आत्मपीड़ा, सभी प्रकार के शोषण से ग्रस्त स्त्री पारंपरिक रू ि ग्रस्त मान्यताओं का खंडन कर आत्मसम्मान तथा आत्मनिर्भर बनती है। ये स्त्रियाँ अपनी इ छा, आकांक्षानुसार परिस्थिति की माँग कर अपने संस्कारों से स्त्री संहिताओं को तोड़ने-छोड़ने में भी हि ाकि ाती नहीं। ये स्त्रियाँ स्वावलंबी के साथ-साथ विद्रोही भी है।

'अपनी सलीबें' की नीलिमा की माँ सुमित्रा देवी स्वावलंबी माँ के रूप में ि ात्रित हुई है। ाो अपनी बेटी को ाीवन दर्शन सम ााती है। सुमित्रा परिस्थिति के अनुसार अपनी संतान को सही मार्ग दिखाती है। उसके पक्ष में हितकारक बदलाव ााहती है। सुमित्रा देवी के वि ाार स्वावलंबी हैं ाो नीलिमा को पुरानी परंपरा पर

---

[43] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.95
[44] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.96-97

ालने नहीं देती। नीलिमा को प ़ने की, विवाह की अपने पैरों पर खड़े होने की स्वतंत्रता देती है। मिथ्या लोकला ा और कुटुंब परिवार की आलो ाना को न मानते हुए अपनी बेटी के भविष्य के लिए रिश्ते-नातेदारों को दूर रख कर अपने बलबूते पर नीलिमा को शिक्षा का पूरा अवसर देती है। बेटी को प्रेम विवाह करने की भी स्वतंत्रता देती है। "स्वावलंबन के इसी आत्मविश्वास से नीलिमा को पूरी प ़ाई करवाई और उसे अपने पैरों पर खड़े होने को प्रोत्साहित किया। यही उनका ीवन का ध्येय था और इसे इन्होंने पूरा किया।"[45] नीलिमा ाब पति को छोड़ देती है और पति के आखिरी समय में भी उससे अ ानबियों ैसा व्यवहार करती है। तो माँ उसे सम ाते हुए कहती है-इशु सीधा-सादा आई.ए.एस. है। तुम्हारा ख्याल रखता है, तुम्हारी म ीं के सिवाए कुछ नहीं करता। तुमसे अपने से यादा प्यार करता है। कलक्टर बनने पर उसके समक्ष अनेक लड़कियाँ आ सकती थी पर उसने तुम्हें ुना क्योंकि वह तुमसे बहुत प्यार करता है। "तो इतनी सारी बातें एक तरफ और सिर्फ एक बात कि वह ाति का छोटा आदमी है, एक तरफ। तुमने दोनों पलड़े बराबर कर दिये। बल्कि सारी अ छाइयाँ खत्म करके तरा ू पर सिर्फ उसकी ाति रख दी।"[46] आगे कहती है-"बेटी, ईशु के पास पद है। सम्मान है। उसके मन में तुम्हारे लिए ो मान हे, उसकी तुमने कोई परवाह नहीं की। एक िंदगी-सिर्फ एक िंदगी मिलती है मानुस ात को ीने के लिए। उसे भी कोई ाति-पाँत धरम-बेधरम, छोटा-बड़ा के ाक्कर में गु ार दे और सारी िंदगी रीती रह ाए, इसमें क्या अकलमंदी है। तू तो प ़ी-लिखी है, नए माने की है नई रोशनी देखी है तुमने। हम तो पुराने खं ाड़ हो गए हैं। गिरते खंडहर हैं हम। हम तो तुमसे सीखेंगे... मैंने सम ा था कि तुमने सब देख सुनकर, सारे हालात सम ाते हुए फैसला लिया है। मु े मालूम नहीं था कि तुम

---

[45] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.49

[46] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.218

इतनी नासम ा हो... इतनी नादान हो।"[47] सुमित्रा देवी की बातों से प्रगतिशील माँ की छवि ालकती है ाो अपनी बेटी के कारण विद्रोही भी बनती है। बेटी को भी प्रगतिशील राह पर ालने की सीख देती है।

'ााक' की सारंग स्वावलंबी वि ारवाली है। सारंग को स्वावलंबी राह पर अनेक यातनाओं से गु ारना पड़ता है। सारंग यथास्थितियों के ालते परंपरागत ाीवन की मान्यताओं को तोड़ती है। ाातीय संघर्ष, रीति-रिवा ा, उत्सव-पर्व, नृशंसता-प्रतिहिंसा, प्यार-ईर्ष्या, अंधविश्वास, कर्मकांड के बी ा संघर्ष करती है। ामींदारों की अमानवीयता को मुँहतोड़ ावाब देती है। सारंग वेदना और रुदन को त्यागकर विद्रोही बनती है। अपनी बहन रेशम की मौत का बदला विद्रोहिणी बन कर लेती है और प्रण लेती है-" ाब तक हथियारे को हथकड़ी नहीं लग ााती, अपने बाल नहीं समेटूँगी।"[48] रेशम के हत्यारे को हथकड़ी लगवा कर ही रहती है और शोषक पुरुषों को स ाा दिलवाने में पीछे नहीं हटती। सारंग ुनाव में भी पद के लिए लड़ती है।

रेशम भी स्वावलंबी वि ारवाली स्त्री है। पति मरने पर दूसरे से संबंध रखती है। पति की मौत के पाँ ा महीने बाद गर्भ धारण करके दिलेरी से उसका ऐलान करके विद्रोही होने का सबूत देती है। वह किसी रीति-रिवा ा, शास्त्र-पुराण, घर-गाँव को नहीं मानती क्योंकि ये सामा ाक व्यवस्था उसे इंसान न मानकर एक विधवा मानते हैं। सारे अंधवश्वास, कर्मकांड उस पर लादते हैं। ि ानका रेशम विरोध करती है। सास द्वारा उपेक्षित होने पर कहती है-"तुम्हारे पूत की ि ाता ठंडी हो ााने से क्या मेरे देह की आग बु ा ााती। बेटे के संग मैं भी मरी मान ली। आ ा तुम्हारा बेटा मेरी ागह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था। ... मेरे पीछे तेरहवीं तक का सब्र न करता और ले ााता दूसरी। तुम

---

[47] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.219, 220, 221

[48] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.209

खुश हो रही होती कि पूत की उ ाड़ी िंदगी बस गई पर मेरा फ ीता करने पर तुली हो।"[49] रेशम का यह विद्रोह सामाि क कुकर्मी तथा कर्मकांड से है ो स्त्री को स्त्री न मानकर उससे उसके ीवन का आधार छीन लेता है। इस विद्रोह के कारण उसकी हत्या कर दी ाती है। िसका बदला सारंग लेती है। सारंग का विद्रोह यौन-नैतिकता के दोहरे-मानदंड से है। पुरुष के द्वेषों के विरुद्ध है। पति द्वारा मिलने वाली प्रताड़ना, उपेक्षा, अपमान से है। सामाि क विसंगति से है।

'हमारा शहर उस बरस' में श्रुति एक स्वावलंबी युवती है ो एक मुसलमान युवक हनीफ से विवाह कर लेती है। दोनों में धर्म-संस्कृति के नाम पर कभी मतभेद नहीं रहता है। वे मानवता को श्रेष्ठ मानते हैं और आधुनिक वि ारधारा रखते हैं। हिंदु-मुसलमान के सांप्रदायिक दंगों के कारण इनकी सो ा-वि ार में कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि ये ाति को महत्व न देकर मानवता को महत्व देते हैं। श्रुति का किसी भी तरह मानसिक, आर्थिक, नैतिक गुलाम न बनना, श्रुति एक संवेदनशील, विवेकशील स्त्री है ो विवाह के बाद अपना नाम नहीं बदलती न धर्म बदलती है। इन्हीं सब तथ्यों में श्रुति की प्रगतिशील वि ारधारा परिलक्षित होती है।

अंतिम दशक की स्त्री लेखिकाओं के विवे य उपन्यासों में स्वावलंबी विद्रोही नायिकाओं का ित्रण हुआ है। ये नायिकाएँ परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर अपने व्यक्तित्व के आधार पर नयापन प्रदर्शित करती है। बदलती हुई परिस्थितियों के प्रभाव से स्त्रियों में विद्रोही रूप दिखाई देता है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'अनाम प्रसंग' की ममता, 'ऐ लड़की' की बेटी, 'कठगुलाब' की स्मिता, नमिता, मरियान, असीमा, नर्मदा, नीर ा सभी पात्र, 'आवां' की नमिता पाण्डेय, स्मिता, गौतमी, 'एक ामीन अपनी' की अंकिता, नीता, ' ूला नट' की शीलो, 'अपनी सलीबें' की सुमित्रा, 'दिलो-दानिश' की छुन्ना बीबी, 'अल्मा कबूतरी' की

---

[49] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.209

अल्मा, कदमबाई, 'आपने-अपने कोणार्क' की कुन्नी, प्रीति, कावेरी, ' ाक' की सारंग, 'यामिनी कथा' की यामिनी, 'अपने-अपने ोहरे' की रमा, 'हमारा शहर उस बरस' की श्रुति, 'माई' की सुनैना, सभी पात्र प्रगतिशील स्त्रियों के रूप में दर्शायी गई हैं ि न्होंने इस राह पर ालते हुए विद्रोह किया है और अपने-आपको उपेक्षाओं के कटघरे में खड़ा किया है।

5.2.2 समान अधिकार

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री समानाधिकार की समस्याओं से ू ाती है। ान्म से ही स्त्री-पुरुष में भेदभाव किया ाता है। बेटी होने पर गहरी निराशा व्यक्त की ाती है। स्त्री आ ा शिक्षित है। आत्मनिर्भर है, फिर भी पुरुष के समान अधिकार से वं ित है। विधवा होने पर दूसरे विवाह की मान्यता स्त्री को प्राप्त नहीं है। स्वयं एक स्त्री भी बेटी होने पर भेदभाव रखती है। 'छिन्नमस्ता' की कस्तूरी तथा 'आवां' की उर्मिला इसका स ाग उदाहरण है। ो अपनी बेटी के ान्म पर खुश नहीं होती और बेटा-बेटी में भेदभाव रखती है। बेटी को बहुत सारे बंधनों में रखना ाहती है और बेटे को खुली छूट देती है। अपनी बेटियों को अ छी शिक्षा से भी वं ित रखती है। इसी सामा िक व्यवस्था का पुरुष फायदा उठाता है और अपनी बहन, बेटी, पत्नी पर अपना रौब ामाना ाहता है। पर आ ा की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति स ाग हो गई है। उसमें स्वतंत्र ेतना ाागृत होने लगी है ि ासे वह अपने समानाधिकार प्राप्ति के लिए विद्रोही भी बन ाती है।

'आवां', 'एक ामीन अपनी', 'कलिकथाःवाया बाईपास', 'छिन्नमस्ता', 'ऐ लड़की', 'कठगुलाब', सभी में स्त्री किसी न किसी रूप में समानाधिकार की समस्याओं से ू ा रही है।

'आवां' उपन्यास में उर्मिला बेटा-बेटी में फर्क मानती है। वह बेटे को अंग्रेज़ी स्कूल में दाखिला दिलवाती है और बेटी को हिंदी माध्यम से प ़ने को भे ाती है। पति के अपाहि ा होने पर बड़ी बेटी की प ़ाई भी रुकवा देती है। उसके

ऊपर परिवार के दायित्वों का बो ा डालती है। पति की मौत के बाद ाब विधि विधान से क्रिया कर्म की बात पंडित ाी करते हैं तो वह छोटे बेटे को आगे कर कहती है कि बेटा है बेटा ही करेगा। ब ो की उम्र देखकर पंडित पूछ बैठते हैं कि बड़ा बेटा नहीं है। इस पर नमिता की माँ कहती है-"होता तो फिर रोना ही काहे को था, पंडित ाी। माथे पर हथेली पटक माँ ने मानो भाग्य को धिक्कारा।"[50] इस पर नमिता कहती है-"क्रियाकर्म मैं करूँगी, पंडित ाी, मुखाग्नि भी मैं ही दूँगी। मैं पांडे ाी की बेटी हूँ। छुन्नु ब ाा है। ब ो के हाथ से क्रियाकर्म करवाना उ ाित नहीं। बाबू ाी ि ांदा थे तो अक्सर कहा करते थे-"मरने पर तू ही मेरा क्रियाकर्म करेगी। तू मेरी समर्थ बेटी है। दस बेटों के बराबर।"[51] सदियों से ाली आ रही रीति तथा रू ि यों को तोड़ने की कोशिश की गई है। बेटा ही नहीं बेटी भी समानाधिकार की हकदार है। पहले ामाने में लड़कियाँ ससुराल में रहा करती थीं। इन सब कार्यक्रमों से वं ाित थीं। स्त्रियों के लिए "शास्त्रियों ने लिख दिया... पोंगापंथियों ने लगा दिया ठप्पा की स्त्रियों के लिए मुखाग्नि देना व ाित है। नमिता का अनाधिकार हस्तक्षेप माँ को नागवार गु ारा।"[52] नमिता की स्वतंत्र ोतना दृष्टिगत होती है। वह अपने अधिकार के लिए दृ ़ है ाो अधिकार हासिल करना ाहती है। विद्रोह, दृ ़ निश ाय से हासिल कर लेती है ाहे समा ा, परिवार उसकी कितनी ही उपेक्षा करे।

'कठगुलाब' में भी समानाधिकार की समस्या को रेखांकित किया गया है। स्मिता प ़ाई करना ाहती है। नौकरी के लिए आत्मनिर्भरता के लिए वह शादी नहीं करना ाहती। मारियान समानाधिकार के लिए पति के छल धोके को स ाा देना ाहती है। उसके पति ने उसे ठगा था। उसके ारनल का भाषायी हेर-फेर कर उपन्यास के लिए इस्तेमाल करके नष्ट कर दिया था। 'वुमेन ऑफ द अर्थ'

---

[50] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.399
[51] आवां, ि ात्रा मुद्गुल-पृ.399
[52] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.400

उपन्यास को अपने नाम से छपवा लिया था। इस पर मारियान विद्रोह कर उसे ोल भे ाने की धमकी देती है। पर उल्टा इर्विंग अदालत में तलाक लेने के लिए अ ाी देता है कि उसकी पत्नी हिस्टीरिया या मानसिक विकार की शिकार है और तलाक हो ाता है। मारियान-"प्रलाप से रोदन और रोदन से प्रलाप के बी ा ूलती, धोखेबा ाी से पार पाने में नाकाम, फेमिनि ा बाइल्स से मुक्त एक तु छ स्त्री।"[53] मारियान समान अधिकार की मांग कतरी है तो पति द्वारा उपेक्षित, प्रताड़ित तथा तलाक ही मिलता है। सामा िक उपेक्षा, आलो ाना की हास्यास्पद विवाद ही हासिल हुआ और कुछ नहीं।

'कलिकथा वाया बाईपास' में मारवाड़ी परिवार की आधुनिक लड़कियाँ भी समानता की मांग पर संघर्षरत हैं। वे अपनी माँ, ताई, भाभी की घुटनभरी ि ांदगी को देख कर उनसे सवाल करती हैं कि क्यूँ वे इस तरह के शोषण को सहती हैं। क्यूँ वे अंधविश्वास, आडंबर, अत्या ाार, कुंठा, संत्रास से बाहर नहीं निकलती। क्यूँ नहीं वे स्वतंत्रता की सांस लेती हैं। अपने ाीवन को घुट-घुट कर रीति-रिवा ा के दायरे में अपनी आत्मपीड़ा के लिए ाीती है। किशोर की छोटी बेटी पिता के व्यवहार पर सो ाती है क्यों पिता ाी बाहर ाने नहीं देते, बाल्कनी में खड़े होने पर मना करते हैं। सहेलियों को घर आने- ाने नहीं देते, आस-पड़ोसी से मिल नहीं सकते हैं। ये कैसी कैद का ाीवन है वह अपनी बड़ी माँ से कहती है- "हम क्यों कैद हैं पिं ारे में बंद ि ाड़ियों की तरह? तुम क्यों कैद हो? पिं ारे में बंद ि ाड़ियों की तरह? तुम क्यों कैद हो बड़ी माँ? तुमने क्या पाया ऐसा ाीवन ाीकर? किसके लिए ाीवन ाीया तुमने ऐसा? तुम क्यों सहती हो हर बात पर पापा की मर ाी।"[54] किशोर की छोटी बेटी पुरुष के समान स्वतंत्र ाीवन ाीना ाहती है। पारिवारिक परंपरा का खंडन कर मारवाड़ी स्त्री ोतना की ाागृति का

---

[53] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.98

[54] कलिकथाःवाया बाइपास-पृ.58

संकेत देती है। अपनी और अपनी बड़ी माँ की बंदिस्त स्थिति पर अपना प्रगतिशील वि ाार प्रकट करती है।

'इदन्नमम' में प्रेमा को समानता के लिए उपेक्षित होना पड़ा। वह पति मरते ही रतन यादव के साथ भाग ाती है और अपने वैधव्य के नियमों का खंडन करती है। वह विधवा होकर ीवन बिताना नहीं ाहती। इसी कारण उसे सास की, ाति की, गाँव की उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। पर वह अपनी म र्ी से पुनर्विवाह कर लेती है। मंदा भी इसी प्रकार गाँव वालों से भिड़ ाती है। मंदा अपने पिता के अधूरे सपने को पूरा करती है। वह सोनपुर गाँव में अस्पताल का नवनिर्माण करती है तथा आयतीत सामा ािक विसंगति का, विषमताओं का खंडन करती है। गाँव में ाकर समा ा-प्रबंधन, ान- ाागृति करना तथा सरकारी दफ्तरों में ाकर भ्रष्ट नीति को नंगा करना, अभिलाख ैसे शोषकों को सबक सिखाना, म ादूरों में ेतना भरना, शोषण के खिलाफ विद्रोह करना यह तथ्य स्त्री की समानता की मांग पर विद्रोही बन शोषणों का विरोध कर उनको अं ाम देना ेतित स्त्री मंदा का ित्रण किया गया है। ाो अंधविश्वास, रू ि-प्रथा परंपरा को तोड़ती है।

'एक ज़मीन अपनी' उपन्यास में समानाधिकार समस्या को स्पष्ट किया है। इसी को लेकर अंकिता अपना मत स्पष्ट करते हुए कहती है-"मैं स्त्री और पुरुष की समान सा ाीदारी की पक्षधर हूँ। किंतु उसमें अहंवादी शोषण स्वरूप की नहीं... पुरुष को उसे बाडे से मुक्त कर बराबरी का द र्ाा देना होगा..."[55] अतः स्पष्ट है कि सुशिक्षित स्त्री समान अधिकार के लिए लड़ती- ागड़ती है। परंतु उसे पूर्ण रूप से समान अधिकार नहीं मिलता। यदि स्त्री को समान अधिकार मिल ाएंगे तो पुरुष का अतिरिक्त स्वातंत्र्य का हक छिन ाने का डर पुरुष को लगा रहता है, इस व ाह से पुरुष स्त्री को समान अधिकार नहीं देता। इसमें केवल भो ारा ा के

---

[55] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.102

परिवार में ही स्त्री को समान अधिकार प्राप्त है। अंकिता को बेटी होने के नाते माँ की मृत्यु के बाद माँ की ाायदाद में हिस्सा नहीं मिलता। वंदना की माँ भी बेटा-बेटी में समान अधिकार नहीं दे पाती। स्त्री समानता के बारे में नीता के वि ाार इस प्रकार हैं-"ये रू ि वि ाार ही स्त्री-स्वतंत्रता में बाधक हैं... मैं इस बात को स ामु ा ाीना ाहती हूँ... इसी समा ा में पुरुष सर्वदा अपने मन को ाीता आया है.. आ ा भी ाी रहा है... पुरुष अपने मन से ाी सकता है, स्त्री नहीं?"[56] इसी संदर्भ में नीता की सहेली अंकिता कहती है कि स्त्री को मर्द बनकर समा ा में समानता की ााह नहीं करनी ाहिए। स्त्री रह कर ही समान अधिकारों को प्राप्त करना ाहिए। अंकिता कहती है कि-"स्त्री किसी भी अमर्यादित कृत्य से कुल छिनी होती है, उसे ुल्लू भर पानी में डूब मरना ाहिए.. पुरुष के लिए ऐसा कोई विधान नहीं? उसके अमर्यादित आ ारण के लिए शुद्धियाँ हैं... गोमूत्र पीकर, ब्राह्मण खिलाकर प्रायश्ि ात संभव है... वह भी न हो तब भी उसकी इ ात-आबरू की सींगें नहीं कटतीं...।"[57] अतः स्पष्ट है कि समा ा में स्त्री के लिए ही सभी मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है।

'ए लड़की' उपन्यास में लड़का-लड़की को समान अधिकार देने के वि ाार स्पष्ट हुए हैं। माँ अपनी लड़की को शिक्षा देते हुए कहती है-"अपने दिल से, पूछा कभी तुम भाई-बहनों में कोई भेदभाव किया गया।"[58] अतः यहाँ तो माँ ाो मृत्यु की राह देख रही है वह अपनी बेटी को ब ि या सीख देती है। फिर भी अम्मु अंतिम संस्कार के लिए बेटे को याद करती है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में भी प्रिया के ान्म के बाद घर का वातावरण बिगड़ ााता है। दादी माँ तो लड़की का तिरस्कार करते हुए कहते हैं। "आ पड़ी ऊपर से... भाया साँवर, अभी तो दो को ब्याह बाकी है... या तीसरी और तैयारी

---

[56] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.146

[57] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.211

[58] ए लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.56

होगी। तेरे तो ख ों ही ख ों।"[59] पारिवारिकर भेदभाव की व ाह से प्रिया को माँ का प्यार नहीं मिलता है। उसे परिवार में समान अधिकार नहीं मिलता। शादी के बाद भी प्रिया को समान अधिकार नहीं प्राप्त होता। व्यापार के क्षेत्र में भी पति उसे यादा नहीं बोलने देता परंतु प्रिया मानती ही नहीं। समान अधिकार के बारे में कहा है कि-"स्त्री-पुरुष का संबंध मालिक और गुलाम का? भोक्ता और भो य का? व्यक्ति और वस्तु का? कब तक यह द्वंद्व ालेगा?"[60] अतः स्त्री को गुलाम बनाकर पुरुष प्रधान संस्कृति उस पर रौब ामाती है। फलस्वरूप यह समस्या निर्मित हो गई प्रिया पति से यादा कमाई होने पर भी उसे स्वतंत्र रूप से ीने नहीं देता। समानाधिकार के बारे में कहा है-"एक पुरुष पैसे कमाता है और दो ार लोगों को पाल लेता है, लेकिन स्त्री यदि सीमाएँ लाँघ ाए तो वह पारंपरिक समा ा उससे खत्म हो सकता है।"[61] स्पष्ट है कि स्त्री के लिए ही सभी मान-मर्यादाओं का पालन आवश्यक बन गया है। प्रिया की सौतेली ननद भी इसी समस्या का शिकार हुई है। प्रिया पति और बेटे को छोड़कर व्यापार हेतु लंदन ाली ाती है। प्रिया अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए स ाग व स ेत है।

'दिलो-दानिश' में रखैल के सामा िक ीवन को स्पष्ट किया है। समा ा की व्यवस्था के कारण या ाति-बिरादरी के कारण दो ब ों की माँ होते हुए भी रखैल को निम्न द ाा दिया गया है। समा ा उसके मन को सम ाता नहीं। स्वयं माँ होते हुए भी रखैल महक बानो को शादी में आने की इ ाा ात नहीं दी ाती। रखैल का सामा िक ीवन केवल भोग्या के रूप में ाना गया है। सामा िक बंधनों के कारण उसका ीवन घुटन भरा हो गया है।

विवे य उपन्यासों में समान अधिकार की समस्या विविध रूपों में ि ित्रित है। माँ अपेन ही बेटे-बेटियों को समान अधिकार नहीं देती। पत्नी को भी समान

---

[59] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.189
[60] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.210
[61] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.210

अधिकारों से वं ित रहना पड़ता है। ो स्त्री प ़ी-लिखी है वह समान अधिकार के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। 'एक ़मीन अपनी' उपन्यास में ऐसा है कि िसमें केवल भो ारा ा के परिवार में स्त्रियाँ पुरुष की बराबरी से काम करके अपने अधिकारों की प्राप्ति करती हैं। विधवा पुनर्विवाह के लिए बाधा डाली ाती है तो विधुर के लिए छूट दी ाती है। अतः स्वाभिमानी स्त्री को समा ा सहारा नहीं देता बल्कि उस पर लाँछन ही लगाता है।

5.2.3 स्वतंत्र ेतना

स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व में स्वावलंबन का विकास अत्यधिक किया ा रहा है। स्त्री के संदर्भ में महिला लेखन इस दिशा में अत्यधिक सक्रिय है। आ ा के युग में स्त्री हो या पुरुष दोनों ही अपने स्वतंत्र ेतना का विकास करने लगे हैं। पति-पत्नी अपने व्यक्तित्व को लेकर अधिक ागृत हो गये हैं। िस प्रकार समा ा में पुरुष का स्थान है स्त्री भी ाहती है कि समा ा में उसकी अपनी पह ान हो। वह अपनी स्वायत्ता स्थापित करना ाहती है। गलि-सड़ी रू ़िवादी सामा िक संस्कारों, आडंबर युक्त मान्यताओं के प्रति स्त्री ागृत ेतित हो गई है। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा और परिवार तथा समा ा में अपनी अस्मिता की पह ान उसके लिए महत्वपूर्ण हो गयी है। अपना ीवन अपने ंग से व्यतीत करने के लिए स्वयं आर्थिक स्वतंत्रता अर् ित करना अनिवार्य हो गया है। आ ा की स्त्री अपने अधिकार और अत्या ार के प्रति आवाज़ उठाने लगी है। स्वावलंबी होकर ीवन बिताना ाहती है। अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री अन्याय, अत्या ार तथा शोषण के खिलाफ स्वतंत्रता के साथ विद्रोह के लिए खड़ी हुई है। बदलते ़माने में स्त्री का ेतना रूप समा ा- ीवन के लिए आवश्यक है। आ ा की स्त्री किसी भी दबाव को सहन नहीं करती। 'इदन्नमम' उपन्यास में स्त्री की संपत्ति को पुरुष के द्वारा हथियाना और स्त्री का अधिकार ेतना का भाव स्पष्ट होना दिखाया गया है। इस उपन्यास में स्त्री की तीन पी ़ियाँ अपने ीवन संदर्भों

को लेकर स्वतंत्रता की ोतना की मुद्रा में खड़ी है। उपन्यास के रत्नयादव के िांदगी की मंिाल स्त्रियों को बहलाकर उनको धोके से अपहरण करता है। और फुसलाकर उसकी ामीन- ाायदाद, उसकी संपत्ति को हड़प कर लेना है। "तीन विधवाओं की ामीन ााब बैठा है रत्नयादव, किसी को भगा कर तो किसी को बहला-फुसलाकर और उससे भी ब.कर है, उसका बेटा रा ू यादव। वह पट्ठा पिस्तौल की नोक पर करता है सारे काम।"[62] उपन्यास की पात्र मंदा अपने अधिकार के लिए लड़ाई लड़ती हुई पुरुष प्रधान संस्कृति, अत्या ाार, शोषण के विरुद्ध खड़ी होती है। उसके समानता के अधिकारों को समा ा और न्याय व्यवस्था तक स्वीकार करेगी। वह स्वतंत्र ोतना से ाागृत होती है। बऊ (दादी) प्रेम (माँ) और मंदा ये तीन रूपों में स्वातंत्र्य की ोतना उभर कर आई है।

प्रिया 'छिन्नमस्ता' में ऐसी स्त्री का ित्रण हुआ है ाो स्वावलंबन की ोतना रखती है ाो हमेशा शोषण, उत्पीड़न, स्त्री की अस्मिता की खो ा में वह अपना पूरा ाीवन बिता देती है। मारवाड़ी समा ा के स्त्री-शोषण के ाक्रव्यूह को छेदकर प्रिया की स्त्री-स्वातंत्रता को उ ाागर किया गया है।

प्रिया पारिवारिक शोषण के कारण पीड़ित है। उसका पति व्यापार में अड़ ाने पैदा करने की कोशिश करता है पर प्रिया अपनी स्वतंत्र स्वावलंबी ोतना के कारण विरोध करती है। प्रिया कहती है-"सारे ाुल्मों के सामने... सलीब पर लटकते मैंने पाया कि मैं पूरी तरह ाुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।"[63] इसमें प्रिया की अस्तित्व भावना ाागृत होती है। शिकागो में आयोि ात प्रदर्शनी में शामिल होने के लिए ााने वाली प्रिया को ाब नरेंद्र रोकता है। प्रिया विद्रोह करती है और कहती है-"तुम साल में एक करोड़ कमाते हो, ाबकि मैं पाँ ा से सात लाख! क्या तुम सभा-सोसायटी के मं ा पर बैठकर गले में हार नहीं

---

[62] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.85

[63] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.10

पहनते।"[64] नरेंद्र सो ाता है कि उसे व्यावसायिक ालन हो रही है। पर इसमें ालन ैसी कोई बात नहीं है। वह तो स्वतंत्र ेतना उसमें ाग गयी है। प्रिया केवल आत्मनिर्भर बनना ाहती है। शादी से पहले भी वह अपनी दायी माँ को कहती थी-"औरत को अपने पैर पर खड़ा होना ाहिए। देखो तो तुम नहीं कमाती तो तुम्हारे ब ो का क्या होता।"[65]

इस उपन्यास की नीना नरेंद्र के पिता ी की रखैल तिलोत्तमा की अवैध संतान है। अवैध संतान होने के कारण उसमें लघुत्व की ग्रंथी पनपने लगती है। वह ेतित होकर अपनी माँ की सौभाग्यवती बनने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है। "माँ कितना भी मांग में सिंदूर लगाए, उस लाल रंग में थोड़ी कालिख धूली हुई है? इसलिए तो मम्मी का सिंदूर मकता नहीं।"[66] नीना के मन में कडुवाहट उभरती ा रही है। वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना ाहती है। ो उसका पिता पैसे देता है उसको स्वीकार नहीं करती है। पिता को एक बु दिल, कम ोर इंसान मानती है। ूडी से नीना के बारे में प्रिया बताती है-"नीना हर तूफान का हँसकर स्वागत करती है।" और निर्भय होकर हँसती है वह प्रिया की सहायता से र्मन लड़के से शादी करती है। इसमें स्वतंत्रता का बोध होता है। अपने स्वतंत्रता के लिए कितनी ेतना भर रही है।

विवे य उपन्यासों में स्वतंत्रता की ेतना उभर कर आयी है। दिलो-दानिश, इदन्नमम, कठगुलाब, छिन्नमस्ता, कलि कथाःवाया बाइपास' आदि उपन्यासों के रिये स्वतंत्र ेतना को उभारा गया है। अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री के सामने अनेक पड़ाव आये हैं िनको स्त्री स्वतंत्रता से पूरा करना ाहती है। दिलो-दानिश में ेतना स्त्री सामंतवादी और नवाबी परिवेश से उभर कर स्त्री में ेतना ागी है।

[64] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.14
[65] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.66
[66] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.144-145

‘इदन्नमम’ में परंपरागत वैधव्य का सम्मान करनेवाली बऊ, परंपरागत वैधव्य की सम्मानित ौखट को तोड़नेवाली महेंदर की विधवा पत्नी प्रेम, सोनपुरा के ामींदार महेंद्र की बेटी, मंदा, क्रूर पति यशपाल की पत्नी कुसुमा ये सारी औरतें ेतित नारियाँ हैं ाो परिवेश के खिलाफ, ग्रामीण अनीति, हड़पनीति परंपरा के खिलाफ संघर्ष करके ानमानस में अन्याय-अत्या ार के खिलाफ ान ाागृति करती है। मंदा द्वारा ान संगठन का बड़ा प्रशंसनीय कार्य करके माफिया ठेकेदारों को ठिकाने पर लगाया ााता है। ‘कठगुलाब’ की स्मिता, नमिता, नर्मदा, असीमा, नीर ाा आदि स्त्री पात्र पुरुष प्रधान समा ा के कठगुलाब को उखाड़ना ाहती हैं। ये सारी स्त्रियाँ अपने पति, ाी ाा आदि से शोषित है और अपने शोषण का उनसे बदला लेना ाहती है। ये स्त्रियाँ स्वतंत्रता के लिए ेतित नज़र आती हैं। समा ा के बाह्य दबाव में उसकी ेतना दब गई है। इन उपन्यासों में स्वतंत्र ेतना उभरकर नज़र आती है।

5.3 मानवीय संवेदना

अंतिम दशक के उपन्यास स्त्री की संवेदना को सामने लाता है। ऐसी स्त्री संवेदना ाो लगातार संघर्ष कर रही है, संघर्ष करते हुए ऐसे बिंदु पर पहुँ ाना ाहती है ाो स्त्री के व्यक्तित्व को स्थापित करता है। ऐसी स्त्री संवेदना इन उपन्यासों मं है ाो सारे समा ा के सामने ुनौती है। यहाँ स्त्री लड़ाई भी लड़ती है, तलाक भी मांगती है, सत्ता में आने के लिए प्रयत्नशील भी है। अपने वि ारों को पूरे राष्ट्रीय गौरव से ाोड़ती है। एक तरह से भारतीय यथार्थवाद को, स्त्री के नि ात्व को, उसकी अस्मिता को स्त्री-विमर्श को इन उपन्यासों के माध्यम से लेखिकाएँ हमारे सामने लाती हैं।स्त्री स्वयं अपने लेखन में स्त्री के स्वभाव को ि ातनी गहराई से सम ाकर लिखती है, वह गहराई ही उसकी विशेषता बन ााती है। ाहे वह रंगमं ा के माध्यम से हो या कहानी के, या उपन्यास के उसमें लेखिकाओं ने स्त्री की पूर्णता का सवाल उठाया है।

प्रो.गिरीश रस्तोगी के वि ।ार में-"स्त्री विमर्श पुरुष विरोधी नहीं है। मूल दृष्टि यह है कि स्त्री को स्त्री की दृष्टि से देखो। स्त्री के लिए मानवाधिकार ।रूरी है कि उसे मनुष्य की तरह माना ।ाए। उसे पुरुष की तुलना में न देखें। दृष्टिकोण अतिव्यापक है। स्त्री के मातृत्व पर पत्नीत्व पर, रिश्तों पर, घर बाहर के संबंधों पर होनेवाली सारी बातें विमर्श पक्ष से ।ुड़ ।ाती हैं।"[67] स्त्री स्वभाव को सम ।ना स्त्री-विमर्श की सबसे बड़ी ।ीज़ है।

हमारे समा । में प ।ास प्रतिशत हिस्सा स्त्रियों का है। पर समा । में स्त्रियों के लिए नियमबंध आरक्षण नहीं है। ।ब स्त्री-सरोकार की बात या मांग उठती है तो पुरुष समा । डगमगा ।ाता है। "स्त्री-विमर्श का मतलब है सह अस्तित्व की भावना। स्त्री संदर्भ या स्त्री मुक्ति का मतलब है स्त्री को समानता का, बराबरी का द ।ा दिया ।ाए यह द ।ा उसे पुरुष नहीं देगा। स्त्री को आगे ब .कर खुद लेना है।"[68]

ऐसा स्त्रीत्व ि ।सका अपना अस्तित्व हो, अपना एक अहम हो, स्वयं का गौरव हो। समा । में स्त्री-पुरुष के संबंधों का आधार मानवीय प्रेम, सम्मान ओर सहयोग होता है। अगर स्त्री-पुरुष में मानवीय भावना उत्पन्न हो सकेगी तो दुनिया में ि ।तनी विषमाएँ हैं उन्हें मिटाया ।ा सकेगा। स्त्रियों का भी स्वतंत्र व्यक्तित्व हो ि ।समें वे अपने ।ीवन का उद्देश्य समा । में स्थापित कर सकें। आ । की स्त्री पारंपरिक रू ि.यों का खंडन कर संपूर्ण मानव बनने और ेतना को संघर्षरत रखने के लिए प्रयत्नशील है। "स्त्री रूप से उठकर मानवी रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न ही सब समस्याओं का निदान है, उप ।ार है।"[69] मानवीय मन की नितांत उल ।ी हुई ।ाहत और ।ीवन भरे संघर्ष का दस्तावे । है ।ो आदर्शों की भव्यता

[67] स्त्री-विमर्श : विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.39
[68] स्त्री-विमर्श : विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.47
[69] भारतीय नारी : अस्मिता की पह ।ान, उमा शुक्ल-पृ.62, 67

से अलग हटकर सत्य के निरूपण की अवधारणा सत्य कथा है ि ासका सत्य कभी मरता नहीं।"[70]

मृदुला पाण्डे के वि ाार में-"नारीवाद कतई स्त्रियों को बृहतर समा ा से अलग-अलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषों के खिलाफ "उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नहीं। यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है ाो संवेदनशील नागरिकों में पहले शोषित और प्रवं ाित स्त्रियों की स्थिति के प्रति सहानुभूति और मानवीय दृष्टिकोण विकसित करके उसके उ ाास में उन्हें अपने पूरे समा ा के शोषित और प्रवं ाित तबकों को सम ाने की क्षमता देता है। साथ ही उनके प्रति एक तरह की सदयता तथा कर्मठ दायित्वबोध भी ागता है।"[71]

"आ ा ारूरत है उस तलाश की, उस ाीवंत ि ाज्ञासा की, ाो स्त्री के ाीवन, उसकी अनुभूति, उसकी सृ ाानात्मक शक्ति को अभिव्यक्त करनेवाले माध्यम को समाने लाए।"[72] विवे ाय कालखंड की लेखिकाओं ने स्त्री की ारूरत एवं तलाश को अपने उपन्यासों में ि ात्रित किया है।

5.3.1 पारिवारिक ाीवन

विवे ाय उपन्यास में मानवीय संवेदना का ि ात्रण हुआ है। आवां उपन्यास में नमिता के मानवीय संवेदनाओं को उभारा गया है। सामा ािक, पारिवारिक दृष्टि से नमिता का ाीवन बिखरा हुआ है। नमिता एक घुटन भरे मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुई है। महानगर के परिवेश में संघर्ष कर रही है। 'नमिता' सामा ािक कुरीतियों का शिकार है। घर और बाहर उसे सुरक्षित समा ा नहीं मिला। आ ा के समा ा में भी स्त्री के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण बदला नहीं है। ि ात्रा मुद्गल कहती है कि स्त्री के ाेतन संपन्न व्यक्तित्व की कल्पना ही हमारे समा ा के लिए मुश्किल है। मानकर ही ाला ााता है कि पुरुष पर निर्भर हुए बिना स्त्री- ाीवन में कुछ

---

[70] भारतीय नारीःअस्मिता की पह ाान, उमा शुक्ल-पृ.67

[71] परिधि पर स्त्री, मृदुला पाण्डे-पृ.47

[72] औरतःअस्तित्व और अस्मिता, अरविंद ाैन-पृ.26

हासिल ही नहीं कर सकती। आधुनिक युग में बदलती परिस्थितियों का कारण मानवीय संबंधों में परिवर्तन तथा ब .ती बेरो ागारी ने मानव और उसके स्वभाव को संकटमय स्थिति में ाकड़ दिया है। ाीवन में फैली निराशा कुंठा का प्रभाव पारिवारिक ाीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। पुराने संबंध टूटने और नये संबंध बनने पर पारिवारिक ाीवन में तनाव ब .ं ााता है। इसका उदाहरण हम नमिता की माँ में देख सकते हैं। बेरो ागारी के कारण ब ा ों में फर्क करती है। "बेटे को अंग्रेज़ी माध्यम में डालती है।" नमिता भी पारिवारिक दशा देख कर प .ाई छोड़ देती है। नमिता को अपने परिवार में ही अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। उसके लिए घर होते हुए भी घर का व ाूद नहीं मिलता। माँ नमिता को अपमानित ओर उत्पीड़ित करने का एक भी अवसर नहीं ााने देती। माँ कहती है-"नमी की ागह आ ा हमारा ावान बेटा होता तो आपद-विपद का सहारा होता। मान लिया, लड़की कमा-धमा रही-लड़कों के बराबर कमा रही मगर ठहरी ाार दिन की ाांदनी। दफ्तर में किसी से लप्पा-डुग्गी हुई नहीं कि मिनट-खांड नहीं लगेगा प्रेम में अनारर्क बनते। लड़के की बात ाुदा। सलीम बन भी ााए तो अनारकली आती तो अपने ठिंयां-ठिकाने। कले ो की फटन मुंह को आती है। छुनुआ ाब तक मुँह में पानी डालने लायक बनेगा, यमरा ा टांग खीं ा लेंगे यमलोक।"[73] लड़की पराया धन है ाो भी करेंगे। बाहर ही ााना पड़ेगा। पर लड़का तो अपना है ैसे भी काम करे वापस घर ही लौट आयेगा। माँ के लिए नमिता को मानवीय सरोकार की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार नमिता घर में ही अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करती है।

नमिता की दोस्त स्मिता का भी पारिवारिक ाीवन अस्त व्यस्त है। उसके पिता के कारण घर में अशांति, वैशीपन छाया रहता है। उसके पिता मटका किंग हैं। हमेशा पत्नी पर अत्याकार करते रहते हैं। बेटी को बेअी न मानकर एक

---

[73] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.240-241

प्रकार से उसी की संपत्ति मानकर उस पर अत्या ार करते हैं। स्मिता की बड़ी बहन पिता के होने पर अकेले रहने से भी घबराती है। "पिता की पियक्कड़ी ने किस कदर घर का सुख- ैन छीन रखा है। मिट्टी का तेल उड़ेलकर आई (माँ) ने स्वयं को इस नरक से मुक्त करने की दो बार कोशिश की। हम दोनों बहनों ने उन्हें मुक्त नहीं होने दिया।"[74]

आगे वह कहती है कि "शराब से हम सब लड़ सकते हैं, शैतान से नहीं। वह अधिक नृशंस है। ो हर रो ा आई-ताई को रोलर सा कूटता, भूरकुस बनाता उनकी शक्लें उनसे छीन रहा। 'ताई' राक्षस के साथ अकेली घर में रहने से डरती है।"[75] ानती हो अक्सर मैं क्या सो ाती हूँ-"मैं राक्षस के ाबड़े के नी े घुट रहे अपने परिवार की कोई और तसवीर बनाना-देखना ाहती हूँ। दूरदर्शन पर दिखने वाले 'बोर्नविटा' या 'हॉर्लिक्स' के सुखी संतुष्ट परिवारों की भाँति... िास दिन नौकरी मिल ाएगी मु े, नमी, बाप-रूपी इस राक्षस को मैं सीि़यों से केल स्वाभाविक मौत मरने पर विवश कर दूँगी।"[76]

आर्थिक अभाव के कारण स्मिता पारिवारिक शोषण सह रही है। उसका पारिवारिक ीवन पिता के कारण डावाडोल है। पिता को मार कर वह सुखी परिवार की परिकल्पना करती है।

गोतमी का भी पिता के कारण पारिवारिक ीवन संघर्षमयी है। उसके पिता के कारण माँ कभी सुखी नहीं रह पायी। "शराबी व्यभि ारी पुलिस अधिकारी पति के मानसिक दैहिक उत्पीड़न से त्रस्त गौतमी की माँ ने लंबी कानूनी लड़ाई लड़ने के उपरांत ैसे-तैसे उससे मुक्ति पाई।"[77] माँ ने पुनर्विवाह किया पेशे से सुप्रसिद्ध शिल्पकार से उसके दो बेटे थे। उसके सौतेले भाई विनोद ने गौतमी को

---

[74] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.42-43
[75] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.43-44
[76] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.43
[77] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.322

अपनी हवस का शिकार बनाया ि ससे वह गर्भवती हो गई। गौतमी माँ से सब कुछ विनोद के बारे में बताना ाहती थी। पर "आडे आ खड़ा होता माँ के ीवन का कष्टमय इतिहास। माँ के उत्पीडन की साक्षी बेटी ठिठक ाती।" वह आत्महत्या करने का निर्णय करती है। और हेशा के लिए घर छोड़ देती है। गौतमी का पारिवारिक ीवन कष्टमयी, संघर्षमयी है। उसे हर समय पुरष समा ा ने ठगा है। ि सके कारण वह आत्महत्या तक उतारू हो ाती है।

नमिता की माँ का भी पारिवारिक ीवन सुखी नहीं है। पति लकवे का मरी ा है। घर की सारी ि म्मेदारियों को उसे और नमिता को देखना पड़ता है। स्वभाव की कड़वी है। हमेशा पति और नमिता को कोसती रहती है। घर लाने के लिए शाहनेन के यहाँ पापड बेलने का काम करती है। पति ाब अस्पताल में भर्ती थे तब नमिता की मौसी माँ से कहती है-"घर किसके नाम है, ी ी? कुंती मौसी का प्रश्न सुन कान खड़े हो गये उसके-नमी के बाबू ी के... और किसके। कितना सम ाया... अभी एक हाथ तो काम कर रहा ी ा ी का। मकान के काग ा अपने नाम करवा लो-माँ कहती है... छोटी, यह तो उनके सो ाने की बात थी, मेरे कहने की नहीं... कौन रा ापाट छोड़े ा रहे बिन्नो, ि सके खाने-पाने में मं ीरे ब ाऊँ कि छाती कूटूँ। लड़कियाँ पल गईं, पल ाएंगी। खैर-ठिकाने के दिन भी बहुरेंगे। ि ंता इकलौते पेटपोंछन छुन्नुवा की हो रही... गुप ुप एक ठो काम करवा दे, बिन्नो।"[78] आर्थिक अभाव मनुष्य को कम ोर बना देता है। उसकी मानसिकता कहीं अंधेरे में खो ाती है। आर्थिक अभाव स्त्री हो या पुरुष से अनित्य, ोरी तक करवा डालने में पीछे नहीं रहते। नमिता की माँ भी सास की करधनी ुरा लेती है। आर्थिक अभाव और लकवे से बीमार पति के कारण नमिता की माँ का ीवन असंतुष्ठ था। ि से वह नीरसता, म ाबूरी से निर्वाह कर रही थी।

---

[78] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.331

आवां की सभी पात्र मानवीय सवंदेनाओं की विषमता की शिकार हैं। पुरुष द्वारा शोषित, उत्पीड़ित, प्रताड़ित हैं। उनका ीवन संघर्षमयी है।

सूर्यबाला कृत 'यामिनी कथा' उपन्यास में यामिनी का मानसिक ीवन डगमगाता रहता है। शादी के बाद सास की स्वार्थी रूपी यामिनी को पसंद नहीं है। वह बेटे से प्यार करतीहै। बहू को केवल संतान उत्पत्ति का साधन व माध्यम मानती है। सास का यामिनी को बेटा घर लाने का साधन मानना, बेटे के प्रति ही सास का आदर उसे सहन नहीं होता। वह सास को कहती है-"यानी घर बनाने नहीं, किसी को घर लाने का साधन बनने आई हूँ मैं।"[79] यामिनी आदर्श बहू, आदर्श पत्नी बनना ाहती थी। पर पति के कटु व्यवहार ने उसे विद्रोही बना दिया। पति का प्यार, विश्वास उसे कभी नहीं मिला। वह असफल पत्नी और माँ के रूप में ीती रही। ीवन में प्यार भरी थपकी या आश्वस्ति के न रहने से ीवन घुटन भरा हो ाता है। वह सो ाती है-"तुमने तो कहा था-मु े कभी किसी बात की कमी नहीं होगी न। फिर अपनी बात रखते क्यों नहीं? क्यों मु े प्यार नहीं दे पा रहे हो तुम?"[80] बेटा होने पर भी पारिवारिक ीवन में उथल-पुथल ही रहती है। उसको ीवन में विश्वास और अपनेपन की कमी है। पति की मृत्यु के बाद वह सामा िक तथा आर्थिक सहारे के लिए पुनर्विवाह करती है। यहाँ भी ब ों में भेदभाव के कारण ीवन नाटकीय और दुःखी लगता है। उसके ीवन में पारिवारिक संघर्ष ही अत्यधिक है। वह पहले बेटे पुतुल को पूर्ण रूप से प्यार नहीं दे पाती। ुन ुन और पुतुल के प्यार में बंटवारा हो ाता है ि ससे असफल माँ का रूप ही परिलक्षित होता है।

'माई' उपन्यास की माई का ीवन पुरानी मान्यताओं को ेलते रहने तथा पुरानी पी ़ी की लीक पर ालने तक ही सीमित रहती है। पुरानी वि ारधारा तथा

---

[79] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.22
[80] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.21

रू ़ि सामाि क नीतयों को ोते रहना ही दर्शाया गया है। अपनी घुटन भरी िंदगी से मुक्ति तथा ऐसे वातावरण से निकलने की छटपटाहट कभी ाहिर नहीं होने देती। अपनी बेटी के माध्यम से नई पी ़ि नये मूल्यों को ीने का मार्ग तलाशती है। समा ा में स्त्री की कोई अपनी पह ान तथा अपना अस्तित्व नहीं होता है। उसका अपना रूप क्या है कहीं माँ का कहीं बेटी तो कहीं बहू का फलाने की पत्नी, फलाने की ा ी, ताई, सभी रूपों को समेटे रहती है। उसका 'स्व' का क्या रूप है उसको ानने की न तो उसे ारूरत महसूस होती है न ही इ छा। पर इस सामाि क समस्या को लेखिका ने 'माई' की बेटी के माध्यम से उठाई है। वह माँ की मृत्यु के बाद सो ाती है-"अब कहाँ से फिर शुरू करें माई के संग ीना कि वह हमारे नहीं, अपने ही रूप में हमें दिखाई दें? एक अलग माई न बाबू दादा की गठी, न हमारी गठी। अपनी ही साँसों में भी ी-भी ी।"[81] उसकी तय भूमिका में ही की गई है। बाबू की पत्नी, दादा-दादी की सेवारत न बोलनेवाली बहु और सुबोध, सुनैना की बेहद कम ोर 'माई' है, र ो नहीं। "भूमिका से मुक्त किए बिना सुनैना 'माई' को ड्यो ी से मुक्त करना ाहती है, सुनैना माई को 'माई' के रूप में पह ानती है। 'र ो' के रूप में नहीं।"[82] समा ा में स्त्री के देह को पह ाना ाता है न कि उसके अस्तित्व को। र ो को तलाशा ाए "माई की पह ान उसकी अपनी पह ान के फेर में।"[83] व्यक्ति के स्थान पर रिश्तों में बदल दी गई है स्त्री। उसके रूप और संदर्भों में स्त्री को नहीं पह ान पाना ही माई को न सम ाने का महत्वपूर्ण कारण है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के दबाव में ीती स्त्री अपनी बेटी के लिए नया रास्ता बनाती है। परंतु परंपरागत ालते नियमों से अलग नहीं है माई। "हो सके तो यहाँ एक साथ इस तरह मत रहा करो।"[84]

---

[81] माई, गीतां ाली श्री-पृ.150
[82] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.168
[83] माई, गीतां ाली श्री-पृ.146
[84] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.172

पारिवारिक व्यवस्था से बेटी को निकालने का संघर्ष करती है पर खुद व्यवस्था से बाहर नहीं निकल पाती। यह माई की मानवीय संवेदना है ि ासे सुनैन महसूस करना ाहता है।

5.3.2 ीवन घुटन भरा

विवाहित स्त्री के प्रति शोषण के विविध रूप अंतिम दशक के उपन्यासों में दृष्टिगत होते हैं। लेखिकाओं ने समा ा तथा परिवार की अमानवीय स्थिति को अपने उपन्यासों में दर्शाया है। विवाहित स्त्री के शोषण में पति ही नहीं सास भी शामिल होती है। वह स्त्री हो कर स्त्री पर अत्या ार, शोषण करती है। उसकी उपेक्षा किये बगैर उसे ैन नहीं आती। ‘यामिनी कथा’ की यामिनी की सास ऐसी ही पात्र है ो यामिनी को केवल सामग्री के रूप में तथा वारिस (बेटा) लाने का माध्यम मानती है। उसके प्रति हमेशा घृणा का दृष्टिकोण ही बनाये रखती है। वहीं दूसरी ओर ‘ ूला नट’ की शीलो की सास है ो बहु के ीवन के बारे में सो ाती है बेटा ाब उसे अपनाता नहीं तो बेटे से कहती है-"बेटा, ब्याह ालाय की बात और थी। बहू से नहीं बोला-बतलाया न सही, मगर अब तो ब्याह को ाई-तीन-साल ... बहू की ावाबदार हूँ मैं... कनास, तेरा मन ठहरा, उस अभागिन की िंदगी डूबी ा रही है।"[85] अम्मा के ालते सती बहुत पति के क्रोध की आँधी में तिनके-सी बोली तो गला भरा था, ‘बेटी प.ा-लिखा लड़का... कौन से बैरी ने घात धर दी। मोरे महादेव बुद्धि फेरेंगे तो सही। आ ा नहीं, तो कल। सबर का फल मीठा होता है। सुख नहीं रहा तो दुख भी नहीं रहेगा।’"[86] यहाँ सास ीवन दर्शन बताती है बहू को उसके भले के लिए बालकिशन का हाथ सौंप देती है। ैसे- ैसे शीलो विद्रोही बनती ाती है सास का बर्ताव भी सक्त होता ाता है। वह शीलो की उपेक्षा करने लगती है। एक दिन कह उठती है-"‘तू ही न दलिद्दिर

---

[85] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.36-37

[86] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.41

होती, तो यह घर ऐसे न उ ाड़ता।' लै, देख लै नखरा! खसम ू तों काग उड़ा करे है, रानी फुलमती रूठ के दिखा रही हैं।"[87] छिननमस्ता की प्रिया की सास भी बेटे के पक्ष में ही रहती है। वह बहु के आगे बेटे को ही महत्व देती है। भारतीय सास ऐसी है ो बेटा कपूत है निकम्मा हो बेकार हो, पर उसकी ममता के आगे सारे कुकर्म बेकार हो ाते हें। वह हर हालत में बेटे के प्यार के आगे ुक ाती है और बेटे का ही साथ देती है। उसी के हक की बात करती है। बहू उसके आगे उपेक्षित मात्र बन कर रह ाती है।

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री का वैवाहिक ीवन पति के कारण घुटन भरा हो गया है। पति ऐसा कोई भी मौका नहीं छोड़ता िससे पत्नी उपेक्षित, प्रताड़ित न हो। उसे शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से अपमानित, उपेक्षित किया ाता है। पत्नी की गलती हो या न हो उसे मारना, पीटना, शारीरिक अत्या ार किया ाता है। मानसिक रूप से उपेक्षित करना हर छोटी बात पर गाली देना उसे नी ो दिखाना उस पर अपने आधिपत्य का बोध करना पुरुष का नियम बन ाता है। विवाहित स्त्री की समस्याओं को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में ि ात्रित किया है। ूला नट की शीलो भी पति की उपेक्षा, अपमान का शिकार होती है। ाब से ब्याह कर आती है पति उसे एक नज़र भी नहीं देखता। क्योंकि वह उसकी पसंद की नहीं थी। उसने तो शहर में दूसरा घर बसा लिया था। सुमेर-शीलो की छाया से भी दूर भागने की कोशिश करता है। सुमेर की माँ ाब विवाह के दायित्वों को निभाने की बात करती है और कहती है-"दूसरी ानी... अपनी गिरिस्ती बसा बैठा सहर में ब ुर पटक दिया इस घर पर।"[88] इस पर सुमेर कहता है-"तुम्हारी छः उंगलियों वाली फल्लू बहू मेरे दोस्त को रोटी परोसने ही आ ाती, तो वह कल के दिन मु ो बोलने न देता। काले गोरे दो रंग

---

87 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.51

88 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.61

पर तुम्हारी बहू तो नीली है, बैंगनी।"[89] "सुनो अम्मा, मैं तमाशा करना नहीं ाहता नहीं तो अभी हाल इस साली की ुटिया पकड़कर ौखट के बाहर तक घसीट लाता।"[90] इस पर माँ कहती है "ठीक है, मैं तो अज्ञान हूँ बेटा... तेरी िंदगानी इतनी क ी निकली कि करिया-गोरे रंग में ही डूबने लगी। अरे सुमेर खुद को देख, नासपिटे, तू कहाँ का ंगा है, सो सिंघलदीप की पदमिनी ाहिए।"[91] इन सब बातों का सुमेर पर कोई असर नहीं होता। वह तो हमेशा तिरस्कार, अपमान, उपेक्षा ही करता रहता है। हमेशा गाली और अपमान सहकर भी शीली ुप रहती। पत्नी धर्म निभाने के लिए पू ा पाठ करती। अनमेल विवाह के कारण शीलो का विवाह दुःख में बदल ाता है। पर इससे शीलो हारती नहीं, विद्रोही बन कर परिवार का समा ा का डटकर सामना करती है। वह सो ाती है उसके दुर्भाग्य का कारण उसके हाथ की छटी उंगली है उसे ही अपने हाथ से काट कर फेंक देती है। न किसी कुएँ में ा कर प्राण देती है न ही आत्महत्या करती है। ीवन की ि ीविषा से संघर्ष कर ीवन ीती है।

‘छिन्नमस्ता’ की प्रिया भी विवाहित है। प्रिया का दांपत्य ीवन टूटने का कारण उसके पति का आ ारण है। प्रिया का घर में कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। पंद्रह साल तक प्रिया पशुवत आ ारण करनेवाले नरेंद्र को ेलती रहती है। नरेंद्र कहता है-"मैं पुरुष हूँ, इस घर का कर्ता, यहाँ मेरी म ीं ालेगी, हाँ सिर्फ मेरी।"[92] नरेंद्र हमेशा मालिक का भाव रखता है। प्रिया क्या ाहती है उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

डॉ.नीलिमा सिंह अपने वि ार व्यक्त करती है-मनुष्य के स्त्री एक रहस्य हैं, वह क्या ाहती है ानना कठिन है। हमारे यहाँ कहा गया है कि पुरुष का भाग्य

---

[89] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.37
[90] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.50
[91] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.37
[92] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.13

और स्त्री का ारित्र देवता भी नहीं ानते-मनुष्य की क्या बिसाव। स्त्री क्या ाहती है, यह इसीलिए स्पष्ट नहीं हो पाया है क्योंकि अपनी म ीं से ाहने की छूट उसके लिए एक सर्वथा अपरि ित अनुभव है। यह एक मात्र ऐसी ाति है ो कई ह ार वर्षों से पराधीन है इसीलिए स्त्री को अंतिम उपनिवेश कहा गया है।"[93]

पति के हाथों अपमानित उपेक्षित है। पति उसे केवल भोग्या ही मानता है। उसे किसी प्रकार से भी उसकी सम ा से ीवन ीने नहीं देता। हर छोटी-से-छोटी बात पर ि ़ना, गाली देना, मारना, उपेक्षित करता रहता है। िससे उसका ीवन घुटन भरा हो ाता है। उसे तो इतना हक भी नहीं कि वह पति के पैसे अपने ऊपर ख र्ि करे। प्रिया सो ाती है-"घुटन ब ़ती गई थी। मन लगाने के लिए मैं किताबों में खोई रहती, पर क्या वहाँ भी नरेंद्र ुप रहता? ... "इन्टेलेक ुअल शो ऑफा" खरीदी हुई किताबों को देखकर कहता, "बेकार पैसा फूंकती हो, क्यों नहीं नैशनल लाइब्रेरी से लाकर प ़ती? इन किताबों के कारण कमरे की शक्ल और बिगड़ गई है िधर देखो, उधर ेर लगा रखा है।"[94] हर समय रोकना टोकना उसके हिसाब से ीवन बिताना घुटन भरा हो गया था। मानसिक तकलीफ की िसको बयान न कर सके। संबंधों का इतिहास होता है, पर घटनाओं की तारीखें नहीं हुआ करतीं। कब और कौन-सी घटना ने हमें अलग-अलग दिशा में केलना शुरू कर दिया, याद नहीं आता। शायद सुहागरात पर या फिर हनीमून पर या फिर सं ु पैदा होने पर पता नहीं हमारे वि ारों की खाई हमेशा गहरी होती गई िससे हमारे संबंधों को टूटना ही था। विवाह का ीवन दोनों दंपतियों के परस्पर समान भावनाओं एवं सम्मान ानक व्यवहार पर आधारित है। पत्नी का स्थान दाम्पत्य में सिर्फ सेविका, परि ाायिका, अभिभाविक अथवा दासी का न होकर समानधर्मी, सहमानव का होना ाहिए। यही लेखिका ने दर्शाने की कोशिश

---

[93] सैद्धांतिकता से यथार्थता के धरातल पर अग्रसर, डॉ.नीलिमा सिंह-पृ.199,स्त्री विमर्श:विविध पहलु से उद्धृत

[94] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.154

की है। स्त्री अब इस सर्वकालिक सत्य को ानने लगी है। िससे वह विद्रोही भी कहीं-कहीं नज़र आती है। प्रिया भी इसका उदाहरण है ो त्याग, संयम, समर्पण, सेवा को महसूस करती है। पर अपने अस्तित्व को घुटता हुआ नहीं देख सकती। वह कहती है-"वैवाहिक ीवन को निभाना, दोनों की बराबर िम्मेदारी है और कहीं कुछ गलत घटता है तब क्या हम दोनों ही अपराधी हुए? हाँ, यह मेरी गलती थी कि मैंने गुलामी स्वीकारी... गुलाम बने रहने की नियति को अपना भाग्य सम ा... कोई एक घटना हो तो उसका विश्लेषण करूँ। हमारे वैवाहिक ीवन का कोई एक पक्ष कम ोर होता तो ालो मैं उस फालि ा को स्वीकार कर लेती, पर ाब बात पूरे अस्तित्व पर आ ाए, तब?"[95] स्त्री का आदर नरेंद्र नहीं ानता- "तुम कटखनी बिल्ली, कमीनी औरत, बेवकूफ ैसे अपशब्द उसके लिए कहे ाते। मारना, ी ें उठाकर मुँह पर फेंकना, मुँह पर थूकना, कितना निर्ल ा होता है सब सहना, "एक व्यवस्था िसमें अपनी पूरी ईमानदारी के बाव ूद मैं मिसफिट हो रह गई।"

'यामिनी कथा' की यामिनी भी पति की उपेक्षा की पात्र है। इनके ीवन में भी वि ारों, भावनाओं की कमी है। पति बाहर नौकरी करता है। िसके कारण उसकी इ छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती। पति न उसे खुश रख पाता है और न ही उसके मन को पूछता है िसके कारण ीवन घुटन भरा हो ाता है। पति से वह प्रेम की आशा रखती है। पर पति शारीरिक सुख को ही महत्व देता है। यामिनी वैवाहिक ीवन में घुटन को स्पष्ट करते हुए कहती है-"मैं तड़पड़ाती, घुटती, डूबती ाली ा रही हूँ। किसने कहा है मु ासे इस भंवर में घुटते ाले ाने को? यामिनी ीवन से संतुष्ट नहीं है। वह सो ाती है-तुमने तो कहा था कि मु ो किसी बात की कमी नहीं होगी।"[96] पर वह पति को कभी बोल नहीं पाती अपूर्ण पत्नी के

---

[95] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.153

[96] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.21

रूप में रहती है। असंतुष्ट होकर पति से कहती है-"तो मेरी बड़ी विडंबना यही है कि मैं आपके ीवन में तब आई ाब आपके पास देने-लेने के लिए कुछ है ही नहीं।"[97] इस घुटन भरे ीवन को ेलते हुए वह तलाक लेने की भी सो ाती है। पर ले नहीं पाती। आड़े आ ाता है उसका विश्वास और सामा िक दायित्व। आर्थिक विपन्नता और बेटे का वि ार। यामिनी का विवाहित ीवन घुटन भरा है पति और उसकी नौकरी के कारण।

'दिलो दानिश' में भी पति द्वारा शोषित पत्नी की आत्मपीड़ा को दर्शाया गया है। (पति) कृपानारायण (पत्नी) कुटुंब प्यारी को मानसिक तनाव से शोषित करता है। कुटुंब का वैवाहिक ीवन संतुष्ट नहीं है। क्योंकि पति दूसरा घर बसाए हुए है। पति की दूसरी औरत महकबानो है। उसके दो ब े भी हैं। इस बात को लेकर दोनों में हमेशा तकरार और बहस होती रहती है। वह पति को दूसरे घर ाने के लिए हमेशा रोकती है। पर वह कोई-न-कोई बहाना बना कर ाला ाता है। ि ससे उसका वैवाहिक ीवन दुःखी, घुटन भरा हो ाता है। पति को कोसती हुई सो ाती है अगर वहाँ कोई ना ाने वाली होती तो दूसरी बात थी। पर वहाँ तो पति ने दूसरा घर बसा रखा है और पति से कहती है-"फिर ऐसा क्या है वहाँ ो आप उसे दूसरा घर बनाए हैं? अगर फराशखानेवाला घर किसी ना ाने-गानेवाली के कोठे-सा होता तो न हम रोते और न ही तड़पते-कलपते।"[98] पर वहाँ तो दूसरी पत्नी और ब े हैं। वहाँ की मुहब्बत से आपको हमारे लिए फुरसत कहाँ है। "हम तो निबाहे ाले ा रहे हैं। अपने तई यह म े में है। ान छिड़के हुए है उन पर।"[99] पति की मनमानियों पर विद्रोह बन ाती है। "कहे देते हैं आ ा हमें छोड़कर आप कहीं नहीं ाएंगे। ... ौबीसों घंटों महबूब बने फिरते हैं आप यह बताइए कि तैयार कहाँ को हो रहे थे। वहीं न ाहाँ आप गिरवी पड़े हैं। औलाद

[97] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.24
[98] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.95
[99] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.80

कंधों पर पहुँ ा गई, अब भी आशिक बने घूमते हैं।"[100] ताने मारने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती। हमेशा महक और उसके ब ों को लेकर संघर्ष ालता रहता है। कुटुंब पति के कारण विवाहित ीवन में सुखी नहीं है। हमेशा तड़पना, खि ाना, कुड़ती रहना, सो ाते रहना। इस प्रकार के मानसिक तनाव के कारण कठोर बन ाती है। ि ड़ि ड़ापन उत्पन्न होने के कारण न पति की उपेक्षा करती है, सास-ननंद घरवाले सभी सदस्यों को नहीं छोड़ती। यही समस्या 'अपने अपने ेहरे' की रीतु भी ेलती है। पति कृणाल लखपती घर की स्त्री से प्रेम करता है। और अलग घर बसाए हुए है। पत्नी को पूहड़ गंवार मानता है। उसकी उपेक्षा करता है। आत्मनिर्भर न होने के कारण पति पर आश्रित रहती है।

आवाँ की 'उर्मिला' नमिता की माँ अपने विवाहित ीवन से संतुष्ट नहीं है। उसकी इ छाओं के अनुसार उसका परिवार नहीं है। पति-पत्नी के सो ा-वि ार मेल नहीं खाते। उनके स्वभावों में काफी अंतर है। पति हमेशा 'कामगार आघाडी' के कामों में व्यस्त रहता है। इन कामों के सिलसिले में यूनियन के सदस्यों को घर भी ले आता है। इस पर माँ सो ाती है-"लावारिस कुकरों की भांति इस घर को खंभा बनाए रात-दिन मूतते यूनियन वालों ने? अनप ़ आई थी तो क्या औरत नहीं थी?"[101] पति से हर बात पर खि ाती रहती है। पति को लगवा मारने पर घर की ि म्मेदारी माँ पर आन पड़ता है। कुछ दिनों तक तो संभालती है 'श्रम ीवी संस्था' में पापड़ बेलने का काम करती है। पर ल्द ही ऊब ाती है और अपने दायित्वों का बो ा नमिता पर डालकर निश्ि ंत हो ाती है। बेटी को घर के दायित्वों को निभाने के लिए कहती है-"कहाँ-कहाँ मरूँ और क्या-क्या करूँ? ि से देखा डिप्टी कलेक्टर बनने में अधिया रहा। मूड़ने को ब ा गई मैं अनप ़ गंवार ... ारखरीदी बांदी।"[102] अपनी इस मानसिकता के ालते

---

[100] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.156

[101] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.404

[102] आवां,, ि त्रा मुद्गल-पृ.25

बेटी पर भी अत्या ार करती है। हमेशा बेटी की उपेक्षा करना, डांटना, गाली देना, मारना पीटना करती है। अपनी कुंठा संत्रास, आर्थिक विपन्नता को बेटी के माध्यम से निकालती है। यहाँ आर्थिक तंगी के कारण स्त्री अपनी कुंठा के कारण संघर्षरत है।

स्मिता की माँ का ीवन पति 'मटका किंग' के कारण घुटन भरा दमित है। घर में अत्या ार, अमानवीय व्यवहार, ानवरों से भी गया गु रा ीवन ीती है। पति अपनी हवस का शिकार बेटी को बनाता है। विद्रोह करने पर मारना-पीटना, उपेक्षित-प्रताड़ित करना, गाली-गलो । यह सब दिन-प्रति दिन लता रहता है। शराबी, हवसी पति के आगे वह निसाह-कम ोर हो ाती है। वहशी भूख, अपमान, अमानवीय व्यवहार से लि ात होती है। पर कभी डटकर पति का सामना नहीं करती। इसी प्रकार गौतमी की माँ भी पति के कारण अपमानित, उपेक्षित, प्रताड़ित शोषण का शिकार है। इन्हीं सब दमन के कारण एक दिन "शराबी व्यभि ारी पुलिस अधिकारी पति के मानसिक दैहिक उत्पीड़न से त्रस्त गौतमी की माँ ने तलाक ले लिया।"[103]

कोई अपनी आकांक्षाओं के कारण कोई पति के अपमान-अत्या ारों के कारण समस्याओं से ू । रही है। सभी की समस्या का कारण पति है ि सके कारण विवाहित ीवन दुःखी, घुटनभरा, नरक बन गया है ि ससे निकलने के लिए स्त्री छटपटाती नज़र आती है। अपने ीवन से संघर्षित दृष्टिगत होती है।

'अपनी सलीबें' की नीलिमा और 'कठगुलाब' की स्मिता, नमिता, मारियान, असीमा की माँ, नर्मदा सभी पात्र पति के कारण किसी-न-किसी समस्या से ू । रहे हैं। कोई अकेले होने की समस्या से ग्रस्त है कोई मातृत्व की, कोई आर्थिक विपन्नता की कोई सामा िक दायित्वों की, कोई ाति की तो कोई अपने ही आत्मनिर्भरता की। नीलिमा ाति की समस्या से ू । रही है। शादी के पाँ ।

[103] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.322

साल बाद ाब उसे पता ालता है कि उसका पति निम्न वर्ग की ाति का है तो उसके पैरों तले ामीन खिसक ाती है। नीलिमा एक रा ापूत ामींदार घराने की बेटी है। रा ापूत होने के अहंकार के कारण शादी को ‘धोखा’ मान कर पति से ागड़ा करती है और कहती है-"तुम ूठे और धोखेबा ा हो। ाल सा ा ... तुमने अपनी ाति छिपाई। तुम रि ार्व कोटा के हो... मैं तुम्हारी शक्ल एक मिनट के लिए भी नहीं देखना ाहती। मैं कल ही ाली ाऊँगी यहाँ से। बेईमान..."[104] अपने खानदान के अहंकार के कारण प्रेम और ाति में भेद नहीं कर पाती। पति को हमेशा के लिए छोड़ आती है। नीलिमा की समस्या ाति की है।

विवे य उपन्यासों में विवाहित स्त्री पति के कारण कई समस्याओं का सामना कर रही है। सास की परिवार वालों की उपेक्षा की पात्र बन कर ीवन की छटपटाहट में ी रही है। परंपरा की ाकड़बंधी के कारण, पति के अधीन रहने के कारण, सास अन्य परि ानों से उपेक्षित होने के कारण स्त्री विवाहित होने पर अनेक समस्याओं का सामना कर रही है। पति के व्यभि ार, अत्या ार, अवमानना, मानसिक तनाव के कारण शोषण का शिकार है। याने विवाहित स्त्री का ीवन घुटन भरा, उपेक्षित है।

कबूतरा समा ा में ऐसी विषमता थी कि क ा समा ा उन पर कहर ाते थे। ाब होली के समय सारे आदमी मौ ा मस्ती कर रहे थे तब पुलिस ने हमला बोल दिया पूरे कबूतरा समा ा में दहशत फैल गई। पुलिस का नंगाना ा, ामुनी पेट से थी। पुलिस उसे देख उसकी उपेक्षा करता है। कहता है "साली बे ाो दारू, पिलाओ मद और कहाँ माँ? कहाँ बेटा? कहाँ भाई? कहाँ पिता? औरतों को आदमी खीं ाने लगे। रिश्ते आँखों में ाुभ रहे हैं।"[105] ामुनी मर गयी गाँव के लाठी-कुल्हाडी ालाने वाले मर्द घायल ोर से ला ाार और हम ौसी औरतें नंगी

---

[104] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.102

[105] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.44

गोपिका-सी छिपने को बेबस... औरतें लाश कैसे फूँके? धर्म में मनाही है। उस पर ठेकेदार का रोब। हम हमारी और अपनी बेटियों की इ ात ठगने को असहाय। ब ो गाँव के घरों के क ारे से गंदे कपड़े लाये। ि ाथड़ों को डेरों में फेंक दिये। समा ा के ठेकेदार ऐसी ाति के प्रति रुग्ण बन ाते हैं। कबूतरा समा ा की औरतें समा ा के हर शोषण से पीड़ित हैं। उसे उपेक्षित, प्रताड़ित, हर समय किया ाता है। वह समा ा और ीवन से सम ौता करती हुई खुद बेइ ात हो ाती है।

ि ात्रा मुद्गल कृत 'एक ामीन अपनी' में मानवीय संवेदनाओं के मूल्यों को दर्शाया गया है। पुरुष द्वारा बनाई गयी सामाि ाक व्यवस्था हमेशा उसे ाारदीवारी में रखने को तत्पर है। परंपरागत रू ि याँ उसे बंधन मुक्त नहीं होने देता। "दुःख तो यह है-आ ा का अधिकांश प ा-लिखा वि ाारशील होने का दावा करता हुआ स्त्री-समा ा, स्त्री-स्वातंत्र्य, स्त्री समानता और उसके अधिकारों की लड़ाई लड़ता हुआ भी नहीं ानता कि वे अधिकार वस्तुतः हैं क्या। कैसे होने ाहिए? किस रूप में ाहिए? उसकी सामाि ाक छवि कैसी हो? दृष्टि परिमाि ात करनी है। तभी केवल तभी वह समा ा में मनुष्य की तरह ीवित रह सकती है। ि ास प्रकार पुरुष अपनी सारी व ि ना हीनता के साथ गर्व से रहता है स्त्री क्यों नहीं मुक्त होती इन फरेबी मर्यादाओं से? ि ास दिन वह कुंठाओं से मुक्त होगी, उसके सारे कष्ट कट ाएंगे-स्त्री की सामाि ाक छवि को दूषित करने के लिए स्त्री भी ि ाम्मेदार है। पुरुष को मांग में स ााकर बैठाए रखने को इतनी आतुर क्यों होती है पुरुष से स्वतंत्र होना हो तो पहले उन्हें सिंदूर पोंछना होगा। बिछुए त्यागने होंगे। दासीत्व के प्रतीक ि ाह्न। यह इस्तेमाल अधिक खतरनाक है। उससे तो पहले मुक्त कर लो उन्हें।"[106] सामाि ाक व्यवस्था में ही स्त्री के स्थान को कम ाोर बनाया गया है। तलाकशुदा स्त्री के प्रति सामाि ाक दृष्टिकोण घिनौना रहता है। वह

---

[106] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.126-127

किसी पुरुष के गुणों की प्रशंसा भी नहीं कर सकती। "हरींद्र ने उसे अकेले में सम ाया भी था कि वह उसकी अ छाइयों का गुण-गान साविताके सम ा न ही करे तो बेहतर है। इस पर अंकित सो ाती है-"यूँ भी कि एक तलाकशुदा स्त्री का किसी के पति के विषय में उसके गुणों और आत्मीय सहयोग की साधिकार ा र्ा, उनके संबंधों को संदिग्ध बनाती है।"[107] अतः स्त्री के वि ार कितने भी अ छे हों पत्नियाँ शक किये बगैर नहीं रहती। परंतु साविता ैसी स्त्री स्वयं पति की प्रशंसा कर सकती है। पर दूसरी स्त्री, स्त्री के मुख से पति की व्यक्तित्व संपन्नता की बड़ाई उन्हें कभी-भी ह ाम नहीं होती। वह प्रशंसा का दूसरा ही कारण खो ने लगती है। तलाकशुदा स्त्री को सामा ाक सम्मान बिलकुल नहीं मिलता। स्त्रियाँ ाब नौकरी करने अकेली रहती है तो मकान मालकिन की दृष्टि उसकी ओर साशंक बनी रहती है। समा ा की दृष्टि उन पर अ ाीब सी बनी रहती है। इन सभी समस्याओं में स्त्री का ाीवन तनावपूर्ण रहता है। समा ा में तलाकशुदा, अकेली स्त्री का असुरक्षित ाीवन ही है। समा ा के डर के कारण वंदना नापसंद रिश्ता भी मं ाूर करती है। सामा ाक भय के कारण क्लर्क हरिश के साथ शादी करती है। याने स्त्री का कहीं भी सामा ाक सुरक्षा नहीं है।

5.3.3 तलाक : एक अभिशाप

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में तलाक पीड़ित स्त्रियों का ात्रण हुआ है। ाब पति लगातार पत्नी पर शोषण करता है शारीरिक और मानसिक तनाव लगातार देता है, तब इस ां ाल से छुटकारा पाने का एक ही सहारा होता है 'तलाक'। पति से छुटकारा मिल ाता है पर परिवार, समा ा से उपेक्षित-प्रताड़ित होती है। 'कठगुलाब' की मारियान का उत्पीड़न पति द्वारा छल से परिपूर्ण है। इस उपन्यास में प्रगति और परंपरा का संघर्ष है आंतरिक उत्पीड़न की पीड़ा है। स्मिता भी पति के पुरुषी अहम और उसके अमानवीय व्यवहार,

---

[107] एक ामीन अपनी, ात्रा मुद्गल-पृ.47

उपेक्षा, प्रताड़ना को ोल नहीं पाती, तलाक लेती है।'छिन्नमस्ता' की प्रिया को विवाह के बाद पति से उपेक्षा एवं प्रताड़ना मिली, नरेंद्र में हमेशा पुरुष सत्ता का अहम ागृत देख, उसमें काम भावना की अति को सहन न कर पाने की स्थिति को देख उससे दूर होती गई। ऐसे घुटन भरे ीवन से ऊब कर आत्मनिर्भर बन कर व्यवसाय करना ाहती है। पति अनेक अवरोध अड़ ान पैदा करता है। इन सब तनावों के निर्माण से दोनों में बंधन वि छेद हो ाते हैं। प्रिया 'तलाक' ले लेती है। 'एक ामीन अपनी' की अंकिता भी तलाक पीड़ित स्त्री है। अंकिता भी पति की उपेक्षा, अपमान, अन्याय को एक हद तक सहती है। पर अति होने पर तलाक लेती है। 'आओ पेपे घर ालें' में भी तलाक की समस्या को दर्शाया गया है।

समा ा में तलाकशुदा स्त्री को देखने का दृष्टिकोण बहुत ही भद्दा है। परिवार में समा ा में स्त्री कई समस्याओं का सामना करती है। उसकी पहली समस्या अकेलेपन की होती है। दूसरी आर्थिक, और तीसरी मकान मिलने की। क्योंकि सभी सामाि ाक मानव, तलाक पीड़ित स्त्री के हेय दृष्टि से देखता है। उस पर अपना अधिकार ामाने की कोशिश करता है। इन सभी सामाि ाक विसंगतियों को देखते हुए प्रिया सो ाती है-"कभी क्षोभ, कभी दुख और पीड़ा, कभी अधैर्य निषेधक भावनाओं के थपेड़े खाती मैं ि ांदगी को विधेयक कैसे बनाऊँ... नैतिक विवाद का विषय नहीं... कैसी ि ांदगी मैं ी रही हूँ? यह कैसी तस्वीर है और इसे कैसे स ाऊँ, ताकि व्यवस्था की निगाह बदले और वह मेरी तस्वीर को स्वीकार करे? पर यह अंधी ि ाद! असंभव कल्पना और सामाि ाक व्यवस्था से ुनौती... नहीं मैं हार नहीं मानूँगी, और बड़ी कीमत दूँगी... बड़ी आहुति। पर अपने को ब ाने में लगा स्वयं के आत्मसम्मान पर यह परिवार और समा ा के कई प्रश्नों को ोती-शिकायतें और ारों ओर शिकायतें-प्रश्न पूछती हुई आँखें, व्यंग्य से देखती हुई आँखें, घृणा से ालती हुई आँखें? ... इस औरत को हम कैसे अपने घर बुलाएँ? कैसे सम्मान दें? कल हमारी भी बहू-बेटियाँ ऐसे ही कदम उठाएँगी। गलत उदाहरण है बिल्कुल गलत। मैंने समा ा के एक प्रतिष्ठित खंभे पर हाथ

उठाया था।"[108] सामा िक और पारिवारिक व्यवस्था से ू ाती प्रिया की समस्या उसके आत्मसम्मान को आत्मनिर्भरता को कम ोर बनाने पर तुली है ि ससे प्रिया सो ाती है-"प्रिया, क्या तुम कोने में घुसती ा रही हो? ... यह मैं कैसा निष्कासन ोल रही हूँ? खुला अपमान, सीधे-सपाट लांछन, लोगों के ताने व्यंग्य... समा ा के ये फिकरे कि नरेंद्र की पत्नी आवारा हो गई है... बहिष्कृत ि ंदगी... मेरे परिवारवालों, नाते-रिश्तेदारों, यहाँ तक कि मिलनेवालों के ेहरों पर एक अ ीब भाव होता... नहीं, तुम भीतर मत ाओ, तुम हमारा परिवार नहीं, परिवार का कलंक हो। ... एक पूरी हीनग्रंथ, खंडित आत्म-तस्वीर, एक टूटा हुआ अक्स, ि समें मु े कभी मेरा ेहरा साफ नहीं दिखा।"[109] सामा िक, पारिवारिक विषमता के लते तलाकशुदा स्त्री के आत्मसम्मान को ठोस पहुँ ाती है। हिंसक आक्रोश के कारण आत्मग्लानि के कारण भगवान से भीख मांगने लगती है। तलाकशुदा स्त्री पर दोहरे रूप से शोषण लता है ि सके कारण वह ीवन को त्याग देना ाहती है।

'आओ पेपे, घर लें!' की एलि ा भी तलाकशुदा स्त्री है ि से तलाक से उत्पन्न समस्याओं का शिकार होना पड़ा है। पति क्लारा ब्राऊन के साथ प्रेम करता है तो एलि ा उसे बर्दाश्त नहीं कर पाती। वह पति से अत्यधिक प्यार करती है ि सके कारण तलाक लेना नहीं ाहती। पर हालात ऐसी पैदा हो ाती है कि उसे म बूरी के कारण तलाक पत्र पर दस्तखत करने पड़ते हैं। लती समस्याओं के कारण पति से तलाक लेना आवश्यक बन ाता है। इस प्रकार स्त्री के लिए तलाक एक बड़ी समस्या है ि सके कारण स्त्री अपनी व्यथा पर रोती है निराश होती है, तड़पती है पर हाथ कुछ नहीं आता। अकेले ीवन बिताने के सिवाय।

---

108 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.200

109 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.201

‘एक ज़मीन अपनी’ की अंकिता भी इसी विषम समस्या से ू ा रही है। पति उस पर अपना पूर्ण अधिकार मानकर उस पर अपनी म ीं लादना ाहता है। पति के अनुसार ालने पर म ाबूर करता है। ाहे वह सही हो या गलत। विरोध करने पर अपमान, उपेक्षा, अत्या ार। इन सब स्थितियों से ऊब कर अंकिता तलाक ले लेती है। तलाक लेने के बाद उसे समा ा में बहुत से संकटों का सामना करना पड़ता है। तलाकशुदा स्त्री की तरफ देखने की समा ा की दृष्टि अ छी नहीं रहती। यही समस्या अंकिता की भी है-"औरत की स्वतंत्रता उसकी सबसे बड़ी दुश्मन है, दुश ारित्रता का प्रमाण पत्र। सुधांशु से तलाक लेने पर आस-पड़ोस ने ही नहीं, पूरे शहर ने छींटाकशी की थी... नौकरी करनेवाली लड़की कहीं घर में बंद होकर टिक सकती है? अरे, इसका तो अपने फुफेरे भाई के साथ पुराना ाक्कर था, दुल्हे ने रंगेहाथ पकड़ा तो...?"[110] तलाक हो गयी खुर ाते हुए। लोगों की नज़रों का एहसास बल्लम की नोक ैसा काम करते हैं। ि ासके कारण ाीवन ाीया नहीं ाा सकता। अकेले होने का फायदा हर कोई उठाना ाहता है। मि.सक्सेना भी पार्टी में अंकिता से छेड़छाड़ करता है। उसके व्यवहार से अंकिता तिलमिला उठती है। घृणा और वितृष्णा से भर उसकी उपेक्षा करती है। "वह सुअर का ब ाा सक्सेना... पीने के बाद होश गंवा बैठा... उसने कंधे पर ही हाथ नहीं रखा था... पार्टी की बात थी नहीं तो ाप्पल उतार लेती... सिखाती लड़कियों से पार्टियों में कैसा सुलूक किया ाता है।"[111] समा ा की शादीशुदा स्त्री तलाक शुदा स्त्री को शंका की दृष्टि से देखती है। हरींद्र अंकिता की मदद करता है। तो अंकिता उसकी अ छाइयों की तारीफ करती है। इस पर हरिंद्र पत्नी के समक्ष अ छाइयों का गुणगान करने पर मना करता है क्योंकि वह अंकिता को शक की न ार से देखती है। इस पर अंकिता सो ाती है "यूँ भी कि एक

---

[110] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.31
[111] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.40

तलाकशुदा स्त्री का किसी के पति के विषय में उसके गुणों और आत्मीय सहयोग की साधिकार ा ार्, उनके संबंधों को संदिग्ध बनाती है। ऐसी स्त्रियों को आत्मदया और आत्मप्रताड़ना में ीने का सुख मिलने लगता है वे ... संदर्भानुसार देखने-सम ाने में ही विश्वास रखते हैं। ऐसे लोगों की कुंद दृष्टि अपने पार के संसार को न देखना ाहती है, न उसे गहरे पैठ कर छूना।"[112] ो स्त्री पति से अलग ीवन ीती है, उसके साथ दाल में कुछ काला है, ाहे पति के साथ रहते हुए वह पूरी दाल को ही काला-पीता करती हो। सामा िक आड़ में सब नैतिक। तलाकशुदा स्त्री कितनी भी पवित्र हो, समा ा उसे ीने नहीं देता, अकेली रहने पर तो समा ा में ीना और भी हानिकारक, समस्याओं से घिरा हो ाता है।" तलाकशुदा स्त्री सामा िक और नैतिक रूप से स्वतंत्र नहीं है। वह आ ा भी परंपरागत मान्यताओं से ुड़ी है। विषम परिस्थितियों में भी पति के साथ रहने का प्रयास करती है। पर शोषण के अतिक्रमण से हताश होकर तलाक लेती है। कारण दाम्पत्य ीवन में संघर्ष या मतभेद, असामं ास्य स्थिति विवाह वि छेद कर लेते हैं। बाह्य रूप से पुरुष कितना ही प्रगतिवादी, उदार बनने का आडंबर र ाता रहे, किंतु आंतरिक रूप से आ ा भी वह नारी के स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति स ागता को देखना नहीं ाहता।"[113] तलाक के बाद स्त्री अपने पिता के घर ाती है पर अंतिम दशक के उपन्यासों में तलाक के बाद स्त्री अपने पिता के घर भी नहीं ा सकती क्योंकि परिवार वाले उसके फैसले से समर्थ नहीं रहते, पुरानी परंपरा पर ालते हैं। प्रिया इसका अ छा उदाहरण है। कठगुलाब की स्मिता भी इस समस्या की शिकार है। मारियान भी इसी स्थिति से गु ारती है। य सभी नायिकाएँ आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन कर नौकरी कर अपना ीवन बिताती है। अकेले ही ीवन ीती है।

---

112 एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.47

113 साठोत्तर हिंदी साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, डॉ.निर्मला-पृ.73

तलाकशुदा स्त्री अकेलेपन, आर्थिक अभाव, सामा िक पारिवारिक उपेक्षा, सामा िक अवमानना की शिकार है।

5.3.4 विधवा की स्थिति

आ ा भी भारतीय समा ा में विधवाओं का ाीवन अटूट बंधनकारी है। उसे समय-समय पर तिरस्कृत, उपेक्षित किया ााता है। विधवा को शुभ कार्यों में हस्तक्षेप तथा मंगलकार्यों में उसकी उपस्थिति घृणात्मक मानी ााती है। विधवा की समा ा में होनेवाली अमानवीय दशा में अंतिम दशक के उपन्यासों में परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया गया है। विधवा का पुनर्विवाह का समर्थन देकर इस समस्या पर उपाय तलाशा है। पर समा ा की परंपरागत रू ़ियाँ इसका समर्थन नहीं करती। आ ा भी परंपरा का पालन अत्यधिक सतर्कता एवं कठोरता से किया ााता है। विधवाओं की ामीन ाायदाद हड़पना उन पर दोहरा शोषण करना, विधवा समस्या आ ा भी पुरानी लीक पर ाल रही है। 'इदन्नमम' की बऊ विधवा है बऊ की दु ःखद स्थितियों का ाित्रण किया गया है। बऊ की दयनीय कथा है, गोविंद सिंह, अभिलाख, रतनसिंह ौसे पुरुष सत्ताधारी भेड़िये बऊ की ामीन ाायदाद हड़प लेते हैं। बेटे को मौत के घाट उतार देते हैं। विधवा बहू प्रेम रतनसिंह के साथ भाग ााती है। बऊ असहाय होकर अपनी पोती मंदा को दादा पं ामसिंह की पनाह में श्यामली ले आती है। ाहाँ से उसका ाीवन-संघर्ष शुरू होता है। गाँव छोड़ने पर भी रतनसिंह उनका पीछा नहीं छोड़ता। बऊ को मिट्टी में मिलाने का निश ाय करता है। बऊ का बहू के कारण गांव, घर छोड़ने पर दर्द होता है। क्रोधित होकर मंदा को कहती है-"लिवाकर लाएगी?.. उस ठगिनी को? उसी के कारण तो छूटा है घर-गाँव। उसी बेहया के कारण भे ाना पड़ा था हमें यहाँ संदेश। माँगनी पड़ी सरन और भीख लेनी पड़ी प्रानों की। नहीं तो हम दम-में-दम रहते अपनी ाौखट न छोड़ते।"[114] यहाँ बऊ परंपरागत विधवा स्त्री है ाो

---

[114] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.48

अपनी परंपरा के हिसाब से ालती है। प्रेमा इसके विपरीत विधवा है िसने परंपरागत बेड़ी को तोड़ा है। पति की मृत्यु के बाद ावान विधवा प्रेम की ऐयाशी, बेटी की तरफ दुर्लक्ष अवैध यौन-संबंध स्थापित करने की और आकर्षक सभी बातें यहाँ प्रेम के वैधव्य की मर्यादाओं का उल्लंघन करती है। प्रेम का ित्रण यहाँ "व्यक्ति नहीं, सिर्फ वस्तु है, भोग्या और पुरुष की संपत्ति, बस।"[115] यहाँ पर पुरानी परंपरागत विधवा स्त्री बऊ और परंपरागत मुक्त आधुनिक विधवा स्त्री प्रेम के बी ा का ानलेवा संघर्ष दर्शाया गया है। मंदा को किसी भी हालत में प्रेम को देना नहीं ाहती बऊ, मीन ायदाद को हड़पे ाने की बेबसी। इन सब समस्याओं से ू ाते बऊ ोगन बनने की सो ाती है-एक मन में तो आता है कि लूहर में ाए सब मीन- ायदाद। आग लगै। हम तो ोगिन-बाविन होंके निकर ाएँ किताऊँ।"[116] बऊ सभी प्रकार से समस्याओं से घिर ाती है। बहु प्रेम बऊ पर केस करती है मंदा को लेने के लिए। मीन ायदाद के लिए वारिस की आवश्यकता होती है तो मकरंद को गोद लेना ाहती है। इस उपन्यास में विधवा किन-किन समस्याओं से गु ारती है उसे दर्शाया गया है।

'यामिनी कथा' की यामिनी को भी विधवा की समस्या से ू ाते दर्शाया गया है। वह अपने आर्थिक एवं भावी ीवन के लिए पुनर्विवाह करना ाहती है। पर समा ा उसे अपना ीवन अकेले ही गु ारने के लिए बाध्य करता है। आर्थिक एवं सामाि ाक सहायता के लिए वह विवाह करने की सो ाती है। पर सास उसका साथ नहीं देती। उसकी उपेक्षा करती है। उस पर शक करती है। कहती है तुम्हें तुम्हारे बेटे का तो ख्याल रखना ाहिए। यामिनी इन सब पर ध्यान नहीं देती। निखिल से विवाह कर लेती है। सो ाती है सामाि ाक बंधन तो केवल स्त्री के लिए होते हैं। पुरुष के लिए कोई सामाि ाक नियम नहीं होता। विधवा को समा ा में

---

[115] औरतःअस्तित्व और अस्मिता, अरविंद ैन-पृ.103
[116] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.112

रहना मुश्किल हो ाता है। यामिनी ने तो सामा िक बंधनों को तोड़कर सास की और दुर्लभ्य करके विवाह किया हे और सास को कहती है-"अब तक की सारी िंदगी मैंने सबका ध्यान ही रखते हुए बिताई है माँ ी और अपनी ड्यूटी ब ाने में कभी कोई किसी तरह की लापरवाही भी नहीं बरती... यहाँ तक इस ड्यूटी से अलग अपने सुख-दुःख नाम की भी कोई ीज़ होती है कभी ध्यान ही नहीं आया।"[117] "इतने वर्षों से उदास रहते-रहते, निरंतर ू ाते- ू ाते मैं थक गई हूँ पुतुल। और अब सबसे पहले हमें एक सहारे की ारूरत है, आर्थिक सहारे की भी।"[118] यहाँ यामिनी ने आर्थिक सहारे के कारण निखिल से पुनर्विवाह कर लिया है। नौकरीपेशा न होने के कारण दुबारा शादी करना ाहती है। यामिनी के माध्यम से स्त्री को स ेत किया गया है कि स्त्री के लिए आर्थिक सहारे के लिए नौकरी, व्यवसाय, उद्योग महत्वपूर्ण है िसके सहारे तो अपने ब ों की परवरिश, पालन-पोषण अपने बलबूते पर कर सके। अपना व्यक्तित्व कायम रख सके।

'छिन्नमस्ता' की प्रिया की माँ कस्तूरी विधवा होने पर परिवार की िम्मेदारियों को निभाने में कई समस्याओं का सामना करती है। " ो भी हो, ैसी भी हो... अम्मा म ाबूत नहीं रहती तो ा ा लोग हमें रास्ते पर बैठा देते। कुल मिलाकर एक ओर भोली संवेदना थी, कोई लाग-लपेट नहीं, कोई स्वार्थ नहीं तो दूसरी ओर परिवार की इ ात और आन-बान बनाए रखने में ी ान से संघर्ष करती हुई... क्या मिला... उन्होंने कब दुनिया देखी? एक-एक पैसा ोड़कर घर ालाती हई ार- ार बेटियों की माँ-आय थोड़ी, खर ा घणों...।"[119] अपने दायित्वों को निभाने के कारण साड़ी में थिगली लगाकर पहनने में भी संको ा नहीं करती। बहु के इला ा के लिए पानी की तरह रुपया बहाती है, बेटी सल्लो को ससुराल ाते समय बहुत सारा सामान-पैसे देती है बेटे-बहू को ऐरोपलैन का

---

[117] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.62
[118] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.64
[119] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.65

ख ा दिया था, बेटियों का ब ो होने पर खि ाड़ी का नेक कखाती है कहाँ से आता है पैसा-"क्यों तुम हमेशा अपनी आहुति देती रहती हो। परिवार की एकनिष्ठा, श्रद्धा, तिलतिल कर स्वयं छोटे-छोटे सुखों का गला घोंटते ाना।"[120] अकेलेपन में लिपटी विधवा की स्थिति को दर्शाया गा है। ो रात को अपनी वेदना में तड़पती हुई रोती रहती है। प्रिया ने एक दिन रात को देखा, "अम्मा धीरे-धीरे सुबक रही थी, प्रिया दाई माँ को बताती है अम्मा रो रही है. तो दाई माँ कहती है-अरे बिटिया, कैसे नहीं रोएँ बहू ी। ई दुःख को कउन औरत बरदाश्त कर पाए? ... अरे बहु ी का कले ा मरद का कले ा है। बड़ा बाबू ी के ाने के बाद एकौ रात नाहीं ठीक से सो पावत, पर कहत रहत है, ामेलिया की माँ। मैं रोऊँगी तो मेरे ब ों का क्या होगा? उनका बना-बनाया घर कैसे बिखेर दूँ?"[121] एक विधवा स्त्री अपनी इ छाओं आकांक्षाओं का मार कर अपने ब ों तथा परिवार की ि ाम्मेदारियों को निभाती है।

छिन्नमस्ता की दाई माँ भी विधवा स्त्री है। अपने ब ों के पालन-पोषण के लिए गाँव छोड़कर गुप्त हाऊस में नौकरानी का काम करती है। पति मरने के बाद अपने ब ों को गाँव में छोड़ कर दाई माँ प्रिया के घर काम करती है। प्रिया कहती है-"देखो, तुम नहीं कमाती तो तुम्हारे ब ों का क्या होता।" इस पर दाई माँ कहती है... अरे हम कौन खुशी से कमाने निकली? हमारा भतार नहीं था, कभी ना?"[122] पति के न होने पर ब ों की ि ाम्मेदारी माँ पर आ ाती है। दाई माँ ने भी अपने ब ों की खातिर काम किया। समा ा में विधवा को अ छा खाने-पीने तथा अ छा ओ ़ने-पहनने का भी अवसर नहीं रहता। ाब प्रिया भाई की शादी में दाई माँ को लाल साड़ी पहनने को कहती है तब दाई माँ कहती है-"हरे राम! राम! ई बात हमार लिए ि ान बोल बिटिया... हम विधवा मानुस। आ ा

---

[120] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.68-69
[121] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.42
[122] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.66

हमार भतार होत... एक ठंडी साँस।"[123] इस उपन्यास में विधवा का पारंपरिक रूप ही दृष्टिगत होता है। ाो परंपरा के दायित्वों को स्त्री निभाती ाली ाती है।

‘बेतवा बहती रही’ की उर्वशी, मीरा की दादी, मीरा की दादी की ि ाठानी आ ाी। सभी विधवा स्त्री हैं और अपनी त्रासदियों के ालते शोषण को सह रही हैं। "विधवा के लिए पितृसत्तात्मक समा ा में सम्मान से ाीने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा बनाया गया है।"[124] दादी तो बेटे के अत्या ाारों, उपेक्षा और अपमान के कारण अपना वैधव्य ाीवन मन मार कर ाी रही है। बेटे के कारण आ ाी से मिलना और अपने हिसाब से ाीना दूभर हो गया था। दादी ाब आ ाी से मिलती है तो बेटा दादी की उपेक्षा करता है कहता है-"काय बाई, हमारी तो दिन-रात की दुसमनी ाल रही, कोर्ट-क ाहरी हो रही और तुमें मिलन-भेंट न सू ा रहै। प्यार पिरीत नहीं दुसमनों से।"[125] इस पर दादी बहुत कुछ बोलना ाहती थी पर मन में बो ा लेकर घुटती रही अपनी इ ात के मारे विवश रही-सो ाती है-"एक ही रकत-खून को किसने अलग किया है लला-तुमने। तुम्हारे स्वार्थ, तुम्हारी हवस ने-पति होते तो दबंग बनकर सब कुछ कह देती। अपनी राय दृ. ़ होकर ाताती। पर पुत्र के आंगन में कैसी बेबस खड़ी थभ्-बंदिनी सी। ... ि ा ाी के दर्शन की आज्ञा अपने ही पुत्र से। अपनी इ छा, अपना हक कुछ भी नहीं... यह कैसी विडंबना। कैसे त्रासदी।"[126] परपंरागत ालती त्रासदी को दादी के माध्यम से दर्शाया गया है।

उर्वशी भी इसी लीक पर ाल रही है। ाब वह विधवा होती है तो उसका सगा भाई उस पर अनेक अत्या ाार करता है। उसे न ससुराल में ंग से रहने देता है और न पीहर में ैन की सांस लेने देता है। पैसों के लाल ा में उसका

---

[123] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.34

[124] औरतः अस्तित्व और अस्मिता, अरविंद ैन-पृ.104

[125] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.85

[126] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.86

दूसरा विवाह करना ाहता है। ोठ-बहू के पवित्र रिश्ते पर दाग लगाता है। उर्वशी विधवा होने पर भाभी की उपेक्षाओं की पात्र बन ाती है, सब बातों को अनसुनी कर उपेक्षा-अवहेलना को अनदेखा कर घर के कामों में ुड़ी रहती। पर समा । में विधवा की उपेक्षा आस-पड़ोस की स्त्रियाँ भी करने से नहीं ूकती। "दइया! का हाल हो गऔ मोंडी को। अब बेटा, तुमारे भाग में तो ो ही बदौ है, न यहाँ कछु, न वहाँ... परमेसुर की अ ाब लीला है। पड़ौसिन काकी ताई एक स्वर में कहती।"[127] उर्वशी इन सबकी तरस की भागीदार बन ाती। ाब उसके ोठ उर्वशी को बुलाने भे ाते और उर्वशी ाने के लिए तैयार होती तो भाभी टोक देती-"इतनी ाल्दी तौ अपनौ आदमी होत तबहू नहीं करी ात। इतै ोठ के बुलउआ पर कितनी उतावली ाली है बिन्नू कों, ैसे खसम बैठे हों।"[128] विधवा की कोई रक्षा करे उसे बेटी की तरह सम ो पर समा । में विधवा के आं ाल पर अवैध संबंध की छिटा कसी अपने-पराये सभी करते हैं। यही हालत भाभी का भी है। पवित्र रिश्ते को अपवित्र का नाम दे रही है इसका दोष नहीं है सामा ाक व्यवस्था ही ऐसी है। मीरा भाई की शादी में उर्वशी को तैयार होने के लिए कहती है पर वह सफेद साड़ी में ही रहती है। बहुत हट करने पर मीरा को दि ान काकी सम ाती है-बेटा मीरा, काहे को कह रही बेर-बेर। उनें अब का तैयारी करने है, ैसी बैठीं हैं वैसी ही लिवायें ाली ाओ। टिकुली बेंदी महावर कहाँ धरो बिटिया, उनके भाग में... ऐसी सीता ी सरी खौ रूप... पर खोटो करम लिखाके लाई थीं, सो ोगिन-बैरागिन बनी फिर रही।"[129] विधवा को मंगलकार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेन देते अपसगुण मानते हैं। नयी बहू आने पर मीरा उर्वशी से भाभी को ोली से उतार लाने के लिए कहती है। तब उर्वशी सो ाती है। "कैसी पागली है मीरा! सम ाती ही नहीं। सगुन-सात की बेराँ कैसे ाय वह? कोई टोक धरे तब? मीरा

[127] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.71
[128] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.72
[129] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.89

नहीं ाानती कि सुहाग-भाग में उसके ााने पर निषेधाज्ञा है।"[130] पुरुष का दृष्टिकोण विधवा के प्रति ठीक नहीं रहता। वह उसे अपनी हवस का शिकार बनाने की कोशिश में लगा रहता है। मीरा के पिता ने भी एक बार उर्वशी को अपनी भूख का शिकार बनाना ाहा था। वह बड़ी मुश्किल से अपना वैधव्य ब ा कर भाग ाती है। इस पर मीरा सो ती है-वीभत्सा तो उस दिन उर्वशी अपने वैधव्य की कठिन तपस्या को भंग करने वाले नर-पशु से ू ाकर आयी थी। उखड़ती साँसें संघर्ष की साक्षी थी कि वह किस संघर्ष के पश ात् मुक्त हो सकी है। उर्वशी कई समस्याओं से ू ाती हुई संघर्ष कर रही थी। समा ा से घर परिवार से अपने-आपसे।

"स्त्री की संवेदना को, उसकी पीड़ा और संघर्ष को क्या कोई पुरुष उतनी ही तीव्रता से महसूस कर सकता है, ि ातनी तीव्रता से एक स्त्री महसूस करता है। कहा तो यहाँ तक गया है कि नारी की सवंदेना को एक पुरुष तो क्या, वह स्त्री भी ठीक से व्यक्त नहीं कर सकती ाो कभी उस तरह के अनुभवों से गु ार्र ही नहीं। दरअसल यह एक अंतहीन बहस का विषय होकर कर गया है।"[131]

कलि-कथाः वाया बाइपास में मारवाड़ी समा ा की विधवाओं की घुटन भरी ि ांदगी को उ ाागर किया गया है। परंपरा की आड़ में किस प्रकार अपनी आत्मपीड़ा से ू ा रही है मारवाड़ी विधवा स्त्रियाँ। किशोर की माँ कुंती परंपरागत विधवा है ाो पति मरने पर अपने ब ाों की देखभाल, पालन पोषण अपने आप करना ाहती है। ससुराल में ही रहकर ब ाों को घर देना ाहती है। कुंती के पिता साथ ालने को कहते हैं तो कुंती कहती है-"मैं ालती तो हूँ बाबू ाी। लेकिन लौट आऊँगी यह मेरा घर है बाबू ाी। मैंने आपके ावाई के ाले ााने के बाद भी आप से यही कहा था। इन दो ब ाों ललित और किशोर को मैं

---

[130] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.92

[131] र ानाकार के लिए हर र ाना एक ाुनौती होती है, सूर्यबाला-कृति विमर्श-पृ.18

कम-से-कम अपना घर तो दे ही सकती हूँ।"[132] पति की मृत्यु के बाद अंदर-ही-अंदर घुट-घुट कर रोना, ब ों की परवरिश पर ध्यान देना, अपने वैधव्य के गम के बारे में किशोर को सम ाती है-" ो होना था, हो गया सब ठीक हो ाएगा ाब तू बड़ा होगा।"[133] विधवा होते हुए भी आत्मविश्वास से ीती है।

किशोर के भाई ललित की बहू भी असमय ही विधवा हो ाती है। किशोर उसका ध्यान रखता है। पर समा ा और कुल की मर्यादा का खंडन होते देख भी बर्दाश्त नहीं करता। किशोर की भाभी घर में हुई पार्टी में खुशनुमा रंग की किनारों वाली साड़ी पहनने पर किशोर क्रुद्ध होकर कहता है-"तुम्हारा दिमाग क्या एक दम ही खराब हो गया है। उम्र ब.ने के साथ आदमी की अक्ल कम होने लगी है-कुछ तो मर्यादा रखी होती समा ा में।"[134] विधवा स्त्री को अ छा खाने-पहनने की भी समा ा में इ ा ात नहीं है। विधवा स्त्री अकेलेपन से ऊब ाती है शुभ-अशुभ में नहीं ाती। उसकी पीड़ा दर्द को कोई नहीं सम ाता। विधवा का लेबल ि पका कर उसे सामा ि क, पारिवारिक, सभी कार्यों से निषेध कर दिया ाता है। इसमें विधवा स्त्रियों का अकेलापन, असहाय व्यक्तित्व अखरने लगता है तो परंपरा की आड़ में पीड़ा, दुःख देता है।

'दिलो दानिश' में कृपा नारायण की बहन छून्ना बीबी को विधवा रूप में ि ात्रित किया गया है। छून्ना बीबी को भी पारिवारिक, सामा ि क समस्याओं से गु ारना पड़ता है। परिवार वाले ाब उसकी उपेक्षा करते हें तो सब को वह आड़े हाथ लेती है किसी के सामने अपने को कम ोर नहीं पड़ने देती। ताई का कहना यह लड़की किसी की सगी नहीं, बंसी कहता हे छुन्ना बीबी को तो खब्त हो गया है हर किसी का पर्दाफाश करने की कसम खाई हुई है। मालती भाभी पारो भाभी का संदेश लेकर आती है कि योति के विवाह के काम में कोई खलल न डाले।

---

[132] कलि-कथाःवाया बाइपास, अलका सरावगी-पृ.16
[133] कलि-कथाःवाया बाइपास, अलका सरावगी-पृ.16
[134] कलि-कथाःवाया बाइपास, अलका सरावगी-पृ.61

अ छा न होगा। इस पर छुन्ना कहती है-"क्या मामला दीवानी अदालत में ले ाने का इरादा है। भाभी कहती है इतनी उम्र हो गई है आदत बदलिए। इस पर छुन्ना कहती है-"आप लोगों का हमसे बेगाना है ही, पर हम भी तो अपनों में पराए हुए रहते हैं भाभी, हमें तो आपने तक़दीर का रुतबा अता कर दिया ऐसा क्या है ो हमारे ाहने से होगा- ाइए काम में तव ो दी ाए। ामुना ी के स्थान ाते समय घर के आगे से न ाकर पिछवाड़े से निकलिएगा।"[135] इन सब संवादों के बाद माँ कहती है-तकदीर की मारी को कहीं ैन नहीं क्यों उल ाती रहती हो? इस पर छुन्ना कहती है-"हम न किसी से कुछ पूछने गए और न कहने। ाने क्या से क्या कहानी ग ़ रही है। एक नाम धर दिया हमारा विधवा। वह तो हम सगुण शास्त्र से बाहर, उस पर इनकी सब ख़ामियी-नाकामियों के ि म्मेवार भी हमीं... इनके लिए दुबारा से निकाल के बिछुए और टिकुली। हद है अंधविश्वास की। ... माँ कहती है- ो अ छा हो सो उनके भाग का और ो बुरा सो हमारे कपाल का... यह कतइयन न तुम्हारे हाथ में न हमारे। कलाइयाँ सूनी हो ाएँ तो उम्र-भर को लानत-मलामत-इन बातों का बुरा नहीं मनाया ाता। खुर्रेपन से तो खुशसीरती कहीं अ छी।"[136] अकेलेपन को ेलने के लिए पत्ते खेलना, भगवान का भ ान, सिलाई कटाई करना और फिर विधवा की मौत मरना। यहाँ परंपरागत और परंपरा से मुक्त के सामं ास्य में स्त्री फंसी हुई है। परंपरा को निभाये ालने पर समा ा परिवार खुश होता है 'बे ारी किस्मत की मारी' खिताब मिलता है। वहीं परंपरा से मुक्ति की बात करें तो अपमान, उपेक्षा, अवहेलना करते हैं। परिवार वाले।

छून्ना को भी सामा ाक दायरे के हिसाब से कपड़े पहनने होंगे, ीना होगा, भाई इनके लिए सफेद धोती लाते हैं। इस पर भाभी सो ाती है-"लो साहब, बहन

---

[135] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.141-142
[136] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.143

के लिए हमदर्दी हो रही है अब तक तो सभी कह-कहकर हार गए। देखे अपने दादा की बात कैसे टालती है। विधवा हैं तो पहनेंगी ही।"[137] यानी सारे नियम, कायदे विधवा स्त्री के सर दिये ाते हैं। कृष्णा ी ने विधवा की समस्या को उ ागर किया है किस प्रकार से समा ा, परिवार, विधवा स्त्री को वैधव्य का ीवन ीने पर म ाबूर किया ाता है। उससे समा ा और परिवार वालों की सो ा से नि ाद दिलानी होगी।

"किसी भी स्त्री को एक मानव होने मात्र से मान-सम्मान का ान्म से ही अधिकार है और किसी को इसका हनन करने का अधिकार नहीं है। अगर किसी भी व्यक्ति के मानव अधिकार का हनन होता है तो हम सभी को उसके खिलाफ आवाज़ उठाने का भी हक है।"[138]

'अल्मा कबूतरी' की कदमबाई भी विधवा होकर अपने बेटे की ि ाम्मेदारी स्वयं निभाना ाहती है। माना की मंसाराम से उसके अवैध संबंध हैं दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। पर समा ा के लिए ाति-बिरादरी के नियमों का हमेशा पालन करती पति मरने के बाद विधवा की त्रासदी और समा ा में किस प्रकार समस्याओं का सामना करना पड़ता है उसे दर्शाया गया है। बिरादरी के नियम अनुसार ोरी करना, कुल्हाडी ालाना, डकैती डालना, गुलेल ालाना, बंदूक दागना बेटे को सिखाती है। ताकि कबूतरा ाति में उसे रहने दिया ाए। पर बेटा राणा तो इन सबसे दूर भागता है। कदमबाई राणा को म ाबूर करती है। यह सब करने के लिए ाबर्दस्ती दारू पिलाती है। शिकार करने के तरीके सिखाती है। पर राणा को प ़ाई से लगाव हो ाता है। कदमबाई बेटे से कहती है "राणा रे... लाठी भाँ ा, गुलेल ाला। कुल्हाडी का वार करना सीख। मेरा बेटा बहादुरी से ोरी करेगा। सोने की मूर्ति किसी के ारिए नहीं, क ाा लोगों पर मरघट की

---

[137] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.145

[138] घरेलू हिंसा, मेरी या किसी और की समस्या, E-mail:Crea@vsnl.net, website:www.crea.com

राख डालकर लूट लाएगा। राणा को मैंने ऐसे ही गर्भ में नहीं रखा, लोग उसके करताबों से थर्राने लगेंगे। ऐसे ही दहल ाएँगे, ैसे मैं थर्रा गई थी ंगलिया की मौत पर।"[139] राणा कहता है "अम्मा, तू सबकी बात मान लेती है।"[140] इस पर कदमबाई कहती है "तु ो सब इसलिए करना है कि मुखिया ाहता है, बस्ती के लोग ाहते हैं, क ा लोग भी ाहते हैं। उनका ाहा करता रहेगा तो वे मु ो और तु ो माफी देते रहेंगे।"[141] पर राणा नहीं मानता। इस पर कदमबाई सो ाती है-" ंगलिया होता तो ब ा लेता। बाप के अधिकार से बेटे पर सख्ती करता, धंधा सौंपकर मानता।"[142] राणा की ि ाद्द कदमबाई को धंधे से बेदखल कर देते हैं। सरमन मुखिया कहता है-"राणा ने बिरादरी को नहीं, कबूतरा धरम को धोखा दिया है। अपनी हठ के ालते विरासत पर लात मार रहा है। ह ारों का नुकसान... कदमबाई का ि ंदगी बेगार करे, तब भी भरपाई होगी?"[143] यह लड़का बिरादरी से गद्दारी कर रहा है-धंधे से निकाल फेंका निरमोहियो ने... धंधा ही तो बिरादरी का आधार होता है- ंगलीया होता तो 500 रुपये की ागह 1000 मूह पर दे मारता बिरादरी के मुँह पर। कदमबाई हर मुसीबत के समय पति ंगलिया को याद करती है। भूरी भी अपने बेटे रामसिंह के लिए अपना सब कुछ दाँव पर लगा देती है। वह बेटे की प ़ाई, भविष्य के लिए विधवा होकर अपने आत्मसम्मान को बे ा देती है। बेटे के लिए बिरादरी में शेरनी की तरह खूंखार हो उठती है- ाति को तोड़ देना ाहती है-"माते, पु ारी, सिपाही मास्टरों के ारिए रामसिंह के लिए इ ात खरीदनेवाली माँ बेहि ाक बेइ ात होती रही।"[144] बिरादरी का शोषण सहा विधवा होकर गर्भ न रहने के लिए रुखरी ाबाया करती

---

139 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.37
140 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.62
141 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.53
142 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.65
143 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.77
144 अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.77

थी ताकि बेटा का ाीवन सफल हो ााए। अपनी ि ांदगी तो गु ार गई। उपेक्षा, अन्याय, अत्या ाार, शोषण भूरी ने बेटे के लिए बिरादरी से सहा।

आधुनिक विधवाएँ परंपरागत ाली रू ि गत व्यवस्था को तोड़ने का प्रयत्न करती है। ाो विधवा स्त्री परंपरात मूल्यों पर ालती है समा ा उसके साथ कई बंधन ाोड़ देता है। उसे उपेक्षित लांछन भरा ाीवन ाीने पर म ाबूर करता है। समा ा के मंगल कार्यों, अ छा पहनने तथा रू ाि नियमों के कारण उसका ाीवन घुटनभरा हो ााता है। वह हर समय उखराने लगती है अकेलापन उसे काटने को दौड़ता है। वहीं दूसरी ओर आधुनिक वि ाारवाली परंपरामुक्त विधवा अपने भावी ाीवन के लिए पुनर्विवाह करने का प्रयास करती है या वैध हो या अवैध किसी पुरुष से संबंध बना कर ाीवन बिताती है। अपने ाीवन को अपने तरीके से ाीना ााहती है। उसे समा ा, परिवार की अवमानना, अपमान, उपेक्षा की कोई ि ांता नहीं होती। कोई कितना अपमान करे लांछन लगाये वह अपने 'रो' में ही ालती है।

कली कथाःवाया बाईपास की किशोर की माँ कुंती, भाभी, इदन्नमम की बऊ, छिन्नमस्ता की प्रिया की माँ, कस्तुरी, दाई माँ, बेतवा बहती रही की उर्वशी, मीरा की दादी, दादी की ि ाठानी आ ाी, सभी परंपरागत विधवा स्त्री हैं। वहीं दूसरी ओर 'इदन्नमम' की प्रेमा, 'यामिनी कथा' की यामिनी, 'अल्मा कबूतरी' की कदमबाई, भूरी, 'अपनी सलीबें' की सुमित्रा, 'दिलो-दानिश' की छून्ना, सभी आधुनिक विधवा स्त्री के रूप में ि ात्रित हुई हैं ाो अपना ाीवन अपने तरीके, अपने नियमों के अनुसार ालाना ााहती है। परंपरा से मुक्त होकर पुरानी लीक को तोड़ने की कोशिश करती है। स्त्री संबंधित अनेक संघर्षों पर हुए आंदोलनों ने स्त्री में अन्याय-अत्या ाार, शोषण का विरोध करने का साहस भर स्त्री को ोतित किया है-"परिणामस्वरूप आधुनिक विधवा अब ाीवन की सह ा स्वाभाविक रूप से ाीने का अवसर पाने की स्थिति में आ रही है।"[145] विधवाओं का सामाि ाक,

[145] साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, डॉ.विमल वर्मा-पृ.82

आर्थिक, भावात्मक, सभी प्रकार की समस्याओं से ू ाना पड़ता है। परंपरागत तथा परंपरामुक्त सामं ास्य के बी ा फंस कर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। विधवा को अपने ब ाों के लिए पिता की भूमिका भी निभानी पड़ती है। कभी-कभी वह असमर्थ भी हो ााती है। उन पर आर्थिक विषमता सामाि ाक, पारिवारिक अवमानना को सहना पड़ता है। अपमान, अमानवीय के ालते वह विद्रोही बन ााती है। ि ासके कारण उसकी भावना, वि ाारों में परिवर्तन आ ााता है। ये स्त्रियाँ कुंठित, पतित, पराधीन, दुःखित न रहकर आत्मविश्वास के साथ आत्मसम्मान का ाीवन बिताना ााहती है।

विवे ाय उपन्यासों में स्त्री के मानवीय संवेदनाओं का ाि त्रण हुआ है। स्त्री को शोषण को केंद्रित किया गया है किस प्रकार सामाि ाक व्यवस्था स्त्री का दलन करती है। विवाहित स्त्री के घुटन भर ाीवन को व्याख्यायित किया गया है। पति पत्नी पर अपना सा अधिकार ाताना ााहता है ि ासके कारण उसे शोषित ाैसा ाीवन ाीना पड़ता है। वह अत्यधिक शोषण के कारण उसमें मानवीय संवेदना उत्पन्न होती है। उसी प्रकार ाब तलाकशुदा स्त्री का दमन समा ा के साथ-साथ पुरुष प्रधान परिवार भी अनेक अत्या ाार अन्याय करता है तो उसे अपना ाीवन घुटन भरा लगता है। अपने इस रूप को मानवीय बनाना ााहती है। विधवा स्त्री की स्थिति आ ा भी वैसी ही है ाैसे सदियों पुरानी थी। पर लेखिकाओं ने विधवा को पुनर्विवाह का संकेत अपने उपन्यासों में दिया है ि ासे उसके ाीवन में अमूलाग्र परिवर्तन आए। लेखिकाएँ विधवा ाीवन की घुटन भरी, उपेक्षित परिस्थितियों को उभारना ााहती है उन्हें मानवीय रूप में व्याख्यायित करना ााहती है।

5.4 स्त्री सशक्तीकरण

स्त्री-सशक्तीकरण का अर्थ स्त्री को समा ा से अलग करना नहीं है। समा ा के सभी क्षेत्रों में स्त्री के अस्तित्व को मनुष्य के रूप में स्वीकृति प्राप्त करवाना है। स्त्री और पुरुष की ऐसी समानता ि ासमें स्त्री को दूसरे द ाे की न मान कर उसके

अनिवार्य रूप को स्वीकार करे। स्त्री का सशक्त रूप मानवीय होना स्वीकारता है। स्त्री में भी पुरुष की तरह शक्तियाँ और दुर्बलताएँ दोनों विद्यमान हैं। सशक्त सित्रयाँ समा ा द्वारा थोपी गई रू ि मान्यताओं को नकार कर स्वस्थ समा ा का निर्माण करने में सक्षम होगी। अपनी अस्मिता और व्यक्तित्व को ाागरूक कर स्त्री-सशक्तीकरण को म ाबूत बनाएगी। "सृ ान स्त्री का प्राकृतिक स्वभाव है, घर उसका अपना आविष्कार है। स्त्री भी सशक्तता और घर एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। लेकिन घर, परिवार और विवाह को बनाए रखने की एकपक्षीय िाम्मेदारी केवल स्त्री पर नहीं डाली ाा सकती। ूठी मर्यादा के नाम पर स्त्री से हर तरह के बलिदान की मांग करना और पुरुष होने के नाते छूट देना न्यायसंगत नहीं है।"[146]

समा ा की मानिकसता में परिवर्तन अपेक्षित है। इसके लिए आर्थिक, आत्मनिर्भरता ही काफी नहीं है, स्त्री में शिक्षा और उसमें सामाािक ेतना को, स्वाधीनता को उ ाागर करना भी आवश्यक है। "स्त्री-स्वाधीनता का अर्थ हुआ कि स्त्री पुरुष से िास पारंपरिक संबंध को निभा रही है, उससे मुक्त ाहे। हम स्त्री-पुरुष के बी ा घटने वाले संबंध को नहीं नकार रहे। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व होगा और वह पुरुष की होकर भी िाएगी।"[147]

सन् 2001 में महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित हुआ िासमें 'महिला-नीति' घोषित कर केंद्र सरकार द्वारा सभी रा यों के महिला-हित में नए कानून विधेयक तक लाने के निर्देश दिए गए। पर समा ा में स्त्रियों की स्थिति पर कोई बदलाव नहीं आया। 'महिला वर्ष' व 'महिला दर्शकों' की तरह 'महिला सशक्तीकरण वर्ष' भी सपनों को साकार किए बिना निकल गया।

आशा रानी व्होरा के शब्दों में-"स्त्री-सशक्तीकरण सरकारी घोषणाओं और कार्यक्रमों से संभव नहीं है। स्वयं स्त्री शक्ती को अपने पूरे संगठन बल से

---

[146] स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम, डॉ.ऋषभदेव शर्मा, डॉ.गोपाल शर्मा-पृ.7
[147] स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम, डॉ.ऋषभदेव शर्मा, डॉ.गोपाल शर्मा-पृ.106

आगे आना होगा और सभी क्षेत्रों में संतुलित सो ा वाली योग्य व सक्षम स्त्रियों को नेतृत्व संभावना होगा साथ ही अपने व्यक्तिगत व ातीय, दोनों रूपों में सशक्तीकरण की इस तैयारी में ही अपनी शक्तियों को केंद्रित करें। इक्कीसवीं सदी में 'महिला युग' की शुरुआत इसी राह संभव है।"[148]

स्त्री-शक्ति का अर्थ है-'स्त्रियों का आत्म-निर्णय।' आत्म-निर्णय याने पितृसत्तावादी समा ा की विसंगतियों, अवमाननाओं ाक खंडन कर स्त्री एक सुनिश्ि ात व्यवस्था का ुनाव करने का दावा कर पाएगी ाो कि नैतिक कर्म की पहली शर्त है। हो सकता है कि खुद अंतिम लक्ष्य को न देख पाए, क्योंकि समा ा का तानाबाना एक ाीवन में नहीं सुल ाता, लेकिन वह इसे अपना विश्वास घोषित करने उससे आशान्वित हो सकती है।

'आत्म-निर्णय' स्त्रियों के हित-अहित, समस्याओं, व्यथा शोषणों, स्थितियों-परिस्थितियों के मुद्दों पर वि ाार करे सही गत की ां ा परख स्वयं स्त्रियों को अपनी सशक्ति से करना होगा। हमारी निर्णय क्षमता हमारे स्वावलंबन पर आधारित है।

"स्त्री सशक्तीकरण स्त्री ाागरूकता का प्रसार करने के लिए एक कारगर औ ाार है।"[149] "संसार के पुनर्वर्गीकरण में शायद यह होगा कि तमाम ाूठी भावनाओं और वितृष्णा से मुक्त युवक और युवती एक दूसरे को ूँ ेंगे, विपरीतों की तरह नहीं, बंधु-बांधती की तरह, पड़ोसी की तरह और मनुष्यों की तरह मिल ाएँगे।"[150]

स्त्री अधिकार और सशक्तीकरण की ा ार्, स्त्रियों के अपने अधिकारों की कानूनी लड़ाई के प्रति है। स्त्री अधिकारों की ा ार् करते समय एक शब्द लैंगिक न्याय (Gender Justice) प्रयोग होता है। इसके अंतर्गत लिंग के आधार पर

---

[148] स्त्री-सरोकार, आशा रानी व्होरा-पृ.126-127

[149] महिला लेखन की पूर्व पीठिका, सुधा अरोडा, हिंदी प्र ाार वाणी-पृ.11

[150] बधिया स्त्री, ामैन ग्रीयर अनु.मधुबी ाोशी

भेदभाव को मिटाना, स्त्रियों के साथ न्याय, उनके सशक्तीकरण ाहाँ स्त्रियों को व्यक्ति माना ाए सभी तथ्य सामने आते हैं। ैसे-विवाह संबंधी अपराध की रोकथाम, घरेलू हिंसा अधिनियम, यौन अपराध, दहे ा संबंधी कानून, समानता, स्वतंत्रता, एकांतता, व्यक्ति शब्द का अर्थ, आत्मनर्भिरता, आत्मसम्मान का नारा, आर्थिक स्वतंत्रता, समानता के नाम पर कुछ हद तक ारित्रिक स्व छंदता, अपने स्वास्थ्य, अपनी कमाई के बारे में सो ाना सभी स्त्री सशक्तीकरण के मानदंड हैं।

"स्त्रियों को आ ादी बाहर से नहीं, अपने भीतर से खो ानी होगी, भीतरी शक्ति यानी आंतरिक शक्ति की ओर था। स्त्रियों में आंतरिक शक्ति का विकास कर उनमें आत्मविश्वास   ागाना, उनकी क्षमताओं और विलक्षणताओं का प्रकाश करना तथा उन्हें राष्ट्र के संवर्द्धन से   ोड़ना है।"[151] आंतरिक शक्ति से अभिप्राय स्त्रियों की मानसिकता की ओर संकेत करते हैं। स्त्री की मानसिकता   ाब ठीक होगी, तो वह अपनी आंतरिक शक्ति को म ाबूत बना सकती है।

मार्कण्डेय के वि ाार में-

"स्त्री की समस्या   ाब तक वश में नहीं आ सकती   ाब तक लड़कियाँ स्वयं को सशक्त न बनायें... यही रास्ता है सशक्तीकरण का। सशक्तीकरण के रास्ते ही स्त्रियाँ तमाम ां ाटों से मुक्ति पा सकती है। यदि आप यही मायने में हिंदुस्तान में स्त्री-विमर्श ाहते हैं, तो अपने ब   ाों, खास तौर पर लड़कियों को ऐसे तैयार की ाए कि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें, रो ाी कमाने लायक बनें। यदि वे पति पर निर्भर होंगी तो निश्ि ात रूप से उनके साथ अन्याय, अना ाार, अत्या ाार हो सकता है। स्त्री सशक्तीकरण का मतलब यह होता है। अपने पैरों पर खड़े हो, मेहनत करो, प ़ो, लड़कों को पीछे करो। होगा सिर्फ ताकतवर बनने से। मतलब

---

[151] स्त्री घोष, कुमुद शर्मा-पृ.149

यह कि बड़ी से बड़ी मुसीबत भी टल ाती है ाब आप सशक्त हों। ाब आप आगे ब ़ेंगे तो निश्ि ात रूप से सशक्तीकरण हो ाएगा।"[152]

प्रो.अलका अग्रवाल के वि ाार में-"स्त्री सशक्तीकरण याने स्त्री ोतना, स्त्री ाागरण या स्त्री स्वावलंबन कह सकते हैं। स्त्री ि ांतन से हमारा तात्पर्य है कि यह कोई संघर्ष का, लड़ाई का मुद्दा नहीं है। अपने लिए हम स्पेस बनायें। स्पेस तभी बनेगा, ाब हममें आत्मविश्वास होगा। ाब अपने बड़े होने तक हम यह अहसास करना शुरू करेंगे कि हम हीन नहीं हैं, हम कम ाोर नहीं हैं। हम फेयर सेक्स नहीं हैं।"[153] स्त्री को अपनी शक्ति के अनुरूप समा ा, परिवार को बदलना है। अपने आत्मविश्वास को ागा कर स्त्री तब ही शक्तिशाली बन पाएगी ाब वह आत्मविश्वास के साथ अपने कार्य की अभिव्यकित करेगी। स्त्री सशक्तीकरण का सबसे बड़ा मुद्दा शिक्षा और रो ागार है।

5 मा ा 2011 रवींद्र भारती में हुई महिला अधिकार आख्यान तथा 8 मा ा को महिला वर्ष के 100 वर्षगांठ पर रवींद्र भारती लड़की का पूल में हुए सेमिनार में स्त्री सशक्तीकरण पर श्रीमती ांदा ाक्रवर्ती, साईन्टिस्ट ने अपने वि ाार व्यक्त किए हैं। "स्त्रियाँ हर क्षेत्र में कार्यरत हैं पर विडंबना यह है कि शोषित है। समस्या वही है। 50% पापुलेशन स्त्रियों का है। पर आ ा भी स्त्री को समानता का अधिकार प्राप्त नहीं है। स्त्री हर क्षेत्र में कार्यरत है फिर भी उसकी समस्या संघर्ष, पीड़ा वैसे ही है ौसे हज़ारों सालों पहले थी।

स्त्री के ाार तथ्यों का स्पष्टीकरण करते हुए कहती है-

- स्त्री आर्थिक परिपूर्ण है, पर उसके पास आर्थिक स्वतंत्रता नहीं।
- क्या स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है घर से, बाहर से।
- क्या उसे अपने स्वास्थ्य की स्वतंत्रता है।

---

[152] स्त्री विमर्श : विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.30-31
[153] स्त्री विमर्श : विविध पहलू, डॉ.कल्पना वर्मा-पृ.32

- आ ा भी कितनी स्त्रियों को घरेलू हिंसा हो रही है। वह कहती है कि 68% विवाहित स्त्री घरेलू हिंसा से पीड़ित है। पीड़ा को सह रही है पर उसका विरोध करने में असमर्थ है।

हर आदमी को इन समस्याओं को सम ाना है और समाधान को प्रस्तुत करना है। इसके वि ार में सरकार का इन तथ्यों पर वि ार करना असमर्थ है। अगर इन सब समस्याओं को सरकार पर छोड़ दो तो कभी भी समाधान नहीं निकलेगा। प्रत्येक प्राणी को इसे सम ा कर समाधान तलाशना होगा।

5.4.1 स्त्री सशक्तीकरण में ेतित स्त्री

स्त्री सामा िक, आर्थिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक रूप से ागृत दिखाई देती है। ागृति के कारण स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्या ार तथा शोषण के खिलाफ ेतित स्त्री विद्रोह के लिए खड़ी हो रही है। बदलते सामा िक परिवेश के कारण स्त्री का ागृत होना अत्यधिक आवश्यक है। अंतिम दशक की स्त्री शोषण को दब्बू बनकर सहन नहीं करती बल्कि उस शोषण का विरोध भी करती है। स्त्री में उसका अस्तित्वबोध ागा है िसके कारण वह अन्याय, अत्या ार को न्याय में बदलना ाहती है। स्त्री पारंपरिक रू़ि ग्रस्तता से मुक्त होकर ेतित ागृत हुई है। लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में ेतित स्त्री का रूप दर्शाया है। लेखिकाओं ने स्त्री ेतना की ागृत की संभावनाओं को उभारा है।

"मर्दानेपन में इतने दोष हैं कि आ ा मर्दानापन ही भुगत रहे हैं हम तो स्त्री ही ठीक ह। स्त्री ही रहेंगे। ारा अपनी ेतना को विकसित करें, सो ें कि हमने कहाँ गलती कर दी। इस पर सो ें तो हम मर्दों से लाख गुना बेहतर हो सकते हैं। अब हम बस ेतित हो रहे हैं, स्वतंत्रा ाहते हैं उसके खतरे भी बहुत हैं ाब हम ौखट लांघ कर बाहर आये हैं तो देखिए क्या हाल हुआ है।"[154]

---

[154] त्रिया ारित्र हमारी रणनीति, 23, मैत्रेयी पुष्पा (स्त्री-विमर्श : विविध पहलू से उद्धृत)

‘ऐ लड़की’ में अम्मु ोतित स्त्री के रूप में ित्रित हुई है। अम्मू अपनी बेटी को ीवन की स ाई सम ाने की कोशिश करती है। स्त्री मुक्ति विषयक वि ार अम्मु बेटी के समक्षक रखकर स्त्री- ोतना को गाना ाहती है। वह लड़की के अस्तित्व को सुरक्षित रखने की सलाह देती हुई कहती है-"तुम किसी के अधीन नहीं। स्वाधीन हो। लड़की यह ताकत है। सामर्थ्य। शक्ति।"[155] "... तुम अपने आप में आप हो... लड़की अपने आप में आप होना परम है, श्रेष्ठ है।"[156] "अपने लिए दुःख नहीं मनाना। निराशा को परे ही रखना तुम्हारे लिए निशि ंत हूँ। न तुम सताई ा सकती हो और न किसी को सताती हो।"[157] तुम तो अपने में आज़ाद हो। तुम पर किसी की रोक-टोक नहीं। ो ाहो, कर लो। अम्मु अपनी नर्स सूसेन को शादी के लिए सुनियोि ात वर की तलाश और विवाह पश ात आत्मसम्मान का ीवन ीने के लिए कहती है-"शादी के बाद किसी के हाथ का ुन ुना नहीं बनना, अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना।"[158] लेखिका ने ोतित स्त्री के रूप का ित्रण कर भावी पी ़ी को ोतित होने की संभावना प्रस्तुत की है।

‘दिलो दानिश’ में महकबानो और कुटुंबप्यारी दोनों स्त्रियाँ ोतित रूप में दर्शायी गयी हैं। दोनों अपने-अपने हक के लिए ागृत होती हैं। कुटुंबप्यारी सामंती एवं नवाबी रखैल रखने की परंपरा के खिलाफ आवाज़ उठाती है। पति कृपानारायण और उसकी रखैल महकबानो के खिलाफ ोतित बनती है। आ ा तक नवाबों की, सामंतों की रखैल रखने की प्रवृत्ति पर पत्नियाँ ुप रहकर घुटती रहती थीं। पति के खिलाफ कोई आपत्ति नहीं उठाई ाती थी। पर अंतिम दशक में आधुनिक सभ्यता में पली कुटुंबप्यारी पति के खिलाफ विद्रोह करती है।

---

[155] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.50
[156] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.57
[157] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.49
[158] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.58

पति को रखैलमुक्त करवाने के लिए भैरो बाबा के पास तक ाती है। कुटुंबप्यारी में गहरी ोतना उभरी है। वह पति की हमेशा उपेक्षा करती है। पति का महक से लगाव देखकर कुटुंब को पति को स्पष्ट भी नहीं करने देती है। एक दिन ाब कृपानारायण ग ारे लेकर कुटुंबप्यारी के पास ाते हैं तो कुटुंब ोतित होकर कहती है-"र ाो की कसम, ाो आपने मु ो छुआ।" उसे ताना मारते हुए कहती है-"ि ास दिन से ब्याह कर आए, हमने खानदान की खिदमत की, इनकी इ ात सिर पर उठाई पर आपने हमें दुखियारा करके ही दम लिया, बिरादरी भर में बदनाम किया।"[159] "आपकी मर्दानगी के पीछे खानदान की इ ा-आबरू खाक में मिलती ाा रही है।"[160] इसी कारण वह परिवार वालों से खि ाी-खि ाी रहती है। सास-ननद, देवरानी- ोठानी पर अपना क्रोध उतारती है। कुटुंब हमेशा महक की उपेक्षा करती है और उसके ब ाों को अपने ब ाों में मिलना, खानदानी ाामा पहनाना इस पर कुटुंब पति को ाागृत हो कर कहती है-"हम आपकी ागह होते तो सैर सपाटे के बहाने दोनों ब ाों को भूली भटियारन के तालाब में गुम करवा देते।"[161] और आगे कहती है-"उस छबीली गमक को ामुना ाी में बहा आइए। हम आपके नाम से मथुरा ाी में रसोई करवा आएंगे। सब अगले-पिछले पाप धुल ााएंगे।"[162] पति की मनमानियों पर कुटुंब ोतित होकर पति की उपेक्षा कर उसकी 'दूसरी औरत' महक को उसके ब ाों को तालाब में छोड़ने तथा ामुना ाी में बहाने की बात करती है। कुटुंब पति को महक के पास ााने से रोकती हुई कहती है-"आपको र ाो की कसम ाो आप आ ा घर से निकले। कहे देते हैं आ ा हमें छोड़ कर आप कहीं नहीं ााएंगे... ाौबिसों घंटे महबूब बने फिरते हैं। आप यह बताइए कि तैयार कहाँ को हो रहे थे। वहीं न ाहाँ आप गिरवी पड़े हैं।

---

[159] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.53
[160] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.54
[161] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.54
[162] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.42

औलाद कंधों तक पहुँ ा गई, अब भी आशिक बने घूमते हैं।"[163] कुटुंब ोतित होकर पति की उपेक्षा करती है। उसकी मनमानी पर रोकने-टोकने का भरसक प्रयास करती है।

महकबानो भी अंत में ोतित स्त्री का रूप ले लेती है। कुटुंब ाब भैरो बाबा के पास ाकर पति को छुड़ाने के लिए मनौती मांगती है। यह बात महक को पता लगना, कृपा का कुटुंब से ुड़ाव होना, महक द्वारा विरह में दिन काटना। और वह बिना बताए अ ामेर के शरीफ ख्वा ासाहिब की ड्योएी के दर्शन करने ााती है। ये बात कृपानारायण को पसंद नहीं आती है और कृपा के मन में शंका पैदा होने पर वह ाहर खाकर खुदकुशी करने की कोशिश करने पर महक उससे ोतित होकर कहती है-" ाहर तो हमें खाना ााहिए। कले ाा ऐसा छलनी हो ुका है कि कोई रफू-गर-रफू न कर सके।"[164] इन्हें क्या खबर उस ज़लील क़िस्से की। मैरों बाबा और भभूतियों के पाश। हमारा दिल ही मर गया।"[165] "...बहु ाी (कुटुंब) का मिज़ा ा कुछ बदला सुनते हैं कई ाालीहे कर ुकी हैं। मैरों बाबा के यहाँ से खे ारी लेकर आई थीं। यह आवा ाावी तो पान की ाड़ समि ाए। एक बार उग ााए तो छुटकारा पाना मुश्किल है।"[166] कृपा का महक के घर आना-ााना कम हो ाने पर ाब वकील साहब दो महीने के बाद महक से मिलने आते हैं महक तनावपूर्ण स्थिति में ोतित होकर कहती है-"साहिब, इस नाते-रिश्ते का कोई नाम तो न हुआ। दिल की ललक-लालसा ही तो। आपके लिए छत सिर पर पड़ी है। सो न सरकते बने, न आगे ब .ते।"[167] "हम तो अपने को ही सम ाकर सब्र कर लिया करते हैं कि दिन-रात मुक़द्दमों की तैयारी, इतने बड़े कुनबे की िाम्मेदारी तुम्हारा नंबर तो आखिर में लगा पड़ा है महक बानो। तुम्हारी बारी

---

[163] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.155-156
[164] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.132
[165] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.177
[166] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.181
[167] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.150

ाल्दी कैसे आएगी।"[168] कृपानारायण बेटी मासूमा की शादी में महक को आने से मना करते हैं तो महक क्रोधित होती है और उसके पास कुछ न होने के कारण ऐसी म ाबूरी ोलनी पड़ रही है अगर मेरे पास भी कुछ होता तो क्या बेटी के विवाह में ाने की किसी से इ ा ात लेनी पड़ती। वे ोतित होकर वकील से अपनी माँ द्वारा दिए गए गहनों की माँग करती है। ब ों के भविष्य की िंता में अपने आप में परिवर्तन लाती है। इस पर महक कहती है-"हमारे ब ों के इस बेदरेगी से छीन लेने का भला क्या हक़ है आपको?"[169] वह ोतित बनकर अपने हक और कर्तव्यों के प्रति स ागता दिखाती है और अपनी माँ के गहने मांगती है। "हमारी माँ के ोवर हमें आ ा शाम तक मिल ाने ाहिए। आप अम्मी के वकील रहे, अब हम आपकी मुवक्किल की बेटी हैं, िसे उन पर पूरा हक है।"[170] वह अपनी ज़िद पर अटक ाती है। कहती है शादी ब्याह बाद में होते रहेंगे पहले गहने ाहिए और वकील साहब पर गहनों की प्राप्ति के लिए बैरिस्टर अन्वर खाँ की तरफ से मुकदमा दायर करती है। बेटा बदरन ऐसी बेरुखी अब्बू के सा ि न करिए कहने पर महक कहती है-"हक माँगना अगर लड़ाई है तो दूसरों का हक मारना भी बेइंसाफी है।"[171]

स्पष्ट है कि ाब बात बर्दाश्त से बाहर होती है तो विद्रोह ही ान्म लेता है। महक भी बर्दाश्त करने की सारी सीमाएँ पार कर विद्रोही बन कर दुर्बल से सबल बनकर अपने हक़ की माँग करती है। वकील उसको भोगता है उसकी माँ के गहने हड़पता है। अंत में उससे उसके ब े भी छीन लिए ाते हैं। ाब महक से मातृत्व छीना ाता है तब विद्रोही बन कर अपना हक वकील से छीन लेने में

---

[168] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.154
[169] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.203
[170] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.204
[171] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.207

कामयाब हो ाती है। यहाँ अपने हक के लिए महक ोतित बनती है िसके आगे वकील को ुकना पड़ता है।

स्त्री में ाब आत्मशक्ति उत्पन्न होती है तो स्त्री अपने हक़ और आत्म निर्णय से ाागृत होती है।

‘ ूला नट’ की शीलो में आत्मशांति दिखाई देती है। प्रगतिशील वि ाारों वाली शीलो को पति सुमेर द्वारा त्यागे ााने के बाद देवर बालकिशन से संबंध बनाती है। सास दोनों का विवाह करना ााहती है इस पर शिलो मना करती है। कहती है हमारा मन का ब्याह हुआ है। इसमें बछिया का क्या काम, दूबारा विवाह करने से क्या होगा। सामा िक व्यवस्था के अनुसार ब्याह करने पर, पूरे रीति-रिवा ा से बंधन में बंधने पर क्या हुआ पति छोड़ के ाला गया। गांव, ााति-बिरादरी, आस-पड़ोसी सब कहते हैं बछिया (बछिया याने बछिया दान कर दूबारा ब्याह करना) करने को कहते हैं। बछिया की पात खाने को कहते हैं। शीलो किसी की बात नहीं सुनती, उसे किसी गाँव, ााति-बिरादरी, आस-पड़ोस की परवाह नहीं है। ोतित होकर सबका सामना डटकर करती है। गाँव की काकी ाब उसे शादी करने का सु ााव देती है तब शीलो उसे आड़े हाथ लेती है-"ऐ काकी ाी, पुलिसिया बेटा की बछिया की पाँत खालीःपूछा नहीं कि बरकट्टो (बाल कटी) ब्याही है या रखैल? बेटों के ालते रसम-रीत भूलकर बहुओं की पीठों के लिए कोड़े लिए फिरती हो तुम बू. ी ानी।"[172] अब तक शीलो ने बहुत दुत्कारें सही थी-"रखैल से बदतर... रंडी। रद्द की हुई औरत अब बिरादरी से रद्द। ुड़ैल राक्षसी बदकार।"[173] इन सब से शीलो को कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे सौ भद्दी गालियाँ भी कम ाोर नहीं बना सकती-गाँव, समा ा, ााति किसी को शीलो महत्व नहीं देती। यहाँ तक कि सास की भी उपेक्षा करने से नहीं ूकती। सुमरे धोके से

---

[172] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.80
[173] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.84

 ामीन हड़पने के बहाने शीलो को मीठी बातों में फंसाना ाहता है। "शीलो शहर में रहना-बसना हमारी म ाबूरी हो गया है... मैंने उससे (नई पत्नी से) कहा था कि शीलो ैसी औरत धरती पर बहुत नहीं ानमती। रग-रग में त्याग, दया भरे वह विरली ही है। दिल बहुत बड़ा। ... वैसे, बात कुछ भी नहीं, अपने हिस्से की ामीन का सवाल है, उसे आनाकानी क्यों होगी? ... स ी बात तो यह है कि घर वसीले के लिए ामीन बे ाना तो बहना है, मैं तुम्हारी राह का काँटा बनना नहीं ाहता। तुमने ो किया, बुद्धि वि ार से किया। अक्लमंद कदम।"[174] इस पर शीलो ोतित होकर सुमेर का ावाब देती है-बालकिशन से हमारा क्या नाता? ... इस नाते को बड़ा मानते हो तुम... काये के पति-पत्नी, बाबू ी? वह अबोध मन का अ छा है, सो बस... तुम्हारी ब्याहता होने के बाद भी... पर छोड़ो उस बात को। बालकिशन तो ऐसे ही है हमारे लिए, ैसे तुम्हारे लिए तुम्हारी दूसरी औरत। बिनब्याही, मनम ीं की। स ा मानो, बाल भी इससे यादा कुछ नहीं।" ... ामीन- ायदाद की बात रहने दो कि यह मामला तो अब भी हमारे-तुम्हारे बी ा ही है। बालू अपने हिस्से का मालिक है। वह कोन होता है हमारे-तुम्हारे हिस्से में टाँग अड़ाने वाला? बिल्कुल ऐसे ही, ैसे तुम्हारी वह बि ारी कोई नहीं होती हमारे-तुम्हारे बी ा, ये ार- ोरू के मामले बड़े-बेड़े (कठिन) हैं, बाबू ी... तुम प े लिखे हाकिम ऐलकार सब सम ा गए होंगे।"[175] शीलो का यह रूप ागृत हुआ दर्शाया गया है। इन वाक्यों में ोतित स्त्री ागृत हुई है ो अपने हक को यूं ही नहीं ाने देती। अपने खेतों में रु ा लेती है। ामीन की रखवाली स्वयं करती है। उसे किसी आदमी पर भरोसा नहीं। वह अपने खेतों में तरह-तरह की हर साल फसल उगाती है-गेहूँ, मटर, ाना, मसूर ग्राम सेवक की बातों पर खेती करती है-"फसल ाक्र अपनाओ, खेत में पैदावार ौगुनी हो ाएगी।"[176] सास

174 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.110-111
175 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.111-112
176 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.114

खेती की तासीर बदलने पर बाल किशन को मारने दौड़तीत है। इस पर शीलो कहती है-"अम्मा ी, गुस्सा पी ाओ। बू्े ामाने उखडेंगे नहीं, तो नया बखत आएगा कैसे? अपने इस रेंगटा को रेत में नहीं, सड़क पर ालना सीखने दो। शुरू में पाँव छिलेंगे ारूर, पर मोटर की तरह दौड़ना आ ाएगा।"[177]

शीलो बालकिशन को कहती है-"बुरे की बात नहीं मैं तो यह कहती हूँ कि हल हाँकते हो, इसका मतलब यह तो नहीं कि बू्े हो गए। धोती-कुर्ता ही पहनोगे। िरगाँव से कमी ा-पैंट काहे नहीं सिलवा लाते।"[178] और अपने कमाए हुए पैसों को बैंक में रखने की सलाह देती हुई कहती है। "अपनी मेहनत की कीमत ो नहीं ानता, उसे लोग भी नहीं ीन्हते।"[179] शीलो आधुनिक वि ारधारा वाली ोतित स्त्री का प्रतिरूप है ो अपनी ागृति से सबको स ोत करना ाहती है। ीवन मूल्यों को नये ंग से ीना ाहती है।

'इदन्नमम' की बऊ, मंदा और कुसुमा को ोतित स्त्री के रूप में दर्शाया गया है। गाँव की क्रूरता, अनीति, अवमानना, हड़पनीति के खिलाफ ये तीनों स्त्रियाँ ागृत होकर गाँव की क्रूरता का डटकर सामना करती हैं। बऊ बेटे की मौत का िम्मेदार अभिलाख को मानकर कहती है-"अभिलाख यार दोस्त ही तो था महेंदर के, पर नहीं देखी गई महेंदर की बड़ी-बडां। देखते-देखते दुश्मन हो गए। विरोधी पाल्टी में ा मिले।"[180] यहाँ रा ानीति की दोहरी नीति पर ोतित बऊ अभिलाख के विरोध में आलो ाना करती है। वहीं बहु भागने पर भी वह ोतित होकर पोती मंदा को अपने भरोसे पालती-पोसती है। बहू की उपेक्षा करते हुए कहती है-" वानी तो मार रही थी रंडी की तो मोंडी के सामने ही बनहोई के संग।"[181] ाब प्रेमा बेटी को पाने के कोर्ट में अ ाी देती है। अदालत में मुकदमा

---

[177] ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.115
[178] ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.89
[179] ाूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.115
[180] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.17
[181] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.27

दायर होने पर बऊ ाँसी की अदालत में ाीफ साहब को ोतित होकर कहती है- " ाीफ तुम फिकीर ाीन करो। लड़ने दो उस कं ारी को... ाब तक इस काया में पिरान हैं, लड़ेंगे हम भी। पूरी ि ांदगानी हमने लड़ाई लड़ी है हँसी-खेल नहीं है। ि ामिंदारीन बने रहना।"[182] बऊ किसी भी हालात में प्रेम को मंदा नहीं देना ाहती। वह अपने बेटे की आखरी निशानी को खोना नहीं ाहती है। कुसुमा भी ोतित स्त्री हे ाो पति के शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाती है। कुसुमा पति के अन्याय अत्या ाार से इस प्रकार बदला लेती है। वह पति के रहते अमर सिंह (दाऊ ाु) से संबंध बनाती है। उसके ब ो को अपनाना ाहती है। यशपाल अवैध ब ाा नहीं ाहता। इस पर कुसुमा ोतित होकर कहती है-"ओ नकीले, खैर मना कि ब ाा दाऊ ाू का है। नहीं तो यह किसी का भी होता, ाात का आन ाात का। गैल ालते आदमी का तुम्हें क्या हक... कुत्ता की ाात, नहीं गिनते हम तुम्हें।"[183]

यशपाल कुसुमा की बेरहमी से पिटाई करता है। मार खाने के बाद भी वह दाऊ ाु के अवैध संतान को ान्म देती है। और घर परिवार की उपेक्षा के बाद भी दाऊ ाु से ाुड़े रहना पसंद करती है। ाब मंदा का कैलाश मास्टर बलात्कार करता है तो कुसुमा उसकी ामकर पिटाई करती है। उसके हाथ-पाँव तोड़ देती है। उसकी उपेक्षा करते हुए कहती है-"अरे तेरी नास हो ााए। ठठरी बंधै तुम्हारी। हुलकी परै तुम पै... मोरी मतारी, ो कैलसवा! कैलास मास्टर! तब तोय नहीं छोड़ेंगे हम। उसकी पाँवों की हड्डियाँ तोड़ डालती है। उसे गाली देती है-कीरा परे तुम्हारे। मंदा मामा कहके टेरती है, सो भी नहीं ख्याल किया? फिर काहे को बहन-भानि ा मानने का स्वाँग भरते हो? रा छत। कुकरमी। अधरमी।"[184] कुसुमा ोतित शेरनी की तरह कैलास पर टूट पड़ती है और मंदा

[182] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.77
[183] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.124
[184] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.106

को सहानुभूति के साथ सम ाती है। "बिन्नु, अपने मन में तनिक भी भय मत लाना। ... ि ांदगी में अ छा-बुरा घट ाता है बिटिया..., ो तुमने किया ही नहीं, उसके लिए अपने को दोसी क्यों मानना? उस कुकरम की भागीदारी मंदा तुम तो बिल्कुल नहीं।"[185] कुसुमा का पति के खिलाफ आवाज़ उठाना, कैलाश की पिटाई करना, खुलेआम दाऊ ु से संबंध रखना, मंदा को सम ाना ोतित स्त्री के लक्षण दृष्टिगत होते हैं।

मंदा के विवाह की ि ांता बऊ को होने पर मंदा कहती है-"यदि कभी ब्याह हुआ भी तो मकरंद से ही होगा।"[186] सोनापुर आने के बाद मंदा में ागृति आती है। अभिलाख से संघर्ष करना, पिता का सपना पूरा करना, गाँव में अस्पताल बनाना, भ्रष्टा ार के खिलाफ विद्रोही बनना, गाँव के विकास पर ध्यान देना, विस्थापित किसानों के लिए आंदोलन करना, सोनपुरा के गाँववालों तथा मज़दूरों को संगठित कर उनमें ोतना भरना, अभिलाख के शोषणों का खात्मा करना,उसे ुनौती देना कि-"ि ास धरती से तुम पैसा खुदवा रहे हो, उस पर हम पसीना बहा लें बस। बेघर होने से ब ा ाएँगे, अपनी ाड़ों से ुड़ी रहकर हरे भरे बने रहेंगे, इस गाँव के लोग।"[187] मंदा गाँव पर हो रहे शोषण, अन्याय, अत्या ार के खिलाफ ोतित होकर आवाज़ उठाती है। डॉ.गोपाल राय के वि ारों में-"इदन्नमम की मंदाकिनी वास्तविक अर्थों में एक ु ारू युवती है ो केवल परिवार और समा ा द्वारा स्त्री के लिए निर्मित बंधनों को ही नहीं तोड़ती वरन् उस शोषण के विरुद्ध भी बनकर खड़ी होती है ो आ ा के नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों और अन्य ग्रामीणों पर कहर के रूप में बरसा ा रहा है।"[188]

---

[185] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.107
[186] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.151
[187] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.198
[188] हिंदी उपन्यास का इतिहास, डॉ.गोपाल राय-पृ.387

‘कठगुलाब’ के सभी पात्र ोतित रूप धारण किए हुए हैं। किसी न किसी रूप में स्त्री ोतित नज़र आती है। इस उपन्यास की स्त्रियाँ अनवरत शोषण एवं प्रताड़ना से उकताकर प्रतिशोध और विद्रोह की मुद्रा में खड़ी हैं। स्मिता पारिवारिक तथा सामाा िक शोषण का शिकार होकर ोतित बनती है। ाी ाा द्वारा बलात्कार करना, पीड़ित-प्रताड़ित होकर घर छोड़कर आत्मनिर्भर बनकर अमरीका ाली ााना, वह ि ाम ाो मनोविश्लेषक से विवाह करती है ि ाम स्मिता को मानसिक रोगी के सिवाय कुछ नहीं मानता। उसे प्रताड़ित करता है। उपेक्षा-प्रताड़ना से तंग स्मिता एक दिन बेल्टों से उसी की पिटाई कर घर से ाली ााती है और उससे तलाक ले लेती है। ाी ाा के मरने पर उसे दुःख होता है क्योंकि वह उससे प्रतिशोध न ले पाई। स्मिता सो ाती है-"वह दरिंदा इंतकाम का मौका दिए बगैर मर गया। अब वह ि ाम ाारविस को फरार होने का मौका नहीं देना ााहती।"[189]

स्मिता अपमानित करनेवालों से प्रतिशोध लेना ााहती है। अंत में गोधड़ में उपेक्षित, प्रताड़ित स्त्रियों का मार्गदर्शन करती है। उपन्यास में स्मिता ाीवन के उतार- ा.ाव से ोतित हुई है। उसे आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान से ाीना ााहिए ऐसी अपने भीतर ाागृति ागाती है।

नमिता की ोतना पति को लकवा मारने पर ाागती है। नमिता के पति द्वारा अपनी बेटी की उपेक्षा करके बेटे के नाम पर ाायदाद ा.ाना, तरह-तरह के प्रपं ा करके बेटी को बेदखल करना, नमिता को मारना, पीटना, नमिता अपने पति की क्रूरता का बदला लेन ााहती है। प्रतिहिंसा के लिए पति के बाल खीं ाकर उसे ठिकाने पर लाना ााहती है। मारियान ने उपन्यास ‘वूमैन ऑफ द अर्थ’ पर अपने ारनल दिये, पूरे शोध के लिए सामग्री इकट्ठी की पूरे ारनल तैयार करके उपन्यास में बी ा डाले, प्रारूप तैयार किए और इरविन ने उसे भाषा का हेर-फेर

[189] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.45

करके अपने नाम से छपवा लिया, पति ने मानो उसके उपन्यास का अपहरण कर लिया। इस पर मोरियान पति की उपेक्षा करती है, अपशब्द बोलती है-कपटी, धूर्त, नामर्द, बास्टर्ड तुमने मु े धोखा दिया है, धोके से छला है। ेतित होकर घृणा करती है, गुस्से में उसका मुँह नो ा डालती है।

असीमा में परिस्थितियों के कारण पुरुष से बदला लेने की भावना अधिक ि त्रित हुई है। वह पुरुषों को सबक सिखाने के लिए कराटे सीखती है। नमिता के क्रूर पति को सबक सिखाने के लिए कराटे का दाँव-पें ा आ ामा कर उसे मूर्छित कर देना, स्त्री का शक्ति रूप तथा स्त्री अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना उसे पसंद आना। नर्मदा के ी ा के शोषण का सबक उसे पुलिस स्टेशन तक ले ाना, पिता और भाई तथा शोषक पुरुष को हरामी का खिताब देना, उन्हें देखते ही पिटाई करना, ये सारी बातों से असीमा की स्त्री ेतना ागृत हुई है। इस उपन्यास की निम्न वर्ग की नर्मदा ो घर-घर ाकर काम करती है, ूड़ियों के कारखाने में काम करके परिवार का पोषण करती है। बहन और बहन के पति द्वारा धोखा देने पर ागृत होती है। ायदाद के लिए सा िश से नर्मदा की शादी ी ा से होना, ये हकीकत मालूम होने पर नर्मदा उनकी उपेक्षा करती है। और विद्रोही बन ाती है। ि स भाई के लिए उसने शोषण सहा था वह उसे छोड़कर ला ाता है। तब वह कहती है-"कैसा भाई कौन भरतार।"[190] ी ा के अत्या ार, शोषणों से तंग आकर उसे एक दिन-"टाँगें तोड़कर सड़क पर फेंक दूँगी। तू मेरी रखैल थी। कमा-कमाकर खिलाया तु े मुस्टंडे।"[191] भां ों का ख्याल आ गया, वरना दुसमन बहन के सुहाग की तो मु े राई-रत्तो परवा बाकी ना थी।"[192] "परिस्थिति से उत्पन्न सभी स्त्रियाँ ेतित दृष्टिगत होती हैं।

---

[190] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.135
[191] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.189
[192] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.155

'छिन्नमस्ता' में प्रिया पारिवारिक संत्रास के कारण शोषित है। पति द्वारा व्यापार का विरोध करने पर सो ाती है-"सारे ुल्मों के सामने... सलीब पर लटकते मैंने पाया कि मैं पूरी तरह ुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।"[193] प्रिया अपने अस्तित्व के प्रति ोतित हुई है। प्रिया आत्मनिर्भर बनना ाहती है। अपने आपको स्वावलंबन रखना ाहती है। यही बात वह दाई माँ से कहती है-"औरत को अपने पैर पर खड़ा होना ाहिए। देखो तो तुम नहीं कमाती तो तुम्हारे ब ो का क्या होता।"[194] प्रिया परंपरागत स्त्री ैसा ीवन बिताना नहीं ाहती। वह विवाह भी नहीं करना ाहती थी क्योंकि उसे अपने माँ, बहन, भाभी ैसा परंपरागत, आडंबरयुक्त, रू ़ि ग्रस्त ीवन ीना पसंद नहीं है। "सदियों की इस अमानवीय परंपरा को किस बीमारी का नाम दूँ, ाहाँ मेरी ैसी विद्रोही लड़कियाँ भी समर्पिता पत्नी और माँ बन ाने में विवश हो ाती है? मैंने अपनी ि ांदगी का एक लंबा समय अम्मा ैसी न हो ाने के संघर्ष में लगा दिया। नहीं मैं औरत नहीं होना ाहती... अम्मा! तुम्हारी ैसी, ी ी लोगों ैसी ि ांदगी मैं नहीं स्वीकारना ाहती, भाभी की तरह घुट-घुटकर नहीं मरना ाहती।"[195] प्रिया मारवाडी ाति की स्त्रियों की घुटन से बाहर निकलना ाहती है। वह सम ाती है। मारवाडी स्त्रियाँ शोषण के खिलाफ मुँह नहीं खोलती दब्बू बनकर सब कुछ सहती रहती हैं। विवाह के बाद भी प्रिया शोषण का शिकार होती है। पति उसे भोग्या के सिवाए कुछ नहीं सम ाता। प्रिया अपनी योग्यता को घरेलू काम-का ा में बंद नहीं करना ाहती है। "ओ नो, अब नहीं सारी ि ांदगी में बस टेबल स ाती रहूँगी? बर्तनों को संभालती रहूँगी... सब कुछ कितना नीरस है... गृहस्थी के ामेले कभी शांत न होने वाली लहरें... क्या इसी को संसार सागर कहा ाता है? ... यह

---

[193] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.10

[194] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.66

[195] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.91

ाँ ा नहीं बदलेगा।"[196] नरेंद्र में मानवीय संवेदना ैसी कोई बात नहीं थी। वह ीवन को पैसा, अ छा खाना, सेक्स सम ाता था। पति द्वारा उपेक्षा, मारपीट सबको सहन करना, उसके व्यक्तित्व को खंडित करता है। वह सो ाती है-"सुरक्षा का मोह, व्यवस्था की स्वीकृति... इन स्याह गुफाओं से तुम कब निकलोगी? मन कह रहा था-'सहन-करो'। पर क्या सहन करूँ? गाली-गलौ ा, मारपीट और उसके बाद दमन का समर्थन करते हुए घरवालों के उपदेश।"[197] प्रिया की ेतना अस्तित्वबोध की लड़ाई है, ि ासके लिए वह पीहर और ससुराल में संघर्ष करती है। प्रिया का संघर्ष ोतित स्त्री की ाागृत का संदेश है।

प्रिया के ससुर की रखैल तिलोत्तमा की बेटी नीना परिस्थिति के कारण ोतित हुई है। अवैध संतान की समस्या से नीना संघर्ष करती है। पिता के पैसे भी स्वीकारना उसे पसंद नहीं। वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना ाहती है। वह सम ाती है-"अपने पैरों पर खड़ी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता।"[198]

'अपने-अपने ेहरे' की रमा एक संवेदनशील स्त्री है। वह विवाह, पति, ब े आदि से परे स्त्री के अस्तित्व को महत्व देती है। रमा मिस्टर गोयनका से प्रेम करती है। उसके साथ ीवन भर दोस्त बनकर अकेले ीवन बिताती है। वह किसी अधिकार, मान्यता, सामाि ाक व्यवस्था आदि से परे स्त्री की अपनी आत्मनिर्भरता तथा आत्मसम्मान के साथ ीवन ीना ाहती है। रमा का गोयनका से प्रेम और उसे सामाि ाक मान्यता न मिलने पर केवल बिना किसी शर्त के दोस्त बने रहना, सभी बातें ोतित स्त्री का रूप है।

'पीली आँधी' की सोमा भी पारंपरिक संहिता का खंडन कर पति के शोषण, अन्याय, अत्या ार का विरोध करती है। वह आधुनिक स्त्री का रूप है ाो प्रेम की तलाश में पति को भी त्याग ाती है। सोमा मारवाड़ी समा ा के आडंबर,

---

196 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.141
197 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.147
198 छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.145

रीति रिवा ा, रू्ि.ग्रस्त नियमों का खंडन कर मि.सेन से प्रेम कर उसके अवैध ब ो को ान्म देना ाहती है। पति इस पर उसका शारीरिक एवं मानसिक शोषण करता है। सोमा इन शोषणों को सह कर भी प्रेम की तलाश एवं मातृत्व भावना के कारण प्रोफेसर सेन के घर हमेशा के लिए ाली ाती है। सोमा का ि ात्रण एक प्रगतिशील, आधुनिक स्त्री का दर्शाया गया है ाो अपने अस्तित्व, मान-सम्मान को महत्व देती है। पुरानी परंपराओं का खंडन कर ोतित स्त्री बनती है।

'अल्मा कबूतरी' की अल्मा, कदम, आनंदी, भूरी भी ोतित स्त्री के रूप में दर्शायी गयी हैं। ाो सामाािक, पारिवारिक, बिरादरी के शोषण, अन्याय, अत्या ाार के खिलाफ विद्रोह कर ोतित बनी हैं। आनंदी पति का रखैल रखने पर, पति मंसाराम की उपेक्षा करना, पति को घर- ामीन से बेटे द्वारा बेदखल करवाना, रखैल के बेटे रा ाा को कुत्ते से कटवाना, आग में ालने की धमकी देना एक ाु ाारू ोतित स्त्री दिखाई देती है। वही कदमबाई, बेटे के कारण समा ा, बिरादरी से टक्कर लेना, मंसाराम को राणा उसका बेटा होने पर भी न बताना, बेटे को प्ा़ना, रामसिंह के पास शिक्षा के लिए भे ाना, अन्याय, अतया ाार, उपेक्षा, प्रताड़ना रहने पर भी अड़िग रहकर ाीवन ाीना, गाँव में दारू की भट्टी लगाने पर बिरादरी वालों में ोतना भरना आदि कदम की ोतना के संकेत हैं। अल्मा भी एक ाु ाारू पात्र है। वह अविवाहित ही राणा के ब ो की माँ बनती है। राणा को ब ो से मर्द बनाती है। कई सामाािक शोषणों का शिकार बनती है। पुरुष के अमानवीय अत्या ाारों का शिकार बन कर, पशु से भी बदतर ाीवन ाीकर भी अपने ाीवन को समाप्त नहीं करती। सामाािक विसंगतियों से हार नहीं मानती। 'भूरी' ाागृत स्त्री है ाो कबूतरा होकर क ाा से टक्कर लेती है। बेटे के भविष्य एवं प्ा़ाई के लिए अपने शरीर का सौदा करती है। भूरी बेटे को योग्य बनाकर समा ा में सम्मान का ाीवन देना ाहती है। वह बिरादरी से भी टक्कर लेती है। बिरादरी के खिलाफ बेटे को गुलेल, कुल्हाड़ी, ाोरी- ाकारी के ब ााए बुक, कलम, पेंसिल थमाती है। पति का सपना पूरा करना ाहती है। बेटे के कारण

समाज की विसंगतियों का शिकार होकर भी बेटे के भावी जीवन की मनोकामना करती है। भूरी एक विद्रोही, चेतित स्त्री के रूप में चित्रित हुई है।

‘चाक’ की सारंग भी सामाजिक विसंगति, शोषण का शिकार होती है। वह अपनी बहन रेशम के हत्यारे को जेल की सलाकों में भिजवाती है। सारंग अन्याय से लड़ने, आततातियों से दृढ़ता से मुकाबला करने, स्त्री सम्मान, अधिकारों के प्रति सजग होना, सारंग स्त्री संहिताओं की सभी मान्यताओं को दृढ़ता एवं हिम्मत से चुनौती देती है। वह परंपरा से चलते आए पुरुष सत्ता को चुनौती देती है। अंत में ग्राम पंचायत के चुनाव में प्रत्याशी के रूप में प्रधान पद के लिए खड़ी होती है। सारंग सामाजिक शोषण, अन्याय, अत्याचार, पुरुष सत्ता के खिलाफ चुनौती बनकर खड़ी होती है। सारंग आधुनिक युग की प्रगतिशील चेतित स्त्री का चित्रण है।

‘कलिकथाःवाया बाइपास’ की किशोर की छोटी बेटी में मारवाड़ी स्त्री के परिवार की छटपटाहट और पारंपरिक घुटन भरी जिंदगी के प्रति गहरी संवेदना है। वह अपनी बंदिनी अवस्था पर सोचते हुए अपनी बड़ी माँ से कहती है-"बड़ी माँ हम क्यों नहीं खेला करते बगल के मकान की लड़कियों से? हम क्यों खड़े नहीं हो सकते बरामदे में? हम क्यों नहीं जा सकते अपनी सहेलियों के घर? हम क्यों कैद हैं पिंजरे में बंद चिड़ियों की तरह? तुम क्यों कैद हो? पिंजरे में बंद चिड़िया की तरह? तुम क्यों कैद हो बड़ी माँ? तुमने क्या पाया ऐसा जीवन जीकर? किसके लिए जीवन जिया तुमने ऐसा? तुम क्यों सहती हो हर बात पर पापा की मरजी।"[199] मारवाड़ी स्त्री की पराधीनता की स्थिति पर छोटी बेटी चिंतित है। उसमें इस परंपरा के विरुद्ध स्त्री चेतना जागृति की कामना है जिसमें मारवाड़ी रूढ़िग्रस्त व्यवस्था से स्त्री मुक्ति का संकेत है।

---

[199] कलिकथाःवाया बाइपास, अलका सारावगी-पृ.58

‘एक ामीन अपनी’ की अंकिता का ि ात्रण ोतित स्त्री के रूप में हुआ है। वह सामा ि ाक व्यवसथा के बने नियमों का खंडन करती है। वह विज्ञापन ागत के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकड़म, देह-व्यापार का विरोध करते हुए इस ग्लैमर में फंसी नीता का विज्ञापन में कम कपड़े पहनने पर विरोध करते हुए कहती है-"आखिर इस सीमा तक कपड़े कम करने की कौन सी विवशता टकरा गई तुमसे? तुम खूबसूरत हो, सेक्सी हो, यह कपड़ों के बाव ूद छिप नहीं पाता... ारूरी है रातों रात नंबर वन का द ाा हासिल करने के लिए वह सब करना ाो एक स्त्री के लिए ही नहीं संपूर्ण स्त्री समा ा के लिए भी अशोभनीय और ल ाा का विषय है।"[200] वह नीता के ारिए पूरे समा ा को ाागृत करना ााहती है। स्वतंत्रता का अर्थ शरीर का प्रदर्शन नहीं है। इस प्रकार के आधुनिकता को अस्वीकार करना ााहिए। तलाकशुदा, नौकरीपेशा स्त्री समा ा में अकेली रहती है तो समा ा उसकी उपेक्षा करता है। दूसरी स्त्रियाँ शक की दृष्टि से देखती हैं। वह इसका विरोध करती है- ाो स्त्री पति से अलग हो गई है, उसके साथ दाल में कुछ काला है। भले पति के साथ रहते हुए पूरी दाल ही काली क्यू न हो... मगर सामा ि ाक आड़े में सब नैतिक है।" अंकिता समा ा में स्त्री पुरुष की दृष्टि परिमा ि ात करना ााहती है। लिंग के भेद को मिटाने की बात सो ाती है। इस भावना से स्त्री को स्वयं मुक्त होना है। फरेबी मर्यादाओं से, कुंठाओं से मुक्त होना है। तभी आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर निर्भीक वि ारण कर सकेगी। स्त्री अपनी अस्तित्व की रक्षा करते हुए ाीवन को सार्थक बना सकेगी।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों को लेखिकाओं ने स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों के अंतर्गत स्त्री की विशिष्टताओं को और उनकी क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। स्त्री परिस्थिति ान्य शोषणों के खिलाफ ोतित बनकर संघर्ष करती है।

---

200 ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.124

निष्कर्ष

अंतिम दशक के उपन्यासों में आत्मनिर्भर स्त्री की हर समस्या का ि त्रण करने में स ाग दिखाई देती हैं। कृष्णा सोबती अम्मु के माध्यम से कहलवाती है- "स्त्री का वक्त तब सुधरेगा ाब वह अपनी ाीविका आप कमाने लगेगी।" यानी स्त्री ाब आत्मनिर्भर होगी तभी सभी समस्याओं का अंत होगा।

अंतिम दशक की स्त्री लेखिकाओं के विवे य उपन्यासों में स्वावलंबी विद्रोही नायिकाओं का ि त्रण हुआ है। ये नायिकाएँ परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर अपने व्यक्तित्व के आधार पर नयापन प्रदर्शित करती है। बदलती हुई परिस्थितियों के प्रभाव से स्त्रियों में विद्रोही रूप दिखाई देता है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'अनाम प्रसंग' की ममता, 'ऐ लड़की' की बेटी, 'कठगुलाब' की स्मिता, नमिता, मरियान, असीमा, नर्मदा, नीर ाा सभी पात्र, 'आवां' की नमिता पाण्डेय, स्मिता, गौतमी, 'एक ामीन अपनी' की अंकिता, नीता, ' ूला नट' की शीलो, 'अपनी सलीबें' की सुमित्रा, 'दिलो-दानिश' की छुन्ना बीबी, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा, कदमबाई, 'आपने-अपने कोणार्क' की कुन्नी, प्रीति, कावेरी, ' ाक' की सारंग, 'यामिनी कथा' की यामिनी, 'अपने-अपने ेहरे' की रमा, 'हमारा शहर उस बरस' की श्रुति, 'माई' की सुनैना, सभी पात्र प्रगतिशील स्त्रियों के रूप में दर्शायी गई हैं ि न्होंने इस राह पर ालते हुए विद्रोह किया है और अपने-आपको उपेक्षाओं के कटघरे में खड़ा किया है।

विवे य उपन्यासों में समान अधिकार की समस्या विविध रूपों में ि त्रित है। माँ अपने ही बेटे-बेटियों को समान अधिकार नहीं देती। पत्नी को भी समान अधिकारों से वं ि त रहना पड़ता है। ाो स्त्री प ़ी-लिखी है वह समान अधिकार के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। 'एक ामीन अपनी' उपन्यास में ऐसा है कि ि ासमें केवल भो ारा ा के परिवार में स्त्रियाँ पुरुष की बराबरी से काम करके अपने अधिकारों की प्राप्ति करती हैं। विधवा पुनर्विवाह के लिए बाधा डाली ााती

है तो विधुर के लिए छूट दी ाती है। अतः स्वाभिमानी स्त्री को समा । सहारा नहीं देता बल्कि उस पर लाँछन ही लगाता है।

विवे य उपन्यासों में स्त्री के मानवीय संवेदनाओं का ित्रण हुआ है। स्त्री को शोषण को केंद्रित किया गया है किस प्रकार सामा िक व्यवस्था स्त्री का दलन करती है। विवाहित स्त्री के घुटन भर ीवन को व्याख्यायित किया गया है। पति पत्नी पर अपना सा अधिकार ताना ाहता है िसके कारण उसे शोषित ैसा ीवन ीना पड़ता है। वह अत्यधिक शोषण के कारण उसमें मानवीय संवेदना उत्पन्न होती है। उसी प्रकार ब तलाकशुदा स्त्री का दमन समा । के साथ-साथ पुरुष प्रधान परिवार भी अनेक अत्या ार अन्याय करता है तो उसे अपना ीवन घुटन भरा लगता है। अपने इस रूप को मानवीय बनाना ाहती है। विधवा स्त्री की स्थिति आ । भी वैसी ही है ैसे सदियों पुरानी थी। पर लेखिकाओं ने विधवा को पुनर्विवाह का संकेत अपने उपन्यासों में दिया है िससे उसके ीवन में अमूलाग्र परिवर्तन आए। लेखिकाएँ विधवा ीवन की घुटन भरी, उपेक्षित परिस्थितियों को उभारना ाहती है उन्हें मानवीय रूप में व्याख्यायित करना ाहती है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों को लेखिकाओं ने स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों के अंतर्गत स्त्री की विशिष्टताओं को और उनकी क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। स्त्री परिस्थिति न्य शोषणों के खिलाफ ोतित बनकर संघर्ष करती है। ‘दिलो दानिश’ में पत्नी, कुटुंब, रखैल महक सामंती और नवाबी परिवेश की ोतित स्त्रियाँ हैं ो अपने-अपने अस्तित्व बोध के लिए ागरूक हैं। ‘इदन्नमम’ की स्त्रियाँ सामा िक व्यवस्था के खिलाफ, ग्रामीण अनीति, हड़पनीति परंपरा के खिलाफ संघर्ष कर नमानव के अन्याय, अत्या ार के खिलाफ न ागृत करती है। मंदा नसंगठन में प्रशंसनीय कार्य करती है। माफिया ठेकेदारों को ठिकाने लगवाती है। ‘कठगुलाब’ की स्मिता, नमिता, नर्मदा, असीमा, नीर ा सभी स ोत ागृत स्त्रियाँ हैं। ये सभी पुरुष प्रधान संस्कृति को खत्म करने का प्रयत्न करती

हैं। ‘छिन्नमस्ता’ की प्रिया अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ती है। ‘कलिकथाःवाया बाइपास’ में छोटी बेटी को आधुनिक प्रगतिशील ोतित बेटी, ोतित स्त्री को वाणी देने का प्रयास करती है। ‘ ूला नट’ की शीलो, ‘ ाक’ की सारंग, ‘अल्मा कबूतरी’ की अल्मा, भूरी, ‘अपने-अपने ोहरे’ की रमा, रीतू, ‘पीली आंधी’ की सोमा सभी स्त्रियों ने पारंपरिक रू ि ग्रस्त मान्यताओं को ुनौती दी है। स्त्री संहिताओं का खंडन कर ोतित हुई हैं। अन्याय, अत्या ार, शोषण, उपेक्षा, अवमानना, पुरुष के अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह किया है। स्त्री संहिताओं की सभी मान्यताओं को दृ ता और साहस के साथ ुनौती दी है। सभी स्त्रियों में ोतना ागृत हुए हैं। अपने अधिकार, सम्मान, आत्मनिर्भरता के लिए, अपनी अस्मिता, अस्तित्वबोध के लिए, अपने स्वाभिमान के लिए। ‘ऐ लड़की’ की अम्मू, ‘अपनी सलीबे’ की सुमित्रा देवी, ‘एक ामीन अपनी की माँ सभी स्त्रियाँ अपनी बेटी के भावी ीवन के लिए ोतित हुई हैं। उनके भविष्य के लिए िंतित नज़र आती हैं।

* * *

षष्ठ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास : अभिव्यक्ति के विविध रूप स्त्री-विमर्श के संदर्भ में

षष्ठ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास: अभिव्यक्ति के विविध रूप स्त्री विमर्श के संदर्भ में

6.1 भाषा

- 6.1.1 बोल ाल की भाषा
- 6.1.2 प्रतीक, बिंब, संकेत
- 6.1.3 ित्रात्मक भाषा
- 6.1.4 स्त्री ेतनात्मक भाषा
- 6.1.5 िंतन परक भाषा

षष्ठ अध्याय

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास: अभिव्यक्ति के विविध रूप स्त्री विमर्श के संदर्भ में

6.1 भाषा

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में नये प्रयोग, नया सृ ान भाषा में दिखाई देता है। भाषा समा ा में वि ार-विनिमय का सशक्त साधन है। ाो मनुष्य की भावनाओं और अर्ाित अनुभूतियों का शब्दमय रूप है। भाषा की संर ाना पर ही लेखक की सफलता टिकी रहती है। रो ा के वि ार में- "उपन्यासकार का माध्यम भाषा है। वह उपन्यासकार की हैसियत से ाो कुछ करता है, भाषा में तथा भाषा के माध्यम से करता है।"[1] इसलिए वि ारों की सफल अभिव्यक्ति के लिए उर्ाित भाषा का होना आवश्यक है। लेखक भाषा के प्रयोग से ही सामाािक, सांस्कृतिक, साहित्यिक यथार्थ को दर्शाता है। सामाािक परिवर्तन के साथ ही भाषा की संर ाना में भी परिवर्तन होता है। ाीवन के विविध संदर्भों और आयामों की सार्थक अभिव्यक्ति के लिए भाषा ही विशिष्ट माध्यम होती है योग्य भाषा ही प्रभावी प्रयुक्त, भाव वि ार संप्रेषण के लिए आवश्यक है। कथ्य को प्रभावशाली ंग से संप्रेषित करने में समर्थ भाषा से ही कोई भी औपन्यासिक र ाना सार्थक बनती हैं। साथ ही, र ाना में वास्तविकता एवं कलात्मकता तब तक नहीं आती ाब तक भाषा और कथा विषय एक दूसरे के

---

[1] लिंगविस्टिक्स एंड द नावेल, रो ा पाउलट

अनुकूल नहीं होते।"[2] अंतिम दशक की लेखिकाओं ने युग भाषा का प्रयोग अपनी र ानाओं में किया है। इन्होंने इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूलता को त्याग कर प्रत्येक शब्द को उसके संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। डॉ.सुरेश सिंहा के वि ार में-"विकलांग भाषा किसी उपन्यास के कथ्य को न तो समर्थ बना सकती है, न किसी संवेदनशीलता की प्रतीति ही दिला सकती है। वह मानवीय संदर्भों को कोई सार्थक संज्ञा भी नहीं दिला पाती। अपनी सूक्ष्मतः पैनेन एवं काव्यात्मक व्यं ानाओं से ही उपन्यासों की भाषा आ ा अर्थवान हो सकती है।"[3]

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में भाषा नए सृ ान और प्रयोगधर्मिता में मूल्यवान तत्व के रूप में दृष्टिगत हुई है। लेखिकाएँ भाषा की अत्याधुनिक तलाश में लगी हुई है। इन उपन्यासों की भाषा स्वतंत्र परिस्थिति में मध्यवर्ती हो गई है। अतः भाषा को उपन्यास का मूल्यवान स कि तत्व माना गया है-"भाषा की गहनता, व्यं ाना, विस्फोटन तथा विविधता ने एक नए कीर्तिमान नए उपन्यासों में स्थापित किया है। स ानात्मक भाषा के इतने अधिक स ानात्मक रूप इनमें उभरकर सामने आए हैं कि वे समीक्षा से स्वतंत्र मूल्यांकन की माँग कर रहे हैं। उपन्यासकार की गहन एवं ाटिल अनुभूति, संवेदना और उद्देश्य के तीव्र संप्रेषण के लिए आधुनिक भाषा संगठन एवं संयो ान का स्थान अनन्य साधारण है।"[4] अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में भाषा संबंधी विविधता है। शब्दों के विविध रूपों का विधान, भाषा में सौंदर्य लाने के लिये विविध उपकरणों का प्रयोग, मुहावरों, लोकोक्तियों की समन्विति वाक्यों की कलात्मक यो ाना तथा भाषा की युगानुरूप अभिव्यक्ति आदि के कारण लेखिकाओं के उपन्यासों की भाषा में सह ाता और सौंदर्य की प्रयोग धर्मिता अनायास ही परिलक्षित होती है। पात्रों के मन में उठने वाले अंतर्द्वंद्व और उनसे उत्पन्न खंडित प्रतिक्रियाओं को छोटे-छोटे

---

[2] पांडुलिपि, डॉ.ब्रह्मदेव मिश्र-पृ.302

[3] पांडुलिपि, डॉ.ब्रह्मदेव मिश्र-पृ.302

[4] नए उपन्यासों में नए प्रयोग, डॉ.दंगल ाल्टे-पृ.132-133

स्वतंत्र वाक्यों में अभिव्यक्त करने की अद्भुत शक्ति का परि ाय दिया है साथ ही प्राकृतिक, ऐतिहासिक सौंदर्य को शब्द ि ात्रों में बांधने की सामर्थ्य अभिव्यक्ति भी मिलती है। उपन्यासों के परिवेश तथा स्थितियों को पूर्ण प्रभावशालिता और अर्थवत्ता के साथ पाठकों के समक्ष उ ागर करती है। इनकी भाषा पात्रानुकूल सूक्ष्म, सांकेतिक एवं पैनेपन से भरी भाषा अपने कथ्य को संप्रेषित करने में पूरी तरह सक्षम है। ाहाँ तक शब्द प्रयोग का संबंध है, इनके उपन्यासों में खड़ी बोली के ही शब्द नहीं है, बल्कि पात्रों उनकी परिस्थितियों, अनुभूतियों एवं वि ाारों के अनुरूप देशी-विदेशी आदि स्रोतों से शब्दों का ायन हुआ है।

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में लेखिकाओं ने कहाँ तक वि ाार-विमर्श किया है उसका विवे ान करेंगे।

6.1.1 बोल ाल की भाषा

अंतिम दशक की लेखिकाओं ने सरल, सह ा प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। इनके उपन्यासों का परिवेश एवं कथावस्तु सामाि ाक समस्याओं से ओतप्रोत है। इनके निर्मित पात्र भी सामाि ाक समस्याओं से संघर्षरत हैं। लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय, सामाि ाक ान ाीवन को उपन्यासों में ि ात्रित किया है। इसी कारण इनकी भाषा में सह ाता, स ानात्मकता का ि ात्रण मिलता है। साथ ही बोल ाल की भाषा तथा बोल ाल के शब्द प्रयोगों का अ छा ि ात्रण मिलता है। सामान्य व्यक्ति सरल भाषा का प्रयोग अपने ाीवन में रो ा करता है।

उपन्यासों की विषय-वस्तु मानव ाीवन के विविध तथा व्यापक क्षेत्रों तक व्याप्त है।"[5] मैत्रेयी पुष्पा की विशेषता यह है कि इन्होंने उन क्षेत्रों के पात्रों की स्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया। इसी कारण इनके उपन्यासों में

---

[5] पांडुलिपि, डॉ.ब्रह्मदेव मिश्र-पृ.303

बोल ाल की भाषा के वाक्यों एवं शब्दों का उपयोग करना योग्यता के अनुसार उनके पात्र करते हैं।

"लेखक का प्रयास ही 'बोल ाल' की भाषा को भी साहित्य में बदल देता है। बोल ाल के शब्द आम इस्तेमाल के स्तर से उठकर कुछ और हो ाते हैं, उनका अर्थ संदर्भ भी बदल ाता है और उनमें दोहरी शक्ति समाने लगती है, उनकी बदलती हुई ध्वनि और ध्वनि को बदलने के साथ ही उनका तत्काल बदलता है मानसिक प्रभाव।"[6]

'मैत्रेयी पुष्पा' के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश है और इनके उपन्यासों में बुंदेली तथा ब्र ा भाषा का प्रयोग हुआ है। गाँव के व्यक्ति की बोली बहुत ही सरल, सह तापूर्ण सीदी सादी होती है। बोल ाल में प्रयुक्त कुछ वाक्यों के, शब्दों के प्रयोग इस प्रकार है-' ाक' उपन्यास में ब्र ा भाषा का प्रयोग हुआ है। रं ीत कहता है-"पर मु े सहन नहीं था, असली बात तो यही थी कि मैंने अपने दादा के वाक्य सुना दिए ेयरमैन को-थूकता हूँ मैं इस ालालत पर। साली नौकरी है कि आधबटाई? मातहतों की मातहती। अपने घर की खेती देखेंगे और इससे दस गुणा कमाएंगे, पैंट पहनकर इगलास-हाथरस ही घूमने मन करेगा तो अपने ना ा-पानी को बे ने और खली बिनौले लेने ाले आएँगे।"[7]

खड़ी बोली में प्रयुक्त न होने वाली ग्रामीण क्रियाओं का प्रयोग भी हम देख सकते हैं। बोल ाल की भाषा में स्त्री के मानसिक उद्वेग का ित्रण किया है। गाँव की स्त्री की भाषा देखिए-

"हमारी दस धौरी गाय से बेहतर नहीं।"[8] "रिसते-टीसते घाव भर आए, बिरधा छानबीन, दो- ार घड़ी, रात-बिरात, खुंखार क्या पेट से पैदा होता है।"[9] आदि अनेक बोल ाल के वाक्य एवं शब्दों का प्रयोग हुआ है।

---

[6] ऐ लड़की में नारी ेतना, गरिमा श्रीवास्तव-पृ.70

[7] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.44

[8] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.71

[9] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.69

'इदन्नमम' की बऊ की भाषा में बोल ाल की भाषा का प्रयोग मिलता है। "आग लगै मोरी बू ़ी छाती को पथरा पर गए बुद्धि पर। ऐसी सिर्रिन बावरी हो गई।"[10] गाँव की औरतों की भाषा देखिए-"कैसी कठकरे ा मतारी हती कि छोड़ गई पुतरिया सी बिटियाँ को। िारइया-परेबा तक नहीं छोड़ते अपने अंडी-ब ा।"[11] "पर दाऊ ू तुमतो इतेक बीमार इतके बातें भई सो दादा लड़े कका ूसें।"[12] "ठठरी बंधे कोई होंठ बि ाकावे तो कोई आँख मारो।"[13] इस उपन्यास में बुंदेली बोल ाल के शब्दों का प्रयोग भी अत्यधिक हुआ है। ैसे-हौंस, हुलस, लरका, हिरदय, निपट, टपरियों, रात के, बिरयाँ, खरोंटो, आए-होय, बैन, दिलिद्दरों, बिरानी माटी आदि।

' ूला नट' में बोल ाल की भाषा का प्रयोग हम शीलो की सास द्वारा बोले गये हैं। ैसे-"पराई ाई के लिए इतने दुक्ख, गाँव के नर-नारी, बेपैसे का तमाशा... बेभाव का दया-तरस।"[14] शीलो की भाषा में-"अ ास गठरिया मत बाँधे मेरे सिर हाँ"[15] गाँव की स्त्रियों की बोली-"मुँह-सोहिली उडाऊँ। काय री, इनकी बछिया कब होगी?"[16] "आय हाय पूरी न पापरी, अदिया, न बछिया।"[17] "सोई है मेरा पुत सन ुगी आदि अनेक वाक्य बोल ाल की भाषा में प्रयोग हुए हैं। यह हम सामान्य बोल ाल के शब्दों को भी देखेंगे ैसे-अघाने रहो, बरकट्टो, कहाएगी, खिसियानी, बिलबिला, आड-परदा, पाँव, साँ ी, बेला ा, पीपरा आदि अनेक बुंदेली बोली के शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

---

[10] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.11
[11] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.16
[12] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.249
[13] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.248
[14] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.56
[15] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.66
[16] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.75
[17] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.76

'बेतवा बहती रही' में " ाो हमारे भाग में बदौ है अम्मा, उसे कौन पलट सकता है। वह तो होके ही रहने है।"[18] "... ालो घरै ालो, वहीं करियो बेटा। देर-अबेर कोई ाान िानावर आ ााय, तो पिशनन के लाले। ... रोउती काहे कों हौ बिन्नू, कछू सो ाी ही छुइये तुम्हारे भइया ने। पहाड़-सी िांदगानी...। अबै लड़कपन है तुमारो, तुम्हारे का ाानौ दुनियादारी? उमर ही कितेक है अबै फिर कौन-कौन को मों रोकत फिरे। अपने संगै दाऊ को लिपटता। रहीं इसौ हे ा पिरान देत है, का कोऊ सम ाता नइयाँ।"[19] गाँव की बु ुर्गों की भाषा-"नहीं कुँअर ाू, हम पानी कैसे पियें ाा गाँव कौं कन्यादान लये हैं न।"[20] मीरा केहै बेटा? को उतरो मोटर में से। का कैरयी वे, बोलत काहें नहीं है मोंडी ऐसे काहे ठाडी। "[21] पतौ है तुम्हें कछु, कहाँ से खा रही? भूखन मरोगी तब, ब ाा तड़प है, कर्की नीलमी... घर बार सब खतम।"[22] तो, वामे, पतै है, अपनौ दई, बितै, परोकारी, ठठरी बंधे, कुधरी आदि भाषा में बोल ााल के वाक्यों और बोल ााल के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अल्मा कबूतरी में मैत्रेयी पुष्पा ने पात्रों के माध्यम से बोल ााल के वाक्यों को सह ाता से बुलवाये हैं। कदमबाई उसके बेटे राणा से कहती है-"पगले, गाय बैंस, बसावटें की निशानी होती है, और हमारी िांगदी खरपतवार, क ाा लोग उखाड़ने पर आमाद रहते हैं। देखता नहीं, पुलिस पीटने आ ााती है। ठेकेवाले बेबात ही हमें खदेड़ते हैं। पर बेटा हम भी कम नहीं, भूखे-प्यासे भी तोपखाने लूटने से बा ा नहीं आते।"[23] ाब कबूतराओं पर पुलिस हमला करते हैं तो वहां के लोग किस तरह आपस में संकेत देते हैं-"भाँतू रे भाँतू भाग लाल कुत्ती आई

---

[18] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.116
[19] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.117
[20] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.68
[21] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.20
[22] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.118
[23] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.38

रे।"[24] ि ाड़की देती आपस की बोली-"अरी ाल! तू आई ामक ौदस बनकर।"[25] सामान्य बोली में कबूतरी क ाा स्त्री की उपेक्षा कैसे करती है उसका उदाहरण-"धंधे पर लाल मारती है कि ाने, क्योंकि खुद पेट भर रोटी खाकर अ छे लत्ते पहनकर खसम की दी हुई छत के नी े आराम से रहती है न? सभी दिक्कतें कबूतरियों पर है, फिर भी पेट नहीं भरता?"[26] "कल ुगी! अभी से और लेता है।"[27] बोल ााल के शब्दों के उदाहरण देखिए-"छिरिया, राँधेगी, मूरी भैंस, खसम-लुगाई, सिट्टी-पिट्टी, भर्रा ााए, रिता, खील-मखाने"[28] सरबज्ञानी[29], ूतमपौतार[30]। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में बोल ााल की भाषा में सामान्य वाक्यों एवं शब्द प्रयोगों का ि ात्रण किया है।

गीतां ाली श्री कृत माई उपन्यास में भी साधारण बोल ााल की भाषा का प्रयोग मिलता है। दादी के बोली में उत्तर प्रदेश की भाषा का नमूना इस प्रकार है- "ई त ावानिए में ऐसन बाड़ी, हमारा उमर तक आवत आवत त इनकर रंग अउरि दबि ााई, हम त आ ुओं इनका से गोर बनी!"[31] ... ऊत बहरा घूमेला, धामा में, एही से रंग दब गइल बा। बइस हूँ लइका ठहरल लइक, घी क लडुवा टे . ऊ भला।"[32] ... ओह हो हो, देखत न बिमा गदही, दूध उबले क गिर गईले, इहाँ तक महक आवत बा, कम से कम नाहीं त एक रुपया ारा दिहलस।"[33] "अपनों का विश्वास बाद में करेंगे, दुनिया भर का पहले।"[34] " ााओ, अपना काम

---

[24] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.43
[25] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.107
[26] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.63
[27] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.178
[28] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.354
[29] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.354
[30] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.356
[31] माई, गीतां ालि श्री-पृ.22
[32] माई, गीतां ालि श्री-पृ.85
[33] माई, गीतां ालि श्री-पृ.85
[34] माई, गीतां ालि श्री-पृ.133

करते नहीं हो, दूसरों को भी नहीं करने देते।"[35] यहाँ सामान्य बोल ााल की हिंदी का प्रयोग किया गया है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में मारवाड़ी भाषा-बोली के प्रयोग मिलते हैं। बी ा-बी ा में बंगाली, बिहारी भाषा का प्रयोग किया गया है। इनके उपन्यासों में नौकरों की भाषा-बोली में बिहारी के वाक्यों का प्रयोग मिलता है। ैसे छिन्नमस्ता की दाई माँ की बोली बिहारी है-"हरे राम! राम ई बात हमार लिए ि ान बोल बिटिया। हम विधवा मानुस आ ा हमार भतार होत।"[36] "उठो ाल्दी करो ह मोर ब ावा, सात ब ा गईल।"[37] "हम तोहके छोड़कर कहीं नहं ााउब, बड़ा अनर्थ हो गईल, हमार देवता ैसन मालिक नाहीं रहिले... अरे भगवान! ई का ाुलुम करिलेई।"[38] डॉ.गांगुली के माध्यम से हम बंगाली बोली को देख सकते हैं- "कि छु कोरेना शुधु गान करें आर कोबिता लेखे।"[39] "शादी के बाद तो आप सब लोग मोटा हो ााता... ओ तो श्यामा माँ का रंग भी कालो। हम बंगाली लोग ोख नाक देखता, सफेद मयदा का बस्ता नहीं। ... शॉब माँ काली का मो ाी... ओरे माँ ाी। हम तो अभी सुई लेगाया भी ने ही आऊर, आप कोउन-सा दर्द से ि ालाया है?"[40] ... अरे भाई सॉवोर बाबू! हमको ई आप किया खेला दिया? कठोर लाड्डू... मा गो पेटे गोड़ गोड़ कोरछे...दादा आपनि तो ाानने और शोरीर कतो नोगेम।"[41]

इनके सभी उपन्यासों में मारवाडी परिवेश है तो ााहिर है मारवाड़ी वाक्यों एवं शब्दों का प्रयोग मिलेगा। घर की बू ़ी स्त्रियाँ इस बोली का प्रयोग करती हैं। प्रिया के पैदा होने पर उनके दादी प्रिया के पिता को कहती है-"आ पड़ी ऊपर से...

---

[35] माई, गीतां ालि श्री-पृ.137
[36] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.34
[37] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.35
[38] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.19
[39] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.33
[40] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.75
[41] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.95

भाया सॉवर, अभी तो दो को ब्याह बाकी है... या तीसरी और तैयार होगी।"[42] प्रिया की माँ बीमार होने पर दादी उपेक्षा करती हुई कहती है-"साँवर भाया तेरा तो सारा रुपिया लुगाई के ऊपर खर ा होवे ाव! म्हे भी तो सात-सात पैदा किया... इकई यादा नखरो ह। त ा ि ात्तो सहारगो बित्तो ही या नखरानली नार तने न ावगी।"[43]

प्रिया ाब अपनी नानी से अधिक प्रश्न पूछती है तो उसकी नानी ि ा ़ कर कहती हे-"कस्तूरी! तेरी यह छोरी तो भोत ही माथो खा ाव।"[44] "... प्रिया की माँ ाब उपेक्षा करती है तो सामान्य बोल ाल की भाषा में कहती है-"कुछ नहीं बेटा... या राधली रॉड तो टिके ही नहीं और तुम लोगों को टाबरी (ब ो) ैन नहीं लेने देते, खा ाते हैं। मेरे तो सर में दर्द हो रहा है। ी भी घबरा रहा है।"[45] प्रिया की सास भी मारवाड़ी बोली में प्रिया को कहती है-"बिणनी! ीम तो ले, सबेर से कुछ खाई कोनी।"[46]

'पीली आँधी' में बोल ाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। ैसे-"ऐसा रूप तो ारोखे से ाँके तो ील ापटकर ले ाए? ... नौवें महीने तो बेटा तैयार फिर मेरे साँवर के टाबरी को माधो थोडे ही पूछेगा, मारवाड़ी समा ा में घर की स्त्रियों को बाहर की स्त्रियों से दोस्ती करने नहीं दिया ाता। वे दोस्तों को घर यानी घर का भेदी लंका ाए ैसा मानते हैं। इस उपन्यास में दोस्तों को घर आने नहीं दिया ाता। स्त्रियाँ सो ाती हैं-"भायली घर खायली, खावगी घरि खुलवागी।"[47] इसी उपन्यास की ताई बहू को कहती है-" ाुप ाप ो बना है खा लो। सम ी बीणनी।"[48] इस उपन्यास की भाषा सह ाता और स्वाभाविक है। ैसे

---

[42] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.26
[43] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.32
[44] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.56
[45] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.46
[46] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.174
[47] पीली आँधी, प्रभा खेतान-पृ.213
[48] पीली आँधी, प्रभा खेतान-पृ.183

माधो की पत्नी विधवा होने पर सुराणा ाी से कहती है-"सुराणा ाी आपके कहने से ुनड़ी तो मैंने आ . ली, लेकिन माँग कैसे भरूँ? सूराणा ाी सिंदूर का दाग इतनी ाल्दी तो मिटेगा नहीं।"[49] तालाबंधी उपन्यास में पत्नी द्वारा बोल ााल की भाषा का प्रयोग देखिए। " ाी मेरे को न हीरा ााहिए, न ही इम्पोर्टेड सामान। भगवान के लिए आग से मत खेलिए। कहीं आपका ब्लड प्रेशर ब . गया, कोई और बात हो गई तो।"[50]

कृष्णा सोबती कृत 'दिलो दानिश' में महक के संवादों में बोल ााल के शब्द प्रस्तुत हैं। ैसे-"साहिब, आनी- ाानी, सुकून,[51] बाल-ब े, रोने धोने, धौंस-धमाका, घर भर, आँकी-बाँकी, अर ाी-पर े[52] आदि अनेक शब्दों में सामान्य बोल ााल के शब्द दृष्टिगत होते हैं।

'ऐ लड़की' में कृष्णा ाी ने बोल ााल की भाषा का प्रयोग किया है। इस पर गरिमा श्रीवास्तव के वि ाार दृष्टव्य हैं-"कृष्णा सोबती ने इस बोल ााल की भाषा को अपनाकर ान-सामान्य से अपनी एकात्मता स्थापित की है। उनकी र ानाओं की लोकप्रियता का बहुत बड़ा कारण है कि बोल ााल की भाषा में ही अपने अनुभवों का संप्रेषण करती हैं।"[53] ैसे- ाल्दी से ााकर दरवा ाा खोलो, बेटी के कान में मुरकी, बेटे की कमर पर तड़ागी, ब े के ओठों पर मुस्कुराहट, छोटे-मोटे दर्द को तो मैं सहन कर लेती हूँ, ठंठा दो तो नीबू पानी, नहीं तो गरम-गरम ााय। सभी सामान्य बोल ााल की भाषा के प्रयोग हैं।

इस दशक के अधिकांश उपन्यासों में सरल, सामान्य बोल ााल की भाषा का प्रयोग हुआ है। देखा ााए तो अशिक्षित बड़े बू .ों, नौकरों तथा अनप . पात्रों के माध्यम से बोल ााल की भाषा का अधिक प्रयोग हुआ है।

---

[49] पीली आँधी, प्रभा खेतान-पृ.218
[50] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.113
[51] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.87
[52] तालाबंदी, प्रभा खेतान-पृ.55
[53] ऐ लड़की में नारी ेतना, डॉ.गरिमा श्रीवास्तव-पृ.71

6.1.2 प्रतीक, बिंब, संकेत

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में प्रतीक, बिंब, संकेतों का प्रयोग लेखिकाओं ने किया है।

वास्तव में बिंब तथा प्रतीक की एकात्मकता का आधार गणितात्मक प्रयोग है। पशि म के अनेक प्रतीकवादियों ने तथा समीक्षकों ने स्वीकार किया है कि बिंब, बहुरूपिया होता है, वह कभी-कभी रूपक का रूपक का रूप भी ग्रहण कर लेता है, किंतु बिंब ाब बार-बार प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत रूप में दुहराया ााता है, तब वह प्रतीक बन ााता है।"[54]

प्रतीक और बिंब यो ाना के संबंध की मूलभूत व्याख्या यह है कि र ानात्मक अभिव्यक्ति में प्रतीक और बिंब कभी भी एकदम पृथक सत्ता धारण किए हुए नहीं रहते। उनका मिला- ुला रूप रहता है, ि ासका अर्थ यह होता है कि उनके अस्तित्व का सही रूप सामने न आकर र ाना की अनुभूतियाँ या भावनाओं का प्रतीकात्मक वर्णन सामने आता है।"[55]

प्रतीक या बिंब भाषा की अभिव्यक्ति के लिए सर्वस्व नहीं है। परंतु शिल्प विधान में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये विधान अमूर्त अनुभूतियों को मूर्त बनाने में सहायक बनते हैं। अंतिम दशक की लेखिकाओं ने वर्तमान संदर्भ में अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए इनका प्रयोग किया है। विवे य उपन्यासों में प्रतीक बिंब संकेतों का प्रयोग कैसे है देखेंगे।

"भावों एवं वि ारों की सफल एवं आकर्षक अभिव्यक्ति में ही र ाना की सार्थकता निहित होती है। भावों और वि ारों को प्रकट करने के लिए भाषा का सुंदर होना आवश्यक है। प्रतीकों, बिंबों, संकेतों के प्रयोग से ही भाषा सुंदर हो करती है।"[56] अंतिम दशक की लेखिकाओं ने सुंदर एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति

---

[54] साहित्य ि ंतन की नयी दिशाएँ, डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय-पृ.51
[55] साहित्य ि ंतन की नयी दिशाएँ, डॉ.लक्ष्मीकांत पाण्डेय-पृ.48
[56] पांडुलिपि, ब्रह्मदेव मिश्र-पृ.307

के लिए प्रतीक, बिंब लेकर नये प्रयोग किये हैं। ये प्रयोग केवल भाषा की सुंदरता के लिए ही नहीं है, बल्कि इनमें अतिरिक्त अर्थ सामर्थ्य भी भरी गई है। लेखिकाओं ने भी इसी तरह के विविध प्रयोगों से अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान की है।

'कृष्णा सोबती' के उपन्यासों में प्रतीक-बिंब, संकेतों के ि त्रण मिलते हैं। कृष्णा ी ने संदर्भों के अनुसार प्रतीक, बिंब, संकेतों का सहारा लेकर उपन्यासों की संवेदना को संप्रेषित करने का प्रयास किया है। भाषा के ये उपकरण उनकी कल्पना शक्ति को श्रोता के साथ सह ा ही सरलता से ोड़ देती है। 'ऐ लड़की' में प्रतीक, बिंब संकेतों के प्रयोग मिलते हैं। ैसे-'ऐ लड़की' में आत्मीय भाव है। यह एक आत्मा की पुकार है, ि ासमें ी ीविषा का प्रतीक है। मृत्यु की बाट देखती हुई अम्मू अपने बीते हुए ीवन को मरने से पहले याद करती है। ीवन को गठरी मारना मौत को मानवीय रूप देना, मरने से पहले अम्मू अपनी पूरी ि ांदगी को याद करती हुई बेटी को स ोत करती है। ैसे-"यह मौत बड़ी कटखनी है। अगल पिछला सब वसूल लेती है।"[57] यह उदाहरण अम्मू की मानवीयता का संकेत देती है। समा ा और परिवार में स्त्री की परिस्थितियों के संकेत इन उदाहरणों में देख सकते हैं। "शादी के बाद औरत पूरे परिवार के लिए शिकारे की माँ ी बन ाती है। औरत दिन-रात ो खटती है वह बेगार के खाते में ही न!"[58] "गृहस्थ में पाँव रखकर स्त्री का ो मंथन-मर्दन होता है, वह भू ाल के ाटके से कम नहीं होता। औरत सहन कर लेती है, क्योंकि उसे सहन करना पड़ता है।"[59] "माँ को प्योसर गाय या धाय बनाकर रखे रहते हैं। पैदा करती है... पाल-पोसकर बड़ा करती है। ... खटती रहे। सुख देती रहे। ... फिर उसकी

[57] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.38
[58] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.56
[59] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.73

की कुर्बानी। उसका काम इतना ही है ब ों के लिए मात्र घर की व्यवस्था करने वाली।"[60] इनमें स्त्री की नियतियों का संकेत मिलता है।

इसी प्रकार कृष्णा सोबती के दिलो-दानिश में वकील कृपानारायण की उदारता, दानिशता, वसीयतनामे के बंटवारे की साम्यवादी वि ारधारा का प्रतीक तलाशना दर्शाया गया है। प्रसंगानुकूल प्रतीकों, बिंबों का भी प्रयोग सरलता से किया गया है। कुछ उदाहरण ैसे-"पास लेटे, शख्त, पर एक नज़र डाली तो लगा कोई गोश्त और पोस्त का आदमी न हो, तहखाना हो, िसमें बरसों पुरानी मिसलों के ेर लगे हों।"[61] "हमारा रिज्क िससे बंधा है उस कानून से भी क्या शिकायत। और इंसान से ही क्या। िंदगी का खेल है साहिब, खेला ारूर ाएगा।"[62] "... कबीले की मर्यादा ने घेर रखा है िंदगी को। कोठों, छ ों और डेरों को भला घर का नाम कैसे दी ाएगा... ाल रही है क्यों ाल निकली थी। खेल हैं सितारों के। सांकेतिक भाषा में समा ा में स्त्री की नियति को रेखांकित किया है-"आप औरत हैं और आपको गृहस्थी बनाने ालाने को ही ऊपरवाले ने बनाया है।"[63] "... न सरदी न गरमी हवा में पेड़ ूमते हैं, पात ूलते हैं। ऐसी ऋतु में कोई दिल के तक़ा ों का भी क्या करें।"[64] इस उपन्यास में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है िसमें बिंब विधान दृष्टिगो ार होता है। गीतात्मक भाशा में, पहेलियों में, कहावतों में उदाहरण प्रस्तुत हैं। ैसे-"कभी इस बात का तौबा, कभी उस बात का तौबा, आप ाहें तो िंदगी से ही तौबा कर लो।"[65] "...कौन सा ऐसा सितम है ो न हम पर हो गया, ो न होना था वह सब

[60] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.74
[61] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.17
[62] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.48
[63] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.96
[64] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.115
[65] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.96

कुछ, आ ा हम पर हो गया। इस प्रकार कृष्णा ी की भाषा में प्रतीक-बिंब संकेतों को प्रसंगानुकूल ि ात्रित किया गया है।

इस उपन्यास की भाषा बिंब प्रधान भी है। कृष्णा ी ने बिंबों को ीवन के धरातल से ुना है। इसके उदाहरण आस-पास की प्रकृति तथा अम्मू के ीवानुभूतियों से देख सकते हैं। "पिछले बरसों को फलाँगती ाती हूँ, ैसे कोई गाड़ी भागी ा रही है।"[66] " ीवन हिरण है हिरण।[67] " ी भी सुलगता है और वर्षा भी घुल ाती है। धूप हिरनी नहीं कि कुलाँ े ही भरती फिरे।"[68] "मेरी मछली तड़प रही है।"[69] "लगे ीड़ का ऊँ ा पेड़ ही मेरे अंदर उग आया है।"[70] कृष्णा ी ने प्रतीक, बिंब विधान को उपन्यासों में दर्शाया है।

'प्रभा खेतान' के उपन्यासों में प्रतीक-बिंब-संकेत के उदाहरण एक ही संदर्भ में देखने को मिल ाते हैं। इसका उदाहरण 'आओ पेपे घर लें' में प्रतीक-बिंब संकेत का मिश्रण हुआ-"ि ांदगी इतनी रहम दिल नहीं हुआ करती। तब प्रभा ी उसे खो ाती आई थी ि ामी, काली, टॉमी और पेपे की ामघट के बी ा वह आइलिन को खो ा नहीं पाई। उनके बी ा बैठी आइलिन कुत्तों को सीरियल खिला रही थी। प्रभा को देखते ही वह बोली, है ीसू इस लड़की को सद्बुद्धि दे यह आदमी में ानवर और ानवरों में आदमी को देखना सीखे।"[71]

'छिन्नमस्ता' में प्रिया का सपना-"सपने में स्वयं को एक बड़े कमरे में बंद पाती है। वहाँ कोई उसकी ओर ापटता है। वह एक छलांग में कमरे में बाहर लॉबी में भागती ली ा रही हूँ। अ ानक मु े एकि ाट दिखता है। मैं धड़धड़ाती हुई घुमावदार सीि़याँ उतरती ली ा रही हूँ, मानों दसों मंि ालें एक मिनट में

---

[66] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.74
[67] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.43
[68] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.40
[69] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.38
[70] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.69
[71] आओ पेपे घर लें, प्रभा खेतान-पृ.26

मैंने तय कर लीं। बुरी तरह हाँफ रही हूँ नींद में भी गहरी पीड़ा। लगता है ैसे सीने को कोई रस्सियों से बाँध रहा हो। ... फिर एक स्वीमिंग पूल... नहीं, यह तो गंगा नदी है। नहीं पद्मा में पहुँ ा ाती है। पछाड़ खाती हुई लछे ते ा बहाव... ार-पाँ ा साल की छोटी लड़की डुबकियाँ ले रही हैं-मैं उसे तैरना सिखा रही हूँ... अब वह खिलखिलाकर हँसती है, आँटी! देखो मैं तैर रही हूँ। मु े एक अद्भुत आनंद मिलता है। सुख की एक सांस लेकर कहती हूँ, हाँ बेटे! ऐसे ही तैरा ाता है, तुम पहले गलत तैर ही थी।"[72] इस सपने में प्रिया के अतीत के संकेत वहीं दूसरी ओर महाशक्ति के रूप में डूबती ब ी को ब ानेवाली प्रिया को दर्शाया गया है।

'पीली आँधी' प्रतीक है, सब कुछ उ ड़ ाने का इस पीली आँधी के बाद कैसे एक छोटा-सा अंकुर फूटता है और वह फलने फूलने लगता है। यही इस उपन्यास की केंद्रीय वस्तु है। हाँ सब कुछ आँधी आने से उ ड़ ाता है फिर निर्माण होता है। नया फूलना नया अंकुर फूटना प्रतीक है। ीवन के नवनिर्माण का। साहस से ीवन को ीने का।

'अलका सरावगी' कृत 'कलिकथाःवाया बाइपास' में 'बाइपास' मूल समस्या से ब ाकर बा ू से रास्ता निकालने का प्रतीक है। यह बाइपास प्रतीक युगधर्म की ओर संकेत करता है। किशोर बाबू के बाइपास ऑपरेशन के रिए अलका ी ने इस युगधर्म की विडंबना को ित्रित किया है। ऑपरेशन के पश ात किशोर कलकत्ता शहर की पैदल यात्रा करते हैं। यहाँ किशोर की यात्रा एक वर्तुलाकार काल क्र है िसमें अतीत, वर्तमान और किशोर अपेन मारवाडी व्यवस्था के पुरुषों के समा ा में ा पहुँ ाते हैं। वे अपने दादा रामविलास बाबू की दुनिया में लौटकर मारवाड़ी ाति और कलकत्ता शहर के परिवेश ान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं। कलिकथा कलियुग की कथा का प्रतीक है।

---

[72] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.40-41

मृदुला गर्ग के ‘कठगुलाब’ में शुरू से अंत कर प्रतीकात्मकता के ि त्रण मिलते हैं। प्रतीकात्मकता के आधार पर मृदुला ी स्पष्ट करती हें कि ीवन की राह आसान नहीं है। उन पर ालना ओर सफलता हासिल करना संधर्षपूर्ण है। इसी संघर्षपूर्ण ीवन के कारण "उपन्यास में ि तने भी प्रमुख पात्र आए हैं वे सभी मानों किसी कठगुलाब को उगाने के लिए प्रयत्नशील हैं और उसी के लिए पूरी शक्ति भी दाँव पर लगा देते हैं।[73] कठगुलाब एक तरह से फांतासी है। इसमें भारतीय, पाश ात्य, प्रगतिशील, परंपरागत, परंपरामुक्त, आधुनिक, बू ़ी, युवा, उ ा, मध्य, निम्न वर्ग की सभी स्त्रियाँ शोषण से पीड़ित हैं। सामा ि क, पारिवारिक, शोषण, उपेक्षा, प्रताड़ना से ऊबकर प्रतिशोध और विद्रोह करती दिखाई देती है। कठगुलाब का यथार्थ नंगे ख्म पर उंगलियाँ रखने वाला यथार्थ है। तिलमिलाने वाला कटु सत्य है। यहाँ स्त्रीवाद का समर्थन होते हुए भी अंधानुकरण नहीं है। आधुनिक वि ारधारा वाली नीर ा एवं असीमा को दर्शाया है। गोधड़ का सुधारवाद पूरे उपन्यास को प्रेम ंदीय आश्रमों या सेवासदनों की तरफ मोड़ता दिखाई देता है।[74] बिंबात्मक भाषा का प्रयोग प्रस्तुत है-"हम मिट्टी से पैदा हुए, मिट्टी में मिल ाएंगे। भारतीय दर्शन में मिट्टी के महत्व को हम होश संभालते ही सम ने लगते हैं। दर्शन की रूरत कहाँ है, यह तो सर्वत्र फैला सत्य है। ग- ाहिर। मिट्टी ही सर्वव्यापी, एकमात्र स ाई है। ईश्वर, धरणी, प्रकृति, सृष्टि, पार्थिव शरीर, मिट्टी, राख। लाओ तो राख। दफनाओ तो मिट्टी। दोनों का विस्तार निस्सीम है, आगमन निर्बाध।"[75]

‘मैत्रेयी पुष्पा’ का ‘ ाक’ समय क्र का प्रतीक लगता है। ‘ ाक’ का दूसरा नाम है समय- क्र। " क्र घूमेगा नहीं तो कुछ बनाएगा भी नहीं घूमेगा और मिट्टी को बिगड़कर नया बनाएगा, नए रूप में लेगा।"[76] यह ाक नवनिर्माण का

---

[73] महिला उपन्यासकार (21 वीं सदी की पूर्व संध्या के संदर्भ में), डॉ.मधु संधु-पृ.97

[74] महिला उपन्यासकार (21 वीं सदी की पूर्व संध्या के संदर्भ में), डॉ.मधु संधु-पृ.107

[75] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.10

[76] ाक, मैत्रेयी पुष्पा, फ्लैप पे से

प्रतीक है। इस उपन्यास में अतरपूर गांव को उसमें रहनेवाली किसान-पत्नी सारंग को भी ालकर नया बना रहा है, ाक लेकिन बनाना एक यातना से गु ारना भी तो है। "न ाहते हुए भी सारंग निकल पड़ी है ' ाले' ाने की इस यात्रा पर।"[77]

' ाक' की सारंग को इस नवनिर्माण में कई यातनाओं, शोषणों से गु ारना पड़ता है। न ाहते हुए भी सारंग नवनिर्माण की यात्रा में ' लने' निकल पड़ी है। रेशमी की हत्या के बाद सारंग सो ाती है-"मेरी बहन कबूतर और हिरन की तरह ही भरमाकर मौत के घाट उतार दी।"[78] रेशम विधवा होने पर अपने अतृप्त ीवन के बारे में सो ाती है-"मैं दिन-रात का भेद मानूँ तो कितने दिन गिनूँ? मैं तो पल-छिन गिनती हूँ। ितनी संग रहूँ, अंग लगूं, घड़ी छोटी ही पड़ती ाती है प्यासा आदमी गागर भर पानी पी भी ले अब क्या दूसरे दिन ... तप ाड़ में िंदा पेड़ की पत्तियाँ िस ते ी से गिरती हैं, बसंत में कोंपलें उससे यादा ते रफ्तार से फूटती हैं। कोंपले फूटीं, फूटकर हरिया आई। म ालने लगीं-हवा में, बारिश में।"[79] मैत्रेयी पुष्पा ने संदर्भों के माध्यम से प्रतीक, बिंब, संकेतों का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है।

'बेतवा बहती रही' में बेतवा नदी िस प्रवाहमयी, ऊबड-खाबड, आंधी-तूफान में बहती रहती है। उसी प्रकार उर्वशी की नियति भी सब कुछ उ ाड़ ाने के बाद भी नदी की तरह बहती रहती है। ीवन के ऊबड़-खाबड़ स्थिति में भी सब कुछ सहन करके ीवन ीति हुई उग्र में शांत हो ाती है। उर्वशी को एक स्त्री को नदी का प्रतीक माना गया है। एक बेतवा। एक मीरा। एक उर्वशी। नहीं-नहीं, यह अनेक उर्वशियों, अनेक मीराओं, अनेक बेतवाओं की कहानी है। ... प्रा ीन रू ि़याँ हैं ाहाँ सनातन। अंधविश्वास है अंतहीन। अशिक्षा का गहरा

---

[77] ाक, मैत्रेयी पुष्पा, फ्लैप पे से

[78] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25

[79] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.18

अंधियारा। शताब्दियों से ालती आ रही अमानवीय यंत्रणाएँ फिर ीने के लिए कोई किं ित ठौर खो ो भी तो कहाँ। हाँ, इन अंधेरी खोहों ओर खाइयों में कभी-कभी मुट्ठी-भर किरणों के प्रतिबिंब का अहसास भी कितना कुछ नहीं दे ााता। उर्वशी का दुःख है कि वह उर्वशी है। साधारण में भी असाधारण। इसीलिए सब तरह से अभिशप्त रही। तिल-तिल मिटती रही ुप ााप-प्रेम, वासना, हिंसा, घृणा से भरी एक हृदयद्रावक अछूत कहानी। मगर स ा है। क्योंकि वह औरत है, औरत सदैव रहती है-सहने के लिए, ोलने के लिए और ू ाने के लिए।"[80] इस उदारण में प्रतीक, बिंब, संकेत सभी विधान विद्यमान हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' में कोणार्क ऐतिहासिक परंपरा और वि ाय-स्तंभ का प्रतीक है। ाो अपनी रू ि ग्रस्त पारंपरिकता को सदियों साथ लेकर ालते हैं। ि ानका ध्वंस नहीं होता। वे पूरी तरह ह नहीं ााते। "कोणार्क नहीं हते। खंडित भले हों, कोई मूर्ति, कोई पत्थर उसमें ारूर ब ाा रहता है, वक्त की गाथा कहने के लिए। कोई काला पहाड़ उसे ाड़ से उखाड़ नहीं सकता।"[81] यही सब सामाा िक, सांसारिक ाीवनानुभूतियों के साथ होता है। मनुष्य अपनी परंपराओं को मान्यताओं को महंदी के रंग की तरह अपने ाीवन में र ााए बसाए रहते हैं। उन स ााइयों को पूरी तरह नकार नहीं सकते। कुछ छूटता है डहता है पर पूरी तरह खत्म नहीं होता। इस उपन्यास की नायिका कुनी भी पारंपरिक सांकलों में कैद अपने पारंपरिक आलोक से मुग्ध रक्षणशील एवं संस्कारवान भी है। और हम सब की तरह अंधविश्वासी एवं रू ि मानसिकता से ग्रस्त भी, ... इन तमाम हदबंदियों के बाव ाूद मन में ााह का उगना रोक नहीं पाई। और यही उसके अवस्थावादी सो ा में दरार पड़ गई। स ा क्या है और ाूठ क्या? अंतरंग और बहिरंग दोनों को खँगालकर वह किस स ा तक पहुँ ा पाई? कुनी की यह कहानी

---

[80] बेतवा बहती रहे, मैत्रेयी पुष्पा, फ्लैप पे ा से

[81] अपने-अपने कोणार्क, ांद्रकांता-पृ.163

स ा की तलाश है[82]... उसे अस्तित्व की पह ान, उसके मानव बनने का प्रतीक। देर-सबेर ीवन में हम सब अपने मनों में एक कोणार्क अवश्य बनाते हैं। प्रेम, उल्लास, आशा और उ ास का मंदिर। उसमें सूर्य का ते ा और मिथुनरत मूर्तियों का प्रेमोन्माद होता है। हर दिशा नर्तकिया की तरह उस संगीतमय अहसास पर ि रकती है। कुनी। यह हमारे होने का प्रमाण है। कोणार्क ाहे ि तने बनाओ, हना उसकी नियति है। इस कोणार्क की तरह ही मन के कोणार्क हकर भी निःशेष नहीं होते।"[83] "नई सृष्टि के न्म लेने से पहले पुरानी दुनिया का हना रूरी था और वह हने लगी थी। मैं ो नदी बनकर बहना ाहती हूँ रुकी हुई पोखरी बनकर सडाँध नहीं देने लगूँगी? मैं खुद को नए खतरे उठाने के लिए तैयार कर रही थी। बंदगोभी की परतों की तरह मेरी ऊपरी परतें अलग हो रही थीं।"[84] (मेरे मन में पता नहीं किन आशंकाओं ने सिर उठाना शुरू कर दिया था। आस्थावादी हूँ न। मेरे मन में तमाम निष्ठा से, आकांक्षा और प्यार का ो कोणार्क बनाया है, उसे किसी का शाप न लेगा उस हने से ब ाना। ... आँखें मूँदकर मैंने ुगनुओं के प्रकाश से सूर्य की रोशनी का उ ास महसूस किया था। मेरे लिए उतना ही बहुत था। बिना मांगों ही मेरी ोली में ो मुट्ठी भर तारे आ गिर थे। मैंने उन्हें कं ूस की तरह सं ोकर मन के भीतर तहखाने में छिपा लिया था।"[85] लेखिका ने संदर्भानुसार प्रतीक, बिंब, संकेतों का प्रयोग सह ातापूर्ण किया है।

'गीतां ाली श्री' के 'हमारा शहर उस बरस' में एक शहर, एक मठ एक विश्वविद्यालय और एक परिवार है। यहाँ 'मठ' हिंदु सांप्रदायिकता का प्रतीक लगता है। इस उपन्यास की नायिका श्रुति है ो मुसलमान लड़के हनीफ से प्रेम-विवाह करती है। हिंदु-मुस्लिम के भेद को नकारकर दोनों सुखमय दाम्पत्य ीवन बिताते हैं। ये किसी सांप्रदायिक फसाद को नहीं मानते हैं। श्रुति किसी भी तरह

---

[82] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता, फ्लैप पे ा

[83] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.140

[84] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.101

[85] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.152-153

मानसिक, आर्थिक, नैतिक गुलामगिरी का शिकार नहीं होती है। श्रुति एक संवेदनशील और विवेकशील स्त्री का प्रतीक दर्शायी गयी है। ो पुरानी परिपाटी और सामाि क व्यवस्था को न मानते हुए अपने बनाये नियमों, मूल्यों, अपनी पह ान को साथ लेकर ालती है।

ि त्रा मुद्गल का 'आवां' एक ालती भट्टी का प्रतीक है। समा में व्याप्त विषमताओं की, मानवीय ीवन की उन ज्ञात-अज्ञात विसंगतियों की ि न्हें हम प्रत्येक मुखौटे के भीतर देख सकते हैं। आवां की बनावट में प्रत्यक्ष ज्ञान और नैतिक ज्ञान का समन्वय किया है। ि त्रण मुद्गल ने इस उपन्यास में तथ्यात्मक और तत्वात्मक दोनों पक्षों में वस्तु यो ना को प्रभावी बनाया है। "स्वयं से तिरोहित, सदियों-सदियों पूर्व की महारानियों, देवदासियों, श्रेष्ठ-पत्नियों, गृहिणियों में परकाया-प्रवेश कर ब उस काल में ा खड़ी होती है तो हमारी आंखों के सामने वह कालखंड अपनी कला संस्कृति के वैभव के साथ पुनर्प्रतिष्ठित हो उठता है।"[86] "... ि ंदगी के उ ाड़ मौसम में बसंत ने पहली बार दस्तक दी है। शायद बसंत रास्ता भूला गया हो। या उसने सो ा हो-सूखी-सिड़ी म ादूर की लड़की से उसका रिश्ता? उसके अपाहि -से घिसट रहे घर में भला उसे क्या हासिल होगा, हाँ घास के तिनके तक मामूली हरियाहर से वं ित, सूखे, प्राणहीन हो रहे। अपने अस्तित्व के लिए उसे ो ीवित डालें ाहिए।"[87] इस प्रकार ि त्रा ी ने सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया गया है।

'एक मीन अपनी' में "... अपनी तरह से ीवन ीने का और उसे ुनने का अधिकार सभी को है। यानी आत्कथात्मकता में अपनी तरह के भाव की विशेष भूमिका है। ऐसे में यह मान लिया ाता है कि उस पात्र का अपने समय-समा से टकराना या दबावों में घुटना-पिसना और पिस टूटकर निहत्थे होते ाले ाना उसकी नि ी त्रासदी है। स्वयं ुनी हुई। मु े लगताहै कि यह आ ारण एक किस्म

---

[86] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.214

[87] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.199

का पलायन है। व्यवस्था के पड़ताल के दायित्वों से मुंह मोड़ना। साथ ही साथ उस पात्र को ेतना की अगुवाई से भी वं ित कर देना है।"[88] "अंकिता स्त्री ीवन के दाम्पत्य संदर्भ में सो ाती है ... वही सहसा टीसों के खंदक को कुरेद देताहै, िसे कते-तोपते उसे बरसों लग गए और ब वह उस खंदक को तोप पाई तो लगा था कि अब वह ी भी सकती है... ीना भी ाहती है... यह ो अपने आपको उसने पुन र्न्म दिया है, अपने गर्भ में अपने न्म की प्रसव-पीड़ा ेली है।"[89] अपने आपको पुन र्न्म देना अपने अस्तित्व को बनाने का प्रतीक है। बिंबात्मक भाषा के प्रयोग भी संदर्भानुसार ित्रित हुए हैं। ैसे-"मौसम में रह-रहकर टपकते फलों की भांति आन पड़ी मुसीबतों का रोना अलग।"[90] स्त्रियों की सामा िक नियतियों पर ित्रा ी संकेत करते हुए हरींद्र के माध्यम से ये उदाहरण प्रस्तुत करती हैं-"स्त्रियाँ तुम्हें ऐसी भी मिलेंगी, ो परंपरागत दमन और संकीर्णता की सड़न के खिलाफ विद्रोह के लते यादतियों का प्रतिवाद नहीं कर पातीं... मगर वे ब किसी स्त्री को अपने पति के अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध मो र्ा बांधते पाती हैं तो खूब उत्प्रेरित होती हैं। उनकी प्रशंसा करते नहीं अघातीं, क्येंकि वे उन स्त्रियों के संघर्ष में अपनी लड़ाई को मूर्त होता पाती हैं। यानी अभी हमारी स्त्री को रू. मानसिकता से मुक्त होना शेष है।"[91]

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में लेखिकाओं ने प्रसंगानुसार प्रतीकों, बिंबों, संकेतों का प्रयोग कर अपने-अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। कई प्रतीक साम्यवादी दृष्टिकोण रखते हैं। ैसे दिलो दानिश, हमारा शहर उस बरस, कलिकथाःवाया बाइपास उपन्यासों के शीर्षक से यह साफ नज़र आता है। कलिकथाःवाया बाइपास में कलिकथा कलियुग का प्रतीक है। तो बाइपास बगल से गु ारकर मूल समस्यों से ब ाने का प्रतीक है। मृदुला गर्ग के कठगुलाब में

[88] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.7
[89] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.23
[90] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.43
[91] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.59

कठगुलाब दुःखद स्थिति का प्रतीक माना गया है। ाक में ाक समय ाक्र का, नवनिर्माण का प्रतीक है। बेतवा बहती रही में बेतवा स्त्री की नियतियों का प्रतीक है। अपने-अपने कोणार्क में कोणार्क मन की इ छाओं तथा वि ाय-स्तंभ का प्रतीक है। एक ामीन अपनी में 'स्व' की ामीन तलाशने की ााह और राह का प्रतीक है। स्त्री अस्मिता-अस्तित्व की पह ाान की तलाश है ' ामीन'। आवां में स्त्री के अस्तित्व के लिए ालती हुई भट्टी का प्रतीक है स्त्री। इन सभी प्रतीकों में लेखिकाओं की प्रयोगशीलता प्रतिलक्षित होती है। उसी प्रकार ीवन की अनुभूतियों के बिंबों की तथा संकेतों की अभिव्यक्ति हुई है।

6.1.3 ि ात्रात्मक भाषा

उपन्यास प . ते समय ि ान ि ात्रों का साक्षात अनुभव होता है ऐसे ि ात्रों को ि ात्रित करने की भाषा को ि ात्रात्मक भाषा कहते हैं। अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में ि ात्रात्मक भाषा का प्रयोग कहीं-कहीं दिखाई देता है। लेखिकाओं के अनुभवों की अभिव्यक्ति ि ात्रात्मक भाषा में दर्शायी गयी है।

'कृष्णा सोबती' के उपन्यासों में ि ात्रात्मक भाषा के प्रयोग मिलते हैं। 'ऐ लड़की' में एक माँ (अम्मू) के माध्यम से उसकी बेटी को फ्लैशबैक शैली में ाो बातें बताई गई हैं उनको प . कर वे दृश्य साक्षात मन में उभरने लगते हैं। ैसे अम्मू शिमला, कालक, ााखू राउंडवाली की ा . ाई का वर्णन करती है। "कालका से छोड़ी गाड़ी में बैठी तो खिड़की से बाहर ही देखती रही। पहाड़ों के सिलसिले और ऊँ ो घने पेड़ बुरुस के फूल तो ऐसे यों पताकाएँ लहराती हों।"[92] "गिर ाा मैदान वाली सड़क ओर शिमला वाले घर का बड़ा कमरा। बर्फों में दिन-रात अंगीठी ालती रहती।"[93] "सरदियों में बानर सेना ााखू से उतरकर सड़कों पर फैल ााती हैं।"[94] " ााँद घाट पर खाई कुल्फी पंछी ाब ाह ाहाते हैं उषा की

---

[92] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.16

[93] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.22

[94] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.21

ललाई में, तो पूरी सृष्टि गूं ा उठती है।"[95] अम्मू अपनी बेटी को अपने देवर के बारे में पूर्व दीप्ति में बातें बताती हुई कहती है-"मैं ब्यहकर आई तो छोटा-सा था। ार-पाँ ा का रहा होगा। किसी नटखट लड़की ने मेरी गोद में बिठा दिया... नन्हा सा मेरा देवर... मैंने सहलाकर ूम लिया बड़ी मनभावन घड़ी थी... मेरी गोद सगुणों से भर गई। नारियल, बादाम, छुहारे।"[96] अम्मू की बातों से साक्षात छोटा ब ा गोद में बैठा नज़र आता है। उसी प्रकार-"उस दिन मूलसलाधार बारिश बरस रही थी। शाम होने में कुछ देर थी, वह कामका ा निपटा खिड़की में खड़े-खड़े पहाडों को निहार रही थी। बादलों की गर ा और बि ाली। टीन के छत से परनाले बहने लगे।"[97] इस ित्रण में सही भी बारिश होने का ित्र सामने आ ाता है। "तुम्हारे पिता साक्षात दीख गए हैं मु े। गोदी में लिटा ब े को कभी शहद ाटा रहे हैं। कभी अंगूर का रस टपका रहे हैं। कभी अनार का एक दाना ओंठों पर ऐसे छुआ रहे हैं यों दुनिया में इस लीला के आगे कुछ और नहीं।"[98] आदि इन उदाहरणों में ित्रात्मक भाषा का प्रयोग सामान्य बोल ाल की भाषा में हुआ है।

'दिलो दानिश' में कुटुंबप्यारी-महकबानों के आपसी संघर्ष, बदरू-दम्मों के बी ा की लड़ाई, कृपानारायण-कुटुंबप्यारी का महक को लेकर आपसी बहस, संघर्ष, महक एवं कृपानारायण के आपसी संवादों में घटनाओं में एवं प्रसंगों का ित्रण ित्रात्मक भाषा के नमूने लगते हैं। "तड़ाक से बदरू के गाल पर तमा ा पड़ा- ुप बे मुसलमानी के।"[99] "दिलो-दिमाग पर फैली ओंधी-सीधी परछाइयाँ ाने किस ऊहापोह में एक-दूसरे को पटकने- ापटने पर लगी हैं। आमने-सामने पसरी पड़ी हैं दो बिछौनों की दो औलादें। औलादें भी क्या। दो किस्में। दो

---

[95] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.21
[96] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.9-10
[97] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.39
[98] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.40-41
[99] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.29

मिज़ा ा दो गिरोह।"[100] "न सरदी न गरमी। हवा में पेड़ ूबते हैं, पात ूमते हैं। ऐसी ऋतु में कोई दिल के तका ों का भी क्या करे।"[101] दिल्ली शहर का वर्णन देखिए-"बाहर ाकर मौसम और शहर का मज़ा लीि ाए। शहर का शहर बिछा पड़ा है। ागमगाहट और ान ानाहट में डूबा हुआ इंसानी बरकतों से गुं ाान। ाँदी ौक अपने पूरे शबाब पर। क्या रौनकें। क्या हमहमा क्या उमंगें। इलाही, इंसान को भी खुदा में क्या से क्या नहीं बख्शा यह मौसम, यह ालवे, यह हंगामें। "[102] "बग्घी में से कोई स ी संवरी परी-सी उतरी। सलमें-सितारों से ड़ा संदली ोड़ा और ऊपर िलमिलाती पूरे ाल की भारी ओ.नी। बड़े-बड़े ुमकोंवाला वह ोहरा और उस पर उस नाक-नक्श की फबन। स ा कहैं, हवेली की स ाावट, बरात, बतियों, हंडे सब फीके लगने लगे।"[103] "बात करने की वह अदा, वह हुस्न और वह ड़ाऊ ोवर।"[104] आदि उदाहरणों में ित्रात्मक भाषा के प्रयोग मिलते हैं िसमें ीतन संदर्भों के खट्टे-मीठे अनुभवों का ित्रण हुआ है।

अलका सरावगी ने ‘कलिकथाःवाया बाइपास’ में मारवाडी समा ा के परिवेश को, उसमें फैले आडंबर, अंधविश्वास का ित्रण तथा इस समा ा में विधवा स्त्रियों की पारंपरिक ालती पीड़ा का ीता ागता उदाहरण ित्रात्मक भाषा में किया है। स्वतंत्रता के नाम पर दो पीि.यों में संघर्ष, अंग्रेज़ों के आगमन के बाद कलकत्ता में हुई मिश्रित खून की ब.ोत्तरी बंगाल के अकाल की भयावहता,[105] सांप्रदायिक फसाद के रूप में द ग्रेट कलकत्ता किलिंग आदि को ित्रात्मक भाषा के प्रयोग मिलते हैं।

---

[100] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.43
[101] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.115
[102] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.115-116
[103] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.218
[104] दिलो दानिश, कृष्णा सोबती-पृ.220
[105] कलिकथाःवाया बाइपास, अलका सारावगी-पृ.149

‘प्रभा खेतान’ के उपन्यासों में ि त्रात्मक भाषा के प्रयोग देखते ही पाठक उस दृश्य में खोने लगता है। ‘पीली आंधी’ का उदाहरण प्रस्तुत है-"लेकिन कुआँ तो अंधा हो ही गया। अब तो पानी लाने के लिए पाँ ा कोस सात कोस आना- ााना पड़ता है। गाय बछड़ों की ओर तो देखा नहीं ााता, उनकी पीठ पर ागह- ागह घाव हो गये हैं। उस पर घोलती गाय तो उठकर खड़ी नहीं हो पा रही है। घाव पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। बिना ारे-पानी के वह कितने दिन ि एंगी। उसकी पूँछ में ताकत ही कहाँ ब ाी होगी कि भिनभिनाती मक्खियों को परे सरकाए।"[106] इस संदर्भ में रा ास्थान में दो बूंद पानी के लिए तरसते ब ो, बू ़ों, गाय-बछड़ों वहाँ के ाीवन की छटपटाहट का वर्णन ि त्रात्मकता का नमूना है। इसमें यह की परिस्थिति तथा रा ास्थान में पानी से होने वाली त्रासदी का ि त्रण हुआ है।

‘छिन्नमस्ता’ में स्त्री शोषण, दाम्पत्य ाीवन की विषमता, पुरुष की अवमानना, प्रिया और नरेंद्र के बी ा संघर्ष, मारवाडी समा ा की परंपरा को ोती मारवाडी स्त्री की स्थिति, सभी उदाहरणों में ि त्रात्मक भाषा के यथार्थ का वर्णन मिलता है। "उतरती हुई पीली शाम नीली समुद्री लहरों के साथ घुलकर हरी होती ाा रही है। अभी, बस अभी कुछ ही क्षणों में यह सारा परिदृश्य काला हो ााएगा। ... इस ाादुई माहौल में डूयब्रवनिक की यह काली समुद्री रातें इतनी खूबसूरत लग रही हें। दूर नारंगी रोशनी में डूबती हुई लहरें। होटल की डेकी से बंधे हुए पाँ ा-छह मोटरबोट, लहरों की गोद में म ालते हुए।"[107] "सुरक्षा का मोह? व्यवस्था की स्वीकृति? मैं खुद से पूछती, प्रिया! स ा कहो प्रिया! इन स्याह गुफाओं से तुम कब निकलोगी? मन कह रहा था सहन करो। पर क्या सहन करूँ। गाली-गलौ ा, मारपीट और इसके बाद दमन का समर्थन करते हुए घरवालों के

---

[106] पीली आँधी, प्रभा खेतान-पृ.6

[107] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.35

उपदेश।"[108] इसमें स्त्री के विवाहित ीवन तथा दांपत्य ीवन के कटु सत्य का ित्रण किया गया है। सामाि िक विषमता का ित्रण-"छोटी माँ घाट पर अकेले, अपनी ूड़ियाँ तोड़ रही थीं। माँग का सिंदूर मिटाया था और अकेले।"[109] इसमें दूसरी स्त्री की स्थिति का ित्रण हुआ है ो समा ा से हमेशा उपेक्षित रहती है। प्रभा खेतान ने ित्रात्मक भाषा का प्रयोग संदर्भानुसार किया है।

मृदुला गर्ग के ‘कठगुलाब’ में हम ित्रात्मक भाषा के प्रयोग को देख सकते हैं। इस उपन्यास में स्मिता पर हुए शोषण, मारीयान पर हुए मानसिक आगाध, पति द्वारा छल, धोका, नमिता के दाम्पत्य ीवन के संघर्षों के अत्या ार, पुरुष प्रधान संस्कृति में स्त्रियों को सदा से बहकाना, धोका देना, छलना ित्रात्मक भाषा के उदाहरण हो सकते हें1 ब नमिता का पति धोके से अपनी ायदाद बेटे के नाम कर देता हे तो नमिता पति की उपेक्षा करते हुए कहती है-"कितना आसान है औरत को बहकाना। नालायक से नालायक बेटे को ायदाद देने के लाल ा में तरह-तरह के प्रपं ा करके बेटी को बेदखल कर दिया ाता है।"[110] स्मिता पर हुए शोषण के बारे मं सो ाती है-"प्रतिशोध लेना ाहती है-पर ो भगवान मेरी अस्मिता नहीं ब ा पाया वह मेरा बदला क्यों ले। भगवान का भी इसमें क्या दोष? कम ोर तो मैं थी, ो हवाई किलों पर हमले करके संतुष्ट होती रही, करने के नाम पर सिफर। उस आत्म-धिक्कार को मैंने इतना साधा कि रोशनी के डर से कुछ मुक्ति पा ली।"[111] यहाँ असीमा का विद्रोह, नमिता का पति के प्रति विद्रोह, नर्मदा का भाई के खिलाफ, पति के खिलाफ विद्रोह, स्मिता का, मरियान का विद्रोह सभी ित्रात्मक भाषा का सुंदर नमूना हो सकता है। नर्मदा का विद्रोह देखिए ब पति की यादतियाँ ब ़ गईं तथा उसे छोड़ नर्मदा विद्रोही बनी और असीमा के घर ना आने की धमकी देती हुई ाकू तक निकाल लेती है-"फिर कभी इस घर में

[108] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.147
[109] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.151
[110] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.215
[111] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.39

आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगें तोड़ के सड़क पर फेंक दूँगी। भडुवे ा अपनी बीवी के पल्लू में ाके सो। मैं तेरी रखैल ना थी, तू मेरी रखैल था। कमा-कमा के तु ो खिलाया मुस्टंडे, इसलिए कि तू और तेरी बीवी मिलके मेरा हक मारो। ा, नार्मद सम ा के अपना हिस्सा माफ किया। पर याद रख एक दिन आके वसूल कर लूँगी। वह मेरी बहन ना दुसमन है, पहले ान लेती तो तुम दोनों की बोटी-बोटी काट के ील-कौवों को खिला देती। हिम्मत हो तो आ मेरे सामने।"[112] इस उपन्यास की स्त्रियाँ किस प्रकार, किन स्थितियों में विद्रोही बनी हैं उसका ित्रण ित्रात्मक भाषा में किया गया है। सामा िक विषमताओं पुरुष सत्तात्मक अत्या ारों का खुल कर विद्रोह इन नायिकाओं के माध्यम से दर्शाया गया है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में भी हम स्त्री संहिताओं को तोड़ती स्त्री का विद्रोह, सामा िक विषमताओं का पारस्परिक दायित्वों को निभाती, तोड़ती स्त्रियों का ित्रण ित्रात्मक भाषा के माध्यम से दर्शाया गया है। 'इदन्नमम' में बुंदेलखंड के ओरछा के पहाड़ी भूभाग, इस अं ाल में रह रही बऊ का, मंदा के ीवन संघर्ष का, कुसुमा का स्त्री संहिता को तोड़ना, विद्रोह बनने का, प्रेमा वैधव्य के नियम को नकारण, सामा िक रू ि यों का खंडन करने का, स्त्री की परिस्थितियों का, उनके ीवन संघर्षों को मैत्रेयी पुष्पा ने ित्रात्मक भाषा में ित्रण किया है। बऊ अपने बेटे की मृत्यु का वर्णन ित्रात्मक भाषा में करती है-"उस दिन अस्पताल का उद्घाटन था। गाँव में नई हवा लने लगी थी। अस्पताल को घेरकर एक सफेद तंबू तनवाया था।"[113] मंतरी ी उद्घाटन के लिए आने वाले थे। महेंदर ने लोगों को अस्पताल की आवश्यकता बताई। "उद्घाटन के दिन भीड़ हुई थी। अ ानक मार-पीट शुरू हुई। भागम-भाग म ने लगी। उसी समय महेंदर के सिर पर किसी ने डंडा मारा। महेंदर बेहोश होकर गिर गया। भभड़ में कु ल कर दो ब े मर, अंत में महेंदर को गोली मारी, तोता की तरह उड़ गये उसके प्राण,

---

[112] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.189-190

[113] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.28

अस्पताल अनाथ हुआ। सब मोह-माया छोड़ ाल बसा मेरा महेंदरा।"[114] इस प्रकार के संदर्भ स ा में ि त्रात्मक भाषा का प्रत्यक्ष रूप लगता है। कुसुमा का दाऊ ा से प्रेम संबंध का ि त्रण, मंदा का प्रेमा से मिलने का संदर्भ, मंदा द्वारा गाँव के अस्तपाल का पुनर्निर्माण, राउत म ादूरों में ेतना भरना सारी घटनाएँ ि त्रात्मक भाषा के अ छे उदाहरण हैं।

'ूला नट' में शीलो का देवर से संबंध बनाना, सास का बेटों के प्रति ुकाव, शीलो द्वारा बछिया की बात न मानना, गव-समा ा, ाति का विरोध करना, अपने हाथ की छटी उंगली को काट कर नये भाग्य का निम्राण करना, पति ाब मीठी बातों में फंस कर ामीन हड़पने की कोशिश करता है तो उसे उसकी औकात दिखाते हुए पछाड़ना, खेतों में नयी किस्म की हर साल फसल उगाने का प्रयत्न करना, सभी ि त्रात्मक भाषा के अ छे नमूने हैं।

'ाक' उपन्यास में भी मैत्रेयी पुष्पा ने ि त्रात्मक भाषा के अ छे नमूने प्रस्तुत किए हैं। इस उपन्यास की नायिका सारंग द्वारा स्त्री संहिताओं को तोड़ना, सामाि ाक अवमाननाओं का खंडन करना, पति से विद्रोह कर श्रीधर से संबंध बनाना, बहन रेशम की हत्या का आततायियों से बदला लेना, स्त्रियों पर हो रहे अन्याय-अत्या ारों का विरोध करना, स्त्री अधिकारों के लिए ाान देने तक की हिम्मत रखना, दृ.ता, संवेदनशीलता, विवश और संगठन क्षमता के गुणों के बनाए रखते हुए स्त्री संहिता की सभी मान्यताओं को ुनौती देना, सभी ि त्रात्मक भाषा में प्रयोग किये गये हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-"मेरी बहन कबूतर और हिरन की तरह ही भरमाकर मौत के घाट उतार दी।"[115] "सारंग अतरपूर के विकास के बारे में सो ाती है-सन् 1980 से 90 तक आते-आते अतरपुर में विकास का मूर्तिमान रूप दिखाई देने लगा। ाकरोड ने गाँव को सड़क से ाोड़ दिया। ट्यूबवेल के बहाने बि ाली आई। इन दिनों यहाँ दीयों-ि बरियों के साथ-

---

[114] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.30

[115] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25

साथ बल्ब भी ाल उठते हैं। गर्मियों में ाो लोग बि ाली के पंखे मंगा लेते हैं उनके घर फरीटेदार हवा भी ालती है। रेडियो ब ाता है। गाँव के प्रधान फतेसिंह के घर ाल्दी ही टेलीवि ान आनेवाला है।"[116] "करबन नदी... ाो बरसात में समुद्र हो ााती है। गर्मियों में पोखरा रह ााती है। पानी में बगुला, सारस, बतरव और की ाड़ में भैंसें, सुअर... शीतल सतह के नी ो ाहरीले ांतु ाो गायें भैंसों, बकरी को मार देते हैं।"[117] यहाँ गांव की सामा ाक, भौगोलिक परिवेश का ि त्रण ि त्रात्मक भाषा में किया गया है। "ि ास घर की मिट्टी का रेशा-रेशा मेरे हाथों स ाा-संवरा है, ि ासके आंगन में मेरे पावों के निशान ाीवित हैं, विश्वास नहीं होता रं ाीत कि एक पल में ही वह मु ासे कैसे छिन गया? तुम्हारा कोई नया सूत्र खुलता है और मु ो कुम्हार के डोरे की तरह ााक से काट ले ााता है, न तुम्हारा अहंकार इतना पैना है कि मेरे औरत होने की ला ारी का गीलापन...।"[118] दाम्पत्य ाीवन की कटुता और सामा ाक व्यवस्था पर प्रहार करते हुए ि त्रात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है।

'अल्मा कबूतरी' कदमबाई का सपना-कदमबाई सपने मं भूरी को ही देख रही है। एक ाौड़ी-सी नदी। अथाह पानी। भूरी ाप्पू ालकार नाव खेती ाली ाा रही है। सन से सफेद बालों वाली बु ि या की पीठ दिखती है, बाहें दिखती हैं, ोहरा दिखाई नहीं देता। कदम अपनी नाव उसके पीछे दौड़ा रही है। बराबरी में आकर उसका ोहरा देखना ााहती है। दूर तक निगाह ााती है, घाट पर कोई नहीं। आसमान में तारों के ाुंड ामा हैं। सपने में कदमबाई भूरी को देखना अपना आदर्श मानती है। रामसिंह द्वारा रा ाा को कबूतराओं का इतिहास बताना-सिंहलद्वीप की कथा का ि त्रण, मंसाराम के दोस्त कहर का आना, दोनों मिलकर गाँव में बार खोलना, कबूतरों का ाीवन ठेका लगने से सामान्य होना। रामसिंह

---

[116] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.26
[117] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.26
[118] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.309

का बेटा सिंह के रूप में मारा ाना। अल्मा का दर-दर भटकना, रा ानेताओं के हाथ का खिलोना बनना, राणा का अल्मा से बिछड़ कर पागल होना, धीर ा का रा ानेता को धोका देने पर उसके साथ अमानवता का व्यवहार करना पुरुष, पुरुष का बलात्कार करना, रा ानेताओं की बलिंदरी बताना, बदमाशखोरी का ि त्रण करना, अल्मा का श्री रामशास्त्री से विवाह करना। राणा से सपनों में विवाह तथा देव-देवता पू ाना, अल्मा की मानसिकता दोहरे रूप में ालना अंत में श्री राम शास्त्री की मृत्यु की व्याख्या का ि त्रण करना, अल्मा को पति मरने पर प्रदेश के समा ा कल्याण मंत्री की विधान सभा सीट के लिए उम्मीदवार बनने का ि त्रण ि त्रात्मक भाषा में किया गया है।

गीतां ाली श्री कृत 'माई', 'हमारा शहर उस बरस' में ि त्रात्मक भाषा के प्रयोग दिखाई देते हैं। सांप्रदायिक दंगों में, एक हिंदू लड़की श्रुति और मुसलमान लड़के हनीफ का प्रेम विवाह, उनके दांपत्य ीवन में सांप्रदायिक भेद नहीं है, इसका ि त्रण, मठ ो हिंदु के सांप्रदायिकता का प्रतीक दर्शाया गया है। हिंदू युवती का मुस्लिम युवक एवं बुद्धि ीवी युवक से विवाह करके राष्ट्रीय एकता की दृ. बुनियाद को डालना, विश्वविद्यालयीन स्तर पर पद-प्राप्ति के लिए ओछी एवं गंदी हरकतें करना, छोटी-छोटी बातों के कारण सांप्रदायिक फसाद खड़े करना, इसमें हिंदु-मुसलमान की अपेक्षा मानवता को श्रेष्ठ दर्शाना आदि अनेक विषयों की ा ाि ि त्रात्मक भाषा में हुई है। सांप्रदायिक एवं सामंती व्यवस्था का उदाहरण- "एक ामाना था, पूरी तरह बीता हुआ नहीं, रा ााओं, ामींदारों, नवाबों का सामंती उसूलों का ि ानके तौर-तरीकों में शामिल था। अपने ोर और ामीन ब.ाने के लिए दूसरों की ामीन पर कब ाा करना, वहाँ लूट म ााना, पैसों की, औरतों की, गुलामों की, हिंदु-मुसलमान सामंती ताकत के दौर में म ाहब, लूट का सियासत हथियार भी, बहाना भी बना, अमन के दौर भी-दान, इनाम, आराम, इ ात, दोनों कौम के प्रशासकों ने अपनी अवाम के हर मज़हबवाले को

दिए।"[119] इस संदर्भ में सामंती व्यवस्था का ि त्रण ि त्रात्मक भाषा में हुआ है। "शहर के बारे में, मठ के बारे में राष्ट्र प्रेम की भावना-मिली- ुली संस्कृति, हमारी तहज़ीब, ो हर मैदान में है-संगीत, साहित्य, आर्किटेक ्र, फलसफ़ा, ना ा, खान-पान, पहनावा कहाँ नहीं? ... वहाँ भी यही सारी मिलाले मिलेंगी, ो साथ और सद्भावना ातलाती है।"[120] शहर के बारे में-और शहरों ैसा ही है। हमारा शहर। "स्टेशन की इमारत पुरानी है और पिछली बार वहाँ के वेटिंग रूम में अंग्रेज़ों के वक्त की आदमकद आर्म ोयर रखी थी, अब का नहीं कह सकती। दुकानें हैं खाने-पीने की। ... यूनिवर्सिटी भी है, पुरानी गुम्बदों की, ो दूर से नज़र आती है और ि न पर कबूतरों के डेरे हैं। कबूतर और कव्वे बहुत हैं इस शहर में। लोग भी बहुत हैं।"[121] शहर, स्टेशन, यूनिवर्सिटी की व्यवस्था से साक्षात सामने ि त्र उभर आये हैं। ैसे ये हमारे समक्ष हमारी दृष्टि के सामने लहरा रहे हों।

'माई' में ब ों का अपनी माँ के बारे में ि ंतित होना, उसे पुरानी परिपाटी से, परंपरा से बाहर निकालने की कोशिश करने का प्रयत्न, नई नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में 'नई स्त्री' ने अपने व्यक्तित्व अपनी अस्मिता को पह ान देने का प्रयत्न, पिछली पी ़ी की स्त्री को नयी भूमिकाओं में परिभाषित करने का प्रयत्न करना ि त्रात्मक भाषा में ि त्रण मिलता है। "असल में अपने देखे और सम े के प्रति शक को लेकर माई की शुरूआत होती है। माई को मुक्त कराने की धुन में भाई-बहन उसको उसके रूप और संदर्भ में देख ही नहीं पाते। उनकी दृष्टि में माई एक निरीह, कम ोर, प्रताड़ित, बे ारी, ि सने अपने अंदर से अपना अलग हर कुछ निकाल के रख दिया है और खुली और खाली हो गई है। ाहे दूसरे उसमें ो ाहें भरें।"[122] पी ़ी-दर-पी ़ी स्त्री की नियतियों का ि त्रण-"माई ने कहा था

---

[119] हमारा शहर उस बरस, गीतां ालि श्री-पृ.29
[120] हमारा शहर उस बरस, गीतां ालि श्री-पृ.15
[121] हमारा शहर उस बरस, गीतां ालि श्री-पृ.15
[122] माई, गीतां ालि श्री-पृ.126

दादी और उसकी ाात एक है, हम ाात को वह ठुकरा नहीं सकती। और मैं अपने रूप में उन दोनों की छवि पाकर एक अ ाीब-सी कम ाोरी महसूस करती हूँ। कोस नहीं पाती उन्हें ाािनकी शक्ल-सूरत मेरे ाेहरे और बदन पर ालकती है।"[123] इसमें ााती से तात्पर्य 'स्त्री' है। स्त्री-स्त्री की समस्या, संघर्ष को सम ाती है। उस पर ाो बीतता है, वह स्वयं भी महसूस करती है। 'माई' का ऐसा था कि वह हमेशा ाुक कर काम करती थी। "सब की ारूरतों को पूरा करना, दादा-दादी, बाबू की आवाज़ पर सेवा में बिना कुछ कहे हाािर होना। ... हम तो शुरू से ही ाानते थे कि माई की री ़ की हड्डी कम ाोर है। कितने सायों के तले मले। माई के साए के ऐन नी ाे। पर उसी साए की अस्तित्व से यों बेखबर।"[124] मेडिकल भाषा में ाित्रात्मक प्रयोग-"स्पाइनल कौलम में री ़ों को ाोड़नेवाला डिस्क कुशन बिगड़ गय है। बाहर की ओर ऐन्यूलस फाइब्रोसस, भीतर को नर्म ाेलाटिनस तत्व है, न्यूक्लीयस पल्पोसस। इसी कुशन के सहारे स्पाइन में फ्लैक्सिबिलिटी आती है। पर गलत मुद्रा में बैठने, खड़े होने से और ायादा काम करने से, स्ट्रेन करने से डिस्क घिस ााती है और री ़ की हड्डी अपनी सही ागह से हटकर तिरछी होकर नसों पर दबने लगती है।"[125] पूरा दिन ाुक कर काम करने तथा शरीर को आराम न मिलने पर माई की रीड की हड्डी अपनी सही ागह से होकर तिरछी हो गई। यहाँ मेडिकल भाषा का प्रयोग ाित्रात्मक भाषा में सह ाता से किया गया है।

ाित्रा मुद्गल के 'एक ज़मीन अपनी', 'आवां' में महानगरीय परिवेश का ाित्रण ाित्रात्मक भाषा में किया गया है। 'एक ामीन अपनी' में विज्ञापन- ागत् के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, देह-व्यापार, तिकड़म, स्त्री की स्थिति, ााहे वह कितनी ही योग्य हो उसे भोग्य वस्तु के रूप में ही देखा ााता है। स्त्री की

---

[123] माई, गीतां ालि श्री-पृ.36
[124] माई, गीतां ालि श्री-पृ.17
[125] माई, गीतां ालि श्री-पृ.85

सामा िक, पारिवारिक व्यवस्था और दाम्पत्य ीवन की विषमताओं का ित्रण- "हरगि ा अलग न होती, अगर मु े कोल्हू का बैल सम कर, आंखों पर पट्टी बांधे रहने पर म बूर न किया   ाता। मेरे लिए घर की व्यवस्था का अर्थ है... अब भी है। विश्वास करो, अपने सामर्थ्य और सहिष्णुता की अंतिम सीमा तक मैं घर ब ाने के लिए हाथ-पांव मारती रही। सहन नहीं हुआ तो अलग हो गई। सुधांशु की निरंकुश प्रवृत्ति। उसकी निरंकुशताएँ घर के अर्थ को भ्रष्ट करने लगी थीं...।[126] आधुनिक स्त्री की मान्यताओं और संघर्ष का ित्रण, अकेली स्त्री की समस्या, आर्थिक, सामा िक शोषण, स्त्री संहिता का खंडन सभी उदाहरण ित्रात्मक भाषा में ित्रित हुए हैं।

'आवां' में मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति इसमें   न्मी लड़की नमिता का ीवन संघर्ष, महानगर के   लते हुए परिवेश में   लते मध्यवर्गीय परिवार का संघर्ष, नमिता का पुरुष की अवमानना, वासना का शिकार होना, परंपरागत स्त्री संहिताओं का खंडन कर नमिता, सं य कोनई का अन ाहा गर्भ धारण करने का ित्रण, कामगार अघाड़ी म दूर संघों, कार्यकलापों, उनके पूँ ीपतियों और उद्योगपतियों से म दूरों के अधिकार दिलाने के निमित्त किये गये संघर्षों तथा उनकी आंतरिक रा नीति, उठापटक आदि का ित्रण"[127] आधुनिक परिस्थिति में उभरी स्त्री   ो परंपरागत स्त्री संहिता को ठुकरा कर स्वतंत्र ीवन ीना ाहती है-ममता, गौतमी, स्मिता आदि का ित्रण म दूर नेता के पारिवारिक ीवन, आर्थिक विपन्नता का ित्रण, सभी तथ्य ित्रात्मक भाषा के स   े नमूने लगते हैं।

'अपनी सलीबें' में नमिता सिंह ने सामान्य बोल ाल की भाषा में ित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। नीलिमा का पति को   ाति के छोटी होने पर छोड़ना... तुमने छिपाया अपने बारे में। अपने घर, परिवार, अपनी   ात के बारे में, तुम ूठे और धोकेबा हो   ालसा हो। ... नीलिमा की सो ने-सम ने की सारी

---

[126] एक   मीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.215

[127] हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय-पृ.391

ताकत बिलकुल खत्म हो गई थी। उसकी ोतना अंधे सूर ा की तरह काली पड़ गई थी। ि ासमें सिर्फ भार होता है, असहनीय भार। इसमें मीना के बलात्कार का ि त्रण, इशु के कलक्टर बनने का ि त्रण, माँ का दार्शनिक रूप, नीलिमा और उसकी माँ के संवादों का ि त्रण, ईशु के ाति का छोटे होने पर संघर्षों का ि त्रण, महिला कॉले ा की स्त्री स्टाफ का ि त्रण, अकेले होने पर संघर्षों का ि त्रण, ईशु का नीलिमा की माँ से ट्रेन में मिलने का ि त्रण, दहे ा की समस्या का ि त्रण सभी घटनाओं को ि त्रात्मक भाषा में पिरोया गया है। संदर्भानुसार ि त्रात्मक भाषा के प्रयोग मिलते हैं।

अंतिम दशक के उपन्यासों में लेखिकाओं ने संदर्भानुसार, विषयानुसार, प्रसंगानुसार, ि त्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। लेखिकाओं ने अनुभूति और संवेदना को ि त्रात्मक भाषा में पात्रानुकूल, परिस्थिति परिवेशानुकूल दर्शाया है। लेखिकाओं ने पात्रों के आपसी संघर्ष, घटनाओं एवं प्रसंगों का ि त्रण अपने उपन्यास में ि त्रात्मक भाषा के रूप का प्रभावी ंग से वर्णन किया है। ये वर्णन साक्षात ि त्र पाठकों के सामने खड़े हो ाते हैं।

6.1.4 स्त्री ोतनात्मक भाषा

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श स्त्री केंद्रित विषय है। इस विषय में उन्हीं उपन्यासों को लिया गया है ि ासमें स्त्री विषयक विमर्श को केंद्रित किया है। लेखिकाओं ने अपने इन उपन्यासों के माध्यम से स्त्री ोतना के लिए भी भाषा का प्रयोग किया है। ि ाससे दूसरी स्त्री में भी ोतना ागा सके।

"लेखिका अपने समय में स्त्रियों की स्थिति के खिलाफ़ कलम ालाती है, वह अपने ही अनुभव को समा ा की स्त्रियों का अनुभव बना देती है, तब उसकी वाणी साधरणीकरण की स्थिति को छू लेती है। उसकी यही दृष्टि आगे ालकर अनेक स्त्रियों को ोतना प्रदान करती है।"[128]

---

[128] सीमंतनी उपदेशः स्त्री-मुक्ति ोतना का आख्यान-राठोड पुंडलिक-पृ.55

स्त्री की सामाा िक, आर्थिक, वैवाहिक समस्याओं का ि त्रण कर इन समस्याओं से छुटकारा पाने का रास्ता खो ा है। स्त्री ेतनात्मक भाषा के उदाहरण विवे य उपन्यासों में ूँ. ने का प्रयत्न करेंगे-

कृष्णा सोबती के 'ऐ लड़की' में अम्मू सूसन को सम ाती है-"सूसन शादी के बाद किसी के हाथ का ुन ुना नहीं बनना। अपनी ताकत बनाने की कोशिश करना।"[129] अम्मू अपनी बेटी को 'स्व' की पह ान का बोध करते हुए कहती है- "तुम प्रा ीन गाथा से बाहर हो, न पति, ब े, परिवार फिर भी तुम अपने आप में आप हो... अपने आप में आप होना परम है, श्रेष्ठ है।"[130] तुम तो अपने में आज़ाद हो... अपने से भी आज़ादी ाहिए देती हो कभी। ... ो हाथ अ ि ति करता है, वही मन ाहा वितरण भी करता है। ... इस उपन्यास में स्त्री ेतनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा के ' ूला नट' में शीलो की भाषा ेतनात्मक है। बाल किशन से संबंध बनने के बाद सास दूबारा विवाह करने को कहती है तो शीलो मना करते हुए कहती है-"न। बछिया-मछिया कुछ नहीं... अ ास गठरिया मत बाँधे मेरे सिर, हाँ। ... रीत-रसम लिखा हुआ रुक्का तो नहीं होती... तन-मन का ब्याहा तीसरा कोन होता है हमारे बी ा? ... अम्मा ी सात भाँवरे, आँगिन सा छी और बरातियों के आगे व ान भरकर संगी मु े त्याग गया, तो अछिया-बछिया का क्या विश्वास करूँ।"[131] शीलो किसी ाात, बिरादीर, गाँव, आस-पड़ोसियों की परवा नहीं करती अपने ीवन को अपने तरीके से ीना सीखता है।

अपनी सास से कहती है-"अम्मा ी, गुस्सा पी ाओ। बू.े ामाने उखड़ेंगे नहीं, तो नया बखत आएगा कैसे? अपने इस रेंगटा (बालकिशन) को रेत में नहीं सड़क पर ालना सीखने दो। शुरू में पाँव छिलेंगे ारूर पर मोटर की तरह

---

[129] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.53
[130] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.57
[131] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.114

दौड़ना आ ाएगा। ... बालकिशन को खेती के बारे में ज्ञान देती है। फसल ाक्र अपनाओ, खेत में पैदावार ौगुनी हो ाएगी, नहीं तो उरण्टा रोग। कमाए पैसों की कदर करने के लिए कहती है- ो अपनी मेहनत की कीमत ो नहीं ानता, उसे लोग भी नहीं ीन्हते... अपने पैसों को बैंक में रखो।"[132]

शीलो की सास की भाषा में ेतनात्मक रूप दिखाई देता है। वह सते की माँ से कहती है-"सते की अम्मा। बुरा लगे, तो मेरे मुँह पर कहना, बूह से मारपीट हाय। बताओ तो, कहाँ का न्याय है? ार-छः महीना पीछे तुम नौकरी से आओ, नी मिलने का मोह करे और तुम रुतबा बताओ। मैं तो कुत्ता की ात मानती हूँ ऐसे मर्द को।"[133] इस संदर्भ में पुरुष सत्ता की नियति को उधेड़ा है अम्मा ने।

इदन्नमम में 'बऊ' की भाषा में ेतनापूर्ण भाषा दृष्टिगत होती है। बऊ कहती है-"आदमी बड़ा बेबस ीव है। वह आदमी के हाथों ही मारा ाता है। स्यार ि ानावर तक अपनी ाति का शिकार नहीं करते, मगर आदमी केवल आदमी को ही खाना ाहता है। उसी को मिटाने पर तुला रहता है बुद्धिमान होकर भी बुद्धिहीन साबित होता है।"[134]

बऊ मंदा से कहती है-" ब तक इस काया में पिरान बाकी हैं, लडेंगे हम भी। पूरी ि ंदगानी हमने लड़ाई लड़ी है। हँसी-खेल नहीं है ि ामींदारिन बने रहना। वैसा ही रौब-रुतबा रखना आनबान से रहना।"[135]

मंदा का बलात्कार होने पर कुसुमा उसे सांत्वना देते हुए सम ाती है- "इतनी बड़ी ि ंदगी में अ छा-बुरा घट ाता है बिटिया, उसके कारण मन में गाँठ लगाने से क्या फायदा? ो तुमने किया ही नहीं उसके लिए अपने को दोसी क्यों

---

[132] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.115
[133] ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.79
[134] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.19-20
[135] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.88

मानना?"[136] दोसी तो वे हैं ाो छल-बल से धोका देते हैं वे और उनकी ाात (पुरुष) ाो हम पर धोके से करते हैं हमला।

... मन मैला न करो हिम्मित राखे। तुम्हें तो बहुतों का सामना करना हे, मूक बछिया कब तक बनी रहोगी।"[137] देवग.वारी ककिया सास कुसुमा को सम ााती है ाब कुसुमा बेटे को लेकर ससुराल वापस ााती है।

इस उपन्यास के महारा ा ाो ज्ञानी है ज्ञान के प्रव ान देते हैं गाँव में ोतनात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हैं।

"मेल और संवेदना बड़ा ही शुभ लक्षण है। लेकिन साथ में आपदाओं से लड़ने का ा ाारूपन भी तो ााहिए। बिना साहस की संवेदना री.विहीन देह की तरह हुई।"[138] आगे महारा ा व्यवस्था, समा ा की नियति के बारे में मंदा से कहते हैं-"तुम क्या सो ा रही हो, अस्पताल ालने, डॉक्टर आ ाने से मिट ााएँगे सारे दर्द? आदमी हो ाएगा निरोग। बिटिया, रुग्ण तो आदमी की आत्मा भी है, उसके निवारण की दग कहाँ खे ोगी? रोगी हमारी व्यवस्था है, उसे भी संभालोगी? क्षयग्रस्त हमारा समा ा है, सुधारने का यत्न करोगी? ... नौकरशाह और रा ानेताओं के हाथ का खिलौना हो गया है हमारा ाीवन। यहाँ प्र ाातंत्र नहीं, शोषणतंत्र लागू हैं।" आगे वे कहते हैं-" ाब गुहार-पुकार भी नहीं सुनी ााती तो किसी भी तरह अपने ब ााव में खड़ा हो ााता है। उ ात-अनु ात, सही गलत को ताक पर रखकर संघर्ष करने लगता है।"[139]

काम ालता है तो ाीवन ालने का अहसास रहता है। साँसें ालने की अनुभूति होती है। "संसार क्रियाशील और ारा ार लगता है।"[140] "बिखरोगे तो टूट ााओगे, हार ााओगे। मित्रता बाहर से नहीं, भीतर से पैदा होती है। उ ाली

---

[136] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.107
[137] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.107
[138] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.205
[139] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.206
[140] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.215

लकीर की तरह योतिमान। मन विशाल और बृहद बनता है। मित्र-भाव से। ीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्ते स्वयं सुगम होते ाते हैं। सहयोग से, संगठन से।"[141] बिना िनगारी नहीं निकलता धुआँ।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि इन उदाहरणों से ेतनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में ेतनात्मक भाषा के उदाहरण इस प्रकार है- कदमबाई कबूतरा ाति की स्त्री क ा मंसाराम से प्रेम करती है और वह अपने बेटे का न क ा न कबूतरा पर एक अ छा इंसान बनाना ाहती है। वह सो ाती है-"उस रता गेहूँ के पौधों की हरियाली से ा के ऊपर आसमान में तारे ामक रहे थे। बिरवा रोपा ा रहा था। रोपनेवाला न ंगलिया था न मंसाराम। धरती-सी-हरी-भरी एक औरत थी, वह िसका भी अंश साधना ाहती थी साध लिया। समय बताएगा कि यह ब ा न क ा है न कबूतरा। आदमी है, बस।"[142] होली के समय कबूतरों पर पुलिस हमला होने पर सब इतर-बितर हो ाता है। पुलिस कबूतरों को बेपर्दा कर ाले ाते। इस हादसे में ामुनी मर ाती है िस खेत में ामुनी पड़ी थी वहाँ का मालिक किसान डेरों पर आ कर गलियाँ बकता है अपमानित करता है-कदमबाई बुदबुदाई-"रे... रपट से कौन सा नया कहर टूट पड़ेगा? सब तो गु ार गया। लाठी-कुल्हाड़ी ालोन में माहिर हमारे मर्द घायल ठोरे से ला ाार और हम ैसी औरतें नंगी गोपिका-सी छिपने को बेबस... अगर भीखम गोतम ओर राणा गुदडै-िथड़े बीनकर अब तक आ गए होते तो हम तु े पहले फूल का मद पिलाकर मार न डालते और ामुनी के संग ही फूँक देते।"[143] ...कदमबाई भ ानी को कहती है-"ि ी, हमारे पास न मरों को कफन, न िंदों को लत्ता। दो घंटे में ही तबाह हो गए।"[144] "क ा लोग भी पूरे

---

[141] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.257

[142] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.35

[143] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.47

[144] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.48

बा ाीगर... एक भूखों मारेगा तो दूसरा लाल ा देगा।"[145] लीक तोड़ने का होसला न ाुटाता तो सबका प्यारा होता। 'भूरी' आ ााद मन की स्त्री कहती है-"गालियाँ और गुलाल मारने से किसी की ि ांदगानी में अंतर आया है? फेंकने-उछालने वाली ाीज़ें आदमी के ऊपर से निकल ााती हैं। ... हाथ की लकीरों को देखने से क्या होगा, खीं ाों तो पत्थर की लकीर खों ाों कि मिटाए न मिटे।"[146] 'भूरी' नेता को देखने के लिए ाांसी ााने के लिए साड़ी पहनती है। साड़ी पहनने पर गाँव की स्त्रियाँ हंस पड़ी। इस पर वह कहती है-" ैसे देश वैसा भेस। मुखिया अज्ञानी-ि ाल्लाया-डाँड़ लगेगी। क ााओं के कपड़े पहन लिए। भूरी कहती है-वहाँ कबूतरी कहकर पुलिस हैरान करे तो तु ो अ छा लगेगा? यह भेद बदलना नहीं, संकट से ब ाना है।"[147] यानी भूरी के मन में हर शोषण को सहने की ताकत है। ाीवन को स्व के लिए ाीना ााहती है। पति मर ााने पर भूरी बेटे को प ़ाने उसके भावी ाीवन के बारे में सो ाती हुई कहती है-"पतिविरता लुगाई अपने आदमी के संग सती होती है। मैं अपने मर्द की ब्याहता खुद को तब मानूँगी, ाब रामसिंह को प ़ा-लिखाकर इसी क ाहरी के दरवा ो खड़ा कर दूँगी। भले इस सफर में मु ो दस मर्दों के नी ो से गु ारना पड़े... ि ास दिन रामसिंह ने बाप का लाल खून नीली स्याही में बदलकर अपने हक में ाार आँक लिख लिए, सम ाूँगी मु ामें राई भर कलंक नहीं। विद्या रतन के आगे देह का ख ााना कुछ भी नहीं।"[148] "...कितनों में कबूत है कि अपनी मन ााही दुनिया बसा लें और बिरादरी से टक्कर लें?"[149]

कदमबाई सो ाती है कि-आदमी ाब तक हारता है, ि ांदा रहता है। ाीतते ही मर ााता है। राणा प्यास से लड़ते-लड़ते हार गया होगा, इसीलिए ाोरी से

---

[145] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.50
[146] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.72
[147] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.73
[148] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.74
[149] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.81

नल ालाकर पानी पी लिया होगा। मंसाराम राणा को कुछ ामीन देना ाहते हैं। इस पर आनंदी ोतीत होकर कहती है-"सुई की नोक भर धरती भी दी तो उस बेड़िनी को नंगी करके बल्लम पर टँगवा दूँगी।"[150] पत्नी की उपेक्षा अपमान पर मंसाराम सो ाता है-"सामा िक प्रतिष्ठा कुछ नहीं होती। घर में इतना अपमान होता है कि प्रतिष्ठा की धि याँ उड़ ाती हैं, और हम उसे भी सिल ोड़कर दुशाले की तरह ओ ़ लेते हैं। इ   ात ाहिए, सम्मान ाहिए, तब फिर कहीं-न-कहीं इंसानियत से नी े आना होगा।"[151] "...ि निके पास गुस्सा नहीं होता उनके पास अपना कहने के लिए कुछ नहीं। दया, रहम, करुणा तो सिर्फ दूसरों के होते हैं।"[152] औरत पानी की तरह ही तो संकरी से संकरी ागह में अपने आपको रमा देती है। इस प्रकार इस उपन्यास में और भी ऐसे उदाहरण हैं ि निमें स्त्री की ेतनात्मक भाषा उभर कर आई है।

' ाक' में सारंग पुरुष सत्ता के बारे में सो ाती है-"ये पुरुष-महापुरुष शाबाशी के पात्र हैं या धिक्कार के? इनकी ला ा लिहा ा हम क्यों करते हैं? हम सारी अवस्था शीश ुकाकर काट देते हैं। इनके सम्मान में, क्यों? ये लोग हमारी हत्याओं के गवाह नहीं, तमाशबीन बनकर क्यों रह ाते हैं? अन्याय के नाम पर ये गूँगे हो ानेवाले हमारे संरक्षक...?" [153] सारंग की बहन रेशम असमय विधवा बन ाती है। रोते हुए कहती है-"बी ा राह में धोखा देनेवाले से यादा धोखेबा ा कौन होगा? वह करमवीर को गालियाँ देती-दगाबा ा! लाम ही क्या कम थी कि मौत-सौत के संग लगा ाला गया। रेशम स्त्री-धर्म को तोड़कर वैधव्य सहिता का खंडन करती है। और किसी से गर्भधारण करती है। इस पर सास ाल्ला कर उसकी उपेक्षा करती है। इस पर रेशम कहती है-"अम्माँ, तुम तो बिरथा ही दाँत किटकिटा रही हो। तुम्हारे पूत की ि ाता ठंडी हो ाने से क्या मेरी

[150] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.95
[151] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.116
[152] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.369
[153] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.14

देह की आग बु ा ाती? ीतों-मरतों का भेद भी भूल गई तुम? बेटा के संग मैं भी मरी मान ली? ... बिरया ही छानबीन करने में लगी हो। आ ा को तुम्हारा बेटा मेरी ागह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था? अब उसकी बाँह गह ले। मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होती कि पूत की उ ाड़ी िंदगी बस गई। पर मेरा फ ीता करने पर तुली हो।"[154] "... हाड़-मांस की बनी लुगाई, िसके पेट में बालक है, उस पर या तो ाल-दूध ठारेंगे या फिर... अपनी नाँद पर ारती गाय-भैंसों से भी गई बीती करके मान रहे हो मु ो। रंडी सास अपने पूत को तो रोती है, और मेरे बालक की हत्या पर उतारू है।"[155] "सभ्य कहे ानेवाले लोगों के यहाँ आदमी से यादा पकड़े-लत्ते की कीमत होती है।"[156]

सारंग कहती है-"तुम कहती हो बीबी, माना बदला है, पर कुछ नहीं बदला। सिलसिला बदस्तूर ाल रहा है। कभी बदलेगा भी नहीं। मेरी आस मर ुकी है। मैंने रेशम की लाश में प्रण फूँकने ाहे थे, पर क्या हाथ लगा।"[157] सारंग पति शंका करने पर कहती है-"ब्याह के ग्यारह वर्ष के बाद मेरा ाल-ालन बिगड़ रहा है। है न? तुम्हारी गलती नहीं। तुम भी क्या करो? नई-नई बातें अपनाना ाहते हो, पर पुराने ारखे को तोड़कर फेंकना तुम्हारे बस का नहीं। तुम्हें नहीं पता क्या करो, क्या न करो? तुम ही नहीं, बहुत से लोग दुविधा में रहते हैं।"[158] सारंग पुरुष की पारंपरिक नियति पर प्रहार करती है। पुरुष कितना भी प ़-लिख ले, बड़ा बन ाए उसकी मानसिकता कभी नहीं बदलती।

अंधविश्वास पर स्त्री के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। लोग! इस पर श्रीधर सो ाता है-"मनोहर की बहू की दुर्दशा। अमानवीय यंत्रणा। हर स्त्री

---

[154] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.19
[155] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.21
[156] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.65
[157] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.71
[158] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.156

छटपटाती होगी, मगर कुछ कहती नहीं। नहीं तो एक भी और उन मर्दों की तरह हंस क्यों नहीं रही थी? कामुक हँसी। ... यह विडंबना असाध्य रोग की तरह हर गाँव में किसी-न-किसी रूप में मिलेगी। क्या इस दारुण कथा का अंत संभव नहीं? यदि अपने औरतपन के लिए औरत लड़ने लगे तो वह ुड़ैल। मैं स ामु ा ही मनोहर की बहू से मिलना ाहता हूँ। उसके बनाए हुए वे छोटे-छोटे कपड़े देखना ाहता हूँ ि न्हें देखकर वह अपने कपड़े फाड़ने लगती है।"[159] "... इसी प्रकार लैंगसिरी बीबी राममूर्ति का ीवन मनोहर की बहू ैसा हो, नहीं ाहती-वह कहती है-नहीं ाहिए ि ारौलीवाली को अपनी ि ंदगी। यह ि ंदगी ानवरों से भी बदतर... क्या होगा राममूर्ति का भविष्य? ऐसे ही छिपती फिरेगी? ब ोगी भी?" [160]

यही प्रताड़ना देखकर तुम्हारे बी ा से कोई मं ाा उठेगी सारंग... तुम्हारे मन में विक्षोभ की एक ि ानगारी छिटकी, यह क्या काम है? लपटें भी उठेंगी, ो छीन लेंगी अपने हक को, इन वीर्यबर्द्धक ाड़ी-बूटी और शिला ाीत खानेवाले मर्दों से... सारंग ाब तक स्त्री का अपमान होता रहेगा, ऊसर भूमि ऐसे ही ालती रहेगी। फसल को वीराने में बदल देगी। मं ाा स्त्री थी, स्त्री की पीर ानती थी, तभी तो साधु-महात्मा से एक ाावल नहीं, अपनी ैसी बाँ ापन भोगती हुई सौ रानियों के लिए सौ ाावल लाई थी। ांदना की पुकार भी यही कहती है- "बेटियों को मार-काटकर कोई हरित क्रांति नहीं कर सकता। हमारा ीवन... हमारा हक... ांदना पुकारती है।"[161] ... पुरुष में एकाधिकार की भावना होती है, क्योंकि उसके संस्कार ऐसे ही होते हैं तभी तो वो पत्नी को सिर्फ उसका ही अधिकार मान कर अपना पूरा रौब और हक ाताना ाहता है। रं ात भी इसी

---

[159] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.214
[160] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.214
[161] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.215

भावना के ालते सारंग को कहता है-"इस घर का मालिक मैं हूँ। यहाँ वही होगा ाो मैं ााहूँगा। मैं इस घर का कर्ताधिर्ता।"[162]

स्त्री मान मर्यादा ाानती है पर ाब कोई हद से यादा अत्या ाार करे तो उसे सहन नहीं होता-देवीस्पन की बहु भी ऐसे ही मि ा ा की है। ाब दादी सांस रो ा ताने मारे, गाली दे तो उसे बर्दाश्त नहीं होता और वह उसकी खटिया घर के बाहर डाल देती है और पति से कहती है... मैंने इतना सब करके दोनों बू ों को उनकी औकात बता दी कि आगे कभी... पाँव की ूती नहीं हूँ मैं कि अम्मा ााहे ाब फटफटाएं।"[163]

इसी प्रकार सारंग ि ाद्दी है हठी है किसी बात पर अड़ ााए तो पीछे नहीं हटती, पति की यादतियों को फटकार कर कहती है-"आ ा मु ो िंदगी का एक और सत्य मालूम हो गया रं ाीत। एक पे ा और खुल गया। मेरी इ छा का मोल कितना है, यह मु ो बार-बार मत सम ााओ। इससे तुम्हारे लिए बनाए हुए भरोसे की ाूड़ियाँ टूटने लगती हैं... प्रधान ाी की सा ि श को सरं ााम देनेवाले तुम पारमाबरदार सिपाही...बहुत ऊँ ो तो उड़ना नहीं ााहा कि डोर प्रधान को पकड़ानी पड़ी? भटको मत रं ाीत, मैं खत्म हो ााऊँगी। ऊँ ााइयाँ न सही, ामीन तो है। मैं तो यह भी सो ा रही थी कि मास्टर के साथ ालने को तुम कहोगे, ैसी कि तुम्हारी आदत है और तुम ऐसा करके मेरी निगाहों में कई गुना ऊपर उठ ााते।"[164]

मेरा मन ि ाद्दी है श्रीधर। कहता है, ि ास मर्द के साथ तेरे पिता ने विदा कर दिया, उस मालिक से वापिस माँग ले अपनी देह। ाीती- ाागती पाँ ा इंद्रियों के संग तो ाानवर बे ो ााते हैं। उन्हीं का रास्ता पकड़ाया ााता है दूसरे के हाथ। यह बात रेशम के मन में भी आई होगी, तभी तो अपने धर्म बिगाड़ दिया।"[165]

---

[162] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.156
[163] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.246
[164] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.309
[165] ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.322

"कभी सुना था कि औरत अपने मर्द से भारी पड़ेगी? वह भी मर्दों की दुनिया में, अब तक हम मरने के लिए ीते रहे हैं, अब ीने के लिए मरेंगे। ... ब घर परिवार में औरतों का दखल हो सकता है, तो रा का में क्यों नहीं... तुम कब तक औरत के पत्नी होने की दुहाई देती रहोगी, मैं निमित्त बनाने तुम्हारे खडे होने का। भले कितने ही रोको। उसी तरह का निमित्त ैसे कुम्हार घड़ा बनाने का होता है। तुम्हें प्रधान बनना होगा हर हालत में।"[166]

तुम्हारी ैसी दृ. स्त्री का अनुसरण पूरी औरत- ाति करेगी। सतियों के सिंहासन पर देवी की तरह पथराई ा सकती हो, लेकिन पुरुषों की बराबरी में गह पाना असंभव। 'बराबरी' शब्द खतरों की ईंटों से बना है, इसे हासिल करना, मेरे ख्याल में साहस दुनिया की अमूल्य ी है। गरीब को धन के लिए, निर्बल को बल के लिए और अज्ञानी को ज्ञान के लिए संघर्ष करना पड़ता है।"[167] ो आग में तपना सीख लेता है, वह कुंदन हो ाता है। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने कई स्त्री ेतनात्मक भाषा का प्रयोग किया है। हाँ स्त्री सदियों से अन्याय, अत्या ार, अपमान, अमानवीय व्यवहार को सहन करती है और विद्रोह करने पर कई आततायियों के शोषण का शिकार बनती है। फिर भी निड़र की तरह अपने मनसूबों को हासिल करने के लिए संघर्षित रहती है।

'बेतवा बहती रही' में उर्वशी कई संघर्षों से, अन्याय, अत्या ारों से गु र ुकी है। विधवा के असहाय व्यक्तितत्व को समा , परिवार किस प्रकार खंडित करते हैं से भोग ुकी है। भाई पैसे के लाल में उर्वशी का विवाह मीरा के पिता से करवा देता है ो उसे पिता के उम्र का है। उर्वशी अपनी ही ब पन की सहेली की माँ बन ाती है। ब अ य की मृत्यु होती है और बहु विधवा हो ाती है तो उर्वशी विद्रोही बन ाती है। उर्वशी विधवा के ीवन संघर्ष से गु र ुकी है। वह नहीं ाहती अ य की अबोध बहु भी इसी रास्ते ले। वह छोटे बेटे उदय को

---

[166] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.400

[167] ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.401

सम ाती है कि अ ाय की बहु से विवाह करने के लिए वह मान ाता है पर पति को यह सहनीय नहीं। वह उदय का रिश्ता ऊं ो खानदान में पैसे वाले परिवार में करना ाहता है। वह पत्नी उर्वशी को अपमानित करते हुए कहता है-"कौन ानम कौ बदलो लओ हमसे? अपनी खेती-पाती फूँक बार के, ाके लाने लाये थे तुम्हें... इस पर उर्वशी उपेक्षा करते हुए कहती है-कह लई सब? तुम हमें काहे के लाने लाये, सो हमें ानने की ारूरत नहीं है। बस तुम इतनी सुन लनो कि हम काहे के लाने आये है-अन्याय हम नहीं होने देंगे। ... लेकिन हमारे बि ाय की बहू कहाँ ाएगी वह? कौन ब्याहने आयेगा उसे? तुमने कबहुँ सो ा ो बात? केसे कटेगी उसकी ि ांदगानी... बेटा नहीं रहौ तो बहू बिरानी हो गयी। धक्का मारदओ वायःहमारे रहते ा अनरथ नहीं हो सकता... एक से ह ार तक नहीं..." आपका लड़का है ही उसके ोग। आपके घर की बहू है वह। इ ात-आबरू है इतै के सुख-दुःखों की हकदार, हिस्सेदार है वह। उदय रा ा न होते तो महामाई कौ कौल, हम कछु न कहते। पर अब हम नहीं ाहते कि वह भी कहीं हमारी तरह ही..." [168] आगे वह कहती है-तुम नहीं ाओगे तो बड़ी बखरी से ग ारा ा दादा ायेंगे... वे भी नहीं ायेंगे तो हम ायेंगे, गाँव के लोग ायेंगे। ा घर के सब काम दाद नहीं संभाल रही हम नहीं उठा रहे? फिर ब्याह भी सही। यह कारण तो करना ही है।"[169]

प्रभा खेतान के उपन्यासों में ोतनात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है। इनकी सभी नायिकाएँ किसी-न-किसी शोषण की शिकार नज़र आती हैं। संघर्षपूर्ण ािवन व्यतीत कर अनेक समस्याओं का सामना करती है। स्त्री स्त्री के अत्या ार को सहती है। मारवाड़ी समा ा की स्त्रियों की दुर्दशा के ि ात्रण इनके उपन्यासों में दर्शाया गया है। ये अपनी नायिकाओं के माध्यम से ू ाती स्त्री की परिस्थितियों का अंकन कर स्त्री को ागरूक बनाती है। छिन्नमस्ता की प्रिया, पीली आंधी की

---

[168] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.142-143

[169] बेतवा बहती रही, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.144

सोमा, अपने अपने ोहरे की रमा, आओ पेपे घर ाले की प्रभा और अन्य इनसे ुड़ी पात्र संघर्षों से ू ाती हुई ोतना ाागृत करती हैं। इनकी भाषा में ोतनात्मक भावना प्रतिलक्षित होती है। इनका पूरा औपन्यासिक संसार स्त्री ोतनात्मक भाषा को उ ाागर करता है।

'छिन्नमस्ता' में प्रिया नीना की भाषा ोतनात्मक है। व्यवस्था के बारे में स्त्री नियतियों के बारे में प्रिया का साक्षात्कार करने का प्रयत्न करती है। प्रिया सो ाती है-"मैंने दुःख ोला, पीड़ा सही, संत्रास में ुलसी रही... पर ि ास दिन मैंने त्रासदी को ही अपने होने की शर्त सम ाी तभी ोतना ाागृत हुई... सारे ुल्मों के सामने सलीब पर लटकते मैंने पाया कि मैं अब पूरी तरह ि ांदगी की ुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।"[170]

ुड़ी प्रिया को लिखने को प्रोत्साहित करते हुए कहती है-" ाब लिखोगी तब अपनी ौसी ह ाारों-लाखों के साथ संवाद स्थापित कर पाओगी। तुम्हें क्या पता कि तुम्हारे शब्दों को प ़कर कौन-कौन अपने घावों को सहलाएगा? किस औरत की गूंगी ुबान अ ाानक बोल उठेगी-हाँ, हाँ यह स ा है, बिल्कुल स ा है मेरे साथ भी ऐसा ही घटा है।"[171] प्रिया के कॉले ा के सर प्रिया को सम ााते हैं- प्रिया पहले अपने स्त्री होने की गुलामी को सम ाो... स्त्री होना कोई अपराध नहीं है पर नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है। अपनी नियति बदलो तो वह एकलव्य की गुरुदक्षिणा होगी।"[172]

प्रिया की माँ दाई माँ को हमेशा प्रिया के खिलाने-पिलाने पर टोकती रहती है। दाई माँ को यह बर्दाश्त नहीं होता। वह कहती है-"ऐ बहु ाी। हमसे अब ई नौकरी नहीं होइबे... खावत हुआ ब ुआ क मुँह पर तोहार ाो म ाी सो बालत ाा हो। इस पर माँ कहती है-अब वे पहलेवाले दिन हैं क्या? इस पर दाई माँ ाल्ला

[170] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.10
[171] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.23
[172] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.117

ााती है। कहती है-वैसन दिन नाहीं, तो हमसे अब तौहार नौकरी भी नाहीं होइबे।"[173] प्रिया सो ाती है अन्याय को सहते हुए दाई माँ बागी हो गई है।

नीना अपनी माँ ो प्रिया की रखैल सास की बेटी है और माँ के इस संबंध के प्रति विद्रोही बन कर कहती है-"भाभी! क्या मु े उनकी इ छा-अनि छा का ख्याल करना ाहिए? भाभी, मु े पता है कि मैं एक ना ाय ा संतान हूँ। मम्मी कितनी भी माँग में सिंदूर लगाएँ, उस लाल रंग में थोड़ी कालिख घुली हुई है? इसीलिए तो मम्मी का सिंदूर ामकता नहीं। िंदा रहने और अपनी लड़ाई स्वयं लड़ने के लिए यह ारूरी हो ााता है कि हम अपमान और वं ाना को भी याद रखें। मु े आप ये ुप- ुप रहो वाली बातें न सिखलाएँ तो।"[174] क्यों सहा माँ ने क्यों नहीं अपना हक माँगा?"[175] प्रिया के दाम्पत्य ीवन संघर्ष पर ुड़ी कहती है-"अपने स्वार्थों पर ोट पड़ने से कमोबेश सभी लोगों की प्रतिक्रिया इतनी ही हिंसक होती है, क्योंकि हमारी आ ा की पूरी सभ्यता हिंसा और प्रमाद पर ही अिकी हुई है ऐसा नहीं कि औरत ही ोट खाी है कहीं पुरुष भी मरता है। यह व्यक्ति की अपनी-अपनी संवेदनशीलता है-एम्पैथी-दूसरे के दर्द को अपना सम ा पाने की क्षमता... पर तुम्हारा और नरेंद्र का संबंध बड़ा नेगेटिव रूप ले ुका था, ाहाँ दोनों एक-दूसरे को मारने पर उतारू हो रहे थे... नहीं, में तुम्हें बुरा नहीं कह रही... पर हट ााना यादा अ छा होता है। बनिस्बत एक दूसरे पर निर्मम प्रहार करते ाले ााओ।"[176] एक रास्ता और भी सही, ुनाव तुम्हें करना होगा प्रिया... तुम्हें अपनी मदद खुद करनी होगी। ... ऐसी मानसिक त्रासदी में कौन-सा आनंद है-"तिल-तिल मरता आदमी खुशी से ना े-गाए-क्रूर तुम्हारे भीतर बैठा ह ारों साल की परंपरा से ग्रसित एक रुग्ण मानस है ो तुम्हें कभी ैन नहीं लेने देता, तुम्हारी उपलब्धियों से खुश नहीं होता। तुम अपने प्रति इतनी आक्रामक

---

[173] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.126

[174] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.144-145

[175] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.163

[176] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.168

क्यों हो प्रिया? क्यों सलीब पर लटककर खुद की हथेलियों में कीलें ठोकती रहती हो? क्या मिलता है इस आत्मपीड़न से?"[177] यानी स्त्री-पुरुष का संबंध वही मालिक और गुलाम का? कब तक यह द्वंद्व ालेगा?"[178]

स्त्री का कोई स्वाभिमान नहीं? पर अपने पैरों पर खड़ी स्त्री के लिए अपनी पारंपरिक सीमाओं को तोड़ना आसान भी तो होता है... लेकिन स्त्री यदि सीमाएँ लाँघ ाए तो वह पारंपरिक समा ा उसके लिए खत्म हो सकता है। पर मानव समा ा तो बहुत बड़ा है। औरत होकर मैं ो समा ा को दे सकती हूँ, वह नरेंद्र पुरुष होकर कभी नहीं दे सकता। हर व्यक्ति अपने आप में एक इकाई अवश्य होता है पर उसमें स ो स्त्री और पुरुष वही हो पाते हैं ो पुरुषप्रधान समा ा की सीमाओं को पार करके अपने स्वभाव में स्त्री की करुणा को सं ित कर पाते हैं, वे ही ीवन का स ा सृ ान कर पाते हैं, सुख सृ ान में है, 'स्व' के विलयन में है। लेकिन मेरा अपना काम, िसमें मु ो सृ ान और अभिव्यक्ति का सुख मिला है, मेरा सबसे बड़ा आलंबन है।"[179] अपने आइडेंटिटी, व्यक्तित्व के विकास के लिए। तुम खुद अपनी व्यवस्था बन सकती हो, अपनी ामीब। परिस्थितियों का दास ोई व्यक्ति नहीं हो ाता? क्या अमानवीयकरण के ारम में भी स्वयं को साबुत ब ाए रखना हर किसी के लिए संभव होता है। और िंदगी की लड़ाई में सक्रिय हूँ।"[180]

'अपने अपने ोहरे' की रमा विवाहित पुरुष से प्रेम करती है। ल्द ही उसे अपनी भूल का ऐहसास होता है। वह सो ाती है... मैं क्या हूँ, रा ेंद्र के संदर्भ में... अपने पैरों पर खड़ी स्वावलंबी स्त्री...? प्रेमिका की भूमिका कुछ समय के लिए होती है। ीवन भर नहीं... मैं कैसी िंदगी में ी रही हूँ क्या है मेरा परि ाय-किसकी पत्नी, किसकी माँ, कर घर की बहु। न मैं सधवा, न विधवा।"

---

[177] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.184

[178] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.189

[179] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.211-212

[180] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.223

दूसरी औरत होने का दुःख उसे हर समय खलता रहता है। वह सो ाती है-वह प्यार तो एक बार करती है बस एक बार। एक ही पुरुष से कभी शादी से पहले, कभी शादी के बाद। इसके बाद तो वह अपने आपको ेलना सीखती है। प्यार शाश्वत नहीं। कम से कम ैविक धर्म पर आधारित स्त्री पुरुष का प्यार तो नहीं।"[181] वह गोयनका से कहती है--"क्या मैं स्त्री होने के कारण आपकी दोस्त नहीं हो सकती और दोस्त को छिपाकर देने की क्या ारूरत है।"[182] गोयना उसे सु ााव देता है कि वह किसी अनय पुरुष से विवाह कर ले। उसे यह प्रस्ताव सम ा में नहीं आता और वह कह उठती है-"क्या बिना पुरुष के औरत इतनी अधूरी है? क्या सारे अस्तित्व का संदर्भ केवल पुरुष है? अपने आप में वह कुछ भी नहीं, यानी उसकी अपनी कोई भूमिका नहीं।"[183] वह सामा ाक व्यवस्था उसके बारे में क्या सो ाती है उसे ि ंता नहीं वह अपने 'स्व' को पह ाानने की कोशिश में रहती है। क्या समा ा केवल स्त्री-पुरुष का एक ही संबंध स्थापित करना ाानता है उसकी मानसिकता बदलनी होगी। सामा ाक व्यवस्था को नया प्रारूप बनाना होगा।

'पीली आँधी' की सोमा पुरानी रीति-रिवा ा का खंडन करते हुए अपने ताई सास को पूछती है-"ताई ाी आप इतने नियम आ ारण के बाव ूद कैसे विधवा हो गई।"[184] सोमा कहना ाहती है कि ये सारे कर्मकाण्ड, अंधविश्वास मनुष्य के ाीवन को नरक बना देते हैं। इसमें सोमा की ि ाठानी लता विद्रोह करती है। ाब उसके गहने सोमा को दिये ाते हैं वह सास से कहती है-"हमारे माँ बाप सो ेंगे कि बेटी के पास बीस लाख का गहना है और यहां कुछ भी अधिकार नहीं गहना दिखाकर उनसे आप दहे ा ऐंठते हैं।"[185]

---

[181] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.126
[182] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.141
[183] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.181
[184] पीली आंधी, प्रभा खेतान-पृ.183
[185] पीली आंधी, प्रभा खेतान-पृ.202

'आओ पेपे घर लें' की प्रभा अस्तित्व की स्थापना देश छोड़कर आर्थिक विपन्नता की पुष्टी के लिए वह सो ती है आर्थिक स्वतंत्रता को ीना हो तो क्रियाशील हो ाओ। स्त्री अस्तित्व की पह ान के लिए उसे कामका ी होना तथा हमेशा उसकी ेब भरी रहना रूरी है। प्रभा के साथ-साथ अमेरिकी की अन्य स्त्रियाँ भी अपनी अस्तित्व की पह ान के लिए कार्यरत हैं। उपन्यास की कैथी माँ बनना ाहती है। वह कहती है-"नहीं, अभी तो नहीं। आदमी अपने-आप को ब ैसा ाहे आत्मसम्मोहित करके ी सकता है।"[186] वह सो ती है कि माँ बनने से वह अपनी सार्थकता को खो बैठेगी। कैथी का दाम्पत्य ीवन सुखी नहीं है। पति के निष्ठुर व्यवहार पर आत्महत्या करना ीवन से धोका देना मानी है। वह कहती है-"एक ब्रैडी ाएगा तो मु े दस मिलेंगे, पर काम करने के लिए ीसस ने मु े एक बार आदमी का शरीर दिया है। मेरे बीते हुए वर्ष लौटेंगे क्या?" [187]

प्रभा ी के वि ार में स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ बेलाग हो ाना नहीं है। स्त्री अपने कर्तव्यों एवं िम्मेदारियों के साथ ही स्वतंत्र होती है। स्त्री ने अपनी स्वतंत्रता एवं 'स्व' की पह ान के लिए संघर्ष किये हैं। प्रभा ी की नायिका 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'पीली आँधी' की सोमा, 'अपने-अपने ेहरे' की रमा तथा 'आओ पेपे घर ले' की प्रभा सभी ने अपनी प्रतिभा और संकल्पशक्ति से नई शक्ति और ुनौती के रूप में दर्शायी गई है। ये सभी समा परिवार से संघर्ष करते हुए अपनी आत्मपीड़न से टकराकर, अपनी भावनाओं को लहुलुहान करते हुए अपने अस्तित्व को नये ंग से परिभाषित करते हें। ये नायिका स्त्री स्वतंत्रता के मार्ग पर लते हुए भी प्रेम एवं स्वतंत्रता के बी द्वंद्व को मिटाने में सफल रही है।

मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' में स्त्री ेतनात्मक भाषा शुरू से अंत तक ित्रित हुई है। इस उपन्यास की पात्र संघर्षरत है और अनेक शोषणों की शिकार

---

[186] आओ पेपे घर लें, प्रभा खेतान-पृ.106
[187] आओ पेपे घर लें, प्रभा खेतान-पृ.149

होने के कारण विद्रोहिणी रूप में दर्शायी गयी है। लेखिका ने पात्रों के माध्यम से स्त्री पर हो रहे अन्याय, अत्या ार का खंडन करते हुए स्त्री ेतनात्मक भाषा का प्रयोग किया है। स्मिता अपनी बहन नमिता के घर रहती है। ी ा विवाह करने की सो ाते हैं तो वह कहती है-"मैं शादी करना नहीं ाहती। न अधेड़ से, न ावान से। मैं प .ना ाहती हूँ।"[188] नमिता बहन को कहती हे-"तू आगे प .ा। अपने पैरों पर खड़ी हो। हमारे भरोसे मत रह। काम-धाम करेगी तो एक नहीं, अनेक दोस्त मिलेंगे। अपनी मनपसंद शादी करना। मेरी तरह भिखारिन मत बनना। इसी प्रकार असीमा स्मिताको अपने बलबूते सब करने की सीख देती है। "किसी की दया मत स्वीकारो, अपने पर भरोसा रखो, केवल अपने पर।"[189]

मारियान को स्मिता सम ाते हुए कहती हे-" ाब तुम लोग अ छी तरह ानते हो कि आदर्श और टिकाऊ प्रेम ैसी कोई ीज़ नहीं होती तो उसके पीछे भागने में अपनी ि ांदगी क्यों बरबाद करते हो।"[190] मारियान लेखक है और स्त्री पर काम करती है। वह ानती है कि "हर औरत एक पूरे समय और समा ा का प्रतिनिधित्व करती है। पर हाड़-माँस के शरीरवाली मारियान नाम की औरत यह भी ानती थी कि उसकी तरह हर औरत, औरों से कुछ अलग, एक विशिष्ट प्राणी है, ाहे वह कितनी अपूर्ण और मामूली क्यों नहो। अपूर्ण है तभी तो इन्सान है, अले है, विशिष्ट है।"[191] मारियान का पति छल से, धोखे से उसके ारनल काउ उपयोग कर उपन्यास बनाता है और उपन्यास में कहीं भी मारियान के ारनल होने का कोई सबूत न ब ो। आँसुओं के नमक, काफी की गंध, कसीदेकारी और अनथक काम की ागह उसकी अस्मिता का आधार था, उसका ारनल और कहा ाता है अपनी अस्मिता पर हुए उस भीषण प्रहार के खिलाफ पब्लिक में अपनी

---

[188] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.15

[189] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.20

[190] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.73

[191] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.81-82

अस्मिता पर हुए उस भीषण प्रहार के खिलाफ पब्लिक में आवाज़ न उठाऊँ।"[192] वह उपन्यास की बिक्री होने देना नहीं ाहती। इस पर स्मिता उसे सम ाती है- "तुम यह क्यों नहीं सो ाती तुम्हारे साथ ाहे ि ातना अन्याय हुआ है 'वुमेन ऑफ द अर्थ' के छपने से तुम्हारी अस्मिता को अभिव्यक्ति मिली है। वह तुम्हारी रूह की आवाज़ है, लोग उसे प ़ते हें तो तुम्हारी आवाज़ सुनते हैं। इर्विंग मात्र माध्यम है वह तुम्हारा है, तुम्हारा ही रहेगा, किसी और के नाम का ठप्पा लगने से तुम्हारे स्व ान का महत्व और उससे मिलनेवाला आनंद कम नहीं हो ाता है।"[193]

मारियान स्त्री की स्थिति को विडंबना मानती है। वह संवेदनहीन होना नहीं ाहती। "मैं मर्द नहीं स कि होना ाहती हूँ... अक्षरों की उस नयी दुनिया में, मैं, तु ो अपने खुद को, कितनी-कितनी औरतों को दूबारा ान्म देना ाहती हूँ। मैं मर्द नहीं होना ाहती। मैं दर्द बाँटना ाहती हूँ।"[194]

नर्मदा ाो ाूड़ी के कारखाने में काम कर अपना और अपनी बहन ाी ाा और भाई का पेट पालती है। फिर भी उपेक्षा का पात्र बनती है। बहन धोके से अपने ही पति के साथ नर्मदा का विवाह करवाती है। भाई विवाह के बाद मुड कर भी नहीं देखता। सब अपने ारूरतों को पूरा करने की मशीन मानते हैं नर्मदा को। वह सो ाती है-"कैसा भाई और कौन भतीर? मेरा तो कोई अपना न हुआ।"[195] नर्मदा काम करके भी ाीना और बहन पर आधारित हूँ सम ाती है। इस पर असीमा कहती है-"मर्दों के मुकाबले औरतें ायादा अना ा पैदा करती हैं। कभी कि ाब तक औरत यह सम ाी रहेगी कि मर्द ही असल कमाऊ होता है, उसकी कमाई को अनदेखा किया ाता रहेगा। कभी कि हर औरत को मार-पीट करना आना

---

[192] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.97-99
[193] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.100
[194] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.114
[195] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.135

ाहिए, तभी मर्दों को बस में रख सकती है।"[196] असीमा ब ों की समान शिक्षा पर ोर देते हुए कहती है-"मैं तो कहती हूँ, तमाम पब्लिक स्कूल बंद कर दिये ाने ाहिए। सबके लिए अमीर हो ाहे गरीब, स्थानीय स्कूलों में शिक्षा लेना अनिवार्य होना ाहिए। तब अमीर लोग पूरा ख्याल रखेंगे कि स्कूल ब़िया ालें। तभी साधारण ब ों को ंग की शिक्षा मिल पाएगी। सबको एक ैसी स्कूली शिक्षा मिलेगी तो पूरे देश में अवसर की समानता होगी। फिर किसी को आरक्षण की ारूरत नहीं रहेगी।"[197] स्त्री की सृ ानात्मक क्षमता की संभावनाओं के विविध आयामों और अवरोधों की मानसिकताओं पर वि ार मृदुला ी ने इस उपन्यास में किया है। स्त्री की सृ ान क्षमता को उसके मातृत्व से ोडकर देखा गया है। स्त्री के पास सृ ान के अन्य विकल्प भी हो सकते हैं, इसे विपिन द्वारा दर्शाया गया है-"संतान पैदा न कर पाने से कोई बं ार नहीं हो ाता और बहुत कुछ है िसका सृ ान हम कर सकते हैं। तुम भी और मैं भी।"[198] मृदुला गर्ग स्त्री के इस भ्रम को तोड़ने में सफल हीं है कि मातृत्व ही एकमात्र सृ ान है और औरत अकेले सृ ान नहीं कर सकती, स्त्री को अपने अकेले की सृ ान क्षमता पर विश्वास करना ही होगा।"[199]

ित्रा मुद्गल के उपन्यासों में स्त्री की ेतनात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है। स्त्री मध्यवर्गीय परिवार की मानसिकता तथा सामाािक व्यवस्था से संघर्ष कर 'स्व' की पह ान के लिए समस्याओं से ू ा रही है। स्त्री की अस्मिता-अस्तित्व की रक्षा के लिए युद्धरत है।एक ामीन अपनी में ित्रा ी कहती हैं-"स्त्री आखिर किस तरह की ामीन तथा किस तरह की स्वाधीनता के लिए युद्धरत है और वह किस तरह का समा ा ाहती है? िस संभ्रांत और दिखनौटे समा ा के कु ाक्र में फंसकर वह अपने अस्तित्व के मूल प्रश्नों से टकरा रही है, वह उसे कहाँ ले ा

---

[196] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.141

[197] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.196

[198] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.259

[199] स्त्री िंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.185

रहा है? ऐसा तो नहीं कि वह अन ााने ही एक सुनियोि ात धोखे में अपने को डालकर ि ास तरह साहस और संघर्ष का प्रदर्शन कर रही है, वे उसकी नासम ाी से स्वयं उसे ही दांव पर लगा रहे हों।"[200] 'स्व' की पह ाान के लिए अंकिता सो ाती है-"क्यों ाुड़ ााती है? क्यों ाीने लगती है किसी के साथ को? क्यों उसे अपना मानने-सम ाने लगती है? वही... वही सहसा टीसों के खंदक को कुरेद देता है, ि ासे कते-तोपते उसे बरसों लग गए और ाब वह उस खंदक को तोप पाई तो लगा था कि अब वह भी भकती है... ाीना भी ााहती है... यह ाो अपने आपको उसने पुन ान्म दिया है, अपने गर्भ में अपने ान्म की प्रसव-पीड़ा ोली है, वह सिर्फ अंकिता है-अंकिता छाबड़ा नहीं।"[201] ... अंकिता का दांपत्य ाीवन समाप्त होने पर समा ा, बिरादरी, परिवार उसके प्रति घृणा रखते हुए उपेक्षा करते हैं। इस पर अंकिता की माँ कहती है-"उसकी! उसकी क्या बिसात? मेरी बेटी ही छोड़ आई उसे। क्यों घुटती ाीवन भर उसके साथ? प ़ी-लिखी है। अपने पांवों पर खडी रह सकती है... यह तो तैयार ही नहीं होती वरना कल करवा दूँ दूसरा विवाह। कौन कमी है हमारी बिट्टी में?"[202] अंकिता सो ाती है-"मैं घर को ाीना ााहती हूँ, बरदाश्त करना नहीं... और औरत की स्वतंत्रता उसकी सबसे बड़ी दुश्मन है, दुश ारित्रता का प्रमाण-पत्र।"[203]

स्त्री का आ ा के संदर्भ में उसकी सहनशक्ति और उसका ाीवन दर्शन बदल गया है। इस पर मि.गुहा की पहली पत्नी अपने वि ाार व्यक्त करती है-"अगर पति-पत्नी में सम ाौता नहीं होता तो मात्र दिखावे के लिए मृत संबंधों को ोने से बेहतर है तत्काल अलग हो ााना। ... कि यह किसी के द्वारा किसी के अधिकारों के शोषण का प्रश्न नहीं है, अपितु ाीवन ाीने की बुनियादी शर्त है,

---

[200] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्‌गल, फ्लैप पे ा से
[201] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्‌गल-पृ.23
[202] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्‌गल-पृ.31
[203] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्‌गल-पृ.30

ि ासे हमारे समा ा में पूरे साहस के साथ स्वीकार किया ाना ाहिए।"[204] "ऐसे पुरुषों ाो किसी स्त्री को मात्र ि ान्स सम ाते हैं, औरत को स्वयं उन्हें ठुकराकर यह ाता देना ाहिए कि वह भी आत्मसम्मान रखती हैं।"[205] अंकिता सो ाती है कि क्यों तलाकशुदा स्त्री के प्रति दूसरी स्त्री की मानसिकता रू ़ हो ाती है। इस पर हरींद्र कहता है-"उनकी अपनी ग्रंथियाँ हैं। उन्हें लगता है कि ाो स्त्री पति से अलग हो गई है, उसके साथ दाल में कुछ काला है। भले पति के साथ रहते हुए वह दाल को ाहे ि ातना काला-पीला करती रहे ... मगर उस सामाि ाक आड़ में सब नैतिक है। ... औरत के ाु ाारू व्यक्तित्व के समक्ष स्वयं को बौना महसूस करती है। स्त्रियाँ तुम्हें ऐसी भी मिलेंगी ाो परंपरागत दमन और संकीर्णता की सड़न के खिलाफ विद्रोह तो करना ाहती है, मगर आत्मविश्वास की कमी या अन्य नि ाी म ाबूरियों के ालते ायादतियों का प्रतिवाद नहीं कर पातीं... मगर वे ाब किसी स्त्री को अपने पति के अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध मो ाा बांधते पाती हैं तो खूब उत्प्रेरित होती है। उनकी प्रशंसा करते नहीं अघाती, क्योंकि वे उन स्त्रियों के संघर्ष में अपनी लड़ाई को मूर्त होता पाती है। यानी अभी हमारी स्त्री को रू ़ मानसिकता से मुक्त होना शेष है।"[206]

सामाि ाक संगठनों की स्त्रियों के बारे में नीता कहती हे-"स्त्री की अस्मिता की ि ांता में दुबली होती ये भगिनियाँ-घरों में अपनी हुकूमत का भ्रम पोसे रहने के लिए न ााने किन-किन संबंधों के मुखौटों में स्त्री को वे सामान्य मानवीय अधिकारों से वंि ात रखने से नहीं हि ाकि ााती, हम अपनी संकीर्णताओं से मुक्त नहीं होंगे-स्त्री की इ ात-प्रतिष्ठा मोम की भांति मामूली सी आं ा पाकर पिघलती रहेगी...।" [207] इस पर अंकिता कहती है-"स्त्री के अस्तित्व की तलाश ाब तक पूरी नहीं होगी, ाब तक वह वर्गों में बंटकर, स्वार्थों और सुविधाओं में उल ाी,

---

[204] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.51
[205] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.54
[206] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.58-59
[207] एक ामीन अपनी, ि ात्रा मुद्गल-पृ.125

विभा ित होकर ीती रहेंगे।"[208] स्त्री अपने मन से ीये पर मर्द बनकर नहीं। ीवन में हम ाब भी कोई निर्णय लें, सामा िक सरोकारों से कटकर नहीं। ीवन-मूल्यों को नि ी तौर पर ध्वस्त करना आसान है, मगर उन्हें संशोधित करना ुनौती भरा संघर्ष।"[209] तलाक के बहुत दिनों बाद सुधांशु अंकिता से हरींद्र के घर मिलता हे और सुधांशु अंकिता से कहता है-"तुम मेरे बारे में दुबारा नहीं सो ा सकी... इस पर अंकिता कहती है, "सुधांशु ी औरत बोनसाई का पौधा नहीं है... ाब ी ाहा, उसकी ड़ें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया। वह बौना बनाए रखने की इस सा ि ाश को अस्वीकार भी तो कर सकती है।"[210] धैर्य ावाब दे रहा है। आत्मसम्मान आहत हो, विद्रोह पर उतर आया। सब कुछ बरदाश्त है उसे-अविश्वास नहीं।"[211] इसमें स्त्री के सामा िक आर्थिक, पारिवारिक, दाम्पत्य पक्षों पर मृदुला ी ने ेतनात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

'आवां' में सुनंदा अविवाहित माँ बनती है और अपने हक के लिए ो बातें करती है उसमें ेतनात्मक भाषा का प्रयोग मिलता है। ाब अविवाहित माँ बनने के कारण से कामगर अघाडी में सुविधा नहीं मिलती तो वह कहती है- "सुविधा का प्रावधान गर्भवती स्त्री और उसके ब े को लेकर है, न कि कुंआरी माँ या ब्याहता माँ के विशेषणों के लिए... माँ बनना किसी के नि ी मामले की ब ाय कंपनी का मामला कैसे हो गया।"[212] "मैं आत्मनिर्भर हूँ... अपनी ब ी की परवरिश स्वयं कर सकने में समर्थ। मेरा मातृत्व ब्याह के टु े प्रमाणपत्र का मोहता ा नहीं।"[213] स्त्री की आत्मनिर्भर बनने को लेखिका प्रेरित करती है- "आत्मनिर्भर होने की परिभाषा है, स्वयं के बुद्धि विवेक का उपयोग, न कि पुरुषों

---

[208] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.128
[209] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.216
[210] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.235
[211] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.243
[212] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.110
[213] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.111

के समकक्ष आर्थिक स ामता। ... स्वालंबन ने स्त्री को संरक्षक की आवश्यकता से मुक्त कर दिया।"[214] लेखिका ने देवीशंकर के माध्यम से व्यवस्था तथा व्यावहारिक बनने के बारे में नमिता को स ाई से साक्षात्कार करवाया है। "समय परखता है व्यक्ति के मनोबल को। उसकी संकल्पबद्धता को। छोटे-छोटे अवसरों में उपलब्ध हो। हो सकता है, अपनी कसौटी पर कस रहा है वह तुम सबको। मुश्किल एक नहीं, अनेक हैं। अनुकूलताओं के संकेत ूक हम प्रतिकूलताओं को आसानी से ग्रहण कर उसी तक सीमित हो ाते हैं।"[215] ीवन में व्यावहारिक होना बहुत फायदेमंद है। कामगार अघाडी के अन्ना साहब और नमिता के पिता देवीसंकर म ादूर संघ के अनेक मुद्दों को लेकर-"अनेक असहमतियों के बाव ूद दोनों इस मुद्दे पर एकमत थे-समा ा में व्याप्त आर्थिक विषमता ही सामा िाक असमानता का मूलाधार है। आम ान का ीवन-स्तर उठाए बिना समा ा का उत्कर्ष संभव नहीं।"[216]

नमिता सो ाती है मध्यवर्गीय लड़की अपने अभावों के ालते किस प्रकार एक ामीन तलाशने को संघर्षरत है। वह सो ाती है-"स्थिति के परिष्करण के संयोग के ालते तब ाब अभावों की गिरफ्त से मुक्त होने को छटपटाता व्यक्ति अपने खड़े होने के लिए ग ा-भर आधार बनाने में सफल हो ाता है।"[217] पिता सम ाते हैं नमिता को कि "ि ास व्यक्ति में आक्रोश नहीं वह अनीति से नहीं लड़ सकता।"[218] वह द्वंद्व किस काम का ाो व्यक्ति को कोई परिणति न दे सके। आगे वे सांसारिक नियम के बारे में बताते हैं-"इस संसार में ि ासमें ाड़ और ोतन पदार्थ दोनों ही हैं, कुछ भी अनश्वर नहीं। सदा-सर्वदा कोई रहने वाला नहीं। प्रत्येक वस्तु को किसी न किसी समय नष्ट होना है। उसका नामोनिशान मिटना ही

---

[214] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.129
[215] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.50
[216] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.50
[217] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.206
[218] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.239

है। इस भांति मिटने को मृत होना कहते हैं। और स ा तो यह है अन्ना साहब। ि ानमें ाीने की योग्यता है-वे ही मृत्यु के योग्य होंगे।"[219] इन सभी उदाहरणों में ि ात्रा ाी ने ोतनात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

'अपने अपने कोणार्क' की कुनी सो ाती है-"मैं क्या पारंपरिक शील संको ा के नाम पर अपने भीतर की आवाज़ को अनसुना कर तमाम संभावनाओं को खत्म कर दूँ? ऐसा करेन से लाभ भी किसे होगा? मैं ाो नदी बनकर बहना ाहती हूँ रुकी हुई पोखरी बनकर सडाँध नहीं देने लगूँगी? मैं खुद को नए खतरे उठाने के लिए तैयार कर रही थी। लेकिन म ाबूत दीवारोंवाला किला सुरक्षा देने के बदले अब मु ामें घुटन का अहसास पैदा कर रहा था। फिर भी यह स ा है कि मैं अभी तक लक्ष्मण-रेखाओं को लाँघने की हिम्मत बटोर नहीं पा रही थी। प्रकट में तो नहीं... नई सृष्टि के ान्म लेने से पहले पुरानी दुनिया का हना ारूरी था और वह हने लगी थी।"[220] इस पर सिद्धार्थ कहता है-"अपने लिए सो ाना गुनाह नहीं होता। आखिर हम खुद अपने बारे में न सो ें तो दूसरा क्योंकर सो ेगा? आप भी अपने लिए सो ाना सीखिए।"[221] कुनी अपनी परंपरा से मुक्त होना ाहती है। स्वयं को ाीने की इ छा उसमें ाागृत होती है। वह सो ाती है-पड़ाव-दर-पड़ाव ि ांदगी ाीती रही। आ ा खुद से अलग होकर खुद को देखने की ाह ाागी है। आत्मावलोकन? खुद को सम ाने की खातिर? या कि अपने से ाुड़े तमाम ानों की मानसिकता को ाानने के लिए? शायद ाी ाुके वक्त की स ााइयों में अपनी अर्थवत्ता खो ाने के लिए। ाीवन में ाो भी निर्णय मैंने लिए, फिर से उन्हें ाी लूँ तो क्या वे निर्णय दूसरे होंगे।"[222] ाीने और सो ाने का ंग समय के साथ, परिस्थितियों के साथ बदलता है। कुनी की सो ा में भी कायापलट एक दिन में संभव नहीं हुआ। उसे काफी समय लगा। अपने बारे में

---

[219] आवां, ि ात्रा मुद्गल-पृ.398

[220] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.116

[221] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.123

[222] अपने-अपने कोणार्क, ंद्रकांता-पृ.7

सो ाने वि ारने के लिए। "सत्य की दुनिया का कोई मार्ग नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने सत्य को स्वयं ही खो ाना होता है। ... बते हुए वक्त पर ठहर ाना िंदगी के बेशकीमती पलों का अनादन करना नहीं होगा... अतीत को ताकत बनाकर बेहतर िंदगी की ुनौतियों को हासिल करना होगा।" ंद्रकांता ने कुनी को एक ु ारू युवती के रूप में उपन्यास में ित्रित किया है। ो समय के साथ सम ौता करते हुए अपने ीवन मूल्यों पर लने की कोशिश करती है।

'यामिनी कथा' की यामिनी अपने ीवन से सम ौता नहीं करती। अपने ीवन को सार्थक बनाने के लिए परिवार से समा ा से युद्धरत रहती है। पर सामा िक व्यवस्था, पारिवारिक नियतियाँ उसे सफल बनने नहीं देते। पति हा ा पर कार्यशील है। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के कार्य में व्यस्त रहता है। यामिनी को समय दे नहीं पाता। हा ी ीवन के म ो करता है। यामिनी को मानसिक प्यार नहीं दे पाता। विवाह को सामा िक बंधन के सिवाय कुछ नहीं सम ाता। इस विषय पर सूर्यबाला ने नायिका के माध्यम से अत्यन्त शूक्ष्म बात कही है-"माना कि विवाह की सामा िक प्रथा कहीं-न-कहीं व्यक्ति की मुक्ति में ारों ओर एक रेखा खीं ाती है। लेकिन प्यार सामा िक बंधन न होत हुए भी एक बंधन नहीं है क्या?" [223] यामिनी पति से असंतुष्ठ होकर कहती है-"तो मेरी सबसे बड़ी विडंबना यही है कि मैं अपने ीवन में ाब आई ाब आपके पास देने लेने के लिए कुछ है ही नहीं।"[224] पति की मृत्यु के पश ात यामिनी आर्थिक एवं सामा िक सहारे के लिए निखिल के साथ शादी करना ाहती है। सास बेटे की ागह किसी और को देना पसंद नहीं करती। वह यामिनी की उपेक्षा करती है। इस पर यामिनी क्रोधित हो कर कहती है-"अब तक की सारी िंदगी मैंने सबका ध्यान ही रखते हुए बिताई है माँ ी और अपनी ड्यूटी ब ाने में भी कभी किसी तरह की लापरवाही भी नहीं बरती... यहाँ तक कि इस ड्यूटी से अलग अपने सुख-दुःख

[223] यामिनी कथा की व्यथा, सूर्यकांत नागर-कृति विमर्श-पृ.17

[224] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.24

नाम की भी कोई ीज़ होती है, कभी ध्यान ही नहीं आया।"[225] वह निखिल से विवाह कर लेती है। कुछ समय पश ात ाब दूसरा बेटा होता है तो आपसी आंतरिक कलह शुरू होता है। पुतुल को लेकर (पुतुल पहला बेटा) निखिल अपने बेटे और यामिनी के पहले बेटे में भेदभाव करना आरंभ करता है। इस स्थिति को यामिनी सह नहीं सकती। वह सो । में पड़ ाती है-"देखा यामिनी। संपूर्णता के इस दावे के तहत तुम कभी निखिल को एक संपूर्ण पत्नी नहीं दे पाओगी, न पुतुल को उसकी माँ ही।"[226] आर्थिक सहारे के लिए वह पुनर्विवाह करती है। पर असफल हो ाती है। अपना व्यक्तित्व बनाने के लिए अगर वह नौकरी करती तो किसी का सहारा न बन अपने बलबूते पर अपना व्यक्तित्व बना सकती थी।

विवे य उपन्यासों में लेखिकाओं ने पात्रो के माध्यम से स्त्री ेतनात्मक भाषा का प्रयोग उपन्यासों में किया है। स्त्री ेतना पर सभी ने अपने-अपने दृष्टिकोण से भाषा का प्रयोग किया है। स्त्री को सामा िक, आर्थिक, रा नैतिक, पारिवारिक सभी तथ्यों पर वि ारने के लिए ेतनात्मक भाषा का प्रयोग करने में सफल हुई है। अपने अस्तित्व की पह ान की अभिव्यक्ति का नमूना प्रस्तुत किया है।

6.1.5 िंतन परक भाषा

अंतिम दशक की लेखिकाओं ने पात्रों के अंतर्मन को अत्यन्त विश्लेषणात्मक तरीके से भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ो उपन्यासों को सह । ही ऊं े आसन पर बिठाता है। लेखिकाओं ने उ   िंतनशील परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों की र ना की है।

"स्त्री- िंतन में आत्मनिर्णय को महत्वपूर्ण रूप में प्राथमिकता दी गयी है। ... स्त्रियों की स्वतंत्रता निर्भर करेगी उनके आंतरिक एवं बाह्‌य ीवन के योग्य

[225] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.62
[226] यामिनी कथा, सूर्यबाला-पृ.43

सामं ास्य पर। अपने आंतरिक हृदय के अनुसार बाह्य आ ारण करना स्वतंत्रता का एक लक्षण है।"[227]

लेखिकाएँ स्त्री होने के नाते स्त्री समस्या को बहुत अ छे ंग से सम ाती हैं और उनकी समस्याओं को हृदयंगम करती हैं। लेखिकाओं ने िंतनपरक भाषा में स्त्री के सामाि ाक, आर्थिक, व्यावहारिक, पारिवारिक, मानसिक उद्वेगों, स्त्री के आंतरिक, बाह्य संघर्षों का ि ात्रण किया है। किस प्रकार एक स्त्री इन सभी घटनाओं का सफलता से समाधान कर पाती है उसके प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं।

' ाक' में स्त्री की स्थिति और व्यथा पर िंतन किया गया है। "स्त्रियाँ िंदगी के गीतों, संस्कार ान्म उत्सवों और रो ामर्रा की ारूरतों के ालते अपने-आपको प्राकृतिक लीला में उतार रही है। या कि भीतर से उमड़ते करुण खूंखार हाहाकार को पीकर महाविनाश को ुनौती देती हुई ाीने की अदम्य ेष्टा कर रही है। शायद पिए हुए समस्त विष को अपनी मुस्कानों में ालकर अमृत कर देना ाहती है। नहीं शाश्वत सत्य की तरह उ ागर होती हुई अनहोनी को पह ानते हुए भी अन ान बने रहने का ेंग।"[228] स्त्री बेबस है अपने हक से ाीने के लिए क्योंकि-"गृहस्थ ने कम ोर कर दिया है मु े, ो सुरक्षा पर सुरक्षा ूँ.ती हूँ।"[229] बड़े घर की बड़ी बहू उस देहरी के ये दस्तूर ानती थी कि उसका फ ि सिर्फ दूसरों को खुश करना है। ि ानके ालते हम लोग गाँव की औरतों की तरह हाथ पीट पीटकर सह ा रूप से लड़ नहीं पाए अ छे खाने-कपड़ों की बदौलत मुँह सीकर रहना हमारी ला ारी थी। खूंखार क्या कोई पेट से पैदा होता है।[230] मन के किसी कोने में साथ-साथ छोटे-बड़े शूलों की तरह बीते ाीवन में मिली उपेक्षा भी सिर उठाने लगती है। "वे नुकीले कोने मन में गड़े हैं, ो ऊपर

---

227 सीमंती उपदेश: स्त्री-मुक्ति- ेतना का आख्यान, राठोड पुंडलिक-पृ.55

228 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.7

229 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.22

230 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.68

से संभ्रांत, सौम्य और दयावान नज़र आता है।"[231] इस में स्त्री की व्यथा के दर्शन होते हैं।

रं ाीत, सारंग को स्त्री की समा ा में क्या स्थिति है उसे व्यक्त करता है- "कि तुम यह बात सम ा लो कि मर्द की भूल को तो आई-गई कर देते हैं लोग, क्योंकि वह दस दरवा ो ाँकने के बाद भी घुला-पूँछा सा लौट आता है अपने घर मगर औरत? उसके अ छे होने की निशानी ही केवल उसका पवित्र ाल ालन है।"[232] इस पर सारंग कहती है-"तुम्हारी गलती नहीं। तुम भी क्या करो पुरुष की मानसिकता को बदल नहीं सकते नई-नई बातें अपनाना ाहता है। पर पुराने ारखे को तोड़कर फेंकना नहीं ाहता।"[233] यह विडंबना असाध्य रोग की तरह हर गाँव में किसी-न-किसी रूप में मिलेगा। पुरुष में एकाधिकार की भावना होती है, क्योंकि उसके संस्कार ऐसे ही होते हैं। " ाानवरों के बाद अगर किसी को खूँटे से बाँधा ााता है तो वे हैं आँगन लीपती, घर सहे ाती, खेतों में काम करती औरतें।[234] ाो आ ा भी बंधन मुक्त नहीं हैं। घर की ाकड़बंधी की कसावटों में ाीती हैं। उनके लिए पतिधर्म नहीं, इन सीमा धर्म है-मानवधर्म है ि ासके ालते वो सारी मुसीबतों का सामना मुँह बंद करके करती है।

इसमें लेखिका ने किसान की समस्या, अफसरों की नियतियों, ा ाारू किसान किस प्रकार अपनी ाूरूरतों को पूरा करने में असमर्थ है, तथा गाँव की नि ाना वर्ग आ ा भी कु ाला, दबो ाा ााता है इस पर ि ांतन किया है। "यह दीगर बात है कि छोटी ाातियाँ बड़ी कौम की सेवा करने के बाद भी अपना व स्वि कायम न कर सकीं। उलटे उसी दबाव में रहीं, ि ासमें पहले थीं।"[235]

---

231 ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.169
232 ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.209
233 ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.226
234 ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.345
235 ााक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.25

"सभ्य क्या नौकरपेशा लोग होते हैं, खेती करनेवाला इनसान असभ्य और मूर्ख ही क्यों मान लिया ााता है? हम दिखा देंगे कि गाँव का प ़ा-लिखा किसान ऊँ ो-से-ऊँ ो सरकारी अफसर से यादा योग्य और स ान होता है।[236]

रं ीत कहता है-"असल में अनुभव और ज्ञान-विज्ञान के ारिए नए किसान का ान्म होगा, धरती को नया ीवन मिलेगा।"[237] "अफसरों की नियति के बारे में श्रीधर कहता है कि अफसर लोग सम ाते हैं, सरकारी कुर्सियों के नी ो आसर्फिय दबी रहती है। खुदाई करते ााओ मालामाल हो ााओगे। शिक्षा विभाग में ही क्या, हर विभाग में ऐसा हो रहा है। सुधार के कई तमाशे करते हैं करते कुछ नहीं समय पूरा होने से पहले संधित लोग अपने-अपने थैलों के मुँह खोल देते हैं और भर-भरकर ो ले ाते हैं।"[238] इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि मैत्रेयी ी ने सामाा िक, किसान, व्यवस्था, स्त्री, रा ानीति पर िंतापरक भाषा का प्रयोग सह ा ंग से किया है।

' ूला नट' की 'शीलो' की भाषा भी िंतनपरक है। वह खेती, फसल, ामापूं ी पर िंतन करती है। साथ ही समा ा में स्त्री की स्थिति उसके व्यथा पर सो ाती है। उखटा रोग से ब ाने के लिए शीलो फसल ाक्र अपनाने की बात करती है-"अब की बेर ाना, फिर गेहूँ, फिर मटर। ाानते नहीं ग्रामसेवक ी क्या बताते हैं, फसल ाक्र अपनाओ, खेत में पैदावार ौगुनी हो ााएगी। नहीं तो उखटा रोग... बू़े ामाने उखड़ेंगे नहीं, तो नया बखत आएगा कैसे... रेत में नहीं सड़क पर ालना सीखने दो शुरू में पाँव छिलेंगे ारूर, पर मोटर की तरह दौड़ना आ ााएगा।"[239] शीलो पुनर्विवाह करक हो ााएगा, और िास प्रकार पुरुष किसी से भी संबंध बना कर रख सकता है स्त्री क्यों नहीं रख सकती। वह पति को एक संदर्भ में कहती है- िास प्रकार तुम्हारी तो बे ारी बिन ब्याही,

---

236 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.27
237 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.194
238 ाक, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.178
239 ूला नट, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.114-115

मनम ीं की दूसरी ओरत उसी प्रकार बालकिशन भी इससे यादा कुछ नहीं। पति की अवसरवादी प्रवृत्ति एवं लाल ी भावना को भाँप कर उसे अपने हक की मीन नहीं हड़पने देते। मीन लेने आए सुरोर को पछाड़ कर वापस भे ा देती है। िास कम ोरी के ालते पति उसकी उपेक्षा करता है उसी को ड़ से उखाड़ देती है। पुराना ोला उतार-कर नये रंग रूप में अततायियों का सामना करती है। ाति बिरादरी, आस-पड़ोस, गाँव के नियमों का खंडन कर ु ारू स्त्रभ के रूप में ि त्रित हुई है शीलो।

'बेतवा बहती रही' में विधवा की परिस्थितियों पर लेखिका ने िंता की है। सदियों से स्त्री संहिताओं के मानदंड पर ालती स्त्री ो बेतवा की तरह मुंह बंद किये बहती ाली ाती है। परंपरागत मूल्यों को ोती हुई पारिवारिक, सामाि ाक व्यवस्था के ां े में लती स्त्री अनेक शोषणों, समस्याओं से ू ा रही स्त्री पर िंतन व्यक्त किया है। स्त्री ो ब ापन से ही मान-मर्यादाओं में रहना, बड़ों की आज्ञा का पालन करना, बेटियों को ाबान काबू में रखना तथा िासका ाहाँ ी ाहे उसे अपने मन ाहे घूंटे से बांध देना। सदियों से ालती आ रही स्त्री की मानसिकता को कु ाला ाना, पुरुष सत्ता का यथा-स्थिति बना रहना दर्शाया गया है-उर्वशी अपने पर हुए अत्या ार, शोषण के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाती बल्कि वह नहीं ाहती उसकी बहू भी इन्हीं रास्तों पर भटके इसलिए वह छोटे बेटे उदरा से उसका विवाह करवा देती है। उर्वशी नहीं ाहती ो ीवन उसने ीया हे आनेवाली पी ़ी ऐसा ीवन व्यतीत करे िासमें मानसिक, शारीरिक पीड़ा, संत्रास, उत्पीड़न के सिवाए कुछ न हो।

'इदन्नमम' में स्त्री की स्थितियों पर िंता की गई है। उनके दाम्पत्य ीवन के घुटन भरे कडुवाहट को दर्शाया गया है। स्त्री की व्यवस्था एवं घुटन को सहती हुई कुसुमा पति रहते हुए दाऊ ू से संबंध बनाती है और इस प्रकार के प्रेम संबंध को बुरा न सो ाते हुए मंदा से कहती है-"कोई नदी, भरी नदी यों तरबंध तोड़कर बह छूटी हो अथाह ाल फैल रहा हो और हम डूब रहे हों उसमें। अपनी

इ छा से, पूरे समरपन से डूबे ा रहे हैं। इसका तंत लिखा है तुम्हारी किताब में? हमारे ाने नहीं लिखा। भीतर से छलकती होंस रुकती ही नहीं... यह ाल निरमल है या मैला? पवितर है या पाप का? इमरत है कि बिसा नहीं ानते हम। तुम्हारी रामायन में लिखा भी होगा तो लिखनेवाला यह नहीं ानता कि आदमी ाब प्यासा होता है, प्यार से मर रहा होता है, तो कहॉ देखता है, कहाँ सो ाता है, कहाँ करता है कोई भेद? कोई अंतर? सौ बातों की एक बात है, नाते संबंध का नाम बताएँ, ग ें सो बेकार है। साँ ा नाता तो प्यार और पानी का है ानी के घायल दरप-मान को लिए फिर रहे थे सो दया और तरस की कें ुली फेंककर परगट हो गई दूसरी कुसुमा। और उसी के ालते दाऊ ू की बाहों में समा गई हमारी अधकु ाली ाह।"[240] स्त्री की परिस्थिति और व्यथा का ित्रण किया गया है।

गाँव की उ ाड़ स्थिति को देख कर, िंता व्यक्त करती है मंदा-"अंधेरा-ही-अंधेरा है बऊ। एक तो अपने गाँव के आदमी ही हिम्मतवार नहीं, दूसरे सरकार बहरी है। तीसरे रावण-रा ा हो रहा है इस गाँव में। ागेसर और अकिलास सिंह ैसे लोगों का बोलबाला।"[241] "रा ाकाल में ते ी लाना अपने हाथ की बात नहीं। वे लोग अपने तरीके से कहते हैं हर काम। नौकरशाह और रा ानेताओं के हाथ का खिलौना हो गया है हमारा ीवन। यहाँ प्र ातंत्र नहीं, शोषणतंत्र लागू है। हाँ गाँव का ीता- ागता ीवन हमारे अपने हाथ में है। क ी मिट्टी की तरह मुलायम इसे संवारा ा सकता है। बार-बार ग ़ा ा सकता है। अनुपम रूप दिया ा सकता है। अपने अनुरूप ाला ा सकता है।"[242]

शोषण के अंत के लिए मंदा ागृत होकर गाँव के हर व्यक्ति को ागृत करन ाहती है। "नहीं तो इस शोषण का अंत नहीं होनेवाला। सदियों से खड़ा यह

---

[240] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.93-94
[241] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.202
[242] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.207

पुरखे-सा पहाड़ अपने नी ो बसे किसानों को ही खाने लगाद्य। गाँव में सुख-शंति से दो वक्त की रोटी खाते हुए लोग तबाह कर डाले। ूल्हों की आग को ब ारी डालकर बु ाा दिया। व्यापारियों को हडपनीति पी ़ी-दर-पी ़ी खत्म कर देगी म ादूरों को उनके वारिसों को। ब ाने-ब ााने को ू ाना होगा। अमीर-गरीब, शत्रु-मित्र सबको शामिल होना होगा इस यज्ञ में। समय पड़े तो समिधा-सामग्री भी बनना होगा बात होम की है। बात आंदोलन की है।"[243] "शरीर से, मन से, पइसा-टका से, कहते हें न कि तन-मन-धन से ुटता है संगठन और तब ही होता है सफल।"[244] "यही भावना बनी रहे, ऐसा ही मेल ोल से ीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्ते स्वयं सुगम होते ाते हैं सहयोग से, संगठन से।"[245] इसमें विधवा की स्थिति पर, रखैल की स्थिति पर भी मैत्रेयी ी ने िंतन किया है। किस प्रकार समा ा विधवा स्त्री का शोषण करता है। उसकी ामीन हड़प लेता है, उसे दर-दर भटकने पर म ाबूर रता है। रखैल तो व्यापारियों को सेठ ठेकेदारों की मौ ा-मस्ती की वस्तु है। ाब तक ी ााहा इस्तेमाल किया ी भर गया तो मरने-तड़पने के लिए छोड़ दिया। भगवान भरोसे, अहिल्या इसका अ छा उदाहरण है।

'अल्मा कबूतरी' में कबूतरों के ीवन की व्यथा को ित्रित किया गया है। वे किस तरह अत्या ार, शोषण, अमानवीयता सहते हैं क ा समा ा की। कबूतरी स्त्रियों की स्थिति तो दोहरी दर्शायी गयी है। एक तो शोषण सहती है ऊपरसे उनकी इ ात-आबरू को ानवरों ैसे नो ा-खसोटा ाता है। इस स्थिति से गु ारी अल्मा सो ाती है-"बप्पा तुमने क्यों प ़ाया लिखाया? प ़ाई-लिखाई सो ाने पर म ाबूर करती है। यह सो ाने का समय नहीं, मरने-मारने की घड़ी है। मैं सबेरे से साँ ा तक, साँ ा से सबेरे तक कितनी िंदगियाँ ीती हूँ, कितनी मौतें मरती हूँ... बेटासिंह, सूर ा भान और श्रीराम शास्त्री की फौ ों सामने

---

[243] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.224
[244] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.236
[245] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.264

खड़ी हैं। मेरे साथ न गोरा न बादल, न दासी न सखियाँ, न सैनिक न ब ़ई-लुहार। कौन लड़ेगा छावनियों में, कौन तंबुओं में मार-काट म ाएगा? बंद किलों की बंदिनी तुम्हारी बेटी... कितनी दीवारें फलाँगे?"[246] क ा बनने की कोशिश में रामसिंह बेटी को प ़ाता-लिखाता है पर समा ा उसे उसी अंधेरे कोणों में धकेल देती है-"इंसान इंसान से कभी नहीं हारता, वह कुदरत से हारता है।"[247] राणा अपने कबूतरों की ीवन गाथा की व्यथा के बारे में सो ाता है कि हमारी बिरादरी कितनी पिछड़ी हुई है उसकी दिन ार्या में कोई हेरबदल नहं आयो। "डेरों पर पिता पुलीस से पिट कर आते हैं। मकर दाक पी ाते हैं। गालियों की आँधी आ ाती है। पत्नियों को पीटते हैं। औरतें भी लात घूँसा ालने लगती है। यादा ागड़ा हुआ तो गांव के क ा ैसे बड़े आदमी मंसाराम को बुलाते हैं। बिरादरी का मुखिया होते हुए भी सरमन पुलिस से डर के ंगल भाग ाता है। ाति की स्त्रियाँ पुलिस, ठेकेदारी की वासना की शिकार होती है। अपमानित उपेक्षित प्रताड़ित फिर भी आवाज़ नहीं उठाती। शोषण अत्या ार को सहती रहती है। ब े कमाके न लाए तो माँ रोटी नहीं देती। भले भूखे रहकर मर ाएं। वह रो लेगी, मगर रोटी नहीं ुटा पाएगी। स्त्रियों के होंठ ऐसे हो गए हैं, ैसे सदा खार खाए रहती हों। कभी हँसती है तो अ ीब सी लगती है। कबूतरा पुरुष ेल से आकर ालिम हो ाते हैं। खेद अत्या ार सहते हैं फिर भी अपनी पत्नी-ब ों पर शोषण करने से नहीं ूकते।"[248] कबूतरा, क ा बनने की कोशिश करे तो उसे ान से हाथ धोना पड़ता है। क्योंकि समा ा निम्न ाति को ऊपर उठते नहीं देख सकते उनेक भीतर अपनी असुरक्षा का भाव सदा बना रहता है। मैत्रेयी ने िंतन परक भाषा का प्रयोग किया है। कबूतरों के ीवन पर "कबूतरा पुरुष या

[246] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.369
[247] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.105
[248] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.134

तो ांगल में रहता है या ोल में... स्त्रियाँ शराब की भट्टियों पर या हमारे बिस्तरों पर।"[249]

'छिन्नमस्ता' में प्रभा खेतान ने स्त्री की मनःस्थिति को िंतनपरक भाषा प्रदान की है। वही पुरुष के अंतर्मन को उ ागर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भारतीय स्त्री की मनोदशा को व्यक्त किया है। "प्रिया नामक एक ऐसी स्त्री का आख्यान किया है ाो निरंतर शोषित है-समा ा की ा रि मान्यताओं से, पुरुष की वासना भरी भूख से। वह समा ा में ाुनौती पूर्ण ाीवन ाीती है। अपनी खोई हुई अस्मिता को फिर से प्राप्त करके एक सबक स्त्री के रूप में उपस्थित होती है।"[250] वह सो ाती है-"मैंने अपने आपको ब ााया है, अपने मूल्यों को ाीवन में सं ाोया है। हाँ, टूटी हूँ, बार बार टूटी हूँ, पर कहीं तो ाोर के निशान नहीं दुनिया के पैरों तले रौंदी गई, पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई हूँ।"[251] प्रिया अस्मिता के लिये अपने-आपसे ाू ाती रही पर 'स्व' की पह ाान को खोने नहीं दिया। समा ा में वैवाहिक परंपरा पर प्रिया िंतन करती है।

"नहीं, मैं औरत होना नहीं ााहती। अम्मा। तुम्हारी ैसी, ाी ाी लोगों ोसी, बड़ी भाभी ैसी िंदगी मैं नहीं स्वीकारना ााहती। िसमें पल-पल घुटन हो, में घुट-घुटकर नहीं मरना ााहती। सदियों की इस अमानवीय परंपरा को किस बीमारी का नाम दूँ ाहाँ मेरी ैसी विद्रोही लड़कियाँ भी समर्पित पत्नी और माँ बन ााने को विवश हो ााती है।"[252] प्रेम, विवाह इन शब्दों के पीछे की दीवानगी और आदिकाल से ाली आ रही परंपराओं का ोहरा सिर्फ औरत के आँसुओं से तरबतर है। अपने गीले ोहरे को स्त्री अपनी हथेलियों से पोंछती हुई मुस्कुराते रहने की ोष्टा भी करती है।"[253] विवाहित स्त्री की घुटन भरी व्यवस्था से उभरकर

---

[249] अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, फ्लैप बैक पे ा

[250] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, फ्लैप बैक पे ा

[251] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.25

[252] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.91

[253] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.124

प्रिया सो ाती है क्या सारी ि ंदगी मैं टेबल स ाती रहूँगी, बर्तनों को संहालती रहूँगी... एक ही अनुभव का बार-बार घटना-घटते ाले ाना, सब कुछ कितना नीरस लगने लगता है। गृहस्थी के मेले कभी शांत न होनेवाली लहरें, कया इसी को संसार-सागर कहा गया है?"[254] इन सबसे दूर ाना ाहती है अपने आपसे कहती है-सुरक्षा का मोह? व्यवस्था की स्वीकृति? मैं खुद से पूछती, "प्रिया स ा कहो प्रिया। इन स्याह गुफाओं से तुम कब निकलोगी? सहन करो... गाली-गलौ ा, मारपीट और उसके बाद दमन का समर्थन करते हुए घरवालों के उपदेश।"[255] इसी प्रकार पीली आंधी की सोमा घुटती रहती है। पारिवारिक, सामा िक व्यवस्था के बी ा वह स्त्री संहिताओं को ठुकरा कर पति को छोड़कर अपने प्रेमी के साथ सुख से ीवन बिताने ली ाती है। पति के शारीरिक मानसिक अत्या ार, शोषण से तंग आकर प्यार की तलाश में सुखी ीवन को ीने के लिए रंगटा परिवार की मान-मर्यादा त्यागकर प्रोफेसर सेन के घर ली ाती है।

दूसरी औरत पर भी ंतन किया गया है। प्रिया अपनी छोटी माँ और छोटी नानी के बारे में सो ाती है कि किस प्रकार समा ा इन औरतों को समान अधिकार नहीं देते। समा ा में, परिवार में ये स्त्रियाँ उपेक्षा की पात्र रहती हैं। पति के लिए मर मिटने को तैयार घृणित पात्र रह कर रह ाती हैं। यहाँ तक कि उन्हें पति मरने पर भी अंतिम संस्कार पर भी दूर रखा ाता है।

यही स्थिति अपने-अपने ोहरे की रमा की है ो प्रेम तो कर सकती हे पर अधिकार के लिए लड़ाई नहीं कर सकती। वह सो ाती है-"प्रेम करनेवाला अधिकार की लड़ाई नहीं लड़ सकता और ो अधिकार के लिए लड़ता है वह प्रेम करना नहीं ानता।"[256] पिछले पंद्रह वर्षों से इनके बी ा केवल मैत्री का रिश्ता है।

---

[254] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.141
[255] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.147
[256] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.200

यहाँ पर प्रभा खेतान ने स्त्री के दोस्त रूप को उभारा है। ो न पत्नी न, रखैन लेवल दोस्ती के रिश्ते पर िंतन किया है। रमा कहती है-"क्या मैं स्त्री होने के कारण आपकी दोस्त नहीं हो सकती।"[257] समा ा मु ो किस दृष्टि से देखती है। मु ो िंता नहीं लेकिन अपनी नज़र में मेरी पह ान क्या है? इसके बारे में सो ना होगा। क्या हम इस संबंध का प्रारूप नहीं बदल सकते? क्या स्त्री पुरुष में दोस्ती नहीं हो सकती।"[258]

प्रिया सो ती है-"निष्ठुर, यह दुनिया मासूमों के प्रति इतनी निष्ठुर क्यों है?"[259] समा ा में तलाक शुदा स्त्री के प्रति घृणा-"प्रश्न पूछती हुई आँखें, व्यंग्य से देखती हुई आँखें, घृणा से ालती हुई आँखें। इस औरत को हम कैसे अपने घर बुलाएँ।"[260] "समा ा की न ार केवल सलीब की ओर थी। वे ाहते थे कि ऐसी घरफोड औरत को स ा मिलनी ाहिए, क्योंकि कहीं न कहीं उन्हें मेरी सफलताओं से भय था।"[261]

"पर अपने पैरों पर खड़ी स्त्री के लिए अपनी पारंपरिक सीमाओं को तोड़ना आसान भी नहीं होता है... लेकिन स्त्री यदि सीमाएँ लांघ ाए तो वह पारंपरिक समा ा उसके लिए खत हो सकता है।"[262]

इस प्रकार प्रभा खेतान ने स्त्री की सामा िक, आर्थिक, पारिवारिक व्यवस्था पर िंतन किया है और पात्रों के माध्यम से अपने िंतन को िंतनपरक भाषा में प्रस्तुत किया है। स्त्री का वैवाहिक, नौकरीपेशा, स्त्री की समस्या, तलाकशुदा स्त्री की समस्या, दूसरी स्त्री की समस्या तथा दाम्पत्य ीवन की विषमता का असर

---

[257] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.206
[258] अपने-अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.92
[259] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.144
[260] अपने अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.141
[261] अपने अपने ेहरे, प्रभा खेतान-पृ.200
[262] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.210

उनके ब ों में कैसा पड़ता है उसका ित्रण किया है। इन उपन्यासों की पात्र िंतन परक भाषा से अपनी व्यथा को उ ागर करती है।

‘ऐ लड़की’ में अम्मू ीवन की, संसार की स ाई पर िंतन प्रकट करती है-"देह तो एक वरण है। पहना तो इस लोक में ले आए। उतार दिया तो परलोक।"[263] अम्मू सो ामी है यह शरीर मिट्टी का बना हुआ है। मिट्टी में ही मिल ायेगा। अम्मू प्राकृतिक संपदा पर भी वि ार करती हुई कहती है-"वायु बड़ी शक्तिवान है। आँधी बनकर पुराने पेड़ों को उखाड़ती है... आगे कहती है-बेटे, मु ा ैसों को अगर ीती- ागती हालत में ाँद पर भे ा दिया ाए और वहीं उनका खाद बनती रहे तो कैसा। एक-न-एक दिन तो वहाँ भी इनसान पैदा हो सकता है।"[264] अम्मू बड़े दार्शनिक तरीके से बेटी को स्त्री से स्त्री होना सृष्टि का न्म होना बताती है-"अपनी समरूपा उत्पन्न करना माँ के लिए बड़ा महत्वकारी है। पुण्य है। बेटी के पैदा होते ही माँ सदा ीवी हो ाती है। वह कभी नहीं मरती है हो उठती है वह निरंतरा। वह आ ा है, कल भी रहेगी। माँ से बेटी तक बेटी से उसकी बेटी, उसकी बेटी से भी अगली बेटी। अगली से भी अगली। वह सृष्टि का स्रोत है।"[265] माँ बेटी तो माँ बेटी रहेगी। रहती दुनिया तक। अम्मू ने गू. बात कही है। "मुक्ति की राह तो मैं देख रही हूँ पर शरीर का क्षय होता है आत्मा का नहीं। पानी सूख ाता है पर रक्त नहीं। बहता रहता है ब ों के ब ों में, उनके भी ब ों में।"[266] अम्मू स्त्री की परंपरागत सिद्धी पर भी वि ार करती है। स्त्री का अपना वक्त एवं समय सुधारना है तो-"उसे अपनी ीविका आप कमानी होगी, आत्मनिर्भर होना होगा।"[267] आगे वह कहती है-"गृहस्थ में पाँव रखकर स्त्री का ो मंथन-मर्दन होता है, वह भू ाल के टकों से कम नहीं होता। औरत सहन

---

263 ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.12
264 ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.33
265 ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.43
266 ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.44
267 ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.56

कर लेती है, क्योंकि उसे सहन करना पड़ता है।"[268] अम्मू ीवन के सारे पड़ाव पर कर ुकी है। विवाह, गृहस्थी, परिवार, ब े, ब ों के ब े, ीवन के सभी खट्टे-मीठे अनुभवों को ीया है। वह िंतित है अपने बेटी के भावी ीवन के लिए। अम्मू की भाषा में ेतनापरक दृष्टिकोण है। अम्मू एक ु ारू स्त्री है ो अपनी बेटी में भी ेतना लाने का प्रयास करती है। मृत्यु द्वार पर खड़ी अम्मू को ीवन से गहरी ि ीविषा है।

'आवां' मं स्त्री की वह भी मध्यवर्गीय स्त्री तथा मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति पर िंतन किया गया है। समा में किस प्रकार मध्यवर्गीय लड़की सामा िक, आर्थिक, पारिवारिक शोषण को सहती है उसका विरोध तक नहीं कर पाती, पुरुष की अमानवीय व्यवहार को, शोषण को, अत्या ार तथा वासना भरे व्यक्तित्व को मुँह बंद कर स्वीकार करती है। सहती है, उनकी अवमानना, अपमान तथा वहशी भूख। समा स्त्री को केवल भोग्य की वस्तु ही मानता है। इस पर लेखिका कहती है-"स्त्री की क्षमता को उसकी देह से ऊपर उठकर स्वीकार न करने वाले रू ़ रुग्ण समा को बोध कराना आखिर किन कंधों का दायित्व होगा?"[269] मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी बेटी पर परिवार की िम्मेदारी आ ाती है। िसके कारण वह अपनी प ़ाई-लिखाई छोड़कर नौकरी की तलाश में भटकती है। परिवार में लड़कियों को नाम मात्र के लिए प ़ाया ाता है। लड़कों को घर के उद्धार करने के लिए अ छे-से-अ छे स्कूल में प ़ाया ाता है ताकि बड़ा होकर वह घर की आर्थिक विपन्नता को दूर करेगा।

इस उपन्यास में पुरुष की विलासिता किस कदर छाई रहती हे कि वह अपनी बेटी को भी "अपनी वासना का शिकार बनाने से नहीं ूकता। इस स्थिति को देख कर स्मिता माँ और बहन के शोषण का बदला अपने पियक्कड बाप को सी ़ियों से धक्का देकर मार डालने तक सो ाती है। "पिता की पियक्कडी ने किस कदर घर

---

[268] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.73
[269] आवां, ित्रा मुद्गल-पृ.9

का सुख चैन लील रखा है... जिस दिन नौकरी मिल जाएगी मुझे, नमी, बाप-रूपी इस राक्षस को मैं सीढ़ियों से धकेल स्वाभाविक मौत करने पर विवश कर दूँगी।"[270] वह आर्थिक विपन्नता के कारण पिता का शोषण सहने पर मजबूर है। एक दिन स्मिता सही भी पिता के अत्याचारों से तंग आकर उसकी हत्या कर स्वाभाविक मौत में परिवर्तित कर देती है। मध्यवर्गीय लड़की की मानसिकता पर चिंतन किया गया है जो हालात के शिंकजे से निकलने के लिए विद्रोही बन जाती है। श्रमिक स्त्रियों पर चिंतन व्यक्त करते हुए पवार सोचता है कि "विडंबना यह है कि इतने वर्षों बाद आज भी महिला श्रमिकों में चेतना का वही अभाव नज़र आता है जो आठ-दस वर्ष पहले था। आज भी वे अपने मूलभूत अधिकारों के प्रति उपेक्षित पड़े। उस ब्लैकबोर्ड की भांति हैं जिस पर कोई ककहरा अंकित नहीं किया गया... मुश्किल अनपढ़ श्रमिकों की ही नहीं। शिक्षितों की भी है।"[271] पवार नमिता को कहता है-"तुम्हें इस मुहिम का अगुवा बनना होगा। ताकि उसमें चेतना जागे और वह भेद-भावपूर्ण व्यवहार के षडयंत्र को समझे, उसकी कूटनीति से स्वयं को सचेत करे।"[272] इस पर नमिता सोचती है-"गीले बेसन की पकौड़ी-सी तेल में छितरती वह स्वयं अपने तईं झेपी। बी.ए. फाइनल-भर नहीं दे पाई। वह कितनी जागरूक है। जो इन ऐसी स्त्रियों में चेतना जागृत करेंगे।

स्त्री के 'स्व' की पहचान के लिए नमिता चेतनापरक है भाषा का प्रयोग करती है। सामाजिक व्यवस्था स्त्रियों के विवेक को सुरझा देता है। जिस औरत की अस्मिता की रक्षा के लिए उनके घरों के मर्द उन्मादी तांडव मचाने को आतुर हो रहे हैं, जरा वे उस स्त्री का मन तो टटोलकर देखें? सहमत है वह उनसे? क्या वह अपने 'स्व' की लड़ाई कट्टपंथियों और धर्मांधों के कंधों पर चढ़कर लड़ना चाह रही है? सुनंदा ने सुहैल से ब्याह करने से इनकार नहीं किया-गौर करने की बात

---

[270] आवां, चित्रा मुद्गल-पृ.43
[271] आवां, चित्रा मुद्गल-पृ.97
[272] आवां, चित्रा मुद्गल-पृ.98

है। उसने मुसलमान बनने से इनकार किया। वह हिंदू होकर मुसलमान से ब्याह करने को रा ी थी, क्योंकि हिंदु-मुस्लिम एकता को धर्म से ऊपर देखना ाह रही थी। छोटी बात है यह? इस संदर्भ में लेखिका ने नमिता के माध्यम से ाति पर, सांप्रदायिक व्यवस्था पर तथा अविवाहित माँ बनी स्त्री के शोषण पर वि ार-ि ांतन किया है।

लेखिका ने अर्थी को कंधा देने के विषय में भी ि ांता व्यक्त की है कि हमारे या किसी भी समा ा में स्त्री को इस प्रकार के हक से वं ि ात किया गया है। लेखिका ने विमला बेन द्वारा इस कार्य को करने की संभावना प्रस्तुत की है कि-"पहली बार संभवतः किसी औरत ने मय्यम को कंधा देने का दुस्साहस दिखाया होगा। हो सकता है, मय्यत को कंधा देने वाली विमला बेन देश की पहली हठी महिला हो। उनके आ ारण ने लोगों में कुनमुनाहट भर दी। विमला बेन ि ांतनपरक भाषा में लोगों की बे ैनी को दूर करती हुई कहती है-"कूपमंडूक पुरुषों से हमें सीखना होगा कि स्त्रियों के लिए क्या शास्त्र सम्मत है, क्या नहीं? निर्दोष स्त्री की नृशंस हत्या करना शास्त्र-सम्मत है, पालिट? नहीं, तो पूछा अपने हृदय से कि क्यों हमसे किसी ने उसके प्राण ले लिए? मैं कंधा किसी औरत की मय्यत को नहीं दे रही, उस स्त्री ेतना को दे रही हूँ ि ासका गला घोंटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मैं हर ाति, धर्म, वर्ण की स्त्रियों का आवाहन करती हूँ कि वे सबकी सब श्मशान ालें और बारी-बार से सुनंदा की मय्यत को कंधा दें।"[273]

इस पर नमिता सो ाती है-"क्या स ामु ा औरतें अपनी बंद खोहों से निकल पाएंगी या अपना ही शव ोती हुई उसी खोह में पलट पडेंगी।"[274] नमिता भी बड़ी बेटी होने के कारण पिता के अंतिम संस्कार के नियम निभाती है और पिता को मुख्याग्नि देती है।

[273] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.153
[274] आवां, ि त्रा मुद्गल-पृ.154

ि त्रा ाी ने मध्यवर्गीय परिवार की लड़कियों के शोषणों से उत्पन्न समस्याओं का ि त्रण किया है ि ासमें वह कई पुरुषों से धोका खाती है। पुरुष समा ा स्त्री को केवल भोग्य की वस्तु ही मानता है। उसे ाब ाहे छल से, बल से, फुसलाकर, इस्तेमाल करता है। स्त्री की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता है। सं ाय कनोई ने भी नमी को छल तथा प्रेम ाल में फंसाकर केवल बाप का पट्टा गले में लटकाने के लिए उसका इस्तेमाल किया था।

‘एक ामीन अपनी’ में स्त्री की अकेले होने की समस्या, तलाकशुदा, नौकरीपेशा स्त्री की समस्या, पारिवारिक तथा सामा ाक, आर्थिक समस्याओं का िंतन किया गया है। इन समस्याओं से ू ा रही है ाीविका के लिए। नौकरी करने पर तरह-तरह की समस्याओं का सामना करती हैं। अपने ‘स्व’ की पह ान, अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए ु ारू बनी हुई नज़र आती है।

एक माँ तलाकशुदा बेटी के भावी ाीवन पर िंता व्यक्त करती है कि माँ है ाब तक दूसरा विवाह कर लो क्योंकि माँ ाब तक है घर कि देहरी बेटी के लिए बनी रहती है। बाद का कोई भरोसा नहीं और अंकिता को िंतनपरक भाषा में सम ाती है कि-"होनी क गटई का फंदा बनाय के न पहिने रहव... तुम कोहुक पसंद कई लेओ, बिट्टी। ाात-बिरादरी ही म कौन लपकौरे धरे है? फिर कबै तक महतारी-बाप ि ायत है... अऊर अब तो महतारी-ही-महतारी ब ाी है।"[275] पुरुषों की अवमानना पर अंकिता तिलक की उपेक्षा करती हुई कहती है-"यहाँ आपकी नैतिकता की ठेकेदारी इसलिए ाल रही है, मि.तिलक कि कोई नहले का दहला मौ ाूद नहीं है... घोर अनैतिक है... आप सामा ाक मर्यादाओं का उल्लंघन कर रहे हैं... यह और कुछ नहीं, पुरुष की बीमार मानसिकता ही है, ि ासकी विरासत अब भी आप ौसे ओछी मनोवृत्ति वाले पुरुष ो रहे हैं और मौकापाते ही दूसरों पर उलटी करने लगते हैं।"[276] इस संदर्भ में िंता व्यक्त की गई है कि

---

[275] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.20
[276] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.54

स्त्री पर पुरुष मनमाने ंग से उनकी अनाधिकार भावनाओं को खुले आम उड़ा सकता है। स्त्री की समस्या को सबके बी ा हंसी उड़ा सकता है।

स्त्री का अत्यधिक आधुनिक बनना भी िंता का विषय है। स्त्री आधुनिक वि ारधारा के ालते स्वयं अपने आप को धोका दे रही है और अपने आपको ान-बू ाकर मगरम छों के हवाले कर रही है। पुरुष उसे क्या दे रहा है, वह किन ी ों की हकदार है-यह कटोरा लेकर भिक्षाप्त से नहीं प्राप्त होगा। उसे सबसे पहले अपने भीतर की कुंठाओं से मुक्त होना है। ... दृष्टि परिमार् ित करनी है-यानी सेक्स से पवित्र-अपवित्र होने की भावना से स्वयं मुक्त होना है। तभी केवल तभी वह समा ा में मनुष्य की तरह ीवित रह सकती है-बराबरी परा। आखिर इसी समा ा में पुरुष तो व र्निाहीन ीवन ीकर भी कभी बिसूरता नहीं कि वह नष्ट हो गया। किसी को मुँह दिखाने के लायक नहीं रहा-समा ा में अब उसका कोई स्थान नहीं। स्त्री क्यों नहीं मुक्त होती इन फरेबी मर्यादाओं से? िस दिन वह कुंठाओं से मुक्त होगी, उसके सारे कष्ट कट ाएंगे। वह नए आत्मविश्वास से परिपूर्ण होगी। निर्भीक वि ारण कर सकेगी। यह हौवा ाब उसके मन-मस्तिष्क से दूर हो ाएगा, पुरुष के हाथों से वे सारे काड्सी निकल ाएंगे, िनके बूते पर वह स्त्री को घर,खेत, खलिहान, गली, मोहल्ले, स्कूल, दफ्तर अथवा समा ा में दबो ाने को उद्दत रहता है। ीवन के हर क्षेत्र में उसे दोयम द र्े की मानसिकता में िलाया है, बस इतना होने की भयंकर ारूरत है, तुम पाओगी पुरुष अपनी औकात पर पहुँ ा गया है।"[277] स्त्री की व्यवस्थं पर ि त्रा मुद्गल ने अंकित के माध्यम से िंतनपरक भाषा का प्रयोग किया है। आगे वह कहती है-"स्त्री के अस्तित्व की तलाश तब तक पूरी नहीं होगी नीता, ाब तक वह वर्गों में बंटकर, स्वार्थों और सुविधाओं में उल ाी, विभा ाित होकर ाीती रहेगी।"[278]

---

[277] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.126
[278] एक ामीन अपनी, ि त्रा मुद्गल-पृ.128

स्त्री आधुनिक वि ारधारा रखे पर स्त्री होने की नियति को सम ो। अस्तित्व बनाए, न कि पुरुष की होड़ में स्वयं की पह ान को खत्म कर दे। समा । में लड़कियों की स्थिति पर अंकिता सो ाती है कि लड़की को समा । में परिवार में पराया धन न मानकर, उसे अपना कर्तव्य सम ा कर ालते हैं। "लड़की समा । में इसीलिए उपेक्षित, निरीह रही है, क्योंकि अपने घर में वह मात्र कर्तव्य होती है- कर्तव्य से उऋण हो उसे पराया मान लिया ाता है... मगर ीवन-संघर्ष में आत्मविदग्ध होकर भी मैं इसलिए ब ा गई, क्योंकि अम्मा ने... इस घर ने मु ो कभी कर्तव्य से उऋण नहीं सम ा... हर उस लड़की का आत्मबल प्रखर होता है, िसे मायकेवाले पराया नहीं मान लेते, लेकिन आ ा..."[279] सामा िक सुरक्षा की परिभाषा है-"आत्मनिर्भरता। स्त्री आत्मनिर्भर होती तो आ ा सुरक्षा की परिभाषा उसके हिस्से में कुछ और ही होती। ... आत्मनिर्भर होकर ही तो आत्मसम्मान की रक्षा हो सकती है।"[280]

आगे वह िंता व्यक्त करती है कि स्त्री अपने मन को महत्व देना ाहिए, लेकिन मर्द बन कर नहीं, मर्द बनकर वह समानता अ ित नहीं करती। बल्कि उल्टे अनैतिक, अमानवीय, दुरा ारण और निरंकुशताएँ ोलती है ो उसकी आत्मरक्षा तथा आत्मनिर्भरता को ठेस पहुं ाते हैं। इन्हीं उ छृंखलताओं और अनुशासनहीनता की ाह से उसे कष्ट औश्र न्ष्ट ही भोगना पड़ता है।"[281] स्त्री को स्त्री बनकर ही समानता अ ित करनी होगी। स्त्रीत्व के गुणों को बरकरार रखते हुए। " ेतना की रूरत हे... स्त्री की स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं... रू ियों, व िनाओं, पुरुष की पिपासा से मुक्ति ाहिए अपनी भावनाओं, मान्यताओं को

[279] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.182
[280] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.201
[281] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.214

ीने के लिए मनोद्वंद्व से मंडित होना होगा।"[282] ीवन-मूल्यों को नि ी तौर पर ध्वस्त करना आसान हे, मगर उन्हें संशोधन करना ुनौती-भरा संघर्ष।"[283]

आधुनिक समा ा की स्त्रियाँ किस गहरे गर्त में ा रही हैं उस पर िंता व्यक्त की है। विज्ञापन ागत की ाका ौंध में अपने 'स्व' को मिटाई आधुनिकाओं की परिस्थिति पर िंतन व्यक्त है कि उन्हें अपने स्त्रित्व की रक्षा करते हुए व नाहीन समा ा में अपने आपको ब ााना होगा। पुरुष को हाथ का ून ूना बन कर ब ाते रहने के ब ााए उन्हें अपनी रक्षा करनी होगी।

'कठगुलाब' में अकेली स्त्री की समस्याओं पर िंतन हुआ है। किस प्रकार माँ-बाप न रहने पर लड़की स्मिता को सामा िक, पारिवारिक शोषणों का शिकार होना पड़ता है। उसकी मानसिकता पर ठेस पहुँ ाती है। वह अपनी कुंठाओं, व नाओं में ीती आत्मग्लानि महसूस करती है। अपनी प ़ाई एम.एस.सी. होम साइंस पूरा करने के लिए आर्थिक तंगी को महसूस करती है। आत्मनिर्भर होना ाहती है। मर्दों की दुनिया में रहने के लिए होम साइंस नहीं, कराटे की आवश्यकता है। "किसी की दया मत स्वीकारो, अपने पर भरोसा रखा, केवल अपने पर।"[284]

बलात्कार होने पर स्मिता अपराधबोध महसूस नहीं करती और सो ाती है- "मैं खुद को दूषित, पापी क्यों नहीं मानती? खुदकुशी करने को मेरा ामीन मु े क्यों नहीं उकसाता? मेरा मन मु े धिक्कारता था तो सिर्फ इसलिए कि मैंने प्रतिशोध नहीं लिया। भगोड़ों की तरह पलायन क्यों किया? पर क्या एक बेहतर िंगदी ीने का ख्याल देखना, बु ादिली है? मैं खेद को दोषी मानकर प्रायश्ि ात करना नहीं ाहती।"[285] ो मैंने किया नहीं उसके लिए मैं दोषी कैसे हो गई। आत्म-धिक्कार को मैंने इतना साधा कि रोशनी के डर से कुछ मुक्त पा ली।

---

[282] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.215
[283] एक ामीन अपनी, ित्रा मुद्गल-पृ.216
[284] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.20
[285] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.34

मारियान ाानती थी कि हर औरत एक पूरे समय और समा ा का प्रतिनिधित्व करती है और हर औरत, औरों से कुछ अलग, एक विशिष्ट प्राणी है। ाहे वह कितनी अपूर्ण और मामूली क्यों न हो। अपूर्ण है तभी तो इंसान है, अलग है विशिष्ट है। एक व्यक्ति है ाो समा ा को ान्म देती है।"[286] उसे सृष्टि का निर्माता बनना है ना कि मर्द बनना है। औरत होकर वह दर्द बांटना और दर्द कम करना ाहती है। औरत, औरत के साथ अन्याय क्यों करती है, वह सो ा रही थी, क्या उसके मूल में पुरुष ईर्ष्या नहीं रहती... वह पुरुष होना ाहती है, इसलिए, समर्थ होते ही, दूसरी स्त्रियों पर अपने आधार के पौरुष का रौब ामाने लगती है। स्व का न ाानने वाली स्त्रियाँ मर्द बनना ाहती हैं। वही उसकी महत आकांक्षा होती है तभी तो वह बराबरी के हक की माँग करती है तो पुरुष से। आ ादी की गुहार म ाती है तो मर्द से। समा ा, इतिहास और मानव- ाति की सड़ी-गली, युगों से ाली आ रही मान्यताओं से नहीं। पर मारियान? वह क्या ाहती थी। मैं मर्द नहीं स कि होना ाहती हूँ। एक बार अपना साव छिनका ाुकी, अब नहीं छीनने दूँगी। अक्षरों की उस नयी दुनिया में, मैं, मु ो, अपने खुद को, कितनी-कितनी औरतों को दुबारा ान्म देना ाहती हूँ। मारियान और स्मिता स्त्री व्यवस्था की स्थिति के बारे में ि ांतन व्यक्त कर रही है।

नर्मदा के माध्यम से निम्न स्तर की स्त्री की समस्याओं का ि ांतन किया गया है। ाहाँ निम्न स्तर की स्त्रियाँ ाौका बर्तन करके फैक्टरियो में म ादूरी करके, अपना अपने परि ानों का पोषण करती हैं। ये स्त्रियाँ मालिकों की, तथा परिवार वालों के शोषण से त्रस्त रहती हैं। काम पर मालिकों की उपेक्षा सहना, उत्पीड़न सहना, घर पर परिवार के पुरुषों के पाँव की ाूती बन कर रहना। शारीरिक एवं मानसिक रूप से इन स्त्रियों का शोषण किया ाता है। नर्मदा भी ाूड़ी के कारखाने में काम करके अपना एवं छोटे भाई तथा बहन ाी ाा, बहन के ब ाों की परवरिश करती है। इस पर भी ाी ाा उसकी उपेक्षा करता है। अपने सास-ससुर को सतता

[286] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.82

है। पुरुष होने का अभिमान ाताते हुए कहता है-"मानो तो पूत नहीं तो पाप है तो मरद ात ना। प ़-लिख कर कमाई करेगा तो हमीं को खिलाएगा।"[287] इस पर नर्मदा िंता करती हे कि-"दोनों बहनें ो कमाई कर रही थीं उससे भी मरद ात का ही पेट भर रहा था। ी ा का भकोस कर कहाँ ी रहे थे वे लोग। तीनों तो अपनी कमाई का खा रहे थे। बल्कि उसी के भरोसे, ी ा के मरद ब ो भी पल-पुस रहे थे।"[288] अकेली स्त्री अपने ीवन में एक ब ो की कल्पना करती ळै। इस उपन्यास के सभी पात्र 'एक ब ो' की अभिलाषा रखते हैं। ीवन ीने के लिए नर्मदा भी सो ाती है।"एक बालक हो ाता तो आ ा अपने कहने को कोई होता। दुनिया से न डरती मैं, इसी कुठरिया में छाती ठोककर पाल पोस लेती। और फिर आगे सो ाती है-औरत को कम ोर ब ो बनावे हैं। मेरे ब ो होते, तो मैं इस कमीने को कभी ना छोड़ पाती।"[289]

असीमा, नर्मदा के कहे गये वाक्यों पर सो ाती है-"अगर मर्द-औरत के बी ा का रिश्ता शोषक-शोषित का रिश्ता है, तो क्या उसका विकल्प लैं बिथनि म है?.. क्या लैं बियन के मन में ब ा ानने की इ छा नहीं होती? क्या औरत मर्द से सिर्फ इसलिए आकर्षित होता है, क्योंकि वह उसे ब ा दे सकता है? अगर औरत मर्द के बिना, स्पर्म दान द्वारा, ब ा पैदा कर सके तो क्या औरत-मर्द के बी ा का आकर्षण समाप्त हो ाएगा? इस प्रकार के प्रश्नों का समाधान शायद सामान्यकृत नहीं है।"[290] असीमा, नर्मदा, नमिता, स्मिता, मारियान, विपिन सभी स्त्री के तथ्यों को लेकर िंतित एवं िंतनपरक भाषा का प्रयोग करते हैं।

---

[287] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.135
[288] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.139
[289] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.190
[290] कठगुलाब, मृदुला गर्ग-पृ.190

‘माई’ उपन्यास में ब े अपनी माँ के व्यक्तित्व के बारे में ि ंतित हैं। "कितने सायों तले। माई के साए के ऐन नी े। पर उसी साए के अस्तित्व से ये बेखबर।"[291]

वे माँ को पुरनी परिपाटी से निकालने का प्रयत्न करते हैं। पर असफल हो ाते हैं। पुराने रीति-रिवा ा, ारदीवारी में फंसी स्त्री की छटपटाहट, पर्दा प्रथा तथा पी ी-दर-पी ी ालती आ रही स्त्री की मानसिकता, आंतरिक द्वंद्व, स्त्री नियतियों के ालते ‘र ो’ के ब े सुनैना और सुबोध माँ के घर काम ो वो ुकके करती है उस पर ि ंता करते हैं-"धोना, पीसना, बेलना, सेंकना... दादा-दादी-बापू की आज्ञाकारी बहू ो उनके किसी भी संदेश की अवज्ञा नहीं करती पर्दे के अंदर से हामी भर सब काम निबटाती रही। ि से देख सुनैना कहती है- ो हो सो हो पर पर्दा हम नहीं करेंगे, नहीं करेंगे।"[292] पी ी-दर-पी ी स्त्री पुरुष के शोषण का शिकार होते आयी है। इसका अपवाद दादी भी है। इसलिए माई ‘दादी’ का हर कहा मानती है। क्योंकि वे दादी की कुंठा, संत्रास, द्वंद्व से परि ित है। इस पर सुनैना सो ती है-"माई ने कहा था दादी और उसकी ात एक है, हम ात को वह ठुकरा नहीं सकती। और मैं अपने रूप में उन दोनों की छवि पाकर एक अ ीब-सी कम ोरी महसूस करती हूँ। कोस नहीं पाती उन्हें ि नकी शक्ल-सूरत मेरे ेहरे और बदन पर ालमती है।"[293] "‘माई’ की र ो किं ित भिन्न है, माई अधिक समकालीन और आधुनिक है वह ‘हम ात’ होने के नाते हाँ अपनी सास की गलतियों को माफ करती है वहीं अपनी बेटी के लिए शिक्षा से सह ीवन तक के पतली गली से रास्ते खोलती है।"[294] सुनैना त्याग के महिमामंडन के बहाने होनेवाले शोषण की स ाई ानती है, उस शोषण से माई को भी आज़ाद करना ाहती है। सामा िक व्यवस्था में स्त्री पर हो रहे षडयंत्र की वास्तविकता को वह

---

[291] माई, गीतां ली श्री-पृ.17

[292] माई, गीतां ली श्री-पृ.16

[293] माई, गीतां ली श्री-पृ.21

[294] स्त्री ि ंतन की ुनौतियाँ, रेखा कस्तवार-पृ.172

अ छी तरह ाानती है। परिवेश, व्यवस्था, परंपरा उसे भी इसी राह में केला ााहता है। पर सुनैना 'माई' ैसी बनना नहीं ााहती। "एक निरीह, कम ोर, प्रताड़ित बे ारी, िसने अपने अंदर से अपना अलग हर कुछ निकलाके रख दिया है और खुली और खाली हो गई है। ाहे दूसरे उसमें ो ाहें भरें।"[295] उसने खुद को इतना दुर्बल बना रखा है। असली लड़ाई तो उन्हीं से करनी है... असल अपराध उसी का है... ुल्म सहनेवाला ुल्मी बनाता है। ाए लड़े खुद अब अपनी लड़ाई।"[296] सुनैना ने नई नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में 'नई स्त्री' के अपने व्यक्तित्व अपनी अस्मिता को पह ाान देने के प्रयत्न में ि ंतन व्यक्त किया है। स्त्री की अस्मिता की खो ा के लिए ि ंतनपरक भाषा का प्रयोग अपनी सलीबें में ाति की विडंबना पर, बलात्कार पर, नौकरीपेशा स्त्री के ीवन पर, अकेली स्त्री के छटपटाहट पर, अधिक उम्र की स्त्री पर, माँ की ि ंता बेटी के लिए, दहे ा की समस्या पर नमिता सिंह ने ि ंतन किया है। अकेले नौकरी करते हुए अकेलेपन की समस्या से ू ा रही नीलिमा सो ाती है-"कॉले ा हॉस्टल में रहनेवाली अकेली औरत... तिस पर शादीशुदा। ... पति का कोई पता नहीं... आदमियों के मुँह में लार पैदा करने के लिए इतना परि ाय तो बहुत है।"[297] शाम होने पर यों- यों अंधेरा गहराता, एक अ ीब मनहूसियत पूरे वातावरण में छा ाती।

दहे ा की समस्या के कारण अनेक नौकरीपेशा स्त्रियाँ कुवारी ही रह ाती है। ब ़ती उम्र के कारण न ाहते हुए भी उपेक्षा की पात्र बन ाती है। इस पर रत्ना, नीलिमा को कहती है कि ये स्त्रियाँ प ़ी लिखी है क्यों ना इंटरकास्ट विवाह कर ले। 'दहे ा' नहीं देंगे न... ये औरतें अपने खोल से बाहर आने की हिम्मत क्यों नहीं करती। अरे प ़ी-लिखी हो नौकरी करती हो। अपनी म ीं से शादी

[295] माई, गीतां ाली श्री-पृ.126
[296] माई, गीतां ाली श्री-पृ.128
[297] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.46

करो। क्या धरा है ात-पाँत में। नीलिमा कहती है कि सारी प्रॉब्लम तो दहे ा की है, ो ब .ती ा रही है। बीमारी है यह भयंकर।"[298]

ाति की समस्या पर सुमित्रा देवी अपनी बेटी नीलिमा सम ाती है ो ाति के कारण प.े-लिखे, सम ादार, उससे प्यार करने वाले इशु को छोड़ आती है। उसे सम ाते हुए ि ंता व्यक्त करती है-"ईशु के पास पद है सम्मान है उसके मन में तुम्हारे लिए ो मान है, उसकी तुमने कोई परवाह नहीं की। एक ि ंदगी-सिर्फ एक ि ंदगी मिलती है मानुस ात को ीने े लिए। उसे भी कोई ाति-पाँत, धरम-बेधरम, छोटा-बड़ा के क्कर में गु ार दे और सारी ि ंदगी रीती रह ाए, इसमें क्या अकलमंदी है। तुम तो बहुत प.ी-लिखी सम ादार हो बेटी। बड़े-बड़े लोगों, विद्वानों के बी ा उठना-बैठना है तुम्हारा।"[299] किस खानदान की बात करती हो शराबी, ुआरी और ऐयाशों के खानदान की? हाँ औरतें उस हवेली के किवाड़, फर्नी ार, बर्तन, ेवर और कालीनों की तरह एक बे ान हिस्सा बन कर रह ाती थीं।"[300] "क्या था हमारे पास मामूली-सी ामीन की काश्त-उसके पीदे भी मु ा औरत ात का खटना। रही एक हवेली, तो उस खंडहर से मै क्या देती तुम्हें। एक प.ा-लिखा कलक्टर पति कहाँ मिल ाता तुम्हें। कहाँ से लाती मैं आ ा के दस लाख... पंद्रह लाख।"[301] सुमित्रा देवी ने अकेली स्त्री की समस्या तथा पारंपरिक स्त्री की व्यवस्था, बेटी के भावी ीवन पर ि ंतापरक भाषा में बेटी को आ ा की स ाई सम ाती है।

विवे य उपन्यासों में लेखिकाओं ने पात्रों के माध्यम से स्त्री की पारंपरिक स्थिति पर, सामाि क व्यवस्था में स्त्री के स्थान पर तथा स्त्री की अस्मिता, अस्तित्व, 'स्व' की पह ान पर ि ंतनपरक भाषा का प्रयोग पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। लेखिकाओं की ि ंता स्त्री-पक्ष में निहित दृष्टिगत होती है।

---

[298] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.23
[299] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.219
[300] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.220
[301] अपनी सलीबें, नमिता सिंह-पृ.221

निष्कर्ष

अंतिम दशक के उपन्यासों में भाषा की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नये प्रयोग, नया सृ ान तथा प्रयोगधर्मिता की नवीन प्रस्तुति भाषा के माध्यम से दर्शायी है।

भाषा समा ा के वि ाार-विनिमय का साधन है तथा लेखिकाओं ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भाषा को माध्यम बनाया है।

बोल ााल की भाषा का प्रयोग लेखिकाओं ने परिवेश ान्म एवं कथावस्तु को आगे ब. ाने के लिए प्रयोग किया है। स्पष्ट है कि गाँव के लोगों की, सामान्य ान की, अशिक्षित व्यक्तियों तथा स्त्रियाँ सामान्य रूप से बात ाीत करते समय बोल ााल के वाक्यों, शब्दों का प्रयोग करती हैं। इनके आपसी संवादों, संदर्भों में हम बोल ााल की ालक देख सकते हैं ाो सरल, सरस, प्रवाहमयी हो ााती है।

विवे ाय उपन्यासों में प्रसंगानुकूल भाषा में ाित्रात्मकता के दर्शन भी होते हैं। किसी संदर्भ का ाित्रण करते समय लेखिकाएँ वातावरण, स्थिति, परिवेश, कुछ घटित उदाहरणों को प्रस्तुत करती है ािनको प. ाने पर पाठक के मन में स्थिति, परिवेश का बोध हो ााता है। ऐसी भाषा रूपों को ाित्रात्मक भाषा कहते हैं। विषयानुसार अनुभूतियों की अभिव्यक्ति लेखिकाओं ने ाित्रात्मक भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

भावों की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने प्रतीक, बिंब, सोंकतिक भाषा का प्रयोग किया है। कलिकथाःवाया बाइपास, हमारा शहर उस बरस, आवां, ााक, कठगुलाब आदि उपन्यासों में प्रतीकात्मकता को सुंदर रूप में ाला है। यह समय ाक्र का प्रतीक है ााक, आवां, एक ालती भट्टी का प्रतीक है। कठगुलाब स्त्री ााति की उभरती वेदना का प्रतीक है। स्पष्ट है कि ये प्रतीक आ ा की स्थिति, युग धर्म, ाीवन में संघर्षरत स्त्री का प्रयत्नशील रूप उ ाागर करते हैं। लेखिकाओं ने बिंबों को आस-पास की प्रकृति तथा ाीवन संदर्भों के भोगे यथार्थ

से ग्रहण किया है। समस्याओं के समाधान के लिए अनेक संकेतों को प्रस्तुत किया है। लेखिकाओं ने अपने भाव, वि ार को सांकेतिक प्रयो ान द्वारा दर्शाया है।

स्त्री-विमर्श स्त्री केंद्रित विषय है। लेखिकाओं ने स्त्री की परिस्थिति, सामा िक व्यवस्था में स्त्री का स्थान, पारंपरिकता की आड़ में स्त्री पर शोषण, अत्या ार, आडंबरों का ित्रण, ेतनात्मक भाषा एवं िंतनपरक भाषा में उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किये हैं। ेतनात्मक भाषा के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व का बोध कराया गया है। स्त्री की सदियों से ाली आ रही स्थिति और वर्तमान में स्त्री की बदलती सो ा पर िंता व्यक्त की है। ये स्त्री को स्त्री बने रहने तथा अपनी स्व की पह ान को बनाने के विषय में िंता की है।

* * *

उपसंहार

समा ा में स्त्रियों की स्थिति समा ा की प्रगति का सू ाक मानी ाती है। पर विडंबना यह है कि आ ा भी स्त्री शोषणों का शिकार है। सामा िाक व्यवस्था तथा पारिवारिक परिवेश में अनेक अन्याय, अत्या ाारों को, मानसिक एवं शारीरिक उत्पीड़न को, भ्रष्टा ाार, अवमानना को सह रही है। हमारे देश में स्त्रियों को प्रेम, बलिदान तथा विनम्रता का प्रतीक मानते हैं। पर हमेशा शेषण से दमित, पीड़ित रखते हैं। स्त्री-विमर्श पर ार्ि ति बहसों, स्त्री समस्याओं में स्त्री को केंद्र का बिंदु मानते हैं। स्त्री-विमर्शे के कई दृष्टिकोणों में स्त्री की स्थिति, प्रश्न, व्यथा-कथा का वर्णन किया गया है ैसे पाश ाात्य, भारतीय, साहित्यिक तथा हिंदी उपन्यासों में स्त्री की स्थिति पर व्याख्या की गई है। इन दृष्टिकोणों में स्त्री संबंधी लडाइयों ने कई वाद-विवाद, सिद्धांत का रूप ग्रहण किया है। इन सिद्धांतों ने समय-समय पर विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को बदलने का प्रयास किया है। ि ितना प्रयास किया ाता है उतने ही गहरे गर्त में समस्याओं को उल ाा पाया ाता है। क्योंकि पुरानी सभ्यता, संस्कृति, सड़ी गली रू ि.ग्रस्त मान्यताएँ, पुरुष प्रधान रू ि. सत्ता, पितृसत्तात्मक बाधाएँ सामने आ खडी होती हैं। ि ान पर आंदोलन किये ाते हैं, पर समस्या का समाधान होने के लिए सिदयाँ बदल ाती हैं। समय के साथ ही स्त्री-विमर्श बदलता है। उसकी परिभाषा, संदर्भ, वि ाार-विमर्श और कार्यक्षेत्र में भी परिस्थिति के अनुकूल ालना पड़ता है। ये विषय ऐतिहासिक संदर्भ और सांस्कृतिक तथ्यों की वास्तविकता पर आधारित होते हैं।

स्त्री-विमर्श पर वि ाार करने पर कई प्रश्न मन में उठने लगते हैं कि स्त्री ान्म से ही दमित शोषित, उत्पीड़न तथा प्रताड़नाओं का पट्टा अपने गले में बांध कर आती है या समा ा, परंपरा, परिवार, स्त्री संहिताएँ, सारी विडंबनाएँ, विसंगतियों के तथ्यों को विरासत में प्रदान करता है। इन विषमताओं को उसे

पूर्व ों की संपत्ति, धरोहर के रूप में प्रदान की ाती है। िसे वह शताब्दी-दर-शताब्दी, दशक-दर-दशक स्त्री संहिताओं, नियमों को निभाती आयी है।

स्त्री-विमर्श को किसी एक सिद्धांत, वाद की परिसीमा में रखा नहीं ा सकता। क्योंकि ब स्त्री की समानता और अधिकार का वि ार आता है तो कई सिद्धांत, कई वाद अपना रूप ग्रहण कर लेते हैं। इन सिद्धांतों में स्त्री की स्थिति और उसकी मांगों को उठाया ाता है। समानता के लिए स्त्रियों के संघर्ष का इतिहास अतीत में स्त्रियों की स्थिति, व्यथा-कथा का प्रमाण है। इस संदर्भ में देखा ाए तो स्त्रियों के समक्ष आ रही समस्याओं को सुल ाने के लिए स्त्री संबंधी ऐतिहासिक दृष्टिकोण की समीक्षा करनी होगी।

आ स्त्री ीवन को केंद्र में रखकर हिंदी साहित्य में अनेक स्त्री लेखिकाओं ने साहित्य-सृ न में अपना योगदान दिया है। स्त्री-लेखिकाओं का लेखन साहित्य की कोटि में होने लगा है। स्त्री द्वारा लिखी गयी र नाओं का दायरा साहित्य में विस्तृत होकर समग्र प्रयोगधर्मिता को अपने आप में समेटता ा रहा है। लेखिकाओं ने स्त्री के परिप्रेक्ष्य में अपने काल की परिस्थितियों का ित्रण अपने साहित्य में किया है।

अंतिम दशक की लेखिकाओं ने स्त्री के वास्तविक रूप को साकार किया है। इनके उपन्यास आ की स्त्री को प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देनेवाले उपन्यास हैं। आ की स्त्री शिक्षित, नौकरीपेशा, सभी संदर्भों में पारंगत है फिर भी पुरुष सत्ता उसकी प्रगति की राह में रोड़े अटकाता रहता है। इस प्रकार के वास्तविक संदर्भों को लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में ित्रित कर साहस का कार्य किया है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक की स्त्री लेखिकाओं के उपन्यास स्त्री-विमर्श को केंद्र में रखकर स्त्री की व्यथा कथा का स ीव ित्रण कर स्त्री संबंधी ीवन संघर्ष की विकृतियों एवं विषमताओं का ित्रण कर संभावनाओं का प्रयास करती है।

पाश ात्य दृष्टिकोण में देखा ाए तो स्त्री की स्थिति प्रा ीन काल से ही दमित, कुंठित थी। समानता, स्वतंत्रता के अधिकारों से वं ित थी। स्त्री में बुद्धि,

विवेक की कोई उपेक्षा नहीं की ााती थी। स्त्री को पुरुष के पैरों की ूती ही सम ाा ााता था। इनके अनुसार स्त्री मानव न होकर केवल वस्तु मात्र थी ि ासका ैसा ााहे इस्तेमाल किया ाा सके। प्रा ीन काल की स्थितियों में स्त्री के रूप की ा र्ाा तथा इतिहास में उसकी स्थितियों का वर्णन हुआ है कि… कई प्राकृतिक कारणों से स्त्रियाँ पुरुषों से अलग है। उनकी बुद्धि, स्वभाव, वि ाार पुरुष से कम है। इस प्रकार के अमानवीय व्यवहार से स ोत होकर पाश ाात्य देशों की स्त्रियों ने सदियों से होते आये शोषण के खिलाफ आवाज़ समय-समय पर उठाई है। उसने कई संघर्ष किये हैं। स्त्री-मुक्ति, समानता के लिए आंदोलन किये हैं। इन परिस्थितियों के ालते कई पाश ाात्य देशों में कई प्रकार के वाद, सिद्धांतों का ान्म हुआ। ैसे बु र्ुआ, समा ावाद, उदारवाद, उग्रवाद, विद्रोह, स्त्रीवादी सिद्धांतों ने समय-समय पर स्त्री की स्थिति पर वि ाार-विमर्श किया गया।

बु र्ुआ ःदृष्टिकोण के अंतर्गत नागरिक अधिकारों की घोषणा के साथ स्त्री पुरुष के बी ा सामाि ाक, रा ानीतिक समानता की मांग को केंद्र में रख कर स्त्री की समान मानवीय अधिकार और परंपरागत ाले आ रहे नैतिक मूल्यों को ाुनौतियाँ दी गयी हैं।

समा ावादी दृष्टिकोण में स्त्री की सामाि ाकता की मांग को उठा कर स्त्री से ही समा ा का स्वास्थ्य और स्वतंत्रता निर्भर की घोषणा कर, स्त्री की सामाि ाक व्यवस्था को सुधारने का प्रयत्न किया गया है।

उदारवादी दृष्टिकोण में स्त्री की कानूनी समानता, रा ानैतिक, आर्थिक, सामाि ाक अधिकारों को केंद्र में रखकर स्त्री-मुक्ति के वि ाार को ान्म दिया है। वहीं उग्रवादी दृष्टिकोण में पुनरुत्थान, पुनरुत्पादन की अनुभव शक्ति को केंद्र में रखकर पुनरुत्पादित लैंगिकता के विषय में वि ाार-विमर्श किया गया है।

विद्रोही दृष्टिकोण में स्त्री के उत्पीड़न के औप ाारिक कानूनी अधिकारों पर अमल लाने की बात को उठाया गया है। ब्लॉकवादी दृष्टि में स्त्रियों के दोहरे शोषणों के मानदंडों को उ ाागर किया गया है। तीसरी दुनिया का स्त्रीवाद में

साम्रा यवाद, नवउपनिवेशवाद व्यवस्था, उद्योगीकरण व्यवस्था तथा पूं ीवाद के विरुद्ध एक राष्ट्रीय ानवादी क्रांति के साथ स्त्री-मुक्ति आंदोलन के तथ्यों को दर्शाया गया है। िसमें स्त्री सामा िक व्यवस्था के कारण आ ा भी मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही है। वास्तविक परिस्थितियों के कारण स्त्री की स्थिति आ ा भी ऐसी ही बनी हुई है। ये सिद्धांत समय-समय पर बदलते रहे हैं। स्त्री की व्यवस्था, उसकी स्थिति, मुक्ति मांग, अधिकारों को साहित्यिक माध्यमों से, सामा िक परिवर्तनों से उसका समाधान करने का प्रयत्न किया गया है।

भारतीय दृष्टिकोण में स्त्री का इतिहास प्रा ीन काल से गुलामी की ं ीरों में ाकड़ा नज़र आता है। भारतीय इतिहास में स्त्री को कई रूपों में विभा ात किया गया है। हर रूप में उसका आदर, सम्मान, व्यवस्था अलग है। स्त्री की स्थिति भी उसके रूप पर आधारित है। भारतीय स्त्री का रहन-सहन, रीति-रिवा ा, परिवेश, संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, नैतिक मूल्य, सामा िक व्यवस्था, पाश ात्य स्त्रियों से काफी अलग है। भारतीय स्त्रियों को कभी भी पुरुषों के खिलाफ समानता और स्वतंत्रता की लड़ाई नहीं करनी पड़ी क्योंकि भारतीय स्त्री का संघर्ष पुरुष के खिलाफ न होकर उस व्यवस्था के खिलाफ है िसे वह बदलने की कोशिश में है। भारत में स्त्री-मुक्ति सामा िक स्थिति है, कोई नारा नहीं है। भारतीय पुरुषों ने ही स्त्री को राष्ट्रीय संग्रह के साथ उसके अधिकार और स्त्री मुक्ति के संघर्ष का मार्ग दिखाया था। राष्ट्रीयवादियों ने ही स्त्रियों को प्रोत्साहित, प्रेरित किया था कि वे स्वतंत्रता संग्राम में अपना सहयोग दे।

प्रा ीन काल में स्त्री को देवी ैसा सम्मान दिया, पर रखा पारंपरिक मूल्यों के हिसाब से। माँ, पत्नी रूपी को आदर दिया वहीं अन्य स्त्री रूपों को आश्रित एवं अधीन रखा गया। पुरुष सत्ता का वि ार था कि उनके बिना स्त्रियों का कोई स्वयं का अस्तित्व नहीं है। स्त्री को गिद्द, ानवर ैसी उपमा दी गई थी। शूद्र से उसकी तुलना की गई थी। कई अपशब्दों से प्रताड़ित, अपमानित किया गया था। पुराणों

में स्त्री को संपत्ति मानकर ुए के दाव पर लगा दिया गया था, स्त्री को कम ोर, निम्न ाति, लिंग ैसे संदभों से व्याख्यायित किया गया था।

मध्यकाल में आक्रमणों के फलस्वरूप स्त्री को नयी विषम परिस्थितियों से गु ारना पड़ा। पर्दा-प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, ोहार प्रथा, सती प्रथा, अनेक ऐसी कुप्रथाओं ने न्म लिया ि सके शिकं े से आ तक की भारतीय स्त्री निकलने में असमर्थ है। शिक्षा से वं ित रखा गया, ि ससे वह अंधविश्वास, आडंबरों के ाल में फंसती ली गई। सामा िक व्यवस्था ऐसी बनी कि स्त्री को घर की ारदीवारी में दमघोंटू स्थिति में छटपटाते हुए रहना पड़ा। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक दुर्बलताओं के लते स्त्री में कुंठा, संत्रास ने न्म लिया। स्त्री का दमन पितृसत्तात्मक व्यवस्था, सामा िक वातावरण, आर्थिक परिस्थितियों के कारण आ भी परंपरागत मूल्यों में स्थित है।

आधुनिक काल में स्त्री व्यक्ति स्वतंत्रता के लाभ से लाभान्वित होकर पुरुष की दासता से बिलकुल मुक्त स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली हो गई। आधुनिक काल में भी सामंतवाद का प्र ंड तांडव यथा-तथा केंद्र में ही था। इस काल में रू ि यों की श्रृंखलाओं में कड़ी स्त्री अशिक्षित, बाल-विवाह, बेमेल विवाह, वेश्या वृत्ति ऐसी महत्वहीन सामा िक स्थितियों से ग्रस्त थी। हमारे समा में कुरीतियाँ हर वर्ग की स्त्री में समाहित हैं। इन आडंबर को खत्म करने के लिए नव ागरण काल का उदय हुआ। स्त्री समता और स्त्री-मुक्ति, स्त्री-शिक्षा पर ध्यान दिया।

स्वतंत्रता पूर्व की स्त्री ारदीवारी को लाँघ नहीं पायी क्योंकि परंपरागत मूल्य, पितृसत्तात्मक नैतिकता उसके आड़े आते गये। सुशिक्षित पुरुष सत्ता ने आ भी स्त्री को अधिकारों से वं ित रखा है। आ भी स्त्री अपने परिवार, समा में कठपुतली की तरह ना रही है। स्त्री ि स परंपरा का शिकार है वह सदियों से ह ारों शाखों से बनी है ि से पुरुष के साथ स्त्री ने भी बनाया है। एक पूरी ीवनगत सामूहिक व्यवस्था ि समें स्त्री का वर्तमान भी समाहित है। स्त्री कभी भी अपने आपको अनावृत्त नहीं कर पायी क्यों समा , परिवार, सांस्कृतिक स्थिति,

पारंपरिक नैतिकता, सामा िक परिवेश यथा-तथा बना पड़ा रहा है। सभ्यता का स्तर ि ातना ऊँ ा होता गया स्त्री पर उतनी पाबंदी, उतना ही अंकुश लगता गया, ि ासमें उसकी ािवन शैली अधिक से अधिक कठोर होती गयी।

वास्तविक परिस्थितियों के इस दृष्टिकोण में समा ा में स्त्रियों और उसकी वास्तविकताओं, उसकी परिस्थिति तथा उसके मुक्ति संघर्षों पर आंदोलन का वि ार किया ि ासमें उसके देवी और ांडी के रूप से लेकर अबला, असहाय ािवन की वास्तविक दृष्टिकोण के तत्वों को प्रा ीनकाल में, मध्यकाल में, आधुनिक काल में तथा स्वतंत्रतापूर्व, स्वतंत्रता के बाद तथा इक्कीसवीं सदी तक के बदलते परिवेश में स्त्री की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का वि ार-विमर्श स्त्री के सामा िक ावीन के उतार- ा.ाव, उसके शोषण, अत्या ार, दमन की वास्तविकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय स्त्री मुक्ति की मांग प्रा ीन समय से लेकर आ ा तक की यात्रा अत्यधिक संघर्षमयी रही है। शिक्षित हो स्त्री अपनी ारूरतों के प्रति ाागरूक हुई है। ाागृति और पूर्ण रूपेण ने उसे आगे ब.ाया है। ि ासे वह अधिक कुंठित, पीड़ित नज़र आती है। समानता की इस प्रतिस्पर्धा में स्त्री-पुरुष के पारिवारिक ािवन में अत्यधिक गहरी होती खाई नज़र आती है। ि ासे उभरना स्त्री के लिए और भी संघर्षमयी हो गया है।

साहित्यिक दृष्टिकोण में समा ा के बदलते स्वरूप, रु ायों, परिस्थितियों, प्रतिस्पर्धी व्यवस्था का ि ात्रण होता है। साहित्य की अनेक विधाओं में समा ा की प्रवृत्तियों, व्यवस्था तथा परिस्थितियों का ि ात्रण सटीक रूप से दर्शाया गया है। साहित्य में भावपक्ष की आत्मा एवं अनुभूति तथा कलापक्ष की बाह्य अभिव्यक्ति समाहित रहती है। साहित्य में उपन्यास का प्रादुर्भाव 19 वीं शताब्दी में हुआ है। ािवन के रंगमं ा पर स्त्री-पुरुष की उपस्थिति ि ास प्रकार अनिवार्य सम ाी ााती है उसी प्रकार प्रा ीनकाल से लेकर आधुनिक कालीन साहित्य में कई विधाओं में स्त्री-पुरुष का ि ात्रण समान रूप से होने लगा है। साहित्यिक दृष्टिकोण में साहित्य

की र ानाओं में स्त्री का योगदान किस प्रकार और किन-किन तथ्यों को लेकर सामने आया है उसका विवरण किया गया है।

साहित्यिक निर्माण में स्त्री लेखिकाओं का प्रा ीनकाल से ही योगदान रहा है। स्त्री ीवन की व्यथा-कथा का आंशिक मात्र में वर्णन मिलता है। लेखिकाओं ने अनुभूति और काल्पनिक धरातल पर स्त्री ीवन को इस काल में व्याख्यायित किया है। साहित्य की अधिकांश विषय वस्तु स्त्री समुदाय के यथार्थ ीवन की विशिष्टताओं के ही तथ्यों को उ ागर करती है। इन्हीं तथ्यों का वि ार प्रा ीन, मध्य, आधुनिक कालीन स्त्री लेखन में देखा ा सकता है।

प्रा ीनकाल में स्त्री शिक्षित होने के कारण साहित्य लेखन कर सकी। वे ही स्त्रियाँ साहित्य लेखन में सक्रिय रहीं ो विदुषी, ऋषिकाय थी। सामान्य ान की स्त्री केवल प्रेरणा के रूप में ही उपस्थित थी। स्वयं का सृ ान लेकर नहीं। इस काल की स्त्रियों ने लेखन किया पर स्त्री-विमर्श के तथ्यों को सही दिशा न दे पाईं। मध्यकाल में स्त्री ीवन का ह्रास दृष्टिगत होता है। उसे आक्रामक स्थिति का शिकार होना पड़ा। आधुनिक काल में स्त्री लेखन सुधार की दिशा में दिखाई देता है। इस काल में स्त्री की सामा िक, वर्तमान परिस्थितियों, विसंगतिपूर्ण वातावरण, राष्ट्रीय भावना, विद्रोह के स्वर आदि तथ्यों को लेखन का माध्यम बनाया गया है। स्त्री प्रश्नों के मानसिक, शारीरिक दृष्टिकोणों, सामा िक विषमताओं ैसे तथ्यों को लेखिकाओं ने अपनी र ानाओं में स्त्री प्रश्नों को नये ंग से व्याख्यायित किया। साहित्य सृ ान में स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री को केंद्र में कर रखा है। स्त्री के संवेदनशील रूप को उभार कर, उसके प्रश्नों के समाधान को तथ्यपरक रूप से सुल ाने का प्रयास किया गया है।

हिंदी उपन्यासों में स्त्री मान मात्र के लिए ि ात्रित होती थी। स्त्री किसी-न-किसी रूप में वर्णन का विषय रही थी। यह वास्तविकता के धरातल से कोसों दूर नज़र आती थी। उपन्यासों में स्त्री की परिस्थिति हमेशा से समयानुकूल रही है। युगीन परिस्थितियों के अनुसार ही उपन्यासों ने स्त्री ीवन के तथ्य और सत्य को

ि ात्रित किया है। स्त्री के तथ्य और सत्य का विवरण हिंदी उपन्यासों के दृष्टिकोण में प्रा ीन, मध्य, आधुनिक काल के उपन्यासों में ा ार्ा की गई है। अध्ययन की दृष्टि से प्रेम ंदपूर्व, प्रेम ंद युग तथा प्रेम ंदोत्तर काल के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श का विवे ान किया गया है।

प्रेम ंदपूर्व स्त्री को अशिक्षित, गंवार, पारंपरिक मूल्यों में ीनेवाली स्त्री के रूप में ि ात्रित किया है। अशिक्षित, गंवार होने के कारण वह परंपरागत मूल्यों, रू ि-नीतियों, कुप्रथाओं, आडंबरों तथा अंधविश्वासों में अधिक ध्यान देती थी। स्त्री का मानवीयता से कोई सरोकार नहीं था। यथार्थ से कोसों दूर थी। स्त्री रूप इन उपन्यासों में प्रेयसी, सुंदरी, मृदुभाषिणी, वेश्या, रूप में ि ात्रित हुआ था। स्त्री का सामग्री मात्र सनातनी रूप ही इन उपन्यासों में दृष्टिगत होता है।

प्रेम ंदकालीन उपन्यासों में स्त्री-विमर्श विषयक कई तथ्यों को उ ागर किया गया है। इस युग के उपन्यासकारों ने स्त्री की दशा-स्थिति तथा सामा िक विषमताओं का निवारण करने का प्रयास किया है। स्त्री की वास्तविकताओं को, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धरातल पर साहित्य में केंद्रित किया गया है। सामा िक व्यवस्था और ा रि मान्यताओं को तोड़ने का प्रयास किया गया है। स्त्री के सामा िक, पारिवारिक पक्ष के साथ आर्थिक पक्ष को भी दर्शाया गया है। पराधीनता के प्रति विद्रोह, स्त्री ागरण, सम्मिलित परिवारों का विघटन, दाम्पत्य ीवन की विषमताओं ैसे तथ्यों का ि ात्रण सह ा रूप में किया गया है।

प्रेम ंदोत्तर काल में स्त्री की विभिन्न समस्याओं के साथ विभिन्न स्वरूपों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। स्त्री के बाह्य एवं आंतरिक मानदंडों के बदलते हुए संदर्भों का, स्त्री के अस्तित्व की खो ा का, सामा िक, पारिवारिक, व्यक्तिगत धरातल पर खो ाती हुई स्त्री ि ात्रण दिखाई देता है। आधुनिक बोध के हिंदी उपन्यास में स्त्री शोषण, स्त्री ीवन के प्रश्न, उत्पीड़न समस्याओं को अपना केंद्रीय विषय बनाया है। फिर भी लेखक परंपरागत ालते

आ रहे पुरुष सत्ता के ही पक्षधर दिखाई देते हैं। घुमा-फिराकर पुरुष सत्ता का ही गुणगान दर्शाया गया है।

19 वीं सदी के अंत से ही स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री-विमर्श पर अपनी लेखनी ालाई है। स्वतंत्रता पूर्व लेखिकाओं ने उपदेशात्मक उपन्यासों की र ाना की। पर ये उपन्यास समा ा में स्त्री रूप को वैयक्तिकता प्रदान न कर सके। साठोत्तर पूर्व हिंदी उपन्यास लेखिकाओं ने सामा िक समस्याओं को उद्‌घाटित करनेवाले उपन्यास लिखे। ि ासमें स्त्री ाीविकोपा ान और अर्थोपा ान की समस्याओं को उभारा गया है। स्त्री को उसकी सही पह ाान देने में ये लेखिका असमर्थ नज़र आती हैं क्योंकि इनकी नायिका ाीविका के लिए वेश्या बनती हैं, नहीं तो आत्महत्या करती हैं। छठे दशक में यानी स्वतंत्रता के बाद वैश्या प्रवृत्ति का निवारण, आर्थिक विपन्नता, सामा िक व्यवस्था के कटु पहलुओं का ि ात्रण किया गया है। इस दशक की स्त्री ाागरूक हुई है। परिवार के दायित्वों को निष्ठा से निभाती हुई कामका ाी रूप में ि ात्रित हुई है। ाो अपने ाीवन संघर्षों को स्वाभिमान, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता के साथ निभाए हुए है। सातवें दशक में स्त्री को अपने 'स्व' का परि ाय हो गया है। शिक्षित होने पर स्त्री ाागृत हुई है। उसने मुक्ति की लहर पाश ाात्य साहित्य से अपनाई है। इस दशक में स्त्री ने शोषण के खिलाफ एक ाुट होकर अपनी आवाज़ उठाई है। स्त्री-प्रश्नों, स्त्री-मुक्ति के लिए स ाग दिखाई देती है। मध्यवर्गीय स्त्रियों के ाीवन को लेखिकाओं ने अंकित किया है। इस दशक में भी अस्तित्व रक्षा के लिए संघर्ष कर भारतीय स्त्री रूप का ही द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण लेखिकाओं ने अपनाया है। आठवें दशक की स्त्री लेखिकाओं का साहित्य ारम सीमा तक पहुँ ा गया है। स्त्री लेखन की दृष्टि से अपूर्ण है। स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री रूप की ही व्याख्या अपनी र ानाओं में अनेक दृष्टिकोणों से दर्शायी है। ाो आ ा की स्त्रीवादी ोतना का पूर्ण वहन करती हुई दिखाई देती है। नये मूल्यों, प्रश्नों को लेकर स्त्री की व्यथा-कथा का ि ात्रण हुआ है। अपने उपन्यासों में अनेक स्त्रीवादी नायिकाओं को गठा है। ाो आ ा की विषम

एवं ाटिल समस्याओं, संघर्षों, व्यथाओं, व्यक्तित्व की पह ाान के लिए संवेदनाओं के धरातल पर आधारित व्यावहारिक एवं मानवतावादी रही हैं।

अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श में स्त्री लेखिकाओं का लेखन सर्वोपरि है। इस दशक के उपन्यासों का प्रयास स्त्री के सामंतीय संस्कारों से मुक्ति और वैज्ञानिक दबाव से छुटकारा तथा इनमें फंसे उसके अस्त-व्यस्त मन को वास्तविकता का बोध कराया गया है। लेखिकाओं ने ऐतिहासिक परीक्षण तथा वर्तमान संदर्भ से स्त्री का तत्कालीन स्थिति की केवल पह ाान ही नहीं बल्कि उन्हें गंतव्य का बोध भी कराया गया है।

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के अंतर्ग आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन, मानवीय संवेदना, स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में वि ाार-विमर्श हुआ है।

अंतिम दशक के उपन्यासों में आत्मनिर्भर स्त्री की हर समस्या का ि ात्रण करने में स ाग दिखाई देती हैं। कृष्णा सोबती अम्मु के माध्यम से कहलवाती है- "स्त्री का वक्त तब सुधरेगा ाब वह अपनी ाीविका आप कमाने लगेगी।" यानी स्त्री ाब आत्मनिर्भर होगी तभी सभी समस्याओं का अंत होगा।

अंतिम दशक की स्त्री लेखिकाओं के विवे य उपन्यासों में स्वावलंबी विद्रोही नायिकाओं का ि ात्रण हुआ है। ये नायिकाएँ परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर अपने व्यक्तित्व के आधार पर नयापन प्रदर्शित करती है। बदलती हुई परिस्थितियों के प्रभाव से स्त्रियों में विद्रोही रूप दिखाई देता है। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, 'अनाम प्रसंग' की ममता, 'ऐ लड़की' की बेटी, 'कठगुलाब' की स्मिता, नमिता, मरियान, असीमा, नर्मदा, नीर ाा सभी पात्र, 'आवां' की नमिता पाण्डेय, स्मिता, गौतमी, 'एक ामीन अपनी' की अंकिता, नीता, ' ूला नट' की शीलो, 'अपनी सलीबें' की सुमित्रा, 'दिलो-दानिश' की छुन्ना बीबी, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा, कदमबाई, 'आपने-अपने कोणार्क' की कुन्नी, प्रीति, कावेरी, ' ाक' की सारंग, 'यामिनी कथा' की यामिनी, 'अपने-अपने ेहरे' की रमा, 'हमारा शहर

उस बरस' की श्रुति, 'माई' की सुनैना, सभी पात्र प्रगतिशील स्त्रियों के रूप में दर्शायी गई हैं ि न्होंने इस राह पर ालते हुए विद्रोह किया है और अपने-आपको उपेक्षाओं के कटघरे में खड़ा किया है।

विवे य उपन्यासों में समान अधिकार की समस्या विविध रूपों में ि त्रित है। माँ अपने ही बेटे-बेटियों को समान अधिकार नहीं देती। पत्नी को भी समान अधिकारों से वं ि त रहना पड़ता है। ो स्त्री प ़ी-लिखी है वह समान अधिकार के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। 'एक मीन अपनी' उपन्यास में ऐसा है कि ि समें केवल भो रा ा के परिवार में स्त्रियाँ पुरुष की बराबरी से काम करके अपने अधिकारों की प्राप्ति करती हैं। विधवा पुनर्विवाह के लिए बाधा डाली ाती है तो विधुर के लिए छूट दी ाती है। अतः स्वाभिमानी स्त्री को समा ा सहारा नहीं देता बल्कि उस पर लाँछन ही लगाता है।

विवे य उपन्यासों में स्त्री के मानवीय संवेदनाओं का ि त्रण हुआ है। स्त्री को शोषण को केंद्रित किया गया है किस प्रकार सामा ि क व्यवस्था स्त्री का दलन करती है। विवाहित स्त्री के घुटन भर ीवन को व्याख्यायित किया गया है। पति पत्नी पर अपना सा अधिकार ताना ाहता है ि सके कारण उसे शोषित ैसा ीवन ीना पड़ता है। वह अत्यधिक शोषण के कारण उसमें मानवीय संवेदना उत्पन्न होती है। उसी प्रकार ब तलाकशुदा स्त्री का दमन समा ा के साथ-साथ पुरुष प्रधान परिवार भी अनेक अत्या ार अन्याय करता है तो उसे अपना ीवन घुटन भरा लगता है। अपने इस रूप को मानवीय बनाना ाहती है। विधवा स्त्री की स्थिति आ ा भी वैसी ही है ैसे सदियों पुरानी थी। पर लेखिकाओं ने विधवा को पुनर्विवाह का संकेत अपने उपन्यासों में दिया है ि ससे उसके ीवन में अमूलाग्र परिवर्तन आए। लेखिकाएँ विधवा ीवन की घुटन भरी, उपेक्षित परिस्थितियों को उभारना ाहती है उन्हें मानवीय रूप में व्याख्यायित करना ाहती है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों को लेखिकाओं ने स्त्री सशक्तीकरण के प्रसंगों के अंतर्गत स्त्री की विशिष्टताओं

को और उनकी क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। स्त्री परिस्थिति ान्य शोषणों के खिलाफ ोतित बनकर संघर्ष करती है। 'दिलो दानिश' में पत्नी, कुटुंब, रखैल महक सामंती और नवाबी परिवेश की ोतित स्त्रियाँ हैं ो अपने-अपने अस्तित्व बोध के लिए ागरूक हैं। 'इदन्नमम' की स्त्रियाँ सामाि क व्यवस्था के खिलाफ, ग्रामीण अनीति, हड़पनीति परंपरा के खिलाफ संघर्ष कर नमानव के अन्याय, अत्या ार के खिलाफ न ागृत करती है। मंदा नसंगठन में प्रशंसनीय कार्य करती है। माफिया ठेकेदारों को ठिकाने लगवाती है। 'कठगुलाब' की स्मिता, नमिता, नर्मदा, असीमा, नीर ा सभी स ोत ागृत स्त्रियाँ हैं। ये सभी पुरुष प्रधान संस्कृति को खत्म करने का प्रयत्न करती हैं। 'छिन्नमस्ता' की प्रिया अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ती है। 'कलिकथाःवाया बाइपास' में छोटी बेटी को आधुनिक प्रगतिशील ोतित बेटी, ोतित स्त्री को वाणी देने का प्रयास करती है। ' ूला नट' की शीलो, ' ाक' की सारंग, 'अल्मा कबूतरी' की अल्मा, भूरी, 'अपने-अपने ेहरे' की रमा, रीतू, 'पीली आंधी' की सोमा सभी स्त्रियों ने पारंपरिक रू ि ग्रस्त मान्यताओं को ुनौती दी है। स्त्री संहिताओं का खंडन कर ोतित हुई हैं। अन्याय, अत्या ार, शोषण, उपेक्षा, अवमानना, पुरुष के अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह किया है। स्त्री संहिताओं की सभी मान्यताओं को दृ ता और साहस के साथ ुनौती दी है। सभी स्त्रियों में ेतना ागृत हुए हैं। अपने अधिकार, सम्मान, आत्मनिर्भरता के लिए, अपनी अस्मिता, अस्तित्वबोध के लिए, अपने स्वाभिमान के लिए। 'ऐ लड़की' की अम्मू, 'अपनी सलीबे' की सुमित्रा देवी, 'एक मीन अपनी की माँ सभी स्त्रियाँ अपनी बेटी के भावी ीवन के लिए ोतित हुई हैं। उनके भविष्य के लिए ि ंतित नज़र आती हैं।

अंतिम दशक 'छिन्नमस्ता', 'कलिकथाःवाया बाइपास', 'एक मीन अपनी', 'आओ पेपे घर ले', 'दिलो दानिश', 'यामिनी कथा', 'अपनी सलीबे', 'बेतवा बहती रही', 'अपने-अपने कोणार्क', 'अपने-अपने ेहरे', 'पीली

आँधी', ' ूला नट' आदि उपन्यासों में प्रिया की माँ, सास, छोटी माँ, इदनम्म की बऊ, कलि-कथा वाया बाइपास की बड़ी माँ, एक ामीन अपनी की अंकिता की माँ, दिलो-दानिश की कुटुंबप्यारी, अपने सलीबे की नीलिमा सभी पात्र पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नियमों को निभाती हुई पराधीनता की समस्या से गु ार रही हैं। वह परंपरामुक्त ि ात्रिया पराधीनता की ाकड़बंधी को तोड़कर नया ाीवन बिताना ााह रही है। समा ा की संहिता को तोड़ अपने अस्तित्व के लिए विद्रोह बन समा ा के नियमों का खंडन कर रही है। इदन्नमम की प्रेम परंपरा मुक्त विधवा का ि ात्रण प्रस्तुत है ि ासमें प्रेम परंपरागत वैधव्य की ाौखट को पूर्णतः नष्ट कर देती है। छिन्नमस्ता की प्रिया भी परंपरा तथा पराधीनता की समस्या से ग्रस्त है और विद्रोही बन कर पति को छोड़ देती है। ूला नट की शीलो परंपरा मुक्त स्त्री का ि ात्रण है ाो देवर से संबंध तो रखती है पर उससे विवाह नहीं करना ााहती। शीलो ने परंपरा के सभी हद पार कर विद्रोही बन गई है। अपने ाीवन को अपने हिसाब से ाीना ााहती है।

स्त्री का सामाि ाक ाीवन अर्थहीन है। सामाि ाक कुरीतियों का शिकार है। समा ा की विसंगतिपूर्ण वातावरण से कुछ स्त्रियाँ विद्रोह करती हैं ि ासका नती ाा उन्हें मौत के घाट उतार देता है। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं ाो सामाि ाक भय के कारण पति की उपेक्षा सहती हैं। अन्याय-अत्या ाार को सहत हुई उनसे बिछुड़ना नहीं ााहती। समा ा में आ ा भी स्त्री पूरी स्वतंत्रता के साथ स्वस्थ ाीवन ाीने में असमर्थ है। सामाि ाक व्यवस्था में अब भी स्त्री का ाीवन अनुकूल नहीं है। कहीं बलात्कार की शिकार है, कहीं धोखे, कहीं छेड़छाड़, भेड़ियों की दृष्टि से ब ाने में वह असमर्थ है। कहीं दहे ा के शोषण से पीड़ित है। विधवा, अकेलापन, नौकरीपेशा स्त्री, दहे ा, अमानुषता का व्यवहार, स्त्री के सामाि ाक ाीवन को डावाडोल कर देता है। इन विसंगतिपूर्ण विषमताओं का शिकार स्त्री हमेशा से रहती आई है और शायद आगे भी रहती रहेगी। ााहे कितनी भी आधुनिकता

समा ा में आ ाए स्त्री की स्थिति में कहीं कोई सुधार नहीं। शायद संदर्भ बदल अवश्य गये हों।

आलो य उपन्यसों में कारण कैसा भी हो, ो भी हो पति द्वारा ही स्त्री का वैवाहिक ीवन साररहित हो गया है। नीरस ीवन से स्त्री ऊबकर विद्रोहिणी बन गयी है। पुरुष ने उसे हर पल छला है। उसे अपमानित, प्रताड़ित, उपेक्षित किया िासके कारण वह वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन को सफल बनाने में असमर्थ रही है। उसका वैवाहिक ीवन पति के कारण अस्त-व्यस्त हो गया है। अन्याय, अत्या ार, मानसिक तथा शारीरिक तनाव के कारण स्त्री ने संबंध वि छेद किये हैं िासने नहीं किये घुट-घुट कर मर गयी।

विवे य उपन्यासों में युवतियाँ अपने ही परि ानों, पिता, भाई, ाी ाी, मौसा, मामा के शोषणों का शिकार होती है। उनकी वासना, विकृत यौन मानसिकता की शिकार होती है। प्रिया के उसके भाई द्वारा शोषण होने पर उसकी दाई माँ आलाप करते हुए कहती है-"अरे राक्षस! अरे कसाई! अपन माँ-बहन को छोड़ दे... कोठा नाहीं है का...?"[1] इसी प्रकार मंदा ाब कैलास मास्टर के वासना की शिकार होती है तो कुसुमा कैलास मास्टर की उपेक्षा करते हुए कहती है- "कीरा परें तुम्हारे। मंदा मामा कहकें टेरती हे, सो भी नहीं ख्याल किया? फिर काहे को बहन-भानि ा मानने का स्वाँग भरते हो? ग छत! कुकरमी! अधरमी!"[2] समा ा में बलात्कार एक प्रकार का दंश है ो स्त्री के लिए ीवन भर कुण्ठा, संत्रास तथा असहनीय अपमान ानक हो ाता है। स्त्री समा ा के अतातियों से ही नहीं परिवार ानों, परि ानों की हवस का शिकार बनती है। अपने ीवन को प्रगति

---

[1] छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान-पृ.55
[2] इदन्नमम, मैत्रेयी पुष्पा-पृ.106

के लिए समर्पित कर समा ा में बलात्कृत स्त्री को शोषित, कुंठा, आत्मग्लानी, अपराधबोधी अवस्था में ही अपना ीवन व्यतीत करना पड़ता है।

विवे य उपन्यासों में रखैल की प्रवृत्ति का ित्रण हुआ है। 'दिलो दानिश' की रखैल परंपरा नवाबी वातावरण की देन है िासमें ये परंपरागत अनुकरण करते हैं और उनसे ान्मे संतानों को उनका सही हक देने का प्रयत्न करते हैं। अवैध संतानों के प्रति उनकी आत्मीयता पर वि ाार किया गया है। 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'कलिकथाःवाया बाइपास' की रखैल परंपरा पूँ ाीवादी, युग की देन है। िासमें रखैलों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाया ााता है। ये स्त्रियाँ अपनी आर्थिक कम ाोरी के कारण इनसे ाुड़ी रहती है। और धनिकों की रखैल बन कर रह ााती है। कहीं-कहीं प्यार के ााल में फांस कर उन्हें सामाािक उपेक्षा, पारिवारिक अवमानना का शिकार बनाते हैं। इनमें प़ाी-लिखी स्त्रियाँ हैं ाो प्रेम ााल में फंस कर ाीवन भर दूसरी औरत बन गई है-'अपने अपने ाेहरे' की रमा, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'दिलो दानिश' की महकबानो इसके उदाहरण हैं।

विवे य उपन्यासों में रखैल की प्रवृत्ति का ित्रण हुआ है। 'दिलो दानिश' की रखैल परंपरा नवाबी वातावरण की देन है िासमें ये परंपरागत अनुकरण करते हैं और उनसे ान्मे संतानों को उनका सही हक देने का प्रयत्न करते हैं। अवैध संतानों के प्रति उनकी आत्मीयता पर वि ाार किया गया है। 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'कलिकथाःवाया बाइपास' की रखैल परंपरा पूँ ाीवादी, युग की देन है। िासमें रखैलों की आर्थिक विपन्नता का फायदा उठाया ााता है। ये स्त्रियाँ अपनी आर्थिक कम ाोरी के कारण इनसे ाुड़ी रहती है। और धनिकों की रखैल बन कर रह ााती है। कहीं-कहीं प्यार के ााल में फांस कर उन्हें सामाािक उपेक्षा, पारिवारिक अवमानना का शिकार बनाते हैं। इनमें प़ाी-लिखी स्त्रियाँ हैं ाो प्रेम ााल में फंस कर ाीवन भर दूसरी औरत बन गई है-'अपने अपने ाेहरे'

की रमा, 'छिन्नमस्ता' की तिलोत्तमा, 'दिलो दानिश' की महकबानो इसके उदाहरण हैं।

विवे य उपन्यासों में स्त्री के प्रेम की समस्या उत्पन्न हुई है। स्त्री प्रेम करती है पर सफल नहीं बन पाती। अगर सफल हो भी ाय तो विवाह के बाद अंत तक टिक नहीं पाती ैसे अंकिता इसका उदाहरण है। प्रेम की समस्या लड़कियों को यादा विद्रोही बनाती है। क्योंकि माता-पिता, अपनी परंपराओं से युक्त रहते हैं। ममता एवं कनु इसके उदाहरण हैं। कुछ विवाहित स्त्रियाँ, पति, परिवार के रुष्ठ, अवमानना भरे वातावरण से ऊब कर प्रेम करती है सोमा इसका उदाहरण है। ' ाक' की गुलबंदी को प्रेम की स ा मीत मिलती है। कारण कौन सा भी हो स्त्री को प्रेम की समस्या से ू ाना पड़ता है। इस प्रकार के शोषण का शिकार बनना पड़ता है।

अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में पुनरुत्पत्ति के विषय में लेखिकाओं ने कई तथ्य खो ा निकाले हैं ि ानके कारण स्त्री अपने ाीवन को सही ंग से व्यवस्थित कर सके। पुनरुत्पत्ति में लैंगिक समानता, सुरक्षा तथा प्र ानन प्रक्रिया के मुद्दे उठा कर उनमें नवनिर्माण का संकेत छोड़ा है। आधुनिक धरा में बहती आधुनिकताओं को स ोत किया है कि कोई भी काम करो सो ा सम ा कर सावधानी से करो। तथा ऐसे कामी से आत्मसम्मान को ठेस न पहुँ ो।

अंतिम दशक के उपन्यासों में भाषा की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नये प्रयोग, नया सृ ान तथा प्रयोगधर्मिता की नवीन प्रस्तुति भाषा के माध्यम से दर्शायी है।

भाषा समा ा के वि ार-विनिमय का साधन है तथा लेखिकाओं ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भाषा को माध्यम बनाया है।

बोल ाल की भाषा का प्रयोग लेखिकाओं ने परिवेश ान्म एवं कथावस्तु को आगे ब ़ाने के लिए प्रयोग किया है। स्पष्ट है कि गाँव के लोगों की, सामान्य ान की, अशिक्षित व्यक्तियों तथा स्त्रियाँ सामान्य रूप से बात ाीत करते समय

बोल ाल के वाक्यों, शब्दों का प्रयोग करती हैं। इनके आपसी संवादों, संदर्भों में हम बोल ाल की ालक देख सकते हैं ो सरल, सरस, प्रवाहमयी हो ाती है।

विवे य उपन्यासों में प्रसंगानुकूल भाषा में ित्रात्मकता के दर्शन भी होते हैं। किसी संदर्भ का ित्रण करते समय लेखिकाएँ वातावरण, स्थिति, परिवेश, कुछ घटित उदाहरणों को प्रस्तुत करती है िनको प.ने पर पाठक के मन में स्थिति, परिवेश का बोध हो ाता है। ऐसी भाषा रूपों को ित्रात्मक भाषा कहते हैं। विषयानुसार अनुभूतियों की अभिव्यक्ति लेखिकाओं ने ित्रात्मक भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

भावों की अभिव्यक्ति के लिए लेखिकाओं ने प्रतीक, बिंब, सोंकतिक भाषा का प्रयोग किया है। कलिकथाःवाया बाइपास, हमारा शहर उस बरस, आवां, ाक, कठगुलाब आदि उपन्यासों में प्रतीकात्मकता को सुंदर रूप में ाला है। यह समय ाक्र का प्रतीक है ाक, आवां, एक ालती भट्टी का प्रतीक है। कठगुलाब स्त्री ाति की उभरती वेदना का प्रतीक है। स्पष्ट है कि ये प्रतीक आ ा की स्थिति, युग धर्म, ीवन में संघर्षरत स्त्री का प्रयत्नशील रूप उ ागर करते हैं। लेखिकाओं ने बिंबों को आस-पास की प्रकृति तथा ीवन संदर्भों के भोगे यथार्थ से ग्रहण किया है। समस्याओं के समाधान के लिए अनेक संकेतों को प्रस्तुत किया है। लेखिकाओं ने अपने भाव, वि ार को सांकेतिक प्रयो ान द्वारा दर्शाया है।

स्त्री-विमर्श स्त्री केंद्रित विषय है। लेखिकाओं ने स्त्री की परिस्थिति, सामाि क व्यवस्था में स्त्री का स्थान, पारंपरिकता की आड़ में स्त्री पर शोषण, अत्या ार, आडंबरों का ित्रण, ेतनात्मक भाषा एवं िंतनपरक भाषा में उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किये हैं। ेतनात्मक भाषा के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व का बोध कराया गया है। स्त्री की सदियों से ाली आ रही स्थिति और वर्तमान में स्त्री की बदलती सो ा पर िंता व्यक्त की है। ये स्त्री को स्त्री बने रहने तथा अपनी स्व की पह ान को बनाने के विषय में िंता की है।

* * *

संदर्भ ग्रंथ सू ी

आधार ग्रंथ

क्र.सं	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक/संस्करण
1	अल्मा कबूतरी	मैत्रेयी पुष्पा	किताब घर, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2000, दूसरी आवृत्ति, 2009
2	अपने-अपने कोणार्क	ंद्रकांता	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पेपर बैक्स, प्र.सं.2006
3	अपने-अपने ोहरे	प्रभा खेतान	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1995
4	अपनी सलीबें	नमिता सिंह	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1995, पेपर बैक्स, 2008
5	अनाम प्रसंग	मीना शर्मा	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1995, पेपर बैक्स, 2008
6	आवां	ि ात्रा मुद्गल	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2000, संस्करण 2008
7	आओ पेपे घर ालें	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, ाी.टी.रोड, नई दिल्ली, प्र.सं.1990
8	इदन्नमम	मैत्रेयी पुष्पा	किताब घर, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1994, रा ाकमल पेपर बैक्स, 2006
9	एक ामीन अपनी	ि ात्रा मुद्गल	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1990, ाौथा आवरण, 2009
10	ऐ लड़की	कृष्णा सोबती	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1991, रा ाकमल पेपर बैक्स, पहली आवृत्ति, 2010

11	कठगुलाब	मृदुला गर्ग	भारतीय ज्ञानपीठ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1996, पां ावां सं.2009
12	कलिकथा:वाया बाईपास	अलका सारावगी	आधार प्रकाशन, हरियाणा, प्र.सं.1998
13	ाक	मैत्रेयी पुष्पा	किताब घर, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, तीसरी आवृत्ति, 2009
14	छिन्नमस्ता	प्रभा खेतान	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1991, पेपर बैक्स, ाौथा आवरण, 2006
15	ूला नट	मैत्रेयी पुष्पा	किताब घर, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1999
16	तालाबंधी	प्रभा खेतान	सरस्वती विहार, ाी.टी.रोड, नई दिल्ली, प्र.सं.1991
17	दिलो दानिश	कृष्णा सोबती	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1993
18	पीली आंधी	प्रभा खेतान	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1995
19	बेतवा बहती रही	मैत्रेयी पुष्पा	किताब घर, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1993, 2007
20	माई	गीतां ालि श्री	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1993
21	हमारा शहर उस बरस	गीतां ालि श्री	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1998, पेपर बैक्स 2007
22	यामिनी कथा	सूर्यबाला	ज्ञानगंगा, 205, सी ाावडी बा ाार, नई दिल्ली, प्र.सं.1991

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ

क्र.सं	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक/संस्करण
1	अनुवाद समीक्षा	डॉ.सी.अन्नपूर्णा	ार्क प्रकाशन, नल्लकुंटा, हैदराबाद, प्र.सं.1998
2	अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य	रा ेंद्र वर्मा	अक्षर प्रकाशन, प्र.सं.2001
3	अनुवाद विज्ञान	भोलानाथ तिवारी	शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 2002
4	अमलताश	शशि प्रभा शास्त्री	वाणी प्रकाशन, 1993
5	आलो ाना के आगे	सुधीश प ौरी	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.2000
6	आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ	डॉ.ओमप्रकाश शर्मा	बोहरा प्रकाशन, ायपुर, 1989
7	आधुनिक काव्य में नारी	उमा शुक्ल	अरविंद प्रकाशन, बंबई, 1996
8	आख्यान महिला विश्वास का	हरिश ंद्र व्यास	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, प्र.सं.1995
9	आधुनिक कविता के नए मूल्य	डॉ.महेंद्र कार्तिकेय	विद्या प्रकाशन मंदिर, प्र.सं.1984
10	आधी आबादी	इंदु भारती	अनामिका पब्लिशर्स, 2005
11	आठवें तथा नवें दशक के हिंदी उपन्यासों में नारी	डॉ.वंदना सोपानराव मेहिते	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2007
12	औरतः अस्तित्व और अस्मिता	अरविंद ैन, भूमिका प्रभा खेतान	रा ाकमल प्रकाशन, प्र.सं.2001, द्वि.सं.2009
13	औरत के हक में	तसलीमा नसरीन	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
14	इक्कीसवीं सदी की ओर	सुमन कृष्णकांत	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2001
15	उत्तर-आधुनिक साहित्यिक विमर्श	सुधीश प ौरी	वाणी प्रकाशन, प्र.सं.2006
16	उपनिवेश में स्त्री	प्रभा खेतान	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2003

17	उपन्यासों की समकालीनता	योतिष ोशी	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र.सं.2007
18	उषा देवी मित्रा व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्रभा सक्सेना	पं ाशील प्रकाशन, प्र.सं.1984
19	ऐ लड़की में नारी ेतना	डॉ.गरिमा श्रीवास्तव	सं ाय प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.2003
20	घरेलू हिंसा वैश्विक संदर्भ	विभा देवसरे	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, प्र.सं.2008
21	ाहाँ औरत ग ़ ाती है	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, 2006
22	ेंडर व पितृसत्ता पर प्रशिक्षण कार्यशाला	समुदाय आधारित नेतृत्व कार्यक्रम	2/14, दूसरी मं िल, शांति निकेतन, नई दिल्ली-110021
23	दुर्ग द्वार पर दस्तक	कात्यायनी	परिकल्पना प्रकाशन, कानपुर, 1994
24	धनं ाय वीर, महात्मा योतिबा फूले	योतिबा फूले	फादर ऑफ आवर सोशल रेवॉल्यूशन, बंबई, 1965
25	नए उपन्यासों के नए प्रयोग	दंगल ालटे	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1996
26	नारी िंतन की नयी ुनौतियाँ	डॉ.रा कुमारी गडकर	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.2004
27	नारी शोषणःआईने और आयाम	आशारानी व्होरा	नेशनल पब्लिक हाउस, दिल्ली, प्र.सं.1982
28	नारी प्रश्न	सरला माहेश्वरी	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1998, आवृत्ति 2007
29	परिधि पर स्त्री	मृणाल पांडे	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1996
30	पांडुलिपि	डॉ.ब्रह्मदेव मिश्र	संकल्प प्रकाशन, बंबई, प्र.सं.1993
31	प्रेम ंद और उनका युग	डॉ.रामविलास शर्मा	रा कमल प्रकाशन, प्र.सं.1993

32	बीसवी ंसदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन	डॉ.क्षिति ा यादवराव धुमाल	अन्नूपर्णा प्रकाशन, 2006, साकेत नगर, कानपुर
33	भारतीय साहित्यः तुलनात्मक अध्ययन	ब्र ेश्वर शर्मा	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, प्र.सं.2001
34	भारतीय समा ा में कार्यशील महिलाएँ	डॉ.सुलो ाना श्रीहरी देशपांडे	श्रुति पब्लिकेशन, ायपुर, प्र.सं.2006
35	महिला उपन्यासकारों में नारीवादी दृष्टि	डॉ.अमर योति	अन्नूपर्णा प्रकाशन, 1999
36	मार्क्स-एंगेल्स संकलित र ानाएँ	लूई बोनापति	18 वीं ब्रमेर भाग-1, प्रगति प्रकाशन, मास्के
37	मानवाधिकार और महिलाएँ	डॉ.निशांत सिंह	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली-110002, प्र.सं.2008
38	साहित्य का श्रेय और प्रेय	ैनेंद्र कुमार	सर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1953
39	साहित्य िंतन की नयी दिशाएँ	डॉ.लक्ष्मी कांता पाण्डेय	साहित्य रत्नालय, प्र.सं.1995, सत्रहवां संस्कारण
40	साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप	डॉ.विमल वर्मा	संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987
41	स्त्री-सरोकार	आशा रानी व्होरा	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, सं.2006
42	स्त्री-संघर्ष का इतिहास	राधा कुमार	वाणी प्रकाशन, दरियागं ा, नई दिल्ली, प्र.सं.2007
43	स्त्रियों की पराधीनता	ॉन स्टुअर्ट मिल	हिंदी अनूदित, रा ाकमल प्रकाशन, 2002
44	स्त्री सशक्तीकरण के विविध आयाम	ऋषभदेव शर्मा	गीता प्रकाशन, हैदराबाद, प्र.सं.2004

45	स्त्रीत्ववादी विमर्श ःसमा ा और साहित्य	क्षमा शर्मा	रा ाकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.2002
46	स्त्रीत्व धारणाएँ एवं यथार्थ	प्रो.कुसुमलता, प्रो.रामेश्वर प्रसाद मिश्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्र.सं.2004
47	स्त्री ि ंतन की ुनौतियाँ	रेखा कस्तवार	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2006
48	स्त्री उपेक्षिता	सीमोन द बोउवर, अनू.प्रभा खेतान	हिंदी पॉकेट बुक्स, 2002
49	स्त्री अधिकारों का औ ित्य साधन	मेरी वोल्सटन क्रॉफ्ट अनू-मीनाक्षा	रा ाकमल प्रकाशन, प्र.सं.2003, आवृत्ति 2009
50	स्त्री अस्तित्वः साहित्य और वि ारधारा	ागदीश्वर ातुर्वेदी	सुधा सिंह, आनंद प्रकाशन, प्र.सं.2004
51	स्त्री विमर्श ःविविध पहलू	डॉ.कल्पना वर्मा	लोकभारती प्रकाशन, प्र.सं.2009
52	स्त्री-पुरुष कुछ पुनर्वि ार	रा ाकिशोर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली, आवृत्ति 2007
53	हिंदी उपन्यासों में नारी	शैल रस्तोगी	वि.भू.प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1977
54	हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार	डॉ.एम.वेंकटेश्वर	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.2002
55	हिंदी भाषा साहित्य का इतिहास	डॉ.रा ेश्वर प्रसाद ातुर्वेदी	लखनऊ प्रकाशन
56	हिंदी मराठी नाटकों में नारी	डॉ.वसुधा ोशी	ंद्रलोक प्रकाशन, कानपूर, प्र.सं.2001
57	हिंदी के प्रतीक नाटक	रमेश गौतम	न ाकेतन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980
58	हिंदी उपन्यास का इतिहास	गोपाल रॉय	रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
59	हिंदी की महिला उपन्यास कोश की मानवीय संवेदना	उषा यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, 1999

अंग्रेज़ी

1. Avindicaten of the rights of women-Mery Wollstone craft, Chelsea station, New york, 1792
2. A wormen? Black women and feminism Bell hook's Anint, Soushend press, Briston pub. 1996
3. Feminism and the contradictions of oppression, Carline Roomozoogle-II, West 35th street, New York, 1994
4. Feminist theory:A critic of Ideogogy, Feminist Maxicon method and state Ed.Nannerl.O.Kehane, Michelle Z.Rosaldo and Barbara C.Gelpi, London, Pub-1998
5. Feminism and the women movement, Barbara Ryan, Aninprint of Routledge, New York-1992
6. Female eanuch Germaine Greer, London-Paladin-1970
7. Sexual politics, Kate Millet-Avon Book, New York, 1973
8. The Feminine Mystique, Betty Friden, Penguin Book, U.S.A.
9. The feminist challenge-David Bouchier Machmillon, London-1983

पत्र-पत्रिकाएँ

1. अक्षरा आलो ाना विशेषांक, संपा गोविंद मिश्र
2. इक्कीसवीं सदी का नारीवाद, हंस
3. उत्तर प्रदेश साहित्य वार्षिक, 1997
4. कथादेश, ून 1998
5. गु राती दलित साहित्य में नारी, हरबंस पटेल
6. दस्तावे ा, निमिष राय, ुलाई-सितंबर 2005
7. दस्तावे ा, ुलाई 2004
8. नारी दलित कुछ और मुद्दे प्रभा खेतान, हंस 1996
9. प्रेम ंद के उपन्यासों में नारी, अपर्णा ि ागे पाटिल सं ाारिका, 2006
10. राकेश कुमार, हंस/ ानवरी/1994
11. वागर्थ, सूर ापालीवाला, ानवरी 2005
12. सब कुछ ठीक है मगर, सूर ा पालीवाल, 98, वागर्थ ानवरी, 2005
13. सं ाालिका, अपर्णा ि ार्ग पाटील, 2006
14. सं ाालिका, सं ाीव कुमार नारवाडे, 2006
15. स्त्रीःअंतिम उपनिवेश, प्रभा खेतान, 75, हंस/सितंबर/2003

16. स्त्री-विमर्श के अंतर्विरोध, प्रभा खेतान, 57/हंस/सितंबर-96, 57/हंस/सितंबर-96
17. स्त्री विमर्श की दिशाएँ, मधूरेश, समीक्षा/हंस/अप्रैल/ ून 2005
18. साहित्य की पत्रिका से उर्द्धत मा ि 2011
19. साहित्यिक ि ितन की नयी दिशाएँ, डॉ.लक्ष्मी कांता पाण्डेय, साहित्य रत्नालय, प्र.सं.1995
20. हंस, मा ि, रा ेंद्र यादव, 1993, अगस्त 1996
21. हंस/मा ि/1993
22. हंस, ानवरी, 1994
23. हिंदी मराठी नाटकों में नारी, डॉ.वसुधा ोशी

कोश

1. गोविंद ाावक, आधुनिक हिंदी शब्द कोश, तक्षशिला, प्र.सं.1986
2. मनुस्मृति, अध्याय 3.56-57
3. ाातक गोविंद, आधुनिक हिंदी शब्दकोश, प्रकाशक-अ. ा.प्रभु, प्रथमावृत्ति 1970
4. संस्कृत हिंदी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, प्र.सं.196, आवृत्ति-1996
5. श्रीमद्भागवत गीता मुख पृष्ठ-गीता प्रेस, गोरखपुर
6. Oxford English-English-Hindi Dictionary, Dr.Suresh Kumar, Dr.Ramanath Sahai, Oxford University Press, 2008

* * *